बृह[illegible] टुरत्नाकर.

 [illegible]साखण्ड.

ॐ

आयुर्वेदोद्धारान्तर्गतवृहन्निघण्टुरत्नाकरे

चिकित्साखण्डः।

हिंदीभाषानुवादसमेतः

तथाच विविधरोगाणामतिप्रशस्तचिकित्सापरिपूर्णः

पाठकज्ञातीयमथुरानिवासिश्रीकृष्ण-
लालमाथुरतनयदत्तरामेण

संकलितःस्वकृतभाषाटीकाविभूषितः संशोधितश्च

स च

श्रीकृष्णदासात्मज-

गंगाविष्णु, खेमराजाभ्यां

मुंबय्यां

स्वकीये "श्रीवेंकटेश्वर" मुद्रणालये

मुद्रयित्वा प्रकाशितः

संवत् १९४७ शके १८१२

BṚHANNIGHAṆṬURATNĀKARA

अर्धांगी शिवकी मूर्ति.



धन्वंतरि वैद्यराजकी मूर्ति.



वीरभद्र गण वा ज्वरकी मूर्ति.



बीभस्तज्वरकी मूर्ति ज्वर २रा.



त्रिशिरा ज्वर ३रा.



कापिलाख्य ज्वर ४था.



भस्मविक्षेपक ज्वर ५ वा.



त्रिपाद ज्वर ६ वा.



उत्कटास्य ज्वर सातवा.

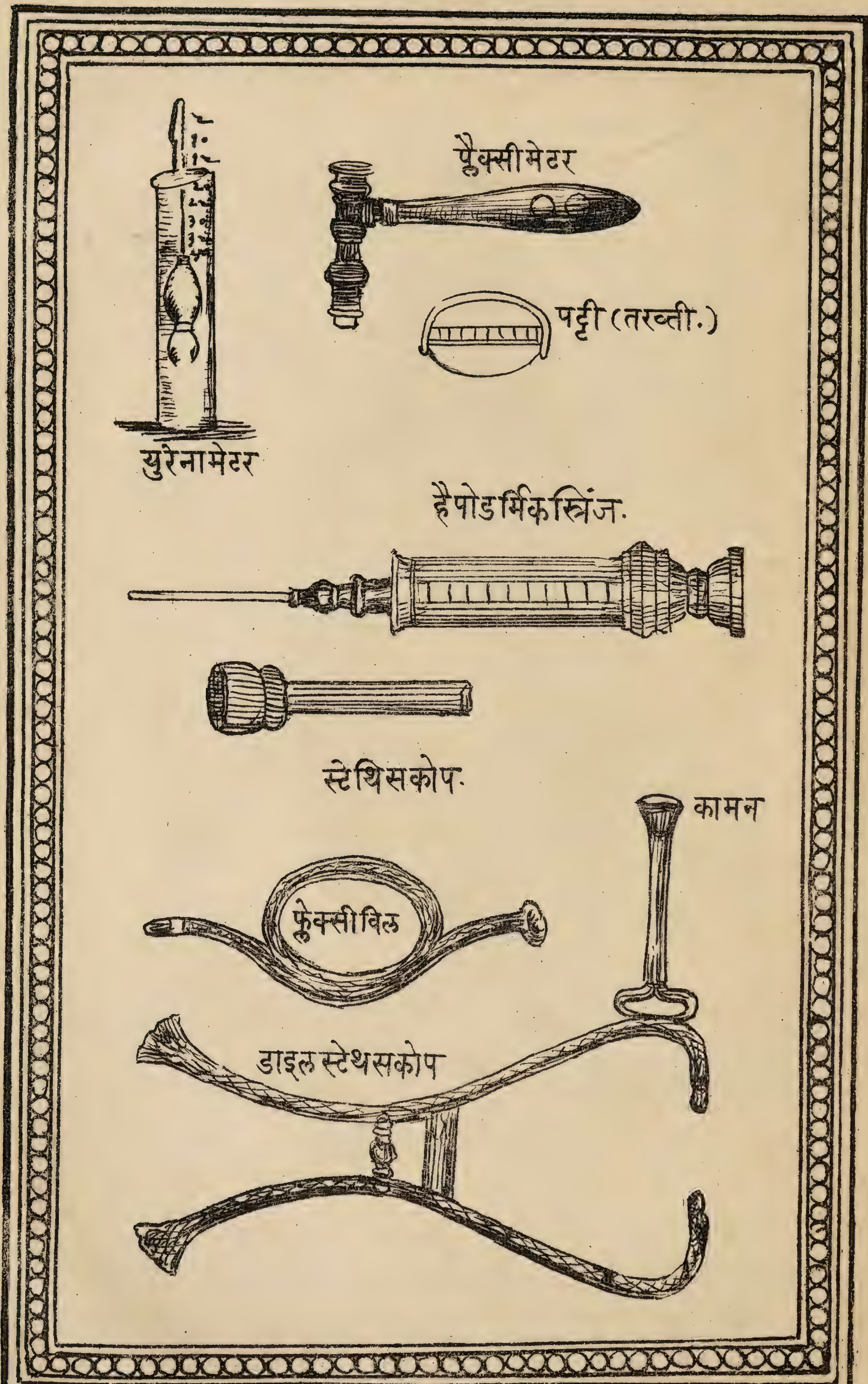


महोदरज्वर आठवा.



ज्वलद्विग्रह ज्वर नववा.




पैक्सीमेटर
पट्टी (तख्ती.)
युरेनामेटर
हैपोडर्मिकस्त्रिंज.
स्टेथिसकोप.
कामन
फ्लेक्सीबिल
डाइलस्टेथसकोप

ॐ

बृहन्निघण्टुरत्नाकरके चिकित्साखण्डकी अनुक्रमणिका।

व्याधिसमुद्देशीयाध्यायः

त्रिविधरोग विज्ञानीयाध्यायः

ज्वरप्रकरणम्

ज्योतिःशास्त्रका अभिप्राय

प्रत्येक चरणका फल

ज्वररोगकाकर्मविपाक

निदानपंचक

ज्वर निदान

ज्वरचिकित्सा

जल

पित्तज्वर

वातपित्तज्वर

वातकफज्वर

कफपित्तज्वर

सन्निपात

वातोल्बण

पित्तोल्बण

संधिक

अंतक

रुग्दाह

चित्तभ्रम

शीतांग

तंद्रिक

कंठकुब्ज

कर्णक

भुग्न नेत्र

रक्त ष्ठीवी

प्रलापक

बृहन्निघण्टुरत्नाकरके तीसरेभागकी अनुक्रमणिका-

समाप्त ।

"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना (बंबई.)

ॐ

श्रीशंवन्दे

श्रीनिकुंजबिहारिणे नमः

आयुर्वेदोद्धारांतर्गत बृहन्निघंटुरत्नाकरे

चिकित्साखण्ड प्रारम्भः

शिष्य—चिकित्साकिसकोकहते है. ?

गुरु--शरीरमें धात्वादि विकृत दोष समान करनेवाले कर्मको चिकित्सा कहते है जैसे-वाग्भटमें लिखाहै।

याभिः क्रियाभिर्जायन्ते शरीरे धातवः समाः।
सा चिकित्सा विकाराणां कर्मतद्भिषजां मतम् ॥

अर्थ—जिनक्रियाओंकरके देहमें रसरक्तादि धातु समानहोवे वही रोगोंकी चिकित्साहै, और वैद्योंका वही कर्मकहाहै ॥

सुश्रुतेऽपि

चतुर्णां भिषगादीनां सस्तानां धातुवैकृते।
प्रवृत्तिर्धातुसाम्यार्था चिकित्सेत्यभिधीयते ॥

अर्थ—सुश्रुतमेंभी लिखाहै कि उत्तम वैद्यादि (वैद्य, रोगी, सेवक, और औषध) चतुष्टयोंका विकृत (कुपित) धातुके समान करनेके लिये जो प्रवृत्ति है उसको (चिकित्सा) असे कहते है ॥

अन्यच्च

या क्रिया व्याधिहरणी सा चिकित्सा निगद्यते।

दोषधातुमलानां या साम्यकृत्सैव रोगहृत् ॥

अर्थ—अन्यत्रभी लिखाहै कि जो क्रिया व्याधिके हरण करने वाली है उस को चिकित्साकहते है। जोचिकित्सा दोष (वातादि) धातु (रसरक्तादि) और मलादिकोंको समान करती है वही रोगहरणकर्त्ता जाननी। क्रिया शब्द करके इसजगे कर्मका ग्रहणहै ॥

क्रियाकेलक्षण

यात्युदीर्णं शमयत्ति नान्यं व्याधिं करोति च।
सा क्रिया न तु या व्याधिं हरत्यन्यमुदीरयेत् ॥

अर्थ—जो बढीहुई व्याधिको शमनकरे परंतु अन्य व्याधिको प्रगट न करे उसीको क्रिया (चिकित्सा) कहते है। और जो एकव्याधिको हरणकरे और तत्काल दूसरी व्याधिको प्रगटकरदे उसे क्रिया नहीं कहते। (क्रिया) शब्द करके इसजगे (चिकित्साका) ग्रहणहै. जैसे " आरंभो निष्कृतिः शिक्षा पूजनं संप्रधारणं। उपायः कर्मचेष्टा च चिकित्सा च नवक्रियाः " यह अमरकोषमें नो नाम चिकित्साके कहे है ॥

चिकित्सा औरउसका प्रयोजन

यद्व्याधिनिर्घातकरंवक्ष्यतेतच्चिकित्सितम्
चिकित्सितार्थएतावान्विकाराणांयदौषधम्

अर्थ—जोव्याधि अर्थात् रोगका नाशकरे वहीचिकित्सा जाननी—उस चिकित्साका प्रयोजन इतनाही है कि विकारोंकी औषधि करना ॥

चिकित्साकेनाम

चिकित्सितं व्याधिहरं पथ्यं साधनमौषधम्
प्रायश्चित प्रशमनंप्रकृति स्थापनं हतम्॥
विद्याद्भेषजनामानि

अर्थ—अब प्रथम चिकित्साके नाम कहते है जैसे चिकित्सित, व्याधिहर, पथ्य, साधन, औषध, प्रायश्चित—प्रशमन—प्रकृतिस्थापन—और हत ये भेषज (औषधी और चिकित्सा) के नाम है ॥

उपचारास्तूपचर्या—चिकित्सारुक्प्रतिक्रिया
निग्रहोवेदना निष्टाक्रियाचोपक्रमश्रमाः

अर्थ—ग्रंथांतरसैं चिकित्साके नामकहते है जैसै-उपचार, उपचर्या-चिकित्सा- रुक्प्रतिक्रिया-निग्रह-वेदनानिष्टा-उपक्रम और श्रमये चिकित्साके नाम

प्रायश्चितं प्रशमनं चिकित्सा शांतिकर्मच
पर्यायास्तस्यनिर्दिष्टा

अर्थ-सुश्रुतमे भीलिखाहै जैसै कि प्रायश्चित,प्रशमन,चिकित्सा,और शांतिकर्म ये चिकित्साके पर्यायवाचकशब्द है ॥

शिष्य—चिकित्सा कितने प्रकारकी है ?

गुरु—चिकित्सा दो प्रकारकी है जैसै- लिखाहै " चिकित्सितं कर्षणबृंहणाख्यं " अर्थात् चिकित्सा दो प्रकारकी है एक[1]कर्षण-दूसरी बृंहण[2]। परंतु किसी आचार्यके मतसै तीन प्रकारकी है । जैसैं लिखाहै ॥

(निदानरोगविपरीतऔरतदर्थकारिणीचिकित्सा)

निदानविपरीता च विपरीतारुजस्तथा ।
तदर्थकारणीचेति चिकित्सा त्रिविधा मता ॥

अर्थ—निदानविपरीत-और रोगविपरीत तथा निदानरोगविपरीत अैसैं चिकित्सा तीनप्रकारकी है निदान विपरीत चिकित्सा जैसैं विषभक्षणजन्य गरमीमें दूध घृतका पान करना, रोगविपरीत चिकित्सा जैसै अतीसार रोगमें दस्तोंका वंद करना, उसीप्रकार निदान और रोगविपरीतचिकित्सा जैसै-शीत कफज्वरमें सोंठकाकाढा-परंतु एतीनोप्रकारकी चिकित्सा उन्ही पूर्वोक्त कर्षण बृंहणके अंतर्गत है ॥

दैवीमानुषीऔरराक्षसीचिकित्सा

रसादिभिर्याक्रियते चिकित्सा दैवीति वैद्यैः परिकीर्त्तिता सा ।
सा मानुषी याऽथ कृताफलाद्यैः सा राक्षसी शस्त्रकृताभवेद्या ॥

अर्थ—जो रसादिकरके चिकित्सा करीजावे उसको दैवी चिकित्सा वैद्यकहते है, और जो फलमूलादि करके करीजावे उसै (मानुषीचिकित्सा) तथा शस्त्रकृत अर्थात् चीरने फाडनेको (राक्षसी चिकित्सा कहते है) यह अधमहै ॥

---

१ जो दोषधातुमलादिकों को क्षीणकरदे उसको कर्षण चिकित्सा कहते जैसै-वमन विरेचन, लंघनादि । २ जो दोषधातुमलादिकोंको वढाकर रोगको दूरकरे उसको बृंहण चिकित्सा कहते है अर्थात् जिसमें रोगीका देहभी यथार्थ वनार है और रोग दूर होजाय इस चिकित्साको प्राय हकीम और डाकटर लोग बहुतप्रसन्न करते है ।

आसुरी मानुषी दैवी चिकित्सा त्रिविधा मता ।
शस्त्रैः कषायैर्लोहाद्यैः क्रमेणांत्यासुपूजिता ॥

अर्थ—चिकित्सा–आसुरी, मानुषी, और दैवी, इन भेदोंसें तीनप्रकारकी है तहां शस्त्रसे अर्थात् चीरना फाडना, काटना आदि चिकित्साको आसुरी (राक्षसी) कहते है । और काढे, चूर्ण, गुटिका, आदिकरके जो चिकित्सा करीजाय वो मानुषी चिकित्साहै । और जो सुवर्ण, चांदी, और लोह आदि शब्दसै पारा, गंधक, रसोपरस, रत्नोपरत्न, और बिषादिकसै चिकित्सा करीजावे वो दैवीचिकित्सा कहलाती है । इनमें अंतकी चिकित्सा अर्थात् दैवी चिकित्सा माननीय है ॥

शिष्य––चिकित्सामैं कौन २ वस्तु जानने योग्यहै ।

गुरु––चिकित्साकरने वालेको प्रथम चिकित्साके अंगोंका जानना अति आवश्यक है ।

शिष्य––तो आप कृपापूर्वक चिकित्साके अंगोको कहिये ।

गुरु––जैसे अंगहीन मनुष्य अच्छा नही इसी प्रकार अंगहीन चिकित्साकीभी शोभा नही अतएवमें उन अंगोको कहता हूं ।

अथचिकित्साङ्गानि

रोगी दूतो भिषग्दीर्घमायुर्द्रव्यं सुसेवकः ।
सदौषधं चिकित्साया इत्यंगानि बुधा जगुः ॥

अर्थ—रोगी,–दूत,–वैद्य,–दीर्घआयु,–द्रव्य,-उत्तमसेवक,–और उत्तम औषधी ये चिकित्साके अंग विद्वानोंने कहे है । जैसे–अंगहीन मनुष्य अशोभितहोता है उसीप्रकार चिकित्साभी अंगहीन उत्तमनहीं कहलाती ॥

शिष्य–आपने "चतुर्णांभिषगादीनां" इसश्लोकमेंजो वैद्यादिचतुष्टय कहे उनका चिकित्सामें क्याप्रयोजन है और उनको क्याकहते है ॥

गुरु–वो चिकित्साके पादचतुष्टयहै अर्थात् चिकित्साके चारपैरहै इनके विना चिकित्सा चलनहीं सक्ती यहीप्रयोजन है ॥

चिकित्साकेपादचतुष्टय

भिषग्द्रव्याण्युपस्थाता रोगी पादचतुष्टयम् ।
गुणवत्कारणं ज्ञेयं विकारस्योपशान्तये ॥

अर्थ—वैद्य,—द्रव्य (औषधि) रोगीका सेवक,—और रोगी, ये चिकित्सा केचारपैरहै। यह पादचतुष्टय उपयुक्त गुणसंपन्न होनेसैं रोगशांतिकरनेको समर्थ होते है ॥

पाठांतरं

वैद्यो व्याध्युपसृष्टश्च भेषजं परिचारकः ।
एते पादाश्चिकित्सायाः कर्मसाधनहेतवः ॥

अर्थ—वैद्य, रोगी, औषध और परिचारक (सेवक) ए चिकित्साकेचार पैर-कर्मसाधनके हेतुहै; अर्थात् इनके विना चिकित्सा कर्म नही होसक्ता ॥

वैद्यविना पादत्रको निष्फलत्व

वैद्यहीनास्त्रयः पादागुणवंतोऽप्यपार्थकाः ।
उद्गातृहोतृब्रह्माणो यथा ध्वर्युंविनाध्वरे ॥

अर्थ—वैद्यरहित चिकित्साके अन्य तीनपाद गुणवान्‌भी निरर्थक है, जैसे—यज्ञमें विना अध्वरी (उपाध्याय) के उद्गाता, होता, और ब्रह्मा, ए निष्फल है। जैसैं अध्वरी—उद्गाता होता और ब्रह्माको पृथक २ कर्ममें युक्ति वताता रहता है उसीप्रकार वैद्य—रोगी सेवक और औषधमें युक्ति वताता रहता है ॥

पादत्रयविनाभीवैद्यकोमुख्यत्व

वैद्यस्तुगुणवानेकस्तारयेदातुरान्सदा ।
प्लवं प्रतितरैर्हीनं कर्णधारइवार्णवम् ॥

अर्थ—गुणवान् अकेला वैद्यही रोगियोंको सदैव उद्धार करता है अर्थात् रोगसैं निर्मुक्त करता है जैसैं प्रतितर (भीतरभरे हुए जलके उलीचने वालों करके) हीन नावको अकेला मल्लाह (केवटिया) पार लगाता है ॥

पादचतुष्टयमें वैद्यको प्राधान्यत्व

कारणंषोडशगुणंसिद्धौपादचतुष्टयं । विज्ञाता शासि-
ता योक्ता प्रधानं भिषगत्र तु। पक्तौहि कारण पक्तुर्य
था पात्रेंधनानलाः॥ विजेतुर्विजये भूमिश्चमूः प्रहर-
णानि च। आतुराद्यास्तथा सिद्धौ पादाकारण संज्ञि-
ताः ॥ वैद्यस्यातश्चिकित्सायां प्रधानं कारणंभिषक् ।

मृद्दंडचक्रसूत्राद्याः कुंभकारादृतेयथा ॥ नावहंति गु-
णं वैद्यादृतेपादत्रयं तथा ।

अर्थ—चिकित्साकी सिद्धीमें सोलहगुण संपन्न पादचतुष्टय कारण है, तथा चिकित्साके पादचतुष्टयोंमें जाननें वाला, आज्ञा करनेवाला, युक्ति बताने वाला वैद्य है, इसीसैं वैद्यको मुख्यत्व है। इनको दृष्टांत देकर समझाते है कि जैसैं रसोई करने वाले प्राणीको रसोईके करनेमें पात्र, ईंधन, और अग्नि ये कारण है तथा जीतनेकी इच्छा करने वाले राजा को जीतनेंमें जैसै पृथ्वी, फौज, और हथियार कारण है। इसी प्रकार वैद्यको चिकित्साकी सिद्धिमें अतुरादि (रोगी आदि) तीनपाद कारण है, इसीसैं चिकित्सामें प्रधान कारण वैद्यहै। और दृ-ष्टांत देते है कि जैसैं मिट्टी (जिस्से वरतन वनते है) दंड (चाक फिरानेकी ल-कडी) और वासन तयार होनेपर काटनेका डोरा इत्यादि सब वस्तु धरी है परंतु बिना कुह्मार (वनाने वाले) के वोअपने २ गुणोंको नहीं करते [मिट्टी स्वयं वासनरूप नहीं वनती, लकडी स्वयं चाकको घुमाती नहीं है, और डोरा-काटता नहीं हैं, तात्पर्य यह है कि जैसै मिट्टी, लकडी, और डोरा उस कुह्मार के आधीन है वो उनसैं काम लेसक्ता है] इसीप्रकार रोगी–औषधी और से-वक ये वैद्यके आधीन है बिना वैद्य कुछ नहीं करसक्ते परंतु वैद्य सव कार्य क-रा सक्ता है ॥

तहांप्रथमवैद्यकेलक्षण

चिकित्सां कुरुते यस्तु स चिकित्सक उच्यते ।
सच यादृक् समीचीनस्तादृशोऽपि निगद्यते ॥

अर्थ—जो चिकित्साकरे उसको चिकित्सक कहहे है वो वैद्य जैसा उत्तम उसको लिखते है ॥

वैद्यशब्दकीव्युत्पत्ति

पंचतत्वात्मकं सर्वं वेत्ति यस्मादशेषतः ।
तस्माद्वैद्य इति ख्यातो तस्यनामानि कथ्यते ॥

अर्थ–संपूर्णब्रह्मांडके पदार्थोंको पंचतत्वात्मक जाननेसैं इसको वैद्य कहते है अ-थवा (विदज्ञाने) इस धातुसैं वैद्य पद सिद्ध होताहै इससें संपूर्ण–त्रिस्कंधात्मक आयुर्वेद तथा अन्य व्याकरण–न्याय–ज्योतिषादि संपूर्ण शास्त्रोंके आशयोंको तथा लौकिकके संपूर्ण व्यवहारोंको जाननेसैं इसको वैद्य ऐसा कहते है] अब उस वैद्यके नामोंको कहते है ।

वैद्यकेनाम

वैद्यः श्रेष्टोऽगदंकारो रोगहारी भिषग्विधिः ।
रोगज्ञो जीवनो विद्वान् आयुर्वेदी चिकित्सकः ॥

अर्थ—वैद्य, श्रेष्ट, अगदंकार, रोगहारी, भिषक्, विधि, रोगज्ञ, जीवन, विद्वान्, आयुर्वेदी, और चिकित्सक, ये वैद्यके संस्कृत नाम है इसी प्रकार गदहागदारि, प्राणाचार्य, प्राणद, और वैद्यराज, इत्यादि औरभी अनेक नाम वैद्यके है

वैद्यकेलक्षण

तत्वाधिगतशास्त्रार्थो दृष्टकर्मा स्वयंकृती । लघुहस्तः
शुचिः शूरः सज्जोपस्करभेषजः॥ प्रत्युत्पन्नमतिर्द्धीमान्
व्यवसायी प्रियंवदः।सत्यधर्मपरो यश्च वैद्यईदृक् प्रशस्यते ॥

अर्थ—जिसने यथायोग्य आयुर्वेदशास्त्र अध्ययन कर उसका यथार्थ तात्पर्य हृदयंगम अर्थात् हृद्गत करलियाहो, अन्यवैद्यके करेहुए छेदनादि और स्नेहपाकादि क्रियादि चिकित्साको अनेकवार देखचुकाहो, स्वयं चिकित्सामें कुशल, तथा जिसका हलकाहाथहो, अर्थात् छेदनादि क्रियामें जिसका हाथ कांपे नहीं। पवित्राचार, (बाहरभीतरसे शुद्ध) शूर (खेदरहित)नवीन तयार करीहुई औषधयुक्त, तथा अग्रोपहरणीयाध्यायमें पठित यंत्र शस्त्रादि युक्त, तात्काल स्फुरणवाली बुद्धि, अर्थात् वादकी किसी अवस्थामें मोहित न हो। बुद्धवान् (जो अनुक्त और दुरुक्त ग्रहण करनेवाली और त्यागनेवाली बुद्धिवाला) उद्योगी (रोगीकी विगडीहुई अवस्थामेंभी यत्नकरनेमें मोहित न हो) प्रियवचन वोलने वाला, कोई प्रियंवदकेस्थानमें (विशारद)[1] ऐसा पाठ कहते है तहां विशारद कहिये शास्त्रके कठिन शब्दोंको देखकरभी न घवडावे, सत्य और धर्ममें तत्पर अेसा वैद्य उत्तम कहाहै ॥

वैद्यकेगुणचतुष्टय

श्रुतेपर्यवदातृत्वंबहुशोदृष्टकर्मता ।
दाक्षंशौचमितिज्ञेयं वैद्येगुणचतुष्टयम् ॥

अर्थ—शास्त्रमें प्रवीणत्व तथा अनेक प्राचीन वैद्योकी कर्मसिद्धीको जिसने अनेक वारदेखाहो, चतुर औ पवित्र ये वैद्यमें चारगुण जानने ॥

---

१ विशारदः इतिपाठातरम् ।

अब प्रसंगवस चरकसैं तीनप्रकरके वैद्योको यहाँपरवर्णन करतेहै ॥

त्रिविधवैद्य

भिषक्छद्मचराः सन्ति सन्त्येके सिद्धिसाधिताः।
संति वैद्यगुणैर्युक्ता स्त्रिविधा भिषजो भुवि ॥

अर्थ—इस पृथ्वीमें तीनप्रकारके वैद्यहै-जैसै कि छद्मचर (कपटी) वैद्य, दूसरे सिद्धसाधित,-और तीसरे वैद्यगुणोकरके युक्त अर्थात् उत्तम वैद्य है ॥

ठगवैद्यकेलक्षण

वैद्यभांडौषधैः पुस्तैः पल्लवै रवलोकनैः।
लभन्ते ये भिषक्शब्दमज्ञास्ते प्रातिरूपकाः ॥

अर्थ—वैद्योंके पात्र,-औषधि,-पुस्तक और पत्तेआदिके देखनेसैं जो भिषक (वैद्य) शब्दको प्राप्तहोते है वो वैद्य मूर्खहै, उनको प्रातिरूपक अर्थात् ठगिया कपटकेवने वैद्यजानने चाहिये, तात्पर्य यहहै कि जो मूर्खवैद्य ठगियाहोते है वोअनेक शीशी,-अमृतवान् आदि पात्रोंसैं और झूँटी औषध, पोथी, रूखडीआदिसैं अपने स्थानको सजायेहुए रखते है कि जिससैं रोगियोंको यह मालूम होवेकि ये कैसे वडेभारीवैद्य हैं, परंतु अैसे दुष्टवैद्य रोगियोंको त्यागदेने चाहिये ॥

सिद्धिसाधितवैद्यकेलक्षण

श्रीयशोज्ञानसिद्धीनां व्यपदेशादतद्विधा।
वैद्यशब्दं लभंते ये ज्ञेयास्ते सिद्धिसाधिताः ॥

अर्थ—चिकित्साश्री और यशोज्ञान कहिये चिकित्साक्रियाकी सिद्धी इनके मिससैं जो वैद्य शब्दको प्राप्त होते है परंतु उनमें उक्तगुण होवे नहीं उनको सिद्धि साधित वैद्य कहतेहै। अर्थात् विना चिकित्साकरे और बिना चिकित्साकी क्रियाके करे जिनका संसारमें यह नाम होजावे कि अमुक वैद्यकी चिकित्साके बराबर दूसरेकी चिकित्सा (इलाज) नहीं है, और वो इसकर्ममें अत्यंत निपुणहै उसको सिद्धसाधित वैद्य शास्त्रमें कहाहै। [अैसे वैद्य क्या काम करते है कि किसी नवीन सहरमें जाकर आप वैद्यवन बैंठते है,और उसीसहरके अथवा दशवीस अन्य सहरके धूर्त्त मनुष्योंको कुछ लोभदेकर अपनानाम इसप्रकार प्रसिद्धकराते है कि वो उस सहरमें जाकर यह प्रसिद्धी करतेहै कि भाईहौ ये नए वैद्य आएहै इनका भगवान् मंगलकरे कि मेरें वर्षोंसैं कोढका रोग था सो इन्होने दश-

ही दिनमें दूर करदिया। दूसरा मनुष्य कहताकि मेरें महिनोंके पुराने ज्वरको दोतीन पुडियोंमें खोय दिया। तीसरा कहताहैकि मेरे दमेंके रोगको जो बडे २ वैद्य और डाक्टरोसैं अच्छा न होसका उसको इन्होने थोडेहीदिनमें बिलकुल जडसै उखाड दीना परमात्मा इनकी जयकरे, इसी प्रकार कोई कुछ और कोई कुछ रोगका नामलेते है। बस इन दुष्टमनुष्योंके वचनरूप जालमें फसकर उससहरके भोले भाले मनुष्य इनबनेहुए सिद्धसाद्धक वैद्योंके पास खिचेहुअें चलेजाते है। और जब ठगा जाते है तब पश्चात्ताप करते उन दुष्टमनुष्योंकी निंदा करते हुए (जोकि उन वैद्योंकी बडाई करतेथे) चुपहो बैठ रहते है.]

सद्वैद्यकेलक्षण

प्रयोगज्ञानविज्ञानसिद्धिसिद्धाःसुखप्रदाः
जीविताभिषरास्तेस्युर्वैद्यत्वंतेष्ववस्थितम् ॥

अर्थ—प्रयोग (औषध प्रयोग करण) ज्ञान (शास्त्रज्ञान) विज्ञान (लोक व्यवहारज्ञान) सिद्धि (चिकित्साकर्मकी सिद्धी) इन करके जो विख्यातहै। और रोगियोंको सुखकेदेनेवाले वो प्राणाभिषर अर्थात् प्राणरक्षक वैद्य है ये रोगियों करके उपादेय है अर्थात् अैसे वैद्योंसैं अपनी चिकित्सा करानी चाहिये॥

अब प्रसंगवसचरकसैं द्विविध वैद्यवर्णनके वास्ते दशप्राणायतनीया ध्यायकावर्णन करते है॥

अथातोदशप्राणायतनीयमध्यायंव्याख्यास्यामः

अर्थ—अबहम दशप्राणायतनीय अध्यायकी व्याख्याकरैंगे अर्थात् प्राणोके रहनेके दशस्थान जिस्मेंकहे अतएव उसका वर्णन इस अध्यायमें कराजायगा॥

दशैवायतनान्याहुः प्राणायेषुप्रतिष्ठितः।
शङ्खौमर्मत्रयंकण्ठोरक्तशुक्रौजसीगुदः॥
तानीन्द्रियाणिविज्ञानं चेतनाहेतुमामयम्।
जानीतियः सविद्वान्वै प्राणाभिसरउच्यतेइति॥

अर्थ—जिनमें प्राणरहतेहै वो दशस्थान कहे है जैसै—दोनोकनपटी, तीनमर्म, कंठ, रुधिर, शुक्र, ओज, और गुदा, इनदशस्थानमें प्राणरहाकरते है—इनको

और इन्द्रियोंके विज्ञानको तथा चेतनाके हेतुको और रोगको जो जानता है उस विद्वान् वैद्यको प्राणाभिसर अर्थात् प्राणरक्षक वैद्य जानना ॥

अब इसजगे यह जिज्ञासाहुई किप्राणाभिसर किसका नाम है इसवास्ते कहते है ॥

द्विविधवैद्यवर्णनम्

द्विविधास्तुखलुभिषजोभवंत्याग्निवेश-
प्राणानामेकेऽभिसराहन्तारोरोगाणा-
मेकेऽभिसरारोगाणांहन्तारःप्राणिनामिति ।

अर्थ—अब चरकके मतसै दोप्रकारके वैद्य कहते है । महर्षिआत्रेय प्रियशिष्य अग्निवेशको संबोधन देकर बोलेकि हेवत्स ! इसपृथ्वीमें दोप्रकारके चिकित्सक (वैद्य) है, एक प्राणाभिसर अर्थात् प्राणोंके रक्षक और रोगोंके नाशक । दूसरे रोगाभिसर अर्थात् रोगोंके रक्षक और प्राणोंके नाशकर्त्ता ॥

एवं वादिनं भगवन्तमात्रेयमग्निवेशउवाच । भगवंस्ते
कथमस्माभिर्वेदितव्याभवेयुरिति । भगवानुवाच । ये
इमे कुलीनाः पर्यावदातश्रुताः परिशिष्टकर्माणो द-
क्षाः शुचयोजितहस्ता जितात्मानः सर्वोपकरणवन्तः
सर्वेंद्रियोपपन्नाः प्रकृतिज्ञाः प्रतिपत्तिज्ञास्ते प्राणि-
नामभिसरा हन्तारो रोगाणाम् ॥

अर्थ—इसप्रकार आचार्यके वाक्यको श्रवणकर अग्निवेश बोलेकि हेभगवन् ये दोप्रकारके जो वैद्य आपने वर्णनकरे उनको हम किसप्रकार जाने, अतएव अनुग्रह करके उनके लक्षण कहो। तब महर्षि बोले किहे वत्स! श्रवणकर अबमें दोनोप्रकारके वैद्योंके लक्षण वर्णन करताहूं । उत्तम कुलमें जन्म जिन्होंका शुद्ध शास्त्रज्ञान संपन्न, कृतकर्मा (जिन्होंने वैद्यकी क्रिया स्वयं करलीनीहो) कर्मकरनेमें चतुर,–पवित्र,–जितहस्त (चोरीआदि दुष्टकर्मसैं रहित) जिती है आत्मा जिन्होंने,–सर्व चिकित्साकी सामग्री करके युक्त,– सर्व इन्द्रीन् करके युक्त (अर्थात् काँणा,–भैड़ा,–लूला,–लगड़ा,–टोंटा,–इत्यादि लक्षण युक्त नहो) रोगियोंकी प्रकृतिको जानने वाला,–और प्रतिपत्तिवेत्ता अर्थात् ज्ञानी अैसेवैद्य रोगियोंके प्राणोंके रक्षक और रोगोंके नाश करनेवाले होते है ॥

तथाविधाहि केवले शरीरज्ञाने शरीराभिनिवृत्तिज्ञाने-
प्रकृतिविकारज्ञाने च निःसंशयाः सुखसाध्यकृच्छ्रसा-
ध्ययाप्यप्रत्याख्येयानां च रोगाणां समुत्थानपूर्व-
रूपलिंगवेदनोपशयविशेषविज्ञाने व्यपगतसंदेहाः ॥

अर्थ—उसीप्रकार जो शारीर विज्ञान और प्रकृति तथा विकृतिके नियम विषयमें भलेप्रकार जानने वाला, सुखसाध्य, कृच्छसाध्य, याप्य तथा असाध्यरोग समस्तकी उत्पत्ति, पूर्वरूप, लक्षण, पीडा और उपशयज्ञानमें संदेहशून्यहो,

त्रिविधस्यायुर्वेदसूत्रस्य ससंग्रहव्याकरणस्य सत्रिवि-
धौषधग्रामस्य प्रवक्तारः सर्वेषां मूलफलानां चतुर्णां
महास्नेहानां पंचानां लवणानामष्टानां च मूत्राणा-
मष्टानां च क्षीराणां क्षीरत्वक्वृक्षाणां च षण्णां शि-
रोविरेचनादेश्च पंचकर्माश्रयस्यौषधगणस्याष्टाविंश-
तेश्च यवागूनां द्वात्रिंशतश्च सर्वेषां चूर्णप्रदेहानां ष-
ण्णां विरेचनशतानां पंचानां च कषायशतानामि-
तिस्वस्थवृत्तौ च भोजनपाननियमस्थानचंक्रमणश-
य्याशनमात्राद्रव्यांजनधूम्रनावनाभ्यंजनपरिमार्जन-
वेगविधारणाविधारणव्यायामसात्म्येन्द्रियपरोक्षोप-
क्रमसद्वृत्तकुशलाः चतुष्पादोपगृहीते च भेषजे-शोड-
षकले सविनिश्चये सत्रिपर्येषणे-सवातकलाकलज्ञाने
व्यपगतसंदेहाः ॥

अर्थ—जिसका संग्रह तथा व्याकरण एवं त्रिविध (वृद्धिप्राप्तदोषके घटानेवाली, घटेहुएरोगकी बढानेवाली, तथा समभावावस्थित दोषोंके संरक्षक) औषधसहित त्रिस्कंध (हेतु, लक्षण, और औषधज्ञानात्मक) आयुर्वेदमें विशिष्टज्ञान-संपन्न सर्वप्रकारके मूल, फल, चतुर्विधमहास्नेह, पाँचप्रकारके निमक, आठमूत्र, आठ प्रकारके दूध, त्वचामें क्षीरवाले वृक्षोंके तथा छः प्रकारके शिरोविरेचन पंचकर्म संबंधी २८ औषधसमूह, और ३२, प्रकारकी यवागू—सर्वप्रकारके-चूर्ण, और प्रदेहसमस्त, छः सौ विरेचन और पाँचसौं कषाय (काढे) आदि

द्रव्यगण, स्वस्थावस्था भोजन, और पानके नियम, अवस्थान डोलना फिरना, शयन, बैठना द्रव्यादिकोंका परिमाण अंजन, धूमपान, नस्यविधि उवटना, देहकापोंछना उपस्थितरोगका धारण, और अधारण, व्यायाम सात्म्यता, उसीप्रकार, इन्द्रियोंके अप्रत्यक्षस्थलमें क्रिया संपादनका नियम उत्तम आचरणमें इत्यादि सर्वविषयोंको जानमेमें कुशल, पाद चतुष्टयोपगृहीत, औषध तथा सोलहकला करके निश्चित त्रिश्रैषणाका ज्ञाता सवात कलाकल ज्ञानमें संदेहरहित हो॥

चतुर्विधस्यच स्नेहस्य- चतुर्विंशत्युपनयस्य चतुःषष्टिपर्यंतस्य व्यवस्थापयितारो बहुविविधविधान युक्तानां च स्नेह्यस्वेद्यवम्यवि रोच्यौषधोपचाराणां कुशलाः

अर्थ—चार प्रकारकेस्नेह चौवीसप्रकारके उपनय तथा चौसठ पर्यंतका स्थापन करनेको भलेप्रकार जानताहो। अनेक प्रकार विधिकेसाथ स्नेहनीय, स्वेदनीय, वमनीय, और विरेचनीय औषध समस्तोंके प्रयोग विषयमें कुशल।

शिरोरोगादेश्च दोषांशविकल्पज्ञस्य व्याधिसंग्रहस्य संक्षयपीडकाविद्रधेः सर्वेषां च शोफानां बहुविधशोफानुबंधानामष्टचत्वारिंशतश्च रोगाधिकारिणां चत्वारिंशस्य च नानात्वजस्य व्याधिशतस्य तथा विगर्हितातिमलातिकृशानां सहेतुलक्षणोपक्रमाणां स्वप्नस्य च हिताहितस्यास्वप्नातिस्वप्नस्य च सहेतूपक्रमस्य षण्णांचलंघनादीनामुपक्रमाणां संतर्पणापतर्पणज्ञानां रोगाणांस्वरूपप्रशमनानां शोणितज्ञानां च व्याधीनां मदमूर्च्छासंन्यासानां च सकारण रूपौषधानां कुशलाः कुशलाश्च।

अर्थ–शिरोरोग, दोषोंके अंश, विकल्पजात, आदिव्याधिसंग्रह, क्षय, पिडका, विद्रधि, समस्त प्रकारकी सूजन, संपूर्ण सोथोंके १४८अनुबंध मुख्यरोग४०,तथा अनेक प्रकारकी १०० व्याधि, तथा दुष्ट मल, अतिकृशोंके सहेतु लक्षणक्रमोंका जानने वाला, स्वप्नका शुभाशुभ ज्ञाता, सोना तथा अत्यंत सोना इनके सहेतु चिकित्साका ज्ञाता अनुबंध, लंघनादि छः वस्तुओंका उपक्रम, संतर्पण, और

अपतर्पण मद मूर्च्छा और संन्यास, इत्यादि सकल रक्तजन्य व्याधि एवं इनके निदान, लक्षण, और प्रशमक औषध समस्त विषयमें विशेष विज्ञान शाली

आहारविधिविनिश्चयस्य प्रकृत्याहिततमानामाहारविकाराणामग्र्यसंग्रहस्यासवानांच चतुरसीते द्रव्यगुणविनिश्चयस्य रसानुरससंस्रयस्य सविकल्पकवैरोधिकस्य द्वादशवर्गाश्रयस्य चान्नपानस्य सगुणप्रभावस्य सान्नपानगुणस्य नवविधार्थसंग्रहया आहारगतेश्च हिताहितोपयोगविशेषात्मकस्य च शुभाशुभविशेषस्य धात्वाश्रयाणां च रोगाणामौषधसंग्रहाणांच दशानां च प्राणायतनानां यं च वक्ष्याम्यर्थे दशमहामूलीयं त्रिशततमाध्याये तत्र च कृत्स्नस्य च तंत्रोद्देशलक्षणस्य तंत्रस्य च ग्रहणधारणविज्ञानप्रयोगकर्मकार्यकालकर्तृकरणकुशलाः कुशलाश्च ।

अर्थ—आहारकी विधिका निश्चय, प्रकृतिके हिततम आहारविकारोंका ज्ञाता, अग्निसंस्कारसैं वने चौरासी आसवोंके, द्रव्यगुणोंका निश्चय, रसानुरससंशय सविकल्प और उनके विरोधी तथा द्वादशवर्गाश्रित अन्नपानका सगुणप्रभावका तथा अन्नपान आहारगतीके हिताहित उपयोग विशेष शुभाशुभका ज्ञाता, धातु संश्रित रोग सकलकी औषध प्रयोग विषयमें निपुण, तंत्रोक्त निखिल लक्षण और तंत्रका ग्रहण धारण विज्ञान तथा प्रयोगादि विषयमें भलेप्रकार जाननेवाला,

स्मृतिमतिशास्त्रयुक्तिज्ञान आत्मनः शीलगुणै रविसंवादनेन संपादनेन सर्वप्राणिषुचेतसो मैत्रस्य मातृपितृभ्रातृबंधुवदेवं च परंकृपालव इत्थेवं बहुविधगुणयुक्ता भवंत्यग्निवेश प्राणानामभिसराहन्तारोरोगाणामिति ।

अर्थ— स्मृति, बुद्धि, युक्ति और शास्त्रज्ञान संपन्न, एवं सर्वप्राणीमात्रमें मातापिता भैयाकें और बांधवोके समान परम कृपाकरने वाला, इत्यादि समस्त

और इसीप्रकार अन्यान्यबहुगुणविशिष्ट वैद्य प्राणरक्षक और रोगनाशक कहाताहै.

प्राणनाशकवैद्यकेलक्षण

अतो विपरीता रोगाणामभिसरा हन्तारःप्राणिनामिति तेभिषक्छद्म प्रतिछन्ना राज्ञां प्रमादाच्चरंति राष्ट्राणि तेषामिदं विशेषविज्ञानमत्यर्थं वैद्यवेशेन श्लाघमानाविशिखान्तरमनुचरंति कर्मलोभात् श्रुत्वा च कस्यचिदातुर्यमभितः परिपतन्तिगृध्राइव मांसलोभात्, संश्रवणेचास्यात्मनोवैद्यगुणानुच्चैर्वदंति यश्चास्य वैद्यः प्रतिकर्मकरोति तस्य च दोषान् मुहुर्मुहुरुदाहरंत्यातुरमित्राणि च प्रहर्षणोपजापोपसेवाभिरिच्छन्त्यात्मीकर्तुमल्पेच्छतांचात्मनः ख्यापयंतिकर्मचासाद्य मुहुर्मुहुरवलोकयंति दाक्ष्येणाज्ञानमात्मनश्छादयितु कामा व्याधितं चापवर्त्तयतुमशक्नुवंतो व्याधितमेवानुपकरणमपचारिकमनात्मवन्तमुद्दिशंति अन्तगतं चाभिसमीक्ष्यान्यमाश्रयंति देशमपदेशमात्मनः कृत्वाप्राकृतजनसन्निपाते चात्मनः कौशलमकुशलवद्वर्णयन्ति अधीरवच्च धैर्यमपवदन्ते विद्वज्जनसन्निपातं चाभिसमीक्ष्य प्रतिभयमिव कान्तारमध्वगाः परिहरंति।नचैषामाचार्याः शिष्यावा स ब्रह्मचारी वैवादिको वा कश्चित्प्रज्ञायते इति॥

अर्थ—अब दुष्टवैद्यके लक्षण कहते है–कि जो लक्षण कह आएहै इस्सै विपरीत लक्षण वाले वैद्यको रोगाभिसर अर्थात् रोगोंका रक्षक और प्राणोंका नाशक जानना। अेसे कपटीवैद्य छिपेहुए राजाके प्रमादसैं (राजाके बंदोबस्त न करनेसैं) नगर सहरोंमें फिरते है [इसकहने सैं यह प्रयोजन है किएसे दुष्ट वैद्योंको राजा अवश्य दंडदेवे जिस्सैं ए बढे नही] अब इन दुष्टवैद्योंके जाननेके लिये कुछ लक्षण कहते है। कि ये दुष्ट–वैद्यवेशको धारण करे रहते है। और अपनी बडाई आप अत्यंत करते है, और कुछ कर्म वैद्योंकेसे कराकरते है, एवं किसी मनु-

ष्यको रोगी सुनकर इसप्रकार उसके ऊपर गिरते है जैसें मांसके लोभी गीध गिरते है, [इस्सें यह दिखायाकि गीध केवल मांसके लोभसे गिरताहै उसीप्रकार ए छलिया वैद्य द्रव्य और उसरोगीके प्राणहरण करनेको जाते है] प्रत्येक उपायोंको करके उसरोगीके पास पहुंच उसको प्रसन्न करते है,–उसके सुनते ऊँचे स्वरसें पुकारकर अपने वैद्यगुणोंको कहते है,–यदि कोई दूसरावैद्य उसरोगीकी चिकित्सा करताहोवे तो उसके वारंवार दोषोंको कहै अर्थात् इस वैद्यमें ये ये अवगुनहै,–और रोगीके मित्र बांधवोंको अनेक प्रसन्नता–जप–सेवादि कर्मकरके अपनाय लेनेकी चेष्टा करे। और इसप्रकार अपनेको बेपरवाही दिखावें कि रोगीके बांधवोको यह प्रतीत होजावेकि इनको इसके चिकित्सा करनेका कुछ आग्रह नही है,–केवल हमारे कहनेसें लाचारहोकर करते है,–जब रोगी इन दुष्टवैद्योंके हस्तगत होजाताहै तब किसीक्रिया प्रयोगके बिगडनेसें वारंवार क्रियाके फलको देखते है [अर्थात् हमने यह रोगविचारकर इसरोगीको यह औषधदीनी परंतु यह विपरीत गुणवाली क्यों होगई,] इसचिंतामें डूबजाते है। जब रोगी अच्छा न होसके तव अपने दोष छिपानेके निमित्त रोगीको उपकरण विहीन कहै,[अर्थात् हमक्याकरे जो वस्तु रोगीको चाहिये वोतो इसके यहां नहीथी] और यह रोगी अत्याचारी है [पथ्यसें नहीं रहता] और सत्त्वसून्य है, इस प्रकार उस रोगीको दोष देते है। रोगीके मरनेपर अपनेऊपर विपत्यके भयसें छलकरके दूसरे देशमें चलेजाते है [अर्थात् रोगीके मरनेपर उसके बांधव कहीं सरकारमें रपट न करदेवे, अथवा लडनेको तयार न होजावे, इसकारण परदेशको चलेजाते है] और ये सामान्यमनुष्योंके समीप अकुशलके समान अपनी कुशलता और अधीरके समान अपने धैर्यको प्रगट करते है। विद्वानोंके समूहको देखके जैसैरास्ता चलनेवाला मनुष्य घोर वनको त्याग देताहै उसीप्रकार ये दुष्टवैद्य उस बिद्वानोंके समाजको देखकर चलेजाते है इन दुष्टोके न आचार्य (गुरु) जाने जावे, न शिष्य न सहाध्याई न विवादकर्त्ताजाने जावे ॥

मूर्खवैद्योंकेलक्षण

भिषक्छद्मप्रतिछन्ना व्याधितांस्तर्कयन्ति ये ।
वीतंसमिव संश्रित्य वने शाकुन्तिको द्विजान् ॥
श्रुतदृष्टक्रियाकालमात्राज्ञानवहिष्कृताः ।
वर्जनीया हि ते मृत्योश्चरन्त्यनुचरा भुवि ॥

वृत्तिहेतोर्भिषङ्मानपूर्णान् मूर्खविशारदान् ॥
वर्जयेदातुरो विद्वान् सर्पास्ते पीतमारुताः ॥

अर्थ—जैसें वधिकलोग (अहेरकरनेवाला) जाल आदिको लेकर बनमेंजाय एकांतमें बैठकर वधार्थ पक्षी (पखेरुओं) की खोज करता है । उसीप्रकार ये कपटी दुष्टवैद्य किसी सहरमें प्रवेशकर उसजगे रोगी मनुष्योंको ढूंडते हैं । इन दुष्टवैद्योंने किसीगुरुके समीप रहकर कभी किसीचिकित्साका विशेष विवरण सुना नही है । कभी किसीकी चिकित्सा देखी नही चिकित्साका समय नहीं जानते । औषधादिकी मात्राका ज्ञाननही ये संपूर्ण इस वैद्यकविषयमें मूर्ख है । ये मृत्यूकें दूतस्वरूपहोकर पृथ्वीमें विचरते है । ये जिविके हेतु, वैद्याभिमानी, मूर्खतामें कुशल, द्रव्यकेलोभी, अैसे वैद्य बुद्धिवान् रोंगियोंको त्याग करने योग्यहै। तथा पवनभक्षक सर्पके समान भयंकरहै ॥

अबवैद्यकेकुछपालनेयोग्यनियमकहतेहै

भिषजा सर्वथा सर्वप्राणभृतां शर्माशासितव्यम् । अहरहरुत्तिष्ठताचोपविशता च सर्वात्मना चातुराणामारोग्ये प्रयतितव्यम्,जीवितहेतोरपि चातुरानदोग्धव्याः ॥

अर्थ—अब वैद्यके अवश्य प्रतिपालनीय कितनेक नियम वर्णन करते है— जैसें कि चिकित्सक (वैद्य) सर्वतो भावसैं (सबप्रकारसै) संपूर्ण प्राणियोंके मंगलकी आकांक्षा करे [यह न कहे कि कब मनुष्योंकै रोगउठे और कब हमारी जीविका चेते] उठते बैठते अनेक प्रकारके भावकरके और आप क्लेशोंको सहकर सर्वप्रयत्नसैं देह मनवाणी करके रोगीके आरोग्यके निमित्त निरंतर यत्नशील होवे । अपने प्राणभी जाते हो तथापि आतुर (रोगी) को क्लेशित-(दुखित) करके उससैं धन हरण न करे,

मनसापि च परस्वम् निभृतवशेपरिछदेन भवितव्यम् श्लक्ष्णशुल्कधर्म्याशम्य धन्यसत्यहितमितवचसा-देशकालविचारिणास्मृतिमताज्ञानोत्थानोपकरणसंपत्सुनित्यंयत्नवतानकदाचिद्राजद्विष्टानांमहाजनद्विष्टानां वाप्यौषधमनुविधातव्यम् ॥

अर्थ–परस्व(परायाधन)ग्रहण और पराईस्त्रीको धर्षणादि चिंतवनको मनकरकेभी

न करे । वैद्यको शांतवेश धारणकर्ताहोना चाहिये, तथा जडता रहित, निः संदेह, निर्दोष, धर्मात्मा, प्रशंसायुक्त, सत्य, हित, और परिमाणका बोलने वाला होना चाहिये, उसीप्रकार देश, कालकाविचारवान् और स्मृतिमान् होकर सर्वदा ज्ञानके बढानेका उद्योगी होवे, राजा और महात्माआदिके शत्रु मनुष्योंकी कदाचित् चिकित्सा न करे ॥

एवंसर्वेषामत्यर्थं विकृतदुष्टदुःखशीलाचारोपचाराणां मुमूर्षतां तथैवासन्निहितस्वराणांस्त्रीणामनध्यक्षाणां- वा विशेषतस्तु युवतीनां नप्राति कर्त्तव्यम् ॥

अर्थ—जो अत्यंत विकृत होगए हो दुष्ट, दुःशील, तथा दुराचारी आदिका एवं जो मरनेकी इच्छा करताहो, तथा अपनास्वामी (मालिक) अथवा जो अध्यक्ष (सरदारपुरुष) है उनके परोक्षमें (हाजिर न रहते) उनकी स्त्रियोंकी चिकित्सा न करे, और विशेष करके जो स्त्री युवा अवस्था वाली अर्थात् थोडी उमरकी है उनके रोगकी चिकित्सा उनके स्वामीके न होनपर कदाचित न करे ।

आतुरकुलं चानुप्रविशता विदितेनानुमतप्रवेशिना- सार्द्धं पुरुषेणसुसंवीतेनावाक्शिरसास्मृतिमतास्तिमितेनावेक्ष्यावेक्ष्यबुद्ध्यासम्यगनुप्रवेष्टव्यं अनुप्रविश्यचवाङ्मनोबुद्धीन्द्रियाणिनक्वचित् प्रणिधातव्यानि अन्यत्रातुरोपकारार्थां दातुरगतेष्वन्येषुवाभावेषु नचातुरकुलप्रवृत्तयो वहिर्निश्चारयितव्याः ॥

अर्थ—विना आज्ञाके रोगीके घरके भीतर न जावे, रोगीका कोईभी सुहृद संबंधीकी आज्ञाहोय तब घरके भीतर जाय, जब रोगीको देखने जावे तब वैद्यको उचितहै कि शुद्ध ओर उज्ज्वल कपडे पहन देहको ढककर और म-

१ ऐसी स्त्रियोंके इलाजकरनेसैं वैद्यको अपलांछनका भय रहता है । २ बिनाकिसी मालिकके कहे घरके भीतर वैद्य जाय और उसकों कोई वस्तु गुप्तरखनी हो अथवा घरमें स्त्री आदि अंग खोलैं बैठी होतोउस वख्त उनको वो बहुत बुरालगताहै अथवा कोई कारण वस उस रोगीको लाकर बाहरही वैद्यको दिखादेते है यदि ऐसे मौकेपर भीतर जावेतो सिवाय मानिहानिके और वो क्या प्राप्तिकरसक्ताहै ।

स्तकको नीचा झुकाके-स्मृतिमान, शांति स्वरूप, स्थिरबुद्धि, और रोगसंबंधी शास्त्रका चिंतवन करने वाला होना चाहिये । रोगीके घरकी कोईभी छिपी-हुई वात वाहर निकलके किसीके आगे कहे नहीं

ह्रसितंचायुषः प्रमाणंनवर्णयितव्यम् जानतोपित-त्रयत्रोच्यमानमातुरस्यान्यस्यवाप्युपघातायसंपद्य-ते तेनैतदप्यवश्यंचितनीयं यज्जीवनाशाच्छेदात्प्रा-णिनां धैर्यगांभिर्यादि प्रभृष्टाः परंशोचनीयतांया-न्ति अपिचनकश्चिज्जगत्यप्रमत्तो विद्यते, कदाचि-त् व्याधेः साध्यत्वेऽप्यसाध्यताभ्रांतिस्तद्वत् व्या-ख्यानात् तद्वचनप्रतीतोह्यातुर आयुष्मानपिविप-द्यते अतोनानिवार्यहेतुंविनारिष्टलक्षणंप्रकटनीयम् । ज्ञानवतापि चनात्यर्थमात्मनोज्ञानेकथितव्यम् । आ-सादपिकथमानादत्यर्थमुद्विजंत्येके ॥

अर्थ—तथा रोगीके आगे अथवा रोगीके किसी आत्मीय बांधवके आगे जिस्सैं उनको दुःख होय अैंसी रोगीकी भावी (होनहार मृत्यु) को जानकर-भी न कहे, क्योंकि कहनेसैं उस रोगी और उसके बांधवोकी धैर्यता जाती रह-ती है,और वो घवडा जाते है अतएव इस वातको अवश्य याद रखना चाहिये। इस मनुष्य की जीवनआशा टूटीसुनतेही धीरज और गांभीर्यतादि गुण तत्काल चलायमान होजाते है, और वो घोर शोकसागरमें डूव जाते है, इसीसै उस दुष्ट-वैद्य की वरावर दूसरा प्रमत्त और कौन होगा । दूसरा कारण यह है किजिस रोगी-को वैद्यने भ्रमसै असाध्य वताया यदि वो साध्य होय तो उस वैद्यके वा-क्यका विश्वास जाता रहता है । और जिसको वैद्यने भ्रांतीसैं साध्य वताया है

---

३ देहढकने और मस्तक नीचाकरने सैं वैद्यको साधुत्वता प्रगट होती है अन्यथा उद्धत और वेकूफ तथा वदमास जाहिरहोता है । ४ जब वैद्य रोगीके घरमें जाता है तो उसके घरकी सवीभली और बुरीबात इसको जाहिरहो जाती है उस वक्त वा-हर आनके उसकी धूरनउडावे यह वडे भारी ऐवकी वातहै । ५ यदि वैद्यको उस रो-गीका अशुभ कहनेकी ही अतिआवश्यताहो तो उसके किसी बुद्धिवान् बांधवको एकां-तमें ले जाकर कहदेवे ॥

और वो रोगी मरजावे तो फिरभी मनुष्योंको उसके कहनेका विश्वास नहीं रहता अतएव जब तक यह वैद्य अरिष्ठ लक्षणोंको भलेप्रकार न विचार लेवे तब तक भला और बुरा कुछभी न कहे। यद्यपि आप विशेषज्ञानवान्भी है परंतु अपनी बहुत प्रशंसा आप न करे क्योंकि यथार्थ विद्वान और बहुदर्शीके भी मुखसैं आत्मश्लाघा सुननेसैं बहुतसैं मनुष्य उस सें विरागलेआते है अर्थात् फिर उनकी वो श्रद्धा नहीं रहती है। ये वैद्यकोही क्या मनुष्य मात्रको अपनी बडाई आपकरना एक तुच्छता दिखानेकाकारण होता है इससैं अच्छे मनुष्यको आत्म श्लाघा करना त्याज्य है ॥

प्रसंगवसकलियुगियावैद्योंकासिद्धांत

स्वस्थैरसाध्यरोगैश्च जन्तुभिर्नास्तिकिञ्चन।
कातरादीर्घरोगाश्च भिषजां भाग्यहेतवः ॥

अर्थ—स्वस्थ (रोगरहित) और असाध्यरोगवाले प्राणियों करके कुछ नहीं है, किंतु जो कायर (डरपोक) और दीर्घरोगी है वो प्राणी वैद्योंके भाग्यके कारण है। तात्पर्य यह है कि रोगरहित देनेहीका क्या है और जो असाध्य है वो जानता है कि अबमेंमरूंगातो सही फिर इन वैद्योंके ठगाने सें क्या हासिल है। परंतु डरपोक प्राणी तत्काल ही वैद्यके दावमें आजाते है। एवं जो बहुत दिनका रोगी है वोभी नित्य प्रति वैद्यको बुलायेगा तो जबतक पडा रहेगा तबतक कुछन कुछ वैद्यको छीजता ही रहेगा ॥

नातिधैर्यं प्रदातव्यं नातिभितिश्च रोगिणम्।
नैश्चिन्त्यान्नादिमे दानं नैराश्यादेव चांतिमे ॥

अर्थ—वैद्यको उचितहै कि रोगीको अत्यंत धीरजभी नदेय. और न बहुत भयही दिखालावे, क्योंकि यदि अत्यंत धीरज बधाय देवेगा तो वो रोगी यह विचारके कि अबमें अच्छातो होयही जाऊंगा वैद्यको क्यो ठगाऊं। और अत्यंत भयदिखाने सैं वह रोगी मनमें विचारेगा कि अबमें बचनेका तो होई नहीं फिर इस वैद्यको देकर क्यो घरखूका करे जो बचेगा तो बाल बचोंके ही काम आवेगा, अत एव अत्यंत धीरज और अत्यंत भय वैद्य रोगीको न देवे जैसैं रुपे हाथ आवे वो युक्ति करे ॥

चैत क्वार भूले फिरे पटवारी और वैद।
"वैद्यानां शारदीमाता पितातु कुसुमाकरः" ॥

भैषज्यं तु यथाकामं पथ्यं तु कठिनं वदेत् ।
आरोग्यं वैद्य महात्म्यादन्यथात्वमपथ्यतः ॥

अर्थ—वैद्यको उचित है कि रोगीको जो मनमें आवे वोही (धूल, खाक,) की पुडिया बांधके देदेवे, परंतु उसके ऊपर पथ्य कठिन वतावे (जो रोगीसें न वन आवे) यदि अेसा करनेपर उस रोगीको आराम होगया तो वैद्यका माहात्म अर्थात् वैद्यने अच्छा करा है, और आराम नहोवे तो कहि देवे कि हम क्या करे तुमने पथ्यतो किया हिं नहीं [हमनेतो रामवाण दवाई दीनी भाग्य तुह्मारा]

निदानं पूर्वरूपाणि सात्म्यासात्म्यचिकित्सिते ।
सर्वमप्युपदेक्ष्यन्ति रोगिणः सदने स्त्रियः ॥

अर्थ—कदाचित् मूर्खवैद्य अपने मनमें यह विचार करे कि मेंकुछ पढातो हूँ ईं नहीं वहाँ रोगीके रोगका निदान और दवाई क्याकरूंगा उसको कहते है कि भाई तुम बुलानेवालेके साथ जायके उसरोगीके घरमें रोगीके समीप चुपके थोडीदेर वैठतो जाउ फिर तो रोगका निदान (कारण) तथा पूर्वरूप, एवं रोगीका हिताहित, और चिकित्सा (इलाज) ये सब उसके घरकी स्त्री (औरत) अपने आप तुमको वताय देवेगी [क्या आपको जानेमेंभी आलस्य आता है भला अेसी मुफ्तकी जीवका तुमको कबहाथ लगनेकी है] ॥

जृम्भमाणेषु रोगेषु म्रियमाणेषु जन्तुषु ।
रोगतत्त्वेषु शनकैर्व्युत्पद्यंते चिकित्सकाः ॥

अर्थ—जव चारो तरफसें रोग मूं फैलाते है अर्थात् फैलते है और हजारौंप्राणी मरते है तव वैद्य धीरे २ रोगतत्वोंमें बुद्धियुक्ति होते है । तात्पर्य यह है कि तव तक रोग वढते नहीं ओर विशेष मरी नहीं चेते तव तक वैद्य एकदोही दीखते है और जहां रोगवढे तथा मरी चेती फिरतो वैद्यका वजारचेता और सैंकडो नए-नए वैद्य प्रगट होजाते है ॥

प्रवर्त्तनार्थमारंभे मध्येत्वौषधहेतवे ॥
वहुमानार्थमन्तेच जिहीर्षन्ते चिकित्सकाः ॥

अर्थ—प्रथमरोगीका यत्नआरंभ करनेको भेट आदि लेते है, फिर वीचमे कहते है कि अव हमारे पास दवाई नहीं रही यादि कुछ देऊतो दवाई वनावे अेसें कहकर लेते है, और जव अच्छाहोगया तव अंतमें बहुमानार्थ अर्थात् अपनी विदाईके वास्ते वैद्य धनको हरण करते है। रोगी के पास वैद्यके आनेकी देरी है

क्या ए पैसेको छोडते है। कभी नहीं? परंतु इनकेभी गुरू घंटाल हकीम और डाक्टर है "दुलहामरोचाहिये दुलहन मेरा टका तो मोयदे" ॥

बहुश्रुतवैद्यकीप्रशंसा

स्वतंत्रकुशलोऽन्येषु शास्त्रार्थेष्वबहिष्कृतः।
वैद्योध्वजइवाभाति नृपतद्विधपूजितः॥

अर्थ—जो वैद्य वैद्यविद्यामें कुशल है और अन्य ज्योतिष व्याकरणादिमें अबहिष्कृत (थोडा २ जाने) है, वो वैद्य ध्वजाके समान प्रकाश करता है। इसीप्रकार अन्यप्रजाओं करके पूजित राजा शोभित होताहै ॥

(निदानऔषधीऔरसाध्यासाध्यज्ञातावैद्यकोकर्मकीसिद्धि)

यस्तुकर्मविशेषज्ञः सर्वभैषज्यकोविदः।
साध्यासाध्यविधानज्ञ स्तस्य सिद्धिः करे स्थिता ॥

अर्थ—जो वैद्योके कर्ममें विशेष जानताहै और संपूर्ण औषधोंके योग अयोगमें कुशल है, तथा साध्यासाध्य विभागके विधानको जानने वालाहै उसको चिकित्साकी सिद्धि हाथमें है अर्थात् वो तत्काल आराम करसक्ता है ॥

शास्त्र और क्रियाज्ञातावैद्यकीप्रसंशा

दृष्टकर्माच शास्त्रज्ञो वैद्यः स्यात् सिद्धिभागसौ।
एकाङ्गहीनोन श्लाघ्य एकपक्ष इवाद्विजः॥

अर्थ—जो छेदन भेदन आदि कर्म देखचुकाहो और शास्त्रभी पढाहो वो चिकित्सासिद्धीका भागी है परंतु जो एकही वस्तुको जानता है अर्थात् कर्म और शास्त्र इनमेंसैं एकके जाननेवाला वैद्य प्रसंशाके योग्य नहीं है। जैसै एक पांखका पखेरु तात्पर्य यह है कि एक पंखसैं जैसै पक्षी नहीं उडसके उसीप्रकार एकवस्तु जाननेवाला वैद्य चिकित्सा नहीं करसक्ता ॥

चतुर्विधज्ञानवान्वैद्यकोराजात्व

हेतौ लिंगप्रशमने रोगाणामपुनर्भवे।
ज्ञानं चतुर्विधं यस्य सराजाद्भिषक्त्तमः॥

अर्थ—रोगोंकाहेतु (आदिकारण) रोगोंके लक्षण, और उनरोगोंका नाश करना, तथा जैसैं नाशहुए रोग फिर इसप्राणीकी देहमें कभी प्रगट नहो ऐसा उपाय करना ये चार प्रकारका जिसको ज्ञानहै वह सब वैद्योंका राजा है ॥

षड्गुणयुक्तवैद्यकीप्रसंशा

विद्यावितर्को विज्ञानं स्मृतिस्तत्परताक्रिया ।
यस्यैते षड्गुणा स्तस्य नसाध्यमतिवर्त्तते ॥

अर्थ—विद्या, वितर्क, विज्ञान, स्मरण, और उसीकर्ममें तत्पर होजाना एवं क्रिया यह षडगुणसंपन्न वैद्यसैं साध्यव्याधि कदाचित् नहीं रहती अर्थात् तत्काल दूर करदेताहै ॥

वैद्यशब्दप्राप्तीकाकारण

विद्या मतिः कर्मदृष्टिरभ्यासः सिद्धिराश्रयः ।
वैद्यशब्दाभिनिषत्तावलमेकैकमप्यदः ॥
यस्यत्वेतेगुणाः सर्वेसन्तिविद्यादयः शुभाः ।
सवैद्यशब्दंसद्भूत महन्प्राणिसुखप्रदः ॥

अर्थ—विद्या, मति, कर्मदृष्टी, वैद्यकर्मका अभ्यास तथा उसकर्मकी सिद्धि और आश्रय ये एक २ वैद्य शब्द प्राप्तहोनेमें वल कहिये कारण है जिसवैद्यमें ये संपूर्ण विद्यादिगुण है वो वैद्यशब्दको प्राप्तिहो प्राणियोंको सुखदाई जानना । इसश्लोकका तात्पर्ययही है किजो विद्या विनयआदि गुणयुक्त है उसीको वैद्यकहनाठीक है मूर्खको नहीं वोउनमें है कि “ वैद्यराज नमस्तुभ्यं यमराजसहोदरः । यमस्तु हरातिप्राणान् वैद्यः प्राणान् धनानिच ” ॥

गुरुमुखपठितवैद्यकोवैद्यत्व

शास्त्रं गुरुमुखोद्गीर्ण मादायोपास्य चासकृत् ।
यः कर्मकुरुते वैद्यः स वैद्यो ऽन्ये तु तस्कराः ॥

अर्थ—जो गुरुमुखसैं शास्त्रको पढके और उसके तात्पर्यको विचारके अथवा उसके कर्मोंको सीखकर जो कर्म कर्ता है वो वैद्य हैं और बाकीके चोर है ऐसा जानना ॥

पूज्यवैद्यकेलक्षण

शीलवान्मतिमान्युक्तो द्विजातिः शास्त्रपारगः ।
प्राणिभिर्गुरुवत्पूज्यः प्राणाचार्यः सहि स्मृत ॥

अर्थ—शीलवान् और बुद्धिवान् द्विजाती तथा शास्त्रमें पारंगत ऐसा वैद्य प्राणियों करके गुरुके समान पूज्यहै क्योंकि ऐसा वैद्य प्राणोंका आचार्य है।

जीवनदानको श्रेष्टत्वकथन

धर्मार्थ सद्दशस्तस्यदातानेहोपलभ्यते।
नहिजीवितदानाद्धि दानमन्यद्विशिष्यते॥

अर्थ—धर्म, अर्थ और कामका दाता उसके वरानही है कि जिसने जीवनदानकर। कारण यहहैकि जीवन दानके समान दूसराकोईभी दाननही है।

परोपकारत्वकथन

परोभूतदयाधर्म इतिमत्वाचिकित्सया।
वर्त्तते यः ससिद्धार्थः सुख मत्यंत मश्नुते॥

अर्थ—प्राणियोंके दया धर्म परयह वैद्यकशास्त्र है अेसाविचारके जो चिकित्सामें वर्तता है वह सिद्धार्थ है और अत्यंत सुखको भोगे है॥

वैद्यकोदानित्वकथन

धर्मस्यार्थस्य कामस्य त्रैलोक्यस्याभयस्यच।
दातासंपद्यते वैद्यो दानादेह सुखायुषाम्॥

अर्थ—देह सुख, और आयु इनकेदेनेसैं धर्म, अर्थ, काम, और त्रिलोकी को अभय का दाता वैद्य कहलता है॥

दारुणैःकृष्यमाणानां गदै र्वैवस्वतक्षयम्।
छित्वावैवस्वतान्पाशान्जीवितंच प्रयच्छति॥

अर्थ—दारुणरोगोंकरके यमपुरीको खीचे हुऐ मनष्यकी जमफांसोंको छेदनकर यह वैद्यइन प्राणियोंको जीवनदेता है। अतएव इस वैद्यके समान धर्मार्थका दाता दूसरानहीं है क्योंकि जीवनदानसैं वढकर संसारमें दूसरादानकौ नसा है॥

चिकित्साकरनेकापुण्य

कपिला कोटिदानाद्धि यत्फलं परिकीर्तितम्।
तस्मात्कोटिगुणंपुण्यं मेकातुरचिकित्सया॥

अर्थ—करोड कपिलागौदान करनेसैं जिस फलकी प्राप्ति होती है, उस्सैभी करोड गुणा अधिक पुण्य एकरोगीकी चिकित्सा (इलाज) करनेसैं होता है.॥

अन्यच्च

धर्मार्थकाममोक्षाणा मारोग्यंमूल मुत्तमम् ।
तस्मादारोग्यदानेन नरोभवति सर्वदः ॥

अर्थ—धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष इन पुरुषार्थ चतुष्टयोंका मूलकारण आरोग्यताहै । इसीसे आरोग्य दान करके यह प्राणी सब वस्तुकी दाता होता है । चाहिये सब दानकरो और चाहिये तो रोगीका यत्न करो दोनोंका फल बराबर है ॥

ग्रन्थांतरेच

अप्येकंनीरुजीकृत्यव्याधितं भेषजैर्नरः ।
प्रयातिब्रह्मसदनं कुलसप्तकसंयुतः ॥

अर्थ—एकभी रोगीको औषधी करके रोगरहित करनेसैं यह प्राणी अपने सात कुलोंको संग लेकर ब्रह्मलोकको जाताहै । तात्पर्य यह है कि वैद्य आप तो तरताही है परंतुचिकित्साके प्रभावसैं अपनी सात पीढी (पुस्तों) को तार देताहै

अपिमूलेनकेनापि मर्दनाद्यै रथापिवा ।
सुस्थीकृतं लभेन्मर्त्यः पूर्वोक्तं लोकमुत्तमम् ॥

अर्थ—किसीएक जडीबूटीसैं अथवा तैलादि मर्दनसैं जो वैद्य रोगीको अच्छा कर्त्ता है वह पूर्वोक्त उत्तम लोक (ब्रह्मलोक) को प्राप्त होता है ॥

प्रमाणांतर

धर्मार्थौ कीर्ति मत्यर्थं सतां ग्रहण मुत्तमम् ।
प्राप्नुयात्स्वर्गवासंच हितमारभकर्मणा ॥

अर्थ—जो वैद्य प्राणियोंका चिकित्सा करता है वह धर्म अर्थ–कीर्ती–और महात्माओं करके ग्राह्य स्वर्गवासको प्राप्तहोता है ॥

सर्वत्रवैद्यवृत्तिकाकथन

नदेशोमनुजैर्हीनोनमनुष्यानिरामयाः ।
अतः सर्वत्रवैद्यानांसुसिद्धाएववृत्तयः ॥

अर्थ–ऐसाकोईसाभी देशनही है जो मनुष्यों सैं रहित हो और जहां २ मनुष्य है वहां२ वो रोग रहितनही है, अर्थात् थोडे और वहुत अवश्यरोगीहोवेगे इसी कारण सर्वत्र वैद्योंकी वृत्ति तो सिद्ध है अर्थात वनीवनाई तयार है कहीं जाओं

न प्राणिरहितो देशो न च प्राणिनिरामयः।
तस्मात्सर्वत्रभिषजांकल्पिताएववृत्तयः ॥

अर्थ—ऐसा कोई सा देश नहीं है कि जहां प्राणी (मनुष्य) नही रहते, और प्राणी रोगरहित नहीं है अर्थात् सर्वत्र मनुष्य रोग पीडित है, इसी कारण वैद्योंकी वृत्ति सर्वत्र कल्पित है अर्थात् सर्वत्र मौजूदहै [जिसदेशमें जायगा उसीदेशमें वैद्यकी चाहहै] ॥

रोगके अंतमें वैद्यपूजन

चिकित्सितशरीरं योननिष्क्रीणाति दुर्मति।
सयत्करोति सुकृतं तत्सर्वंभिषगश्नुते ॥

अर्थ—जो दुष्टबुद्धि रोगी अपने चिकित्सित शरीरको धनादि दान देकर उऋण नहीं करता, वह जो कुछ सुकृत (पुण्य) करता है वह सब वैद्यको प्राप्त होता है। अतएव रोगीको उचित है कि इस लोक और परलोक की भलाईकेवास्ते अपनी यथा शक्ती धन, रत्न, वस्त्रादिक देकर वैद्यको प्रसन्नकरे। अन्यथा वह कृतघ्नियोंकी गणनामें है ॥

योरोगीभिषजं सम्यक् रोगशांतौ न पूजयेत्।
तस्यार्जि तस्य पुण्यस्य प्राप्नोत्यर्द्धं भिषग्वरः ॥

अर्थ—जो रोगी रोग शांतहोनेपर वैद्यका पूजन नहींकरे, अर्थात् धनवस्त्रादि देकर संतुष्ट नहीं करता उसके संचितपुण्यकाआधाभाग वैद्यको आप्तहोता है। यदि रोगी कुछ नदेवे तो हे भिषग्वरहो! तुम इसी वाक्यपर संतोषकरो ॥

चिकित्साकाफल

क्वचिदर्थः क्वचिन्मैत्री क्वचिद्धर्मःक्वचिद्यशः।
कर्माभ्यासः क्वचिच्चापिचिकित्सानास्तिनिष्फला ॥

अर्थ—कहीं अर्थ (धनकीप्राप्ति) कहीं मित्रता, कहीं धर्म, कहीं यशकी प्राप्ति, और कहीं चिकित्सा करनेसैं कर्मकाही अभ्यास होता है—इत्यादि कारणोंसैं चिकित्सा निष्फल नहीं है किंतु सफलही है. ॥

चिकित्साकाफल

सनातन त्वाद्वेदाना मक्षर त्वात्तथैवच।
तथादृष्टफलत्वाच्च हितत्वादपि देहिनाम् ॥

वाक्समहार्थविस्तारात्पूजितत्वाच्चदेहिभिः ।
चिकित्सितात्पुण्यतमं नकिंचिदपि सुश्रुमः ॥

अर्थ—वेदोंके सनातन और अबिनाशी होनेसैं–तथा प्रत्यक्ष फल दिखानेसैं और प्राणीमात्रको हितकारी होनेसैं–तथा वाणीसमूहोंके कारण एवं देहधारी-योंको माननीयहोंने सैं हम चिकित्सासैं वढकर दूसरा पुण्यतम वस्तुनहीं सुना–यह सुश्रुतमें लिखा है ॥

वैद्यकोशीक्षा

स्त्रीभिः सहास्यं संवादं परिहासं च वर्जयेत् ।
दत्तं च ताभ्यो नादेय मन्नादन्यद्भिषग्वरैः ॥

अर्थ—वैद्यका उचित है कि स्त्रियोंके साथ एक जगे बैठना उनसैं वातची तकरना एवं उनसैं हंसी ठटोरी करना त्यागदेवे।तथा अन्नके सिवाय और कोई-सी वस्तुस्त्रियों सैं न लेवे, तात्पर्य यह है कि रोगीके यहाँ स्त्रियोंके साथ वैठना हांसीठटोरी करना और कोई वस्तु लेनेसै अन्य मनुष्यको यह प्रतीत होगी की इस रांडसैं इस वैद्यकी कुछ सट्टलग रही है ॥

नसुप्याद्रोगिसदने नभुंजीयात्कदाचन ।
विनाह्वानं न गच्छेच्च न ब्रूयान्मरणं भिषक् ॥

अर्थ—वैद्यको कदाचित् रोगीके घरमें न सोना चाहिये, और नरोगीके घर में भोजनकरे, एवं विनाबुलाए रोगीके यहां कदाचित् न जावे, तथा रोगीका मरण जानकरभी न कहे [ये पूर्वोक्त कर्म वैद्यकी प्रतिष्टा हानि कारक है] ॥

प्राणीकोवैद्यशब्दकीप्राप्ति

विद्यासमाप्तौ भिषजो द्वितीयाजातिरुच्यते ।
अश्नुते वैद्यशब्दंहि न वैद्यपूर्वजन्मना ॥

अर्थ—इस भिषक्को विद्याकी समाप्तिमें द्विजाती जाति कहते है, अर्थात् दुसरी जातिहोजाता है, तव यह वैद्य शब्दको प्राप्तहोता है किंतु जन्मलेने मात्रसैंही वैद्य नहीं कहलाता ॥

वैद्यमात्रकोद्विजत्व

विद्यासमाप्तौ ब्राह्मं वा सत्वमार्षमथापि वा ।
ध्रुवमाविशति ज्ञानात्तस्माद्वैद्यो द्विजस्मृतः ॥

अर्थ—आयुर्वेद विद्याकी समाप्तिमें ज्ञानहोनेके कारण इस प्राणीमें ब्राह्मसत्व अथवा ऋषिसत्व अवश्य प्राप्त होता है अतएव इस वैद्यको शास्त्रमें द्विजकहा है

वैद्यकेप्रतिरोगीकावर्त्ताव

नाभिध्याये न्नचाक्रोशेदहितैर्न समाचरेत् ।
प्राणाचार्यम्बुधः कश्चिदिच्छन्नायुरनित्वरम् ॥

अर्थ--इस वैद्यका किसी प्रकार दुष्टचितवन न करे, न गालीदे, तथा जिसमें वैद्यका अहितहोवे सो कर्मभी न करे, क्योकी यह प्राणाचार्य है । अतएव आयुकी इच्छा करने वाला बुद्धिमान् पुरुष वैद्यको सदैव प्रसन्नराखे ॥

कहकरनदेनेमेंअधर्मित्व

चिकित्सितस्तु संश्रुत्ययोवासंश्रुत्यमानवः ।
नोपाकरोतिवैद्याय नास्ति तस्येह निस्कृति ॥

अर्थ—जोरोगी वैद्यको देनाकरके नही देता अथवा किसीप्राणीको जो वस्तु देनी कहके नही देता, अर्थात् देनेसै उऋणनही होता उस अधर्मीके पापकी निष्कृति कहीं नहीं है ॥

वैद्यकेधर्म

भिषगप्यातुरान्सर्वान् स्वसुतानिव यत्नवान् ।
आबाधेभ्योहिसंरक्षेदिच्छन्धर्ममनुत्तमम् ॥

अर्थ—अबवैद्यके धर्मकहते है कि वैद्यभी उत्तम धर्मकी इच्छा करता, संपूर्ण रोगियोंको अपने पुत्रके समान रोगोंसैं रक्षाकरे ॥

अनाथान् रोगिणो वैद्यः पुत्रवत्समुपाचरेत् ।

अर्थ—अनाथ रोगियोंको वैद्य अपने पुत्रके समान चिकित्सा करे । अर्थात् यदि उनके पास भोजनको न होवेतो भोजनको देय, और औषधको द्रव्य न होवे तो आप उस औषधको मगायके देवे ॥

प्राणाचार्यश्च पितृवत्संपूज्यः शक्ति भक्तितः ॥

अर्थ—रोगी–रोगनिमुक्त होनेपर प्राणाचार्य (वैद्य) को अपने पिताके समान अपनी यथा शक्तिसैं पूजनकरे [कि जिस्सैं वैद्य प्रसन्नहोकर और आशीर्वाद देवे जिस्सै फिर रोगी नहो] ॥

धर्मार्थनार्थकामार्थ मायुर्वेदोमहर्षिभिः ।
प्रकाशितो धर्मपरै रिच्छद्भिः स्थान मुत्तमम् ॥

अर्थ—धर्मपर महर्षियोंनें उत्तमलोककी इच्छा करके यह आयुर्वेदशास्त्र धर्मार्थ प्रकाशकरा है किंतु कामनाके अर्थ नहींकरा, अतएव सब वैद्योंको उचित है कि इस अमूल्य पदार्थको तुच्छ कामना ओंमें न लगावे] ॥

नार्थार्थं नापिकामार्थं अथभूतदयांप्रति ।
वर्त्ततेय श्चिकित्सायां ससर्वमतिवर्त्तते ॥

अर्थ—यह आयुर्वेद शास्त्र-धनएकत्र करनेको अथवा इसके द्वाराअनेक काम भोगना-इसके वास्तेनहीं है किंतु जो चिकित्सामें प्राणियोंकीदया विचारके यत्न करता है वह वैद्यसबमें श्रेष्ट है ॥

नैवकुर्वीतलोभेनचिकित्सापण्यविक्रयम् ।
ऐश्वराणांवसुमतां लिप्सेतार्थंतुदत्तये ॥

अर्थ—इस वैद्यको उचितहै कि जोऐश्वर्य संपन्न अर्थात् सेठसाहूकार राजा बाबू है उनसें अपने वृत्तिके लगनेको लोभके वसहो चिकित्साका पण्यविक्रय (दुकानदारी) नकरे अर्थात् इसरोगीसें इतनेही रुपालेकर यत्न (इलाज) करैंगें। क्यो कि वडे आदमी साले क्या देवैंगे. उनसै द्रव्यलेना अैसाहै जैसै जवाहिरको कोडियोंमे वेचना ॥

वृत्यर्थंचिकित्साकरनेकानिषेध

कुर्वते येतुवृत्यर्थंचिकित्सापण्यविक्रयम् ।
तेहित्वाकाञ्चनंराशिं पांशुराशि मुपासते ॥

अर्थ—जो प्राणी वृत्ति (जिविका) केअर्थ चिकित्साकी विक्रीकरते है वो सुवर्णकी रासको छोडके धूलमिट्टी कीरासको ग्रहण करते है ॥

अप्येकंनीरुजं कृत्वाजन्तुंयादृशतादृशम् ।
आयुर्वेदप्रसादेन किंनदत्तं भवेद्भुवि ॥

अर्थ—वैद्य आयुर्वेदके प्रतापसें जैसें तैसें एकभी रोगीको नैरोग्यकरता है उसने या पृथ्वीमें क्या वस्तु नहीं दीनी, अर्थात् वो सब वस्तु दे चुका अब कुछभी देना वाकी नहीं रहा 'आयुर्वेद प्रसादेन' इस पदके धरनेसैं यह प्रयोजन

है । कि आयुवेद पढकर रोगोंका निश्चय करके जिसने यत्नकरा उसको सर्वदा नीकी पदवी प्राप्त होसक्ती है किन्तु मूर्ख वैद्य भलेही सैंकडों रोगियोंका यत्न करके अच्छा करदे परंतु अधर्मकाही भागी होगाक्योंकि बिना पढेसैं चिकित्सा कराना निषेध लिखाहै ॥ सो आगे कहेंगे " औषधं मूढ वैद्यानामित्यादि "॥

शस्त्रादिविशोधन

शस्त्रं शास्त्राणि सलिलं गुणदोषप्रवृत्तये ।
मात्रापेक्षीण्यतः प्रज्ञां चिकित्सार्थं विशोधयेत् ॥

अर्थ—शस्त्र, शास्त्र, जल, ये मात्राकी अपेक्षाकरते है अतएव इनको गुणदोषकी प्रवृत्तिके अर्थ और चिकित्साके अर्थ वैद्य शोधनकरे । तहां शस्त्र, शास्त्र और जलको चिकित्साकेवास्ते शुद्ध(उज्वल) करे । एवं गुणदोष प्रवृत्तिके वास्ते प्रज्ञाका शोधन करना चाहिये ।

शास्त्रंज्योतिः प्रकाशार्थं दर्शनंबुद्धिरात्मनः ।
ताभ्यांभिषक् सुयुक्ताभ्यांचिकित्सन्नापराध्यति ॥

अर्थ—ज्योति प्रकाशार्थ शास्त्र-और आत्मकीबुद्धि दर्शनकेअर्थ-इन दोनो (शास्त्र और बुद्धि) करके युक्त होकरजो वैद्य चिकित्साकरता है वह चिकित्सा कर्ममें कदाचित् नही चूके अर्थात् उसकी चिकित्सा ठीकहोती है ॥

चिकित्सितेत्रयः पादा यस्माद्वैद्यव्यपाश्रयाः ।
तस्मात्प्रयत्नमातिष्ठेद्भिषक्स्वगुण संपदि ॥

अर्थ—चिकित्साके तीनो पैर वैद्यके आश्रित है अतएव वैद्यकोभी उचित है कि वह अपनेगुण संपत्तिमें यत्नपूर्वक स्थित रहै । तात्पर्य यह है कि रोगी दूत और औषधी ये सव वैद्यके आधीन है यदि वैद्यही मूर्ख हुआ तो फिरये कुछ कामके नही है इसी सें वैद्य-विद्या और वैद्यकर्ममें कुशलरहे ॥

वैद्यकीचतुर्विधवृत्ति

मैत्रीकारुण्यमार्त्तेषु शक्येप्रीतिरुपेक्षणम् ।
प्रकृतिस्थेषु भूतेषवैद्यवृत्तिश्चतुर्विधा ॥

अर्थ—अव वैद्यकी चतुर्विधवृत्ति कहते है कि रोगियोंमे मैत्रभाव और करुणाकरे, तथा जो प्रकृतिस्थ प्राणी है अर्थात् रोगहीन है उनमें प्रीति और सावधानीसैं देखना ॥

अश्विनावग्निरिंद्रश्चवेदेषुसुतरांस्तुताः ।
वैद्यावित्यश्विनौदेवौपूज्येतेविबुधैरपि ॥

अर्थ—वेदमें अश्विनीकुमार–अग्नि–और इन्द्र–निरंतर स्तुति करे गए है। वे अश्विनीकुमार वैद्य है सो देवता ओंकरकेभी पूजेजाते है। फिर औरोंको तो अवश्य पूजने चाहिये ॥

अजरै रमरैर्नित्यं सुखितैरेवमादृतैः
व्याधिमृत्युजराग्रस्तैर्दुःखप्रायैः सुखार्थिभिः ।
किंपुनर्भिषजोमर्त्यैः पूज्याःस्युर्नात्मशक्तितः ॥

अर्थ—जव अजर अमर और सदैव सुखित देवता ओंकरके वैद्य पूजे जाते है तो फिर व्याधि, मोत, औरवृद्धावस्था करके ग्रसित दुखिया और सुखकी इच्छा करने वालें अेसैं मनुष्योंको वैद्य अपनी शक्तिके माफिक क्या नही पूजने चाहिये किंतु सर्वथा पूजनेही चाहिये ॥

चिकित्सासिद्धीयोग्यवैद्य

यस्तुरोगविशेषज्ञः सर्वभैषज्यकोविदः ।
देशकालविभावज्ञस्तस्यासिद्धिर्नसंशयः ॥

अर्थ—जो वैद्य रोग विशेषोंको जानता है अर्थात् संपूर्ण रोगोंको जानता है और संपूर्ण औषधोंके बनानेमें चरतु है तथा देशकालके विभागोंको जानने वाला है उसको चिकित्सा कि सिद्धिमें कुछभी संशय नही अर्थात् ऐसे वैद्यको तो सिद्धिअवश्यहीहोती है ॥

(वैद्यशास्त्रपठितको चिकित्साकरनेका अधिकार)

आयुर्वेदं ततोऽधीत्य सकाशात्सद्गुरोर्भिषक् ।
चिकित्सांरोगिणांकुर्यादन्यथा पाप भाग्भवेत् ॥

अर्थ—वैद्य–गुरूसै आयुर्वेद शास्त्रको पढकर रोगियोंकी चिकित्साकरे अन्यथा पापका भागी होता है [तात्पर्य यह है कि केवल अमृतसागर आदि बांचकरही वैद्य मत वनो भाइयों कुछ गुरुमुखसैभी पढो जिस्सैं ज्ञान और प्रतिष्ठाकी प्राप्ति हो] ॥

अन्नजलऔरचिकित्सादानकाफल

अन्नदो जलदश्चैव आतुरस्यचिकित्सकः

त्रयस्ते स्वर्गमायांति विनायज्ञेनभारत ! ॥

अर्थ—हेभारत ? अन्नदाता जलदाता और रोगीकी चिकित्सा करने वाला एतीनोप्राणी विनायज्ञकीये ही स्वर्गकोजाते है। तात्पर्य यह है इन तीनों प्राणियों को विनायज्ञ करने परभी यज्ञ करनेका फलप्राप्तहोता है।यह प्रमाण भारतके शांतिपर्वमें लिखा है, फिर न मालूम वडे२ पंडित, वैद्यवृत्तीकोक्यो दोषारोपण करतेहै।

राजाकोवैद्यादिचतुष्टयोंकानित्यदर्शन

वैद्यःपुरोहितो मन्त्रीदैवज्ञश्चचतुर्थकः ।
द्रष्टव्याः प्रातरेवैतेनित्यंश्रेयोविवृद्धये ॥

अर्थ—औरभी लिखा है कि राजा अपने कल्याणकी वृद्धिके लिये नित्यप्रातःकाल उठकर वैद्य–पुरोहित–मंत्री–और चतुर्थदैवज्ञ (ज्योतिषी) का दर्शनकरे । येभीप्रमाण धर्मशास्त्रका है–देखोंमित्र ? इसश्लोकमें भीप्रथम वैद्यका दर्शन करना लिखता है, इसीसैं आयुर्वेदमें इस वैद्यका नाम प्राणाचार्य लिखा है जोप्राणोंसैंद्वेषकराचाहे वोवैद्यसैं भलेही द्वेषकरे जैसैनीचेके श्लोकमें लिखते है ॥

गतश्रीर्गणकान् द्वेष्टि गतायुश्चचिकित्सकान् ।
गतश्रीश्च गतायुश्च ब्राह्मणान्द्वेष्टिभारत ॥

अर्थ—गई है श्री (संपत्य वा शोभा)जिसकी वो ज्योतिषीयोंसैं द्वेष (वैर)करता है। गतायु अर्थात् गई है आयु जिसकी (मरणासन्न) वोवैद्यों सैं द्वेष (वैर) करता है । और हेभारत ? गतश्री और गतायु ऐसाप्राणी ब्राह्मणोंसैं द्वेषकरता है (हमब्राह्मण उसीको कहेगे कि जो ब्राह्मणवंशमें प्रगटहुआ हो और विद्यापढा हो) केवलविद्याभ्यासी अथवा केवल ब्राह्मण कुलमें जन्म होनेसैं ब्राह्मणनही होता तथापि विद्याहीन ब्राह्मण सैं पढा हुआ क्षत्री वैश्य उत्तम है तथा शूद्रभी वनिस्वत विना पढेसै पढाहुआ उत्तम है ॥

(विनाशास्त्रप्रायश्चित्तादिकथनमेंब्रह्महत्याकेपापकीप्राप्ति)

प्रायश्चित्तं चिकित्सांच ज्योतिषं धर्मनिर्णयम् ।
विनाशास्त्रेणयोब्रूयात्तमाहु र्ब्रह्मघातकम् ॥

अर्थ—प्रायश्चित्त, चिकित्सा, ज्योतिष, और धर्मकानिर्णय इनको जो विनाशास्त्रप्रमाणके कहता है, उसको बडे २ मुनीश्वर ब्रह्महत्याराकहते है। तहां प्रायश्चित उसको कहते है कि जो पापीके वास्ते दंडकल्पना (कृच्छ्रचांद्रायणादि) है

चिकित्सा उसको कहते है जोरोगीके आरोग्यकरनेको निर्णयकरीजावे जैसै औषध और चीरनाफाडनाआदि। ज्योतिषकरके इसजगे ग्रहादिकों का फल तथाप्रष्णादिक जानने। और धर्मनिर्णय (एकादशी जन्माष्टमीआदि व्रतों कानिर्णयआदि) जानना। इनके उदाहरण दिखाते है. जैस किसीपुरुषने चांडालादिकका अन्न भोजनकरा अवशास्त्रसैं तो उसका निश्चयनकरा किंतु जोजातीमें पंचहै उन्होने कह दियाकि१००रुपे हमको देउ हमतुझकोजातमें लेलेवेगे, वस जहाँ उनको रुपेदिये और उन्होने कही जा मूंड मुडाय जनेऊ पलट अमुक देवके आगे दियाधरआ, और जात जिमायदे, तो यह शास्त्रविरुद्ध प्रायश्चित्तहुआ। एवं विनारोगका और औषधका निर्णय हुए औषधदेना ये शास्त्र विरुद्ध चिकित्साहुई। एवं विनाग्रह गोचर दशांतर्दशाके कहदेना कि तुझको मारकेश है अथवा अटकलपंजे प्रष्णवतानेलगे वा तिथिवार वतानेलगे,तोयह शास्त्रविरुद्ध ज्योतिष हुआ इसीप्रकार विनाशास्त्रके जाने सूतकादिका निर्णयकरना ये शास्त्र विरुद्ध धर्मनिर्णयहुआ॥

गुणयुक्तपादचतुष्टयोंकीप्रशंसा

गुणवद्भिस्त्रिभिः पादैश्चतुर्थो गुणवान् भिषक्।
व्याधिमल्पेन कालेन महांतमपि साधयेत्॥

अर्थ—गुणवान् तीनपैर (रोगी, औषधि, और परिचारक) करके और चोथा गुणवान् वैद्य घोरव्याधिकोभी शीघ्रही साधन करसक्ताहै, अर्थात् बढीहुई भी व्याधिको शीघ्र रोक सके है॥

शास्त्रऔरबुद्धिद्वाराकर्मकरनेकीआज्ञा

प्रदीपभूतशास्त्रेण दर्शिता विपुलामतिः।
ताभ्यां भिषक्तुयुक्ताभ्यां चिकित्सन्नापराध्यति॥

अर्थ—शास्त्रहै सो दीपक रूपहै उसने विशेष बुद्धि दिखाई है। अर्थात् जैसैं दीपक अंधकारकी वस्तुको दिखाता है उसी प्रकार शास्त्रनें अज्ञानांधकारसैं ढकी हुई बुद्धिको बढायके दिखाई, इन दोनो अर्थात् शास्त्र और बुद्धिसैं भलेप्रकार मिलकर जो चिकित्सा करताहै वो कदाचित् नहींचूके॥

उत्तमवैद्यकेलक्षण

येतु शास्त्रविदोदक्षाः शुचयः कर्मकोविदाः।
जितहस्ता जितात्मानस्तेभ्यो नित्यंकृते नमः॥

अर्थ— अब उत्तमवैद्यकी प्रसंसा करते है कि जो शास्त्रज्ञ, चतुर, पवित्र, चिकित्साकर्ममेंनिपुण, जितहस्त, और जिती है आत्माजिन्होने ऐसें उत्तम वैद्योंके अर्थ हमारी नित्य नमस्कारहै ॥

निदानरहितवैद्यकोकर्मकीअसिद्धि

यस्तु रोगमविज्ञाय कर्माण्यारभते भिषक् ।
अप्यौषधविधानज्ञ स्तस्य सिद्धिर्यदृच्छया ॥

अर्थ—जो रोगकी परीक्षाके विना चिकित्सा करताहै यद्यपि वो औषध विधानमें प्रवीणभी है परंतु फिरभी उसको सिद्धीकीयथेच्छाहै अर्थात् चिकित्साकरनेसैं रोगी अच्छाहोय चहिये नहोवे ॥

विनापठित वैद्यकी निंदा

अविज्ञायतुशास्त्राणि भेषजं कुरुते भिषक् ।
यमएव सविज्ञेयः मर्त्यानां मर्त्यरूपधृक् ॥

अर्थ—जो विनाशास्त्र पढे औषध करता है वो मनुष्योंमें मनुष्यका रूपधारणकर्त्ता साक्षात् यमराज है ।

मूर्खवैद्यकाहास्य

पाणिचाराद्यथा चक्षुरज्ञानाद्भीतभीतवत् ।
नौर्मारुतवशे वाज्ञा भिषक्चराति कर्मसु ॥

अर्थ—विनानेत्रके अंधापुरुष हाथपैरोंको जैसे डरता हुआ धीरे धीरे धरता है और जैसे पवनके प्रबल वेगसैं नौका (जिहाज) जैसे समुद्रमें मारा २ डोलताहै उसीप्रकार मूर्खवैद्य चिकित्साकर्ममें चलता है ॥

वैद्याभिमानीमूर्खवैद्यकीनिंदा

यदृच्छयासमापन्न मुत्तार्यनियतायुषम् ।
भिषग्मानी निहंत्याशु शतान्यनियतायुषम् ॥
तस्माच्छास्त्रेऽर्थविज्ञाने प्रवृत्तौ कर्मदर्शने ।
भिषक्चतुष्टये युक्तः प्राणाभिषरउच्यते ॥

अर्थ—मूर्खवैद्य यदृच्छा पूर्वक प्राप्तहुए पूर्णआयुवालेको रोगसैं बचायके मारेअभिमानके अनेक अनियतायुषी अर्थात् जिनकी आयुका कुछ ठीक नहीं ऐसे

सैंकड़ो प्राणियोंको यह वैद्याभिमानी दुष्टवैद्य मारताहै। इसीकारण इस प्राणीको शास्त्र और शास्त्रके अर्थ ज्ञानमें तथा उस वैद्यकर्मकी प्रवृत्ती एवं उसकर्मोंके देखने मैं प्रवृत्तहो तथा चतुष्पाद संपत्तियुक्तहो जो चिकित्सा करता है वो प्राणाभिसर अर्थात् प्राणरक्षक वैद्य कहलाता है ॥

(निदान बिनाजाने चिकित्सा करनेमें वैद्यको दंडनीयत्व कथन)

भेषजं केवलं कर्तुं यो जानाति न चामयम् ।
वैद्यकर्म सचेत्कुर्याद्वधमर्हति राजतः ॥

अर्थ—जो वैद्य केवल औषध देना जानताहै किंतु रोगोंकोनहीं जाने कि इस रोगीकैं क्या विकार है यदि वो वैद्य कर्म (चिकित्सा) करे तो वो राजासैं वधके योग्य है । अर्थात् अैसे वैद्यको राजा, फांसी देदेवे, इससै वैद्यको उचित है कि प्रथम निदानका आभ्यास करके फिर चिकित्साकरे ।

(केवल शास्त्रज्ञाता और औषधज्ञान रहित वैद्यकी निंदा)

यस्तु केवलशास्त्रज्ञोभेषजेष्वविचक्षणः ।
तं वैद्यं प्राप्य रोगीस्याद्यथा नौर्नाविकं विना ॥

अर्थ—जो वैद्य केवल शास्त्र पढाहै परंतु चिकित्सा करनेमें अकुशल (मूर्ख) है, उस वैद्यको प्राप्तहो रोगीकी अेसी दशा होती है, जैसै बिना केवटिया (मलाह) के बीच धारमें नावकी गति ॥

(शास्त्र पठित और क्रियारहित वैद्यको भीरुत्व कथन)

यस्तु केवलशास्त्रज्ञः क्रियास्वकुशलो भिषक् ।
समुह्यत्यातुरं प्राप्य प्राप्यभीरुरिवाहवम् ॥

अर्थ—जो वैद्य केवल शास्त्रको जानता वै किंतु उस शास्त्रकी क्रियाओंमें अकुशल (मूर्ख) है वह वैद्य रोगीको देखके अैसें घवडाताहै कि जैसै भीरु (कायरमनुष्य) संग्राम (लडाई) को प्राप्तहोकर घवडाता है ॥

(विनापठित वैद्यको राजसैं दंडनीयत्व कथन)

यस्तुकर्मसु निष्णातो धाष्टर्याच्छास्त्रबहिष्कृतः ।
स सत्सु पूजां नाप्नोति वधमर्हति राजतः ॥

अर्थ—जो वैद्यके कर्ममें तो निपुणहै परंतु ढीटतासैं शास्त्र बहिष्कृत अर्थात्

शास्त्रको नहीं जाने वो सत्पुरुषोंमें सत्कार नहीं पाता, किंतु राजसें वध (मृत्यु) को प्राप्त होताहै ॥

(कर्त्तव्यमें मूर्ख वैद्यका निंदा)

छेद्यादिष्वनभिज्ञो यः स्नेहादिषु च कर्मसु ।
स निहंति जनं लोभात्कुवैद्यो नृपदोषतः ॥

अर्थ—जो वैद्य छेदन भेदनादि कर्ममें मूर्ख है, तथा घृत तैल आदिके बनानेमेभी मूर्ख है वह दुष्टवैद्य राजाके दोषसें प्राणियोंको लोभवश होकर मरता है– [यदि राजाही एसे दुष्टवैद्योंकी परीक्षा कियाकरे तो ये इतने क्यो बढे, और हजारों अनाथके समान प्राणी यमपुरकी यात्रा क्यो करे] धन्यरे अंगरेजी राज तू धन्य है ! ! !

मूर्खवैद्यकेदोष

लोभयंत्यातुरं मूर्खा विचित्रैः कर्मकौशलैः ।
तेभ्योरक्षेत्सदात्मानमात्मायस्मात्सुदुर्लभः ॥

अर्थ—मूर्खवैद्य अपनो चित्रविचित्र कर्मकौशल (अर्थात् चालाकी) सें रोगीको लोभित करते है । उन दुष्ट वैद्योंसें मनुष्यको सदैव सावधानी केसाथ अपनी आत्माकी रक्षा करनी चाहिये क्योंकि इस संसारमें आत्मा अत्यंतही दुर्लभ है॥

तेघुणाक्षरवत्किंचिदुत्थाप्यानियतायुषम् ।
घ्नंतिवैद्याभिमानेन शतानानियतायुषान् ॥

अर्थ—वो घुणाक्षरन्यायसें अनितायुषीप्राणीको रोगसें वचायके वैद्याभिमानी हो अनेक अनियतायुषी प्राणीयोंको नाश करते है ॥

ये क्रियां विक्रियां कुर्वन्त्युपेक्षंते स्खलंति वा ।
खादंति ते परप्राणान्निजानि सुकृतानि च ॥

अर्थ—जो वैद्य क्रियाको विक्रिया करते है अथवा जिस समय क्रिया करनेका कालहै उसकी उपेक्षाकरदेते अथवा चिकित्सामें चूकजाते है वो दुष्टवैद्य दूसरे के प्राणों कों और अपने सुकृतोको खाते है ॥

वैद्यकोस्वयंतर्ककरनेकीआज्ञा

नचैकांते न निर्दिष्टे शास्त्रेनिर्विशते बुधः ।
स्वयमप्यत्रभिषजातर्कनीयं चिकित्सता ॥

अर्थ—शास्त्रमें सब कहा है तथापि वैद्य सब जानता है ऐसा नही होता, इसीसें वैद्यको स्वतः तर्कचलायके चिकित्साकरे। तात्पर्य यह है कि शास्त्रमें भी कुछ हगनी मूतनी छोटी२ बात नहीं लिखी है। अतएव वैद्यको उचित है कि कुछ अपनी बुद्धिसें विचारकरेकेवलशास्त्रके भरोसें ही न रहे ॥

निषिद्धवैद्य

कुचैलः कर्कश स्तब्धो ग्रामीणः स्वयमागतः।
पंचवैद्यानपूज्यंते धन्वंतरि समाअपि ॥

अर्थ—मलिन कपडेको धारणकर्त्ता, कर्कश, गर्ववाला (अभिमानी) ग्रामीण (गंमईका रहनेवाला) और जो विनाबुलाए आयाहो, ये पांच वैद्य धन्वंतरिके भीसमान होवे तथापि पूजे नही जाते। अर्थात् ऐसे वैद्योंका कोई सत्कार नही करता ॥

वैद्यकोपाककारित्वमेंप्रमाण

अन्यजातिकृतः पाकोह्यस्पृश्यः सर्वजातिभिः।
इतिविज्ञाय मतिमान् वैद्यं पाकेनियोजयेत् ॥

अर्थ—अन्य जातिका करापाक सब जातियोंको अस्पृश्य (छूने योग्य नहीं) है, ऐसा जानके बुद्धिमान् पुरुष वैद्यको पाक करनेपर नियुक्त करे। तात्पर्य यह है कि अपनी २ जातिका करा पाक सब खातेहै दूसरी जातिका किया कोई नहीं छूता, और वैद्यके हाथका करा सब खाते है अतएव पाककर्त्ता वैद्यही होना चाहिये।

(अन्यजातिकेकरेपाकभोजनमें प्रायश्चित)

मोहाद् द्विजातिवर्णाद्यैः पाचितं खादितेसति।
प्रायश्चित्तीभवे च्छूद्रो जातिहीनो भवेद् द्विजः ॥

अर्थ—जो प्राणी मोहवश ब्राह्मण आदिके करे हुए पाकको भक्षण (भोजन) करता है। यदि वह शूद्र होवे तो प्रायश्चित्ती होवे, और ब्राह्मण होयतो जातिसें रहित अर्थात् जात बाहर होताहै। यह प्रमाण पूरव और बंगालदेशमें है परंतु हमारे पश्चिमोत्तर देशमें प्रमाणिक नहींहै। क्योंकि सब पुराणोंमें राजा महाराजा ओंके ब्राह्मण और ब्राह्मणोंके राजा महाराजा भोजनकरते रहे है। फिर हमारे देशमें भी प्राय पक्की रसोई भोजनका व्यवहारहै कच्चीका नहीं ॥

वैद्यशास्त्रऔरज्योतिशास्त्रकीप्राधान्यता

अन्यानिशास्त्राणिविनोद मात्रं न।किंचिदेषांतुविशि-
ष्टमस्ति चिकित्सितं ज्योतिषमंत्रवादाः पदे पदे प्र-
त्यय मावहंति ॥

अर्थ—अन्य (व्याकारण न्यायआदि) शास्त्रकेवल विनोदमात्र अर्थात् वालकोकेसेखेल है उन व्याकरणादि शास्त्रोंमें कुछ विशेषता नहीं है,परंतु चिकित्सित (वैद्यविद्या) ज्योतिष औरमंत्रवाद ये तीनोशास्त्र पैड पैडमें विश्वासदेते है तात्पर्य यह है कि व्याकरण, छंद, काव्य, अलंकार, प्रहसन, आदि, ये सब खेलनेके समान है, जैसें खेलकी वस्तुसें खेले और धरदीनी इसी प्रकार ये अन्य शास्त्रहै, परंतु प्रत्यक्षपरचादिखाने वाले ये तीनही शास्त्र है, जैसें वैद्यक, ज्योतिष, और तंत्रशास्त्र, इनमें भी हमको तो वैद्यशास्त्रमें विश्वास है। क्योकिइसकी जितनी क्रिया है सब प्रत्यक्ष है। और ज्योतिषमें हम गणितभागको प्रत्यक्ष फलदायकमानते है। रहामंत्रशास्त्र उसमें हमसंदेह युक्त है तथापि वाममार्ग तो सर्वथा दुष्ट पामरोंका निर्मित प्रतीत होता है अस्तु ॥ " जिस गामहीन जाना उसके कोश गिनना व्यर्थ "

(चौरी कपट और बलपूर्वकविद्या ग्रहणमें दोष)

विद्यां गृहीतुमिच्छन्ति चौर्याच्छद्मबलादिना ।
न तेषां सिद्ध्यते किंचिन्मणिमंत्रौषधादिकम् ॥

अर्थ—जो प्राणीं विद्याको चौरीसें कपटसें और जबरदस्तीसें गृहण करनेकी इच्छा करता है उनको मणिपरीक्षा, मंत्र और औषधकी सिद्धि ये कोईभी फलीभूत नहींहो ॥

मरणपर्यंतचिकित्साकरनेकीआज्ञा

यावदुच्छ्वसितिप्राणी यावद्भेषजमत्तिच ।
तावच्चिकित्साकर्त्तव्यादैवस्यकुटिलागतिः ॥

अर्थ—जवतक यह प्राणी श्वासलेता है और जवतक औषध भक्षण करसके तावत्कालपर्यंत वैद्यको इस प्राणीकी चिकित्सा करनी ही चाहिये। क्यो कि दैव (विधाता) कीगति कुटिल (टेढी) है अर्थात् मालूमनहीपडे नमालूमउस वक्तभी औषध देनेसै रोगी जीउठे ॥

यावत्कंठगताः प्राणायावन्नास्तिनिरिन्द्रियः ।

तावच्चिकित्साकर्त्तव्या दैवस्यकुटिलागतिः ॥

अर्थ–यावत् कंठमें प्राणहो और जबतक यह प्राणी इन्द्रीरहित न होवे तावत् पर्यंत रोगीकी चिकित्साकरनी चाहिये क्योंकि दैवकीगति कुटिल है [कदाचित् इस अवस्थामेंभी औषध देनेसे रोगी बचजावे]

रोगीकेलक्षण

रोगीयस्यास्तिरोगोसि सचिकित्स्यस्तुयादृशः ।
यादृशश्चाश्चिकित्स्योपिव क्ष्यमाणोनिशम्यताम् ॥

अर्थ—अब चिकित्साके दूसरे पादका अर्थात् रोगीके लक्षण वर्णन करते है जैसे कि जिसके रोग हुआहो वो रोगी कहलाता है, तहां जैसे रोगी की चिकित्सा करनी चाहिये और जैसे की चिकित्सा नहीं करनी उन दोनोके लक्षण में आगे कहताहूं उनको सुन ॥

चिकित्साकेयोग्यरोगी

निजप्रकृतिवर्णाभ्यांयुक्तः सत्वेन चक्षुषा ।
चिकित्स्योभिषजारोगीवैद्यभक्तोजितेन्द्रियः ॥

अर्थ—जो रोगी अपने प्रकृति, वर्ण, धैर्य, बल, और नेत्र, इनकरके युक्त है, तथा जो वैद्यका भक्त और जितेन्द्री है, वो वैद्यको चिकित्सा करनेके योग्य है॥

आयुष्मान् सत्ववान् साध्यो द्रव्यवान् मित्रवानपि ।
चिकित्स्योभिषजारोगी वैद्यवाक्यकृदास्तिकः ॥

अर्थ—जो रोगीदीर्घायु, धैर्ययुक्त, साध्य, द्रव्यवान्, और वैद्यकी आज्ञापालन करनेवाला एवं अस्तिक असे रोगीकी चिकित्सा वैद्यको करनी चाहिये ॥

आढ्योरोगीभिषग्वश्योज्ञापकः सत्ववानपि ।
वैद्यशास्त्रेचविश्रब्धः कृतज्ञः पथ्यकारकः ॥

अर्थ—जोरोगी धनवानहो, वैद्यके वशीभूत, अपनीप्रकृतिको यथार्थ कहनेवाला धैर्यवान्–तथा चिकित्सा और शास्त्रमें विश्वासरखने वाला–उपकारका माननेवाला और पथ्य करनेवाला अैसा रोगी उत्तम जानना ॥

रोगीकेगुणचतुष्टय

स्मृतिनिर्देशकारित्वमभीरुत्वमथापिच ।
ज्ञापकत्वं चरोगाणामातुरस्य गुणाः स्मृताः ॥

अर्थ—स्मरणवान्, वैद्यकी आज्ञाका पालन करनेवाला–निर्भय और अपने रोगको वैद्यको बतानेवाला येचारगुण रोगीके है ॥

उत्तमरोगी

प्राज्ञोरोगेसमुत्पन्ने बाह्येनाभ्यंतरेणवा ।
कर्मणालभतेशर्म शास्त्रोपक्रमणेनवा ॥

अर्थ—बुद्धिमान्रोगी रोग उत्पन्न होतेही बाहरके यत्नसैं अथवा भीतरके यत्नसैं कल्याणको प्राप्तहोताहै, अथवा शस्त्रोपक्रम (चीरना फाडनाआदि) सैं कल्याणको प्राप्तहोताहै–तात्पर्य यह है कि चतुररोगी रोगको प्रगट होतेही बाहरभीतरकी चिकित्सा अथवा चीरना फाडनेआदिसैं तत्काल उसे नष्टकर सुखीहोता है ॥

मूर्खरोगी

बालस्तु खलुमोहाद्वा प्रमादाद्वानबुध्यते ।
उत्पद्यमानं प्रथमं रोगंशत्रुमिवाबुधः ॥

अर्थ—बाल (मूर्खरोगी) मोहवस अथवा प्रमादसैं उस उत्पन्न हुए रोगको नहींजानता, जैसै मूर्खमनुष्य प्रगटहुए अपने शत्रुको नहींजानता ॥

अग्राहिप्रथमंभूत्वारोगः पश्चाद्विवर्द्धते ।
सजातमूलोमुष्णातिबलमायुश्च दुर्मतेः ॥

अर्थ—प्रथम रोग अग्राह्यहोकर धीरे २ बढता है जब वो जडबद्ध होजाता है तब इस दुर्बुद्धीकी बल और आयुको हरणकरे है ॥

न मर्त्यो लभते श्रद्धां तावद्यावन्नपीड्यते। पीडितस्तु मतिं पश्चात् कुरुते व्याधिनिग्रहे । अथ पुत्रांश्च दारांश्चजातींश्चाहूय भाषते। सर्वस्वेनापि मे कश्चिद्भिषगानीयतामिति । तथाविधं च कः शक्तो दुर्बलं व्याधिपीडितम् ॥ कृशं क्षीणेन्द्रियं दीनं परित्रातुं

गतायुषम् । सत्रातारमनासाद्य बालस्त्यजति जीवितम् । गोधालाङ्गूल बद्धे वा कृष्यमाणा बलीयसा। तस्मात्प्रागेव रोगेभ्यो रोगेषु तरुणेषु वा । भेषजैः प्रतिकुर्वीत यइच्छेत्सुखमात्मनः ॥

अर्थ—जबतक यह प्राणीदुखीनही होता तबतक वैद्य और औषधीमें श्रद्धानहीलाता । और जो रोगोंसें पीडितहुआ कि, फिर रोगनाशकरनेमें बुद्धि करता है । तब अपने पुत्रोंकों स्त्रियोंको और अपनेकुटुंबके मनुष्योंको बुलायके उनसें कहता है किमेरा सर्वस्वभीदेकर वैद्यको लाओं [और जैसेहो तैसे मुझको बचाओं में तुह्मारीशरणहूं अबके बचगयातो आपलोगोंका उपकार जन्म भर नहीं भूलूंगा] परंतु फिर उस असाध्य- दुर्बल, कृश, क्षीणेन्द्रि, दीन, और मरणासन्न रोगीके बचानेको कौन सामर्थ्य है । वस; इसीप्रकार पुकारता २ अपने बचानेवालेको न प्राप्तहो कर यह मूर्खरोगी अपने प्राणोंका त्यागदेता है। जैसें गोहकी पूछ बंधीहुई हो और वो जब चले उसी वक्तवली मनुष्य उसको खीचलेता है इसप्रकार यमराज इसप्राणीको खीचलेता है। अतएव यदि अपने आत्माको सुखचाहैतो रोगोसें प्रथमही अथवा तरुणरोगोंमेंही औषधद्वारा उस रोगको शांति करना चाहिये ॥

त्याज्यरोगी

चंडः साहसिकोभीरुः कृतघ्नोव्यग्रएवच । शोकाकुलोमुमूर्षुश्चविहीनकरणैश्चयः ॥ वैरीवैद्यविदग्धश्च श्रद्धाहीनश्च शंकितः । भिषजामविधेयश्च नोपक्रम्यभिषग्विधः । एतानुपाचरन् वैद्योवहून् दोषानवाप्नुयात् ॥

अर्थ—जो अत्यंतक्रोधी–साहसी (अर्थात् बिनाविचारे करनेवाला) डरपनेवाला–कृतघ्न (वैद्यके उपकारको न माननेवाला) व्यग्र (व्याकुल) शोकार्त्त, मरनेकी इच्छा करनेवाला गतेन्द्री (जिसकी इन्द्रियोंकी शक्ति नष्टहो गईहो) वैर करनेवाला वैद्यपनेका अभिमान रखनेवाला, अविश्वासी, और शंका रखनेवाला–स्वतः औषधका जाननेवाला और वैद्यके स्वाधीन न रहनेवाला इत्यादि गुणवाले रोगीकी चिकित्सा करेतो वैद्यको अनेक दोष लगते हैं ॥

जारं चौरं तथाम्लेच्छंब्रह्मघ्नं मत्स्यघातिनं द्वेष्टारंग्रा-

मकूटंचवद्धकंमांसविक्रिणम् । एतेसुव्याधिनाग्रस्ता-
नकुर्याच्छमनक्रियाम् । तेषां जीवाप्तिसंजाताद्वैद्यो-
भवतिपापभाक् ॥

अर्थ—जार (परस्त्रीगामी–वा–रंडीवाज) चौर–म्लेच्छ–ब्रह्महत्यारा–मछलीकोमारनेवाला (धीवर) ग्रामकूट (गामकोदुखदाई) वद्धक (जिवोंको बांधनेवाला) और मांसका बेचने वाला ऐसे प्राणी यदि रोगीहोवेतो उनको वैद्य औषध न देवे, क्योंकियदि इन प्राणियोंको औषध देनेसैं प्राणवचने परये जो हत्या आदि पातककरेंगे वो पापवैद्यकोलगेगा ॥

भैषज्यलक्षण

वैद्योव्याधिंहरेद्येनतद्रव्यंप्रोक्तमौषधम् ।
तद्यादृशमवश्यंस्याद्रोगघ्नंतादृशंब्रुवे ॥

अर्थ—अब चिकित्साके तीसरे पादका अर्थात् औषधके लक्षण कहते है । जिससैं वैद्य रोगहरणकरे उस द्रव्यको औषध कहते है वो रोगनाशक औषध वैद्यको जैसी लेनी चाहिये उसके लक्षण कहते है ॥

उत्तम औषध

प्रशस्तदेशसंजातंप्रशस्तेऽहनिचोद्धृतम्॥अल्पमात्रं-
बहुगुणंगन्धवर्णरसान्वितम्॥दोषघ्नमग्लानिकरमधि-
कंनविकारियत्॥समीक्ष्यकालेदत्तंचभेषजंस्याद्गुणावहम् ॥

अर्थ—उत्तम स्थानमें प्रगट और शुभदिनघडी मुहूर्त्तमें उखाडीगई–अल्पमात्र (थोडी दीजावे) और बहुतगुण दिखावे, तथा यथायोग्य गंध वर्ण और रसकरके युक्त वातादि दोषोंके नाशकरनेवाली, तथा जोग्लानि और अधिक अवगुणकारी नहोवे, तथा रोगोंको विचारके तथा समयपरदीनी एसी औषध परमगुणदायक होती है ॥

औषधकेचारगुण

बहुतातत्र योग्यत्व मनेकविधकल्पना ।
सम्पच्चेति चतुष्कोऽयं द्रव्याणांगुणउच्यते ।

अर्थ—बहुता तत्रयोग्यत्व (रोगानुसारी) अनेक विधि कल्पना अर्थात् जिसकी कल्पना अनेक प्रकारसैं होवे और संपत्ती (रसादि संपत्ति) एचारगुण द्रव्यों के कहे है ॥

प्रसंगवश औषधोंके भेद चरकसैं लिखते है

त्रिविधऔषध

त्रिविधमौषधमिति । दैवव्यपाश्रयं-युक्तिव्यपाश्रयं-सत्वावजयश्च॥

अर्थ—औषध तीनप्रकारकी है जेसै कि–१ दैवव्यपाश्रय–२ युक्तिव्यपाश्रय ३ सत्वावजय अब इनके पृथक् २ लक्षण कहते है ॥

दैवव्यपाश्रय

तत्रदैवव्यपाश्रयं मन्त्रौषधिमणिमङ्गलनियमप्रायश्चित्तोपवास स्वस्त्ययनप्रणिपातगमनादि ॥

अर्थ—तहां–मंत्रजाप–औषधी धारण–मणियोंका धारण–मंगल कर्म (पुण्याहवाचन आदि) नियमधारण–प्रायश्चित्तकरण–उपवासादि व्रतधारण–स्वस्ति वाचन–देब गुरुवृद्धोंको प्रणाम करना और तीर्थोंमें गमन ये सब दैवव्यपाश्रय औषधकहलाती है ॥

युक्तिव्यपाश्रय

युक्तिव्यपाश्रयंपुनराहारौषधद्रव्याणांयोजना ॥

अर्थ—युक्तिव्यपाश्रय औषध वो है जो युक्ति पूर्वक भोजनादिक और औषध आदि द्रव्योंकी योंजना करना ॥

सत्वावजयः

सत्वावजयः पुनरहितेभ्योऽर्थेभ्यो मनोनिग्रहः ॥

अर्थ—सत्वावजय औषधी वो है जैसै दुष्टकर्मसैं अपने मनको रोककैं उत्तम शुभकर्ममें लगाना अव औरभी औषधोंके भेद कहते है ॥

शरीराश्रितत्रिविधऔषधी

शरीरदोषप्रकोपेखलुशरीरमेवाश्रित्यप्रायशस्त्रिविधमौषधमिच्छन्ति अन्तःपरीमार्जनं-बहिःपरिमार्जन-शस्त्रप्रणिधानंचेति

अर्थ देहमें दोषोंके कोप होनेसें वो दोष शरीरके आश्रित होकर वैद्यप्राय त्रिविधऔषधकी इच्छा करते है–जैसे– १ अंतःपरिमार्जन–वहिः परिमार्जन३ शस्त्रप्रणिधान, अब इन प्रत्येकके लक्षण आगे पृथक् २ कहते है ॥

अंतःपरिमार्जन

तत्रान्तः परिमार्जनं-यदंतःशरीरमनुप्रविश्यौषधमाहारजातव्याधीन् प्रतिमार्ष्टि ।

अर्थ—तहां जो औषध शरीरके भीतर प्रवेशकर भोजनजनित व्याधियोंको दूर करे उसको अंत परिमार्जन औषध कहते है उदाहरण जैसें क्वाथ, चूर्ण गुटिका, रस, पाक आदि जानने ॥

वहिःपरिमार्जन

यत्पुनर्वहिः स्पर्शमाश्रित्याभ्यङ्ग स्वेदप्रदेह परिषेकोन्मर्दनाद्यै रामयान्प्रमार्ष्टि तद्वहिः परिमार्जनम् ।

अर्थ—जो औषध वाहर त्वचाके स्पर्शके आश्रित हो उवटना, पसीने निकालना, तरडा देना, मालिश करना, इत्यादि कर्मद्वारा जो रोगोंको नष्ट करे उसे वहिःपरिमार्जन औषध कहते है,उदाहरण जैसे–तैलका लगना–लेपकरना–अंजन, मंजन, आदिजानना ॥

शस्त्रप्रणिधानं

शस्त्रप्रणिधानंपुनच्छेदनभेदनव्यधनदारणलेखनोत्पाटनप्रच्छन्नसीवनैषणक्षारजलौकाश्चेति

अर्थ–शस्त्रप्रणिधान चिकित्सा जैसै छेदन, भेदन, व्यधन, दारण, लेखन, पाटन, प्रच्छन्न-शीवन-एषण-क्षार और जलौका आदिकर्म जो अष्टविधशस्त्रकर्माध्याय और क्षारकर्म तथा जलौका वचारणअध्यायमें लिखआए है वो जानने

त्रिविधऔषधी

किंचिद्दोषप्रशमनं किंचिधातुप्रदूषणम् ।
स्वस्थवृत्तौ हितंकिञ्चिद्द्रव्यंत्रिविधमुच्यते ॥

अर्थ—द्रव्य तीनप्रकारकी है कोई दोषनाशक, कोई धातुको दूषणकर्ता, और कोई स्वस्थ वृत्ति अर्थात् आरोग्य प्राणीको हितकारी ॥

जंगमादि भेदसे त्रिविध औषध

तत्पुनस्त्रिविधंज्ञेयंजाङ्गमौद्भिद्पार्थिवम् ।

अर्थ—फिर वो पूर्वोक्त द्रव्य तीनप्रकारकी है जैसे जंगम, औद्भिद (स्थावर) और पार्थिव ॥

जंगमद्रव्य

मधूनिगोरसाः पित्तंवसामज्जासृगामिषम् ।
विण्मूत्रंचर्मरेतोऽस्थिस्नायुरङ्गं खुरानखाः ।
जंगमेभ्यः प्रयुज्यन्ते केशालोमानिरोचना ॥

अर्थ—सहत, गोरस (दूध-घी) पित्ता (मोर-मछली-आदिका पित्ता) वसा (चर्वी) मज्जा-रुधिर-मांस-विष्टा-(गोवर-लीद) मूत्र-चाम-वीर्य (मगर आदिका) हड्डी-स्नायु-अंग-खुर और नख (नाखून) तथा केश (वाल) लोम (रुआँ) और गोलोचन ए जंगम (पशु-पक्षी-मनुष्यादि) के लियेजाते है, ये जंगम द्रव्य जानना ॥

भौमद्रव्य

सुवर्णसमलाः पंचलोहाः ससिकतासुधा ।
मनः शिलाले मणयोलवणं गैरिका ञ्जने ।
भौममौषधमुद्दिष्टं ॥

अर्थ—सुवर्ण और अपने२मल अर्थात् कीटीसहित पांचो लोह, धूल-चूना-मनशिल, हरताल-मणी-निमक-गेरू-और सुरमा इत्यादि भौम औषध अर्थात् पृथ्वी संबंधी औषध जाननी ॥

औद्भिदंतुचतुर्विधम्

वनस्पतिर्वीरुधश्च वानस्पत्यस्तथौषधिः ॥

अर्थ—औद्भिद अर्थात् स्थावर संबंधी औषध चारप्रकारकी हैं जैसे-वनस्पति, वीरुध, वानस्पत्य, और औषधी, इनप्रत्येकके लक्षण आगे कहते है ॥

फलैर्वनस्पतिःपुष्पैर्वानस्पत्यफलैरपि ।
औषध्यः फलपाकान्ताः प्रतानैर्वीरुधः स्मृताः ॥

अर्थ—जिनमें केवल फलही लगते है फूल नहीं लगते उनको वनस्पति कहते है, जैसे गूलर-पीपर-वडआदि । और जिनमें फल फूल दोनों लगे उनको वान-

स्पत्य कहते है, जैसै आम–जामुन–आदिके वृक्ष। और जो फलके आनेसैं पककर नष्ट हो उनको औषधी कहते है, जैसैं जो--गेंहु--चना आदि । और जो वेलके माफिक प्रतान वाली है उनको वीरुध कहते है, जैसै गिलोय, पान, आकाशवेल आदि । कोई औषधके पांचभेद कहता है वो हम इसके निघंट भागमें लिखेगे ॥

औद्भिदगण

मूलत्वक्सारनिर्यासनाड्यस्वरसपल्लवाः।क्षाराक्षीरंफ-
लंपुष्पंभस्मतैलानिकंटकाः। पत्राणिशुङ्गाकन्दाश्चप्र-
रोहाश्चौद्भिदोगणः ॥

अर्थ—तहां जड, त्वचा, सार, गोद, नाडी, स्वरस, नवीन पत्ते, क्षार–दूध–फलफूल, भस्म, तेल, कांटे, पत्ते शुङ्ग (कली) कंद और प्ररोह (अंकुर) ये औद्भिद गण है अर्थात् वृक्षादिकोंसैं इतनी वस्तु ग्रहण करी जाती है ॥

उद्भिदजऔषधोंकीगणना

मूलिन्यः षोडशैकोनाः फलिन्योविपरीतकाः। महा-
स्नेहाश्चचत्वारः पञ्चैवलवणानिच। अष्टौमूत्राणिसं-
ख्यातान्यष्टावेवपयांसिच। शोधनार्थाश्चषड्वृक्षाः पु-
नर्बसुनिदर्शिताः।यएतान्वेत्तिसंयोक्तुंविकारेषुसवेदवित् ॥

अर्थ—जडवाली रूखडी मुख्य १६ है, फलवाली १९ है, महास्नेह ४ है, पांच प्रकारके निमक है। आठप्रकारके मूत्र, आठप्रकारके दूध, और शोधनकरनेके अर्थ छः वृक्ष है, येपुनर्वसु आत्रेयने कहे है। जो इनको विकरोंमें देना जानता है वो आयुर्वेदका ज्ञाता है असा जानना। इन सबका खुलासा चरककी प्रथमाध्यायमें लिखाहै सो देख लेना ॥

औषधज्ञानकोदुर्ज्ञेयत्व

ननामज्ञानमात्रेणरूपज्ञानेनवापुनः।
औषधीनांपरांप्राप्तिंकश्चिद्वेदितुमर्हति ॥

अर्थ—औषधोंका यथार्थज्ञान केवल नामज्ञान मात्रसैं, अथवा रूपज्ञान करके ही नहीं होताकिंतु रूप और नाम दोनेजाननेसैं होता है ॥

(ओषधोंकेरूपऔरयोगज्ञातावैद्यकीप्रसंशा)

योगज्ञः स्तस्यरूपज्ञस्तासांतत्वविदुच्यते।

किंपुनर्योविजानीयादौषधीः सर्वदाभिषक् ॥

अर्थ—जो वैद्य औषधोंके योगको और उनके रूपको जानता है उसको तत्ववेत्ताकहते है और जो सदैव औषधों जानता रहता है उस वैद्यका तो क्या कहना है ॥

तथावैद्यकोउत्तमत्वकथन

रूपंतासांतुयोविद्यादेशकालोपपादितम्
पुरुषंपुरुषंवीक्ष्यसविज्ञेयोभिषक्तमः ॥

अर्थ—देशकालोपपादित औषधोंके रूपको प्रत्येक पुरुषोंकें प्रति जो देना जानता है वह संपूर्ण वैद्योंमें श्रेष्ठ है ॥

ज्ञाताज्ञातऔषधोंकेगुणागुण

यथाविषं यथाशस्त्रं यथाग्निरशनिर्यथा ।
तथौषधमविज्ञातं विज्ञातममृतंयथा ॥

अर्थ—जैसैविष, जैसैंशस्त्र, जैसै अग्नि, जैसैंवज्रपात, प्राणीके प्राणहारकहोते है। उसीप्रकार विनाजानी औषध प्राणोंको हरण करती हे, और जो जानीहुई औषध है वो अमृतके तुल्य प्राणदायक जाननी ॥

अज्ञातऔरदुःप्रयोजितऔषधकीनिंदा

औषधं ह्यनविज्ञातं नामरूपगुणैस्त्रिभिः ।
विज्ञातं वापि दुर्युक्तं युक्तिबाह्येन भेषजम् ॥

अर्थ—जो औषध नाम--रूप--और गुण इन तीनोकरके बिना जानीहुई है अथवा जो इनतीनो प्रकार करके जानीभी है परंतु अविधिसै उसका प्रयोग करा है, वो युक्तिरहित औषध अपना गुण नही करे॥

युक्तऔरअयुक्तऔषधकेगुणागुण

योगादपिविषं तीक्ष्णमुत्तमं भेषजं भवेत् ।
भेषजं वापि दुर्युक्तं तीक्ष्णं संपद्यते विषम् ॥

अर्थ—तीक्ष्ण विषभी, योगके साथ उत्तम औषधी रूप होजाता है, और उत्तम औषधीभी दुष्टयुक्तीके साथ देनेसैं घोर विषके समान प्राणहरण कर्ता-होती है ॥

युक्तिपूर्वकऔषधकोमुख्यत्व

तस्मान्नभिषजायुक्तं युक्तिबाह्येन भेषजम् ।
धीमता किंचिदादेयं जीविताराग्यकांक्षिणा ॥

अर्थ—इसीसैं जीवन और आरोग्यकी इच्छा करने वाले बुद्धिमान रोगीको युक्तिबाह्य औषधका प्रयोग कदाचित् नहीं करना चाहिये । अर्थात् मूर्खवैद्यकी औषधका ग्रहण न करे ॥

मूर्खवैद्यकेहातकीऔषधनलेना

कुर्यान्निपतितं मूर्ध्नि सशेषं वासवाशनिः ।
सशेषमातुरं कुर्यान्नत्वज्ञमतमौषधम् ॥

अर्थ—रोगी—अपनेमस्तकपर बज्रपात गिरना अंगीकारले, रोगयुक्त रहना अंगीकार करलेवे, परंतु मूर्खवैद्यकी अनुमती सैं दीहुई औषधको कदाचित् अंगीकार न करे ॥

अज्ञानीवैद्यसैंभाषणकरनेमेंपापकथन

दुःखिताय शयानाय श्रद्दधानाय रोगिणे । यो भेषजमविज्ञाय प्राज्ञमानी प्रयच्छति ॥ तस्य च मृत्युदूतस्य दुर्मतेस्त्यक्तधर्मणः । नरो नरकपातीस्यात्तस्य संभाषणादपि ॥

अर्थ—दुखिया, पडेहुए, श्रद्धावाले रोगीको जो पंडिताभिमानी वैद्य विना जानी औषधको देता है, उस मृत्युके दूत दुष्टमतिवाले अधर्मीके संभाषण (बोलने) सैं यह प्राणी नरक गामी होता है । अर्थात् ऐसे दुष्टवैद्यसैं भाषणभी न करे, परंतु इसवातको कौन देखता है । भला विनाबुलाये और थोडेसेमें खुसी होने वालेभी तो येही वैद्य हैं, भलेही प्राणचलेजावे परंतु धनतो वचजायगा—धन्यरे दुष्ट समय तू धन्य है ॥

शरणागतरोगीसैंद्रव्यादिलेनेकानिषेध

वरमाशीविषविषं कथितं ताम्रमेव वा । पीतमत्यग्निसन्तप्ता प्राशितावाप्ययोगुडाः । नतु श्रुतवतावेशंवि-

श्रता शरणागतात् ॥ ग्रहीतमन्नपानं वा वित्तं वा रोगपीडितात् ॥

अर्थ--सर्पका हलाहल विष पीलेना, औंटाहुआ ताम्र पीलेना, तथा अग्नि सैं दहकते हुए लोहेके गोलेको खायलेना उत्तम है, परंतु पंडित बेषधारी होकर शरणागत रोगीसैं अन्नजल अथवा द्रव्य ग्रहण करना कदाचित उचितनही है ॥

मूर्खवैद्यसैंयत्नकरानानिषेध

वरं दस्यौ वरंव्याले वरं यादोविभीषणे । सागरे जीवनोत्सर्गः सुघोरेवापि धन्वनि ॥ नाधीतशास्त्रे नाभ्यस्ते कर्मण्यखिलवैरिणि । न कार्यं दुर्मतौ पापे भिषजात्मसमर्पणम् ॥

अर्थ--चौरके हाथसैं, हिंसकजीव (सिंह व्याघ्रादि) सैं, मगरआदि जलके जीवोंसैं समाकुल घोर समुद्रमें अथवा घोर मारवाडकी भूमिमें, अपने प्राणोंको त्यागदेना परमोत्तम है, परंतु विना शास्त्रपढेहुए और विना अभ्यस्त कर्मवाले, सबकेवैरी, दुर्बुद्धी, पापात्मा वैद्यके, हस्तगत अपना आत्म सर्पण करना कदापि उचित नहीं है ॥

वैद्यकोवैद्यकेगुणसीखनेकीआवश्यकता

भिषक्बुभूर्षुर्मतिमानतः स्याद्गुणसम्पदि ।
परं प्रयत्नमातिष्ठेत्प्राणदः स्याद्यथा नृणाम् ॥

अर्थ--अतएव इत्यादि उक्त करणोंसैं बुद्धिमान् प्राणी वैद्यहोनेकी इच्छा रखनेवाला वैद्य गुणसंपत्तिमें परम यत्नपूर्वक स्थितहोवे, क्योंकि यह वैद्य प्राणियोंको प्राणका देनेवाला है ॥

उत्तमऔषधऔरवैद्य

तदेवमुक्तं भैषज्यं यदारोग्याय कल्पते ।
सचैव भिषजां श्रेष्ठो रोगेभ्यो यः प्रमोचयेत् ॥

अर्थ--वही औषधी उत्तम है जो रोगियोंको आरोग्यकरे । औरवही वैद्योंमे श्रेष्ठ है जो रोगियोंको रोगोंसैं छुडावे ॥

उत्तमप्रयोगऔरउत्तमवैद्यकीप्रसंशा

सम्यक्प्रयोगं सर्वेषां सिद्धिराख्यातिकर्मणाम् ।
सिद्धिराख्याति सर्वैश्च गुणै र्युक्तं भिषक्तमम् ॥

अर्थ—उत्तम प्रयोग संपूर्ण कर्मोंकी सिद्धिको प्रगटकरे है, और सर्वगुणयुक्त वैद्यको कर्मसिद्धी विख्यात करती है ॥

परिचारककेगुण

उपचारज्ञतादाक्ष्यमनुरागंचभर्त्तरि ।
शौचंचेतिचतुष्कोऽयंगुणः परिचरेजने ॥

अर्थ—अव चिकित्साके चतुर्थपाद अर्थात् परिचारक (सेवक) के गुण लिखते है-जैसे कि उपचारज्ञता (अर्थात् रोगीकी सेवाके नियमोंका जानने वाला,) चतुर, और अपने स्वामी (मालिक) में अनुराग, तथा पवित्रता ए चारगुण सेवकके है। तहाँ चारगुण वैद्यके, चारगुण रोगीके, चारगुण औषधके, और चारगुण सेवकके ये संपूर्ण सोलह गुण चिकित्साकी षोडश कला कहलाती है । अर्थात् चिकित्साके वैद्य आदि चार पादहै, और एक एक के चारगुण ऐसैं सोलहगुण सोलह कला कहलाती है ।

परिचारककेलक्षण

स्निग्धोऽजुगुप्सुर्बलवान्युक्तोव्याधितरक्षणे। वैद्यवाक्यकृदश्रांतोयुज्यतेपरिचारकः। अनुरक्तः शुचिर्दक्षो बुद्धिमान्परिचारकः ॥

अर्थ—स्नेह रखनेवाला, अनिंदित, वलवान्, रोगीके संरक्षण करनेमें चतुर- वैद्यकी आज्ञापालन करनेवाला, निरंतर परिश्रम करते २ न थके, कृपालु, शुद्ध, कुशल, और बुद्धिमान् ऐसा सेवक रोगीके समीप रहना चाहिये ।

अव चिकित्साके चार्‍यों पैर और शोडष कलाओंको कहकर चिकित्साके अंग कहते है। तहाँ रोगी, दूत, वैद्य, सेवक, और उत्तम औषधोंके लक्षणकह अव शेषोंको कहते है ।

आयुविचार

भिषगादौपरीक्षेतरुग्णस्यायुः प्रयत्नतः ।
ततः आयुषिविस्तीर्णेचिकित्सासफलाभवेत् ॥

अर्थ—वैद्य प्रथम रोगीके आयुकी परीक्षा करे कारण यहहैकि यादि आयु वडी होयगी तो चिकित्साभी सफल होताहै, अन्यथा निष्फल होताहै परंतु दीर्घा युके लक्षण इस बृहन्निघंटुरत्नाकरकी प्रथम जिल्दमें अर्थात् शारीर भागमें लि, ख आएहै, इस वास्ते यहांपर नहीं लिखे है ।

आयुकाप्रमाण

जलजानवलक्षास्तु दशलक्षास्तुपक्षिणः । रुद्रलक्षा-
स्तुकृम्याद्यास्थावराणांचविंशतिः ॥ त्रिंशल्लक्षंगवा-
दीनां चतुर्लक्षास्तुमानवाः ।

अर्थ—जलजं (जलमें होने वाले) ९००००० नौलाख है, पक्षी १०००००० दशलाख है कृमि (कीडे) ११००००० ग्यारहलाख यो, स्थावर (वृक्षादिक) है नि २०००००० वीस लाख है, गवादि (अर्थात् गौ भैसवकरी आदि) योनि ३०००००० तीसलाख है, और मनुष्य योनि ४००००० चार लाख है ॥

शतायुपुरुषश्चैववृक्षाणांतुसहस्रकम् । द्वात्रिंशश्चतुरं-
गाणां शतंकुंजरसिंहयोः ॥ व्याघ्राणांचचतुःषष्ठिः स-
हस्रंफणिकाकयोः । जम्बुकानांषोडशाब्दं शुनांद्वाद-
शवत्सरं ॥ चतुर्विंशतिरुक्तंगोमहिष्योः सूकरस्यच ।
अजानांद्वादश प्रोक्तंमत्स्यानामयुतंतथा॥कुक्कुटानव-
वर्षाणि मृगाणांविंशतिर्भवेत् । पक्षिणांदशवर्षाणिख-
राणांद्वादशद्वयम् ॥ चतुर्विंशतिरुष्ट्राणां रासभानांतथैवच ।

अर्थ—पुरुष (मनुष्य) की १०० सौवर्षकी आयु है, वृक्षोंकी १००० हजा- र वर्षकी, घोडेंकी३२ बत्तीस वर्षकी है। सिंह और हाथीकी उमर १००वर्षकी है वघेरे की आयु ६४ वर्षकी है । सर्प (सांप) और कौआ इनकी१००० वर्षकी आयु है । स्यार (गीदड) की आयु १६ वर्षकी है । कुत्तेकी उमर १२ वर्षकी

है। गौ–भैष–और सूअरकी उमर २४ वर्ष की है * बकरी की उमर १२ वर्ष की * मछली की उमर १०००० दशहजार वर्षकी है * मुरगेकी ९ वर्ष की मृग (हिरण) की उमर २० वर्ष की है * पक्षि (तोता मैंना चिडिया आदि) की उमर दशवर्ष की है। गद्धेकी उमर २४ वर्ष की है * ऊंटकी उमर २४ वर्ष की और खिचरकी आयु २४ वर्ष की जाननी, ये इनकी परमायु है परंतु कोई २ इस्सै अधिकभी जीते है॥

अथद्रव्यम्

सर्वेद्रव्यमपेक्ष्यंतेरोगीप्रभृतयोयतः।
विनावित्तंनभैषज्यंचिकित्सांगंततोधनम्॥

अर्थ—रोगीसैं आदिले संपूर्ण द्रव्यकी इच्छा करते है, विना धनके औषधी नहीहो सकती, इसीसैं चिकित्साका मुख्य अंग धनहै।

शिष्य—रोग और आरोग्य किसको कहते है॥

गुरु—दोषोंकी विषमावस्थाको रोग और समानावस्थाको आरोग्य कहते है जैसै वाग्भटमें लिखा है॥

व्याधेर्लक्षणंवाग्भटे

रोगस्तुदोषवैषम्यंदोषसाम्यमरोगता।
रोगादुःखस्यदातारोज्वरप्रभृतयस्तुते॥

अर्थ—दोषोंकी विषमता (समान न रहनेको) रोग कहते है–और समाना वस्थाको आरोग्य कहते है तहां दुखदाई रोग वे ज्वर प्रभृति अर्थात् ज्वरादिक जानने॥

अथातो व्याधिसमुद्देशीयमध्यायं व्याख्यास्यामः।

अर्थ—अव हम व्याधिसमुद्देशीयाध्यायकी व्याख्या करैंगे॥

द्विविधा व्याधयः शस्त्रसाध्याः स्नेहादिक्रियासाध्या-
श्च। तत्र शस्त्रसाध्येषु स्नेहादिक्रिया न प्रतिषिध्यते।
स्नेहादिक्रियासाध्येषु शस्त्रकर्म न क्रियते॥

अर्थ—इस संसारमें दोप्रकारकी व्याधि है एक शस्त्रसाध्य (शस्त्रकर्मसैं अ-

च्छी होनेवाली है) दूसरी स्नेहादि क्रियासाध्य, अर्थात् घृत-तैल-क्काथ-चूर्णादि सैं अच्छी होनेवाली तहां अष्टविध शस्त्रसाध्यव्याधियोंमें स्नेहादिकक्रिया करना सिद्धि कारक नहींहोती, जैसे भगंदरादि रोग चीरनेफाडनेयोग्य है उनपर तैलादि लगानेसैं कुछ फायदा नहीहोता। और जो स्नेहसाध्य व्याधि है उनपर शस्त्रकर्म न करे, क्योंकि तैलक्काथादिसैं अच्छे होसके अैसे वातव्याधि और ज्वरादिरोगमें चीरना फाडना केवल दुःखदायक है ॥

अस्मिन् पुनः शास्त्रे सर्वतन्त्रसामान्यात्सर्वेषां व्याधीनां यथा स्थूलमवरोधः क्रियते ॥

अर्थ—तहांशल्यतंत्रमें शस्त्रक्रियाकोही मुख्यत्व है, स्नेहादि क्रियाको नही है इसशंकासैं दोनों क्रियाओंका अधिकार दिखाते है। इस सौश्रुत शल्यतंत्रमें शालाक्यादि तंत्रोको समान होनेसैं संपूर्ण व्याधियोंका स्थूलदृष्टीकरके ग्रहण किया है

प्रागभिहितं तद्दुःखसंयोगो व्याधिरिति—तच्च दुःखं त्रिविधमाध्यात्मिकमाधिभौतिकमाधिदैविकमिति तत्तु सप्तविधे व्याधावुपनिपतति ॥

अर्थ—इस सुश्रुतकी प्रथमाध्यायमें लिखआए है कि शरीरी और शरीरका अथवा शरीर और मनके दुःख संयोगको व्याधि अर्थात् रोग कहते है। तहां वो दुःखतीनप्रकारका है १ अध्यात्मिक २ आधिभौतिक, ३ औरआधिदैविक-यही त्रिविधदुःख सात प्रकारकी व्याधियोंमें विभाजित किया है अर्थात् सात-प्रकारसैं वांटा है ॥

ते पुनः सप्तविधा व्याधयः। तद्यथा-आदिबलप्रवृत्ता-जन्मबलप्रवृत्ता-दोषबलप्रवृत्ताः-संघातबलप्रवृत्ताः-कालबलप्रवृत्ताः-दैवबलप्रवृत्ताः-स्वभावबलप्रवृत्ता-इति ॥

अर्थ—वो सातप्रकारकी व्याधि इसप्रकारसै हैं जैसैं-१आदिवलप्रवृत्त,२जन्म

---

१ आदिशब्दसैं स्वेदन, वमन, विरेचनादि जानने। २ आत्मशब्दसैं मनकरके सहित शरीरका ग्रहणहै। बातपित्त और कफसैं उत्पन्न शरीरमें होनेवाली तथा रजोगुण तमोगुणसैं होनेवाली व्याधियोंको आध्यात्मिक कहते है। ३ भूतप्राणियोंको भूतोंमें अधिकारकरके जो वर्त्ते उसको अधिदैव कहते है। ४ देव, असुर, भूत, प्रेत, इत्यादिसैं होनेवाले रोगोंको अधिदैव कहते है

बलप्रवृत्त, ३ दोषबलप्रवृत्त, ४ संघातबलप्रवृत्त, ५ कालबलप्रवृत्त, ६ दैवबलप्रवृत्त, और ७ स्वभावबलप्रवृत्त, अब इन प्रत्येकका वर्णन नीचे करते है ॥

तहांआदिबलप्रवृत्तव्याधि

तत्रादिबलप्रवृत्ता ये शुक्रशोणितदोषान्वयाः कुष्ठार्शः प्रभृतयः। तेऽपि द्विविधा मातृजाः पितृजाश्च ॥

अर्थ—तहां पूर्वोक्त सप्तविधव्याधियोंमें जो आदिबल प्रवृत्त व्याधिहैं वह येहै जैसै जो दुष्टशुक्र और दुष्टरुधिरसैं उत्पन्न होते है—अैसे कोढ, ववासीर, प्रभृति[1]। वोभी दोप्रकारके है—एक माताके रुधिरसैं और दूसरे पिताके वीर्य दोषसैं जो होते है ॥

जन्मबलप्रवृत्तव्याधि

जन्मबलप्रवृत्ता ये मातुरपचारात्पङ्गुजात्यन्धबधिरमूकमिण्मिणवामनप्रभृतयो जायन्ते। तेऽपि द्विविधा रसकृता-दौहृदापचारकृताश्च।

अर्थ—जन्मवल प्रवृत्त वह रोगहैं जो मातापित्ताके शुक्रशोणितकी दुष्टीके विनाभी गर्भावस्थामें माताके दुष्टआहार और आचार करनेसैं पांगुरा, जन्मांध, बहरा, गूंगा, गिनगिनाके बोलने वाला, वोना, आदि रोगहोते है। वोभी जन्मबलप्रवृत्तरोग दोप्रकारके है, एक रसकृत, दूसरे दौहृदे[2]के अपचार करनेसैं होतेहै॥

दोषबलप्रवृत्तव्याधि

दोषवलप्रवृत्ता य आतङ्कसमुत्पन्ना मिथ्याहाराचारभवाश्च तेऽपि द्विविधा आमाशयसमुत्थाः पक्वाशयसमुत्थाश्च पुनश्च द्विविधाः शरीरा मानसाश्च त एत आध्यात्मिकाः ॥

अर्थ—दोषबल प्रवृत्त जो व्याधि होती है वो मिथ्या आहार बिहारसैं होती है, अर्थात् जो वातपित्त कफ—और रज तमकी शक्तिकरके रोग प्रवृत्त (उत्पन्न) होते है—वो दोप्रकारके है एकआमाशयसैं प्रगट होनेवाले, दूसरे पक्वाशयसैं उत्पन्न होनेवाले, फिर वो आमाशय और पक्वाशयसैं उत्पन्नहोनेवाले रोग दो

---

१ प्रभृति शब्दसैं प्रमेह, क्षय, आदिजानने। २ गर्भवती माताके चतुर्थादिमासोंमें इन्द्रियोंकी इच्छाको दौहृद कहते है।

प्रकारके है। एकशारीरक अर्थात् शरीरसैं उत्पन्न होनेवाले, दूसरे मानसिक अर्थात् मनमें प्रगटहोनेवाले, इन्ही दोषबलप्रवृत्त रोगोंको आध्यात्मिक कहते है ॥

संघातबलप्रवृत्तव्याधि

संघातबलप्रवृत्ता ये आगन्तवो दुर्बलस्य बलवद्विग्रहात्तेऽपि द्विविधाः शस्त्रकृता-व्यालादिकृताश्च। एते आधिभौतिकाः ॥

अर्थ—संघातबलप्रवृत्तव्याधि वोहै जो आगंतुक और दुर्बल मनुष्यका बलवान्सैं लडना, फिर वो दोप्रकारकी है १ पहली शस्त्रकृत, और दूसरीव्यालादि (सर्पादि) कृत, इन्हीको आधिभौतिक व्याधिकहते है ॥

कालबलप्रवृत्तव्याधि

कालबलप्रवृत्ता ये शीतोष्णवातवर्षाप्रभृतिनिमित्तास्तेऽपि द्विविधा व्यापन्नर्त्तुकृता अव्यापन्नर्त्तुकृताश्च ॥

अर्थ—कालबलप्रवृत्तव्याधि वो हैं जैसै–शरदी, गरमी, पवन, वर्षा, आदि षड्ऋतुओंके निमित्तसैं होती है । वोभी दोप्रकारकी है एक व्यापन्न[१]ऋतुकृत, दूसरी अव्यापन्न[२] ऋतुकृत ॥

दैवबलप्रवृत्तव्याधि

दैवबलप्रवृत्ता ये देवद्रोहादभिशस्तका अथर्वकृता उपसर्गकृताश्च-तेऽपि द्विविधा विद्युदशनिकृताः पिशाचादिकृताश्च पुनश्च द्विविधाः संसर्गजा आकस्मिकाश्च ॥

अर्थ—दैवबल प्रवृत्त अर्थात् देवशक्तिसैं होने वाले रोग वो है जो देव (देवता, गौ, गुरु, सिद्ध, इनसैं द्रोहकरने) सैं होते है। तथा अभिशस्तक अर्थात् ऋषियोंके शापदेनेसैं, अथर्वकृत (अथर्वणवेद प्रणीत अभिचारिकमंत्रोंकरके होनेवाले मारण, मोहनादि व्याधि) और उपसर्गज (अर्थात् छूतकेरोग जैसैं ज्वरवालेके पास रहनेसैं वो ज्वर उडकर दूसरेको लगजाता है इत्यादि)। फिर

---

१ ऋतुके दूषित होनेसैं रोगहोते है वो व्यापन्न ऋतुकृत कहाते है। २ और जो उत्तमऋतुमें दूषित औषध जलके सेबनसैं होनेवाली व्याधि होती है वो अव्यापन्न ऋतुकृत जाननी।

वो दैवबलप्रवृत्त रोगभी दोप्रकारके हैं-एक विजली[1] और अशनिकृत[2] दूसरा पिशाचादि[3]कृत। फिर इसके दोभेद है एकसंसर्गज,[4] दूसरा आकस्मिक[5]।

स्वभावबलप्रवृत्त

स्वभावबलप्रवृत्ताः क्षुत्पिपासाजरामृत्यु निद्राप्रभृतयस्तेऽपि द्विविधाः, कालकृता-अकालकृताश्च तत्र परि रक्षणकृताः कालकृता-अपरि रक्षणकृता अकालकृता एते आधिदैविकाः॥ तत्र सर्वव्याध्यवरोधः॥

अर्थ—स्वभावबल (अर्थात् प्रकृत्तिकी शक्तिसैं) उत्पन्न होनेवाले अैसे भूख, प्यास, बुढापा, मौत, निद्राआदि वोभी दोप्रकारके है एक कालकृत, और एक अकालकृत, तहां रक्षाकरने परभीहोय वो कालकृत[6] रोग है, और बिना रक्षा करने से जो होवे वो अकालकृत जानने। इन्हीको आधिदैविक कहते है। तहाँ इन्ही आदि बलप्रवृत्तादि सात प्रकारकी व्याधियोंमें संपूर्ण व्याधिमात्र अंतर्गत जाननी॥

कदाचित कोई कहे कि सबव्याधियोंका कैसैं इन्हींमें संग्रह होसक्ता है इस वास्ते कहते है॥

सर्वेषाञ्च व्याधीनां वातपित्तश्लेष्माण एव मूलं तल्लिङ्गत्वाद्दृष्टफलत्वादागमाच्च तथाहि कृत्स्नं विकारजातं विश्वरूपेणावस्थितं सत्वरजस्तमांसि न व्यतिरिच्यन्ते। एवमेव कृत्स्नं विकारजातं विश्वरूपेणावस्थितमव्यतिरिच्यवातपित्तश्लेष्माणो वर्त्तन्ते॥

अर्थ—संपूर्ण व्याधियोंके आदिकारण वातपित्त और कफहै। कारण कि

---

१ लताके आकार तिरछी गिरे वो विजली गिरी कहाती है। २ और अग्निके समान गोला रूप गिरे उसको अशनी अर्थात् (वज्रपात) कहते है। ३ आदि शब्दसैं भूत, प्रेत, ब्रह्मराक्षसादि जानने। ४ देवद्रोहकरके मनुष्योंके आपसमें मिलनेसैं जो महामारी आदि रोग होते है। ५ बिना संसर्गके जो पूर्व जन्मोंपार्जित कर्मकरके होनेवाले। ६ इसीसैं कालरोगोंकी चिकित्सा नहीं कही।

सर्व व्याधिमात्र तल्लिंगत्व होनेसैं, तथा दृष्टफलत्व होनेसैं, और शास्त्रप्रमाण होनेसैं, तथा यह संपूर्णविकार समूह विश्वरूप करके स्थितहै अर्थात् जाग्रत रूपकरके स्थित है । इसीसैं यह सतोगुण, रजोगुणसैं पृथक् नही है । इसी प्रकार यह संपूर्ण विकारजात विश्वरूपकरके स्थित अर्थात् रोगसमूहकरके स्थित पृथक् नहीं है ॥

कोइ प्रश्नकरेकि तीनदोषोंसैं आदिबल प्रवृत्तादि अनेक व्याधि कैसैं होती है तहां कहते है ॥

दोषधातुमलसंसर्गादायतनविशेषान्निमित्ततश्चैषां विकल्पा भवन्ति ॥

अर्थ—दोष धातु मल इनके संयोगसैं आयतन विशेषसैं और निमित्तसैं व्याधियोंके अनेक भेद होते है ॥

दोषदूष्यसंज्ञालक्षणाकरकेहोतीहै

दोषदूषितेष्वत्यर्थं धातुषु संज्ञाक्रियते रसजोऽयं शोणितजोऽयं मांसजोयं मेदोजोऽयमस्थिजोऽयं मज्जजोऽयं शुक्रजोऽयं व्याधिरिति ॥

अर्थ—दोषोंकरके दूषित धातुओंकी संज्ञाकरी जाती है यह रसजन्यव्याधि

---

७ तल्लिंग कहिये वातादिदोषोंके लक्षण रूक्ष, अल्प, और स्नेहादिक तथा तोद दाह और खुजली आदि कार्यजानने । ८ दृष्टफलत्व कहिये वातादिकका शमन होना प्रत्यक्ष देखाजाताहै । ९ शास्त्रमें भी लिखाहै कि११२०ग्यारहसोंवीस व्याधियोंके कार्यभूत वातपित्त और कफही कारण है । १० विकार इसजगे २३ महदादिक जानने ११ संयोग जैसै । वातादिदोष, रसधातु, मल, मूत्रादिके संयोगसैं अतीसारादिरोगहोते है । वातादिदोष रक्तधातु इनके संयोगसैं विद्रधि और रक्तगुल्मादि रोग होते है । तथा वातादिदोष और रसधातुके संयोगसैं ज्वरादिक रोग होते है । रसादि दूष्य और मलमूत्र आदिके संयोगसैं वीसप्रकारकी प्रमेह होती है । १२ स्थानभेदसैं रोगोंके भेद जैसै सातस्थानोंमें ६९ मुखरोग है । नेत्ररोग ७० इत्यादिजानने १३ निमित्त कहिये वातादिसैभी रोगोंके अनेकभेद होजाते है—जैसैं वातादि ज्वर तीन—संनिपातका अेक—द्वंद्वजतीन—आगंतुज आठवाँ इसीप्रकार और भी भेद अनेक जानने ॥

है-यह रुधिरजन्य है-यह मांसजन्य है-यहमेदाजन्य है-यह अस्थिजन्य है-यह मज्जाजन्य है और यह व्याधि शुक्रजन्य है ॥

जैसे यह घीसैं जलगया तेलसैं जलगया-तामेसैं जलगया-लोहसैं जलगया इत्यादि-जैसैं घी-तेल-तामा और लोहमें अग्नि कारण है उसी प्रकार रसरक्तादिजन्य रोगोंमें वातादि दोष कारण है ॥

अब चिकित्सा विशेष विज्ञानार्थ सुखसाध्यत्वादि कर्मके बोधार्थ प्रत्येक रसादि धातु विकारोंको दिखाते है ॥

रसजन्यविकार

तत्रान्नाश्रद्धारोचकाविपाकाङ्गमर्दज्वरहृल्लासतृप्तिगौरवहृत्पाण्डुरोगमार्गोपरोधकार्श्य वैरस्याङ्गसादकालवलिपलितदर्शनप्रभृतयोरसदोषजा विकाराः ॥

अर्थ—तहां अन्नमें अश्रद्धा, और अन्नमें अरुचि (नफरत) विपाक, अंगोंमे फूटन, ज्वर, हृल्लास, तृप्ति (पेटभरेके समान) देहमें भारीपना, हृदयरोग, पांडुरोग, छिद्रोंका बंद होजाना, कृशता, मुखमें विरसता, अंगोंमें उत्साहरहितपना, विना समय बुढापा, और वालोंका सपेदहोजाना, इत्यादि रसदोषजन्य विकार है ॥

रुधिरजन्यविकार

कुष्ठविसर्पपिडकामशकनीलिकातिलकालकन्यच्छव्यङ्गेन्द्रलुप्तप्लीहविद्रधिगुल्मवातशोणिताशोऽर्बुदाङ्गमर्दासृग्दररक्तपित्त प्रभृतयो रक्तदोषजा गुदमुखमेढ्रपाकाश्च ॥

अर्थ—कोढ, विसर्प, पिडका, मस्से, निलिका, तिलकालक (तिल) न्यच्छ- (लहसन) व्यङ्ग (झाँई) इन्द्रलुप्त (जिसमें मूँड़के वारजाते रहे) प्लीह (तिल्ली) विद्रधि, गोला, वातरक्त, ववासीर, अर्बुद, अंगमर्द (अंगोंका टूटना) असृग्दर (रक्तप्रदर) और रक्तपित्तआदि ये रुधिरदोषजन्यवीमारी है । तथा गुदा, मुख और भगलिंगका पकना येभी रुधिर जन्यंविकार है ॥

मांसदोषजविकार

अधिमांसार्बुदार्शोऽधिजिह्वोपजिह्वोपकुशगलशुण्डि-

कालजीमांससंघातौष्ठप्रकोपगलगण्डमालाप्रभृतयो मांसदोषजाः ॥

अर्थ—अधिमांस, अर्बुद, ववासीर, अधिजिव्ह, उपजिव्ह, उपकुश, गलशुंडी, अलजी–मांससंघात, ओष्टप्रकोप, गलगंड, गंडमाला आदि मांसदोषज विकारहै

मेददोषजविकार

ग्रन्थिवृद्धिगलण्डार्वुदमेदोजौष्ठप्रकोपमधुमेहातिस्थौल्यातिस्वेदप्रभृतयो मेदोदोषजाः ॥

अर्थ—गांठ, अंडवृद्धि, गलगंड, अर्बुद, मेदरोग, ओष्टप्रकोप, मधुमेह, अतिस्थूल, और अतिपसीनोकाआना आदि मेददोषजविकार है ॥

अस्थिदोषजविकार

अध्यस्थ्यधिदन्तास्थितोदशूलकुनखप्रभृतयोऽस्थिदोषजाः ॥

अर्थ—अधिक हड्डीका होना, अधिदंत (दाँतकेऊपर दाँतका आना) हड्डियोंमें चभकाचलना, और हड्डीका दर्द, तथा कुनख आदि अस्थिदोषज विकार अर्थात् ए विकार हड्डीके है ॥

मज्जादोषजन्यविकार

तमोदर्शनमूर्च्छाभ्रमपर्वगौरवस्थूलमूलोरुजङ्घानेत्राभिस्यन्दप्रभृतयो मज्जदोषजाः ॥

अर्थ—अंधकार दर्शन–मूर्च्छा–भ्रम–स्थूलमूलवाले फोडान्का पर्वो (जोडों) में होना–भारीपना–ऊरू (जांघ) और पीडरी इनमें पीडा–तथा नेत्राभिष्यंद आदि मज्जादोष जन्य विकार जानने ॥

शुक्रजन्यविकार

क्लैब्याप्रहर्षशुक्राश्मरीशुक्र मेहशुक्रदोषादयश्चतद्दोषजाः ॥

अर्थ—नपुंसकता, स्त्रीसंगमें इच्छा न रहना, वीर्यकी पथरी शुक्रप्रमेह, और शुक्रदोषादिक शुक्रके विकार जानने अर्थात् येदोष शुक्रके दोषसैं होते है ॥

मलायतनविकार

त्वग्दोषाः सङ्गोऽतिप्रवृत्तिर्वामलायतनदोषाः ॥

अर्थ—कुष्टसैं आदिले त्वचाके विकार, मलमूत्रादिकोका रुकजाना, अथवा

अत्यंत उतरना, तथा कान–मुख–नाक–नेत्रआदि मार्गके रुकनेको संग असा-कहते है ॥

इन्द्रियायतनदोष

इन्द्रियाणामप्रवृत्तिरयथाप्रवृत्तिर्वेन्द्रियायतनदोषाः । इत्येवं समास उक्तो विस्तरनिमित्तानि चैषां प्रति रोगं वक्ष्यामः ॥

अर्थ—इन्द्रियोंका अपने २ कार्यमें प्रवृत्तनहोना–अथवा कुछका कुछकरना ये इन्द्रियातन दोष है । तहां दोषधातु मल संसर्गादिदोव्याधियोंके कारणजो पूर्वकहआए तथा आयतनविशेष दूसरा व्याधिहोनेका कारण ए दोनोको संक्षेप-सैं कहकर ॥

अब तीसरे निमित्तजन्य कारणको कहते है कि निमित्त (वातादि) कारण जैंसैं बलवान्सैं विरोधकरना–और मिथ्याप्रयुक्त स्नेहादिक सै होनेवाले अतिसारादिरोगोंको प्रत्येक रोगोंके प्रति पृथक् २ कहैंगे ॥

भवन्ति चात्र ॥

कुपितानां हि दोषाणां शरीरे परिधावतां ।
यत्र सङ्ग स्ववैगुण्याद्व्याधिस्तत्रोपजायते ॥

अर्थ—शरीरमें विचरनेवाले कुपित दोषोंका जिस मार्गमें विगाड होनेसें रु-कैगे वही रोग उत्पन्न करते है ॥

इति

चिकित्साविधिकाउपदेश

जातमात्रश्चिकित्स्यः स्यान्नोपेक्ष्योऽल्पतयागदः ।
वन्हिशत्रुविषैस्तुल्यः स्वल्पोऽपिविकरोत्यसौ ॥

अर्थ—व्याधि उत्पन्नहोतेही उसकी चिकित्सा करे, किंतु यह अल्पहै क्या विगाड़करेगी इसप्रकार उपेक्षा न करदेवे । क्योंकि उपेक्षा करनेसैं वह अल्पही व्याधि अग्नि–शत्रु–और विषके तुल्य विकार करने वाली होजातीहै । जैसै अ-ग्निकी चिनगरी वडे २ महलोंको फूंक देतीहै, छोटासा शत्रु कालपायके सर्वना-शकरेहै । एवं थोडासाभी विष प्राण हरण करताहै, उसीप्रकार अल्पव्याधि प्रा-णनाश करे है ।

वैद्यकाकर्त्तव्य

व्याधेस्तत्वपरिज्ञानं वेदनायाश्च निग्रहः।
एतद्वैद्यस्य वैद्यत्वं न वैद्यः प्रभुरायुषः॥

अर्थ–व्याधिका भलेप्रकार जानना और उस व्याधिजनित पीडाका नाशकरना यही वैद्यका वैद्यत्वहै किंतु वैद्य आयुका प्रभु नहीहै अर्थात आयुका मालिक नही। परंतु कोई आचार्य इसश्लोकको इसप्रकार लगाते है कि व्याधिका यथार्थ ज्ञान करना और पीडाकी शांति करनाही वैद्यका वैद्यपना नहीहै, किंतु सौं आगंतु मृत्युओंको हरणकरेहै इसवास्ते वैद्य आयुका प्रभुहै

रोगमादौपरीक्षेत ततोनंतरमौषधम्।
ततः कर्मभिषक् पश्चात् ज्ञानपूर्वं समाचरेत्॥

अर्थ—वैद्य प्रथम रोगकी परीक्षा करे, रोगज्ञानके पश्चात् औषधकी परीक्षा करे, जव रोग और औषध दोनोंको परीक्षा करचुके तव सावधानीकेसाथ कर्म (औषधदेना आदि चिकित्सा) का प्रारंभकरे। असावधानीसैं चिकित्सा न करे

अव प्रसंगवश रोगोंके जाननेके वास्ते चरकसैं त्रिविधविज्ञानीयाध्यायकी भाषा लिखते है॥

अव हम त्रिविध विज्ञानीयाध्यायका वर्णन करते है॥

तहां रोगकाविज्ञान तीन प्रकारसैं होता है। जैसै १ उपदेश, २ प्रत्यक्ष, और २ अनुमान,॥

तहां आप्तवचनको उपदेशकहते है। अव यह जिज्ञासा हुई कि आप्त किसको कहते है तहां आप्तोंके लक्षण कहते है॥

आप्तलक्षण

जो तर्करहित स्मृतविभागके जानने वाले और विना प्रीतिके परदुःखसैं आप दुखीहोवे उन महात्माओंको आप्त ऐसा कहते है। उनका गुणसंयुक्त वचन प्रमाण है अर्थात ग्रहणकरने योग्य है॥

और मत्त (सिड़ी पागल) उन्मत्त (मद्यादिपीनेसैं पागल) मूर्ख,विना विचारेकहने वाला, इनका वचन अप्रमाण है अर्थात् अमाननीय है॥

प्रत्यक्षकेलक्षण

जो वस्तु अपने नेत्रादि इन्द्री और मनकरके ग्रहण करीजावे वो प्रत्यक्ष है॥

अनुमान

तर्क और युक्तिकी जिसमें अपेक्षा होवे उसको अनुमान कहते है इस (उपदेश, प्रत्यक्ष, और अनुमान) त्रिविध ज्ञानसमुदायसैं प्रथम रोग परीक्षा कराहुआ रोगी चिकित्साकरनेमें संशय रहित होता है ॥

संपूर्ण ज्ञान केवल ज्ञानके एकदेश जाननेसैं कदाचित् नहीं होता किंतु संपूर्ण ज्ञानके अंगोंके जाननेसैं होता है ॥

इन तीनोंप्रकारके ज्ञानमें प्रथम आप्तोपदेश ज्ञान मुख्य है फिर प्रत्यक्ष और अनुमानद्वारा निश्चय करना कहा है ॥

परंतु वादी शंकाकर्त्ता है कि हम आप्तोंको नही जानते। इस वास्ते हम प्रत्यक्ष और अनुमान ए दोही परीक्षा ओंको मुख्य करके मानते है, इसीसैं अब ज्ञानवालोंको दोही परीक्षा करना मुख्य है, प्रत्यक्ष और अनुमान; परंतु बहुतसैं बुद्धिमान पुरुष इनदोनो परीक्षाओंके साथ उपदेश प्रमाणको मानते है अर्थात् इन दोनोंमें आप्तवचन संमतजो होवे वो प्रमाण है ॥

जैसे एक २ रोग, दोषोंकाप्रकोप, रोगोंकीयोनी, आत्मा, अधिष्ठान, वेदना संस्थान, शब्द, स्पर्श–रूप–रस–गंध–उपद्रव–वृद्धिस्थान, क्षययुक्त इनका प्रसर और इनकेनाम इत्यादियोग आप्त वचनसैं जानना अर्थात् प्रवृत्ति अथवा निवृत्ति है यह आप्तवचनसैं जाना जाता है ॥

प्रत्यक्ष

रोगतत्वको प्रत्यक्ष जानना होवेतो सब इन्द्रियोंसैं रोगीके देहगत सबइन्द्रियार्थ (शब्द स्पर्शादिको) की परीक्षा करे, बिना जिव्हाद्वारा परीक्षाके। तात्पर्य यह है कि वैद्य नेत्र, कान, नासिका, और हाथोंसैं परीक्षाकरे और सवाद जानना जिव्हा इन्द्री द्वारा होता है परंतु इसको जिव्हा इन्द्रीसैं नहीं करते अत एव यहां वर्जित है ॥

तहां इन्द्रीयद्वारा जो परीक्षा करीजाती है उसको लिखते है ॥ पोरुओं

कर्णइन्द्री

जैसे आँतोंका बोलना, संधियोंका चटकना और उंगलीके पूर्वोका चटकना इत्यादि और जो शरीरमें जब्द होनेवाले धर्म है उनको कर्ण इन्द्रीद्वारा परीक्षा करे ॥

नेत्रइन्द्री

देहकावर्ण, ऊंचा, नीचा, छाया, शरीरकी प्रकृति, पांडुरोगआदि विकार, और जो नेत्रविषयक ज्ञान है उनको नेत्र इन्द्रीद्वारा परीक्षा करे ॥

जिह्वाइन्द्री

जिव्हाइन्द्रीका ज्ञान जैसै–रोगीके मलमूत्रका और देहका खारा मीठा जायका यह अनुमानसैं ही जानलेवे, यह रसनेन्द्री ज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा नहीं होता है; इसीसैं रोगीसैं प्रश्नद्वारा करना चाहिये अर्थात् आपके मुखका जायका कैसा, है जब मल मूत्र करते हो उस पर मक्खी बहुत बैठती है या थोडी और इसीप्रकार देहपर मक्खियोंके बैठनेसैं देहमें मिष्टताका अनुमान करना और यदि जूंआँ आदि जीव देहपर दौडे तो जाननाकि इसरोगीके देहमें विरसता है॥

अब रक्तपित्तकी परीक्षामें यह परीक्षा करना कि इसके यह जलहीरुधिरमिला लाल २ गिरे है अथवा रक्तपित्त गिरता है । तहां उस रुधिरको कौआ कुत्ते आदि भक्षणकरे तो जाननाकि रुधिर मिला जलगिरता है । और यदि कुत्ते कौआ आदि नखावेतो जाननाकि इसरोगीके रक्तपित्त गिरता ॥

इसी प्रकार औरभी खट्टे चरपरे आदि इसप्राणीके देहगतरसोंकी परीक्षा वैद्य अपनी बुद्धिके बलसैं करे ॥

नासिकाइन्द्री

रोगीके देहमें दुर्गंध आती है या सुगंध आती है, और दुर्गंध सुगंध किसप्रकारकी आती है, इत्यादि प्रकृतिविकार जन्य गंधको नासिकाइन्द्रीसैं सूँघकर जानै

स्पर्शनेन्द्री

हाथोंसैं प्रकृति और विकृतियुक्त यह कठोर है यह नम्रहै यह गरम और शीतल इत्यादि परीक्षा स्पर्श द्वारा प्रत्यक्ष और अनुमानके अेकदेश द्वारा जाननी

अबअनुमान ज्ञानको कहते है

अर्थ—अब आगे जो भाव कहते है इनसैं आदिले औरभी अनुमानसैं वैद्योंको जाने जाते है जैसै-पचनेकी शक्तिद्वारा जठराग्निका मंदतीक्ष्णादि ज्ञान होता है। दंडकसरत–डोलने फिरनेसैं बलका अनुमान होता है । शब्दादिग्रहणसै प्राणीके सुननेकी शक्तिका ज्ञानहोता है । व्यभिचारसै मन और मनके अर्थोका निश्चय होता है । व्यापार आदिसैं विज्ञानका निश्चय होता है । संगतिसैं रजोगुणका निश्चय होता है । ज्ञानसैं मोहका निश्चय होता है । द्रोह (वैरभाव) करनेसैं क्रोधका निश्चय होता है । दीनता करनेसैं शोकका निश्चय होता है । प्रसन्नता (खुशवख्ती) सैं हर्षका निश्चय होता है । संतुष्टतासैं प्रीतिका ज्ञानहोता है । घबडाहटसैं भयका ज्ञानहोता है । स्वस्थचित्तसैं धैर्यका ज्ञानहोता है । उत्साहद्वारावीर्यका निश्चय होता है । बिना भ्रमके स्थितिका निश्चय होता है । अभिप्रायसैं

श्रद्धाका निश्चय होता है। ग्रहण धारणसैं मेधाका निश्चयहोता है। नाम ग्रहणसैं संज्ञाका निश्चय होता है। स्मरणसैं स्मृतिका ज्ञान होता है। लज्जायुक्त होनेसैं लज्जा (शरम) का बोध होता है। सुशीलोंके आचरणसैं शीलताका ज्ञान होता है। वर्जित करनेसैं द्वेषका ज्ञान होता है। अनुबंधनसैं उपाधिका निश्चय होता है। चंचलता रहित होनेसैं धृतिका निश्चय होता है। आज्ञाके अनुसार चलनेसैं वशीभूतपनेका निश्चय होता है। काल–देश–उपशय–और पीडा इनसैं अवस्था–भक्ति (भोजनक्रिया) सात्म्य–और व्याधिइनका निश्चय होता है। जिसव्याधिके लक्षण छिपेहुए है उसका ज्ञान उपशय[१] और अनुपशय द्वारा होता है॥

तथा दोषोंका प्रमाण–अपचार–आयुकीक्षीणता ए अरिष्टद्वाराजाने जाते है ग्रहणीका मृदु और दारुणत्व–दुःस्वप्नदर्शन, अनपेक्षितवस्तुओंमें अभिप्राय–सुख दुःख इनसबका रोगीसैं प्रष्णकरनेसैंही निश्चय होता है॥

इसीवास्ते आत्रेय महर्षि कहते है आप्तोपदेश प्रत्यक्षइन्द्रियोंसैं और अनुमानद्वारा चतुर वैद्य व्याधियोंकी परीक्षाकरे ॥

अर्थवेत्ता वैद्य यथा संभव सबको सर्वथा ज्ञानबुद्धिरूप दीपकसैं देखकर कार्य करता है वह तत्ववेत्ता हैं॥

प्रथम तत्व विचारकरे फिर कार्य करके उसको जाने। जो कार्य तत्वमें विशेष ज्ञाता है वह परीक्षा विषयमें मोहको नहीं प्राप्त होता है। और बुद्धिमानीका उत्तम फल प्राप्त करताहै। जो वैद्य केवल ऊपरहीसैं रोगकी परीक्षा करता है। और ज्ञान बुद्धि दीपकसैं रोगीके अंतःकरणका विचारनहीं करता वह चिकित्साकरनेका अधिकारी नहीं है।

इस प्रकार संपूर्ण रोगविशेषोंका त्रिविधज्ञानसंग्रह है–जैसै आप्तउपदेश करते है और जैसै प्रत्यक्ष ग्रहणकरा जाताहै एवं जैसैं अनुमानसैं रोगजाने जाते है उनको उदार बुद्धि वैद्य जाने इसप्रकार त्रिविधरोगविज्ञानीय विमानमें भावोंका मुनिने वर्णन करा है॥

इति श्रीआयुर्वेदोद्धारे बृहन्निघंटुरत्नाकरे त्रिविधरोग विशेषविज्ञानीयं समाप्तम्

रोगज्ञानानंतरचिकित्सा

आदावंते रुजाज्ञाने प्रयतेत चिकित्सकः।

१ जिस औषध अन्न और बिहारसैं रोगीको सुखहो उसको उपशय और सात्म्य कहते। और इससैं विपरीतको अनुपशय और असात्म्य कहते है॥

भेषजानां विधानेन ततः कुर्याच्चिकित्सितम् ॥

अर्थ—वैद्य प्रथम रोगकी परीक्षा में यत्नकरे फिर औषधोंके विधान करके चिकित्सा करना चाहिये ।

सबरोगोंकेनामनजाननेमेंअलज्जत्व

विकारनामाकुशलो नजिह्रियात्कदाचन ।
नहि सर्वविकाराणां नामतोस्ति ध्रुवास्थितिः ॥

अर्थ—वैद्य रोगका नाम न जाननेपर कदाचित् लज्जा न करे, क्योंकि संपूर्ण रोगोंकी नामकरकेही परीक्षा नही करी, अर्थात् अनेकानेक रोग इससंसारमें विना नामके दीखते है ।

(अनुक्तदोषोंमेंलक्षणद्वाराचिकित्साकीआज्ञा)

नास्तिरोगोविनादोषैर्यस्मात्तस्माच्चिकित्सकः ।
अनुक्तमपिदोषाणां लिंगैर्व्याधिमुपाचरेत् ॥

अर्थ—विनादोषोंके रोग नहींहो इसीसैं वैद्य, जो दोष शास्त्रमें नहीं कहे उनदोषोंकों रोगीके उपद्रवोंसैं जानके चिंकित्साकरे ।

असाध्यरोगीकीचिकित्साकानिषेध

येनकुर्वंत्यसाध्यानां चिकित्सा ते भिषग्वराः ।
अतो वैद्यः श्रमः कार्यः साध्यासाध्यपरीक्षणे ॥

अर्थ—जो असाध्य रोगीका यत्न नही करते वोही वैद्योंमे श्रेष्ट हैं अतएव वैद्यको उचित है कि साध्यासाध्यकी परीक्षामें श्रम करे ॥

उत्पन्नहोतेही चिकित्साकरनेकाहेतु

यथास्वल्पेनयत्नेन छिद्यते तरुण स्तरुः ॥
सएवातिप्रवृद्धस्य छिद्यतेऽतिप्रयत्नतः ॥

अर्थ—जैसै तरुणवृक्ष अर्थात् नवीनोत्पन्नवृक्ष थोडे यत्न करने परही काटा जासक्ता है, परंतु जव वोही वढकर शाखाप्रशाखाओंकरके वढजाता है तव उसका काटना वडाकठिन हो जाता है, उसीप्रकार रोग प्रगटहोते ही कुछ थोडीसी चिकित्सासै दूरहोसक्ता है परंतु जव रोगवढके वद्धमूल होजाता है फिर उसका दूरकरना वडा कठिन है ॥

औषधकीआवश्यता

आयुष्मान् पुरुषो जीवेत्सव्यथो भेषजां विना ।
भेषज न पुनार्जीवेत्स एवहि निरामयः ॥

अर्थ—जिसकी दीर्घावस्थाहै यदि वो रोग ग्रस्तहो औषध न करे तो वो दुःख सहित जीता है, और यदि वही औषध करे तो रोगरहित हो आनंदसें जीवे। तात्पर्य यह है कि दीर्घआयुवाला विना औषधके दुखी रहता है । और औषध के करनेसें रोग रहित जीवन पाता है ॥

नचौषधीनामपिसर्वथैव प्रभावहानिःपरिकल्पनीया।
फलंप्रयात्यूर्ध्वमधस्त्रिवृच्च प्रत्यक्षतः कस्यनसिद्धिमेतत् ॥

अर्थ—इसप्राणीको उचित है कि औषधोंमें सर्वथा [कलिदोषसें] प्रभाव हानीकी कल्पनानकरे [अर्थात् अब कलियुगमें ये औषध अपना प्रभाव नहीं दिखाती एसाविचार कदाचित् न करे] क्योंकि मैनफलके खानेसें उलटी होती ही है । और निसोथखानेसें दस्तहोते यहबात प्रत्यक्षमें किसको सिद्धनही है?अर्थात् सवजानते है तथा जमालगोटा,इन्द्रायनके फल,चोक ये सब औषध अपना फलदिखाती है इसी कारण औषधोंके गुणमें किसीको भी संदेहनहीं करना॥

यदि जो औषधके गुण है वो गुणनहोवे तो जानना कि कितो ये दवाई पुरानी है अथवा इसके प्रयोगमें कुछनकुछ विपरीतता आगई है या इसप्राणीकी प्रकृति के अनुसारनही है इत्यादि कारणोंसें औषध गुणनहीं करती परंतु मूर्खमनुष्य अपने मूर्खता परतो देखते नहीं व्यर्थ औषधको दोषदेते है ॥

सतिचायुषिनोपायंविनोत्थातुंक्षमोरुजी ।
दर्शितश्चात्रदृष्टांतः पंकमग्नोमहागजः ॥

अर्थ—आयुष्यवान्‌भी रोगी बिना उपायके रोगसें नहीं उठसके, इस्में दृष्टांत है कि जैसें कीचमें फसा हुआ हाँथी बिना यत्नके नहीं निकलसक्ता उसीप्रकार रोगीबिना यत्नके अच्छा नहीं होता। यहां रोगी है सो हाथी है, और रोगहै सोई कीचड है, उसमें फसेको औषध देना मानों उस कीचडसें निकालनेका उपाय है ॥

सतिचायुषिनष्टःस्यादामयैश्चाचिकित्सितः ।
यथासत्यपितैलादौदीपोनिर्वातिवात्यया: ॥

अर्थ—दीर्घावस्थावालाभी रोगीरोगकी विना चिकित्सा (इलाज) करे नष्ट होजाता है इसमें दृष्टांत है कि जैसै तेल और वत्ती होनेपर भी हवाके वेग करके दीपक वुझ जाता है, यहां मनुष्यकी देहही दीपक है और आयु रूप तेल है समय रूपवत्ती तामें जीवरूप ज्योति है और रोगरूप पवन इस जीवरूपदीपकको वुझाय देती है जैसै उस दीपकको रक्षामें रखनेंसैं नही वुझे इसीप्रकार इस देहकी रक्षा करनेसैं अकाल मृत्यु नहीं हो।

यथासत्यपितैलादौदीपंनिर्वापयेन्मरुत्।
एवमायुष्ययुक्तंचहिंसंत्यागंतुमृत्यवः॥

अर्थ—पूर्वोक्त वाक्यको दृष्टांतदेकर फिर पुष्ठकरते है जैसे तैलवाती आदि रहनेपर भी दीपकको पवन वुझादेती है इसीप्रकार दीर्घ आयु होनेपरभी आगंतुज मृत्यु इसप्राणीको नाशकर देती है॥

दोषागंतुनिमित्तेभ्योरसमंत्रविशारदौ।
रक्षेतांनृपतिंनित्यंयत्नाद्वैद्यपुरोहितौ॥

अर्थ—इसीवास्ते शास्त्रमें लिखा है कि दोष जन्यव्याधि और आंगतुज व्याधियोंसैं रस और मंत्रके ज्ञाता (जाननेवाले) वैद्य और पुरोहित राजकी रक्षा करे॥

रोगज्ञानमेंअभ्यासकोमुख्यत्व

अभ्यासात्प्राप्यतेदृष्टिः कर्मसिद्धिप्रकाशिनी।
रत्नादिसदसज्ज्ञानं नशास्त्रादेवजायते॥

अर्थ—अभ्यास (वारंवार चिकित्साकर्ममें प्रवृत्त होने) सैं कर्मसिद्धि प्रकाशकरता दृष्टी होती है, अर्थात् चिकीत्सा करनेका ज्ञान होता है, इसमें दृष्टांत है किं जैसे हीरापन्ना आदि रत्नोंके सचे झूटेका ज्ञान जैसै शास्त्रके पढनेसैंहीं नही होता किंतु उसमें अभ्यास करनेसैं होता है इसीप्रकार वैद्य विविधव्याधि चिकित्सामें जाने॥

दृष्टापचारजः कश्चित्कश्चित्पूर्वापराधजः।
तत्संकराद्भवत्यन्योव्याधिरेवंत्रिधास्मृतः॥

अर्थ—अव त्रिविध व्याधियोंको कहते है तहां कोई व्याधि दृष्टापचारज (इस लोकमें व्याधिके कारणोंसैं होनेवाली) है। और कोई पूर्वापराधज (पूर्वज

जन्मके करे अशुभ कर्मोंसैं हुए) है। और तीसरे इनदुष्टापचारज और पूर्वापराधजके मिलने सैं होते है इसप्रकार रोगतीनप्रकारके है ॥

यथानिदानंदोषोत्थैः कर्मजोहेतुभिर्विना।
महारंभोल्पकेहेतावातंकोदोषकर्मजः ॥

अर्थ—तहां दोषजन्यरोग अपने २ निदानसैं प्रगट होते है (जैसै वातके रूक्ष लघु आदि कारण है इनसे जो रोग प्रगटे वो वातजन्य जानना इसीप्रकार पित्त और कफ जन्य रोगोको भी समझना चाहिये) और जो दोषोंके कारण विनाही प्रगट होवे वो कर्मजन्य रोग जानना। और जिसमें थोडे दोषोंके कुपित होनेसैं वडीभारी व्याधि प्रगट हो उसको दोषकर्मज व्याधिकहते है ॥

दूष्यं देशं वलं कालमनलं प्रकृतिं वयः सत्वं सात्म्यं
तथा हारभवश्चाथपृथग्विधाः ॥ सूक्ष्मासूक्ष्माः समी
क्ष्यैषा दोषौषधनिरूपणे। यो वर्त्तते चिकित्सायां न
सस्खलति जातुचित् ॥

अर्थ—दोषऔषध निरूपणमें जो वैद्य दूष्य, देश, वल, काल, अग्नि, प्रकृति अवस्था, सात्म्य, आहार, और दूष्यादिकोंकी सूक्ष्म और वडी अवस्थाको देख (विचार) कर चिकित्सा करता है वह कदाचित् नही स्खलन होता अर्थात् कदाचित् नहीं भूले ॥

गुर्वल्पव्याधिसंस्थानंसत्वदेहवलावलात्।
दृश्यतेप्यन्यथाकारं तस्मिन्नवहितोभवेत् ॥

अर्थ—वैद्य, सत्व–देह–और वलावलके कारण गुरु और अल्प व्याधियोंको आकृति अन्यथा दीखती है उसमें सावधान होवे। जैसैं अधिक सत्व और उत्कृष्ट देहवलवाले प्राणीके होने वाले भारी भी रोग हलके मालूम होते है कारण कि उसके देहमें सत्व वल ए अधिक है। इसीप्रकार हीन सत्व हीनदेह हीनवल वालेके उत्पन्न हुई व्याधि हलकी भी वडी भारी दीखे है॥

गुरुंलघुमितिव्याधिंकल्पयंतुभिषग्ब्रुवः[1]।
अल्पदोषाकलनयापथ्येविप्रतिपद्यते ॥

अर्थ—जो कुत्सित वैद्य है वो व्याधिके संस्थान (स्वरूप, मात्रके देखते ही

१ भिषक् ध्रुवम् इति पाठांतरम् ॥

भारी रोगको हलका समझते है, जब हीन दोष समझा तो मात्रा भी हलकी देते है अतएव वो मात्रामें मोहको प्राप्त होते है । इसी प्रकार हलकी व्याधिको वडी भारी विचारके मात्रा देनेमें मोहको प्राप्त होते है ॥

ततोल्पमल्पवीर्यंवा गुरु व्याधौप्रयोजितम् ।
उदीरयेत्तरांरोगान् संशोधनमयोगतः ॥

अर्थ—अव कहते है कि अल्प मात्र–अल्पवीर्य–ऐसी संशोधनरूप औषध प्रवल रोगोंमें दीनीहुई हीन योग होता है, इसवास्ते रोगोंको अत्यंत वढाती है। इससै तो औषधन देनाही ठीक है जैसे पुत्रके कार्य न करनेसैं अपुत्र कहाता है उसीप्रकारका अयोग ही हीनयोग कहलाता है ॥

शोधनत्वतियोगेनविपरीतंविपर्यये ।
क्षिणुयान्नमलानेव केवलंवपुरस्यति ॥

अर्थ—लघुव्याधिमें विपरीत शोधन अर्थात् अत्यंत वीर्यवान् और अधिक औषधीदेवे, वह अतियोगके वस मलोंको ही नही क्षीणकरे है किंतु देहको भी नष्टकरे है ॥

अतोभियुक्तः सततंसर्वमालोच्यसर्वथा ।
यथायुंजीतभैषज्यमारोग्याययथाध्रुवम् ॥

अर्थ—इसकारण अर्थात् रोगोंकी गति दुर्बिज्ञेय होनेसैं निरंतर आयुर्वेद पठन पाठन अनुष्ठानमें तत्पर वैद्य सव दूष्यादि वस्तु ओंको विचार इसप्रकार औषध देवे कि जैसै आरोग्य अवश्य होवे ॥

दर्शन-स्पर्शन-प्रश्नै र्व्याधिज्ञानं त्रिधामतम् ।
दर्शनान्मूत्रजिव्हाद्यैः स्पर्शनान्नाडिकादिभिः ।
प्रष्णैःदूतादिवचना दितित्रेधासमुच्यते ॥

अर्थ—रोगका ज्ञान तीनप्रकारसैं होता है जैसै–दर्शन (देखना) स्पर्शन (छूना) और प्रष्ण (पूंछना) तहाँ मूत्र और जिव्हा आदिशब्दसैं मल–देहकी आकृति आदि देखने करके जाने। नाडी आदिको छूनेसैं जाने। और दूतादिके वचन पूछने करके वैद्यजाने इस प्रकार परीक्षा तीन प्रकारकी है ॥

शारीरामानसागंतुसहजाव्याधयोमताः ।
शारीराज्वरकुष्टाद्याः क्रोधाद्यामानसामताः ।

आगंतवोभिशापोत्था सहजाक्षुत्तृषादयः ॥

अर्थ—तहां व्याधि चारप्रकारकी है १ शारीरी २ मानसी ३ आगंतु—और ४ सहज। तहां ज्वरकुष्टादिक शारीरी व्याधि है। क्रोध—लोभादिक मानसिक व्याधि है। अभिशापजन्य व्याधि आगंतुज है और भूखप्यास—निद्राआदि सहज व्याधि कहलाती है॥

रोगोंकेभेद

तेचस्वाभाविकाः केचित्केचिदागंतवः स्मृताः।
मानसाःकेचिदाख्याताःकथिताःकेऽपिकायिका॥

अर्थ—उनरोगोंमेंकोई स्वाभाविक रोगहै। कोईआगंतु और कोईमानसिक एवं कोईरोग कायिक अर्थात् देहसैं संबंध रखते है॥

त्रिविधव्याधि

कर्मजाः कथिताः केचिद्दोषजासंतिचापरे।
कर्मदोषोद्भवाश्चान्येव्याधयस्त्रिविधाः स्मृताः॥

अर्थ—व्याधी तीन प्रकारकी हैं—जैसै एकतो कर्मज (जो पूर्वजन्मो पार्जितकर्मसैं होती है) दूसरी दोषज (जो वातादि दोषोंके कुपित होनेसै) होती है और तीसरी कर्म और दोषदोनों करके त्रिविधव्याधियोंकी चिकित्सा होनेवाली, ये तीनभेद है॥

त्रिविधव्याधियोंकीचिकित्सा

कर्मक्षयात्कर्मकृतादोषजाः स्वस्वभेषजैः।
कर्मदोषोद्भवायातिकर्मदोषक्षयात्क्षयम्॥

अर्थ—कर्मकृत*व्याधि कर्मके जीर्ण होनेसैं शांति होतीहै। दोष जन्य व्याधि

---

१ स्वाभाविक रोग भूखप्यास, निद्रा, वृद्धावस्था, और मृत्यु आदिहै, अथवा अपने स्वभावसैं उत्पत्ति होवे उसके स्वाभाविक कहिये सहज रोग, वो जन्मांधादिक जानने। २ जो किसी प्रकारकी चोट लगनेसैं होवे वो आगंतुज है। ३ काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, अभिमान, दीनता, पिशुनता, शोक विषाद, हर्ष, इर्ष्या असूया और मात्सर्यादिक ए मानसि व्याधिहै। ४जथवा उन्माद, अपस्मार, भ्रम, मोह, तम् संन्यासादिक जानने। * पूर्वजन्मो पार्जित दुष्टकर्म जन्यव्याधि॥

अपनी २ पृथक् २ औषध करनेसैं शांति होती है, और कर्मदोष दोनोंसैं प्रगट व्याधिकर्म और दोष दोनोंके क्षय होनेसैं दूर होती है ॥

पुनः त्रिविधव्याधि

साध्यायाप्याअसाध्याश्चव्याधयस्त्रिविधाःस्मृता ।
सुखसाध्यकष्टसाध्यो द्विविधः साध्यउच्यते ॥

अर्थ—साध्य-याप्य और असाध्य ऐसैं व्याधितीन प्रकारकी है । अब कहते है कि साध्यव्याधिके दोभेद एक सुखसाध्य-दूसरी कष्टसाध्य ॥

याप्यकेलक्षण

यापनीयंतुतंविद्यात्क्रियांधारयतेहियत् ।
क्रियायांतुनिवृत्तायांसद्यो यश्चविनश्यति ॥

अर्थ—अबयाप्यके चिन्ह कहते है कि जो चिकित्साकी क्रियाको धारण करे उसको याप्यअर्थात दूर होने योग्य व्याधि जाननी । और औषधोपाय न चले तो वोरोगी शीघ्रमरे उस रोगीको याप्यजानना ॥

प्राप्ताक्रियाधारयतिसुखिनंयाप्यमातुरम् ।
प्रपतिष्यदिवागारंस्तम्भोयत्नेनयोजितः ॥

अर्थ—याप्य रोगीको प्राप्तहुई क्रिया धारण करती है अर्थात् जब तक उसका यत्नहुआ करेगा तबतकरोगी नही मरे, जैसै गिरतेहुए घरमें अडवार अथवा किसी पत्थर वगेरहकानीचे सहारा लगादेनेसैं वह घर नहीं गिरे ॥

साध्यायाप्यत्वमायांति याप्याश्चासाध्यतां तथा ।
घ्नंति प्राणानसाध्यस्तु नराणामक्रियावताम् ॥

अर्थ—विना यत्नकरनेवाले मनुष्योंके साध्यरोग याप्य होजाते है, और याप्यरोग असाध्य होते है, एवं असाध्य रोग इन प्राणियोंकेप्राणोंको हरण करते है [इसीसैं मनुष्य मात्रको उचित है कि रोगके उत्पन्न होते ही उसकायत्न द्वारा निवारण करे] ॥

याप्यत्व

याप्यःकेचित्प्रकृत्यैवकेचित्याप्याउपेक्षया ।
प्रकृत्याव्याधयोऽसाध्याकेचित्साध्याउपेक्षया ॥

अर्थ—कोई रोगतो प्रकृतिसैंही याप्यहोते है और कोई रोगकी उपेक्षाकरने

सैं होते है। कोई व्याधि प्रकृतिसैं ही अर्थात् उत्पन्न होते ही असाध्य होती है और कोई उपेक्षाअर्थात् उसका यत्ननही करनेसैं होती है॥

साध्योयमितियःपूर्वंनरोरोगमुपेक्षते।
सकिंचित्काल मासाद्यमृतएवावदृश्यते॥

अर्थ—यह रोग अभीतो साध्य है इस प्रकारजो उसकी उपेक्षा करदेता है, वह थोडेही कालमें मरगया अैसादीखता है॥

सप्तविधव्याधि

स्वभावजाश्चदोषोत्थाः सहजाश्चापचारजाः।
आगंतवःप्रभावोत्थाः कालजाश्चेतिसप्तधा॥

अर्थ—१ स्वभावज २ दोषज ३ सहज ४ अपचारज ५ आगंतुज और ७ कालज एसैं व्याधिसात प्रकारकी है॥

स्वभावजाः समाख्यातावार्द्धक्याक्षुत्तृषादयः। दोषोत्थाश्चाऽनृताहाराविहारादिसमुद्भवाः॥ सहजारक्तरेतस्थदोषसंभारसंभवाः। गर्भेपचारजास्तेस्युः कुब्जावामनतादयः। आगंतवोऽग्निवाय्वादिभूतावेशादिसंभवाप्रभावोत्थासुरक्षोणीसुरगुर्वादिशापजाः॥ वर्षाशीतातपाद्युत्थाव्याधयःकालजामताः।

अर्थ—तहां भूखप्यास और बुढापाआदि स्वभावजरोग है। मिथ्याआहारसैं प्रगट होनेवाली व्याधि दोषज कहाती है। मातापिताके रुधिर और वीर्यदोषसैं जो रोगप्रगट होवे वो सहजव्याधि कहलाती है। गर्भवतीके विरुद्धाचरणसैं जो कुबडा–बोंनाआदि व्याधि है उनको अपचार जन्यकहते है। अग्नि–पवन आदि और भूतावेशसैं होनेवाली व्याधियोंको आगंतव कहते है, ब्राह्मण–देवता–गुरुआदिके शापसैं होनेवाली व्याधियोंको प्रभावोत्थ कहते है और वर्षा (वारिश) सरदी और गरमीसैं जो प्रगट उन व्याधियोंको कालजन्य कहते है॥

उपद्रवकेलक्षण

रोगारंभकदोषस्यप्रकोपादुपजायते।
योऽन्योविकारः सबुधैरुपद्रवइहोदितः॥

अर्थ—जो रोगके उत्पन्न करने वाले वातादिदोष हैं उनके कुपित होनेसैं

जो रोगमेंभी दूसरा विकार उत्पन्न होता है उसको उपद्रव कहते है । उदाहरण-जैसै ज्वरमें तृषा–अनिद्रा आदि उपद्रव होते है ॥

अरिष्टकेलक्षण

रोगिणोमरणंयस्मादवश्यंभाविलक्ष्यते ।
तल्लक्षणमरिष्टंस्याद्रिष्टंचापितदुच्यते ॥

अर्थ—जिन लक्षणोसैं रोगोंका मरण अवश्य सूचितहो उनको अरिष्ट अथवा रिष्ट अंसै कहते है ॥

नजंतुकश्चिदमरः पृथिव्यामेवजायते ।
अतोमृत्युरवार्यस्यात् किंतुरोगान्निवारयेत् ॥

अर्थ—इसपृथ्वीमें कोई प्राणीअमर (जोनमरे अंसा) नहीं है अर्थात् सबएकदिनमरेंगे इसीवास्ते मृत्यु निवारणनही होसकती किंतुरोग निवारण होसक्के है। तात्पर्य यह है कि वैद्य रोगरहित करदेवे–जैसैं मरते समय कंठमेंकफघडघडाता है तो वैद्यकी चातुर्यता यह है कि अेसी औषध देवे कि कफका बोलना बंद हो जावे फिर वोरोगी चहिये उसीक्षणमें मरजाय ॥

मृत्युसंज्ञाऔरकालसंज्ञा

एकोत्तरं मृत्युशतमथर्वाणः प्रचक्षते ।
तत्रैककाल संयुक्तः शेषास्त्वागंतवः स्मृता ॥

अर्थ—अथर्वाण ऋषिने १०१ एकसों एक मृत्युकहीं है तिनमें एककाल संज्ञक मृत्युहै बाकी आगंतु संज्ञक मृत्युकहीं है । तहां कालसंज्ञक मृत्युआयुष्यके अंतमें प्राणियोंको अवश्य मारेगा–वह सब उपायोंसैभी अवार्य है तथा ब्रह्मादिकोंकी भी आयु अंतमें हरण करता है जैसे लिंगपुराणमें कार्तिकेयके प्रतिश्री शिवका वाक्य है ॥

ममायुर्ग्रसतेकालः कुतः पुत्ररसायनम्

अर्थ—हे पुत्र! यहकाल मेरी भी आयुको ग्रसता है जिनको प्राणी रसायनकहता है सो कहां है । अतएवजो काल संज्ञक मृत्यु है वह अवश्य होकररहती है और जो आगंतुसंज्ञक जैसै–विषभक्षण अजीर्णमें अत्यंत भोजन दुष्ट देशका जलपीना–अत्यंत वलवान्सैं व्याघ्र–वनका भैंसा–मतवाराहाथी आदिसैं लडना सर्पके साथखेलना–अत्यंतऊंचे वृक्षपरचढना–हाथोंसैं तैरकर वडीभारी नदीको पारजाना, अकेला रात्रिमेंजाना-इत्यादि जानना ये यत्नकरनेसै रुकसक्ती हैं ॥

शीतेशीतप्रतीकारमुष्णेतूष्णनिवारणम् ।
कृत्वा कुर्यात् क्रियां प्राप्तां क्रियाकालं न हापयेत् ॥

अर्थ—शरदीके रोगमें शरदीके निवारण कर्त्तागरम और गरमीके रोगमें गरमीके निवारणकर्त्ता शीतल, औषध करके प्राप्तक्रियाको करे, किंतु क्रियाके समयको नष्ट न करे, अर्थात् जोसमय क्रियाकरनेका शास्त्रने निश्चय कियाहै, वह उसी समय क्रियाकरनी, आगे पीछे नहीं ।

विकारेऽल्पे महत्कर्म क्रियालध्वी गरीयसि ।
द्वयमेतदकौशल्यं कौशल्यं युक्तकर्मता ॥

अर्थ—छोटेसे रोगमें वडीभारी क्रियाका करना अर्थात् अधिक और उत्कट औषधदेना, एवं वडेभारी रोगमें छोटी क्रिया अर्थात् थोडीदवा और अल्पगुण वाली देना, ये दोनों कर्म वैद्यकी मूर्खता सूचक है । कुशलता वैद्यकी उसीमें है कि यथा योग्य कर्मकरना ॥

क्रियायास्तु गुणालाभे क्रियामन्यां प्रयोजयेत् ।
पूर्वस्यां शांतिवेगायां न क्रिया संकरो हितः ॥

अर्थ—जो रोगीके प्रति क्रियाकरे यदि वह अपना गुण न दिखलावे तो दूसरी क्रियाकरें, अर्थात् दूसरी औषध देवे । परंतु जब पहली औषधका वेग शांति होलेवे तव दूसरीदेवे, क्योंकि संकर (विपरीत) क्रिया रोगीको हितकारी नही होती ॥

क्रियाभिरल्परूपाभिर्नक्रियासंकरोहितः ।
ताभिस्तु भिन्नरूपाभिः सांकर्यं नैवदुष्यति ॥

अर्थ—वैद्यको एकसी दोचिकित्सा एकही कालमें नहीं करनी चाहिये, वो हितकारी नहींहोती । परंतु यदि दोमो भिन्न २ रूप अर्थात् पृथक् २ रूप वाली होवेतो वो शंकर दोषकारक नही होती ॥

उत्पद्यते च सावस्था दोषकालबलं प्रति ।
यस्यां कार्यमकार्यं स्यात्कर्मकार्यं विवर्जितम् ॥

अर्थ—देश, काल, बल, इनकी अवस्थादेखके वैद्य रोगीको औषध देनेसैं यदि विकृति देखे तो वह औषध वैद्यको त्यागदेनी चाहिये । इसका यह तात्पर्य है कि वहुतसे रोगोंमें देश काल और बलके अनुसार कोई करनेयोग्य कार्यतो

न करने योग्य होजाता है, और न करनेयोग्य कार्य करनेयोग्य होजाता है। इसवातका विचार वैद्यको करलेना चाहिये ॥

अच्छेहोनेपरभीपथ्यकरनेकीआज्ञा

निवृत्तोऽपिपुनर्व्याधिः स्वल्पेनायातिहेतुनाः ।
दोषैर्मार्गीकृतेदेहेशेषः सूक्ष्मइवानलः ॥

अर्थ—दोषों करके रास्ता करी हुई देहमें दूरहुईभी व्याधि थोडेसेभी कुपथ्य करने सें फिर लौट आती है, जैसै बहुत सूक्ष्म अग्निकी चिनगारी रहने पर फिर प्रज्वलित आग होजाती है ॥

कर्मदोषजऔरदोषजव्याधि

पुण्यैश्चभेषजैशांतास्तेज्ञेयाः कर्मदोषजाः ।
विज्ञेयादोषजास्त्वन्येकेवलावाथसंकराः ॥

अर्थ—जो व्याधि पुण्य और औषधौं करके शांति होवे वो कर्म और दोषजन्य जाननी अन्य व्याधि केवल दोषजन्यही होती है और कोई २ मिश्रित व्याधि होती है ॥

दर्शनस्पर्शनप्रश्नैः परीक्षेतचरोगिणम् ।
रोगंनिदानप्राग्रूपलक्षणोपशयाप्तिभिः ॥

अर्थ—दर्शन, स्पर्शन, और प्रश्नसैं, रोगीकी परीक्षाकरे तथा निदान, पूर्वरूप, रूप, उपशय, और संप्राप्ति इस निदान पंचक द्वारा रोगकी परीक्षा वैद्यको करनी चाहिये॥

अब रोगपरीक्षा करनेका क्रम लिखते है

वैद्यको उचित है कि एक ऐसी पुस्तक बनावे कि जिस्मे ८ खाने हो। उनमें जिसरोगीका यत्न करे उसकी व्यवस्था इस प्रकार लिखलिया करे।

१ पहले खानेमें रोगीका नाम तथा उपनाम लिखे ॥
२ दूसरेमें उसकी अवस्था लिखे ॥
३ तीसरेमें ज्ञाति ओर वर्णन तथा उसका रुजगारलिखे ॥
४ चौथेमें विवाहित है या क्वारा है यह लिखे ॥

५ पांचवेमें उसकाजन्म और वर्तमानमें रहनेका स्थान लिखे ॥
६ छठेमें रोगकानाम और उसके उत्पन्न होनेकी तिथिवार संवत् लिखे ॥
७ सातवेमें रोगीके चिकित्सा आरंभका दिनलिखे ॥
८ आठवेमें रोगीकी अवस्था आदि लिखनी ॥

अब लिखते है कि वैद्यको रोगीसै यह पूछना चाहिये कि तुह्मारे यह रोग कबसे हुआ है, और उत्पन्न होनेमें इसकी क्या व्यवस्था थी, अर्थात् यह रोग एकसाथ बढा है या धीरेधीरे तथा किस प्रकारबढा ॥

दुसरे वैद्यको पूछना कि इसरोगीके कुलमें कोई पैतृज रोगतो नहीं है तथा इसके माता पिताकी मृत्यु कौनसी अवस्थामें हुई, और वो कौनसे रोगसैं मरे तथा इसकी जठराग्नि कैसी है और शीतला, फेंफडेके रोग हुए हो तो उनको भी पूछे, तथा स्त्रियोंमें ऋतुका हालपूछे अर्थात् ऋतु कुछ पीडाके साथ तो नही हो, एवं समय २ परहोता है कि कुछ हेरफेरसै होता है, और थोडाहोता है या अधिक ॥

फिर यहतलाशकरे कि प्रथम यह रोगकैसै आया और किसकी दवाईकरी उस दवाईने क्या फायदा और नुकसान करा ॥

फिर रोगीकी अवस्थाकी परीक्षा एवं मल, मूत्र, जिव्हा, श्वास, त्वचा, स्वर, नेत्र, मुख बलाबल, और नाडीआदि की परीक्षा सावधानीके साथकरे तो रोगका ज्ञान भलेप्रकार होवे इसमें संदेहनही है ॥

औषधं मंगलं मंत्र मन्याश्चविविधाः क्रियाः ।
यस्यायुस्तत्रसिध्यंति नसिद्ध्यंतिगतायुषि ॥

अर्थ—औषधी मंगल (स्वस्तिवाचन पुण्याहवाचनादि) मंत्र और अनेकप्रकारकी क्रिया (जादू–टोना–टोंटकाआदि) ये सब जिसकी आयुबाकी है उसजगे चलती है औरगतायु मनुष्य परनहीं चले ॥

आरोग्यलक्षण

मंगलाचारसंपन्नपरिवारस्तथातुरः । श्रद्दधानोऽनकूलश्च प्रभूतद्रव्यसंग्रहः ॥ सत्वलक्षणसंयुक्तोभक्तिर्वैद्यद्विजातिषु । चिकित्सायामनिर्वेदस्तदारोग्यस्यलक्षणम् ॥

अर्थ—मंगलाचार संपन्न, परिवार (कुटंब) के प्राणियों करके युक्त, श्रद्धावाला, अपने, अनुकूल बहुतसाद्रव्यसंग्रवाला, सतोगुणी, वैद्य और ब्राह्मणोंका

भक्त, और चिकित्सामें अरुचि नलाने वाला, ऐसारोगी होवे तो जानना कि यह आरोग्य होयगा इसमें संदेहनहीं ॥

दीर्घतीव्रामयग्रस्तं ब्राह्मणं गामथापिवा ।
दृष्ट्वापथिनिरातंक मकृत्वाब्रह्महाशुचिः ॥

अर्थ—जो वैद्य, मार्गमें तीव्ररोगसें ग्रस्त ब्राह्मण अथवा गौको रोगी देख उसकी बिना चिकित्साकरे वैसेही चलाजावे उसको ब्रह्महत्याका पाप लगकर अपवित्र होता है ॥

॥ इति चिकित्सापाद चतुष्टय वर्णनम् समाप्तम् ॥

अथ

ज्वरप्रकरणम्

शिष्य—रोग कितने हैं ? ॥

गुरु—रोग असंख्यात अर्थात् वेशुमारी है परंतु उसमेंसैं मुख्य २ जो प्राचीन आचार्योंने संग्रह करे है उनकोमें कहताहू तू सुन ॥

रोग संख्याहेमाद्रौ

ज्वरातिसारो ग्रहणीह्यर्शो जीर्णविशूचिका।सालसाच-
विलंबी च कृमिरुक्पांडुकामलाः ॥ हलीमकं रक्तपित्तं
राजयक्ष्मा उरः क्षतम् । कासो हिक्का तथा श्वासः
स्वरभेदस्त्वरोचकः ॥ छर्दिस्तृष्णा च मूर्च्छा च तथा
पानात्ययादयः । दाहाख्यश्च तथोन्मादो ह्यपस्मारो
ऽनिलामयः ॥ वातरक्तमुरुस्तंभमामवातोऽथशूलरुक्
पक्तिजं शूलमानाहमुदावर्तोथ गुल्मरुक् । हृद्रोगो मू-
त्रकृच्छ्रं च मूत्राघातस्तथाश्मरी॥प्रमेहोमधुमेहश्च पि-
डिकाश्च प्रमेहजाः । मेदो दोषोदरं शोथो वृद्धिश्च ग-
लगंडकः । गंडमालापचीग्रंथीह्यर्बुदं श्लीपदं तथा
विद्रधिव्रणशोथौ च द्वौव्रणौ भग्ननाडिकौ । भगंदरो-
पदंशौ च शूकदोषास्त्वगामयः ॥ शीतपित्तमुदर्दश्चो
त्कोठकश्चाम्लपित्तकं।विसर्पश्च सविस्फोटस्तथैव च
मसूरिका क्षुद्रास्यकर्णनासाक्षिशिरस्त्रीवालकामयाः
विषं चेत्ययमुद्देशः संग्रहेस्मिन्प्रकीर्त्तित ॥

अर्थ— १ ज्वर २ अतिसार (दस्तोंकी विमारी) ३ संग्रहणी (पेचिस) ४ ववाशीर ५ अजीर्ण (वदहजमीकारोग) ६ विशूचिका (हैजा) ७ अलस

८ बिलंबिका (ये दोनो रोग उसी हैजाके भेद है,) ९ कृमिरोग (देहके वाहर भीतर जो कीडे पडजाते है) १० पांडुरोग (पीलियाका रोग) ११ हलीमक (पीलियाका भेद) १२ रक्तपित्त (जिस रोगमें मुख और गुदासैं खून गिरता है) १३ राजरोग (खई) १४ उरःक्षत (छातीका घाव) १५ खांसी १६ हिचकी १७ श्वास (दमाका रोग १८ स्वरभेद (जिसमें आवाज वैठ जाती है) १९ अरुचि (भोजनमें नफरत होना) २० छर्दि (रद्द होनेका रोग) २१ तृष्णा (प्यासका रोग) २२मूर्च्छा (वेहोशी) २३पानात्यय (जो बहुत दारूके पीनेसैं होते है)२४(दाह जलनकारोग) २५ उन्माद (पागलपना,२६अपस्मार (मृगीका रोग) २७ वादीके रोग २८ वातरक्त (जिस्सै देहमें काले २ चकत्ते पडजाते है) २९ (उरुस्तंभ जांघ रहकर जिस्से डोलना फिरना वंद्हो जाता है) ३० आम वात (आँउका गिरना) रोग ३१ शूलरोग (पेटमें दर्द अेंठेका चलना) ३२ परिणाम शूल (जो दर्द भोजन करनेके उपरांत होता है) ३३अफरा ३४ उदावर्त्त (जों मलमूत्रादिके रोकनेसै होता है) ३५ गुल्म (गोलेका रोग) ३६ हृदय (छातीका, रोग) ३७ मूत्रकृच्छ (पेसावका रुकना) ३८ मूत्राघात (पेसावका पीडाके साथ उतरना इसीकाभेद सुजाक का रोग है) ३९ अश्मरी (पथरीका रोग,) ४० प्रमेह (जारियान्का रोग) ४१ मधुमेह (जिस्सै पेसाव सहतके मानिंद निकले) ४२ पिडिका (इसी प्रमेह रोगके कारण जो वदनमें फुंसी होती है ४३) मेदरोग (जिस्से यह मनुष्य बेसुमार मोटा होजाता है) ४४ उदर (जलंधर रोग) ४५ शोथ (सूजन वरम) रोग ४६ वृद्धि (पोते छिटकना) ४७ गलगंड (घेंघारोग जो अकसर पूरवके देशोंमें देखाजाता है (४८ गंडमाला (जिसमें नाडके चारचोतरफ गांठ और फोडे हो जावे) ४९ अपची (भरने फूटने वाली गांठ)५० ग्रंथी (गांठकारोग) ५१ अर्बुद (बहुतदिनमें पकनेवाली गांठ) श्लीपद (पीलपाऊका भेद) ५२ विद्रधि (पेटका फोडा) ५३ व्रणशोथ (घावकी सूजन) ५४ व्रण (घाव) ५५ नाडीव्रण (नासूरका फोडा) ५६ भग्नरोग (हड्डी आदिका टूटना) ५७ भगंदर (गुदाके ऊपर होनेवाला घाव) ५८ उपदंश (इन्द्रीकी विमारी) ५९ शूकदोष । (लिंगवढानेसैं होने वालारोग) ६० त्वचा (जिल्दके कोढ आदि रोग) ६१ शीतपित्त (पित्ती) ६२ उदर्द (पित्तीकाभेद) ६३ उत्कोढ (चकत्तोंका रोग) ६४ अम्लपित्त (जिस्मे खट्टी डकारके साथ मूमें खट्टापानी आवे) ६५ विसर्प (बहूतजल्दी फैलनेवाले फोडे) विस्फोट (फोडेन्कारोग) ६७ मसूरिका (शीतलाका रोग) ६० क्षुद्ररोग (छोटे २ रोग जैसें तिल मस्से खारुआ आदि) ६९ मुखके रोग,७० कानके रोग, ७१ नाकके रोग, ७२ नेत्रके रोग,७३ शिरके

रोग ७४ स्त्री (औरतोंके) रोग, ७५ बालकोंके रोग, और ७६ विष (जहरसैं होने वाले) रोग, इतने रोग इस ग्रंथमें कहे है वाकी फिरंगरोग, वदका रोग, नपुंसक इत्यादि सब रोगोंका निदान चिकित्सा इस ग्रंथमें विस्तारपूर्वक कहा जावेगा ॥

रोगनाम

गदोरुजोव्याधिरषाढपाप्मारोगामयातंकमयोंसघातः । रुडंधमंगार्त्तितमोविकारग्लानिः क्षयानार्जवमृत्युभृत्याः ॥

अर्थ—अबरोगके नाम कहते है. तहां गद, रुज, व्याधि, अषाढ, पाप्मा, रोग, आमय, आतंक, मय, अंसघात, रुट्, अंध, अंगार्त्ति, तम, विकार, ग्लानि, क्षय अनार्जव और मृत्युभृत्यये रोगके नामांतर है ॥

रोगीकेनाम

व्याधितोविकृतोग्लाष्णुर्ग्लानोमंदस्तथातुरः ।
अभ्रांतोभ्रामितोरुग्णश्चामयाव्यपटुश्चसः ॥

अर्थ—अव रोगीके नाम कहते है जैसैं. व्याधित, विकृत, ग्लाष्णु, ग्लान, मंद, आतुर, अभ्रांत, भ्रमित, रुग्ण, आमयावी, अपटु, ए रोगीके नामांतर है ॥

रोगीकेलक्षण

उत्साहीद्विजदेवभेषजभिषग्भक्तोऽतिपथ्येरतो धीरोधर्मपरायणः प्रियवचोमानीमृदुर्मानदः । विश्वासीऋजुरास्तिकः सुचरितोदातादयालुः शुचिःयःस्यात्कामवंचकः सविकृतोमुच्येतमृत्योरपि ॥

अर्थ—उत्साही, ब्राह्मण–देव–औषध–और वैद्य इनका भक्त, अत्यंत पथ्यसैं चलने वाला, धीर, धर्मात्मा, मिष्टबोलने वाला, मान रहित, नम्रतायुक्त । औरको मानकादेने वाला, विश्वास रखने वाला, सरलस्वभावका, आस्तिक, पवित्रचारित्र वाला, दाता, दयालु, शुद्धता सैं रहने वाला, और ठगवृत्तिकरके रहित, ऐसा रोगी मौतसैं भी बच जाता है; अतएव रोगीको उक्तगुण संयुक्त होना चाहिये ॥

आमव्याधिलक्षण

आलस्यतंद्राहृदयाविशुद्धिदोषाप्रवृत्त्याकुलमूलभावैः ।
गुरूदरत्वादरुचिसुप्तताभि रामान्वितंव्याधिमुदाहरंति ॥

अर्थ–आलकस, तंद्रा, हृदयकी विशुद्धि अर्थात् चित्तमें अस्वास्थ्य, और मलमूत्रका अबरोध, पेटका भारीपना, अरुचि, अंगोंका रहजाना, इत्यादि लक्षणोंसें आमयुक्त व्याधि जानना ॥

उसकायत्न

आमंजयेल्लंघनकोष्णपेयाल्लघ्वन्नरूक्षोदनतिक्तयूषैः ।
निरूहणैः स्वेदनपाचनैश्चसंशोधनैरूर्ध्वमधस्तथाच ॥

अर्थ—लंघन, मंदोष्णपेया, हलकेअन्न, रूखेअन्न, कडुएरस, मूंगकायूषआदि, निरूहवस्ती, शेक, पाचन, रेचन, और वांति, इत्यादि उपायोंसें आमव्याधिका नाश करे ॥

दोषत्रयकायत्न

कफंतुरिपुवत्तीक्ष्णैर्वातंस्नेहेनमित्रवत् ।
पित्तंजामातरमिव मधुरैः शीतलैर्जयेत् ॥

अर्थ—कफको शत्रुके समान तीक्ष्ण औषधोंसें जीते, वादीको मित्रके समान स्नेहनद्रव्य सैं जीते, और पित्तको अपने जामाता (जमाई) के समान मधुर और शीतल पदार्थोंसें जीते ॥

औषधकेनाम

भैषज्यंभेषजंजैत्रमगदोजायुरौषधम् ।
आयुर्योगोगदारातिरमृतंचतदुच्यते ॥

अर्थ—अब औषधके नाम कहते है जैसे–भैषज्य, भेषज, जैत्र, अगद, अजायु, औषध, आयुयोग, गदाराति, और अमृत, ये औषधके नामांतर है ॥

औषधकेदोभेद

भेषजंद्विविधंचतत्
स्वस्थस्योजस्करंकिंचितकिञ्चिदार्त्तस्यरोगनुत् ॥

अर्थ—अब कहते है कि वह चिकित्सा अर्थात् औषध दो प्रकारकी है, ए-

क तो नैरोग्य पुरुषको तेज- (पुरुषार्थ) केकरने वाली, और दूसरी रोगीके रोगको नाश करनेवाली ॥

स्वस्थस्योजस्करंयत्तु तद्वृष्यन्तद्रसायनम् ।
प्रायः प्रायेण रोगाणां द्वितीयं प्रशमे मतम् ॥
प्रायः शब्दो विशेषार्थोह्युभयं ह्युभयार्थकृत ।

अर्थ-अब दोनोंके भेदोंको कहते है कि जो स्वस्थ (नैरोग्य) पुरुषके तेज, वल, कांतिको, बढावे वो वृष्य और रसायन है। वह इस चिकित्साखंडके अंतमें लि-खेंगे) तथा दिनादिचर्याभी इसी ओजस्कर चिकित्सामें है यह प्रथम इस बृह-न्निघंटुरत्नाकरके दूसरेभागमें लिख आए है । और दूसरी रोगीके रोगहरणका-री चिकित्सा है वह इसीचिकित्साखंडके प्रत्येक ज्वरादिरोगोंमें पृथक् २ लिखी जावेगी ॥ प्राय यह शब्द विशेषार्थ वाचक है और उभयशब्द दोअर्थका वा चक है ॥

अभेषजंचद्विविधं बाधनंसानुबाधनम् ।

अर्थ—अभेषज (अर्थात् जो औषधनहीं है) वह दो प्रकारकी है एकबाधन और दूसरी सानुबाधन ॥

अभेषमितिज्ञेयं विपरितंयदौषधम् ॥

अर्थ—जो औषधसें विपरीत कर्मकरे उसकोअभेषज ऐसें वैद्य कहते है ॥

शिष्य—प्रथम ज्वर कहनेका क्या प्रयोजन है ॥

गुरु—यह संपूर्ण रोगोंका राजा है अतएव प्रथम हम ज्वराधिकार कोही वर्णन करते है जैसै लिखा है ॥

यतः समस्तरोगाणांज्वरोराजेतिविश्रुतः ।
अतोज्वराधिकारोत्रप्रथमंलिख्यतेमया ॥

अर्थ—संपूर्ण रोगोंमें ज्वर राजा है इस प्रकार सुना है अतएव प्रथममें इस जगे ज्वराधिकार लिखता हूं तहां प्रथम ज्योतिषके मतको कहते हे ॥

पूर्वजन्मकृतंपापंग्रहरूपेणबाधते ॥

अर्थ—पूर्वजन्मके पाप इस प्राणीको ग्रहरूप होके वाधा करते है

ग्रहेषुप्रतिकूलेषुनानुकूलंहिभेषजम ।

तेभेषजानांवीर्याणिहरन्तिबलवंत्यपि ॥
प्रतिकृत्यग्रहाण्यादौ पश्चात्कुर्याच्चिकित्सितम् ॥

अर्थ—ग्रह (सूर्यचंद्रादि) के प्रतिकूल (मारकादि) होनेसैं प्राणीको औषधी अनुकूल (हितकारी) नहीं होती, क्योंकि वो दुष्ट ग्रह बडी बलवान् औषधोंके वीर्यको हरण करलेते है इसीसैं वैद्यको उचित है कि प्रथम ग्रहोंको जप दान. हवन पूजनादिसैं शांति करके फिर चिकित्सा करे अत एव अब उनग्रहोंके द्वारा ज्वर रोगका निर्णय कहते है ॥

ज्योतिः शास्त्रकाअभिप्राय

नीचस्थितस्य भानो र्दशाक्षिनाशो ज्वरः शिरोरोगाः । बंधनमहोग्रपीडाकुष्टस्य च दर्शनं चिन्हम् । एवं क्षीणेन्दुदशायां परिचिंतनीयं ॥

अर्थ—नीचास्थितसूर्यकी दशामें नेत्रनाश, ज्वर, मस्तकरोग, बंधन, महाभय, कोढ, रोग इत्यादि पीडाहोती है । इसीप्रकार क्षीणचंद्रकी दशामें भी रोगहोते है ॥

सुहृद्बंधुसमायोगो भूनिमित्तं कलिर्भवेत्। देहपीडाज्वरोव्याधिः शिखिमध्यगते बुधे । शनिरंतर्गतेप्येवं । तद्वैकृतनिराकृतयेजपहोमादिकं कुर्यात् इति सारावल्यां ॥

अर्थ—केतुकी दशामें बुधकीदशाआनेसैं सुहृत् तथा बंधु इनका समागम, और पृथ्वीकेमध्ये झगडा, देहमेंपीडा, ज्वर, और व्याधि ये उपद्रव होते है । तथा शनीकी दशामें बुद्धकीदशा आनेसै उक्तफलहोता है उस पीडाके दूरकरनेके निमित्त जपहोमादिक करे यह सारावली ग्रंथमें लिखा है ॥

ज्योतिषकल्पतरौ

हेलिः पित्तश्चन्द्रमाश्लेष्मवातौ भौमः पित्तोज्ञः त्रिदोषधप्रधानः । जीवःश्लेष्माकारकोभार्गवस्तु वातश्लेष्माभास्करिवातकारी ॥

अर्थ—अशुभ सूर्य पित्तकेरोगोंको करे है, चंद्रमा कफवातके रोगोंको करे है, मंगल पित्तक, बुध त्रिदोष (संनिपात) के रोगोंको, बृहस्पति कफके विकार,

शुक्र वातकफके विकार, एवं अशुभ शनिश्चर वादीके रोगोंको अपनी दशांत दशामें कर्ता है ॥

ज्योतिषहरस्येऽपि

योबलीत्रिकभावेशोदशाश्चांतर्द्दशास्वपि ।
सूर्यभौमार्किभिर्विद्धः सभवेज्वरदायकः ॥

अर्थ—त्रिकभाव ६–८–१२) षष्ठेश अष्टमेश और द्वादशेश इनतीनोंमें जो ग्रह बली होय वही अपनीदशा और अंतर दशामें सूर्य, मंगल, और शनीश्वर, करके विद्धहोवे तो ज्वरको प्रगटकरे है ॥

यैर्दृष्टोरिपुभावेशस्तत्तत्प्रकृतिजैर्गुणैः ।
ज्वरकृत्स्वदशामध्येवातपित्तकफादिकैः ॥

अर्थ—षष्टेशको जो जो ग्रह देखते है और उनकी जैसी २ प्रकृति है उसके माफिक अपनी २ दशामें वातपित्त और कफादिजन्य ज्वरको प्रगट करते है ॥

पैशाचिकज्वरकायोग

रिपुभावेश्वरोदृष्टोराहुकेतुशनैश्वरैः ।
दृष्टोवाव्ययभावेशो ज्ञेयः पैशाचिकज्वरः ॥

अर्थ—षष्ठेशको अथवा व्ययेशको राहु केतु और शनीश्वर देखते होवे तो उस प्राणीको पैशाचिक अर्थात् भूतबाधाका ज्वर जानना ॥

खेदज्वरकायोग

मार्गाधीशोथबलवान्राहुकेतुशनैश्वरैः ।
दृष्टेखेदज्वरोज्ञेयः इत्याहुर्भगवान्भृगुः ॥

अर्थ—मार्गाधीशबली यदि राहुकेतु और शनीश्वर करके वीक्षित होवे तो उसप्राणीके खेदज्वर होवे इस प्रकार भृगुऋषिने कहा है ॥

ज्वरद्वारामृत्युकायोग

अष्टमेशोयदाभौमलग्नेशेनेत्थशालवान् ।
पित्तराशिगतौतौचेज्ज्वरेणमृतिमादिशेत् ॥

अर्थ—मंगल यदि अष्टमेशहोके लग्नेशके साथ इत्थशाल योगकरता हो तथा अष्टमेश और लग्नेश दोनो पित्तराशिके होवे तो उसप्राणी की ज्वर रोग से मृत्यु होवे ॥

औषधजन्यज्वरयोग

प्रश्नलग्ने पित्तराशौ रोगेशेन समन्वितः ।
औषधाज्ज्वररोगः स्यादथवा वैद्यचापलात् ॥

अर्थ—प्रश्नलग्नमें पित्तराशिहो और रोगेश (षष्ठेश) करके युक्त होवे तो इसरोगीको औषधसैं ज्वर जानना, अथवा वैद्यकी चपलतासैं ज्वर जानना ॥

भीतिज्वरयोग

भयाधीश दयाधीशा वेकस्मिन् भवने बली ।
चंद्रमाबुधसंयुक्ते भीतिज्वरयुतो नरः ॥

अर्थ—भयाधीश और दयाधीश दोनो बलवान् होकर एकघरमें बैठेहो और चंद्रमा तथा बुधयुक्त होवेतो उस प्राणीको भीतिज्वर जानना ॥

शापज्वरयोग

धर्मेशः षष्ठभवने षष्ठेशेन समन्वितः ।
रिपुदृष्ट्या चेत्थशाली शनिना शापतोज्वरः ॥

अर्थ—धर्मेश छटेघरमें षष्ठेशकर्के युक्तहोवे, तथा रिपुदृष्टीकरके शनीचरसैं इत्थशाल करता होवेतो उस प्राणीको शापजनित ज्वर जानना ॥

यमघंटयोग

आदित्ययोगेनमघाविशाखाचंद्रेणयुक्ताकुजआर्द्रयातु।
मूलंप्रबुद्धेगुरुकृत्तिकाचशुक्रेणरोहिण्यसितेनहस्तः ॥
एतान्वदंतिनिपुणायमघंटयोगान्व्याधिप्रपन्नमनु-
जोयदिपुण्ययोगात् । संजायतेमुदितमेवइति ॥

अर्थ—रविवारको मघानक्षत्र, सोमवारको विशाखानक्षत्र, मंगलवारको आर्द्रा नक्षत्र, बुधवारके दिन मूलनक्षत्र, गुरुवारको कृत्तिकानक्षत्र, शुक्रवारको रोहिणी और शनिवारको हस्त नक्षत्र, होनेसै यमघंट संज्ञक योगहोता है यादि इसयोगमें मनुष्यरोगी होवै तो वो पुण्ययोग सैं कदाचित् अच्छा होता है ॥

सुखयोग

दिनकरकरयुक्तः सोमसौम्येनवापितुरगसहितभौमः

सोमपुत्रे ऽनुराधा । सुरगुरुरपिपुष्येरेवतीशुक्रवारेदि-
नकरसुतयुक्तोरोहिणीसौख्यहेतु ॥

अर्थ—रविवारमें हस्तनक्षत्र, चंद्रवारमेंमृगशिरनक्षत्र, मंगलवारअश्विनीनक्षत्रयुत बुधवार अनुराधानक्षत्र करके युक्त, बृहस्पती पुष्यनक्षत्रयुत, शुक्रवार रेवतीनक्षत्र युत, और रोहिणीनक्षत्रयुत शनिवार होवे वह सौख्य योग है यदि इस योगमें रोगी बिमारहोवे तो शीघ्र आराम होवे ॥

अथनक्षत्रयोगेनज्वरव्याधिःप्रजायते ।
साध्यासाध्यंचयाप्यंचवक्ष्यामिशृणुपुत्रक ॥

अर्थ—अब नक्षत्रयोगसें जो साध्यासाध्य और असाध्य रोग प्रगट होतेहैं उनको हे पुत्र! में तेरे आगे कहता हूं सुन ॥

असाध्यनक्षत्र

मघा भरणिहस्तेषु मूलेवा ज्वरतोपिवा ।
मृत्युमापद्यते सोपि नात्रकार्याविचारणा ॥

अर्थ—मघा, भरणी, हस्त, और मूल इन नक्षत्रोंमे यदि मनुष्य ज्वरपीडित-होवेतो अवश्य मृत्युको प्राप्त होवे ॥

साध्यनक्षत्र

अश्विनीरोहिणीपुष्पे मृगज्येष्ठापुनर्वसौ ।
एते साध्यास्तु विज्ञेया ज्वरिणां च विशेषतः ॥

अर्थ—अश्विनी, रोहिणी, पुष्प, मृगशिर, ज्येष्ठा, पुनर्वसु, इतने नक्षत्र ज्वर-रोगीको साध्य है ॥

कष्टसाध्यनक्षत्र

पूर्वात्रयं स्वातितथापि चित्रा त्रयोत्तरा वा श्रवणं ध-
निष्ठाः । मूलं विशाखा सह कृत्तिकाभिः साप्योंनुराधा
सह ज्येष्ठया च ॥ एते सकष्टाः सहपीडितानां ऋक्षा-
स्तु याप्यं कुरुते नरस्य॥तस्मात्तुविज्ञायबुधश्चसम्य-
क्रुजांविनाशंप्रतिकर्मभिश्च ॥

अर्थ—पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ, और पूर्वाभाद्रपद, स्वाति, चित्रा, तीनोउ-

त्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, मूल, विशाखा, कृत्तिका, अश्लेषा, अनुराधा, और ज्येष्ठा येनक्षत्र रोगीको कष्टसाध्य और याप्यकर्त्ता है [तहां कोई नक्षत्र कष्टसाध्य और कोई नक्षत्र याप्य जानना] इसीसैं यह वैद्य प्रथम शुभाशुभ नक्षत्रोंको विचारके फिर रोगनाशक औषधी देवे ॥

कष्टावली

अश्विन्यां चैकरात्रं तु भरण्यां मृत्युमादिशेत् । कृत्तिकानवरात्रं तु रोहिण्यां तु दिनत्रयं ॥ अश्विनीष्वपिषट्रात्रं सुखं भवति देहिनाम् । यमदैवे समुद्दिष्टं मरणं पंचमे ऽहनि॥कृत्तिका सुगृहीतस्य सप्तरात्रं भवेज्वरः । न मुंचेद्यदि सप्ताहादेकविंशतिमे सुखं ॥ अतऊर्ध्वं विपद्येत त्रिपक्षात्संशयो भवेत् ॥ रोहिण्यामष्टरात्रेण मुच्येदेकादशे हनि ॥ मृगेण षडहं ज्ञेयं नवरात्रमथापि वा । आर्द्रया मुपसंसृष्टं पंचाहान्मृत्युमादिशेत् ॥ ऊर्ध्वं यद्यपि वर्त्तेत त्रिपक्षात्संशयो भवेत् ॥ पुनर्वसूपसृष्टस्तु ज्वरेण परिपीडितः । त्रयोदशाहान्मुच्येत सप्तविंशेऽथवा हानि ॥ पुष्ये त्रिरात्रं ज्वरितं सप्तरात्रान्निवर्त्तते । नवरात्रं तथा श्लेषा मघाचेति यमालयम् ॥

अर्थ—अश्विनी नक्षत्रमें प्रगटहुआ रोग १रात्रि रहताहै । भरणी नक्षत्रमें प्रप्रगटहुआ रोग मृत्यु करता है । कृत्तिका नक्षत्रमें प्रगटहुआ रोग नौरात्रि रहे । रोहिणीमें तीनदिन जानना । अथवा अश्विनीमें प्रगट हुआरोग छःरात्रि रहकर फिर आनंद होता है, और भरणीमें प्रगटहोनेसैं पांचमें दिन रोगीका मरणहोवे । कृत्तिकामें हुआ ज्वर सातरात्रि रहता है । यदि सातदिनमें आराम नहोयतो फिर २१ दिनमें सुखहोवे । यदि इकीसदिनकेभीवाद आराम न होवे तो वह रोगी १॥ महिनेमें वचे अथवा मरजावे । रोहिणी नक्षत्रमें आठदिन रहकर ११ दिनमें रोगशांति होवे । मृगशिरमें छः दिनरहे अथवा नौ रात्रिमें उतरे । आर्द्रामें हुआरोग पांचदिनमें मरणकरे । यदि पांचदिनके उपरांत रोगी वचजावे तो १॥ महिनेमें संशय कारकहोता है ॥ पुनर्वसुमें हुआज्वर १३ दिनमें छूटे अथवा २७ वे दिन ज्वर रहितहोवे । पुष्यनक्षत्रमें प्रगटहुआज्वर तीन रात्रिरहे

फिर क्रम २ सें घटके सातवे दिन मुक्तहोवे । श्लेषानक्षत्रमें ज्वर ९ रात्रिरहे । और मघानक्षत्रमें रोगहोनेसे रोगीका मरण होय ।

अश्लेषासुभवेन्मृत्युर्दीर्घकालक्रमादथ । मघासुद्वादशाहेनमृत्युर्भवतिदेहिनः ॥ ऊर्ध्वंयातिमघायां तुपुनरेवसुखीभवेत् । पूर्वामासत्रयंज्ञेयंउत्तरा पंचकत्रयम् ॥ पूर्वात्रयेत्रयोमासाः शुभाः ज्ञेयामनीषिभिः । पूर्वासुचोपसृष्टस्यफाल्गुनीषु भवेद्दश॥ उत्तरासुतथाष्टौचनवरात्रमथापिवा । एकविंशतिरात्राद्वाज्वरःश्चेत् सौख्यमृच्छति । एतेषांतुर्य गेचांशेयदिरोगस्तदामृतिः ॥

अर्थ—अश्लेषानक्षत्रमें रोगहोनेसे बहुतादिनमें मृत्युहोवे। मघानक्षत्रमें १२ दिनसैंमरे । यदि १२ दिनसैं उपरांतवचजावेतो फिरसुखी होय। पूर्वाफाल्गुनीं, पूर्वाषाढ और पूर्वाभाद्रपद इनमें हुआरोग तीनमहिनेरहे और अच्छाहोजावे । पू० फा०नक्षत्रमेहुआरोग १० रात्रिरहे । उ०फा०नक्षत्रमें आठरात्रि अथवा नौरात्रिरहे अथवा २१ रात्रिरहकर फिर आनंद होवे यदिउक्तनक्षत्रोंके चतुर्थ पादमें रोगहोयतो रोगीनिश्चय मरे ॥

हस्तेनप्रथमेमोक्षश्चित्रायामष्टमेहानि । स्वातिः षोडशरात्रंतुविशाखाविंशरात्रिकं ॥ स्वातियोगेदशाहेनमुच्येत्पक्षत्रयेणवा । विशाखासुभवेन्मृत्युरेकविंशतिमेहानि । चानुराधापक्षमेकं ज्येष्ठादशदिनानितु ॥ ज्वरस्तुदिवसानष्टावनुराधासुवर्त्तते । अतऊर्ध्वंतुमुक्तिःस्यान्नास्तितस्याचिकित्सितम् ॥

अर्थ–हस्तनक्षत्रमेंप्रथमदिनहीरोगसैं मुक्तहोजावे । चित्रा नक्षत्रमें आठवेदिन। स्वातिनक्षत्रमें आठ रात्रिमें । विशाखानक्षत्रमें वीसादिनसैं रोगमुक्तहोवे । अथवा स्वाति नक्षत्रमें १० दिनसैं अथवा १॥ महिनेमें छूटे । विशाखामें २१ दिनसेंमृत्यु होय । अनुराधा नक्षत्रमें १५ दिनसैं । ज्येष्ठानक्षत्रमें दशादिनसैं रोग मुक्तहोवे अनुराधा नक्षत्रमें प्रगटहुआ ज्वर आठदिनरहे । यदि आठदिनसैं ज्यादाज्वर रहे तो उस रोगीका मरण होवे उसका यत्ननही है ।

ज्येष्ठायांपंचमेमृत्युरूर्ध्वंवाद्वादशात्सुखम् । मूलेन-
चोपसृष्टस्यदशरात्रंभवेज्ज्वरः ॥ तदूर्ध्वंवर्त्तमानस्यचै-
कविंशेभवेत्सुखम् । पूर्वाषाढ्यांतुनवमेहानि रोगात्प्र-
मुच्यते । उत्तरासुत्वषाढासुमासंक्लिश्यत्यसंशयः ॥
अष्टौवानवमासानांततोऽस्यसुखमादिशेत् । श्रवणे-
नाष्टरात्रंतुक्लिश्यतेज्वरपीडितः ॥

अर्थ—ज्येष्टानक्षत्रमें पांचवेदिनमृत्युहो, यदिवचजावेतो १२ दिनमें सुखहोवे । मूलनक्षत्रमें प्रगटहुआज्वर दशरात्रि पर्यंतरहता है । यदिदशरात्रिमें रोगनहटेतो-२१ दिनमें सुखी होय । पूर्वाषाढ नक्षत्रमें यदि रोग प्रगट होवे तो नौमेंदिन अच्छा होय । उत्तराषाढमें रोगोत्पन्न हुआ १ महिने पर्यंत कष्टकारक जानना फिर आठ महिनेमें या नौ महिनेमें रोग शांति होवे और श्रवण नक्षत्रमें यदि-ज्वर प्रगट होवे तो वहरोगी आठरात्रि पर्यंत क्लेशितरहता है ॥

मासत्रयंधनिष्ठासुशतभिक्दिनविंशकम् । नवरात्रंपूर्वा-
भाद्रे उत्तरापंचकत्रयम् ॥ दशाहंरेवतीपीडामुच्यतेव्या-
धिभिस्ततः ॥ दशरात्रंधनिष्ठासुज्वरोभवतिदेहिनाम् ॥
षड्रात्रात्द्वादशाहंवाभवेच्छतभिषासुच ॥ तथाभाद्रप-
देस्वेवपूर्वासुमरणंध्रुवम् ॥ उत्तरासुभवेन्मोक्षोदिवसेऽर्द्ध-
चतुर्दशे ॥ चतुरात्राष्टरात्रंवारेवत्यांवर्त्ततेज्वरः ॥

अर्थ—धनिष्ठा नक्षत्रमें प्रगटहुआ रोग तीनमहिने रहता है—शतभिषानक्षत्रमें । बीसदिन—पूर्वाभाद्रपदनक्षत्रमें उत्पन्नहुआ रोग नौरात्रिरहता है—उत्तराभाद्रपदमें प्रगटहुआ रोग १५ दिनरहता है । रेवती नक्षत्रमें प्रगटहुई पीडा दशदिन रहकर नष्टहोती है । धनिष्ठानक्षत्रमेंज्वररोग होयतो दशरात्रिरहे । शतभिषा नक्षत्रमें छःरा-त्रि अथवा बारा रात्रिरहे पूर्वाभाद्रपदमें ज्वर प्रगटहोयतो रोगीमरे । उत्तरा भाद्र-पदमें ७ दिनरहे । एवं रेवतीनक्षत्रमें यदिज्वर होवे तो चाररात्रि अथवा आठरात्रि पर्यंत रोग रहता है ॥

अश्विनी

अश्विन्याःप्रथमेपादेनवरात्रंप्रकीर्तितम् । द्वितीयेपूर्ण-

माख्यातंतृतीयेसप्तवासराः । संप्रोक्तावासराः पूर्णाः चतुर्थेह्येकविंशति ॥

अर्थ—अबनक्षत्रके प्रत्येकचरणका फल कहते है । तहां अश्विनी नक्षत्रके प्रथम पादमें रोग होवे तो नौरात्रिरहे । दूसरेमें होयतो मृत्युकरे । तीसरेपादमें होयतो सातदिनरहे और अश्विनीके चतुर्थपादमें हुआ रोग २१ दिनपर्यंत रहता है ॥

भरणी

भरण्यांप्रथमेपादेचैकादशदिनानितु । द्वितीयेचत्वारिंशत्तृतीयेपूर्णमादिशेत् ॥ चतुर्थेरुद्रसंख्याकंदिनसंख्याप्रकीर्तिता ॥

अर्थ—भरणीके प्रथमपादमें हुआ रोग ११ दिनरहे–दूसरेमें ४० दिन–तीसरेमें मृत्यु और चतुर्थपादमें होवेतो १० दिन रोगरहता है ॥

कृत्तिका

कृतिका नक्षत्रके प्रथम चरणमें पित्तजन्यज्वर उत्पन्न होवेतो वो दशदिनरहे । दूसरे चरणमेंभी दशहीदिन रहे । तीसरेचरणमें होयतो पाँच दिनरहे ॥

रोहिणी

रोहिणीके प्रथम चरणमे ९ रात्रिपीडारहे । दूसरे चरणमें १८ दिनरहे । तीसरेचरणमें दशरात्रिपीडा जाननी ॥

मृगशिर

मृगशिरनक्षत्रके प्रथम चरणमें ७ दिनपीडारहे । दूसरे चरणमें १२ दिनरहे । तीसरेचरणमें २९ दिनपीडारहती है ॥

आर्द्रा

आर्द्रा नक्षत्रके प्रथमचरणमें १९ दिन । दूसरे चरणमें १२ दिन । और तीसरे चरणमें पीडाहोय तो रोगीकी मृत्यु होय ॥

पुनर्वसु

पुनर्वसु नक्षत्रके प्रथम चरणमें ज्वर होयतो १९ दिनरहे । दूसरेमें ७ दिन और तीसरे चरणमें होयतो २९ दिन पीडारहे ॥

पुष्य

पुष्य नक्षत्रके प्रथम चरणमें ७ दिनपीडारहे। दूसरेमें २० दिन और तीसरेमें २१ दिनपीडा रहती है॥

अश्लेषा

अश्लेषाके प्रथम चरणमें ज्वर होयतो तीन महिने रहे, और रोगी कष्टसैं जीवे। दूसरेमें–तथा तीसरेमें रोगीकी मृत्यु होय॥

मघा

मघाके प्रथम चरणमें ७ रात्रिपीडारहे। दूसरे चरणमें २७ दिन और तीसरे चरणमें ३० दिन पीडा रहती है॥

पूर्वाफाल्गुणी

पूर्वा फाल्गुणीके प्रथम चरणमें ९ रात्रिपीडा रहती है। दूसरेमे १२ दिन और तीसरे चरणमें १ महिनेके वाद रोगी मरे॥

उत्तराफाल्गुणी

उत्तरा फाल्गुणीके प्रथम चरणमें १४ दिनपीडारहे। दूसरेमें सातरात्रि और तीसरे चरणमें ९ दिनपीडारहती है॥

हस्त

हस्त नक्षत्रके प्रथमचरणमें रोग होवेतो ७ रात्रिरहे। दूसरेमें होयतो ४ दिनरहै और तीसरेमें होवेतो ९ दिनपीडा रहती है॥

चित्रा

चित्राके प्रथमचरणमें व्याधि होनेसैं रोगीकी मृत्युहोवे। दूसरे चरणमें तीन महिनेरोगीरहे और तीसरेचरणमें १३ दिनरोगरहता है॥

स्वाति

स्वातिके प्रथम चरणमें रोग होवेतो २७ दिनरहे। दूसरे चरणमें वीस दिन और तीसरे चरणमें रोगहोयतो मृत्युहोय॥

विशाखा

विशाखाके प्रथम चरणमें व्याधि होनेसैं ४८ दिनरहे। दूसरे चरणमें होयतो बारहदिन रहे, और तीसरे चरणमेंभी १२ दिन पीडारहती है॥

अनुराधा

अनुराधाके प्रथम अंशमें पीडा उत्पन्न होयतो ७ दिन। दूसरेमें १९ दिन और तृतीय चरणमें ६४ दिन पीडारहती है॥

ज्येष्ठा

ज्येष्ठाके प्रथम चरणमें रोग होनेसैं तीन महिने पीडा रहे। दूसरेमें १६ दिन तथा तीसरेमें मृत्युहो॥

मूल

मूलनक्षत्रके प्रथम द्वितीय तृतीय चरणमें रोगहोनेसैं १९ दिन पर्यंत पीडा रहती है॥

पूर्वाषाढ

पूर्वाषाढके प्रथम चरणमें रोग होनेसैं ३ महिने पीडारहे। दूसरेमें १६ दिन और तीसरे चरणमें मृत्यु होवे॥

उत्तराषाढ

उत्तराषाढ नक्षत्रके प्रथम चरणमें रोग होयतो १९ दिनरहे। दूसरेमें १२ दिन और हे महामुने! तीसरेचरणमें रोग होयतो २० दिनरोग रहे॥

श्रवण

श्रवणके प्रथम चरणमें ७ दिन–दूसरेमें २० दिन, और तीसरे चरणमें १६ दिनरोग रहे है॥

धनिष्ठा

धनिष्ठाके प्रथम चरणमें २० दिन रोगरहे। दूसरे चरणमें ६० दिन। तथा तीसरे चरणमें रोगहोवेतो १६ दिनरहता है॥

शतभिषा

शतभिषाके प्रथम चरणमें रोगहोवेतो १॥ महिने घोर दुखःदेवे, दुसरेमें छःमहिने और तीसरे चरणमें रोग होनेसैं १६ दिन पीडा रहती है॥

पूर्वाभाद्रपद

पूर्वाभाद्रपदके प्रथम–द्वितीय और तृतीय चरणमें रोगहोनेसैं मृत्यु होवे॥

उत्तराभाद्रपद

उत्तराभाद्रपदके प्रथम चरणमें रोग उत्पन्न होनेसैं १९ दिनपीडारहे। दूसरे चरणमें २८ दिनदुखरहे। और तीसरे चरणमें होनसैं १९ दिन रोगरहता है॥

रेवती

रेवती नक्षत्रके प्रथम चरणमें रोग उत्पन्न होनेसैं ८ दिन पीडारहे। दूसरे चरणमें होवेतो ११ दिन दुःखीरहे और तीसरे चरणमें रोग होनेसैं १० दिन पीडारहे पश्चात् शांति होती है॥

एवंज्ञात्वानरः सम्यक्कुर्यात्प्रशमनक्रियाम्।
नक्षत्रस्यत्रयोभागारात्रेयेणप्रकीर्त्तिताः॥

अर्थ—इसप्रकार नक्षत्रके और नक्षत्रके चरणोंका शुभाशुभविचारके शास्त्रोक्त (जो आगे कहते है) उसशांतिकर्मको करे–यद्यपिनक्षत्रके चार चरण होते है परंतु यहाँ परआत्रेयमहर्षिने तीनही चरणका फल कहाहै चतुर्थ चरणका फल जो संपूर्ण रोगका प्रथम कहाहै वह जानना॥

(अबनक्षत्रहवनकीविधिकहतेहै-तहांप्रथम)

समिधा

आक, खैर, ढाक, वेर, नीम, दूब, छोंकरा, कुश, कांस, पीपल, वड, जटामांसी जामुन, आम, सोमवल्कल, बहेडा, चंदन, अरनी, अगरवृक्ष, कटसैरया, सतावरी, सर्वौषधी, हलदी, दारु हलदी, ये सव होमकरनेके लिये समिधा है॥

परंतु राज निघंटुमें सत्ताईस नक्षत्रोंके सताईसवृक्ष कहे है उनकी समिधालेनी चाहिये॥

गंध

चंदन, लालचंदन, गोरोचन, हरदी, गेरू, नीब, वेल, पतंग, कदंब, केशर, कस्तूरी, कपूर, श्रीपर्णी, देवदारु, पीतचंदन, पद्माख, दारुहलदी, अगर, सीसों, और ढाक येगंध द्रव्य है॥

फूल

कमल, वेल, तुलसी, दूब, कुश, काश, अरनी, छोकराकेपत्ते, आक, ढाक, इनके फुलले॥

धूपदीपादि अलंकारोंसैं वास्तुमंडल अलंकृत करके ईशानादिक्रमसैं नवग्रहोंको स्थापनकरे। तथा नक्षत्रोंको स्थापनकरे, प्रथम सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु इनका पूजनकरके क्रमसैं इनकी समिधाका हवन करे फिर समिधाओंके दही, सहत, घृत इनमें डबो २ के अश्विन्यादि नक्षत्रोंका हवन करे तहां आककी समिधा लेकर, 'इदमश्विनो' इस मंत्रसैं तथा 'विष्णोरराट' इनमंत्रोंसै–अश्विन्यादि नक्षत्रोंका हवनकरे ॥

'इदंभरण्यो' और 'मधुमाध्वी' इसमंत्रसैं वेरकी समिधा भरणी नक्षत्रकी शांतिके अर्थ हवनकरे ॥

'कांडात् कांडात्' इस मंत्रसैं नीमकी समिधा कृतिका नक्षत्रकी शांतिके अर्थ हवनकरे, एवं दूर्वा (दूब) कुशा, इनकीसमिधासै रोहिणी मृगशिर आर्द्रा-आदि नक्षत्रोकी शांसर्थ हवनकरे इसीप्रकार सबनक्षत्रोंका हवन पृथक् २ है सो शांतिसार, शांति कमलाकर, शांतिमयूष, आदि ग्रंथोंमें देखों ॥

फिर घृतसैं पूर्णाहुती करे और ग्रहोंको अभिषेकस्नानकरावे। फिर रोगीको भस्मस्नान और मंत्रस्नानकराय सपेद कपडे पहिनायके उसयज्ञमें बैंठाल वेवेदोक्त मंत्रोंसैं उसका मार्जन करे तथा अपामार्जनसैं उसैं मार्जित करे आशीर्वाद देवे। पश्चात् वह रोगी गोदान, वस्त्रदान, पृथ्वीदान आदि यथा शक्त्यनुसार करे इस प्रकार हवनकरे तो सर्वग्रह–नक्षत्र और योगोंकी शांति होवे ॥

ज्वररोगका कर्मविपाक

यथाशास्त्रंतुनिर्णीतं यथाव्याधिचिकित्सितः।
नशमंयातियोव्याधिः सज्ञेयः कर्मजोबुधैः ॥

अर्थ—जिसव्याधिका शास्त्रानुसारनिर्णयकर उसव्याधिके अनुसार चिकित्साकरी फिरभीन शांतिहोवे उस व्याधिको पंडितजन कर्मज जाने ॥

जन्मान्तरकृतंपापंव्याधिरूपेणबाधते।
तच्छांतिरौषधैर्दानैःजपहोमसुरार्चनैः ॥
तस्मात्कर्मविपाकोक्तप्रायाश्चितादिसाधनैः।
पूर्वपापक्षयात्क्षिप्रंव्याधिः शाम्येदसंशयम् ॥

अर्थ—जन्मांतरमें कियाहुआ पाप इसदेहमें रोगरूपहोकर दुखदेता है उसकी शांति औषधपान–दिव्यौषध धारण–दानकरना–जप–होम–और देवता ओंका पूजन इन कारणोंसैं होती है। इसीसैं कर्मविपाकोक्त प्रायश्चित्तादि साधनों करके पूर्वजन्मोपार्जित पापोंके शांतिहोनेसैं रोग निःसंदेह शीघ्र शमनहो जाते है। इसी सैं पूर्वजन्म जनितपाप परिपाकसैं उत्पन्न ज्वरके हेतु–और उनका यत्न कहते है ॥

येसंपूर्ण प्रायश्चित्त रोगानुसार बडा और छोटाकरे और इनमें वित्तशाठ्यनकरे अर्थात् जिसकी दशरुपे लगानेकीसामर्थ्य है यदिवो एकरुपा या दो रुपाही लगावे तो वोवित्तसाठ्य कहलाता हैं ऐंसाकरनेसै वो फलीभूत नही होता है। और न रोग शमनहो इसवास्ते अपनी सामर्थ्यके अनुसार प्रायश्चित्तकरे। और जो असामर्थ्य है उसको ऋणलेकर प्रायश्चित्तनहीं करना किंतु अपनी देहसैं जो बनसके उसको करे जैसैं विष्णुसहस्रनामका पाठ, गायत्रीजप, और मनसैं परत्माका ध्यानआदि॥

सर्वज्वरेकर्मविपाकमाह

देवस्वहरणाच्चैव जायते विविधो ज्वरः। ज्वरो महाज्वरश्चैव रौद्रो वैष्णवएव च॥

अर्थ—अब सर्वज्वरका कर्मविपाक कहते है। जैसै देवद्रव्य हरण करनेसैं अनेक प्रकारका ज्वर प्रगट होता है उन्होंमें उष्णज्वर शिवसैं, और महाज्वर-(शीतज्वर) विष्णुभगवान्सैं, प्रगट हुआ है॥

अथास्यशांति

ज्वरे रुद्रजपं कुर्यान्महारुद्रं महाज्वरे।
महारुद्रं जपेद्रौद्रे वैष्णवे तद्द्वयं जपेत्॥

अर्थ—ज्वरके दूरकरनेको रुद्रजप, और महाज्वर दूरकरनेको महारुद्रजप कराना चाहिये। रुद्रज्वरवालेको महारुद्र और वैष्णवज्वरमें रुद्र और महारुद्रदोनोको जप करावे॥

गार्ग्यः

ये पुनः पूर्वजन्मनि क्रूराः पिशुनाः ततस्तेऽन्य जन्मनि सततं ज्वरिणः स्युः॥

अर्थ—गर्गऋषिका पुत्रलिखता है कि जो मनुष्य पूर्वजन्ममें क्रूर तथा पिशुन (चुगली करनेवाले) होते हैं, वो उस पापकरके इसजन्ममें सततज्वरी होते है

शीतज्वरकाकर्मविपाक

ये पुनः क्रूरकर्माणः पापाः पिशुनचेतसः ।
ते भवेयुः सदाशीतज्वरवंतस्तदेनसा ॥

अर्थ—जो कोई क्रूरकर्मकरनेवाले, पापी, चुगलखोर है वो पुरुष सदैव शीतज्वरसैं पीडित होते है ॥

उसकाशमन

शांतयेऽयुतसंख्याकं प्रकुर्यात्प्रयतो जपं॥ जातवेदसमंत्रेण ब्राह्मणान् भोजयेत्ततः ॥ सुरामांसोपहाराद्यैर्बलिः सर्वत्र शस्यते ॥ सहस्रकलशस्नानं शतभोजनमेव च ॥ शीतज्वरे पुनः कुर्यादभिषेकं हरेर्बुधः ॥

अर्थ—ऊपरकहेहुए शीतज्वरकी शांतिकरनेको (जातवेदस) इस मंत्रको दशहजार जप करावे, और ब्राह्मण भोजन करावे, अथवा मद्यमांस इनकीवलिदानदे, किंवा सहस्रकलशाभिषेक करे, और १०० ब्राह्मणोंको भोजनकरावे, अथवा श्रीबिष्णुभगवानका अभिषेक करावे ॥

सहस्रकलशस्नानं रुद्रेणेशस्य कारयेत् ।
ब्राह्मणान्भोजयेच्छक्त्याजपेद्वै जातवेदसं ॥

अर्थ–अन्यत्रभी लिखा है कि शिवकारुद्रीसैं सहस्र कलशाभिषेक करावे, तथा यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन करावे, और 'जातवेदस' इस मंत्रका जप करावे ॥

ज्वरवालेकेदैविकउपचार

वेदानां श्रवणं हितस्यचरणं विप्रस्यसंतर्पणं कृष्णस्यस्मरणंशुभस्यकरणंद्रव्यस्यसंतर्पणं ॥ अश्वत्थभ्रमणंसुरत्नधरणंदीनस्यसंरक्षणं हन्यादष्टविधंज्वरंकुमुदिनीनाथोयथोग्रंतमः ॥

अर्थ—अब ज्वरवान्‌को दैविक यत्न कहते है जैसै कि–वेदश्रवण, हिताचर-

ण, ब्राह्मणभोजन, कृष्णकास्मरण, शुभकार्य, द्रव्यदान, पीपलकीप्रदक्षिणा, उत्तम २ रत्नोकाधारण, तथा दीनजनोंका पोषण, ये उपचार अष्टविध ज्वरोंको जैसें चन्द्रमा घोर अंधकारका नाश करता है उसी प्रकार नाश करे ॥

सहस्रनेत्रस्य सहस्रबाहोः सहस्रवक्त्रस्य सहस्रमूर्ध्नः ॥
सहस्रपादस्य सहस्रनाम्नां सहस्रनाम्नां पठनं ज्वरघ्नं ॥

अर्थ--नेत्र, बाहु, मुख, मस्तक, पैर, हस्तादिअंग, तथा उसीप्रकार नाम ये जिसके अनेक है ऐसे देवका सहस्रनाम (विष्णुसहस्रनाम) पाठ करेतो ज्वर दूर होवे ॥

गणेश्वरो वा गरुडेश्वरो वा गौरीश्वरो वा दिवसेश्वरो वा
महेश्वरो वा कुलदैवतं वा तत्पूजनं तज्ज्वरिणां प्रशस्तं ॥

अर्थ—गणेश, बिष्णु, शिव, गौरी (दुर्गा) सूर्य अथवा कुलदेव इनका पूजन ज्वरवालेको हितकारी है ॥

मंगलेषुचकार्येषुसततंकोपवान्नरः॥उष्णज्वराभिभूतः
स्यात्तस्यपापापनुत्तये॥सहस्रकलशस्नानंरुद्रेणेशस्य-
कारयेत् ॥ ब्राह्मणान्भोजयेच्छक्त्याजपेद्वैजातवेदसम् ॥

अर्थ—जो प्राणी मंगलकार्य (विवाहादिक) में क्रोध करता है वो प्राणी उष्ण ज्वरवाला होता है उस पापके दूरकरनेको शिवका सहस्रकलशाभिषेक करें और यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन करावे और " जातवेदसं" इसमंत्रका जपकराना चाहिये ॥

अथसर्वज्वरहरकुंभदानम्

नवंकुंभंसमानीयमृन्मयंचाव्रणंदृढं। लोहितंकर्णरहितं
स्थापयेत्तंदुलोपरि ॥ तंदुलानांपरिमाणंद्रोणपंचक-
मिष्यते। विशुद्धास्तंदुलाग्राह्याः श्वेतवस्त्रेणवेष्टयेत्।
मधुनाप्यथवाज्येनगुडशर्करयापिवा ॥ तैलैर्वापूरये-
द्विद्वान्यथाविभवतोनरः। श्वेतपुष्पैरर्चयेत्तंगंधपुष्पैस्त-
थापरैः ॥ होमश्चपूर्ववत्कार्यः समिदाज्यचरूत्करैः ।

सुवर्णंचयथाशक्त्याब्राह्मणायनिवेदयेत् ॥ तस्मैहूतव-
तेवृत्तश्रुतशीलायसत्कृतम् । मंत्रेणानेनविधिवत्पूज-
यित्वाज्वरीनरः ॥

मंत्र

महेश! देवदेवेश! देवदेव! परात्पर! ॥ कुंभेनानेनदाने-
नज्वरंक्षिप्रंविनश्यतु ॥ एकांतरंसन्निपातंतृतीयकच-
तुर्थकौ । पाक्षिकंमासिकंचैवसांवत्सरिकमेवच॥नाश-
येतंममक्षिप्रंवासुदेवमहेश्वरौ ॥

अर्थ—नवीन मिट्टीका कलश जो फूटा और जोजरा न होवे तथा पका होय और रंगमें लाल होवे उसको चावलोंके ढेर पर स्थापन करे चावल पांच द्रोण अर्थात् दो मन होवे परंतु (यह धनाढ्यके वास्ते आज्ञाहै गरीबको यथा शक्ति लेना) वो चावल विने और फटके हुए शुद्ध होने चाहिये । फिर उस कलसको सपेद वस्त्रसैं लपेटके उस घडेमें सहत घी, गुड, खांड, अथवा तैल इनमें किसी एकको भरे यदि इन वस्तु ओंसैं किसीके भरनेकी सामर्थ्य न होवे तो स्वच्छ जलसैं ही भरदेवे पश्चात् उसका सपेद फूल, फल गंध, धूप, दीप नैवेद्यादिसैं पूजनकर पूर्वोक्त विधिसैं हवनकरे उसमें समिधा घी और चरूको होमें पश्चात् उस हवन करनेवाले ब्राह्मणको कि जो वेद और वेदार्थको जानता हो तथा जिसका उत्तम आचार उसको यथा शक्ति इसमंत्रसैं उसघटका और सुवर्णका दान करे

उस मंत्रका यह अर्थ है कि हे महेश! हे देव देवश! हे देवोंकेदेव! हे परात्पर! इस कुभं दानकरके मेरा एकाहिक, संनिपातज्वर, तिजारी, चौथैया, पंद्रहदिनमें आने बाला महिनेमें आनेवाला एवं वर्ष दिनमें आनेवाले सब ज्वरोंको हे वासुदेव महेश्वर शीघ्र नाश करो ॥

अन्यच्च

अपामार्जनकंस्तोत्रंहनुमत्कवचादिकं ।
पठेज्ज्वरीचसततंसर्वज्वरनिवृत्तये ॥

---

१ जो ब्राह्मण व्याकरणादिभी पढाहो, और ग्रहस्थीहो, उसको दानदे । किंतु जैसैं पाधा-पुरोहित-दुराचारी, केवल संडमुसंड, खुसामदी निरक्षर भट्टाचार्य, परस्त्री गामी, आदिपापीको दाननदे, इनको दानदेनामानौ आपको नरकका महमान वनानाहै ॥

अर्थ–अन्यत्र ग्रंथोंमें लिखाहै कि ज्वरवाला रोगी ज्वर दूरकरनेके लिये अपामार्जनस्तोत्र, हनूमानकवच, और आदिशब्दसें नारायणकवच, विष्णुसहस्रनामादि का पाठ करे यदि अपनी सामर्थ्य न होवे तो अन्य ब्राह्मणको अपने पास बिठा कर पाठकरावे एवं दुर्गापाठ, शतचंडी, सहस्रचंडी, आपदुद्धारका पुरश्चरणभी करावे परंतु हम तो जाने सर्वोपर वेदपाठ और वेदमंत्र ('त्र्यंबकंयजामहे') इत्यादिका जपकराना उत्तम है, और जितनी अपनी सामर्थ्यहो मनसैं भगवत्का स्मरणकरे क्यो कि लिखा है' हरिस्मृतिःसर्वविपद्विमोक्षणम्,

शिष्य––अब आप ज्वर रोग की उत्पत्ती हमसैं कहो ॥

गुरु––ज्वर की उत्पत्ती चरकमें इसप्रकार लिखी है ॥

ज्वरोत्पत्ति

द्वितीये हियुगे शर्वमक्रोधव्रतमास्थितः । दिव्यं सहस्रं वर्षाणामसुराअभिदुद्रुवुः ॥ तपोविघ्नाशनाः कर्त्तुन्तपोविघ्नंमहात्मनाम् । पश्यन्समर्थश्चोपेक्षाश्चक्रेदक्षः प्रजापतिः ॥ यज्ञेनकल्पयामासप्रोच्यमानः सुरैरपि । ऋचः पशुपतेर्याश्च शैव्यआहूतयश्चयाः ॥ यज्ञासिद्धिप्रदास्ताभिर्हीनंचैवसइष्टवान् ।

अर्थ— दूसरे (त्रेता) युगमें श्री शिव अक्रोधव्रतमें स्थित हो दिव्यहजारवर्ष तपकरनेका प्रारंभकरा उससमय महात्माओंके तपोविघ्न करनेवाले तपविघ्न ही है आहाराजिनका असे दैत्य चान्योतरफसैं श्रीशिवके सन्मुख दोडे, उससमय श्रीशिव उनके मारनेको समर्थभी थे परंतु अक्रोध व्रतमें रहनेके कारण देखके उनकी उपेक्षा करदीनी । इसीकालमें दक्षप्रजापति देवताओंके कहने परभी पशुपति (शिव) मंत्र और शिवकी आहूती जो कि यज्ञकी सिद्धीकरने वाली उन करके रहित यज्ञ करता हुआ ॥

अथोत्तीर्णव्रतोदेवोबुद्ध्वादक्षव्यतिक्रमम् । रुद्रोरौद्रंपुरस्कृत्यभावमात्मविदात्मनः ॥ स्पृष्ट्वाललाटेचक्षुर्वैदग्ध्वातानसुरान्प्रभुः । बाणंक्रोधाग्निसंततमसृजच्छत्रुनाशनम् ॥ ततोयज्ञःसविध्वस्तोव्यथिताश्चदिवौकसः । दाहव्यथापरीताश्चभ्रांताभूतगणादिशः ॥ अथे

श्वरंदेवगणाः सहसप्तर्षिभिर्विभुम् । तमृग्भिरस्तुवन् यावच्छिवेभावेशिवःस्थितः ॥

अर्थ—जब उसहजार वर्षके अक्रोधव्रतसैं निवृत्त हुए और दक्षके करेहुए अपराधको जानके श्रीरुद्रभगवान् अपने रौद्रभावको धारणकर ललाटमें स्थित तीसरे नेत्रका स्पर्शकर उसनेत्रसैं निकली हुई अग्निसैं जितने दुष्ट दैत्य तपके विघ्नकरने वाले उनसबको भस्म करते हुए। फिर उस क्रोधाग्नि करके संतप्त एक बाण शत्रुनाशक बनायके उस दक्षके मारनेको चलातें हुए, उसबाणनें उसयज्ञको विध्वंसकर संपूर्ण देवताओंको ब्याकुलकरा । और प्राणीमात्रोंको तथा दिशाओंको दाहकी पीडासैं व्यथितकरा–उससमय सबदेवगण और सप्तर्षि मिलकर सर्व सामर्थ्ययुक्त–ईश्वरश्रीशिवकी ऋग्वेदके मंत्रोंसैं प्रसन्न होने पर्यंत स्तुतिकरते हुए ॥

शिवंशिवायभूतानांस्थितंज्ञात्वाकृताञ्जलिः । क्रोधाग्निरुक्तवान्देवमहंकिंकरवाणिते ॥ तमुवाचेश्वरःक्रोधंज्वरीलोकेभविष्यसि । मनुष्याणांचजन्मादौनिधनेचमहत्तमः ॥

अर्थ—प्राणियोंके कल्याणार्थ श्रीशिव कल्याणरूपमें स्थित हुएको जान वही श्री शिवका क्रोधाग्नि हाथजोडकर बोला कि हेदेव! अबमें क्या आपकी आज्ञाकरूं। उसके वचन सुनकर शिव उसअपने क्रोधसैं बोलेकि तू आजसैं संसारमें ज्वर नामकरके प्रसिद्ध होगा । और मनुष्योंके जन्म समय और मरनेके समय तूहीरहाकरेगा अर्थात् तेरेही प्रतापसे प्राणियोंका जन्म–मरण होवेगा ॥

तथा

मखेमखभुजांगणंकिलनिमंत्र्यदक्षःपुरा चराचरगुरुंहरं मदभरादवाजीगणत् । ततस्तदलिकेक्षणादतिरुषारुणात्पिंगलस्त्रिमौलिरुदभूद्गणः सपदिवीरभद्राभिधः। भृशंसचपिशंग दृक्त्वचमरेमृगस्योल्लसत्रुचंपरिदधज्ज्वलत्तनुरनुच्चजंघास्त्रयः। स्फुरत्पृथुतरोदरस्त्रिपुरवैरिणंप्रांजलिर्जगादकरवाणिकिंतमिदमुग्रमुग्रोवदत् ॥

अर्थ—अब ग्रंथातरसैं ज्वरोत्पति कहते है कि, पहले दक्षप्रजापति अपने यज्ञमें सब देवताओंको निमंत्रण (नौता) कर चराचरके गुरूश्रीशिवका अभिमा-

नकरके तिरस्कारकर्ताहुआ, उससमय श्रीशिवके असंतक्रोध करके लाल २ तीसरे नेत्रसैं पीलेरंगका, और तीनमस्तकवाला, वीरभद्रगण तत्काल प्रगटहुआ ॥ पीलेनेत्र, बाघंवरको ओढे हुए, अग्निकी कांतिको धारणकर्त्ता–छोटी देह, और तीनपैर, बडाभारी उदर जिस्का, ऐंसावो वीरभद्रगण त्रिपुरके वैरी शिवके सन्मुखहाथ जोडकरबोला कि हेप्रभो ! मेंक्याकरूं तब उस घोर रूपवालेसैं घोर स्वरूपश्रीशिव यह बोले ॥

सवंकुरुनिरुत्सवंसइतिरुद्रतोनिर्दयंनिशम्यसम-
शीसमप्रथममेववान्हित्रयम् । मरुद्गणमदुद्रवद्भव-
मतुष्टवद्यज्विनोमुनीनलमनीनमद्दमनभीतसन्नस्वनान्

अर्थ—कि दक्षके यज्ञोत्सवको विध्वंसकर इस प्रकार रुद्रसैं निर्दय आज्ञाको सुन प्रथम दक्षके यज्ञमें जो तीन अग्निहै उनको शांति करता हुआ। उस समय यज्ञमें आए ऐसे मरुद्गणोको भजाता हुआ, श्रीशिवको प्रसन्न करता, दमनभयसैं रुके श्वासजिनके यज्ञकराने वाले मुनीश्वरको नीचा करता अर्थात् जीतता हुआ वीरभद्र श्रीशिवके सन्मुख प्राप्त हुआ ॥

इदंतमवदत्स्थितंपुररिपुःपुरस्ताद्यतोऽखिलंहविरिहक्रतो
झटितिजीर्णमेवत्वया। अतोऽस्यजगतोज्वरोभवततःप्र
भृत्युच्चकैरयंज्वरयतिस्फुरद्विविधनामधेयैर्जगत्

अर्थ—इसप्रकार वैरीको जीतके सन्मुख खडे हुए उस वीरभद्रसैं श्रीपुररिपु (महादेव) बोले कि तैने शीघ्र इस यज्ञकी सामिग्रीको जीर्णकरी अर्थात् पचागया इसीसैं तू इसजगतमें ज्वरनामकरके विख्यात हो; बस उसी दिनसैं यह ज्वर अनेक नामोंकर इस जगतको अपने वेगसैं ज्वरवान् करता है ॥

ज्वरोनरिसपाकलालसहरिद्रतापेश्वराःगजोष्ट्रम
हिषार्वगोष्वथयथाक्रमंकीर्त्तिताः। तथैन्द्रमदखोर
कर्षभकपक्षपाताह्वयाःसमस्ततिमिरासभांबुजखगे
ष्वलर्कशुनाम्

अर्थ—तहां मनुष्योंके जो तापहोताहै उसको ज्वर ऐसा कहते है। हाथियोंमें इस ज्वरको पाकल कहते है। ऊंटोंमें इसको अलस कहते है। भैसाओंमें इसकी हरिद्र संज्ञाहै। घोडोंमें ताप कहलाताहै। गौओंमें ईश्वरनाम करके विख्यातहै ॥ सब मच्छलियोंकी जातिमें इन्द्रमद कहलाता है। गधाओंमें खोरक नाम करके

विख्यात है। कमलोंमें इसको ऋषभक नामसैं पुकारते है । सब पक्षियोंमें अर्थात् पखेरुओंमें पक्षपात नामसैं पुकारते है। और कुत्तोंमें इसज्वरको अलर्कनामक कहते है

मृगामयाख्योमृगजातिषूक्तःप्रलेपकोऽजाविषुचूर्ण
कोन्ने । उष्णीषसंज्ञःससरीसृपेषुपर्वाप्रसूनेषुचनीलिकासु

अर्थ—वही ज्वर मृग (हरिणों) की जातिमें मृगामय कहलाताहै । बकरी और भेडोंमें प्रलेपकनाम करके विख्यातहै। अन्न (गेंहू, चना, चावल आदि धान्यों) में चूर्णक कहलाताहै । सर्पोंमें उष्णीसनाम ज्वरकी संज्ञाहै । पुष्प (फूलों) में पर्वा नामसैं कहाताहै । और जलमें इसकी नीलिका संज्ञाहै ॥

कुंकुमकोगोधूमेज्योतिष्कस्त्वौषधीषुपर्वासु ।
ग्रंथिकसंज्ञोव्रतताावित्यभिधानैर्ज्वराः कथिताः ॥

अर्थ—गेंहूधान्यमें कुंकुम नामज्वर की संज्ञाहै । औषधियोंमें इसकी ज्योतिष्कसंज्ञा है । वेलोमें इसकी ग्रंथिक संज्ञा है । इस प्रकार नामों करके ज्वरकहे है

भूमेरूषरकः प्रोक्तोवृक्षाणांकोटरः स्मृतः ॥

अर्थ—पृथ्वीमें ऊषरनामक ज्वर कहलाता है अर्थात् जिसपृथ्वीमें खारपैदा होता है वो ज्वरग्रसित पृथ्वी जाननी । एवं वृक्षोंमें कोटरकहलाता है अर्थात्–वृक्षोंमें खोंतरका विकार है ॥

ज्वरकेआठभेद

बीभत्सस्त्रिशिराज्वरोथकपिलोभस्मप्रहारस्त्रिपात्
पिंगाक्षोऽथमहोदरोऽथपरतोरौद्रोज्वलद्विग्रहः
शंभोः श्वाससमुद्भवाभयकरादक्षक्रतोर्ध्वंसका
घोराघर्घरनादिनोमुनिवरैः प्रोक्ताज्वरास्तेऽष्टधा

अर्थ—वीभत्स, त्रिशिरा, कपिल, भस्म–प्रहार, त्रिपाद, पिंगाक्ष, महोदर, और ज्वलद्विग्रह ये श्रीशिवकी श्वाससैं प्रगट, भयकारी–दक्षयज्ञ विध्वंसक घोर रूपवाले, और घर्घर नादकरनेवाले असै आठ ज्वर मुनिवरोंने कहे है ॥

वीभत्सज्वरकास्वरूप

बीभत्सोरुधिराणांरुबरवृतोगंधास्यमालाधरो ।

रक्ताक्षः कृमिसंकुलस्त्रिनयनोदुर्गंधिपूर्णोऽनिशम् ॥
नग्नोरुद्रसमुद्भवोऽतिबलवान्कोपीजगद्घातकः ।
कृष्णाङ्गोमलिनोमदांधदमनः पूष्णोर्द्विजध्वंसकः ॥

अर्थ—रुधिरसैं रंगे हुए वस्त्रोंकों पहने, रुधिरकी गंधआवे, मुंडमालाको धारण करे, लालनेत्र, कृमिसैं संकुलदेह, तीननेत्रवाला, और दिन रात्रिदुर्गंध जिसकी देहसैं आवे, नग्न, और अतिवली, कोपयुक्त, जगत्काघातक, काली देहका, मलिनस्वरूप, मदमस्तोंको दमनकर्त्ता, और पूषा देवताके दांतोंको तोड-नेवाला अैसाश्रीशिवसैं उत्पन्नहुए वीभत्सज्वरका स्वरूप है ॥

त्रिशिराज्वरकास्वरूप

अभूद्दक्षविध्वंसको रुद्रकोपात्रिशीर्षः स्त्रिपान्नंदनेत्रो-
ऽतिकायः॥चलज्जिव्हयासृक्कणीलेलिहंतो वृहद्वालजं-
घारुणाक्षोऽतिक्रोधी॥

अर्थ—श्रीरुद्रकेकोपसें दक्षका विध्वंस करने वाला तीनशिरका, तीनपैरका, नौनेत्रका, बडीदेहवाला, चलायमानजीभेसै होटोंके प्रांतोंको चाटताहुआ, लं-बेतालके समान पीडरीवाला, लालनेत्रका, अत्यंतक्रोधी, ज्वरप्रगटहुआ इसका त्रिशिरा नाम है ॥

कापिलाख्यज्वरकास्वरूप

अभूद्रुद्रकोपाज्ज्वरः कापिलाख्योमुखाङ्गारपुञ्जोद्गिर-
न्तोऽतिकायः।मदाघूर्णिताक्षः स्फुरत्ताम्रकेशोमहामे-
घगर्जोमनोहर्षहर्त्ता ॥

अर्थ—श्रीरुद्रके कोपसैं जो कापिलज्वर हुआ है वो अत्यंत ऊँची देहका मुखसैं अँगोरोंके पुंजोंकोछोडता, मदसैं चढे हुए नेत्र, तामेके समान प्रकाश वाले बाल, घोरमेघकीगर्जनाका करनेवाला और मनकी प्रसन्नताका नाशकहै ॥

भस्मविक्षेपकज्वरकास्वरूप

अभूद्भस्मविक्षेपकोरुद्रकोपान्महाट्टाट्टहासोमुहुर्जृंभ-
माणः ॥ चलत्सप्तजिव्हः करालोग्रदंष्ट्रः स्फुरत्तप्तता-
म्रारुणश्मश्रुकेशः ॥

अर्थ—श्रीरुद्रके कोपसैं एक भस्मविक्षेपक ज्वरप्रगटहुआ वह घोर अट्टाट्टहास-का करनेवाला, वारंवार जंभाईकोलेताहुआ, और चलायमान सातजीभ, विकराल उग्रडाढावाला, और प्रकाशमान तपेहुएतामेंके समान लाल डड्ढी और केशवाला अैसा जानना ॥

त्रिपादज्वरकास्वरूप

त्रिपाद्रुद्रकोपाद्भूवारुणाक्षो भृगोः श्मश्रुविध्वंसक-
स्तब्धकर्णः ॥ ज्वरोदीर्घकायोमुहुः श्वासकर्त्ता रणे-
नृत्यमानोऽङ्गदाहीतृषार्त्तः ॥

अर्थ—रुद्रके कोपसैं तीन पैरका ज्वरप्रगटहुआ जिसके लालनेत्र और खडेहुएकान दीर्घदेहवाला–वारंवार श्वासको छोडनेवाला तथा संग्राममें नाचनेवाला अंगोंमें दाहका करनेवाला–और प्याससें व्याकुल–तथा भृगुऋषिकी डाढीका उखाडने वाला जानना ॥

पिङ्गाख्यज्वरकास्वरूप

अभूद्वीरभद्रेश्वरादुत्कटास्योज्वरपिङ्गनेत्रोऽल्पजंघो-
ऽग्निवर्णः ॥ तृषार्त्तोद्विजिव्होनृसिंहद्वितीयश्चलत्ती-
व्रकेशः कृशः शुष्कमांसः ॥

अर्थ—वीरभद्रेश्वरसै टेढे मुखका, पीलेनेत्रवाला, छोटी २ पींडरीवाला, अग्निकेसमान लालवर्ण, तृषासैं व्याकुल, दोजीभमानो दूसरानृसिंहही है, चलायमान तीव्र वालोंवाला, कृशदेह, और सूखे मांसवाला, अैसा पिंगनेत्रज्वर प्रगट हुआ ॥

महोदरज्वरकास्वरूप

बभूवातिदीर्घोदरोलंबकर्णोज्वलदग्निरूपश्चलद्रक्तनेत्रः ॥
तृषाश्वासजृंभान्वितांगप्रमर्दोभटेशोज्वरोरक्तवर्णः प्रमत्तः ॥

अर्थ—श्रीशिवसैं एक बडेपेट और लंबेकानका प्रज्वलित अग्निके समानरूप, चंचल लालनेत्र तृषा श्वास जृंभाकरके युक्त, अंगोंका तोडनेवाला, योद्धाओंकाराजा, तथा लाल वर्णका और मतवाला महोदरज्वर जानना ॥

ज्वलद्विग्रहज्वरकास्वरूप

ज्वलद्विग्रहोमुक्तकेशश्चलद्भ्रूत्रिशूलासिहस्तोभुजंगे-

शपाशः॥ज्वरेशोऽतिवीर्योहरश्वासजातः कृशः शुष्क-
मांसोबलीभैरवेशः ॥

अर्थ—श्रीशिवजीके श्वाससैं प्रगट अग्निसमान देहवाला, खुलेहुएवाल, चला-यमान भ्रकुटी, त्रिशूल, तलवार, सर्प, और फांसका धारण करनेवाला, सबज्व-रोंका राजा, अति पराक्रमी, कृशदेह और शुष्कमांसका बलवान् भयानकोंमेंभी श्रेष्ठ, अैसा ज्वलद् विग्रह ज्वरका स्वरूपजानना ॥

सुश्रुतेऽपि

रुद्रकोपाग्निसंभूतः सर्वभूतप्रतापनः त्रिपादभस्मप्रह-
रण त्रिशिराः सुमहोदरः ॥ वैयाघ्रचर्मवसनः कपिलो-
ज्ज्वलविग्रहः । पिंगेक्षणोह्रस्वजंघो बीभत्सोबलवान-
यम् ॥ पुरुषो लोकनाशार्थमसौ ज्वर इतिस्मृतः ॥

अर्थ—ये आठज्वर जो हंसराज ग्रंथमेंलिखे है उनका मूलकारण यह सुश्रुत-का वाक्य है । अर्थात् इसीके नामोंको लेकर हंसराजकविने अपनीं कविता श-क्ति दिखलाई है वास्तवमें ज्वरएकही है । तहांरुद्रकोपाग्निसें प्रगट, सर्व प्राणि-योंको तपानेवाला, तीनपैरका, भस्मप्रहरण, अर्थात् भस्महेति शस्त्रकाप्रहार करता, तीनमस्तक, बडेभारीउदरवाला, व्याघ्रचर्मरूपवस्त्र, कपिल–ज्वलद्विग्रह–पीलेनेत्रका–छोटीजांघका–वीभत्स–बलवान् अैसा पुरुषलोकनाशार्थ प्रगट करा इसको ज्वर अैसा कहते है ॥

ब्राह्मणज्वरकेलक्षण

दंडीयज्ञोपवीतीचरौद्रोब्राह्मणरूपधृक्

अर्थ—श्रीरुद्रभगवान्सैं प्रगट दंड–यज्ञोपवीत (जनेऊ) को धारणकरे और ब्राह्मणरूप कियेहुए अैसा ब्राह्मणज्वर जानना । तथा छत्र–कमंडलु मृगचर्मादि भूषित, पवित्र और शांतिवेश आदिजो ब्राह्मणोंके चिन्हहोतेहै वो सब जानने ॥

क्षत्रीज्वरकेलक्षण

जपाकुसुमसंकाशोरौद्रदंष्ट्राकरालितः ॥
खड्गहस्तोमहारौद्रोमाहेन्द्रः क्षत्रियोमतः

अर्थ—जपा (गुडहर) के फूलके समान लालरंगका, तीखी डाढावाला, ख-ड्गकोलिये महान् रौद्र, सब रुद्रज्वरोंका राजा, क्षत्री ज्वरजानना ॥

वैश्यज्वर

चंपकप्रसवाभासः तप्तकांचनभूषितः ॥
दंडहस्तोमहावेगी वैश्योज्वरइतिस्मृतः

अर्थ—चंपेके फूल समान पीतवर्ण, तपेहुये सुवर्णसै भूषित, दंडहाथमें–महावेगीअेसा ज्वरवैश्यकहलाता है ॥

शूद्रज्वरकेलक्षण

कृष्णमेघांजनाकारस्तीक्ष्णदंष्ट्रोज्वलाननः ॥
त्रिनेत्रोज्वलनप्रख्यः कालः शूद्रोविजानता

अर्थ—काले बद्दल और काजलके आकार, तीखीडाढावाला, उज्ज्वलमुखका, तीननेत्र, अग्निके समानस्वरूप, कालेरंगका, अेसा शूद्रज्वरजानना विशेष देखना होवेतो ज्वरपराजय–और ज्वरतिमिरभास्कर ग्रंथमें देखो ॥

ज्वरकेनाम

रोगः पाप्माज्वरोव्याधिर्विकारोदुःखमामयः
यक्ष्मातंकगदाबाधशब्दाःपर्यायवाचिनः

रोगादिकशब्द पर्यावाचक है अर्थात् एक अर्थके ही देनेवाले है परंतु इनमें प्रत्यर्थभेदभीदीखता है जैसै–रोग (पीडादेनेसैं इसको रोग कहते है) पाप्मा (पापोंके करनेसैं होता है इसीसैं इसको पाप्मा अेसा कहते है) ज्वर (ज्याधातु अवस्थाकी हानिमें वर्त्ते है उसके आगेवर प्रत्ययलानेसैं ज्वरशब्द सिद्ध होता है यह देह और मनको संतापकारक होनेसै ज्वरकहाताहै) व्याधि (जो देहमें अनेक प्रकारके दुःख प्रगटकरे उसको व्याधि कहते है) विकार (मन–बुद्धि और इन्द्रियोंके विकृत करनेसैं विकार कहाता है) दुःख (उपतापक होनेसैं दुःख कहते है) आमय (संपूर्ण रोगआमसैं प्रगट होते है इस वास्ते आमय कहते है अर्थात् संपूर्ण प्राणीमात्र चपलतासैं अदेश अकालमें अपथ्य–और अत्यंत भोजनके सेवन करने वाले होतेहै इसीसैं आमजन्यरोग प्रगट होते है) यक्ष्मा (सब रोग और रोगोंके समूह होनेसैं यक्ष्मा कहलाते है,)आतंक (प्राणी रोगोसैं उपतप्तहो स्त्रीपान–भोजनादि त्याग–कठिनसैं जीते है इस वास्ते उनको आतंक अेसा कहते है) गद (अनेक कारण जन्य होनेसै ज्वरको गद अेसा कहाहै) आबाध (जो चारचो तरफसैं देह और मनको बाधाकरे इस वास्ते इसको आबाध अैसा कहते है ॥

अर्थ—रोग, पाप्मा, ज्वर, व्याधि, विकार, दुःख, आमय, यक्ष्मा, आतंक गद और आबाध येशब्द सब आपसमें पर्याय वाचकहै अर्थात् रोगके नामहै॥

अथ निदान पंचकम्

मंगलाचरणम्

प्रणम्य जगदुत्पत्तिस्थितिसंहारकारणम् । स्वर्गापवर्गयोर्द्वारं त्रैलोक्यशरणं शिवम् ॥ १ ॥ नानामुनीनां वचनैरिदानींसमासतः सद्भिषजां नियोगात् । सोपद्रवारिष्टनिदानलिङ्गोनिबध्यते रोगविनिश्चयोऽयम् ॥ २ ॥

अर्थ—जगत्की उत्पत्ति पालन और प्रलयके प्रधान कारण, स्वर्ग (सुख) अपवर्ग (मोक्ष) के द्वार अर्थात् दाता, तथा त्रिलोकीके रक्षक शिवको प्रणामकर अनेक चरक सुश्रुत आदि मुनीश्वरोंके वचनोंके अनुसार उत्तम वैद्योंकी आ-

---

*शिष्य—*यह अतिसूक्ष्म निदानपंचक सर्वज्ञ ऋषिमुनियोंके जानने योग्यहै उनके वाक्योंका निरादरकर मनुष्यकृत तुह्मारे ग्रन्थमें मनुष्योंकी कैसे प्रवृत्ति होवेगी? इसकारण माधवाचार्य्यने "नानामुनीनां वचनैः" इस पदको धरा, अर्थात् अनेकमुनीश्वरोंके वचनोंका आशयले मैने यह ग्रन्थ निर्माण कियाहै. किंतु मेरे मनकी उक्तिसै कल्पित नहींहै। शंका— पहलेहीं बहुत ग्रन्थ निर्माणकरे उपस्थितहैं फिर तुह्मारे इस ग्रन्थको कौन पढैगा? इसकारण माधवाचार्य्यने "इदानीम्" पद मूलमैं धरा, इसपद्का यह आशयहै—कि हमहीं अनेक मुनीश्वरोंके वचनौंसैं अब ऐसा अलौकिक ग्रंथ रचतेहैं कि, पहिले कि-

---

१ प्रथम लिखआएहै कि " दर्शनस्पर्शनःप्रश्नैसंपरीक्षेतरोगिणं । रोगंनिदानप्राग्रूपलक्षणोपशयाप्तिभिः " अर्थात् दर्शन, स्पर्श और प्रश्नसैं रोगीकी परीक्षा करे, तथा निदान, पूर्वरूप, रूप, उपशय, और संप्राप्ति करके रोगकी परीक्षाकरे तहां त्रिविधरोगीकी परीक्षा तो प्रथम लिखआएहै अब हम रोगपरीक्षाके निमित्त निदानपंचकको रुग्विनिश्चय ग्रंथसैं लिखते है तथा जिस रोगका निदान लिखैगे उसीके साथ उसकी चिकित्साभी लिखीजायगी

ज्ञासें अब मैं संक्षेपसैं रोगविनिश्चय नाम ग्रन्थकी रचना कर्त्ताहूं। जिसमें (उपद्रव,) (अरिष्ट,) (निदान,) और (चिन्ह) इनका लक्षण अच्छीरीतिसैं किया गयाहै ॥ १ ॥ २ ॥

सीआचार्यने अद्यापि नहीं निर्माणकरा। कोईवादी शंका करे कि, तुमने ग्रन्थ रचाभी परंतु किसीने नहीं पढातौ आपका ग्रन्थ निर्माण करना व्यर्थ होयगा. इसकारण माधवाचार्यने "सद्भिषजां नियोगात्" यह पद धरा इसपदका आशय यह है कि, हमारे पढ़नेके निमित्त कोई निदानग्रन्थ निर्माणकरौ अैसैं बुद्धिमान् वैद्योंके कहनेसैं इसग्रन्थकी रचना करी है शंका—श्रीमहादेवजीके हर मृड रुद्र शाम्भव इत्यादिनामोंको त्यागकर शिव इसनामको क्यों प्रणामकरा? उत्तर–इसरोगविनिश्चयग्रन्थके पठनपाठन करनेवालोंकी कल्याणकी इच्छाकर सर्वकामना देनेवाला कल्याणवाचक शिवनाम बिचार इसाको ग्रन्थके आदिमैं माधवाचार्य्यने प्रणामकरा ॥ १ ॥ २ ॥

नानातंत्रविहीनानां भिषजामल्पमेधसाम्।
सुखं विज्ञातुमातंकमयमेव भविष्यति ॥ ३ ॥

अर्थ—अन्यनिदान ग्रन्थोंसैं इसकी उत्तमता दिखातेहैं जैसैंकि अनेक ग्रंथोंके विचार करनेमें असमर्थ अैसें मन्दबुद्धिवाले वैद्योंके सुखपूर्वक रोगज्ञानके निमित्त यहीग्रन्थ कारण होवेगा. क्यौं कि रोगका जाननाही मुख्यहै सो ग्रन्थान्तरोंमैं लिखावीहै।

(रोग जाननेके पांच उपाय उन्को कहतेहैं)

निदानं पूर्वरूपाणि रूपाण्युपशयस्तथा।
संप्राप्तिश्चेति विज्ञानं रोगाणां पंचधा स्मृतम् ॥ ४ ॥

अर्थ—निदान, पूर्वरूप, रूप, उपशय, और संप्राप्ति, ए पांच प्रकार पृथक्

---

१ उपद्रवो–रोगारम्भकदोषप्रकोपजन्योविकारः। २ नियतमरणख्यापकलिंगमरिष्टम्। ३ निदानंरोगोत्पादकोहेतुः। ४ लिंगं–रोगख्यापकोहेतुः। तेनलिंग्यते व्याधिःअनेनेति व्युत्पत्त्यापूर्वरूप–रूपो–पशयसंप्राप्तयोविज्ञायंते। ५ रोगमादौपरीक्षेतततोनन्तरमौषधं ॥ ततःकर्मभिषक्पश्चाज्ज्ञानपूर्वंसमाचरेत् ॥ १ ॥ रोगज्ञानार्थमेवादौयत्नःकार्यो भिषग्वरैः ॥ सतितस्मिन्क्रियारम्भः पुण्यायशसेश्रियै ॥ २ ॥ प्रसंगवश रोगज्ञानकी विधि कहते है जैसै रोग चारप्रकारसैं जानाजाता है प्रत्यक्ष–अनुमान–उपमान–और शब्दसैं तहां चित्रकुष्ठादि व्याधि प्रत्यक्ष देखनेसैं प्रतीतहोती है, ज्वरादि त्वक्इन्द्रीसें जानेजाते है ॥

पृथक् और समस्तव्याधिके बोधक होतेहैं। इसप्रकार रोगोंका जानना मुनीश्वरोंने पांच प्रकारका कहाहै।

---

*इसश्लोकमें उपशयस्तथा यह जो पद धरा इसका यह आशयहै कि, जैसें निदान पूर्वरूप और रूपसे रोग जानाजायहै उसीप्रकार उपशयसैं और संप्राप्तिसैंभी रोग जाना- जाताहै (सम्प्राप्तिश्चेति) इसपदमें च और इतिके धरनेसैं यह प्रयोजनहै कि रोगजान नेके इन पांचोसें विशेष और उपाय नहींहै। अब कहतेहैं कि रोगोंका निदान संनिकृष्ट समीप और विप्रकृष्ट दूर इन भेदोंसे दो प्रकारकाहै * संनिकृष्ट उसे कहतेहैं की जैसें वातादिक कुपित ज्वरादिक रोगोंको प्रगटकरेहैं * और विप्रकृष्ट उसे कहतेहैं जैसें हेमंतऋतुमें संचितहुआ कफ वसंतऋतुमें कुपित होताहै * पूर्वरूप उसे कहतेहैं जैसें ज्वरमें आलस्यादिधर्म * रूप उसे कहतेहैं जैसें १८ के श्लोकमैं लिखाहै * स्वेदावरोधइति * अर्थात् पसीनोका अवरोध होना इत्यादिक * उपशय उसे क- हतेहै जैसैं वातरोग तैलादिक लगानेसैं शान्ति होयहै। सम्प्राप्ति उसे कहतेहैं जैसें १० के श्लोकमे लिखहै यथादुष्टेनदोषेण इत्यादि शंका—क्यौंजी ए पांच जो व्याधि जा- ननेके उपाय कहे इनमें एकहीसें रोगका निश्चय होसकेहै फिर माधवाचार्यने पांचप्रकार व्यर्थ क्यों लिखे! क्यौंकि पांचौंका प्रयोजन केवल रोगका जाननाहै—उत्तर—तुमने क- हा सो ठीकहै परंतु इन पांचोका पृथक् पृथक् प्रयोजनहै जैसें निदान सें यह प्रयोजनहै कि जिसवस्तुके खानेसे या लगानेसें रोग प्रगटहो उसका त्याग करनेसैं रोग नहीं बढे किंतु उलटा शांतिही होताहै और*पूर्वरूप के जाननेसैं यह प्रयोजनहै जैसें सुश्रुतमें लिखा है कि, वातज्वरके पूर्वरूपमें घृतपानकरानेसै वातज्वरकी उत्पत्ति नहीं होय*रूप के जा- ननेसैं यह प्रयोजनहै कि व्याधि अर्थात् रोगका साध्याऽसाध्य और कष्टसाध्यत्व निश्चय होताहै जैसें—जिसरोगका अल्परूप होवे वह सुखसाध्यहै, और मध्यरूप कष्टसाध्य और संपूर्णरूप असाध्य इसप्रकार जाननेसैं असाध्यका परित्याग करना और कष्टसाध्य तथा सुखसाध्यकी औषधिकरनी उचित है*उपशयके जाननेसे यह प्रयोजनहै कि सुपरीक्षि- तव्याधिके संपूर्ण लक्षण न मिलनेसे व्याधिका यथार्थज्ञान नहीं होय उसको उपशयके द्वारा निश्चय करे, सो चरक में लिखहै कि जिस व्याधिके लक्षण प्रगट न होय उस- की उपशय और अनुपशयके द्वारा परीक्षा करे। उसीप्रकार*सुश्रुत में लिखाहै जैसे उ-

---

१ अर्थात् नाडी नेत्र जिव्हामल मूत्र आदि परीक्षाओंसे रोगोंका ज्ञान यथार्थ नही हो। २ वातिकज्वरेपूर्वरूपेघृतपानमिति तथाच साध्यासाध्यत्वमपिज्ञायते। ३ कष्टसाध्यके लक्षण चरकमें लिखे हैं-यथा—निमित्तंपूर्वरूपाणांरूपाणांमध्यमेबलेइति। ४ गूढलिंगंव्याधि- मुपशयाऽनुशयाभ्यांबुद्ध्येतइति।

बटना, तेल लगाना, स्वेदन विधि, इत्यादिक कर्म करनेसे वातरोग शांत न होय तो उसके रुधिरका विकार जाने। और संप्राप्ति के जाननेसे यह प्रयोजन है कि संप्राप्तिके विना जाने पूर्वरूपादिकोंकरके जानीभईभी व्याधि चिकित्साके योग्यभी है परंतु अंशांश, विकल्प, बल, काल, आदिको जबतक नहीजाने तबतक चिकित्सा यथार्थ नहीं होसके, इसीसे वैद्य निदानपंचकका अवश्यही परिचय करे॥

निमित्तहेत्वाऽऽयतनप्रत्ययोत्थानकारणैः।
निदानमाहुः पर्यायैः

अर्थ–अब निदानके पर्यायवाचक शब्दोंको कहै हैं–निमित्त, हेतु, आयतन, प्रत्यय, उत्थान, और कारण, ये निदानके पर्य्यायवाचक शब्द शास्त्रव्यवहारके अर्थ मुनीश्वर कहतेहैं कारण इनके कहनेका यहहै। कि व्यवहारके वास्ते अर्थात् शास्त्रमें इनछहों शब्दोंमेंसें कोईशब्द आवे उस्को निदान वाचकहीजाने॥

प्राग्रूपं येन लक्ष्यते॥ ५॥
उत्पित्सुरामयो दोषविशेषेणाऽनधिष्ठितः।
लिंगमव्यक्तमल्पत्वाद्व्याधीनां तद्यथायथम्॥ ६॥

अर्थ—जिस जंभाई आलस्य आदि करके उत्पत्ति होनेवाली व्याधिका ज्ञान होवे उसको प्राग्रूप अर्थात् (पूर्वरूप) कहतेहैं फिर वो व्याधि दोष (वात पित्त कफ) सें बहुधा अप्रगट होवे। * (शंका—यदि वातादिक दोषोंसें अप्रगट होवेगी तो व्याधिका प्रगट होना असम्भवहै, क्योंकि कारण तो वातादिक दोषहैं जब दोषही नहीं तो रोग कैसें प्रगट होसकेहै। * (उत्तर—इसपदका यह अर्थहै कि दोष वातपित्त कफ इनका व्याधिके अल्प होनेसें अप्रगटरूप होना अर्थात् थोड़ा थोड़ा होना. अत एव तत्तत् ज्वरादिव्याधिका अपने अपने अप्रगट लक्षण पूर्वरूप तैसातैसाही होतेहै अब कहतेहैं कि (पूर्वरूप) दोप्रकारकाहै एक सामान्य दूसरा विशिष्ट सामान्यप्राग्रूप (पूर्वरूप) उसे कहतेहैं जैसें दोष (वात पित्त कफ) सें दूषित धातु उसके बिगडनेसें प्रगट होनेवाले ज्वरादि व्याधिमात्रहीकी प्रतीति होवे और वात आदि दोषोंके चिन्ह न मालूमहों जैसें "श्रमोरतिर्विवर्णत्वमिति" अर्थात् ज्वरमें श्रम, मनका न लगना, देहका विवर्ण, इत्यादि लक्षण हो और जिसमें होनहार रोगारम्भक दोष उन्होंके चिन्ह तिसके एक अंशकी प्रतीतिहो उसको विशिष्ट प्राग्रूप कहतेहैं जैसें "जृंभात्यर्थं समीरणात्" अर्थात् जंभाईका आना केवल वातके दोषसेंहीहै। इसमें होनहार रोग कौन ज्वर, उस-

१ अभ्यंगस्नेहस्वेदाद्यैर्वातरोगोनशाम्यति। विकारस्तत्रविज्ञेयोदुष्टमत्रास्तिशोणितमिति।

का आरम्भक दोष कौन वात, उस वातका एक अंश कौन जंभाई, ऐसें औरभी जानने चाहिये। इस विशिष्ट पूर्वरूपमें जंभाईआदि रूप देखकर कदाचित् पूर्वरूपको रूप न समझना चाहिये। क्योंकि यह तौ केवल व्याधिके आरम्भक दोषमात्रका सूक्ष्म चिन्ह है, इस वातको दृष्टान्त देकर समझाते हैं। (दृष्टान्त) जैसें तृणके समूहमें छोटी अग्निकी चिनगारी गिरनेसें धूम (धूआं) मात्र प्रकट देखकर हाथ, वस्त्र आदिके मारनेसें ही शान्ति करसकतेहै, परन्तु जब अग्नि एकसाथ जोरसें प्रज्वलित होगई तब शान्ति नहीं होसकै ऐसैंही विशिष्ट पूर्वरूपको अल्प होनेसें शान्ति कर सक्ते है, परन्तु जब रूप होगया तब उसका उपाय नहीं होसके हैं इसीसें पूर्वरूप और रूपमें भेद है * अब कहते हैं पूर्वरूप और रूप इन दोनोंमें कोई शारीरिक अर्थात् शरीरसें सम्बन्ध रखते हैं और कोई मानसिक अर्थात् मनसें सम्बन्ध रखते हैं शारीरिक जैसें ज्वरमें मुखका विरस होना देह भारी, नेत्रसें जल गिरना, इत्यादिक * और मानसिक जैसें मनका एक जगह न लगना और अपने हितकारक वचनोंसें शान्ति न होना तथा खट्टे चरपरेपदार्थपर मन चलना इत्यादि ॥

तदेवव्यक्ततां यातं रूपमित्यभिधीयते।
संस्थानं व्यञ्जनं लिंगं लक्षणं चिन्हमाकृतिः ॥ ७ ॥

अर्थ—जब पूर्वोक्त प्राग्रूप प्रगट होजाय तब उसको रूप ऐसें कहते हैं। और संस्थान, व्यंजन, लिंग, लक्षण, चिन्ह, और आकृति, यह छः शब्द रूपके पर्यायवाचक हैं ॥

उपशयके लक्षण

हेतुव्याधिविपर्य्यस्तविपर्यस्तार्थकारिणाम्।
औषधान्नविहाराणामुपयोगं सुखावहम् ॥ ८ ॥
विद्यादुपशयं व्याधेः सहि सात्म्यमिति स्मृतः।

अर्थ–अब उपशयके लक्षणको कहते हैं–हेतुविपरीत, व्याधिविपरीत, हेतुव्याधिविपरीत, हेतुविपर्यस्तार्थकारी, व्याधिविपर्यस्तार्थकारी हेतुव्याधि विपर्यस्तार्थकारी ऐसें जो औषध अन्न (पथ्य) बिहार (आचरण) इनका सेवन सुखकारक जानना उसको व्याधिका उपशय कहते हैं इसका तात्पर्य यह है कि, रोग और रोगके हेतुको सुखकारक जो औषधि पथ्य आचरण उसको उपशय कहते हैं, और (व्याधिसात्म्य) ये पर्यायवाचक नाम उसी उपशयका है, सुखकारकके कहनेसें यह प्रयोजन है कि दाह और प्यासयुक्त नवीन ज्वरमें शीतलजलका पीना

व्याधिका बढानेवाला है इस्सें शीतलजल सुखकर्त्ता न हुआ अतएव शीतलजलको उपशय न समझना चाहिये। परंतु दाहयुक्त प्यासमें शीतलजल उपशय माना जायगा क्यौंकि सुखकारक है ॥

आगे अब क्रमसें उदाहरण दिखाते है

हेतुविपरीत औषध—जैसें शीत कफ ज्वरमें सोंठ, तो इसमें प्रथम समझना चाहिये कि यहां हेतु कौन है कि वात (सर्दी) उस वातका शीतलधर्म है-तो अब शीत कफ यह कब शान्ति होय कि जब सर्दी और कफके विपरीत औषधमिले, ऐसी औषध कौन कि शुंठी ये सर्दीको और कफ दोनोंको शान्ति कर

नाम	औषध	अन्न	विहार
हेतुविपरीत	शीतज्वरमें गरम औषधि सौंठ	श्रम और बादीसें प्रगटरोगपर मांसकोरस और भात	दिनके सोनेसें प्रगट कफरोगपर विपरीत आचरण रातमें जागना
व्याधिविपरीत	अतिसारमें दस्त बंदकरनेवाली औषधि पाठाआदि	दस्तौंमें दस्तके बंदकारक पथ्य मसूर	उदावर्त्तरोगमें शब्दपूर्वक अधोवायुका निकसना मंत्रऔषधधारण देवगुरुकी सेवा करनी ॥
हेतुव्याधिविपरीत	बातकी सूजनमें दशमूलका काढा बात और सूजन दोनोंको दूरकरनेवाला है	कफकी संग्रहणीमें छाछका पीना बातनाशक कफनाशक और संग्रहणीनाशक	स्निग्ध जो दिनके सोनेसें उत्पन्नतंद्रा तिसमें रूक्षतंद्रासें विपरीत और स्निग्धतानाशक रात्रिमें जागना-
हेतुविपर्यस्तार्थकारी	जैसैं पित्त प्रधान व्रणकीसूजनमें पित्तकारक उष्मपिंडीका बांधना	पित्तकी सूजनमें दाहकारक अन्नका भोजन करना	जैसें बातसें पैदा उन्मादमें त्रासका देना
व्याधिविपर्यस्तार्थकारी	जैसे कफरोगमें वमनकारक मैनफलआदि	अतीसाररोगमें दस्तकारक दुग्ध देना	छर्दिरोगमें हाथका अंगुठा गलेमें कर वा कमलनालआदिसें उलटीका लाना
हेतुव्याधिविपर्यस्तार्थकारी	जैसें अग्निजलेपर गरम अगरआदिलेप अथवा विषपर विष	जैसे मद्यपानके करनेसे प्रगट मदात्यय रोगमें मदकारक फेर मद्य पीना	दंडकसरतसें प्रगट बातमें जलका तैरना रूपव्यायामका करना

है तो शीत कफ ज्वरमें हेतुविपरीत औषध सोंठ हुई ॥ १ ॥ ऐसैंही (हेतुविपरीत) अन्न जैसें श्रम और सरदीसें प्रगट ज्वरमैं मांसका रस और चावल इसमें हेतु कौनाकि श्रम और सरदी, ये कब शान्ति होवे कि श्रम और सर्दी हरणकर्त्ता पथ्य मिले, ऐसी पथ्य कौनाकि मांसरस और चावलौंका भात ये श्रम और सर्दीके विपरीत हैं अर्थात् नाशकहैं ॥ २ ॥ ऐसैंही (हेतुविपरीतविहार) कहिये आचरण कौन जैसें दिनके सोनेसें प्रगट कफपर रातमें जागना, यहां हेतु कौन हुआकि दिनका सोना, उससें प्रगट दोष कौनाकि कफ, यह कफ कब शान्ति होयकि जिस हेतुसें प्रगटभया उस हेतुसैं विपरीत आचरण कराजाय, तौ दिनके सोनेपर उलटा आचरण कौन कि रातमैं जागना, तो यह हेतुविपरीत आचरणभया । इसीप्रकार और उदाहरण व्याधिविपरीत आदिके पूर्व लिखे हुए चक्रके अनुसार बुद्धिवान् मनुष्य समझ लेवेंगे ॥

अनुपशयके लक्षण

विपरीतोऽनुपशयो व्याध्यसाम्यमिति स्मृतः ॥ ९ ॥

अर्थ—जो उपशयके लक्षण कहेहैं उससे विपरीत लक्षण अनुपशयके हैं और व्याधीका * असात्म्य अर्थात् असमान नाम उसी अनुपशयका पर्यायवाचक शब्द है ॥ ९ ॥

सम्प्राप्तिके लक्षण

यथा दुष्टेन दोषेण यथाचानुविसर्पता ।
निर्वृत्तिरामयस्याऽसौ सम्प्राप्तिर्जातिरागतिः ॥ १० ॥

अर्थ—दोष कहिये वातपित्त कफ इनका दुष्टहोना नाम कुपित होना अनेक प्रकारका है अर्थात् स्वकारण या दूसरेके कारण करके, ऐसें कुपितदोष अपने स्थानको छोडकर देहमें ऊपर नीचे तिरछे विचरते हैं उस विचरनेसैं जो रोग प्रगटहो उसको (सम्प्राप्ति) कहते हैं और (जाति) तथा आगति ये दोनो पर्यायवाचक नाम उसी सम्प्राप्तिके हैं * तात्पर्यार्थ ये है कि मनुष्यके देहमैं बात पित्त कफ दोष बढकर जैसें रोगको प्रगटकरैं उसीप्रकार उसको सम्प्राप्ति कहते हैं* उदाहरण—जैसें कुपितदोषोंका आमाशयमें प्रवेश होना और उसस्थानमैं इतस्ततो गमन करना तथा रसकी बहनेवाली नाडियोंके मार्गोंको रोकना और पक्काशयमैं रहनेवाली अग्निको बाहिर निकालना तथा उसी जठराग्निसैं सर्व देहके तप्तहोनेसैं ये ज्वर है, ऐसा जो निश्चय किया जाय है उसीको संप्राप्ति कहतेहैं । ऐसेंही अतिसारादिरोगोंकी संप्राप्ति जाननी चाहिये ॥ १० ॥

सम्प्राप्तिके भेद

संख्याविकल्पप्राधान्यबलकालविशेषतः ।

अर्थ—अब संप्राप्तिके भेद कहतेहैं सा कहिये सो संप्राप्ति संख्यादि विशेषण करके पांचप्रकारकी है जैसें १ संख्या२विकल्प ३ प्रधान्य ४ बल५काल इति ॥

संख्यारूपसंप्राप्तिके लक्षण

सा भिद्यते यथात्रैव वक्ष्यन्तेऽष्टौ ज्वरा इति ॥ ११॥

अर्थ—जैसें इसी ग्रन्थमें आगे आठ प्रकारका ज्वर, पांचप्रकारकी खांसी है ऐसा कहेगे अर्थात् रोगोंकी गणनाकोही संख्यारूप सम्प्राप्ति कहते है ॥

विकल्परूपसंप्राप्तिके लक्षण

दोषाणां समवेतानां विकल्पोंऽशांशकल्पना ।

अर्थ—मिलेहुए दोष कहिये वात पित्त कफ इनके अंशांशका अनुमान करना उस्को विकल्परूपसम्प्राप्ति कहतेहैं जैसे धूंएके निकलनेसैं ये पर्वत अग्निवानहै असैंही ये रोगीके देहमैं वातका अंश विशेषहै, काहेसैं कि वातके अंश विशेष मिलनेसैं इसी अनुमानको विकल्पसंप्राप्ति कहतेहैं (उदाहरण—जैसें रूखी, शीतल, हलकी, और फैलनेवाली, इत्यादि गुणयुक्त जो पवन, उस्का रौक्षादि गुणयुक्त कषेलारस वातको सर्वांशकरके बढानेवालाहै उसीप्रकार कटुरस सर्वभावकरके पित्तका बढानेवालाहै जैसैं कटु, उष्ण, तीक्ष्णत्वकरके हींग पित्त को बढानेवालीहै उसीप्रकार मधुररस जैसैं भैंसका दूध ये सर्वभावकरके कफको बढानेवालाहै इत्यादि इसमें (दोषाणां) जो बहुवचनहै सो दोषोंके पृथक् पृथक् ग्रहणके वास्ते है, और (समवेतानाम्) ये पद जो है सो द्वंद्वज और सन्निपातके ग्रहणनिमित्त धराहै ॥

प्राधान्यरूपसंप्राप्तिके लक्षण

स्वातंत्र्यपारतंत्र्याभ्यां व्याधेः प्राधान्यमादिशेत ॥ १२ ॥

अर्थ—स्वतंत्र और परतंत्रकरके व्याधिको प्राधान्यता है जैसे—स्वतंत्रज्वरको प्रधानताहै, और ज्वराधीन श्वास आदिरोगोंको अप्रधानताहै ॥

बलरूपसंप्राप्तिके लक्षण

हेत्वादिकार्त्स्न्यावयवैर्बलाबलविशेषणम् ।

अर्थ—हेतु आदिशब्दसैं पूर्वरूप और रूप इनके सर्व अवयव (लक्षण) मिलनेसैं व्याधिको बलवान् जानना, और थोडे लक्षण मिलनेसैं निर्बल जानना.

जैसे–जिस रोगके प्रति जो निदान कहाहै वो निदान सम्पूर्ण रोगको उत्पन्न करनेवाला है कि एकदेश * ऐसेही पूर्वरूपभी समस्त अवयवों करके व्याधिका प्रकाशकहै या एकदेशसैं इत्यादि लक्षणोंसैं बलाबलका निश्चय करना ॥

कालरूपसंप्राप्तिके लक्षण

नक्तंदिनर्तुभुक्तांशैर्व्याधिकालो यथामलम् ॥ १३ ॥

अर्थ—नक्त (रात्रि) दिन (दिवस) ऋतु (वसन्तादि) भुक्त (आहार) इनका अंश कहिये एकदेश उसको यथा दोष (वात, पित्त, कफ) के अनुसार व्याधिका काल अर्थात् रोगके घटनेबढनेके हेतुका समय जाने*उदाहरण दिखाते हैं-जैसैं रात्रिके तीन भाग करे प्रथम, मध्य, और अंत; तौ रात्रिका प्रथमभाग कफका है, मध्यभाग पित्तका, अंतभाग बातका है, ऐसैंहीं दिनके बी तीन भाग करे तो पूर्वान्ह कफका, मध्यान्ह पित्तका, अपरान्ह वातका, ऐसैंहीं ऋतु जैसै वसंतऋतुमें कफ, ग्रीष्मऋतुमें पित्त, और वर्षामें वात कुपित होतीहै एसैंहीं भोजनका जैसैं–भोजनकरनेके समय कफका काल, और अन्नके पचनेके समय पित्तका काल, और जब भलेप्रकार परिपक्क होगया तब वातका काल, इसकालके जाननेसैं यह प्रयोजनहै कि जिस दोष (वात, पित्त, कफ) का जो काल कहाहै उसका उसी २ कालमें प्राबल्यता जानलेना कठिन मालूम नहीं होती ॥

निदानपंचकका उपसंहार

इति प्रोक्तो निदानार्थः स व्यासेनोपदेक्ष्यते ॥ १४ ॥

अर्थ—इति कहिये इस प्रकार संक्षेपप्रकारसैं जो निदानार्थ कहा उसे विस्तारपूर्वक रोग २ के प्रति निदान पूर्वरूपादिकरके कहते हैं ॥

सर्वेषामेव रोगाणां निदानं कुपिता मलाः ।
तत्प्रकोपस्य तु प्रोक्तं विविधाऽहितसेवनम् ॥ १५ ॥

अर्थ—अब पूर्व चतुर्थ श्लोककी व्याख्यामें कहे निदानके दो भेद कौन सन्निकृष्ट और विप्रकृष्ट, तिसमें सन्निकृष्ट, कौन वातादिक समीपके कारणकरके सर्व रोगोंका कारण है सो कहते हैं (सर्वेषामिति)। कुपितहुए जो मल (वात पित्त कफ) ये सम्पूर्ण रोगोंके कारण होतेहैं और उन् वात वित्त कफ दोषोंके कोपका कारण अनेकप्रकारका अपथ्यसेवन करना हें ॥

---

१ केचन ऋत्वंशाः कतिपयाहोरात्राणि कथयंति यदुक्तं वाग्भटे ऋत्वोरित्यादिसप्ताहानृतुसंधिरितिस्मृतः ॥

निदानार्थकरो रोगो रोगस्याप्युपजायते ।
तद्यथा ज्वरसंतापाद्रक्तपित्तमुदीर्यते ॥ १६ ॥
रक्तपित्ताज्ज्वरस्ताभ्यां श्वासश्चाप्युपजायते ।
प्लीहाभिवृद्ध्या जठरं जठराच्छोफ एव च ॥ १७ ॥
अर्शोभ्यो जाठरं दुःखं गुल्मश्चाप्युपजायते ।
प्रतिश्यायादथो कासः कासात्संजायते क्षयः ॥ १८ ॥
क्षयो रोगस्य हेतुत्वे शोषस्याप्युपजायते ।

अर्थ–कोई प्रश्नकरे कि जो पूर्वकहाहैं येही निदानहै अथवा इसके व्यतिरिक्त- और भी है इसलिये कहते हैं कि रोगका रोगभी निदान होता है । अर्थात्‌ जो नि- दानसैं कार्य्य होताहै वोही रोगसैं भी होताहै, इसवास्ते दृष्टांत देकर कहते है (त द्यथेति) जैसैं ज्वरसंतापसैं रक्तपित्त प्रकट होताहै । और रक्तपित्तसैं ज्वर, एवं रक्तपित्तज्वरसैं श्वास प्रगट होताहै। और प्लीहके बढनेसैं जैसें उदररोग, और उद- ररोगसैं सूजन, और ववासीरसैं जैसैं उदररोग और गुल्म (गोला) रोग, एवं पीनसरोगसें खांसी, तथा खांसीसे ओजप्रभृति धातुओंका क्षय होताहै । और ये क्षयरोग राजयक्ष्मा जो सम्पूर्ण रोगोंमें राजा है उसको प्रगट करेहै ॥

ते पूर्वं केवला रोगाः पश्चाद्धेत्वर्थकारिणः ॥ १९ ॥

अर्थ—वो रोग प्रथम स्वतंत्रथे और जब बल मिलगया तौ वोही हेत्वर्थकारी अर्थात्‌ रोगके उत्पन्न करनेवाले होते हैं जैसैं ज्वरसैं रक्तपित्त होता है ॥

कश्चिद्धि रोगो रोगस्य हेतुर्भूत्वा प्रशाम्यति ।
न प्रशाम्यति चाप्यन्यो हेत्वर्थं कुरुतेऽपि च ।
एवं कृच्छ्रतमा नृणां दृश्यंते व्याधिसंकराः ॥ २० ॥

अर्थ–अब उसी रोग उत्पन्न करनेवाली व्याधिकी विचित्रता दिखाते हैं जैसे कोईएक रोग दूसरेका कारण हो अर्थात्‌ दूसरे रोगको प्रगटकर आप शांत हो- जाताहै, जैसे पीनसरोग आप शांत नहीं होनेपाता और खांसी उत्पन्न होती है । और कोई रोग दूसरे रोगको प्रगटकर आप जैसा का तैसा बना रहताहै, जैसे बवासीर नहीं जाय और गुल्म तथा उदर रोग पैदा होतेहैं । इस प्रकार मनु ष्योंकैं घोरक्लेशदायक मिलेहुए रोग दिखाई देते हैं विशेषकरके चिकित्सा विरुद्ध होनेसैं ये रोग कृच्छ्रतम होजाते हैं ॥

तस्माद्यत्नेन सद्वैद्यैरिच्छद्भिः सिद्धिमुत्तमाम् ।
ज्ञातव्यो वक्ष्यते योऽयं ज्वरादीनां विनिश्चयः ॥ २१ ॥

अर्थ—अब कहेहुये निदानादिपंचकद्वारा रोग निवृत्तिरूप सिद्धीकी इच्छा करके अवश्य जानने योग्यको कहते हैं (तस्मादिति) इसीकारण उत्तम सिद्धी हमको प्राप्त हो ऐसी जिन सद्वैद्योंकी इच्छाहै उनको ज्वरादिरोगोंका निदान जो आगे कहते हैं वो यत्नसैं जानना चाहिये ॥

अथ ज्वरनिदानम्

अब सर्वदेहके रोगोंमैं प्रथम प्रगट होनेसैं, बली देह इन्द्री मनको तपायमान करनेसैं जन्म मरणका कारण होनेसैं स्थावर जंगम प्राणीनमें स्थिति होनेसैं सम्पूर्ण शरीरके रोगोंमें चरक सुश्रुतादि आचार्योंने ज्वर राजा कहाहै ॥

तदुक्तं चरके

देहेन्द्रियमनस्तापी सर्वरोगाग्रजो बली ।
ज्वरः प्रधानो रोगाणामुक्तो भगवता पुरा ॥ १ ॥

अर्थ—देह इन्द्री मनको तपायमान करनेसै रोगोंमें प्रथम प्रगट होनेसैं बलवान् ज्वरको सब रोगोंमें प्रधानता कही है ॥

ज्वरकी उत्पत्ति

दक्षापमानसंक्रुद्धरुद्रनिःश्वाससम्भवः ।
ज्वरोऽष्टधा पृथग्द्वंद्वसंघातागंतुजः स्मृतः ॥ २ ॥

अर्थ—दक्षप्रजापतिके तिरस्कारसैं क्रोधित श्रीरुद्रभगवान्के श्वाससै उत्पन्न ज्वर आठप्रकारका है वात पित्त कफ इनसै ३, द्वंद्वज ३, सन्निपात १, और आगंतुज १ ऐसै मिलकर संक्षेपसै ज्वर आठप्रकारका है ॥ * ॥

इस श्लोकमें [निश्वाससम्भवः] ये जो पद धराहै सो श्वास इस जगह क्रोधके लक्षण करके कहाहै किंतु ज्वरकी श्वाससै उत्पत्ति नहींहै जैसै (सुश्रुतमें) लिखाहै यथा "रुद्रकोपाग्निसंभूतः सर्वभूतप्रतापनः" इति अर्थात् क्रो-

धित रुद्रने ललाटस्थ तीसरे अग्निमय चक्षु (नेत्र) को स्पर्शकर आग्नेयबाण निर्माण किया (तथा च चरके) "स्पृष्ट्वा ललाटे चक्षुर्वै दग्ध्वा तानसुरान्प्रभुः । बाणं क्रोधाग्निसंतप्तमसृजच्छत्रुनाशनम्" इत्यादिक वाक्योंसे ज्वरमात्रकी पित्तप्रकृति जाननी प्रयोजन यहहै कि सर्वज्वरमें पित्तकी विरोधी क्रिया न करे सो (वाग्भटने) कहाहै (यथा—"उष्मा पित्तादृते नास्ति नात्युष्माणं विना ज्वरः । तस्मात्पित्तविरुद्धानि त्यजेत्पित्ताधिकेऽधिकम्" इति । अर्थात् गरमी पित्तके विना नहीं होती और ज्वर गरमीके विना नहींहोवै इसीसे ज्वरमें पित्तविरुद्ध क्रिया न करै और पित्तज्वरमें विशेषकरके पित्तविरुद्ध क्रिया त्याज्यहै ॥ अन्य आचार्य कहते है कि श्रीरुद्रसै उत्पत्ति होनेसै ज्वर देवता है इस लिये ज्वरका पूजन करनेंसै शांत होताहै जैसें (विदेहका वाक्य) है "ज्वरस्तु पूजनैर्वापि सहसैवोपशाम्यति" और ज्वरका स्वरूपभी (हरिवंशमें) लिखाहै (यथा) "ज्वरस्त्रिपादस्त्रिशिराः षड्भुजो नवलोचनः । भस्मप्रहरणो रौद्रः कालान्तकयमोपमः॥" इति । अर्थात् ज्वरके तीन चरण तीन मस्तक छह भूजा नवनेत्र भस्मप्रहेती है शस्त्रजिसका यह रौद्रकाल यमराजके समानहै ।

ज्वरसंप्राप्ति

मिथ्याहारविहाराभ्यां दोषा ह्यामाशयाश्रयाः ।
बहिर्निरस्य कोष्टाग्निं ज्वरदाः स्यू रसानुगाः ॥ ३ ॥

अर्थ—मिथ्या आहार (देश काल प्रकृति आदिसें विरुद्ध और संयोगविरुद्ध भोजन) मिथ्याविहार (देहके पुरुषार्थसै विशेष कामका करना) इन कारणोंसें दुष्ट हुये जो दोष (वात पित्त कफ) सो नाभिस्तनके बीच आमाशयमें प्राप्त हो रसको विगाडकर और कोष्ठस्थानमें रहती जो अग्नि उसको देहके बाहर निकाल ज्वरके प्रगट करनेवाले होते है ॥ * ॥

ये संप्राप्ति शारीर रोगोंकीहै आगंतुजकी नहींहै क्यों कि आगंतू रोगोंका तो व्यथापूर्वक वातादिदोषोंके रोकनेसै प्रयोजन है जैसे (सुश्रुतमें) लिखाहै श्रम और चोटके लगनेसै देहधारीयोंके देहमें कुपित हुई वात सबदेहको परिपूर्णकर ज्वरको पैदा करतीहै * और (चरक) में भी लिखाहै कि चोटके लगनेसे प्रगट वात

१ अकाले चातिमात्रं च असाध्यं यच्च भोजनम् । विषमाशनं च यद्भुक्तं मिथ्याहारः स उच्यते ॥ १ ॥ इस श्लोकमें हिन्दी और फारसीकी ऐक्यता दिखाई है । २ अशक्तः कुरुते कर्म्म शक्तिमान्न करोति च । मिथ्याविहार इत्युक्तः सदा चैव विवर्जयेत् ॥ ३ नाभिस्तनान्तरं जन्तोरामाशय इति स्मृतः ॥

रुधिरको विगाड व्यथा और शोष तथा विवर्णयुक्त वातज्वरको प्रगट करतीहै* (शंका—क्यौंजी आगंतुभी शारीररोगही है क्योंकि आगंतुज्वरमेंभी गरमी रहती है जैसै * "(उष्मा पित्तादृते नास्ति)" * इत्यादि वाक्य प्रमाण होनेसैं * उत्तर—ये जो तुमने कहा सो ठीकहै * परंतु इस आगंतुरोगोंमें पित्तकी पूर्वकालसैं ही उत्पत्ति नहीं होती पीछे उत्पत्ति होतीहै यासैं आगंतुरोगोंको शारीरत्व नहीं है ॥ * ॥ इस श्लोकमें (कोष्ठाग्नि) यह जो पद धराहै सो धातुकी अग्निके निवारणार्थ है अर्थात् जब धात्वग्नि बाहर आय जावेगी तो दोषोंका पचना नहीं होसके और दोष पचेविना ज्वर शांति नहीं होवेगा इसलिये इसका अर्थ ऐसा न करना चाहिये (बहिर्निरस्य कोष्ठाग्निम्) कोठेके अग्निकी गरमीको बाहर निकालकरऐसा अर्थ करना चाहिये ।

ज्वरके लक्षण

स्वेदावरोधस्संतापः सर्वांगग्रहणं तथा ।
युगपद्यत्र रोगे तु स ज्वरो व्यपदिश्यते ॥ ४ ॥

अर्थ—जिस रोगमें पसीना न आवे, देहमें सन्ताप और सर्वांगमें पीडा ये एकही समें हो उसको ज्वर ऐसैं कहते हैं ॥ * (शंका—क्यौंजी पित्तज्वरमें तो पसीने आतेहैं इस श्लोकमें विरुद्धता आती है * इसपर जेज्जटादिक उत्तर लिखतेहैं कि स्वेदावरोध कहिये " स्विद्यते अनेनेति स्वेदः इस व्युत्पत्ति करके स्वेद कहिये अग्नि तिस्का अवरोध कहिये दोषकी व्याप्ति ऐसा अर्थ करनेसैं श्लोकार्थमें विरुद्ध नहीं पडता ॥

ज्वरका पूर्वरूप

श्रमोरतिर्विवर्णत्वं वैरस्यं नयनप्लवः ।
इच्छा द्वेषो मुहुश्चापि शीतवातातपादिषु ॥ ५ ॥
जृम्भांगमर्दो गुरुता रोमहर्षोऽरुचिस्तमः ।
अप्रहर्षश्च शीतं च भवत्युत्पित्सति ज्वरे ॥ ६ ॥

अर्थ—कारण बिनाहीं श्रम, कर्मकरनेमें उत्साह नहो, अथवा खेलनेमें अरुची देहमें मलीनता, मुखमें विरसता, नेत्र अश्रुपात युक्त, सर्दी गर्मी पवन इनकी वारंवार इच्छा होना और वारंवार द्वेष हो । इसमैं जो (आदि) शब्दहै उससैं जल और आग्निका ग्रहणहै अर्थात् इनकी बार २ इच्छा और द्वेष ये (चरक) का मतहै तदुक्तं चरके—" ज्वलनातपवाय्वंबुभक्तद्वेषाभिलाषिता " इति । अन्ये तु

शैत्योष्णसाधर्म्याज्जलाऽनलौ गृह्णंति ते तु आदिशब्देन शयनादिकं मन्यंते * अन्य आचार्य सर्दी गरमीके साधर्म्यतै जल अग्निको कहते हैं और आदिशब्दसैं शयन आदिमानते है* जंभाई अंगोका टूटना, देहभारी, रोमांचोंका खडा होना, अन्नमें, अरुचि, अंधेरेका आना, आनंदकी निवृत्ति, सरदीका लगना,*(शंका) क्योंजी पूर्व कहआये कि सरदी गरमीका बार बार इच्छा और बार बार द्वेष फिर पुनः (शीत) पद क्यौं धरा ? * उत्तर–इस पदके धरनेसैं सरदीकी आधिक्यता दिखाई, अर्थात् सरदी विशेष लगे ये लक्षण ज्वरके पूर्व होतेहै ॥

ये माधवाचार्य्यने सामान्यपूर्वरूपके लक्षण (सुश्रुतोक्त) लिखेहैं विशिष्टपूर्वरूपके लक्षण नहीं लिखे सो हम ग्रन्थान्तरसैं लिखतेहैं ।

सामान्यतो विशेषात्तु जृंभात्यर्थं समीरणात् ।
पित्तान्नयनयोर्दाहः कफान्नान्नाभिनन्दनम् ॥ ७ ॥

अर्थ—विशेषकरके बातज्वरमें जंभाइ बहुत आती हैं, पित्तज्वरमें नेत्रोंमें दाह हो, और कफज्वरमें अन्नमें अरुचि होतीहै, ये श्लोक क्षेपकहै परंतु बहुत पुस्तकोंमें मूलके साथ लिखाहै इसवास्ते हमने भी मूलके साथ लिखदीना है ॥

अथज्वरचिकित्साप्रारंभः

इतिज्वराः समाख्याताः कर्मेदानीं प्रवक्ष्यते

अर्थ—इसप्रकार ज्वरोंके निदान और लक्षण कहे अब सुश्रुत ग्रंथसै उक्ता ज्वरोंकी चिकित्साकहते है ॥

वैद्यकोसाधारणक्रियाकीआज्ञा

दोषाणांचपरिज्ञानंयत्रसम्यक्नदृश्यते ।
क्रियांसाधारणींतत्रभिषक्सम्यक्प्रयोजयेत्॥

अर्थ—जिसरोगमेंवातादि दोषोका ज्ञान अच्छीरीतिसैं नहोवे उस जगे वैद्य साधारण क्रिया (जों आगे लिखते है उसको) उत्तम रीतिसैं करे । अर्थात् यह साधारण क्रियाकिसी रोगमें करो उसरोगको नष्टहीकरे है बढाती नहीं है ॥

अंशांशंयत्रदोषाणांविवेक्तुंनैवशक्नुयात् ।
साधारणींक्रियांतत्रविदधीतचिकित्सकः ॥

अर्थ—वैद्य जिस रोगमें दोषोंके अंशाशको नजानसके उसजगे साधरण क्रियाकी विधि करके यत्नकरे ॥

ज्वरकीसामान्यचिकित्सा

ज्वरस्यपूर्वरूपेतुवर्त्तमानेसुबुद्धिमान्।पाययेतघृतंस्वच्छं ततः सलभतेसुखं॥ विधिर्मारुतजेचैवपैत्तिकेतुविरेचनम् ॥ मृदुप्रच्छर्दनंतद्वत्कफजेहिविधीयते॥ सर्वद्विदोषजेषूक्तंयथादोषंविकल्पयेत् ॥

अर्थ—ज्वरके पूर्वरूपमें यत्नकहते है । तहां वात ज्वरके पूर्वरूपमें रोगीको घृतपान करना चाहिये, पित्तप्रधान ज्वरमें मृदुविरेचन देना, और कफ प्रधान ज्वरमें हलकी वमन करानी—एवं द्विदोष और त्रिदोषमें उक्त दोनो—वा तीनो यत्न यथा संभवकरने चाहिये ॥

(ज्वरकेआदिमध्यऔरअंतमेंकर्त्तव्य)

ज्वरादौलंघनंप्रोक्तंज्वरमध्येतुपाचनम्
ज्वरान्तेरेचनंदेयमेतज्ज्वरचिकित्सितम् ॥

अर्थ—वैद्य रोगीको ज्वरके आदिमें लंघन करावे, और ज्वरकी मध्यअवस्थामें ज्वर पाचक औषध देवे, एवं जब ज्वरशांति होजावे तब उस रोगीको दस्त करावे, यह संक्षेपसैं ज्वरकी चिकित्सा कही है ॥

लंघन

ज्वरेलंघनमेवादावुपदिष्टमृतेज्वरात्
क्षयानिलभयक्रोधकामशोकश्रमोद्भवात्

अर्थ—ज्वरमें प्रथम लंघन कराना वैद्यको उचित है परंतु क्षय[1]ज्वर, वात[2]ज्वर, भयज्वर, क्रोधज्वर, कामज्वर, शोकज्वर, परिश्रमजन्यज्वर, इनज्वरोमें लंघन कदाचित नहीं करना ॥

---

१ धातुक्षयज्र अथवा राजयक्ष्माज्वर। २ वातज्वरकहनेसैं यहांपर निरामवातका ग्रहण है यदि सामवातज्वर होवे तो लंघन अवश्य कराने चाहिये ॥

लंघनकरानेमेंकारण

आमाशयस्थोहत्वाग्निंसामोमार्गान्पिधापयन्
विदधातिज्वरंदोषतस्माल्लंघनमाचरेत्

अर्थ—अवलंघन करानेमें कारण कहते है, जैसैकि आमसैं मिलेहुए दोष आमाशयमें स्थितजठराग्निको नष्टकर और देहके भीतरके मार्गोंके (नसनाडी आदि) को ढकते हुए ज्वरको प्रगट करते है अतएव उस आमके पचानेको और रुकेहुए मार्गोंके स्वच्छ करनेको वैद्य रोगीके वास्ते लंघन करावे। यहां जठराग्नि करके जठराग्निकी उष्मालेनी समग्रजठराग्नि नहीं लेनी चाहिये ॥

अनवस्थितदोषाग्नेर्लंघनंदोषपाचनम्
ज्वरघ्नंदीपनंकांक्षारुचिलाघवकारकम्

अर्थ—अपने २ स्थानपर नहीस्थित अेसे दोष और अग्निके विकार पचानेको लंघन कराने चाहिये लंघन ज्वरको नाशकरते है, अग्निको दीप्तकरे, भोजनकी इच्छा, रुचि, और देहमें हलकापना करते है ॥

प्राणाविरोधिनाचैवलङ्घनेनोपपादयेत्
बलाधिष्ठानमारोग्यंयदर्थोऽयंक्रियाक्रमः

अर्थ—वैद्यको चाहिये कि रोगीका बलनटूटे इस प्रकार लंघन करावे क्योंकि आरोग्यता बलके आधीन है और उस आरोग्यताके अर्थ यह क्रियाका क्रम है

उत्तमलंघनकेलक्षण

वातमूत्रपुरीषाणांविसर्गो गात्रलाघवे॥हृदयोद्गारकंठा
स्यशुद्धौतन्द्राक्लमेगते । स्वेदेजातेरुचौचापिक्षुत्पि-
पासासहोदये कृतंलंघनमादेश्यंनिर्व्यथेचांतरात्मनि

अर्थ—अधोवायु, मल, मूत्र इनका यथा समय निकलना, शरीरमें हलकापना, (हृदयकाभारीपना) आदि, कंठमें कफका लिहसारहना, मुखमें विरसता इत्यादिलक्षण रहित हृदय, कंठ, और मुखकाशुद्धहोना, तन्द्रा, और ग्लानिका नाश, पसीनोंकाआना, रुचिका चलना, एवं भूखप्यासका एक साथलगना, और मनमें किसी प्रकारकी व्यथाका न रहना ये लक्षण उत्तम लंघन होनेवाले रोगीके है ॥

अतिलंघनकेदोष

पर्वभेदोऽङ्गमर्दश्चकासः शोषोमुखस्यच। क्षुत्प्रणाशो

ऽरुचिस्तृष्णादौर्बल्यं श्रोत्रनेत्रयोः । मनसः संभ्रमो-
ऽभीक्ष्णमूर्द्ध्ववातन्तमोहृदि । देहाग्निबलहानिश्चलंघ-
नेतिकृतेभवेत् ॥

अर्थ—गांठोमें पीडा, देहकाटूटना, खांसी, मुखका सूखना, भूखका माराजाना, अरुचि,प्यास, कर्णेन्द्री और नेंत्रोंमें दुर्बलता, मनका डमाडोलहोना—ऊर्ध्ववात (हिचकी, श्वास, कानोंमें शब्द, और जंभाई आदिका होना) मोह, देह, अग्नि—और बलका घटना, ये लक्षण अत्यंत लंघन करनेवाले रोगीके होते है । मुख्य लंघन करानेका हेतु आमपचानेके वास्ते है परंतु हमारे मथुरा आदिके ढपोल शंख वैद्य सब ज्वर वालोंको लंघन कराते है, और फिरअंधेकी तरह उस्सैं पूछते हैकि कहो अभी तुमको भूखलगी है यानही यदि रोगीको भूख भी लगी हो तथापि उसरोगीको लंघन ही कराते है कि जिस्सैं उसका बलनष्टहो शीघ्रयमालयको चलाजावे, और रोगों सैं वचभी गयातो निर्बलके कारणसैं प्रत्येक समय रोगी होजावे ' हरीच्छा ! बलीयसी ' ॥

लंघनकेअयोग्यरोगी

नलंघयेन्मारुतजेज्वरेचक्षयोद्भवेचक्षुधितेचजन्तौ न-
गुर्विणीदुर्बलबालवृद्धान्भीतांस्तृषार्त्तानपिसोर्ध्ववातान्

अर्थ—निरामवात ज्वरमें, राजयक्ष्माके ज्वरमें, भूखमें, गर्भवती स्त्री, दुर्बल मनुष्य, बालक, बुड्ढा, डरपोक, तृषार्त, और उर्ध्व वातवालारोगी, इनको वैद्यकदाचित् लंघन न करावे ॥

लंघनसहनकरनेमेंकारण

दोषाणामेवसाशक्तिर्लंघनेयासहिष्णुता ।
नहिदोषक्षयेकश्चित्सहतेलंघनादिकम् ॥

अर्थ—लंघनका करना ये केवल दोषों ही की सामर्थ्य है, क्योंकि दोष क्षीण होनेपर कोईभी प्राणी लंघनको नही सहसकता, अतएव जबतक इसको लंघन करनेकी सामर्थ्य रहे तभीतक वैद्य लंघन करावे ॥

अस्नेहनीयोऽशोध्यश्चसंयोज्योलंघनादिना ।
रूपप्राग्रूपयोर्विद्यान्नानात्वंवह्निधूमवत् ॥

अर्थ—जो स्नेहन करनेके अयोग्य है, और जिनको वमन विरेचनसैं शोधन

नहीं करसकते, उनको लंघनादिक करानाही उत्तम है। तथा रूप और पूर्वरूपका अग्नि और धूआंके समान अनेक विधत्व वैद्यजानेः अर्थात् जैसे धूंआंहोनेसैं अग्निकी संभावना होती है उसी प्रकार पूर्वरूपसैं रोगके रूपकी संभावना जाननी

अव्यक्तरूपेषुहितमेकांतेनापतर्पणम् ।
आमाशयस्थेदोषेतुसोत्क्लेशेवमनंपरम् ॥

अर्थ—ज्वरके पूर्वरूपमें केवल लंघनादिक कराना। जो आमाशयमें दोष होय और जी मचलाता होवे उसको वमन कराना हित है ॥

लंघनकीअवधी

आनद्धस्तिमितैर्दोषैर्यावंतः कालमातुरः ।
कुर्यादनशनंतावत्ततः संसर्गमाचरेत् ॥

अर्थ—जबतक यह रोगी वातादिदोष अथवा वात मल मूत्रादिसे घिरारहे, अर्थात् अधोवायु, मल, मूत्रसाफ न उतरे तबतक लंघनकरे फिर मिलेहुए अर्थात् औषधादि और लंघनादि दोनोउपाय करने चाहिये ॥

वमनकरानेयोग्यरोगी

सद्योभुक्तस्यवाजातेज्वरेसंतर्पणोत्थिते
वमनंवमनार्हस्य शस्तमित्याहवाग्भटः

अर्थ—तत्कालभोजन करनेवालेके ज्वर प्रगटहुआहो, अथवा संतर्पण कर्मकरनेसे यदि ज्वर प्रगट हुआ होवे, तथा जो वमन करानेके योग्यरोगी है उनको वमन करना उत्तमहै ऐसे वाग्भटाचार्य कहता है ॥

(अवस्थाविशेषमेंवमनकरानाकहतेहै)

कफप्रधानानुत्क्लिष्टान्दोषानामाशयोत्थितान्
बुध्वाज्वरकरान्काले वम्यानांवमनैर्हरेत्

अर्थ—चरकऋषि लिखते है कि जिन रोगोंमें कफ प्रधान है, और हल्लासादि करके जो वाहर निकलाचाहे तथा जो दोष आमाशयसे उठेहुए है, और जो ज्वरके करने वाले दोष है, एवं जो वमन कराने योग्य है उनको वमनके समय वमन करा कर दोष दूरकरने चाहिये ॥

(उक्तअवस्थाकेविनावमनकरानानिषेध)

अनुपस्थितदोषाणांवमनंतरुणज्वरे

हृद्रोगंश्वासमानाहंमोहंचकुरुतेभृशम्

अर्थ—वमन करनेको नहीउपस्थित अैसें दोषोंमें और तरुणज्वरमें यदि वमन (रद्द) करावे तो वह हृदयरोग, श्वास, अफरा, और मोहको करे है। यह भी चरकमें लिखाहै ॥

निर्वातभवनावासमुष्णवारिनिषेवणम्
अभूरि जल्पनिः क्रोधं कामशोकंच रोगिणम्
कुर्यादारोग्य संपन्नंशीघ्रं वैद्योविचक्षणः
कफमेदोऽनिलामघ्नंदीपनंवस्तिशोधनम्

अर्थ—जिसमें पवन न आत्ती हो अैसे मकानमें रहना, गरमजलपीना, थोडा बोलना, क्रोध का न करना, कामदेव, शोककरना, इन सबको रोगी त्यागदे कि जबतक आरोग्य न होवे अैसा करनेसैं कफ, मेदा और वादी नष्ट होवे, एवं अग्नि दीपन हो, और बस्ती शुद्धि होती है। सर्वत्र रोगोंके यत्नमें लिखा है कि 'निदान परिवर्जनम्' इसकारण ज्वरमें जो निदान त्याज्य है उसको कहते है ॥

चरके

नवज्वरेदिवास्वापस्नानभोजनमैथुनम् ।
क्रोधप्रवातव्यायामकषायांश्वविवर्जयेत् ॥

अर्थ—नवीन ज्वरमें दिनका सोना, स्नान करना, भोजन करना, मैथुन करना, क्रोध, हवाका खाना, व्यायामकरना और काढा आदिका देना निषेध कहा है ॥

उष्मापित्तादृतेनास्तिज्वरोनात्युष्मणोविना
तस्मात्पित्तविरुद्धानित्यजेत्पित्ताधिकेधिकम्
स्नानाभ्यंगप्रदेहांश्वपरिषेकांश्ववर्जयेत्

अर्थ—विनापित्तके गरमी नहीं, और ज्वर विना गरमीके नही होता, अतएव सवज्वरोंमें पित्तके विरुद्ध चिकित्सा नहीं करना, और पित्तज्वरमें तो विशेष करके पित्तविरुद्ध चिकित्सा त्याज्य है। तथा स्नान, मालिस, लेपन और जल आदिका तरडा देना वर्जित है ॥

जलकेगुण

पानीयंशीतलंरूक्षंहन्तिपित्तविषभ्रमम् । दाहाजीर्ण

श्रमच्छर्दिमोहमूर्च्छा मदात्ययान् ॥ मूर्च्छापित्तोष्म
दाहेषुविषेरक्ते मदात्यये । भ्रम क्लमातिसारेषुमार्गो त्थ-
वमथौतथा ॥ उर्ध्वगेरक्तपित्तेचशीतमंभः प्रशस्यते ।

अर्थ—जल-शीतल और रूखा है, तथा पित्त, विष, श्रम, दाह, अजीर्ण, श्रम, छार्दि, मोह, मूर्च्छा, मद्यपानके विकार, इनको नष्टकरें है ॥

मूर्च्छा, पित्तकी गरमी, दाह, विषजन्यरोग, रुधिरकी विमारी, मदात्यय, भ्रम, क्लम, अतिसार, मार्गचलनेसैं हुआ परिश्रम, मथवाय, उर्ध्वगतरक्तपित्त इन सब रोगोंमें वैद्यरोगीको शीतलजल देवे ॥

उष्णजलकेगुण

यत्क्वाथ्यमानंनिर्वेगंनिष्फेनंनिर्मलंभवेत् । अर्द्धावशि-
ष्टंभवति तदुष्णोदकमुच्यते ॥ कफमेदोनिलामघ्नंदी-
पनंबस्तिशोधनम् ॥ कासश्वासज्वरहरं पथ्यमुष्णोदकंसदा॥
तप्तंपाथः पादभागेनहीनं पथ्यंप्रोक्तंवातजातामयघ्नं ।
अर्धांशोनंनाशयेद्वातपित्तं पादप्रायंतत्तुदोषत्रयघ्नम्॥
तप्तायपिंड संसिक्तंलोष्टनिर्वापित्तंजलम् ।
सर्वदोषहरं पथ्यंसदानैरुज्यकारकम् ॥
उष्णोदकंश्रेष्टतमंवदंतिविश्वाययवानीसहितंक्रमेण ।
कफेचवातेनचपित्तरोगेसर्वेषुरोगेषुनशीतलाम्बु ॥

अर्थ—जो औंटानेसैं निर्वेग, झागरहित, निर्मल और आधारहजावे उसको उष्णोदक कहते है, यह कफ, मेदा, वादी, आम, श्वास, खाँसी, ज्वर इनको दूरकरे, दीपन है, और वस्तीको शुद्धकरे है, उष्णोदक प्राणीको सदैव पथ्य है। तहां चतुर्थांश जलाहुआजल वातके रोगोंमें पथ्यहै, आधाजला हुआजल वातपित्तविकारोकों नष्टकरे, और जो जलकर चौथाई रहगया हो अैसा जलत्रिदोष नाशक जानना । लोहेके गोलेकों अग्निमें लाल करके अथवाईटको अग्निमें लाल करके जलमें बुझाय देवे, वह जलसर्व दोष हरण कर्त्ता, पथ्य तथा सदैव आरोग्यकारी है । सोंठ अजमायनको डालके औंटायाहुआ जल सर्वोत्तमहै, तहां सोठडाला जलकफरोगमें और अजमायनडाला हुआ वादीके रोगमें पथ्य

है, परंतु ये दोनो जल पित्तरोगमें हितकारी नहीं है एवं सब रोगोंमें शीतलजल पथ्यनहीं है ॥

ऋतुविशेषमेंजलक्काथकेनियम

शारदंचार्धपादोनंपादहीनंतुहैमतम् । शिशिरेचवसं-
तेच ग्रीष्मेचार्धावशेषितम् । विपरीतेऋतौतद्वत्प्रावृ-
ष्यष्टावशेषितम् ॥

अर्थ—शरद ऋतुमें आठवा भागजला, हेमंत ऋतुमें चतुर्थांशजला—शिशिर वसंत आर ग्रीष्मऋतुमें अर्धावशेष एवं ऋतुके विपरीततामें और चौमासेमें अ-ष्टावशेष जल पीना परम उत्तम कहाहै ॥

रात्रिमेंसेवितउष्णजलकेगुण

भिन्नत्तिश्लेष्मसंघातंमारुतंचापकर्षति । अजीर्णंजर-
यत्याशुपीतमुष्णोदकंनिशि ॥

अर्थ—रात्रिमें गरम जलपीया हुआ कफके समूहको वादीको और अजी-र्णको नष्टकरता है ॥

उष्णोदककाप्रयोग

पार्श्वशूलेप्रतिश्यायेवातरोगेगलग्रहे॥आध्माने स्ति-
मितेकोष्ठेसद्यः शुद्धेनवज्वरे । हिक्कायांस्नेह पीतेच-
शीताम्बुपरिवर्जयेत् ॥

अर्थ—पसवाडेके, दर्दमें सरेकमां, वादीका रोग, गलग्रह, अफरा, कोठेकी अशुद्धी, जो वमन विरेचन द्वारा तत्काल शुद्ध हुआ हो, नवीनज्वर, हिचकी, और जिसनें स्नेह पान कराहो, इन सबको शीतल जलपीना वर्जित है ॥

उष्णजलथोडापीना

अरोचकेप्रतिश्यायेप्रसेकेश्वयथुक्षये । मंदाग्नावुदरे
कोष्ठज्वरेनेत्रामयेतथा । व्रणेचमधुमेहेचपानीयंमंदमाचरेत् ॥

अर्थ—अरुचि, सरेकमां, प्रसेक, सूजन, क्षय, मंदाग्नि, उदररोग, कोठेका रोग, ज्वर, नेत्ररोग, व्रगरोग, और मधुप्रमेह इन रोगोंमें इस प्राणीको पानी थोडा पीना चाहिये ॥

शृतशीतजलकेगुण

गुल्माशोंग्रहणीक्षयेषुजठरे मंदानलाध्मानके शोफे पांडुगलग्रहे व्रणगदेमेहेचनेत्रामये। वातारुच्यतिसारकेकफयुतेकुष्ठेप्रतिश्यायके उष्णंवारिसुशीतलंशृतहिमंस्वल्पंप्रदेयंजलम् ॥

अर्थ—गोला, ववासीर, संग्रहणी, क्षय, उदररोग, मंदाग्नि, अफरा, सूजन पांडु रोग, गलग्रह. व्रणरोग, प्रमेह, नेत्ररोग, वादीका रोग, अरुचि, कफातितिसार, कोढ, पीनस, इन सब रोगोंमें ओंटेहुए जलको शीतल करके थोडा २ पीनेको देवे ॥

अथउष्णजलविधिः।

आमंजलंजीर्यतियाममात्रंतदर्धमात्रंशृतशीतलंच। तदर्धमात्रंतुशृतंकदुष्णंपयप्रपाके त्रयएवकालाः॥

अर्थ—बिना ओंटाजल १ प्रहरमें पचता है, और ओंटायकर शीतलकराहुआ जल आधे प्रहरमें पचता है, एवं ओटायके कुछ २ गरम पीनेसैं चौथाई प्रहरमें पचता है, ये जलपचनेके तीनही काल है ॥

अधिकजलपीनेकेदोष

जलाधिक्यान्मनुष्याणामामवृद्धिःप्रजायते। आमवृद्धयातुमंदाग्निर्मंदाग्नौचाप्यजीर्णता। अजीर्णेनज्वरोत्पत्तिर्ज्वराद्वै धातुनाशनम्। धातुनाशात्सर्वरोगाजायंतेचोत्तरोत्तरम् ॥

अर्थ—अधिक जलपीनेसैं मनुष्योंके आम बढती है, आमके बढनसैं मंदाग्निहोती है, मंदाग्निसैं अजीर्ण–अजीर्णसैं ज्वरकी उत्पत्ति–ज्वरसै सब धातुओंका नाशहोता है, धातुनाश होनेसैं संपूर्ण रोग एकके पीछे दूसरा होता है अतएव अधिकजल पीना वर्जित है ॥

शर्वत

शर्करासहितंनीरं कफकृत्पवनापहम् सितासितोपलायुक्तंशुक्रलं दोषनाशनम्।सगुडंमूत्रकृच्छ्रघ्नंपित्तश्ले-

ष्मकरंभवेत्॥स्निग्धंस्वादुहिमंहृद्यंदीपनंबस्तिशोध-
नम् । वृष्यंपित्तपिपासाघ्नं नालिकेरोदकंलघु ॥

अर्थ—शरबत पीना कफकरे और वादीको हरे है, सपेद चीनीका सर्वत वीर्य-को वढावे और दोषोंका नाश करे है। गुडका सरबत मूत्रकृच्छ्रको नष्टकरे और पित्तकफको करेहै। नारियलका जलचिकना, स्वादु, शीतल, हृदयको हितकारी दीपन और वस्तीको शुद्धकरे है, बीर्यवर्द्धक-पित्त, और प्यासको नष्टकरे एवं हलका है ॥

धारापातेनविष्टंभिदुर्जरंपवनाहतम् ।
शृतशीतंत्रिदोषघ्नंवाह्यान्तर्भावशीतलम् ॥

अर्थ—वर्षाका जलविष्टंभी होताहै, और पवनसें ताडितजल दुर्जरहोताहै, एवं ओटायकेशीतल कराहुआ जलत्रिदोष नाशक तथा वाहर भीतरसें शीतल होताहै

दिवाशृतंतुयत्तोयंरात्रौतद्गुरुतांव्रजेत् ।
रात्रौशृतंतुदिवसेगुरुत्वमधिगच्छति ॥

अर्थ—दिनका ओंटाहुआ जल रात्रिमें भारी होजाता है, और रात्रिमें औटायाहुआज्वर दिनमें भारी हो जाता है, इसी कारण दिनमें ओंटाहुआजल दिनमें पीवे और रात्रिका ओंटाजल रात्रिमें पीवे ॥

जलशोधनविधि

जलके शोधनेको तीन लकडीकी और तीन खानेकी टिकटी वनवावे वो वाचमें छेदवाले हो उनमें क्रमसें छेददार चारघडा रक्खे ऊपरके घडेमें पक्केकोले भरके जल छोडदे, दूसरेमें पीली और चिकनी मिट्टीकेकंकरभरे तीसरेमें वालुरेतभरे, और नीचेके घडेको खाली रखे, उसमें क्रमसें जलटपक टपककरजमा होवेगाये शुद्धजल करने की विधि है ॥

(तरुणज्वरमेंकाढेकादेनानिषेध)

नकषायंप्रशंसंतिकदाचित्तरुणेज्वरे
कषायेणाकुलीभूतादोषाजेतुंसुदुस्तराः

अर्थ—बुद्धिमान् वैद्य तरुण ज्वरमें कदाचित् काढादेना अच्छा नही कहते क्योकि यदि तरुणज्वरमें कषाय दीनी जावे तो दोष व्याकुल हो जाते है उन व्याकुल दोषोंका जीतना बडा कठिन है ॥

कषायं यः प्रयुंजीतनराणांतरुणज्वरे ।
ससुप्तंकृष्णसर्पंतुकराग्रेणपरामृशेत् ॥

अर्थ—जो वैद्य, रोगी मनुष्योंको तरुण ज्वरमें काढापीनेको देता है वह सोते हुए कालियरसाँपको उँगलियोंसैं छूकर जगाता है। अर्थात् जैसैं काला सांप इसप्राणीको मारडालता है, उसी प्रकार तरुण ज्वरमें काढा देना प्राणोंके हरण करता है ॥

चतुर्भागावशिष्टस्तु यः षोडशगुणांभसा ।
सकषायः कषायः स्यात्सवर्ज्यस्तरुणज्वरे ॥

अर्थ—जो सोलहगुने जलमें ओटाया और चार भागवाकी रहनेपर उतार लिया वह कषाय, कषाय कहलाती है इसको तरुण ज्वरमें देनावर्जित है ॥

नवज्वरेमलस्तंभात्कषायोविषमज्वरम्
कुरुतेऽरुचिहृल्लासहिध्माध्मानादिकानपि

अर्थ—नवीन ज्वरमें कषाय देनेसैं वो मलका स्तंभन करती है, अतएव विषम ज्वरको करे है तथा अरुचि, हृल्लास, हिचकी, और अफरा आदिरोगोंको करे है

अजीर्णद्रवशूलाढ्येसामेतीव्ररुजिज्वरे
नपिबेदौषधंतद्धिभूयएवाममावहेत्

अर्थ—अजीर्ण, द्रवपदार्थजन्यशूलमें, साम और तीव्रज्वरमें औषध कदाचित् नही पीवे, यदि पीवे तो वो नष्ट हुई आमको फिर प्रगट करती है ॥

परिषेकान्प्रदेहांश्चस्नानंसंशोधनानिच ।
दिवास्वापंव्यवायंचव्यायामंशिशिरंजलम् ।
क्रोधप्रवातभोज्यानिवर्जयेत्तरुणज्वरी ॥

अर्थ—जलका तरडा देना, चंदनादिककालेप, स्नान, वमन विरेचनद्वारा संशोधन, दिनमें सोना, मैथुन करना, दंडकसरत करना, शीतल जलका स्पर्श, क्रोध करना, हवामें बैठना, और भोजन करना इन सबकर्मोंको तरुण ज्वरवाला त्याग देवे ॥

शोषच्छर्दिमदंमूर्च्छांभ्रमतृष्णाद्यरोचकान् ।
प्राप्नोत्युपद्रवानेतान्परिषेकादिसेवनात् ॥

अर्थ—यदि तरुण ज्वरवाला उक्तपरिषेकादिकर्मोंकोंकरे तो शोष, छर्दि, मद, मूर्च्छा, भ्रम, तृष्णा, और अरुचिइत्यादि उपद्रवोंको प्राप्त होता है ॥

(परिषेकादिप्रत्येककेदूषणहारीतसैं)

व्यायामाज्ज्वरसंवृद्धिर्व्यवायात्स्तंभमूर्च्छनम् । मृतिश्चस्नेहपानात्तुमूर्च्छाछर्दिमदोरुचिः ॥ गुर्वन्नभोजनात्स्वप्राद्विष्टंभो दोषकोपनम् ॥ अग्निसादः खरत्वंच स्रोतसांचाप्रवर्त्तनम् ॥

अर्थ—ज्वरमें दंड कसरत करनैसैं ज्वरकी वृद्धि होती है, स्त्री संगकरनेसैं स्तंभ, मूर्छा और मृत्यु होती है, घृतादिपान करनेसैं मूर्च्छा, वमन, मस्तपना- और अरुचि होती है, भारी अन्न भोजन करनेसैं और दिनमें सोनेसैं अफरा और वातादिदोषोंका प्रकोपहोता है, एवं अग्निका शांति होना, तथा खरत्व होना एवं नेत्र नासिका आदिछिद्रोंका रुकना इत्यादि दुख होते है ॥

आसप्तरात्रात्तरुणंज्वरमाहुर्मनीषिणः
मध्यंचतुर्दशाहंच पुराणस्यात्ततः परम्

अर्थ—सातरात्रि पर्यंत ज्वरकी तरुणावस्था पंडित जन कहते है, चौदह दिनपर्यंत ज्वरकी मध्यावस्था, और चौदह दिनके उपरांत पुराना ज्वर अैसैं कहलाता है ॥

सप्ताहेनतुपच्यंतेसप्तधातुगतामलाः ।
निरामश्चाप्यतःप्रोक्तोज्वरःप्रायोष्टमेऽहनि ॥

अर्थ—सातदिनमें सात धातुओंके मल पचते है, अतएव प्राय आठवेदिन ज्वर निराम कहलाता है ॥

ज्वरपाककीअवधी

वातजः सप्तरात्रेणदशरात्रेणपैत्तिकः ।
श्लेष्मजो द्वादशाहेनज्वरः पाकंप्रपद्यते ॥

अर्थ—वातजन्य ज्वरसातरात्रिकरके-पैतिकज्वर दशरात्रि करके एवं कफजन्यज्वर वारह दिनमें पकताहै ॥

वातेद्वेपित्तजेचैकंकफेदिनचतुष्टयम् ।
सप्ताहंवातपित्तेच कफपित्तेदशस्मृताः ।

कफवातेद्वादशाहं त्रिदोषेचैवविंशतिः ॥

अर्थ—अब ग्रंथान्तरसै लिखते है कि वात जन्यज्वरदो दिनमें, पित्तजन्य १ दिनमें, कफजन्य ४ दिनमें, वातपित्तज्वर ७ दिनमें, कफ पित्तज्वर १० दिनमें, कफवातज्वर १२ दिनमें, एवं त्रिदोषज्वर २० दिनमें पचताहै ॥

सप्ताहादौषधंकेचिदाहुरन्येदशाहतः
केचिल्लघ्वन्नभुक्तस्यदेयमामोल्वणेनतु ॥

अर्थ—किसी आचार्यका मतहै कि सात दिनमें औषध देना, कोई दशदिनसैं औषध देना कहते है, कोई कहता है कि हलका अन्न देकर औषध देवे परंतु आमोल्वणमें औषध कदाचित् न देवे ॥

अपच्यमानंभैषज्यंभूयोजनयतिज्वरम्
मृदुज्वरोलघुर्देहश्चलितश्चमलोयदा
अचिरज्वरितस्यापिभेषजंयोजयेत्तदा

अर्थ—जो औषध नही पची वो फिर ज्वरको प्रगट करे है। अब औषध देनेका समय कहते हैं कि जिस रोगीका ज्वर धीमापडगया हो, देह हलकी हो, मल चलायमान होगए हो ऐसैं तत्काल आए हुए ज्वरवालेको भी औषधी वैद्य निस्संदेह देवे ॥

वृद्धवाग्भटे

षड्दशद्वादशाहेषुव्यतीतेषुक्रमेणवै
वातपित्तकफातङ्केष्वन्नकालाइमेत्रयः

अर्थ—छः, दश, बारह, इतने दिन व्यतीत होनेपर क्रमसैं, वात, पित्त, और कफके ज्वरमें रोगीको अन्न देना ये तीन काल अन्नके देनेमें कहे है ॥

द्वंद्वजेसंनिपातेचव्याधावारोग्यदर्शने
सतियवागूयूषादिकल्पयेदतिनैपुणात्
मुद्गान्मसूरांश्चणकान्कुलत्थान्मकुष्टकान्पाचनयूषहेतून्
हिताहितानांविहितांश्चपेयान्दद्याद्यवागूमपिपाचनैःस्वैः

अर्थ—द्वंद्वज और संनिपात जन्य रोगोंमें जब आरोग्य हो जावे तब यवागू और यूषकी कल्पना वैद्य बुद्धिमानीके साथ करे। मूँग, मसूर, चना, कुलथी

सोंठ, ये पाचनके हेतु हित और अहितोंको विचार जो हित हो ऐसा पेया अथवा यवागूको तत्तद्रोगमें ग्राह्यको देवे ॥

औषधदेनेकाकाल

सप्तरात्रात्परंकेचिन्मन्यंतेदेयमौषधम् ।
दशरात्रात्परंकेचिदातव्यमितिनिश्चिताः ॥

अर्थ—कोई आचार्य सातरात्रिके पश्चात् औषध देना मानते है, कोई दशरात्रि व्यतीत होने पर औषध देना ऐसा निश्चय करते है ॥

सर्वज्वरेषुदातव्यः कषायः सप्तमेऽहनि
अथवालंघयेत्तावद्यावदारोग्यदर्शनम्

अर्थ—संपूर्ण ज्वरोंमें सातवे दिन काढा देना चाहिये, अथवा जबतक रोगी आरोग्य न होवे तबतक वैद्यको लंघन कराना चाहिये ॥

ज्वरितंज्वरमुक्तंवादिनान्तेभोजयेल्लघु
श्लेष्मक्षयेप्रवृद्धोष्माबलवाननलस्तदा
यथोचितेऽथवाकालेदेशसात्म्यानुरोधतः
प्रागल्पवन्हिर्भुंजानोनह्यजीर्णेनपीड्यते

अर्थ—ज्वरवाला हो अथवा ज्वर रहित हो परंतु रात्रिमें हलका भोजन करना चाहिये। जिसका कफ क्षीण हो गयाहो, गरमी बढी हुई हो, तथा जठराग्नि प्रबल होवे, और यथोचित काल हो, एवं देश, काल, और सात्म्य के अनुकूलमें, जठराग्निके शक्तिसैं न्यून भोजन करा ऐसा प्राणी कदाचित् अजीर्णी नहीं होती है॥

ननक्तंनगुरुप्रायंभुंजीततरुणज्वरी ।
नद्विवारन्नपूर्वाह्णे नाभिष्यंदिकदाचन ॥

अर्थ—तरुण ज्वर वाला रोगीदोवार भोजन नकरे, तथा पूर्वान्हमें भोजन न करे, तथाकफकारी भोजन न करे, एवं रात्रिमें भोजन न करे, और भारी पदार्थ भी कदाचित् नखाय ॥

विदेहः

सर्वज्वरेषुसप्ताहेमात्रांचलघुभोजयेत्

वेगापायेऽन्यथातद्धिज्वरवेगंविवर्द्धयेत्

अर्थ—संपूर्ण ज्वरोंमें सातवे दिन अल्पमात्र हलका भोजन करावे, यदि सातरात्रिके भीतर भोजन करावेगा तो दोषोंका वेग वना रहनेसैं वो ज्वरके वेगको वढाते है ॥

अन्नदेनेकाकाल

क्षुत्संभवतिपक्केषुदोषधातुमलेषुच
कालेवायदिवाकालेसोन्नकालउदाहृतः

अर्थ—जब दोष धातु और मल पकजाते है तव इस प्राणीको भूख प्यास लगती है. यदि वह भूख भोजनके समय अथवा कुसमय लगे परंतु वही अन्नदेनेका समय है ॥

(औषधादिकेअजीर्णमेंअन्नकोअग्राह्यत्व)

वीर्याधिकंभवतिभेषजमन्नहीनंहन्यात्तथामयमसंशयमाशुचैव ॥ तद्बालवृद्धयुवतीमृदवोनिपीताग्लानिंपरांसपसुयांतिबलक्षयंच ॥

अर्थ—अन्नहीन औषध वीर्याधिकवाली होतीहै, वह रोगको निःसंदेहशीघ्रदूरकरे है, यदिवही अन्नरहित औषधको बालक, वृद्ध, स्त्री, और नम्रमनुष्य पीवे तो ग्लानिको तथा बलक्षयको प्राप्तहोवे ॥

जीर्णऔषधकेलक्षण

अनुलोमोऽनिलस्वास्थ्यक्षुत्तृष्णासुमनस्कता ।
लघुत्वमथचोद्गारः शुद्धोजीर्णौषधाकृतिः ॥

अर्थ—पवनका अनुलोमगतिसैं चलना, देहमें स्वस्थता, भूख, प्यासकालगना, मनका प्रसन्न होना, तथा देहमें हलकापन, और शुद्ध डकारकाआना ये औषध पचजानेकेलक्षण है ॥

औषधग्रहणकामुहूर्त्त

भैषज्यंसल्लघुमृदुचरे मूलभेद्वयंगलग्ने ॥
शुक्रेन्द्विज्येविदिचदिवसे चापितेषांरवेश्च ॥
शुद्धेरिष्फद्युनिमृतिगृहे सत्तिथौनोजनेर्भे ॥

अर्थ—लघु (ह, अश्वि, पुष्य, अभि.) मृदु (मृ, रे, चि, अनु,) चर(स्वा पुन, श्र, ध, श) मूल इननक्षत्रोंमें द्विस्वभावलग्न (मिथुन, कन्या, धन, मीन,) में शुक्र-चंद्र, गुरु, बुध, और रविवारमें तथा १ २–७–और ८ स्थान शुद्धलग्नमें और उत्तम तिथिमें (अर्थात् रिक्ता, अमाआदि वर्जित तिथिमें) और जिसदिन जन्मका नक्षत्र न हो ऐसें शुभसमयमें प्रथम औषध सेवन करना शुभ है ॥

परंतु यह मुहूर्त देखना साधारण रोगमें लेना और जो रोग होते ही घोर उपद्रवकारी शीघ्रवढनेवाले है जैसें हैजा आदि उनमें वैद्यको कदाचित् मुहूर्त नहीं देखना चाहिये ॥

औषधग्रहणमेंमंत्र

ॐअमृतंभक्षयामिस्वाहा ॥
अच्युतानंतगोविंदनामोच्चारणभेषजात्
नश्यंतिसकलारोगासत्यंसत्यंब्रवीम्यहम्

इनको प्रथम पढकर फिर औषध पीवे तो वह वहुत जल्दी गुणकरे है। तथा रोगी पडा २ इसश्लोकको मनमें जपाकरे तो रोग शीघ्र दूर होवे ॥

कृष्णाय वासुदेवाय देवकीनंदनायच
प्रणतक्लेशनाशाय गोविंदायनमोनमः

औषधग्रहणविधिः

तत्रोपविश्यविश्रांतः प्रसन्नवदनेक्षणः औषधंहेमरजत मृद्भाजनपरिष्टितम् । पिबेत्प्रसन्नवदनः पीत्वापात्रमधोमुखम् । निक्षिप्यपात्रेसलिलंताम्बूलाद्युपकल्पयेत् ॥

अर्थ—रोगी बैठकर, और परिश्रमको दूरकर, प्रसन्न मुख और नेत्रकर सुवर्ण, चांदी, अथवा मिट्टीके पात्रमें स्थित ओषधको प्रसन्न मुखसैं पीवे, और औषधको पीकर उसपात्रको ओंधेमुख रखदेवे फिर जलसैं, हाथ धोकर पानकी वीडीआदिको चवावे ॥

गंडूषवर्जन

यमदूतपिशाचाद्यायक्षगंधर्वराक्षसाः ।

तेघ्नन्त्यौषधवीर्याणिततोगंडूषवर्जनम् ॥

अर्थ—यमके दूत, पिशाच (आदिशब्दसे भूत, प्रेत, वेतालादिक) यक्ष, गंधर्व, राक्षस ये सब औषधके पराक्रमको नष्टकरदेते है इसीसैं औषधको पीकर कुरला न करे ॥

क्वाथस्यकल्कस्यरसस्ययामंमासत्रयंचाञ्जनचूर्णवीर्यम् ।
षण्मासकाख्यंगुडलेहवीर्यंसंवत्सरं तैलघृतस्यवीर्यम् ॥

अर्थ—क्वाथ (काढा) कल्क, स्वरस इनमे १ प्रहर पर्यंत अपनी शक्ति रहती है, और अंजन-सुरमाआदि-चूर्ण-(हिंग्वाष्टकादि) इनकी तीनमहिने शक्ति रहती है, गुड (बाहुशालगुडादि) लेह (कल्याणावलेह आदि) इनमें छःमहिने पर्यंतवीर्यरहता, एवं घृत और तेलमें १ वर्ष पर्यंत वीर्य रहता है, उपरांत हीनवीर्य होजाती है ॥

वातज्वरके लक्षण

वेपथुर्विषमो वेगः कंठोष्ठमुखशोषणम् ।
निद्रानाशः क्षवः स्तंभो गात्राणां रौक्ष्यमेव च ॥ ८ ॥
शिरोहृद्गात्ररुग्वक्त्रवैरस्यं गाढविट्कता ।
शूलाध्माने जृंभणं च भवन्त्यनिलजे ज्वरे ॥ ९ ॥

अर्थ-कंपहोना, ज्वरका विषमवेग, कंठ, होठ, मुख, इनका सूखना; निद्राका नाश, छींकका नआना, देहकारूखापना, चकारसैं नेत्र, विष्टा, मूत्र, इनका काला होना । और आचारी " रौक्ष्यमेवच " इसजगे " श्यावांगमलमूत्रता " ऐसा पाठ कहतेहैं और मस्तक हृदय गात्र इनमें पीडा । कोई (शंका) करे कि गात्र पदके धरनेसैंही मस्तक हृदय आदिका बोध होगया फिर (मस्तक) और हृदय पद क्यों धरा ! (उत्तर—ये दोनों पदके धरनेसैं इनमें दर्दकी आधिक्यता दिखाई अर्थात् मस्तक हृदयमें बहुत पीडा होय मुखका विरसता, मलका रुकना, शूल, अफरा, जम्भाई ये लक्षण वातज्वरके होते है।

वातज्वरपरशुंठ्यादिपाचन

विश्वभेषजकैरात कुरुविंदगुडूचिका । पाचनं स्मृतमेतेषां देयं पवनजे ज्वरे ॥

अर्थ—सोंठ, चिरायता, नागरमोथा, और गिलोय, इनका काढा वातज्वरमें पाचनार्थ देवे ॥

गुडूच्यादिपाचनं

गुडूचिकोषणाजटामहौषधैश्च पाचनं ।
मरुज्वरे सलिंगके दिने च सप्तमे हितं ॥

अर्थ—गिलोय, पीपल, जटामांसी, सोंठ, इनका काढा वातज्वरका पूर्वरूप-होकर जाने उपरांत सातवेदिन हितकारकहै ॥

शठ्यादिकाढा

शठीनिशाद्वयंदारुशुंठीपुष्करमूलकं ॥ एलागुडूची
कटुकीपर्पटश्चयवासकः ॥ शृंगीकिराततिक्तंचदशमू-
लंतथैवच ॥ क्वाथमेषांपिबन्कृष्णासिंधुचूर्णयुतंनरः ॥
ज्वरान्सर्वान्द्रुतंहन्यान्नात्रकार्याविचारणा ॥

अर्थ—कचूर, हलदी, दारुहलदी देवदारु, सोंठ, पुहकरमूल, इलायची, गिलोय, कुटकी, पित्तपापडा, जवासा, काकडासिंगी, चिरायता, कुटकी, और दशमूल, इनका काढा पीपल और सैंधानिमक डालके देवे तो सर्वज्वरोंका शीघ्र नाश करे, इसमें संशय नहीं है ॥

श्रीपर्ण्यादिपाचन

श्रीपर्णीतर्कारीश्रीफलटिंटूकपाटलामूलैः ।
पाचनमुचितंमारुतजनितज्वरहारिवारिभिःक्वथितैः ॥

अर्थ—श्रीपर्णी, अरनी, वेलगिरी, टैंटू, पाडर, इनका काढा करके वातज्वरमें देवे यह पाचनहै ॥

गुडूच्यादिकाढा

गुडूचीसारिवाद्राक्षावलाचांशुमतीतथा ।
एषोपिपरमः सिद्धोवातज्वरविनाशनः ॥

अर्थ—गिलोय, सरिवन, दाख, खिरेटी, और शालपर्णी, इनका काढा वातज्वरमें देवे. यह उत्तम है ॥

दर्भमूलादिकाढा

दर्भबलागोक्षुरकंपचेत्पादावशेषितं ।
शर्कराघृतसंयुक्तं पिवेद्वातज्वरापहं ॥

अर्थ-कुशकीजड, खिरैटी, और गोखरू, इनका काढा चतुर्थांशकरके शीतल होनेपर मिश्री तथा सहत मिलायके देवे तो वातज्वरका नाशकरे ॥

त्रिफलादिकाढा

श्रीफलंसर्वतोभद्राकामदूतीचशोणकः ॥ तर्कारीगोक्षु-
रः क्षुद्राबृहतीकलशीस्थिरा ॥ रास्नाकणाकणामूल-
कुष्टंशुंठीकिरातकः ॥ मुस्तामृतामृतावालंद्राक्षायासः
शताव्हिका ॥ एषांक्वाथोनिहंत्येवप्रभंजनकृतज्वरं ॥
सोपद्रवंचयोगोयंसर्वयोगवरःस्मृतः ॥

अर्थ—वेलगिरी, छोटीकंभारी, लालपाढर, टेंटु, अरनी, गोखरू, कटेरी, बडीकटेरी, पिठवन, सालपाणी, रास्ता, पीपल, पीपरामूल, कूठ, सोंठ चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, खिरेंटी, नेत्रवाला, दाख, धमासों, और सतावर, इनका काढा वातज्वरका नाश करे ॥

भूनिंबादिकाढा

भूनिंबमुस्ताजलकंटकारिद्वयामृतागोक्षुरनागराणां ।
सशालिपर्णीद्वयपौष्कराणांक्वाथंपिवेद्वातभवज्वरार्तः ॥

अर्थ—चिरायता, नागरमोथा, नेत्रवाला, कटेरीदोनो, गिलोय, गोखरू सोंठ सालपर्णी, पृष्ठपर्णी, पुहकरमूल, इनका काढा जिसके वातज्वर आता हो उसको देवे, ॥

दुरालभदिकाढा

दुरालभानागरतिक्तपाठासठीवृषैरंडजटाकषायः ।
पीतः सशूलंशमयेज्ज्वरंच सश्वासकासंपवनप्रसूतं ॥

अर्थ—धमासो, सोंठ, कुटकी, पाढ, कचूर, अडूसा, और अंडकी जड इनका काढा पित्त, शूल, श्वास, खाँसी, तथा वातज्वर इनका नाशकरे ॥

शुंठ्यादिकाढा

विश्वामृताग्रंथिकसिद्धितोयंमरुज्ज्वरः स्यात्पिबतः कुतोयं । क्वाथोथकुस्तुंबरुदेवदारु क्षुद्रौषधैः पाचनमत्रचारु ॥

अर्थ—सोठ, गिलोय, और पपिरामूल, इनकाढा पीनेवाले मनुष्योंके वातज्वर कहां रहता है, और इस वातज्वरपर धनिया, देवदारु, कटेरी, और सोंठके काढेका पाचन सुंदर है ॥

पंचमूलादिकाढा

पंचमूलीवलारास्नाकुलित्थसहपौष्करैः ।
क्वाथोहन्याच्छिरः कंपंपर्वभेदमरुज्ज्वरं ॥

अर्थ—पंचमूल, खरेटी, रास्ना, कुलथी, और पोहकर मूल इनका काढा शिरःकंप, संधियोंकी पीडा, और बातज्वर इनका नाश करे ॥

कणादिकाढा

कणारसोनामृतवह्निविश्वानिदग्धिकासिंदुकभूमिनिंबैः समुस्तकैराचरितः कषायोहिताशिनांहंतिगदानिमांस्तु ॥ ज्वरंमरुत्कोपसमुद्भवंतथावलासजंचानलमंदतांच ॥कंठावरोधंहृदयावरोधंस्वेदंचहिक्कांचहिमत्वमोहान् ॥

अर्थ—पीपल, लहसन, गिलोय, सोठ, कटेरी, सह्यालू, चिरायता, और नागरमोथा इनका काढा लेकर पथ्यसें रहे तो वातज्वर, कफज्वर, मंदाग्नि, गला तथा हृदयकारुकना, पसीने, हिचकी और शीत, मोह इनका नाश करे ॥

काकोल्यादिकाढा

काकोलीबृहतीमुस्ताकुष्ठंदारुवृषामता ।
शुंठीक्वाथःसितायुक्तोहंतिवातज्वरंपरं ॥

अर्थ—कांकोली, कटेरी, नागरमोथा, कूठ, देवदारु, अडूसा, और सोंठ, इनका काढा मिश्रीडालकें देवे तो वातज्वर दूर हो ॥

अमृतादिकाढा

अमृतानागरंमुस्तानिशाह्वययवासकैः ।
वातज्वरेप्रदातव्यः कृष्णायुक्तकषायकः ॥

अर्थ—गिलोय, सोंठ, नागरमोथा, हलदी, और जवासो इनका काढा पीपरका चूर्ण डालके वातज्वरमें देवे ॥

ग्रंथ्यादिकाढा

ग्रंथिकंपर्पटोवासाभार्गीविश्वागुडूचिका ॥
एभिःसुसाधितंतोयंतीव्रवातज्वरापहं ॥

अर्थ—पीपरामूल, पित्तपापरा, अडूसा, भारंगी, सोंठ, और गिलोय, इनका काढा तीव्रवातका नाश करे ॥

शालिपर्ण्यादिकाढा

शालिपर्णीवलाद्राक्षागुडूचीसारिवातथा ॥ आसांक्का
थंपिवेत्कोष्णंतीव्रवातज्वरच्छिदं ॥ काश्मरीसारिवा
द्राक्षात्रायमाणामृताभवः ॥ कषायःसगुडःपीतोवात
ज्वरविनाशनः ॥

अर्थ—सालपर्णी, खरेटी, दाख, गिलोय, और सरिवन, इनका काढा कुछ गरम पीवे तो तीव्र वातज्वर दूरहो । कंभारी, सरिवन, दाख, त्रायमाण, और गिलोय, इनके काढेमें गुड डालके पीवे तो वातज्वर नाश होवे ॥

गुडूच्यादिपाचन.

गुडूचीपिप्पलीमूलनागरैःपाचनंस्मृतं ॥
दद्याद्वातज्वरेपूर्णलिंगेसप्तमवासरे ॥

अर्थ—गिलोय, पीपरामूल, और सोंठ, इन तीन औषधोंका काढा ज्वर पूंण दशामें आनेसैं सातवें दिन देवे तो वातज्वर नष्ट हो ॥

किरातादिकाढा.

किराताब्दामृतोदीच्यबृहतीद्वयगोक्षुरैः ।
सस्थिराकलशीविश्वैःक्काथोवातज्वरापहः ॥

अर्थ—चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, नेत्रबाला, दोनो कटेरी, गोखरू पिठवन, सालपर्णी–और सोंठ, इनका काढा वातज्वर नाशकहै ॥

पिप्पल्यादिकाढा

पिप्पलीसारिवाद्राक्षाशतपुष्पाहरेणुभिः।
कृतः कषायः सगुडोहन्यात्पवनजंज्वरं ॥

अर्थ—पीपर, सारिवा, दाख, सौफ, रेणुकाकेवीज, इनका काढा कर गुड डालके देवे तो वातज्वर नष्ट हो ॥

उशीरादिकषाय

उशीरकलशीमहौषधकिरातकांभोधरस्थिराबृहति-
काद्वयामृतलतात्रिकंटैःकृतं । कषायकममुंपिवेत्प-
वनजज्वरव्याकुलःपुमान्दशशतच्छदछदमदग्रसलोचने ॥

अर्थ—हे कमलदललोचने! नेत्रबाला, पिठवन, सोठ, चिरायता, नागरमोथा सालवन, कटेरी दोनो, गिलोय और गोखरू इनका काढा वातज्वरपीडितोको देनेसैं उनका ज्वर शांत होवे। यह वैद्यजीवनमें लिखाहै ॥

मरीच्यादिकाढा

मरीचंरुचकंशुंठीकिरातंचहरीतकी। पिप्पलीकटुकी-
चैववात ज्वरविनाशनं ॥

अर्थ—कालीमिरच, अंडकीजड, सोठ, चिरायता, छोटी हरड, पीपल, कुटकी, इनका चूर्ण, अथवा काढा पीनेसैं वातज्वर दूर होवे ॥

त्रिफलादिचूर्ण

त्रिफलाव्योषगुडकंशर्करात्रिवृतार्धकं। मोदकंभक्षयि-
त्वातु पिबेच्चोष्णजलंपुनः। पार्श्वशूलेऽरुचौकासेज्व-
रेचानिलसंभवे ॥

अर्थ—त्रिफला, सोंठ, मिरच, पीपल, इनका चूर्ण गुडसैं अथवा निशोथके चूर्णमें दुगनी खांड़ मिलाय भक्षण करे, ऊपरसैं गरम जलपीवे तो पार्श्वशूल, अरुचि, खाँसी, और वातज्वर इनका नाश होवे ॥

पिप्पल्यादिचूर्ण

तुल्यांशंमर्दयेत्खल्वेपिप्पलीहिंगुलंविषं ॥ द्विगुंजंमधु-
नादेयंवातज्वरविनाशनं ॥

अर्थ--पीपल, हिंगुल तथा सिंगियाविष ये समान भागले खरल करें, फिर इस चूर्णको २ रत्ती सहतके साथ देवे तो वातज्वरका नाश होय ॥

द्राक्षादिचूर्ण

द्राक्षादुरालभापथ्याचिक्कणीसमभागतः ।
एतागुडान्वितानूनं नाशयंत्यनिलज्वरं ॥

अर्थ—दाख, धमासा, छोटी हरड, तथा चिकनी सुपारी, इनको समभागले चूर्णकरै इसमेंसे २॥तोले गुडमें मिलायकर देवे तो वातज्वर नष्टहोय ॥

शतावरीस्वरसः

सद्योवातज्वरंहंति शतावर्यामृतारसः । समासात्सगु-
डः पीतो बलहीनस्यदेहिनः ॥

अर्थ—सतावर, गिलोय, इनका स्वरस गुडमिलायकर देनेसै निर्बल पुरुषका वातज्वर शांत होय

कल्पतरुरसः

शुद्धं शंकरशुक्रमक्षतुलितंमारारिनारीरजस्तावत्तावदु-
मापतिस्फुटगलालंकारवस्तुस्मृतम् ॥ तावत्येवमनः
शिला च विमलातावत्तथाटंकणं॥ शुंठीद्विचक्षमिताक-
णाचमरिचंदिक्पाल संख्याक्षकम् । विषादिवस्तूनि-
शिलोपरिष्टाद्विचूर्णयेद्वासिसशोधयेच्च॥ततस्तुखल्वे-
रसगंधकौचचूर्णंचतद्यामयुगंविमर्द्य । कल्पतरुनाम-
धेयोयथार्थनामारसःश्रेष्ठः॥ समीरणश्लेष्मगदान्हर-
तेमात्रास्यगुंजैका ॥ आर्द्रकेणसममेषभक्षितोहंतिवा-
तकफसंभवंज्वरं। श्वासकासमुखसैकशीततावन्हिमां-
द्यमरुचिंचनाशयेत् ॥ नस्येनाश्वेवहरति शिरोर्त्तिक-

फवातजाम् । मोहंमहांतमपिचप्रलापंक्षवथुग्रहम् ॥

अर्थ—पारा, गंधक, वच्छनागविष, मनसिल, सुहागा, प्रत्येक शुद्धकरे हुए एक एक तोले लेवे, उसमें सोंठ २ तोले, कालीमिरच ८ तोले, पीपल ८ तोले, इस प्रमाण डालके वच्छनागादि औषधोंको वारीक कूट पीस कपड छनकर लेवे फिर पारेगंधककी कजलीकर उसमें उक्त औषधोंके चूर्णको मिलाय देवे सबको एकत्र कर दो प्रहर खरल करके जलसैं एक २ मांसेकी गोली वनावे, तो यह कल्पतरु नामक श्रेष्ट रस वनकर तयार हो, इसमेंसैं १ गोली प्रातःकाल सेवन करे तो बात कफके रोग दूर होवे इस रसको अदरखके रससैं खाय तो वात कफज्वरका नाश करे, तथा श्वास, खांसी, मुखसैं लारकावहना, शीत, मंदाग्नि, और अरुचि इनका नाशकहै—एवं इस रसकी नस्यलेनेसैं कफवातसैं प्रगट हुई मस्तक पीडाको हरणकरे। उसीप्रकार बडाभारी मोह, प्रलाप, और छीककान आना इनको नाश करे ॥

भैरवरसः

विषमहौषधिमागधिकोषणद्युमणिरक्तकमार्द्रकमर्दि-
तम्॥क्रमविवर्द्धितमुद्धालितज्वरं हरतिभैरवएषरसोवरः॥

अर्थ—सिंगियाविष, सोंठ, पीपल, कालीमिरच, ये औषध प्रत्येक एकसैं दूसरी अधिक भाग लेवे, सबको कूटपीस आकके दूध और अदरखके रससैं खरलकर गोली बनावे तो यह भैरवरससिद्ध होवे, इसको वलावल देखकैं देवे तो घोर वातज्वरको दूर करे ॥

शीतभंजीररसः

पारदंरसकंतालंशिखितुत्थंचटंकणम् । गंधकंचसमं-
पिष्ट्वाकारवेल्लरसैर्दिनम् ॥ ताम्रपात्रोदरेलेप्यंयंत्रे-
पात्रंत्वधोमुखम् । दत्वारुध्वा विशोष्याथवल्कलाभिः
प्रपूरयेत् ॥ पचेद्दार्वाग्निनाचुल्यांताम्रपृष्टगतायदा ।
स्फुटंतिव्रीहयः शुद्धोरसस्तंस्वांगशीतलम् ॥ ताम्र-
पात्रात्समुद्धृत्यचूर्णयेन्मरिचैः समं । शीतभंजीरसो-
नाम द्विगुंजंवातकेज्वरे ॥ दातव्यः पर्णखंडेन तत्क्ष-
णान्नाशयेज्ज्वरम् । त्रैदिनंविषमंतीव्रंएकाद्वित्रिचतुर्थकम् ॥

अर्थ—पारा, खपरिया, हरताल, लीलाथोथा, सुहागो, और गंधक, ये औषध समभाग लेकर करेलेके रसमें १ दिन खरलकरे, फिर उस पिट्ठीको तामेके पात्रके भीतर लेप करके और उस पात्रके ऊपर दूसरा अधोमुख तामेका पात्रमें दावकर सात कपड मिट्टी कर धूपमें सुखाय चूल्हेपर रख वालूका यंत्रमें तीव्राग्निसैं पचन करावे, जब वालूके ऊपर रखेहुए धान खिलजावे तव अग्नि मँद कर शीतल करे, और औषधको पात्रमेंसैं निकाल बराबरकी कालीमिरच मिलायके पीसै २ रत्ती पानमें धरके देवे तो तत्क्षण वातज्वर नाश होवे, तथा यह शीतभंजीर रस तीनदिन सेवन करे तो, तीव्र विषमज्वर, एकाहिक, द्याहिक और चातुर्थिक ज्वरोंको शांत करे, ॥

मातुलंगादिगुटिका

मातुलंगफलकेसरोद्धृतःसिंधुजन्ममरिचान्वितोमुखे।
हंतिवातकफरोगमास्यगंशोषमाशुजडतामरोचकं ॥
शर्करादाडिमाभ्यांचद्राक्षादाडिमयोस्तथा ॥ कल्कं
विधारयेदास्येशोषवैरस्यनाशनं ॥

अर्थ—विजोरेकी केशर, सैंधानिमक, कालीमिरच, ए तीनो औषध एकत्र खरलकर गोली कर मुखमें रक्खे, इससै मुख संबंधी कफ वातरोग, शोष, जडता, और अरुचि, दूर होवे। खांड और अनार अथवा दाख और अनार इनका कल्क शोष तथा मुखकी विरसता दूर होनेके लिये सेवन करे ॥

द्राक्षादिप्रतिसारण

द्राक्षामलकयोःकल्कंसघृतंवदनेक्षिपेत्‌ ॥ तेनघृष्ट्वामु
खस्यांतःकुर्वीतप्रतिसारणं ॥ जिव्हाताल्गलांतस्थः
संशोषस्तेनशाम्यति ॥ सुरसंजायतेवक्रंरुचिर्भवति
भोजने ॥

अर्थ— दाख और आमले इनका कल्क घीके साथ मिलाय उसको मुखके भीतर फेरे, उसको प्रतीसारण कहते है, यह करके उक्त दाख आदिकी गोली मुखमें रखेतो जिव्हा, तालु, तथागला, इनका सूखना शांत होय और मुख सुरस होकर भोजनमें रुचि होवे, ॥

हरीतक्यादिगुटिका.

हरीतकीत्रिवृच्चैवदारुकाणांपृथग्भवेत्॥पलद्वयंकणाशुंठीगुडूचीगोक्षुरोवरी ॥ सहदेवीविडंगंचप्रत्येकंपलसंमितं ॥ मधुनावटिकांकृत्वाखादन्ज्वरमपोहति ॥ कासंश्वासंमलस्तंभंवन्हिमांद्यंनियच्छति ॥

अर्थ—हरडकी छाल, निसोथ, विधायरा, प्रत्येक ८ तोले, पीपर, सोंठ, गिलोय, गोखरू, सतावर, सहदेई, वायविडंग, ये प्रत्येक तोले ४ प्रमाण लेकर चूर्ण कर सहतसैं गोळी बनावे यह ज्वर, खांसी, श्वास, मलावरोध, और अग्नि मांद्य इनका नाश करे, ॥

स्वेदकाढनेकेविषयमेंप्रमाणकहतेहै

वातश्लेष्मज्वरेस्वेदंजंघापार्श्वास्थिशूलिनि ॥ पीनसश्वासबाधिर्येकारयेत्तद्विधानवित्॥ स्रोतसांमार्दवंकृत्वानीत्वापावकमाशयं ॥ हत्वावातकफस्तंभंस्वेदोज्वरमपोहति ॥

अर्थ—वातकफज्वरमें, जंघा, पार्श्वभाग और हड्डी इनमें शूल होनेसें तथा पीनस, श्वास, तथा बधिरता ए विकार होनेसैं पसीने काढने चाहिये, अर्थात् पसीने निकालनेसैं इतने गुण होते है, रसवाहिनी नाडियोंका नम्र होना, तथा अग्निको स्वस्थानमें लावे और वात तथा कफ संबंधी जडत्वको नाशकर ज्वरका नाश करे है, ॥

खर्परभृष्टवालुकास्वेदयोग

खर्परभ्रष्टपरास्थितकांतिकसंसिक्तवालुकास्वेदः ॥
शमयतिवातकफामयमस्तकशूलांगभंगादीन् ॥

अर्थ— वालूको खिपडेमें तपाय उसपर कांजी डाल उसका वफारो देय तो वात कफ रोग, मस्तकशूल, तथा अंगोंका टूटना इससै शांति होता है, ॥

निद्रानाशनिदान

नावनंलंघनंचिंताव्यायामःशोकभीक्रुधः ॥ एभिरेवभवेन्निद्रानाशःश्लेष्मातिसंक्षयात्॥

अर्थ- नस्य, लंघन, चिंता, दंडकसरत, शोक, भय, और क्रोध, इन कारणोंसें अत्यंत कफ नाश होनेसें निद्रा नहीं आती ॥

विजयाचूर्णयोग

भ्रष्टंतुविजयाचूर्णंमधुनानिशिभक्षयेत् ॥
निद्रानाशेतिसारेचग्रहण्यांपावकक्षये ॥

अर्थ- रात्रिमें भांगको भून उसके चूर्णको सहतके साथ देवे तो निद्रा नाश, अतिसार, संग्रहणी, तथा मंदाग्नि इत्यादि रोग नष्ट होवे, ॥

सगुडादिचूर्ण

गुडंपिप्पलिमूलस्यचूर्णेनालोडितंलिहन् ॥ चिराद्
पिचसंनष्टांनिद्रांमाप्नोतिमानवः ॥

अर्थ—पीपरामूलके चूर्णको गुडके साथ खानेसें बहुत दिनका निद्रा नाश हुआ होय वो नष्ट होवे ॥

निद्रालानेकीऔषध

मूलंतुकाकमाच्याबद्धंसूत्रेणमस्तकेनियतं ॥ विदधा
तिनष्टनिद्रांनिद्रायाश्चैवसिद्धमिदं ॥

अर्थ—काकमाची (मकोय) की जड सूतसें मस्तकमें बांधे तो निद्रा तत्काल आवे यह अनुभव सिद्ध है, ॥

पित्तज्वरकेलक्षण

वेगस्तीक्ष्णेतिसारश्चनिद्राल्पत्वंतथावमिः ॥ कंठो
ष्ठमुखनासानांपाकःस्वेदश्चजायते ॥ प्रलापोवक्रकटु
तामूर्छादाहोमदस्तृषा ॥ पीतविण्मूत्रनेत्रत्वक्पैत्तिके
भ्रमएवच ॥

अर्थ—ज्वरका तीक्ष्णवेग हो अतिसार (यानी पित्तके वेगसें दस्तका पतला होना न कि अतिसार रोगहो) थोडी निद्रा आवै, पित्तको कफके स्थानमें पहुंचनेसें वमनका होना, कंठ, होठ, मुख, नाक, इनका पकना। और पसीनोंका आना बडबडाना मुखमें कटुआट, मूर्च्छा, दाह, उनमत्तपना, प्यास, विष्ठा, मूत्र, नेत्र, देहकी त्वचा इनका पीला होना तथा भ्रम ये लक्षण पित्तज्वरमें होते हैं*शंका—क्योंजी भ्रमको वातविकारमें लिखाहै यासें ये तो वातका धर्म है फिर पित्तके

विकारमें भ्रमशब्द क्यौं कहा? *उत्तर–तुमने कहासो ठीक है परंतु रोग एकही दोषसैंही नहीं प्रगट होवे किंतु अनेक दोषोंसैं होय है जैसे लिखाहै "न रोगोप्ये कदोषजः इति" और "पैत्तिके भ्रम एवच" इस पदमें च कार जो पडाहै इस्से इस श्लोकमें जो नहीं कहै कोन तीव्रगरमी, लालचकते, शीतकी इच्छा, दाह अरुचि, इत्यादि जानने॥

छिन्नादिपाचन

छिन्नरुहापिचुमंदकधान्यंविश्वनिशाजनितश्चकषायः।
पाचनकंगुडमिश्रितमेवपित्तभवेज्वरएवहिपेयं॥

अर्थ––गिलोय, नीमकीछाल, धनिया, सोंठ, तथा हलदी इनका कादा गुड डालकर देंवे यह पित्तज्वरपर पाचनहै, ॥

दुस्पर्शादिकाढा

दुस्पर्शवासाकटुकाहरेणुप्रियंगुभूनिंबकृतःकषायः॥
पीतोहिपित्तप्रभवंसदाहंज्वरंजयेदाशुसितासमेतः॥

अर्थ––धमासो, अडूसा, कुटकी, पित्तपापरा, फूलप्रियंगु, और चिरायता इनका काढा खांड डालकर पीवे तो दाहयुक्त पित्तज्वरका नाश करे, ॥

द्राक्षादिकाढा

द्राक्षापटोलीपिचुमंदातिक्ताहरीतकीसिंहमुखीजलंच।
धान्याकलोध्रांबुदनागरंचपित्तज्वरांभोनिधिवाडवाग्निः॥

अर्थ––दाख, पटोलपत्र, नीमकीछाल, कुटकी, छोटीहरड, कटेरी, नेत्रवाला-धनिया, लोध, नागरमोथा, औरसोंठ इनका कादा पित्तज्वररूप समुद्रको वड, वाग्नीके समान है, ॥

पित्तज्वरप्रतिकार

अमलैःकमलैरथानिलैरलसैःपुष्परजःसमन्वितैः॥
जलकेलकथाकुतूहलैरपिपित्तज्वरजारुजोजयेत्॥

अर्थ––श्वेतकमल, सुगंधित पुष्पोंमें होकर आया मंद सुगंध वायु, और जल क्रीडा, इन करके वैद्योंको पित्तज्वर जनित पीडा जीतनी चाहिये॥

तिक्तादिकाढा

तिक्तामुस्तायवैःपाठाकट्फलाभ्यांसहोदकं॥ पक्कंसश
र्करंपीतंपाचनं पैत्तिकज्वरे ॥

अर्थ– कुटकी, नागरमोथा, इन्द्र जौ, पाढ, कायफल, और नेत्रवाला इनका काढा खांड डालके पीवे यह पित्तज्वरको पाचक है, ॥

पर्पटादिकाढा

पर्पटोवासकस्तिक्तकिरातोधन्वयासकः॥ प्रियंगुश्च
कृतःक्काथएषःशर्करयापुनः॥पिपासादाहपित्तास्रयुक्तं
पित्तज्वरंहरेत् ॥

अर्थ—पित्तपापडा, अडूसा, कुटकी, चिरायता, धमासो, फूलप्रियंगु, इनका, काढा खांड डालकर लेय तो प्यास, दाह, तथा रक्तपित्त, इन सहित पित्तज्वरको दूर करे

द्राक्षादिकाढा

द्राक्षाहरीतकीमुस्ताकटुकीकृतमालकः। पर्पटश्चकृ-
तः क्काथएषपित्तज्वरापहः ॥ मुखशोषप्रलापांतर्दा-
हमूर्च्छाभ्रमप्रणुत् । पिपासारक्तपित्तानांशमनोभे-
दनोमतः ॥

अर्थ—दाख, छोटीहरड, नागरमोथा, कुटकी, अमलतासकागूदा, और पित्तपापडा इनका काढा लेय तो मुखशोष, बकवाद, अंतर्दाह, मूर्छा, तथा भ्रम इनको नाश करे और प्यास तथा रक्तपित्त इनको शमन करे तथा मलको निकाले ॥

पटोलादिकाढा

पटोलयवधान्याकमधुकंमधुसंयुतं। हंतिपित्तज्वरंदा-
हंतृष्णां चातिप्रमाथिनीं॥

अर्थ—पटोलपत्र, इन्द्र जौ, धनिया, मुलहटी, इनका काढा सहत डालके पीवे तो पित्तज्वर, दाह, तथा प्यास शांत हो ॥

गुडूच्यादिकाढा

गुडूच्यामलकीयुक्तः केवलोवापिपर्पटः ।
पित्तज्वरहरेत्तूर्णंपित्तशोषभ्रमान्वितं ॥

अर्थ—गिलोय, आमले, तथा पित्तपापडा, इनका अथवा केवल पित्तपापडेका काढा, लेनेसैं शोष, तथा भ्रम युक्त पित्तज्वरको हरण करे. ॥

ह्रीबेरादिकाढा

ह्रीबेरचंदनोशीरघनपर्पटसाधितं । दद्यात्तुशीतलंवारितृड्वृद्धिज्वरदाहनुत् ॥

अर्थ—नेत्रवोला, लाल चंदन, खस, नागरमोथा, और पित्तपापडा इनका काढा शीतल करके देय तो अत्यंत प्यास, ज्वर, तथा दाह, इनको दूर करे ॥

भूनिंबादिकाढा

भूनिंबातिविषालोध्रमुस्तकेंद्रयवाः स्मृताः । वालकंधान्यकं बिल्वंकषायोमाक्षिकान्वितः॥भिनत्तिश्वासकासांश्चरक्तंपित्तंज्वरंहरेत् ॥

अर्थ—चिरायतो, अतीस, लोध, नागरमोथा, इन्द्रजो, नेत्रवाला, धनियाऔर वेलगिरी इनका काढा सहत डालके लेयतो अतिसार, श्वास, खांसी, रक्त, पित्त, ज्वर इनको दूर करे ॥

कट्फलादिकाढा

कट्फलेंद्रयवांबष्टातिक्तामुस्तैः शृतंजलं ।
पाचनंदशमेन्हिस्यात्तीव्रपित्तज्वरेनृणां ॥

अर्थ—कायफल, इन्द्रजो, पाढ, कुटकी, और नागरमोथा इनका काढा तीव्र पित्त ज्वरवालेको दशमेदिन दे (अर्थात् पित्तज्वर दशवेदिन पाचन होता है) इसीवास्ते दशवे दिन देय तो पित्तज्वर दूर हो ॥

पंचभद्रादिकाढा

पर्पटाब्दामृताविश्वाकैरातैः साधितंजलं । पंचभद्रमिदंज्ञेयंवातपित्तज्वरापहं ॥

अर्थ—पित्तपापडा, नागरमोथा, गिलोय, सोंठ, और चिरायता इनका काढा वातपित्तज्वरको दूरकरे इसे पंचभद्र क्काथ कहते है, ॥

कलिंगादिकाढा

कलिंगंकट्फलंलोध्रंपाठाकटुकरोहिणी । पक्वंसशर्करं-
पीतंपाचनंपित्तकेज्वरे ॥

अर्थ—कुडाकीछाल, कायफल, लोध, पाढ, और कुटकी इनका काढा खांड डालके पीवे तो पित्तज्वरको पचावे, ॥

शर्करादिकाढा

शर्करामधुरोहंतिकषायः पैतिकंज्वरं । चंदनोशीरश्री
पर्णीपुरूवकमधूकजः ॥

अर्थ— लालचंदन, नेत्रवाला, कायफल, फालसे, मुलहटी इनका काढा खांड डालकर देय तो पित्तज्वरका नाश करे, ॥

क्षुद्रादिकाढा

क्षुद्राधान्यकशुंठीभिर्गुडूचीमुस्तपद्मकैः । रक्तचंदन-
भूनिंबपटोलवृषपौष्करैः ॥ कटुकेंद्रयवारिष्टभार्गीपर्प-
टकैः समैः । क्काथंप्रातर्निषेवेतशीतंसर्वज्वरच्छिदं ॥

अर्थ— कटेरी, धनिया, सोंठ, गिलोय, नागरमोथा, पद्माख, लालचंदन, चिरायतो, पटोलपत्र, अडूसा, पोहकरमूल, कुटकी, इन्द्रजो, कूठ, भारंगी, और पित्तपापडा इनका काढा पीवे तो सर्वप्रकारके शीतज्वर दूर होय, ॥

लोध्रादिकाढा

लोध्रोत्पलामृतापद्मसारिवाणांसशर्करः । क्काथः पित्त
ज्वरंहन्यादथवापर्पटोद्भवः ॥

अर्थ— लोध, कमलगट्टेकी गिरी, गिलोय, पद्माख और सारिबन इनका काढा खांड डालके पीवे अथवा पित्तपापडेकाही काढा पित्तज्वरको दूर करता है ॥

पर्पटादिकाढा

पर्पटामृतधात्रीणांक्काथपित्तज्वरंजयेत् । द्राक्षारग्वध
योश्चापिकाश्मर्याश्चापिवापुनः ॥

अर्थ—पित्तपापडा, गिलोय, और आमले, इनका काढा पित्तज्वरको दूर करे अथवा दाख, अमल तासका गूदा, इनका अथवा केवल कंभारीका काढा पित्तज्वरको जीतता है, ॥

विश्वादिकाढा

विश्वपर्पटकोशीरघनचंदनसाधितं । दद्यात्सुशीतलं वारितृट्छर्दिज्वरदाहनुत् ॥

अर्थ—सोंठ, पित्तपापडा, नेत्रवाला, नागर मोथा, और लाल चंदन, इनका काढा शीतलकर देवे तो तृषा, वमन, ज्वर, और दाह इनको नाशकरे, ॥

गुडूच्यादिकाढा

गुडूचीमुस्तधान्याकमधुकंकटुरोहिणी । तृष्णाशूलरुचिच्छर्दिपित्तज्वरहरोगणः ॥

अर्थ—गिलोय,नागर मोथा, धनिया, मुलहटी, और कुटकी इनका काढा प्यास, शूल, अरुचि, वमन, और पित्तज्वर इनको नाशकरे, ॥

किरातादिकाढा

किरातामृतधान्याकचंदनोशीरपर्पटैः ॥सपद्मकैःकृतः क्राथोहंतिपित्तभवंज्वरं ॥ दाहतृष्णाश्रमारुचिमुत्क्लेशं वमथुंक्लमं ॥

अर्थ—चिरायता, गिलोय, धनिया, चंदन, नेत्र वाला, पित्तपापडा और पद्माख इनका काढा पित्तज्वर, दाह, तृष्णा, श्रम, अरुचि, मुखसैपानी छूटना वमन, और ग्लानि इनकानाश करे, ॥

चंदनादिकाढा

चंदनंमधुकंद्राक्षांकटुकांसदुरालभां । चंदनादिर्गणःप्रोक्तोहन्याद्दाहज्वरारुचिः ॥

अर्थ—चंदन, मुलहटी, दाख, कुटकी, और धमासो यह चंदनादि गण दाह, अरुचि, और ज्वर इनका नाशकरे, ॥

पर्पटादिकाढा

एकएवखलुपैतिकज्वरंहंतिपर्पटकृतःकषायकः ॥चंदनोदकमहोषधान्वितश्चेत्तदाकिमुपुनर्विचारणा ॥

अर्थ—केवल एकही पित्तपापडेका काढा पित्तज्वरकोनष्ट करता है यदि उसमें लालचंदन, नेत्रवाला और सोंठ मिलायकर काढा कराजावे तो पित्तज्वर दूरकरे इसमें क्या संदेह है॥

उदुंबरादिहिम

उदुंबरशिफाछिन्नातज्जलंसितयान्वितम्।
पीतपित्तज्वरंहंतिपटोल्यावाशिफाजलं॥

अर्थ—गूलरके छालके पानीमें खांड मिलायकर पीनेसैं, अथवा पटोल पत्र की जडका पानी खांडके साथ पीवे तो पित्तज्वरको नाशकरे॥

द्राक्षादिकाढा

द्राक्षाभयापर्पटकाब्दतिक्ताक्काथःससंपाकफलोविद
ध्यात्॥ प्रलापमूर्च्छाभ्रमदाहशोषतृष्णान्वितोपित्त
भवज्वरेच

अर्थ—मुनक्कादाख, हरडजंगी, पित्तपापडा, नागरमोथा, कुटकी, और अमलतासकोगूदो इनका काढा करके पीवेंतो प्रलाप, मूर्च्छा, भ्रम, दाह शोष और तृषा इन करके युक्त जो पित्तज्वर उसका नाशकरे॥

दुरालभादिकाढा

दुरालभापर्पटकप्रियङ्गुभूनिंम्बवासाकटुरोहिणीनां॥
क्वाथंपिबेच्छर्करयावगाढंतृष्णास्रपित्तज्वरदाहयुक्तः॥

अर्थ—धमासा, पित्तपापरा, फूलप्रियंगु, चिरायता, अडूसा, और कुटकी इनका काढा करके उसमें खाँड डालके तृषा, रक्तपित्तज्वर, और दाह इनकरके युक्त जो रोगी होवे उसको पीना चाहिये॥

द्राक्षादिकाढा

द्राक्षापर्पटराजवृक्षकटुकामुस्ताभयानांजलं॥ मूर्च्छा
शोषनिदाघतृट्प्रलपनभ्रांत्याढ्यपित्तज्वरे ॥ दुस्पर्श
प्रमदाकिरातकटुकासिंहास्यरेणूद्भवः॥ क्वाथःशर्कर
यान्वितोहरतितृट्दाहाख्यपित्तज्वरान्॥

अर्थ—मुनक्कादाख; पित्तपापडा, आमलतासका गूदा, कुटकी, नागरमोथा,

और हरडकी, छाल इनका काढा पीवेतो पित्तज्वर जनित जो मूर्च्छा, शोष, दाह, प्यास, प्रलाप, और भ्रांति इनका नाश होवे, जवासा, अतीस, चीरायता, कुटकी, अडूसेके पत्ते और पित्तपापडा इनकाकाढा करके उसमे मिश्री डालके पीवे तो तृषा, दाह, रक्तपित्त, और ज्वर इनका नाशहोवे ॥

छिन्नादिकाढा

अहोकिमर्थंबहुभिःकषायैःपाराशराद्यैर्मुनिभिःप्रदिष्टैः ॥ छिन्नाशिवापर्पटतोयपानात्पित्तज्वरःकिंमसरीसरीति ॥

अर्थ--पाराशरादि ऋषियोंने इतने काढे काहेके वास्ते कहे ? गिलोय, हरड, और पित्तपापडा, इनका काढा सेवन करनेसैं क्या पित्त ज्वर नहीं जाताहै?॥

द्राक्षादिकाढा

द्राक्षाचंदनपद्मानिमुस्तातिक्तामृतापिच ॥ धात्रीवालमुसीरंचलोध्रेन्द्रयवपर्पटाः ॥ परूषकंप्रियंगुश्चयवासोवासकस्तथा ॥ मधुकंकुलकंचापिकिरातोधान्यकस्तथा॥एषांक्काथोनिहंत्येवज्वरंपित्तसमुत्थितं॥तृष्णांदाहप्रलापंचरक्तपितंभ्रमंक्लमं ॥ मूर्छांछर्दितथाशूलंमुखशोषमरोचकं ॥ कासंश्वासंचहृल्लासंनाशयेन्नात्रसंशयः ॥

अर्थ—दाख, लालचंदन, कमल गट्टेकी मिंगी, नागरमोथा, कुटकी, गिलोय, आमले, नेत्रवाला, खस, लोध, इन्द्रजो, पित्तपापडा, फालसे, फूलप्रियंगु-धमासों, अडूसा, मुलहटी, पटोलपत्र, चिरायता, और धनियां इनका काढा लेनेसै पित्तज्वर, तृषा, दाह, प्रलाप, रक्तपित्त, भ्रम, ग्लानि, मूर्च्छा, वमन, शूल, मुखशोष, अरुचि खांसी प्यास मुखसैं पानी गिरना, इन सबका नाश निस्संदेहकरे॥

ससितादिकाढा

ससितोनिशिपर्युषितःप्रातर्धान्याकतंडुलक्काथः । पीतःशमयत्यचिरादंतर्दाहंज्वरंपैत्तं ॥

अर्थ—धनिया, और चावलको रात्रिमें कोरे मटकनेमें भिगोदे और प्रातःकाल काथकर उसमें खांड मिलाय पीवेतो अंतर्दाह तथा पित्तज्वरको दूरकरे ॥

मुद्गादिकाढा

मुद्गानामंजलिंचूर्णंयष्टीमधुकसाधितं ।
पाक्यंशीतकषायंवापिबेत्पित्तज्वरापहं ॥

अर्थ—मुलहटी, और मूंगका आठ तोले चूर्णका काढा कर और शीतल पीवेतो पित्तज्वर नाशहो ॥

ह्रीबेरादिकाढा

ह्रीबेरंमुस्तकंधान्यंचंदनंयष्टिकामृता ॥ वृषोशीरयुतः
क्वाथःशर्करामधुसंयुतः॥रक्तपित्तंजयत्युग्रंतृष्णादाह-
ज्वरापहः ॥

अर्थ—नेत्रवाला, नागरमोथा, धनिया, लालचंदन, मुलहटी, गिलोय, अडूसा और खस इनके काढेमें खांड और सहत मिलाय पीनेसैं रक्तपित्त, तृष्णादाह, और पित्तज्वरको दूरकरे ॥

तिक्तादिकाढा

तिक्तायासकभूनिंबश्यामापर्पटवासकैः ।
शृतंजलंसितायुक्तंरक्तपित्तज्वरंजयेत् ॥

अर्थ—कुटकी, धमासो, चिरायतो, पीपल, गिलोय, पित्तपापडा, और अडूसा इनका काढा मिश्री मिलाय पीनेसैं रक्तपित्त, और ज्वरको जीते ॥

पथ्यादिकाढा

पथ्यांतैलघृतक्षौद्रैर्लिहेद्दाहज्वरापहं ।
कासासृक्पित्तवीसर्पश्वासंहंतिवमिमपि ॥

अर्थ—हरडका चूर्ण, तेल, अथवा घी, अथवा, सहतके साथ चाटेतो दाह, ज्वर, खांसी, रक्तपित्त, विसर्प, श्वास और वमन इनका नाशकरे ॥

आम्रादिफांट

आम्रजंबूकिसलयैर्वटशृंगप्ररोहकैः ॥ उशीरेणकृतःफां-
टःसक्षौद्रोज्वरनाशनः ॥ पिपासाछर्द्यतीसारान्मूर्छां-
जयतिदुस्तरां ॥

अर्थ—आम तथा जामुन इनके कोमल पत्ते तथा वडके कोमल कली त-

था तत्काल निकले हुए पत्ते और नेत्रवाला इन औषधोंको पूर्वरीतिसैं फांटकर पीनेसैं ज्वर, प्यास, वमन, अतिसार, तथा कष्टसाध्य मूर्छा ए दूरहो ॥

गुडूच्यादिकाढा

गुडूचीपद्मलोध्राणांसारिवोत्पलयोस्तथा ।
शर्करामधुरःक्वाथःपीतःपित्तज्वरापहः ॥

अर्थ—गिलोय, पद्माख, लोध, सरवन, और कमलगट्टा इनका काढा शीतल कर मिश्री मिलाय पीनेसैं पित्तज्वरको दूर करे ॥

पटोलादिकाढा

पटोलयवनिक्वाथोमधुनामधुरीकृतः ।
तीव्रपित्तज्वरोन्मर्दीपानात्तृड्दाहनाशनः ॥

अर्थ—पटोलपत्र, और जौं इनका काढाकर उसमें सहत मिलाय शीतलकर पीवेतो तीव्रपित्त ज्वर, तृषा, दाह, इनका नाश करे ॥

केसरमातुलिंगादियोग

जिव्हाताळुगलक्लोमशोषमूर्ध्निचदापयेत् ।
केसरंमातुलिंगस्यमधुसैंधवसंयुतं ॥

अर्थ–जीभ, ताळू, गला, क्लोम (तृषा लगनेका स्थान) और मस्तक इनमें शोष होनेसैं–विजोरेकी केशर, सहत, और सैंधानिमक, मिलायकर मालिसकरे ॥

दुसराप्रकार

केसरंमातुलिंगस्यमधुसैंधवसंयुतं । हरीतकीप्रियंगु-
श्चपिप्पलीलोध्रमेवच ॥ दार्वीहरिद्रातेजोव्हासक्षौद्रं-
मुखधावनं । एतेनकटुभावश्चमुखरोगश्चशाम्यति ॥
वक्त्रंविशदतामेतिभक्तछंदश्चजायते । मूद्गयूषोदनोदेयः
सितयापैत्तिकेज्वरे ॥

अर्थ—विजोरेकी केशर, सहत, और सैंधानिमक, इनका अथवा हरड, प्रियंगु, पीपल, लोध, दारहलदी, हलदी, तेजबल, इनका चूर्ण सहतसैं मिलाय जलमें डाल कुरलाकरे तो मुखकी कटुता, तथा मुख रोग, शांतहोय, और मुख स्वच्छहो रुचि होयहै, उसरोगीको मूंगका यूष और भात तथा बूरामिलाय पथ्य देवे ॥

रसपर्पटी

शुद्धंसूतंद्विधागंधंमर्द्यंभृंगीरसैःक्षणं ॥ पाचयेल्लोहपात्रस्थंचाल्यंतुचुटकेनच ॥ लोहभस्माथवाताम्रंपादांशेनविनिक्षिपेत् ॥ पाच्यंप्रचालयेन्नैवयामार्धंमृदुवन्हिना ॥ तत्क्षिपेत्कदलीपत्रेगोमयस्योपरिस्थिते ॥ तत्पत्रंधारयेदूर्ध्वंतदूर्ध्वंगोमयंक्षिपेत् ॥ ततःसंचूर्णयेत्खल्वेनिर्गुंड्याभावयेद्दिनं ॥ जयंतीत्रिफलाकन्यावासाभार्ङ्गीकटुत्रयैः ॥ भृंग्याग्निमुनिमुंडीभिर्भावयेत्प्रत्यहंपृथक् ॥ आर्द्रकस्यद्रवैःपश्चाद्भावयेद्दिनसप्तकं ॥ अंगारैःस्वेदयेत्पश्चात्पर्पट्याख्योमहारसः ॥ चतुर्गुंजामितोदेयःसम्यक्श्लेष्माधिकेज्वरे ॥ वासाशुंठीभयाक्वाथमनुपानंप्रकल्पयेत् ॥ चव्यकस्वरसैर्वाथपेयंश्लेष्मज्वरापहं ॥

अर्थ— शुद्धपारा १ भाग, शुद्ध गंधक १ भाग इनकी कजली करके भाँगरेके रसकी भावनादे फिर उसको मंदाग्निवाले चूल्हेपर लोहके पात्रमें धीरे २ हिलाता हुआ पचन करावे, पीछे ताम्र, तथा लोह की भस्म चतुर्थांस डाल फिर चार घडी विना हिलाए मंदाग्निपर पचन करावे जव पतला होकर सव एक रस हो जाय तव केलेके पत्तेपर उलट देवे और दूसरा पत्ता ढककर दावदेवे, जव शीतल होजावे तव खरलमें घोट सह्मालूके रसकी ३ पुटदेवे। फिर जयंती, त्रिफला, घीगुवार, अडूसा, भारंगी, त्रिकुटा, भाँगरा, चीता, अगस्तिया, और मुंडी इनके रसकी प्रहर २ तक भावनादेवे, फिर अदरककेरसकी सातदिन भावनादेवे, और अंगारोंके ऊपर भूने यह पर्पटी रस ४ रत्ती अडूसा, सोंठ, तथाहरड, इनके काढेसैं अथवा चव्यके रससैं देवे तो कफज्वरको हरण करे, ॥

उत्तानसुप्तयोग

उत्तानसुप्तस्यगभीरताम्रकांस्यादिपात्रेनिहितेचनाभौ । शीतांबुधाराबहुलापतंतीनिहंतिदाहंज्वरितज्वरंच ॥

अर्थ—ज्वरवाले मनुष्यको चित्त सुलाय उसकी नाभी (ढूडी) परतामेंका अ-

थवा कांसेका औंधापात्र धर उसमें शीतल जलकी वडी धार डाले तो दाह ज्वरको तत्काल नाश करे ॥

औदुंबरादियोग

औदुंबरस्यनिर्यासःसितयादाहनाशनः ।
छिन्नासारःसितायुक्तःपित्तज्वरनिषूदनः ॥

अर्थ—गूलरका गोद खांड मिलाय कर लेवे तो दाहको नाश करे, और गिलोयका सत्व खांड मिलाय कर ले यह पित्त ज्वरनाशक है ॥

घर्म

अथगोतक्रसंसिक्तशीतलीकृतवाससा ।
कांजिकार्द्रपटेनावगुंठनंदाहनाशनं ॥

अर्थ—गौकी छाछमें किंवा कांजीमें वस्त्र भिगो उस वस्त्रको रोगीको उढावे तो दाह नष्ट हो ॥

द्राक्षादिकल्क

द्राक्षामलककल्केनकवलोत्रहितोमतः ।
पक्कदाडिमजैर्वाथधानाकल्केनचक्कचित् ॥

अर्थ—दाख और आमले इनके कल्कका अथवा पके हुए अनारका अथवा धनियेका हिम करके मुखमें कवल देवे तो हित है. ॥

मुद्गयूष

दाहवम्यर्दितंक्षामंनिरन्नंतृष्णयान्वितं ॥ शर्करामधुसंयुक्तंपाययेल्लाजतर्पणं ॥ मुद्गयूषौदनोदेयःसितयापैत्तिकेज्वरे ॥

अर्थ—यदि दाह, और वमन इनसें पीडित, कृष कुछ खाय नहीं प्यास अधिक लगे उसको चावलोका मंड–मिश्री और सहत डालके देवे और मूंगका यूष भात और खांड ये पदार्थ भक्षणार्थ देवे तो पित्तज्वर शांति हो ॥

अमृतादिहिम

अमृतायाहिमःप्रातःससितःपैत्तिकंज्वरं ।
वासायाश्चतथाकासरक्तपित्तज्वरान्जयेत् ॥

अर्थ—गिलोयको रात्रिमें कूट पानीमें भिगोदेवे प्रातःकाल उस पानीको छान मिश्री मिलायके पीवे तो पित्त ज्वर नाशक है, इसी प्रकार अडूसेका हिम खांसी, रक्त, पित्तज्वर इनका नाशक है ॥

कफज्वरकेलक्षण

स्तैमित्यंस्तिमितोवेगआलस्यंमधुरास्यता ॥ शुक्लमूत्रपुरीषत्वक्स्तंभस्तृप्तिरथापिवा ॥ नात्युष्णगात्रताछर्दिरंगसादोविपाकता ॥ गौरवंशीतमुत्क्लेदोरोमहर्षोतिनिद्रता ॥ प्रतिश्यायोरुचिःकासःकफजेक्ष्णोश्वशुक्लता ॥

अर्थ—स्तैमित्य (गीले कपडेसैं देहको आच्छादित करदेनेसैं जैसा हो ऐसा मालूमहो)ज्वरका मंदवेग, आलस्य, मुख मीठा, मलमूत्र सफेद, देहका जकडना तृप्तसरीखा, अन्नमें अरुचि, पेट भरासारहे देहबहुत गरम नहोवे, अंगरहजावे,देहभारी शीतल, शीतलगे ओकारी आवे * अन्य आचार्य कहतेसैं कि कफका थूकना, रोमांचका होना, अतिनिद्रा, रसके बहनेवाली नाडीके मार्गोंका रुकना, दस्तका थोडा उतरना पसीना, मुखमें नोनकासा सवाद देहका थोडा गरमहोना रद्दका होना लारका गिरना मुखपाक तथा मुखनाकमैं कफका पडना, अरुचि खांसी नेत्र श्वेतहों ये लक्षण कफज्वरमें होते हैं " स्तंभस्तृप्तिरथापि च " इस पदमें जो चकार है उस्से देहमें पीडा, शीतका लगना, लारका गिरना, वमन, तंत्रिकरोग, हृदयलिहसासा, गरमी प्यारी लगे, मन्दाग्नि इत्यादि जानने॥

कलिंगादिचूर्ण

कलिंगरोहिणीनिशाकटुत्रिकेभकेसरं ॥
विचूर्णितंकफज्वरेनिहंतिकोष्णवारिणा ॥

अर्थ—इन्द्रजो, कुटकी, हलदी, नागकेशर, और त्रिकटु इनका चूर्ण गरम जलसैं लेवे तो कफज्वर दूरहो ॥

शृंग्यादिअवलेह

शृंगीकणाकट्फलपौष्करणांक्षौद्रान्वितानांविहितोव

लेहः ॥ श्वासेनकासेनयुतंबलासंज्वरंजयेदत्रनकापिशंका ॥

अर्थ— काकडासिंगी, पीपल, कायफर, पोंहकरमूल, इनका अवलेह सहत मिलायकर देवे तो श्वास, खांसीयुक्तकफ, और ज्वरको दूर करे। इसमें कुछ संदेह नही है ॥

सिंधुकवल

सिंधुत्रिकटुराजीभिरार्द्रकेणकफेहितः ॥ कवलइतिशेषः ॥

अर्थ—सैंधानिमक, त्रिकुटा, राई, और अदरक इनको एकत्र पीसउसकी कवल करके मुखमें धारण करे यह कवल कफपर प्रसस्त है ॥

मुद्गयूष

मुद्गयूषौदनोदेयोज्वरेकफसमुत्थिते ॥

अर्थ– कफज्वरमें मूंगका यूष और भात पथ्यदेना चाहिये ॥

त्रिफलादिचूर्ण

लिहन्ज्वरार्तस्त्रिफलांपिप्पलींचसमाक्षिकां ॥ कासे श्वासेचमधुनासर्पिषाचसुखीभवेत् ॥

अर्थ– कफज्वरवाले रोगीको त्रिफला, तथा पीपलका चूर्ण सहतसैं देवे और खांसी, तथा श्वास पर वही चूर्ण सहत और घृतके साथ देवे ॥

अजाजियोग

अजाजिशर्करायुक्तोदाडिमस्वरसेनतु ॥ रुचिष्योम धुनायुक्तःकर्तव्यःकवलग्रहः ॥ मुद्गयूषौदनश्चापिदेयःकफसमुत्थिते ॥

अर्थ– जीरा, और खांड अथवा अनारकारस तथा सहत ये रुचिकारी है, इनको मुखमें धारण करे और मूंग भात पथ्य देवे ॥

चंदनादिकाढा

चंदनंचसुगंधंचबालकोशीरपर्पटाः ॥ मुस्ताशुंठिसमायुक्तापित्तज्वरनिषूदनाः ॥

अर्थ—लालचंदन, रोहिषतृण, नेत्रवाला, पित्तपापडा, नागरमोथा, और सोंठ, इनका काढा पित्तज्वर नाशकहै ॥

शतधौतघृत

शतधौतघृतस्यलेपतोदवथुर्नाशमुपैतितत्क्षणात् ॥ अथवापिचुमंदपत्रजस्वरसप्रोत्थितफेनलेपतः ॥

अर्थ– सौवार धुलेहुए घीको शरीरमें लगानेसैं अथवा नीमका रस फेनयुक्त करके अंगोंमें लेप करनेसैं दाह शांति होता है ॥

पलाशादिलेप

पलाशस्यबदर्यावानिंबस्यमृदुपल्लवैः ।
अम्लपिष्टैःप्रलेपोयंहन्याद्दाहयुतंज्वरं ॥

अर्थ—ढाककी–बेरकी, किंवा नींबके कोमलपत्ते छाछमें अथवा नींबूके रसमें पीस लेप करे तो दाह युक्त ज्वर दूर हो ॥

नीरदादिपाचन

नीरदविश्वदुरालभवासासाधितमंबुहिपाचनमेवं ॥
पेयमिदंज्वरएवकफाख्येश्वासकासघनशूलहरंच ॥

अर्थ—नागरमोथा, सोंठ, धमासो, अडूसा, इनका काढा पाचक होकर ज्वर नाशक, श्वास, खाँसी, शूल, कफज्वर इनका नाश करे ॥

पिप्पल्यादिपाचन

पिप्पलीपिप्पलीमूलंमरिचंगजपिप्पली ॥ नागरंचित्रकंचव्यंरेणुकाचाजमोदिका ॥ सर्षपोहिंगुभार्गीचपाठेंद्रयवजीरका ॥ महानिंबश्चमूर्वाचविषातिक्ताविडंगकाः पिप्पल्यादिगणोह्येष कफवातातिनाशनः ॥ गुल्मशूलज्वरहरोदीपनश्चामपाचनः ॥

अर्थ—पीपर, पीपरामूल, कालीमिरच, गजपीपर, सोंठ, चीता, चव्य, रेणुकाबीज, अजमोद, सरसो, हींग, भारंगी, पाढ, इन्द्रजो, जीरा, वकायन, मूर्वा, अतीस, कुटकी, वायविडंग, यह पिप्पलादि गण कफ और वादीको दूर करे गोला शूल, ज्वरको हरण करे तथा दीपन और आमको पचावे ॥

क्षौद्रादिकाढा

क्षौद्रोपकुल्यासंयोगः श्वासकासज्वरापहः ।
प्लीहानंहंतिहिक्कांचबालानामपिशस्यते ॥

अर्थ—पीपर और सहतका योग, खांसी, श्वास, ज्वर, प्लीह, हिचकी इनका नाश करनेवाला है और बालकोंको उत्तम है ॥

पिप्पल्यादिचूर्ण

पिप्पलींत्रिफलांचापिसमभागांज्वरीलिहन् ।
मधुनासर्पिषावापिकासीश्वासीसुखीभवेत् ॥

अर्थ—पीपर, त्रिफला, ए समान भागले वा सहत घृतके साथ चाटे तो खांसी, श्वास और ज्वर दूर हो, ॥

कट्फलादिलेह

कट्फलंपौष्करंशृंगीकृष्णाचमधुनासह ।
कासश्वासज्वरहरोलेहोयंकफनाशनः ॥

अर्थ—कायफल, पोहकरमूल, काकडा सिंगी, और पीपर इनका चूर्ण सहत के साथ खाय तो श्वास, खांसी, ज्वर और कफको नाश करे, ॥

कट्फलादिचूर्ण

कट्फलंपौष्करंशृंगीयवानीकारवीतथा ॥ कटुत्रयंच-
सर्वाणिसमभागानिचूर्णयेत् ॥ आर्द्रकस्वरसैर्लिह्या-
न्मधुनावाकफज्वरी ॥ कासश्वासारुचिछर्दीश्लेष्मा
निलनिवृत्तये ॥

अर्थ– कायफल, पौहकरमूल, काकडासिंगी, अजमायन, अजमोद, त्रिकुटा, इनका चूर्ण अदरखके रससै अथवा सहतके साथ देवे तो खांसी, श्वास, अरुचि, वमन, सर्दी, वायु, कफज्वर इनका नाश करे, ॥

निर्गुंड्यादिकाढा

सिंदुवारदलक्वाथंकणाढ्यंकफजेज्वरे ॥
जंघयोश्चवलेक्षीणेकर्णेचपिहितेपिबेत् ॥

अर्थ—कफज्वर तथा जाँघोंकी निर्बलता और कानोंका बंद हो जाना इनपर सम्हालूके पत्तोंका काढा पीपलका चूर्ण डालके पीवे ॥

यवान्यादिकाढा

यवानीपिप्पलीवासातथाखस्खसवल्कलं ॥
एषक्वाथंपिबेत्कासेश्वासेचकफजेज्वरे ॥

अर्थ—अजमायन, पीपल, अडूसा, और खसखसके डोडे इनका काढा पीनेसें खांसी, श्वास, तथा कफज्वर इनका नाश होय ॥

वासादिकाढा

वासाक्षुद्रामृताक्वाथःक्षौद्रेणज्वरकासहृत् ॥

अर्थ—अडूसा, कटेरी, गिलोय, इनका काढा सहतके साथ पीनेसे कफज्वर और खांसीको दूर करे ॥

निंबादिकाढा

निंबविश्वामृताभीरुयासभूनिंबपौष्करं ॥
पिप्पल्योबृहतीचेतिक्वाथोहंतिकफज्वरे ॥

अर्थ—नीमकी छाल, सोंठ, गिलोय, सतवार, जवासो, चिरायतो, पोहकरमूल, पीपर, और कटेरीकी जड इनका काढा कफज्वरको नाश करे ॥

मरीच्यादिकाढा

मरीचंपिप्पलीमूलंनागरंकारवीकणा ॥ चित्रकंकट्-
फलंकुष्टंससुगंधिवचाशिवा ॥ कंटकारिजटाशृंगीयवा
नीपिचुमंदकः । एषांक्वाथोहरत्येवज्वरंसोपद्रवंकफात् ॥

अर्थ- कालीमिरच, पीपलामूल, सोठ, सोफ, पीपल, चीता, कायफल, कूठ, निर्गुंडी, वच, हरड, कटेरीकी जड, जटामांसी, काकडासिंगी, अजमायन, और नीमकी छाल, इनका काढा उपद्रव सहित कफज्वरका नाश करे ॥

निदिग्धिकादिकाढा

निदग्धिकाच्छिन्नरुहापकुल्याविश्वौषधैःसाधितमंबुपीतं
हंतिज्वरंश्वासबलासकासशूलाग्निमांद्यंजठरानिलंच ॥

अर्थ- कटेरीकी जड, गिलोय, पीपल और सोंठ इनका काढा ज्वर, श्वास, कफ, खांसी, शूल, मंदाग्नि, इनको दूरकरे ॥

भार्ग्यादिकाढा

भार्गीगुडूचीघनदारुसिंही सुंठीकणापुष्करजःकषायः
ज्वरंनिहंतिश्वसनंक्षिणोतिक्षुधांकरोतिप्ररुचिंतनोति ।

अर्थ—भारंगी, गिलोय नागरमोथा, देवदारु, कटेरी, सोंठ, पीपल, और पुहकरमूल इनका काढा ज्वर और श्वासको नष्टकरे एवं क्षुधाकरे और अन्नमें रुचि प्रगटकरे है ॥

मातुलिंगादिकाढा

मातुलिंगशिफाविश्ववयस्थाग्रंथिकोद्भवं ।
कफज्वरेषुसक्षारंपाचनंवाकणादिकं ॥

अर्थ—विजोरेकी जड, सोंठ, गिलोय, पीपरामूल, इनके काढेमें जवाखार अथवा पीपरडालके पीवे तो कफज्वर दूर हो तथा पाचन हो ॥

त्रिफलादिकाढा

त्रिफलात्रिवृतामुस्तंकटुकंसकलिंगकं ॥ पटोलारग्व-
धंचैवरोहिणीचित्रकंसमं ॥ क्वाथःक्षौद्रयुतःश्लेष्मज्व-
रकासगतामये ॥

अर्थ—त्रिफला, निसोथ, नागरमोथा, त्रिकुटा, इन्द्रजो, पटोलपत्र, अमलतास, कुटकी, और चीता ये समभागले काढाकर सहत डालके पीवे तो कफज्वर, खांसी, तथा कंठ रोग दूर होवे ॥

पिप्पल्यादिगण

पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्यचित्रकनागरं ॥ मरीचैला-
जमोदेंद्रपाठारेणुकजीरकं ॥ भार्गीमहानिंबफलंहिंगु-
रोहिणिसर्षपं ॥ विडंगातिविषामूर्वागणोयंकफनाशनः ॥

अर्थ—पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, कालीमिरच, छोटीइलायची, अजमोद, इन्द्रजो, पाढ, रेणुका, जीरा, भारंगी, बकायनकेफल, हींग, कुटकी, सरसो, वायविडंग, अतीस, और मूर्वा यह औषधोंका गण कफनाशक है अतएव कफज्वरपर इसका काढा देवे ॥

पंचकोलं

पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्याचित्रकनागरं ।
पंचकोलमिदंप्रोक्तंशोधनंकफनाशनं ॥

अर्थ—पीपर, पीपरामूल, चव्य, चित्रक, और सोंठ, यह पंचकोल शोधन तथा कफनाशक है ॥

पटोलादिकाढा

पटोलत्रिफलातिक्तासठीवासामृताभवः ॥
क्वाथोमधुयुतःपीतोहन्यात्कफकृतंज्वरं ॥

अर्थ—पटोलपत्र, त्रिफला, कुटकी, कचूर, अडूसो, और गिलोय इनका क्वाथ सहतके साथ पीवे तो कफज्वर दूर हो ॥

बीजपूरादिकाढा

बीजपूरशिवापथ्यानागरग्रंथिकैःशृतं ॥
सक्षारंपाचनंश्लेष्मज्वरेद्वादशवासरे ॥

अर्थ—विजोरेकीजड, छोटीहरड, सोंठ, और पीपरामूल, इन औषधोंका काढा कर उसमें जवाखार मिलाय वारवेदिन कफज्वर पर पाचन देवे तो कफज्वर दूर होय ॥

भूनिंबादिकाढा

भूनिंबनिंबापिप्पल्यःसठीशुंठीशतावरी ॥
गुडुचीवृहतीचेतिक्वाथोहन्यात्कफज्वरं ॥

अर्थ—चिरायतो, नीमकीछाल, पीपल, कचूर, सोंठ, सतावर, गिलोय, और कटेरी इनका काढा कफज्वरको दूर करे ॥

कटुक्यादिकाढा

कटुकीचित्रकंनिंबंहरिद्रातिविषंवचा ॥ सप्तपर्ण्यमृ-
तानिंबस्नुह्यर्कैःसाधितंजलं ॥ पेयंमाक्षिकसंयुक्तंबलास
ज्वरशांतये ॥

अर्थ—कुटकी, चीतेछाल, नीमकीछाल, हलदी, अतीस, वच, सतोनाकी-

छाल, गिलोय, चिरायता, थूहर, और आक इनके काढेमें सहत मिलाकर पीवे तो कफज्वर दूर हो ॥

त्रिकंटकादिकाढा

त्रिकंटकबलाव्याघ्रीगुडनागरसाधितं ॥
वर्चोमूत्रविबंधघ्नंकफज्वरहरंपयः ॥

अर्थ—गोखरू, गगेरन, कटेरी, गुड, और सोंठ, इनका काढा मलमूत्रके रुकनेको और कफज्वरको दूर करे, परंतु इसकाढेमें औषधोंसैं अठगुना दूध और दूधसैं चौगुना पानी डालके ओंटावे ॥

कुष्ठादिकाढा

कुष्ठमिंद्रयवंमूर्वापटोलेनापिसाधितं
पिबेन्मरीचसंयुक्तसक्षौद्रकफजेज्वरे ॥

अर्थ—कूठ, इन्द्रजो, मूर्वा, पटोलपत्र इनका काढा सहत और कालीमिरच डालके पीवे तो कफज्वर दूर हो ॥

त्रिफलादिकाढा

त्रिफलापटोलवासाछिन्नरुहारोहिणीवचाशुंठी ॥
मधुनाश्लेष्मसमुत्थदशमूलीवासकस्यचक्काथः ॥

अर्थ—हरड, बहेडा, आमला, पटोलपत्र, अडूसा, गिलोय, कुटकी, वच और सोंठ, इनका अथवा दशमूल और अडूसेका काढा सहतके साथ कफज्वर-पर देवे ॥

सप्तच्छदादिकाढा

सप्तच्छदगुडूचीचनिंबस्फूर्जकमेवच ॥
क्काथंकृत्वापिबेत्तोयंसक्षौद्रंकफजेज्वरे ॥

अर्थ—सतोना, गिलोय, नींबकीछाल, और स्फूर्जक इनका काढा सहतके साथ पीवेतो कफज्वर दूर होय ॥

आमलक्यादिकाढा

आमलक्याभयाकृष्णाचित्रकश्चेत्ययंगणः ।
सर्वज्वरकफातंकभेदीदीपनपाचनः ॥

अर्थ—आमले, हरडकी छाल, पीपल, और चित्रक, यह औषधोंका गण सर्व ज्वर और कफके रोगोंको दीपन और पाचन कर्त्ता है॥

तिक्तादिकाढा

तिक्तानिंबविषाव्योषशक्राव्हाभिःशृतंजलं।
पिबेत्कफज्वरहंतिहिक्काकाससमन्वितं॥

अर्थ—कुटकी, नीमकी छाल, अतीस, त्रिकुटा, इन्द्रजो और नेत्रवाला इनका काढा हिचकी और खांसी युक्त कफज्वरको दूर करे॥

मुस्तादिकाढा

मुस्तंमधुकबीजानित्रिफलाकटुरोहिणी॥
परूषकाणिचक्काथःकफज्वरविनाशनः॥

अर्थ—नागरमोथा, मौआकेबीज, त्रिफला, कुटकी, और फालसे इनका काढा कफज्वरको दूर करे॥

चपलादिकाढा

चपलाचपलापदनागरिकाचवकानलसंजनितंसलिलं॥
कसनेश्वसनेहृदयोल्लसनेकफजूर्तिगदेप्रपिबेच्चमुदे॥

अर्थ—पीपल, गजपीपल, सोंठ, चव्य चीतेकी छाल, इनका काढा श्वास, खांसी हृल्लास, इत्यादि रोगयुक्त कफज्वर दूर हो॥

पिचुमंदादिकाढा

पिचुमंदमहौषधान्वितावृहतीपौष्करतिक्तकंसठी।
वृषकट्फलकंकणावरीकथितंवारिकफज्वरंजयेत्॥

अर्थ—नीमकीछाल, सोंठ, कटेरीकीजड, पोहकरमूल, चिरायता, कचूर, अडूसा, कायफर, पीपल, और सतावर, इनका काढा कफज्वरको दूर करे॥

वासादिकाढा

वासाविशालादशमूलगौरीमहौषधंपुष्करभार्गियुक्ता।
एषांकषायोविनिहंतिकासंकफज्वरंशूलनिवर्त्तनंच॥

अर्थ—अडूसा, इन्द्रायनकागूदा, दशमूल, तुलसी, सोंठ, पुहकरमूल, और भारंगी इनका काढा कास, और कफज्वर, तथा शूल, इनका नाश करे॥

कंटकार्यादिकाढा ॥

कंटकार्यमृतादारुवृषविश्वासमाश्रितः ॥
क्वाथःकणारजोयुक्तःसद्यःश्लेष्मज्वरापहः ॥

अर्थ—कटेरी, गिलोय, देवदारु, अडूसा, सोंठ इनका काढा पीपलका चूर्ण डालकर पीवे तो तत्काल कफ ज्वर दूर हो ॥

कणादिकाढा

कणाविश्वामृतादारुकिरातैरंडमूलकः ।
निंबएषांकृतःक्वाथःपित्तश्लेष्मज्वरापहः ॥

अर्थ—पीपल, सोंठ, गिलोय, देवदारु, चिरायता, अंडकी जड और नीमकी छाल, इनका काढा पित्त कफज्वरको दूरकरे ॥

मुस्तादिकाढा

मुस्तादुरालभाशुंठीक्वाथएषांसमांशतः ।
हंतिश्लेष्मज्वरंतीव्रनिपीतःपथ्यभोजने ॥

अर्थ—नागरमोथा, धमासा, बराबर ले काढाकरके पीवे और पथ्यसैं रहे तो तीव्र कफज्वर दूर हो ॥

वातपित्तज्वरलक्षण

तृष्णामूर्छाभ्रमोदाहःस्वप्ननाशःशिरोरुजः॥ कंठास्य-
शोषोवमथूरोमहर्षोरुचिस्तमः ॥ पर्वभेदश्चजृंभाच-
वातपित्तज्वराकृति ॥

अर्थ—प्यास, मूर्च्छा, भ्रम, दाह, निद्रानाश, मस्तकपीडा, कंठ, मुखका सूखना, वमन, रोमांच, अरुचि, अंधकारदर्शन, संधियोंमें पीडा और जंभाई ये वातपित्तज्वरके लक्षण है ॥

नीलोत्पलादिहिम

नीलोत्पलंबलाद्राक्षामधुकंमधुकंतथा॥ उशीरंपद्मकं-
चैवकाश्मरीचपरूषकं ॥ एतच्छीतकषायश्चवात-
पित्तज्वरंहरेत् ॥ विप्रलापभ्रमच्छर्दीमोहतृष्णानिवारणः ॥

अर्थ—नीलकमल, गगेरन, दाख, मुलहटी, महुआ, खस, पद्माख, कंभारी,

और फालसे इन औषधोंका पूर्वरीतिसैं हिमकरके पीवेतो वातपित्तज्वर, प्रला-प, भ्रम, वमन, मोह, और तृष्णा इनको दूर करे ॥

निदिग्धिकादिकाढा

निदिग्धिकामृतारास्नात्रायमाणामृतायुतः ॥
मसूरविदलक्काथोवातपित्तज्वरंजयेत्

अर्थ—कटेरी, गिलोय, रास्ना, त्रायमाण, हरड, और मसूरकीदाल, इनका काढा वात पित्तज्वरको दूर करे ॥

विश्वादिकाढा

विश्वामृताब्दभूनिंबपंचमूलसमन्वितः ॥
कृतःकषायोहंत्याशुवातपित्तभवंज्वरं ॥

अर्थ—सोंठ, गिलोय, नागरमोथा, चिरायता, पंचमूल इनकाकाढा तत्काल वातपित्तज्वरको दूर करे ॥

नीलोत्पलादिकाढा

निलोत्पलमुशीराणिपद्मकामलकानिच ॥ काश्मीर-मधुकद्राक्षामधूकानिपरूषकान् ॥ पिबेच्छीतंक-षायंचवातपित्तज्वरापहं ॥ संप्रलापंचसंमोहंशमयेत्पै-त्तिकंज्वरं ॥

अर्थ—नीलकमल, खस, पद्माख, आमले, कंभारी, मुलहटी, दाख, महुआके, फूल, और फालसें इनके काढेको शीतलकर पीवे तो वातपित्तज्वर, प्रलाप, मोह, और पित्तज्वर इनको शमन करे ॥

आरग्वधादिकाढा

आरग्वधफलंमुस्तंयष्टीमधुकमेवच ॥ उशीरमभयाचै-वहरिद्रादारुसाह्वया ॥ पटोलंपिचुमंदंचअमृताकटु-रोहिणी ॥ एषांपीतःकषायःस्याद्वातपित्तभवेज्वरे ॥

अर्थ—अमलतासकागूदा, नागरमोथा, मुलहटी, महुआके फूल, खस, हरड़, हलदी, देवदारु, पटोलपत्र, नीमकीछाल, गिलोय, और कुटकी, इनका काढा वात्तपित्तज्वरको शांतकरे ॥

द्राक्षादिकाढा

द्राक्षाकिरातामृतवासकासठीक्काथंपिबेत्पित्तमरुज्वरंहरेत् ॥

अर्थ—दाख, चिरायता, गिलोय, अडूसा, और कचूर इनका पीवे तो वातपित्तज्वर दूर हो ॥

पंचमूलादिकाढा

पंचमूल्यमृतामुस्ताविश्वाभूनिंबसाधितः ।
कषायःशमयत्याशुवायुमायुभवंज्वरं ॥

अर्थ—पंचमूल, गिलोय, नागरमोथा, सोंठ, और चिरायता, इनका काढा वातपित्तज्वरको दूर करे ॥

मुद्गादियूष

मुद्गामलकयूषस्तुवातपित्तज्वरेहितः ॥ महादाहेप्रदातव्योयूषश्चणकसंभवः॥ दाडिमामलकमुद्गसंभवोयूषउक्तइहवातपैत्तिके ॥

अर्थ—मूंग और आमलेका यूष वातपित्तज्वरमें हित है। अत्यंत दाहमें चनेका यूष देना चाहिये । और अनारदाने, आमले तथा मूंगकायूष वातपित्तमें देना॥

मुद्गादियोग

कफपितहरामुद्गाकारवेल्लादयस्तथा॥ प्रायेणनचतेदेयावातपित्तोत्तरेज्वरे॥ दत्तास्तुज्वरविष्टंभशूलोदावर्त्तकारिणः ॥

अर्थ—वातापित्तज्वर पर मूंग तथा करेले इत्यादि न देवे, ये कफपित्त हारक है इनके देनेसैं ज्वर-मलावष्टंभ-शूल-तथा उदावर्त होता है ॥

मधुकादिकषाय

मधुकंसारिवाद्राक्षामधुकंचंदनोत्पलं ॥ काश्मरीफलकंलोध्रंत्रिफलापद्मकेसरं ॥ परूषकंमृणालंचाक्षिपेत्संचूर्ण्यवारिणा॥ निशोषितांसितक्षौद्रलाजयुक्तंतुतत्पिबेत् ॥ वातपित्तज्वरंदाहंतृष्णामूर्च्छारुचिभ्रमान् ॥ शमयेद्रक्तपित्तंचजीमूतमिवमारुतः ॥

अर्थ—मुलहटी, सारिवा, दाख, महुआके फूल, लालचंदन, कमलगट्टा, कंभारी, लोध, त्रिफला, कूठ, नागकेशर, फालसे, और भसीडेकि जिनको कमलकी जड कहते है इनका काढा खांड और सहत तथा खीलमिलायकर देवे तो वातपित्तज्वर, दाह तृषा, मूर्च्छा, अरुचि, भ्रम, तथा रक्तपित्त, इनको शमन करे इसमें दृष्टांत है कि जैसें बद्दलोंकों पवन दूर करता है ॥

पंचभद्रकषाय

छिन्नोद्भवापर्पटवारिवाहभूनिंबशुंठीजनितःकषायः ॥
समीरपित्तज्वरजर्जराणांकरोतिभद्रंखलुपंचभद्रः ॥

अर्थ—गिलोय, पित्तपापडा, नागरमोथा, चिरायता, और सोंठ इनका काढा वात पित्तज्वरको नाश करे इस क्वाथको पंचभद्र कहते है ॥

दुरालभादिकषाय

दुरालभामृताघनोजलंचरोहिणीरजो॥ ज्वरंचवातपित्तजंनिहंत्यसौकषायकः ॥

अर्थ—धमासो, गिलोय, नागरमोथा, नेत्रवाला, कुटकी, और पित्तपापडा इनका काढा वातपित्तज्वरका नाश करताहै ॥

भूनिंबादिकषाय

भूनिंबतिक्ताजलचंदनंचधानेयपथ्यादशमूलसंघाः ॥
ह्रीबेरविश्वाकरमर्दकाचएषांशृतंपित्तमरुज्वरेष्टम् ॥

अर्थ—चिरायता, कुटकी, नेत्रवाला, लालचंदन, धनिया, हरड, दशमूल, खस, सोंठ, और कमरख इनका काढा वातपित्तज्वर पर हितकारी है ॥

त्रिफलादिकषाय

त्रिफलाशाल्मलीरास्नाराजवृक्षाटरूषकैः ।
शृतमंबुहरत्याशुवातपित्तभवंज्वरं ॥

अर्थ—त्रिफला, सेमरका मूसला, रास्ना, अमलतासका गूदो और अडूसो, इनका काढा वातपित्तज्वरका नाश करे ॥

मधुकादिफांट

मधुपुष्पंमधूकंचचंदनंसपरूषकं॥ मृणालंकमलंलोध्रं-

कंभारींनागकेसरं ॥ त्रिफलासारिवाद्राक्षालाजान्को-
ष्णेजलेक्षिपेत् ॥ सितामधुयुतःपेयःफांटोवासोहिमो-
थवा ॥ वातपित्तज्वरंदाहंतृषांमूर्छारतिभ्रमान् ॥ रक्त-
पित्तंमदंहन्यान्नात्रकार्याविचारणा ॥

अर्थ—महुआकेफूल, मुलहटी, लालचंदन, फालसे, कमलकीजड, कमलगट्टा, लोध, कंभारी, नागकेशर त्रिफला, सारिवन, दाख, और खील, इनका फांटकरके खांडसैं अथवा सहतसैं देवे तो बातपित्तज्वर, दाह, प्यास, अरुचि, भ्रम, रक्तपित्त और मद ये दूरहो अथवा पांच औषधोंका हिम करकेलेवे तो उक्तगुण करे ॥

द्राक्षादिक०

द्राक्षाकिरातकंधात्रीकर्पूरामृतवल्लरी ॥
क्वाथएषांगुडयुतःपीतोद्वंद्वजरोगहृत् ॥

अर्थ—दाख, चिरायता, आमले, कपूर, और गिलोय, इनका, काढा गुड मिलाके पीवे तो द्वंद्वज ज्वरका नाश करे ॥

व्याघ्यादिक०

व्याघ्रीभार्गीसिंहवक्त्राचरास्नादुस्पर्शैषाशाल्मलीरा-
जवृक्षः ॥ तद्वज्ज्ञेयंत्रैफलंक्वाथएषांशस्तःक्वासेवात-
पित्तज्वरेच ॥

अर्थ—कटेरी, भारंगी, अडूसा, रास्ना, धमासो, सेमर, अमलतास, और त्रिफला, इनका काढा बातपित्तज्वरपर हितकारी है ॥

मुस्तादिकाढा

जलदधान्यकिरातगुडूचिकानियमनंकटुकीचपटोलिका ॥
क्वथितमेभिरिदंतुजलंहरेत्पवनपित्तभवंज्वरमुन्नतं ॥

अर्थ—नागरमोथा, धनिया, चिरायता, गिलोय, नीम, कुटकी, और पटोलपत्र, इनका काढा वातपित्तज्वर नाशक है ॥

बलादिकाढा.

बलामृतैरंडजलाब्दपद्मकभार्गीकणोशीरयुतैःसचंदनैः ॥
संक्वाथ्यतोयंकफपित्तजज्वरप्रणाशनंवन्हिविवृत्धिकारकं ॥

अर्थ—गगेरन, गिलोय, अंडकीजड नेत्रवाला, नागरमोथा, पद्माख, भारंगी पीपर, खस, और लालचंदन, इनका काढा वातपित्तज्वर नाशक तथा अग्नि वृद्धिकारक है ॥

रसायण

त्रिफलामृतलोहंचभृंगराजंचचूर्णितं॥चूर्णमर्जुनपत्रस्य त्रिजातकाशिलाजतु॥त्र्यूषणंतुल्यतुल्यांशंसर्वेषांचस-मासिता॥ क्षौद्रेणवटिकाकार्याकर्षमात्रंचभावयेत् ॥ वातपित्तज्वरंहंतिअनुपानंचकल्पयेत् ॥

अर्थ—त्रिफला, लोहभस्म, भाँगरो कोहवृक्षकेपत्र, त्रिजातक, शिलाजीत और त्रिकुटा, इनका चूर्ण करके सब चूर्णके समान मिश्री मिलाय सहतसैं १ तोलेकी गोली करे,१ गोलीअनुपानके साथ देवेतो वातपित्तज्वरको दूर करे॥

वातकफज्वरलक्षण

स्तैमित्यंपर्वणांभेदोनिद्रागौरवमेवच ॥ शिरोग्रहःप्र-तिश्यायःकासःस्वेदप्रवर्तनं॥ संतापोमध्यवेगश्ववात-श्लेष्मज्वराकृतिः ॥

अर्थ—स्तैमित्य नाम (गीले कपडेसैं देहको ढकनेसैं जैसा हो ऐसा मालुमहो) संधियोंमें फूटनी, निद्रा, देह भारी, मस्तक भारी नाकसैं पानी गिरे, खाँसी, पसी-नोंका आना, शरीरमें दाह, ज्वरका मध्यवेग ये वातश्लेष्मज्वरके लक्षण हैं ॥

चिकित्सा

वातश्लेष्मज्वरेदेयमौषधंनवमेहनि ॥

अर्थ—वातकफज्वरमें नवमदिन औषधी वैद्यको देनी चाहिये॥

यूष

शुष्कमूलकयूषस्तुवातश्लेष्माधिकेहितः ॥

अर्थ—सूखीमूलीका यूष वात कफ ज्वरमें हितकारी है ॥

पंचकोल

पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्याचित्रकनागरैः॥ दीपनीयः-

स्मृतोवर्गोवातश्लेष्मज्वरापहः॥कोलमात्रोपयोगित्वा-
त्पंचकोलमिदंस्मृतं ॥ तीक्ष्णोष्णंपाचनंश्रेष्ठंदीपनंक-
फवातनुत् ॥ गुल्मप्लीहोदरानाहशूलघ्नंपित्तकोपनं ॥

अर्थ–पीपल, पीपरामूल, चव्य, चित्रक, और सोंठ, यहवर्ग अग्नि दीपक तथा बातकफज्वर नाशक है। ये सर्व औषधी पंचकोल (आठमासे) कीजाति है इसीसै इसको पंचकोल कहते है। यह तीक्ष्ण, गरम, पाचन, दीपन, कफवात, गोला, प्लीह, उदर, अफरा, और शूल इनको नाश करे तथा पित्तको कुपित करता है ॥

निंबादिकषाय

निंबामृताविश्वदारुकट्फलंकटुकावचा ॥ कषायं-
पाययेदाशुवातश्लेष्मज्वरापहं ॥ पर्वभेदशिरःशूलं-
कासारोचकपीडितं ॥

अर्थ–नीमकीछाल, गिलोय, सोंठ, देवदारु, कायफल, और बच इनका काढापीने सैं संधिपीडा मस्तकशूल, खांसी, अरुचि, तथा वातकफज्वर इनकानाश करे ॥

किरातादिकषाय

किरातविश्वामृतवाह्निसिंहिकाकणामूलरसोनसिंदूकः ॥
कृतःकषायोविनिहंतिसत्वरंज्वरंसमीरात्सकफात्समुत्थितं ॥

अर्थ—चिरायता, सोंठ, गिलोय, कटेरीकीजड, पीपल, पीपरामूल, लहसन, सह्मालू इनका काढा वातकफ ज्वर नाशक है ॥

बृहत्पिप्पल्यादिकाढा

पिप्पल्यादिगणक्वाथंपिबेद्वातकफज्वरी ॥ नातःपरं-
किंचिदस्मिन्ज्वरेभेषजमुत्तमं ॥ पिप्पलीपिप्पलीमू-
लंचव्यचित्रकनागरं ॥ वचासातिविषाजाजिपाठाव-
त्सकरेणुकं ॥ किराततिक्तकोमूर्वासर्षपामारिचानिच॥
कट्फलंपुष्करंभार्गीविडंगंकर्कटाव्हयं ॥ अर्कमूलंबृह-
त्सिंहीश्रेयसीसदुरालभा ॥ दीपकश्चाजमोदश्चशुक-
नासासहिंगुका ॥ एषांक्वाथोनिपीतःस्याद्वातश्लेष्म-

ज्वरापहः ॥ हंतिवातंतथाशीतंप्रस्वेदमतिवेपथुं ॥ प्रलापंचातितंद्रांचरोमहर्षोरुचिस्तथा॥महावातेपतं-त्रेचशून्यत्वेसर्वगात्रजे॥ पिप्पल्यादिर्महाक्काथोज्वरे-सर्वत्रपूजितः ॥

अर्थ–पिप्पल्यादिगणका काढा वातकफज्वरी रोगीको पिवावे, इस्से इसज्वरके ऊपर दूसरी उत्तम औषधी नहीं है। पीपल, पीपरामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, वच, अतीस, जीरा, पाढ, कुडाकीछाल, रेणुकबीज, चिरायता, कुटकी, मूर्वा, सरसो, कालीमिरच, कायफर, पुहकरमूल, भारंगी, वायविडंग, काकडासिंगी आककी जड, वडीकटेरी, राष्णा, धमासो, अजमायन, अजमोद, टिंटुककी छाल, और हींग ये औषध समान भाग लेकर काढाकर पीवे तो वातकफज्वर, वाय, शीत, पसीने, कंप, प्रलाप, अत्यंतनिद्रा, रोमांच, अरुचि, महावात, अपतंत्रवात, सर्वदेहकी शून्यता, और, संपूर्ण ज्वर इनका नाश करे यह पिप्पल्यादि गण सर्व ज्वरपर प्रशस्त है ॥

सिंहिकादिकषाय

सिंहीयवानीछिन्नानांक्काथश्चपलयायुतः।
कफवातज्वरश्वासशूलपीनसकासजित् ॥

अर्थ—कटेरीकी जड, अजमायन और गिलोय, इनका काढा पीपलका चूर्ण डालके पीवे, तो वात कफ ज्वर, श्वास, शूल पीनस और खांसीको दूर करे ॥

कट्फलादिकषाय

कट्फलविश्ववचाघनपांशुधान्यशिवाजलशृंगिसुराह्वैः ॥
भार्गीयुतैःक्कथनंकिलपेयंवातकफघ्नगणोननुचैषां ॥

अर्थ–कायफर, सोंठ, वच, नागरमोथा, पित्तपापडा धनिया, हरड, नेत्रवाला, काकाडासिंगी, देवदारु, और, भारंगी इनका काढा वात कफनाशक है ॥

दशमूलीकाढा

दशमूलीरसःपेयःकणाढ्यःकफवातजे।
ज्वरेविपाकेतंद्रायांपार्श्वरुक्श्वासकासके ॥

अर्थ—दशमूलके रसमें पीपरका चूर्ण मिलाय पीवेतो ज्वर, अजीर्ण, तंद्रा, पार्श्वशूल, श्वास, और खाँसी, इनका नाशकरे ॥

पिप्पल्यादिकाढा

पिप्पलीभिःशृतंतोयमनभिष्यंदिदीपनं ।
वातश्लेष्मज्वरंहंतिसेवितंप्लीहनाशनं ॥

अर्थ--पीपलका काढा सेवन करनेसैं कफको दूर करे अग्निदीपक, और वातकफज्वर तथा प्लीह इनका नाश करनेवाला है ॥

दार्वादिकाढा

दारुपर्पटभार्ग्यब्दवचाधान्यककट्फलैः ॥ साभयाविश्वपूतीकैःक्काथोहिंगुमधूत्कटः ॥ कफवातज्वरेपीतोहिक्काशोषगलग्रहान् ॥ श्वासकासप्रमेहांश्चहन्यात्तरुमिवाशनिः ॥

अर्थ--देवदारु, पित्तपापडा, भारंगी, नागरमोथा, बच, धनिया, कायफर, हरड, सोंठ, तथा कंजा इनका काढा हिंग तथा सहत मिलायके देवे तो कफवातज्वर, हिचकी, शोष, गलरोग, श्वास, खांसी, और प्रमेह इनका नाशकरे जैसे वृक्षको वज्र नाश करता है ॥

पटोलादिकाढा

तृष्णान्वितेवातकफार्तिशूलेसश्वासकासारुचिविट्विबंधे ॥ हितंजलंदीपनपाचनंचपटोलशुंठीयवपिप्पलीनां ॥

अर्थ--प्यास, वात, कफरोग, शूल, श्वास, खांसी, अरुचि, तथा, बद्धकोष्ट इनपर पटोलपत्र, सोंठ, इन्द्रजो, और पीपल इनका काढा दीपन पाचन और हितकारी है ॥

क्षुद्रादिक०

क्षुद्रामृतानागरपुष्कराव्हयैःकृतःकषायकफमारुतोत्तरे ॥ सश्वासकासारुचिपार्श्वशूलेज्वरेत्रिदोषप्रभवेपिशस्यते ॥

अर्थ--कटेरी, गिलोय, सोंठ, और, पुहकरमूल इनका काढा कफवातज्वर श्वास, खांसी, अरुचि, पार्श्वशूल, और त्रिदोषजनित ज्वर इनपर हितकारी है ॥

आरग्वधादिक०

आरग्वधकणामूलंमुस्तातिक्ताभयाकृतः ॥
क्वाथःशमयतिक्षिप्रंज्वरंवातकफोद्भवं ॥

अर्थ—अमलतासकागूदा, पीपलामूल, नागरमोथा, कुटकी, और हरड इनका काढा तत्काल वातकफज्वरको शमन करे ॥

मुस्तादिकाढा

मुस्तापर्पटकंशुंठीगुडूचीसदुरालभा ।
कफवातारुचिर्छर्दिदाहशोषज्वरापहः ॥

अर्थ—नागरमोथा, पित्तपापडा, सोंठ, गिलोय, और धमासों, इनका काढा कफवात, अरुचि, वमन, दाह, शोष और ज्वर इनका नाश करे ॥

भूनिंबादिकाढा

भूनिंबमुस्ताकटुकागुडूचीदुरालभापर्पटनागराख्यः ।
क्वाथोनिलश्लेष्महरोवदंतिसूर्योयथानाशयतेंधकारं ॥

अर्थ—चिरायता, नागरमोथा, कुटकी, गिलोय, धमासो, पित्तपापडा, और सोंठ, इनका काढा वातकफको हरण करे जैसैं सूर्य अंधकारको ॥

चातुर्भद्रादिकाढा

किरातंतिक्तकंमुस्तंगुडूचीविश्वभेषजं ॥ चातुर्भद्रकमित्याहुर्वातश्लेष्मज्वरापहं ॥

अर्थ—कडुआचिरायता, नागरमोथा, गिलोय, और सोंठ, यह चातुर्भद्रकाढा वातकफज्वरको दूर करे ॥

स्वेदशोषकचूर्ण

स्वेदोद्गमेभ्रष्टकुलित्थचूर्णंनिर्यातनंशस्तमितिब्रुवंति ।
जीर्णंशकृद्वालवणस्यभाजनंसंचूर्णितंस्वेदहरंसुधूलनात् ॥

अर्थ—पसीनेआनेपर कुलथीको भूनकर पीसे, इस चूर्णको देहमें मालिस करे अथवा गौका पुराना गोवर और नोनके पात्रको पीसके मालिसकरे तो पसीने आना दूर होवे ॥

मरिचाद्युद्धूलन

मरिचंपिप्पलीशुंठीपथ्यालोध्रश्चपुष्करं ॥ भूनिंबः
कटुकाकुष्ठंकर्चूरोलिंगिकासठी ॥ एतानिसमभागा-
निसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥ एतदुद्धूलनंश्रेष्ठंस्रोते-
वस्वेदानिर्गमे ॥

अर्थ—काली मिरच, पीपल, सोंठ, हरड़, लोध, पोहकरमूल, कडुआचिरा-यता कूठ, कचूर, शिवलिंगी, और कपूरकचरी ये औषध समान भागले कपड छन चूर्णकरके देहमें लगावे तो पसीनेकी झडीवीलगरही हो उसको वंद करे ॥

भूनिंबाद्युद्धूलन

भूनिंबकारवीतिक्तावचाकफट्लजंरजः ।
एषामुत्धूलनंश्रेष्ठंसततंस्वेदसंप्लवे ॥

अर्थ—चिरायता, अजमायन, कुटकी, वच और कायफल इनका चूर्ण अंगमें लगावे तो निरंतर आनेवाले पसीनोके वंदकरनेको उत्तमहै ॥

सूतशेखररस

सूतकंटंकणंभ्रष्टंगंधंशुद्धंसमंसमं ॥ द्विगुणंसूतकाद्देयं-
जैपालंतुषवर्जितं ॥ सैंधवंमरिचंचिंचात्वक्क्षारःशर्क-
रापिच ॥ प्रत्येकंसूततुल्यंस्याज्जंबीरैर्मर्दयेद्दिनं ॥ सू-
र्यशेखरनामायंरसोगुंजाद्वयोन्मितः ॥ भक्षितस्तप्त-
तोयेनवातश्लेष्मज्वरापहः ॥

अर्थ–शुद्धपारा, भुनासुहागा, शुद्धगंधक, सैंधानिमक, मिरच, इमलीकाखार और मिश्री प्रत्येक एक एक टके भर शुद्ध जमालगोटा २ टके भर इन सवको कूट पीस नींबूके रसमें १ दिन खरलकरे यह सूर्यशेखर नामक रस दो रतीग रम जलसै लेय तो वातकफज्वर दूर हो ॥

कफपित्तज्वरलक्षण

लिप्ततिक्तास्यतातंद्रामोहःकासोऽरुचिस्तृषा॥ तथा-
स्तंभश्चसंस्वेदःकफपित्तप्रवर्तनं ॥ मुहुर्दाहोमुहुःशी-
तंपित्तश्लेष्मज्वराकृतिः ॥

अर्थ—मुखकफसैं लिप्तहो, तथा पित्तके जोरसैं मुखमें कडुआट, तंद्रा, मूर्च्छा, खाँसी, अरुचि, प्यास, स्तंभ (देहका जकडना) पसीना, कफ, पित्तका गिरना, वारंवार दाहहो और वारंवार शीतका लगाना ये कफपित्तज्वरके लक्षण है

कफपित्तज्वरप्रक्रिया

पित्तश्लेष्मज्वरेदेयमौषधंदशमेहानि ॥

अर्थ—पित्त कफज्वरमें औषधी दशमे दिन देनी चाहिये ॥

कंटकार्यादिकाढा

कंटकार्यमृताभार्गीविश्वेंद्रयववासकं ॥ भूनिंबचंदनं-
मुस्तंपटोलंकटुरोहिणी ॥ विपाच्यपाययेत्क्काथंपित्त-
श्लेष्मज्वरापहं ॥ दाहतृष्णारुचिच्छर्दिकासशूलनिवारणं ॥

अर्थ–कटेरी, गिलोय, भारंगी, सोंठ, इन्द्रजो, अडूसा, चिरायता, लालचंदन, मोथा, पटोलपत्र और कुटकी इनका काढा पित्तकफज्वर, दाह, प्यास, अरुचि, वमन, खांसी और शूल इनको दूर करे ॥

नागरादिकाढा

नागरोशीरबिल्वाब्दधान्यमोचरसांबुभिः ॥
कृतःक्काथोभवेद्ग्राहीपित्तश्लेष्मज्वरापहः ॥

अर्थ–सोंठ, खस, वेलगिरी, नागरमोथा, धनिया, मोचरस और नेत्रवाला इनका काढा ग्राही और पित्त कफज्वरका नाशक है ॥

शृंगवेरादिकाढा

कषायःपरिपीतस्तुशृंगवेरपटोलयोः ॥ पित्तश्लेष्म-
ज्वरवमीदाहकंडूविसर्पनुत् ॥

अर्थ--अदरख और पटोलपत्रका काढा करके पीवे तो पित्तकफज्वर, वमन, दाह, खुजली और विसर्प ए दूर हो ॥

पटोलादियूष

पटोलधान्ययोर्यूषःपित्तश्लेष्मज्वरापहः ॥ दीपनः
कफविच्छेदीपित्तवातानुलोमनः ॥

अर्थ--पटोलपत्र और धनियेका यूष पित्तकफज्वर को दूरकरके दीपन और कफको छुटानेवाला तथा पित्तवातको अनुलोमकर्त्ता है ॥

पटोलादिकाढा

पटोलंपिचुमंदश्चत्रिफलामधुकंबला ॥ साधितोयंक-
षायःस्यात्पित्तश्लेष्मभवेज्वरे ॥

अर्थ–पटोलपत्र, नीमकीछाल, त्रिफला, मुलहटी और गगेरन इनका काढा पीने से पित्तकफज्वर दूर हो ॥

तिक्तादिकाढा

तिक्तोशीरबलाधान्यपर्पटांभोधरैःकृतः ॥ क्वाथःपुनः
समायातंज्वरंशीघ्रंनिवारयेत् ॥

अर्थ––कुटकी, खस, गगेरन, धनिया, पित्तपापडा और नागरमोथा इनका काढा उलटकर आनेवाले ज्वरको तत्काल दूर करे ॥

लोहितचंदनादिकाढा

लोहितचंदनपद्मकधान्यछिन्नरुहापिचुमंदकषायः ॥
पित्तकफज्वरदाहपिपासावांतिविनाशहुताशकरःस्यात् ॥

अर्थ–लालचंदन, पद्माख, धनिया, गिलोय और नीमकीछाल इनका काढा पित्त, कफज्वर, दाह, प्यास, वमन, इनको दूर करे और अग्निको वढावे ॥

जीरकादिकाढा

जीरकंकारवेल्यंबुशीतपूर्वज्वरेहितं ॥ पाक्यंशीतक-
षायंचमुस्तापर्पटकंभवेत् ॥

अर्थ—जीरा और करेलेका रस देनेसैं शीतज्वरका नाश करे एवं नागरमोथा और पित्तपापडा इनका काढा शीतल देनेसैं पाचक है ॥

यवादिकाढा

यवःपर्पटकंधान्यंपटोलारिष्टसाधितं ॥ पिबेत्सश-
र्करक्षौद्रंपित्तश्लेष्मज्वरापहं ॥

अर्थ––जो पित्तपापडा, धनिया, पटोलपत्र, नीमकीछाल, इनका काढा सहत और मिश्री मिलायकर पीवे तो पित्त कफज्वरको दूरकरे ॥

नागरादिकाढा

नागरंद्रयवंमुस्तंचंदनंकटुरोहिणी ॥ पिप्पलीचूर्णसं-

युक्तंकषायंतुपिबेन्नरः ॥ भ्रममूर्छारुचिच्छर्दिपित्तश्लेष्मज्वरापहं ॥

अर्थ—सोंठ, इन्द्रजो, नागरमोथा, लालचंदन, और कुटकी इनका काढाकर उसमें पीपलकाचूर्ण डाल पीवेतो भ्रम, मूर्च्छा, अरुचि, वमन, पित्तकफज्वर इनका नाश करे ॥

द्राक्षादिकाढा

द्राक्षाशम्पाककटुकामुस्तंग्रंथिकधान्यकं ॥
पक्वंहन्यादुदावर्तशूलंपित्तकफज्वरं ॥

अर्थ—दाख, अमलतासकोगूदो, कुटकी, मोथा, पीपरामूल, और धनिया इनका काढा देवे तो उदावर्त्त, शूल, और पित्तकफज्वर, ये दूर हो ॥

पटोलादिकाढा

पटोलयवधान्याकमुस्तामलकचंदनं ।
श्लैष्मिकश्लेष्मपित्तोत्थज्वरतृट्छर्दिदाहनुत् ॥

अर्थ—पटोलपत्र, इन्द्रजो, धनिया, नागरमोथा, आमले और लालचंदन इनका काढा कफपित्तज्वर, कफज्वर, प्यास, वमन, और दाह, इनको नाश करे ॥

यवादिकाढा

यवपद्मकधान्याकंद्वेहरिद्रेद्वेसचंदने ॥ गुडूचीदेवकाष्ठंचतेजोह्वासदुरालभा ॥ श्रपयित्वापिबेत्काथंकफपित्तज्वरापहं ॥ पिपासाछर्दिदाहघ्नंवृष्यंवह्निविदीपनं ॥

अर्थ—इन्द्राजो, पद्माख, धनिया, हलदी, दारुहलदी, रक्तचंदन, गिलोय-देवदार, तेजवल, और जवासो इनका काढा कफपित्तज्वर, तथा प्यास, वमन, दाह इनको नाश करे और अग्निको दीपन करे ॥

त्रायंत्यादिकाढा

त्रायंतीमिषकटुकारामसेनापटोलिका ।
ज्वरेपैत्तकफेह्येतद्देयंदीपनपाचनं ॥

अर्थ—त्रायमाण, मोथा, कुटकी, सपेदकटेली, और पटोलपत्र, इनका काढा पित्तकफज्वरपर दीपन और पाचनार्थ देवे ॥

किरमालादिकाढा

किरमालोवचाहिंगुबालकंधान्यकंनिशा ॥ मुस्ताय-
ष्टिस्तथाभार्गीपर्पटःसमभागतः ॥ अष्टावशेषितःक्वा-
थोमधुनाप्रतिपाकतः॥श्लेष्मपित्तज्वरंहंतिरोगिणःप-
थ्यभोजिनः ॥

अर्थ--अमलतासकोगूदो, वच, हिंग, नेत्रवाला, धनिया, हलदी, नागरमो-था, मुलहटी, भारंगी, और पित्तपापडा ए समभागलेके अष्टावशेष काढाकरे उ-समे सहत डालके पीवे और पथ्यसे रहे तो कफपित्तज्वरका नाश हो ॥

पटोलादिकाढा.

पटोलमुस्ताजलरक्तचंदनंतिक्तारजोविश्वमुशीरवासकं ॥
संक्वाथ्यतोयंकफपित्तजंज्वरंनिहंतिचाशुत्वरितंतृषायुतं ॥

अर्थ—पटोलपत्र, नागरमोथा, नेत्रवाला, रक्तचंदन, कुटकी, पित्तपापडा, सोंठ, खस, और अडूसा इनका काढा कफपित्तज्वर और तृषा इनका नाश करें

गुडूच्यादिकाढा

गुडूचीनिंबधान्याकपद्मकंचंदनान्वितं ॥
तृष्णादाहरुचिच्छर्दिसर्वज्वरहरोगणः ॥

अर्थ—गिलोय, नीमकीछाल, धनिया, पद्माख, रक्तचंदन इनका काढा तृषा दाह, अरुचि, वमन, और संपूर्ण ज्वरोंको नाश करे ॥

सुंठ्यादिकाढा

सनागरंपर्पटकंपिबेद्वासदुरालभम् ॥
किराततिक्तकंमुस्तंगुडूचींसदुरालभां ॥

अर्थ—सोंठ, पित्तपापडा, अथवा धमासा इनका काढा अथवा चिरायता नागरमोथा, गिलोय, और धमासो इनका काढा पित्तकफज्वरवालेको देवे ॥

क्षुद्रादिकपंचतिक्तकाढा

क्षुद्रामृताभ्यांसहनागरेणसपुष्करंचैवकिराततिक्तं ॥
पिबेत्कषायंमुविपंचतिक्तंविधिःसमस्तज्वरमाशुहंति ॥

---

१ किरमानीअजमायन

अर्थ—कटेरी, गिलोय, सोंठ, पुहकरमूल, और चिरायता इनका पंचतिक्त-नामक काढा सर्वज्वरोंको तत्काल दूर करे॥

भार्ग्यादिकाढा

भार्गीपुष्करमूलंचमुस्तकंकंटकारिका॥ त्रिकंटकबृहत्यौचकर्णिनीनागरैःशृता ॥ गणोभार्ग्यादिकोनामपित्तश्लेष्मज्वरापहः॥ कासश्वासारुचिहरःपार्श्वशूलनिवारणः ॥

अर्थ—भारंगी, पुहकरमूल, नागरमोथा, कटेरी, गोखरू, बडीकटेरी, अमलतासकोगूदो, और सोंठ, इन औषधोंका काढा पित्तकफज्वर, खांसी, श्वास, अरुचि, और पसबाडोंका दरद इन रोगोंको दूर करे ॥

पटोलादिकाढा

पटोलंचंदनंमूर्वातिक्तापाठामृताकणाः ॥
पित्तश्लेष्मारुचिच्छर्दिज्वरकंडूविषापहाः ॥

अर्थ—पटोलपत्र, लालचंदन, मूर्वा, कुटकी, पाढ, गिलोय, और पीपल इनका काढा पित्तकफ अरुचि, वमन, ज्वर, खुजली, और विष इनको नाश करे

त्रिफलादिकाढा

त्रिफलात्रायमाणाचमृद्वीकाकटुरोहिणी ॥
पित्तश्लेष्मज्वरेह्येषकषायोत्यानुलोमिकः ॥

अर्थ—त्रिफला, त्रायमाण, दाख और कुटकी इनका काढा पित्तकफज्वरके दूर करनेको देवे ॥

वत्सकादिकाढा

वत्सकंपद्मकाष्ठंचनागरंचंदनामृते ॥ पटोलंधान्यकंचैवमुस्तकंरक्तचंदनं ॥ पाठामूर्वामृताशुंठीमुशीरंकटुरोहिणी ॥ समभागशृतंतोयंसर्वज्वरहरंपिबेत् ॥ पित्तासृक्दाहशूलघ्नमम्लपित्तविनाशनं ॥

अर्थ—कुडाकीछाल, पद्माख, सोंठ, रक्तचंदन, गिलोय, पटोलपत्र, धनिया,

नागरमोथा, सपेदचंदन, पाढ, मूर्वा, खस, और कुटकी ए समान भागलेके काढा करे यह सर्वज्वर, रक्तपित्त, दाह, शूल, और अम्लपित्तको दूर करे ॥

अमृतादिकाढा

अमृतारिष्टकटुकामुस्तेंद्रयवनागरैः ॥ पटोलंचंदनाभ्यांचपिप्पलीचूर्णयुक्कृतं ॥ अमृताष्टकमेतच्चपित्तश्लेष्मज्वरापहं ॥ छर्द्यरोचकहृल्लासदाहतृष्णानिवारणं ॥

अर्थ—गिलोय, नीमकीछाल, कुटकी, नागरमोथा, सोंठ, पटोलपत्र, और दोनो चंदन इनके काढेमें पीपलकाचूर्ण मिलायके पीवे तो यह अमृताष्टकपित्तकफज्वर, वमन, अरुचि, हृल्लास, दाह, और प्यासको दूर करे ॥

वासास्वरस

सपत्रपुष्पवासायारसःक्षौद्रसितायुतः ।
कफपित्तज्वरंहंतिसास्रपित्तंसकामलं ॥

अर्थ—पत्ते और फूल सुद्धा अडूसेका रस लेवे उसमें मिश्री और सहत मिलाय पीवे तों कफपित्तज्वर, रक्तपित्त, और कामला दूर हो ॥

कटुकीचूर्ण

सशर्करामक्षमात्रांकटुकींचोष्णवारिणा ।
पीत्वाज्वरंजयेज्जंतुःपित्तश्लेष्मसमुद्भवं ॥

अर्थ—कुटकीका चूर्ण एक तोला ले उसमें चार मासे मिश्री मिलाय गरम जलसें लेवे तो पित्तकफज्वर दूर हो ॥

लाजमंड

लाजैर्वातंडुलैर्भ्रष्टैर्लाजमंडःप्रकीर्तितः ।
श्लेष्मपित्तहरोग्राहीपिपासाज्वरजिन्मतः ॥

अर्थ—खीलोंका अथवा भुने चावलोंका माँड निकालकर देवे यह कफ, पित्त, प्यास, ज्वर, इनको दूर करे और ग्राही है ॥

वाट्यमंड

सुकंडितैस्तथाभ्रष्टैर्वाट्यमंडोयवैर्भवेत् ।
कफपित्तहरःकंठ्योरक्तपित्तप्रसादनः ॥

अर्थ–जवोंको अच्छीरीतिसैं वीन छरके मिंगी निकालले फिर चौदह गुनेजलमें पककरे जव जों सीज जाय तब उस पानीको छानके प्यावे इसको वाट्यमंड कहते है यह कफपित्तको दूरकरे कंठको हितकारी और रक्तपित्तको दूर करे ॥

मुस्तादिनिर्यूह

मुस्तापर्पटकैरातनिर्यूहेनप्रसाधितः ॥
कफपित्तज्वरहरोयूषोधान्यपटोलयोः ॥

अर्थ—नागरमोथा, पित्तपापडा, और चिरायता, इनका निर्यूह अथवा धनिया और पित्तपापडा इनका यूष कफपित्तज्वरका नाश करे ॥

निंबादियूष

निंबकुलकयूषस्तुहितःपित्तकफात्मके ॥

अर्थ—नीमकीछाल, और पटोलपत्र इनका यूष पित्तकफका नाश करता है

चंद्रशेखररस

शुद्धंसूतंसमंगंधंमरिचंटंकणंतथा ॥ चतुस्तुल्याशिलायोज्यामत्स्यपित्तेनभावयेत् ॥ त्रिदिनंभावयेत्तेनरसोयंचंद्रशेखरः॥द्विगुंजमार्द्रकद्रावैर्देयंशीतोदकंपुनः॥ तक्रौदनंचवृंताकंपथ्यंतत्रनिवेदयेत् ॥ त्रिदिनात्श्लेष्मपित्तोत्थमत्युष्णंनाशयेज्ज्वरं ॥

अर्थ—शुद्धपारा, शुद्धगंधक, कालीमिरच, सुहागा, तथा इन चारोकी बरोंबर मनसिलले सबको एकत्रकर मछलीके पित्तेसैं तीनदिन खरलकरे तो यह चंद्रशेखर रस बनकर तयारहो, इसको२रत्ती अदरकके रससैं देवे और ऊपर शीतल जलपीवे तथा दही भात और वेंगन ए पथ्यमेदेतो तीनदिनमें कफपित्तज्वर नाश हो॥

संनिपातज्वरलक्षण

क्षणेदाहःक्षणेशीतमस्थिसंधिशिरोरुजः ॥ सस्रावेकलुषेरक्तेनिर्भुग्नेचापिलोचने॥सस्वनौसरुजौकर्णौकंठः शूकैरिवावृतः ॥ तंद्रामोहःप्रलापश्चकासश्वासोरुचिर्भ्रमः ॥ परिदग्धाखरस्पर्शाजिव्हास्रस्तांगतापरं ॥

ष्ठीवनंरक्तपित्तस्यकफेनोन्मिश्रितस्यच ॥ शिरसो-
लोडनंतृष्णानिद्रानाशोहृदि व्यथा ॥ स्वेदमूत्रपुरी-
षाणांचिराद्दर्शनमल्पशः ॥ कृशत्वंनातिगात्राणांसततं-
कंठकूजनं॥कोष्ठानांश्यावरक्तानांमंडलानांचदर्शनं ॥
मूकत्वंस्रोतसांपाकोगुरुत्वमुदरस्यच ॥ चिरात्पाक-
स्तुदोषाणांसंनिपातज्वराकृतिः ॥

अर्थ--अकस्मात् क्षणमें दाह, क्षणभरमें सीत लगे, हाड, संधि, मस्तक इनमें शूल, अश्रुपातयुक्त काले और लाल तथा फटेसे नेत्र होजावे (अथवा टेढे नेत्र हों ये जेज्जटका मत है) कानोंमें शब्द और पीडाहो, कंठमें कांटे पडजाय; तंद्रा, वेहोशी हो, अनर्थ बोलें, खांसी, श्वास, अरुचि, भ्रम ये हो, जीभ परिदग्धवत (काली) और खर्दरी गोजीभके समान तथा सिथिल (लठर) हो, पित्त और रुधिर मिला कफ थूके, शिरको इधर उधर पटके, तृषा बहुत लगे, निद्राका नाशहो, हृदयमे पीडा, पसीना, मूत्र मल इनका बहुतकालमें थोडा उतरना, दोषोंके पूर्ण होनेसैं देहका कृश न होना, कंठमें कफका निरंतर बोलना, रुधिरसैं काले लालकोठे[१] और चकत्तोंका होना, शब्द बहुत मन्द निकले, कान नाक, मुख आदि छिद्रोंका पकना, पेटका भारी होना, वात पित्त कफ इनका देरमें पाकहो (उदरस्य च) इस पदमें जो चकार है यासैं वाग्भटने जो लिखे हैं कोन शीतका लगना, दिनमें घोर निद्राका आना, नित्यरात्रिमें जागना, अथवा निद्रा कभी आवेही नहीं, पसीना बहुत आवै और नहीं आवै, कभी गान करे, कभी नांचे, हंसे, रोवै, और चेष्टा पलटजाना इत्यादि जानने ये सन्निपातज्वरके लक्षण जानने। सुश्रुत वाग्भटके मतसैं सन्निपात एकही प्रकारका है परंतु और आचारीनके मतसैं उल्वणादि भेद करके१२प्रकारका है ॥

धातुपाकलक्षण

निद्राबलौजोरुचिवीर्यनाशो हृद्वेदनागौरवताल्पचेष्टा ।
विष्टंभतायस्यकिलारतिःस्यात्सधातुपाकोमुनिभिःप्रदिष्टः ॥

अर्थ—निद्रा, बल, तेज, रुचि, वीर्य, इन्का नाश, हृदयमें पीडा, देह भारी, हीनचेष्टा अफरा मनका न लगना ये लक्षण जिसके हों उसको धातुपाकी मुनी-

---

१ कोठके लक्षण भालुकिने कहेहे यथा-“ वरटीदंशसंकाशः कंडूमान् लोहितोऽस्रकफपित्तवान् क्षणिकोत्पत्तिविनाशः कोठ इत्यभिधीयते साद्भिः इति ।

श्वरोंने कहाहै (धातुपाक) कहिये उत्तरोत्तर रोगकी वृद्धि और बलकी हानि होकर शुक्रादि धातुसहित मूत्रादिकोंका जो पाक होय उसे (धातुपाक) कहतेहैं ॥

दोषपाकलक्षण

दोषप्रकृतिवैकृत्यंलघुताज्वरदेहयोः ।
इन्द्रियाणांचवैमल्यंदोषाणांपाकलक्षणम् ॥

अर्थ—दोषोंका स्वभाव पलटजाय, ज्वरका हलका होना, देह हलकी हो, इन्द्रियोंका निर्मल होना ये (मलपाक) के लक्षण जानने (धातुपाक) और (मलपाक) होना केवल ईश्वरपर है इसमें दूसरा कोई हेतु नहींहै ॥

सन्निपातज्वरकेविशेषलक्षण

संनिपातज्वरस्यांतेकर्णमूलेसुदारुणः। शोथःसंजायतेतेनकश्चिदेवप्रमुच्यते ॥ ज्वरस्यपूर्वंज्वरमध्यतोवाज्वरांततोवाश्रुतिमूलशोथः। क्रमादसाध्यःखलुकष्टसाध्यःसुखेनसाध्योमुनिभिःप्रदिष्टः ॥

अर्थ—सांनिपातज्वर शांति होनेके पीछे कानकी जडमें दारुण सूजन पैदा होती है उस सूजनसे कोई रोगी बचे है प्राय यह मारही डाले है ॥१॥ यदि यह सूजन ज्वरके पहिले होवे तौ असाध्यहै ज्वरके मध्यमें होय तौ कष्टसाध्य है और ज्वरके अंतमें होय तौ सुखसाध्य है । ऐसें मुनीश्वरोंने कहा है ॥

साध्यासाध्यलक्षण

दोषेविवृद्धेनष्टेग्नौसर्वसम्पूर्णलक्षणः । सन्निपातज्वरोसाध्यःकृच्छ्रसाध्यस्ततोऽन्यथा ॥

अर्थ—जिसमें दोष (वात पित्त कफ) वृद्धि होकर अर्थात् सम्पूर्ण लक्षण होकर मिलतेहों, और अग्नि शांति होगई हो, वो सन्निपातज्वर असाध्य है। और इस्सें विपरीत अर्थात् दोष वढे नहों अल्प लक्षण हों अग्नि थोडी दीप्त हो वो सन्निपातज्वर कृच्छ्रसाध्य है ॥

संनिपातकिकालमर्यादा

सप्तमेदिवसेप्राप्तेनवमेकादशेपिवा ॥ पुनर्घोरतरोभूत्वाप्रशमंयातिहंतिवा ॥ सप्तमीद्विगुणायावन्नवम्यै-

कादशीतथा ॥ एषात्रिदोषमर्यादामोक्षायचवधायच ॥

अर्थ—संनिपातज्वर यदि सातवे, नवे, ग्यारवे, चौंदवे, अठारवे और वाईस वे दिन जादा होवे तो रोगी इस मर्यादाके दिवसोंमें मरे, और मर्यादा चूक जावे तो रोगी जीवे, यह त्रिदोषकी मर्यादा है । जबसें त्रिदोष प्रकटहो उस दिनसैं लेकर ७ किंवा १४ और ९ किंवा १८ तथा ११ किंवा २२ दिनतक त्रिदोष ज्वरोंकी मर्यादा है इस अवधिमें ज्वर जाता रहै अथवा मृत्युहोय ॥

दोषजनितकालमर्यादा

पित्तकफाऽनिलवृद्धचादशदिवसद्वादशाहसप्ताहान् ।
हंतित्रिमुंचत्याशुत्रिदोषजोधातुमलपाकात् ॥

अर्थ—पित्तकफ और वात इनके पाकहोनेकी मर्यादा अनुक्रमसें दशमे, बारवे, और सातवे दिवस होती है अतएव उसीउसी दिनमें धातुपाक होनेसैं रोगी मरे मलपाक होनेसैं रोगी रोगरहित होवे ॥

कट्फलादिपानम्

कट्फलंत्रिफलादारुचंदनंसपरूषकं ॥ कटुकापद्मकोशीरंविपचेत्कार्षिकंजले ॥ त्रिदोषदाहतृष्णाघ्नंपानमात्रेणपूजितं ॥ दीर्घकालज्वरार्तानामेतत्स्यादमृतोपमं ॥

अर्थ—कायफल, त्रिफला, देवदारु, लालचंदन, फालसे, कुटकी, पद्माख, और खस इन औषधोंको एक २ तोलालेकर काढा करके पीवेतो त्रिदोष दाह और तृष्णा इनको शांत करे और दीर्घकालसे आनेवाले ज्वररोगीको अमृतके तुल्यहै

दशमूलादिमंड

पाचनोदीपनःसोष्णोलाजमंडोयतःस्मृतः ।
दशमूलादिसिद्धःससंनिपातज्वरेहितः ॥

अर्थ--दशमूलके काढेसैं सिद्ध कराहुआ खीलोंका मांढ पाचन दीपन और गरम है अतएव संनिपातज्वरपर हित है ॥

दुःस्पर्शादिसिद्धान्न

दुस्पर्शगोक्षुरक्षुद्रासिद्धमाहारमर्पयेत् ।
दोषशांतिबलाग्न्यर्थंत्रिदोषज्वरिणेपृथक् ॥

अर्थ—धमासा, गोखरू, औरकटेरी, इनके काढेमें सिद्ध कराहुआ आहार देवे। इससै दोष शांतिहो तथा वल और अग्नि ये बढे, औरत्रिदोष रोगवालेको हित है॥

लाजसक्तुक

लाजसक्तून्समश्नीयात्सैंधवेनसमन्वितान्।
तच्चेज्जीर्यत्यविघ्नेनज्वरीजीवेत्तदाध्रुवं॥

अर्थ—त्रिदोषज्वरवालेको खीलका सत्तू-सैंधानोन डालके देवे तो यादि यह निर्विघ्न पचजावे तो रोगी निश्चय जीवे॥

लाजसक्तुनिषेध

रक्तपित्तेहितत्वेनतृष्णादाहज्वरेषुच।
लाजानांसक्तवःशीतानचतेत्रहितामताः॥

अर्थ—खीलोका सत्तू शीतल है यह रक्तपित्त, प्यास दाह और ज्वर इनपर हित है परंतु संनिपातपर नही देना चाहिये॥

पित्तशमनकरनेकेकारण

निर्हरेत्पित्तमेवादौज्वरेषुसमवायिषु।
दुर्निवारतरंतद्धिज्वरार्त्तेषुविशेषतः॥

अर्थ—समवायि संनिपात ज्वरमें प्रथम पित्तका हरण करे क्यो कि यह दुर्निवार है॥

शीतोदकसेचनकानिषेध

संनिपातेतुदाहार्तंयःसिंचेच्छीतवारिणा।
आतुरःसकथंजीवेद्भिषग्वासकथंभवेत्॥

अर्थ—जो वैद्य सन्निपातके दाहमें शीतल जलसैं सिंचन करता है उसको वैद्यकैसे कहना चाहिये और वह रोगी कैसै वचेगा॥

शिरीषाद्यंजन

शिरीषबीजगोमूत्रकृष्णामरिचसैंधवैः।
अंजनंस्यात्प्रबोधायसरसोनशिलारसैः॥

अर्थ—सिरसके वीज, गौमूत्र, पीपर, कालीमिरच और सैंधानिमक इनको

एकत्र पीस अंजनकरे तो सन्निपातकी मूर्च्छा जाय, अथवा मनसिल और वच इनका लहसनके रसमें अंजन करे ॥

कस्तूरिकाद्यंजन

कस्तूरीमरिचंवाजिलालाचमधुनांजनं ।
तंद्रांनिवारयत्याशुव्यूषंक्षिप्तंयथानसि ॥

अर्थ—कस्तुरी और मिरच इनको घोडेकी लारमें पीस सहत डालके अंजन करे तो तंद्रा शीघ्र दूर होवे। उसी प्रकार त्रिकुटाके चूर्णकी नासलेनेसैं तंद्रा दूर होय

लंघन

सन्निपातज्वरीपूर्वंसम्यग्लंघनमाचरेत् ।
शृतशीतंपिबेदंभःसमयेभेषजंभजेत् ॥

अर्थ—संनिपातज्वरवाला प्रथम उत्तम लंघन करे और पानीको ओटाय शीतल करके बहुत प्यासमें पिवावे, और समय २ पर औषधि देवे ॥

शीतजलपाननिषेध

सन्निपातेनतृष्यंतंपार्श्वरुक्तालुशोषिणं ।
यःपाययेज्जलंशीतंसमृत्युर्नरविग्रहः ॥

अर्थ—संनिपातज्वरवाले रोगीके शोष होय और कूखमें शूल तथा तालुआ सूखताहो इसमें जो वैद्य विना ओटाहुआ जल देवे वह मनुष्यरूप मृत्यु जानना,

वालुकास्वेद

वातश्लेष्मकृतेस्वेदान्कारयेद्रूक्षनिर्मितान् ।
स्निग्धस्वेदोनिषिद्धोत्रविनाकेवलवातजात् ॥

अर्थ—वातकफके विकारमें रूक्ष औषधोंसैं स्वेद विधि करे किन्तु स्निग्ध स्वेद केवलवात रोग विना अन्यत्र निषेध है ॥

सैंधवादिनस्य

सैंधवंश्वेतमरिचंसर्षपाःकुष्ठमेवच ॥
बस्तमूत्रेणसंपिष्टंनस्यंतंद्रानिवारणं ॥

अर्थ—सैंधानिमक, सपेदमिरच, सरसो, और कूठ इनको बकरेके मूत्रमें पीस नास देवे तो संनिपातकी तन्द्रा जाय ॥

मातुलिंगादिनस्य

मातुलिंगार्द्रकरसंकोष्णंत्रिलवणान्वितं ॥ अन्यद्वा-
सिद्धविहितंनस्यंतीक्ष्णंप्रयोजयेत् ॥ तेनप्रभिद्यते-
श्लेष्माप्रभिन्नश्वप्रसिच्यते ॥ शिरोहृदयकंठास्यपा-
र्श्वरुकोपशाम्यति ॥

अर्थ—बिजोरेका रस और अदरककारस, इनको गरम कर तीनो नोन (संचर–साह्मर–खारी) मिलायके नस्यदेवे, अथवा और जो सिद्धवैद्योकी कही-हुई तीक्ष्ण औषधोंकी नश्यदेवे तो इससे कफ फटजावे और फटकर दबजाय कि जिस्से शिर, हृदय, कंठ, मुख और पसवाडोंकी पीडा शांति हो ॥

कल्पतरुनस्य

मोहामयेनमुग्धंबोधयितुंयादृशःशक्तः ॥ क-
ल्पतरुनामधेयोरसोनतादृक्परंकिंचित् ॥

अर्थ—जो मोहरूप रोगसें मूढ हो रहा है उसके चैतन्य करनेमें जैसा कल्प-तरुरस सामर्थ्य रखता है अेसाअन्य नहीं है ॥

द्राक्षादिलेपजिव्हापर

जिव्हातालुगलक्लोमम्रुत्पित्तेनवोच्छ्रितः ॥ तदास-
चाचरेच्छोषंजिव्हायाःखरतांतथा ॥ स्फुटनंचतदा-
जिव्हांलेपयेन्मधुपिष्टया ॥ द्राक्षयासाज्ययातेनजि-
व्हास्यात्सरसामृदुः ॥

अर्थ—यदि वातपित्तके प्रभावसें जीभ, तालु, गला, और क्लोम (पिपासा-स्थान) ये उठ आवे तो ये शोषको करते है और जीभको खरदरीकरे, तथा जीभ फटजावे, इस्मे जीभपर दाख और घृत मिलाय सहतका लेपकरे तो जीभ रसयुक्त नम्र हो जावे ॥

आर्द्रकादिकवलग्रह

आर्द्रकस्वरसोपेतंसैंधवंकटुकत्रयं ॥ आकंठाद्धारये-
दास्येनिष्ठीवेच्चपुनःपुनः ॥ तेनास्यहृदयक्लोममन्या-
पार्श्वशिरोगलात् ॥ लीनोप्याकृष्यतेश्लेष्मालाघवं

चास्यजायते ॥ पर्वभेदोज्वरोमूर्छानिद्राश्वासगला-
मयाः ॥ मुखाक्षिगौरवंजाड्यमुत्क्लेशश्चोपशाम्यति ॥
सकृद्द्वित्रिचतुःकुर्याद्दृष्ट्वारोगबलाबलं ॥ एतद्धिपर
मंप्राहुर्भेषजंसन्निपातिनां ॥

अर्थ—अदरखके स्वरसमें सैंधानिमक और त्रिकुटा मिलायके गोलीकरे, इस गोलीको मुखमें रक्खे, वारंवार कफ आवे उसको थूक देवे, इस प्रकार करनेसैं मुख, हृदय, क्लोम, मन्यानाडी, पसवाडेकेभाग और गला इनसैं लिहसा हुआ कफ निकले और शरीरमें हलका पना आवे, और गांठोका दूखना, ज्वर, मूर्च्छा, श्वास, गलेका रोग, मुखनेत्र, इनकी जडता, मुखसैं पानीका गिरना, ये सव रोग दूर हो। यह प्रकार दोषोंको वलाबल देखकर दो चारवार करे यह संनिपात रोगमें उत्तम है ॥

अष्टांगावलेह

ऊर्ध्वजत्रुगदघ्नीयासासायमवलेहिका।
अधोरोगहरीयासाभोजनात्प्राक्प्रयुज्यते ॥

अर्थ—जत्रुके ऊपरके रोगोंमें सायंकालमे अवलेह लेवे, और अधोभागके रोगोंमें भोजनके पूर्व लेनी चाहिये ॥

कट्फलादिअवलेह

कट्फलंपुष्करंशृंगीव्योषंयासश्चकारवी ॥ श्लक्ष्णचू-
र्णीकृतंचैतन्मधुनासहलेहयेत् ॥ एषावलेहिकाहंतिसं-
निपातंसुदारुणं ॥ हिक्कांश्वासंचकासंचकंठरोगंचना-
शयेत ॥ एतद्योज्यंकफोद्रेकेचूर्णमार्द्रकजैरसैः ॥

अर्थ—कायफर, पुहकरमूल, काकडासिंगी, त्रिकूटा, धमासो, और अजमोद इनका कपडछन चूर्णकर सहतसैं चाटे तो यह दारुण संनिपात, हिचकी, श्वास, खाँसी, और कंठरोग–इनको दूरकरे। यदि कफ अधिक होवे तो इसी चूर्णको अदरखके रसके साथचाटना चाहिये ॥

आर्द्रकादिस्वरस

अष्टांगंमधुनालिह्यादार्द्रकस्यरसेनवा।
संमोहंदारुणंहन्यात्तंद्राकाससमन्वितं ॥

अर्थ—ऊपर कहा अष्टांग अवलेह सहतसैं किंवा अदरखके रससैं चाटे तो खाँसी, तंद्रा, और अत्यंत मोह इनका नाशकरे ॥

मधुनिषेध

सर्वेषुसंनिपातेषुनक्षौद्रमवचारयेत् ॥ शीतोपचारिक्षौद्रंस्याच्छीतंचात्रविरुध्यते ॥ उष्णैर्विरुध्यतेसर्वंविषान्वयतयामधु ॥ उष्णार्तमुष्णैरुष्णंचतंनिहंतियथाविषं ॥

अर्थ—संपूर्ण संनिपातोंमें सहत न देवे कारण कि सहत भक्षण करनेसैं उसपर शीतल उपचार करने चाहिये और संनिपातोंमें शीतल चिकित्सा विरुद्ध है तथा सर्व उष्णपदार्थोंसैं सहतका विषके सदृश विरोध है अतएव जो मनुष्य असलमें गरमीसैं पीडित होय और फिर उसके ऊपर गरम उपचार होय तो वो विषके समान मारने वाले होते है ॥

प्रक्रिया

संनिपातज्वरेपूर्वंकुर्यादामकफापहं ।
पश्चाच्छ्लेष्मणिसंक्षीणेशमयेत्पित्तमारुतौ ॥

अर्थ—संनिपातज्वरपर प्रथम आम और कफनाशक औषधी देवे जव कफ क्षीण हो जावे तव पित्तवातको शमन करे ॥

दुसराप्रकार

लंघनंबालुकास्वेदोनस्यंनिष्ठीवनंतथा ॥
अवलेहांजनंचैवप्राक्प्रयोज्यंत्रिदोषजे ॥

अर्थ—संनिपातमें लंघन, वालुकास्वेद, नस्य, थूकना, अवलेह और अंजन ये प्रथम करने चाहिये ॥

लंघनकाअसहन

दोषाणामेवसाशक्तिर्लंघनेयासहिष्णुता ॥
कश्चिद्दोषविमुक्तोन लंघनंसहतेनरः ॥

अर्थ—लंघनोंका सहन होना यह दोषोंकीहीशक्ती है दोषमुक्त होनेपर रोगीको लंघन सहन नही होते ॥

(एककालमेदोप्रकारकीऔषधदेनेकानिषेध)

क्रियायास्तुगुणालाभेक्रियामन्यांप्रयोजयेत् ॥
पूर्वस्यांशांतवेगायांनक्रियासंकरोहितः ॥

अर्थ—एक औषधक्रियाका गुण न होय तो दूसरी औषधक्रिया करनी चाहिये परंतु पूर्वऔषधका वेग नष्ट हो जानेपर करे एककालमे दो औषधक्रिया हितकारी नहीं है ॥

अन्यप्रतीकार

तप्तायोलांछनंपंचताल्वादिषुत्रिदोषजे ॥ रुद्राभिषेकोभूदेवभोजनंग्रहजाप्यतः ॥ मंत्ररक्षादिभिःकार्यासंनिपातेप्रतिक्रिया ॥

अर्थ—सन्निपातमें तालु आदि पांचस्थानोमें तत्ते लोहकी सलाई आविसें दागदेवे, और रुद्राभिषेक, ब्राह्मणभोजन, ग्रहोंकाजप, तथा मंत्ररक्षादिक, रोगनाशार्थ अन्यउपाय कराने चाहिये ॥

कंटकार्यादिपाचन

कंटकारिद्वयंशुंठीधान्यकंसुरदारुच ॥
एभिःशृतंपाचनंस्यात्सर्वज्वरनिवारणं ॥

अर्थ—कटेरीदोनो, सोंठ, धनिया, और देवदारु इनका काढा सर्वज्वरमें पाचक तथा ज्वरनाशक है ॥

मनःशिलादिअंजन

तुरंगलालासहितामनःशिलानिहंतितंद्रासकृदंजनेन ।
वब्बूलपत्राणिहरीतकीचसंस्वेदितास्वेदविकारहंत्री ॥

अर्थ—मनसिलको घोडेकी लारमें घिसके अंजन करावेतो तंद्राका आना दूर हो और बबूरके पत्ते और हरड इनकी बाफ स्वेदहरण कर्त्ती जाननी ॥

भूनिंबादिमर्दनवउद्धूलन

भूनिंबकटुकाकुष्ठंकारवींद्रयवाःसठी ॥ एतानिसमभागानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥ प्रस्वेदेकंठरोधेचसंधौमर्दनमिष्यते ॥ एतदुद्धूलनंश्रेष्टंसंनिपातहरंपरं ॥

अर्थ—चिरायता, कुटकी, कूठ, अजमायन, इन्द्रजो और कचूर, इनका समभाग चूर्णलेकर देहमें लगावे तथा संधीन्में विशेष मालिसकरे तो कफसें हुआ कंठावरोध और संनिपातज्वर ये शांति हो ॥

यवानिकाद्युद्धूलन

यवानिकावचाशुंठीपिप्पलीकारवीतथा ।
एतैरुत्धूलनंश्रेष्ठंत्रिदोषोत्थेज्वरेनृणां ॥

अर्थ—अजमायन, वच, सोठ, पीपर, और अजमोद, इनका चूर्ण संनिपातज्वर वालेके पसीने आनेमें लगाना उत्तम कहा है ॥

विषाद्युद्धूलन

विषभागोभवेदेकोमरीचंत्रिगुणंमतं ॥ आरण्योपलजं-
भस्मषोडशांशसमन्वितं ॥ एकत्रमीलितंचूर्णंधूर्त्तस्व-
रसभावितं ॥ आतपेशोषितंतच्चशीतस्वेदहरंपरं ॥

अर्थ—विष १ भाग, कालीमिरच ३ भाग, आरने उपलोंकी भस्म १६ भाग, सबको मिलाय अंगोंमे लगावे तो पसीने वंदहोय ॥

चणकाद्युद्धूलन

अथवाचणकाभ्रष्टायवानीचूर्णमिश्रिताः ।
वचोषणारजोयुक्ताःस्वेदसंशोषणामताः ॥

अर्थ—भुनेहुए चनाका चून, अजमायन, वच, और काली मिरच इनको मिलाय देहमें मालिसकरे तो पसीने आते हुए बंद हो जावे ॥

चटनी

सुरसार्जकनिर्यासमधुव्योषसैंधवः ।
महत्श्लेष्मानिलोद्रेकेसंज्ञानाशविनाशनः ॥

अर्थ—तुलसीकारस, राल, त्रिकुटा, सैंधानिमक और सहत इनको मिलायके चाटेतो कफवातादिक ज्वरको और मूर्च्छाको नष्ट करे ॥

लंघनविधि

त्रिरात्रंपंचरात्रंवादशरात्रमथापिवा ।
लंघनंसान्निपातेषुकुर्यादारोग्यदर्शनात् ॥

अर्थ—संनिपातरोगीके अच्छाकरनेको तीन, पांच, किंवा दशदिन लंघन करावे

लंघन

शस्तंसुलंघितस्यादौविधायकवलग्रहं ॥

अर्थ—रोगीको लंघन करनेपर पूर्वोक्त कवल मुखमें धरना चाहिये ॥

अतिलंघनकेविचार

कफपित्तद्रवौधातूसहेतेलंघनंमहत् ।
आमक्षयादूर्ध्वमपिवायुर्नसहतेक्षणं ॥

अर्थ—कफ और पित्त ये द्रवधातु है अतएव आमके क्षयपर्यंत बहुत लंघन सहन होते है परंतु वादीवालेको वहुत लंघन क्षणमात्र सहन नही होते ॥

लंघितकोअन्न

ग्राम्येगुरुत्वंश्रद्धाचविक्तिर्हीनलंघिते ॥ प्रकांक्षाला-
घवंग्लानिःस्वच्छतासुप्रसन्नता ॥ उपद्रवनिवृत्तिश्च
सम्यक्लंघितलक्षणं ॥ संमोहःसंधिशैथिल्यंवातरु-
क्चातिलंघिते ॥

अर्थ—हीनलंघन होनेसैं मैथुन करनेमें अश्रद्धा तथा अंगोंमें भारीपना एलक्षण होते है । उत्तम लंघन होनेसै अन्नकी इच्छा अंगोंका हलका होना, ग्लानि, स्वस्थता, सुप्रसन्नता, तथा ज्वरोपद्रवोंका नाश ए लक्षण होते है । और अतिलंघन होनेसैं मोह, संधीका शिथिलपना, वायुके विकार ए होते है ॥

पंचमुष्टिकयूष

पंचमुष्टिकयूषेणत्रिकंटककृतेनच ॥ आदोषशमना-
न्नित्यंभिषक्श्रेष्ठस्तुसाधयेत् ॥ यवकोलकुलित्थानां-
मुद्गमूलकशुंठिनां ॥ एकैकमुष्टिमादायपचेदष्टगुणेज-
ले ॥ पंचमुष्टिकइत्येषवातपित्तकफापहः ॥ शस्यते-
शूलगुल्मेचश्वासेकासेज्वरेक्षये ॥

अर्थ—गोखरू डालके पंचमुष्टिकयूष दोष शमन पर्यंत देवे, पंचमुष्टिकको कहते है–जौं, वेरकी गुठली, कुलथी, मूंग, मूली और सोंठ, ये चार २ तोले लेय तथा अठगुने पानीमें काढा करे उसकी पंचमुष्टिकयूष संज्ञा है, यह वातपित्त,

कफ, इनका नाशक और शूल, गुल्म, श्वास, खाँसी, और क्षय इनपर उत्तम है

सप्तमुष्टिकयूष

यवकोलकुलित्थैश्चशुष्कमूलकमुद्गकैः ॥ धान्याकैर्वि-
श्वयुक्तैश्चयूषोवातज्वरापहः॥ सप्तमुष्टिकइत्येषसंनि-
पातज्वरापहः ॥ कफवातामदोषघ्नःकंठहृद्वक्त्रशोधनः ॥

अर्थ—जौं, बेरकी गुठली, कुलथी, मूंग, सूखीमूली, और सोंठ, धनिया ये प्रत्येक चार ४ तोले लेकर यूष बनावे, तो सप्तमुष्टिक संज्ञक यूष वातज्वर, संनिपातज्वर, कफ, वायू, और आमदोष, इनको नाशकरे और गला, छाती, तथा मुख, इनको स्वच्छ करे ॥

कंपादिककीचिकित्सा

सन्निपातज्वरेयस्तुकंपतेप्रलपत्यपि ॥
किंचिदेवनजानातिचिकित्सातस्यकथ्यते ॥

अर्थ—संनिपातज्वरमें कंप होय बकवादकरे, और बेहोस होय तो उसकी चिकित्सा कहते है ॥

अभ्यंजन

अभ्यंजयेत्पुराणेनसर्पिषापूर्वमेवतं ॥ बला-
रास्नागुडूच्याद्यैस्तैलैश्चपरिषेचयेत् ॥

अर्थ—प्रथम संनिपातवाले रोगीके अंगमें पुराना घीलगावे किंवा बला रास्ना, गिलोय, इनका तेल अंगमें लगावे ॥

वर्तकादिरस

वर्तकोवर्तकालावोवार्तीकस्तित्तिरीःशशः ।
कुलिंगश्चरसैनैषांतर्पयेतयथानलं ॥

अर्थ—बतक, विचित्ररंगकाचिडा, लवा, बटेर, तीतर, शशा और चिडा इनके मांसका रस रोगीका अग्निबल देखके देवे ॥

सन्निपातीमांसनिषेध

सन्निपातेक्षुधार्तंयोभोजयेत्पिशितौदनैः ।
सकथंभिषगाख्यातिंलभतेभिषजाधमः ॥

अर्थ—सन्निपातज्वरमें क्षुधितरोगीको जो वैद्य मांस और भातखानेको देता है, वह अधम वैद्यलोकमें प्रतिष्ठाको कैसें प्राप्त होगा॥

सुवर्णादिलेप

सुवर्णमुक्तारजतप्रवालंकस्तूरिकाकुंकुमरोचनंच ॥ वराटरुद्राक्षमधूकबिल्वंकुष्टंचखर्जूरपुनर्नवाच ॥ द्राक्षाकणानागरपुत्रजीवीसारंगशृंगंकतकस्यबीजं ॥ एरंडमूलंशरशीर्षकंचमयूरिकाश्वेतपुनर्नवाच ॥ स्तन्येनपिष्ट्वाकुरुसन्निपातेलेपःसदासर्वगदान्निहंति ॥

अर्थ—सोना, मोती, चांदी मूंगा, कस्तूरी, केशर, गोरोचन, कौडी, रुद्राक्ष मुलहटी, वेलगिरी, कूठ, खजूर, सोंठ, दाख, पीपल, सोंठ, जीयापोता, हरणके सींग, निर्मलीकेवीज, अंडकीजड, सरपतेकी जड, अंवाडा, और विसखपरा, ये सब औषधस्त्रीके दूधसैं पीस लेपकरे तो सर्व संनिपातके विकार दूर हो॥

चिकित्साप्रक्रिया

श्लेष्मनिग्रहमेवादौकुर्याद्बुद्ध्यादौत्रिदोषजे ॥ निरस्तेश्लेष्मणिह्यस्यस्रोतःसूद्घाटितेषुच ॥ लाघवंजायतेसद्यस्तृष्णाचैवोपशाम्यति ॥

अर्थ—सन्निपातज्वरमें प्रथम कफको जीते कफके घटनेपर तथा शिराओंके मार्ग खुलनेपर शरीरमें हलकापना आता है और प्यास दूर होय॥

अन्यसन्निपातनिदाने

एकोल्बणास्त्रयस्तेस्युर्द्व्युल्बणाश्चतथेतिषट् ॥ उल्बणश्चभवेदेकोविज्ञेयःसतुसप्तमः ॥ प्रवृद्धमध्यहीनाश्चवातपित्तकफैश्चषट् ॥ सन्निपातज्वरस्यैवंस्युर्विशेषास्त्रयोदश ॥

अर्थ—संनिपातमें कफ, वात, और पित्त इन प्रत्येक दोषोंके उल्बण होनेसैं तीन, दो दोषोंके उल्वणसैं तीन, तथा तीन दोषोंके उल्वणोंके मिलनेसै एक, सव सातहुए। और प्रवृद्ध, मध्य, और हीन जे वातापित्त और कफदोष इनके पर्याय करके छः, असैं सन्निपातके तेरह भेद होते है॥

वातोल्बणसन्निपात

संध्यस्थिशिरसःशूलंप्रलापोगौरवंभ्रमः ॥ वा-
तोल्बणेस्याद्द्वचनगेतृष्णाकंठास्यशुष्कता ॥

अर्थ—वाताधिक्य और कफपित्तहीन अेसे संन्निपातमें संधि, हड्डी, और मस्तकमें, शूल, प्रलाप, देहमेंगौरव, भ्रम, प्यास, तथा गला और मुखका सूखना ये लक्षण होतेहै ॥

वातोल्बणसंनिपातकीचिकित्सा

पंचमूलीकषायंतुदद्याद्वातोत्तरेज्वरे ॥ भृशो-
ष्णंवासुखोष्णंवादृष्ट्वादोषबलाबलं ॥

अर्थ—वाताधिक्य संनिपातमें पंचमूलकाकाढा गरम अथवा सुखोष्ण ऐसै दोषोका वलावल विचारके देवे ॥

मुस्तादिकाढा

समुस्तंपंचमूलंचदद्याद्वातोत्तरेज्वरे ॥
भृशोष्णंवासुखोष्णंवादृष्ट्वादोषबलाबलं ॥

अर्थ—नागरमोथा और पंचमूल इनका काढाकरके इसे दोषबली होयतो गरम और निर्वल होयतो सुखोष्ण देवे ॥

कट्फलादिकाढा

कट्फलाब्दवचापाठपुष्कराजाजिपर्पटैः ॥ देवदार्वभ-
याशृंगीकणाभूनिंबनागरैः ॥ भार्गीकलिंगकटुकासठी-
कट्तृणधान्यकैः ॥ समांशैःसाधितःक्वाथोहिंग्वार्द्रक-
रसैर्युतः ॥ कर्णमूलोद्भवंशोथंहंतिमन्यागलाश्रयं ॥
कफवातज्वरंश्वासंकासंहिक्कांहनुग्रहं ॥ गलगंडंगंडमा-
लांस्वरभेदंकफात्मकं ॥ शिरोगुरुत्वंबाधिर्यंवृद्धिंचक-
फमेदसोः ॥ दशमूलज्वरान्ह्येषःसन्निपातज्वरान्जये-
त् ॥ अभिन्यासमसंज्ञांचकट्फलादिर्निहंतिच ॥

अर्थ—कायफर, नागरमोथा, वच, पाढ, पुहकरमूल, जीरा, पित्तपापडा, देवदार, हरड, कांकडासिंगी, पीपर, चिरायता, सोंठ, भारंगी, इन्द्रजो, कुटकी,

कचूर, रोहिषतृण, और धनिया ये औषध समान भागले काढाकरके, उसमें हीं-ग और अदरखका रस डालके पीवेतो, कर्णमूल, गर्दन और गलाइनकीसूजन, कफवातज्वर, श्वास, खांसी, हिचकी, हनुग्रह, गलगंड, गंडमाला, कफजन्यस्वरभेद, मस्तककीपीडा, वहरापना, कफ और मेदइनकीवृद्धि, दशप्रकारकाज्वर, सन्निपात, अभिन्यास, और संज्ञानाश इनको यह कट्फलादिकाढा नाशकरताहै ॥

पित्तोल्बणसन्निपातनिदान

रक्तविण्मूत्रतादाहोस्वेदस्तृड्बलसंक्षयं ॥
मूर्छाचेतित्रिदोषेस्याल्लिंगंपित्तेगरीयसि ॥

अर्थ—पित्तोल्बणसन्निपात होनेसैं मलमूत्रका लालहोना, दाह, पसीने, प्यास, वल, क्षय और मूर्च्छा ए लक्षण होते है ॥

पित्तोल्बणसं०चिकि०काढा

परुषकाणित्रिफलादेवदारुसकट्फलं ॥ चंदनंपद्मकंचैवतथाकटुकरोहिणी ॥ पृश्निपर्णीशतंत्वेभिरूषितंशीतलंजलं ॥ पित्तोत्तरेनृणामेतत्सान्निपातेचिकित्सितं ॥

अर्थ—फालसे, त्रिफला, देवदारु, कायफर, चंदनलाल, पद्माख, कुटकी और पिठवन ये औषध समान भागले रात्रिको शीतल जलमें भिगोयदेवे, प्रातःकाल काढाकर शीतल होनेपर पीवेतो पित्ताधिक संनिपात दूरहो ॥

चंदनादिपानी

चंदनंपद्मकंचैवतथाकटुकरोहिणी ॥ पृथक्पर्णीसमंसिद्धमुषितंशीतलंजलं ॥ पित्तोत्तरेनृणामेतत्सान्निपातेचिकित्सिते ॥

अर्थ—लाल चंदन, पद्माख, कुटकी, और पृष्ठपर्णी, एसमानभागले रात्रिमें शीतल जलमें भिगोयदेवे, प्रातःकाल उस जलको छानके पीवेतो पित्ताधिक सन्निपात दूरहो ॥

मुस्ताद्यष्टादशांग

मुस्तापर्पटकोशीरदेवदारुमहौषधं ॥ त्रिफलाधन्वयासश्चनीलीकंपिल्लकंत्रिवृत् ॥ किराततिक्तकंपाठाबलाकटुकरोहिणी ॥ मधुकंपिप्पलीमूलंमुस्ताद्योग-

णउच्यते ॥ अष्टादशांगमुदकंसन्निपातज्वरापहं ॥ पित्तोत्तरेसन्निपातेहितमुक्तंमनीषिभिः ॥ मन्यास्तंभेउरोघातेहनुस्तंभेशिरोग्रहे ॥

अर्थ—नागरमोथा, पित्तपापडा, खस, देवदार, त्रिफला, धमासा, नीली, कबीला, निसोथ, चिरायता, पाढ, खरेटी, कुटकी, मूलहटी, पीपरामूल, यह मुस्तादि अष्टादशांग गण इसका शीतल काढा संनिपातज्वरका नाशकरे, और यह ऋषियोंने पित्ताधिक संनिपात, मन्यानाडीके स्तंभ, उरोघात, हनुस्तंभ, इनपर कहा हैं ॥

किराताादिकाढा

किराततिक्तकंमुस्तंगुडूचीविश्वभेषजं ॥
पाठोदीच्यंमृणालंचशृतंपित्ताधिकेपिबेत् ॥

अर्थ—पित्ताधिक संनिपातमें चिरायता, कुटकी, नागरमोथा, गिलोय, सोंठ, पाढ, नेत्रवाला, और कमलगट्टा, इनका शीत काढादेवे ॥

शठ्यादिकाढा

शठीपुष्करमूलंचव्याघ्रीशृंगीदुरालभा ॥ वत्सकस्यचबीजानिपटोलंकटुरोहिणी॥एषशठ्यादिकोवर्गःसन्निपातज्वरापहः ॥ कासंश्वासंदिवानिद्रांरात्रौजागरणंतथा ॥ मुखशोषंतृषांदाहंत्रिदोषंचनियच्छति ॥

अर्थ—कचूर, पुहकरमूल, कटेरी, काकडासिंगी, धमासो, इन्द्रजो, पटोलपत्र और कुटकी, यह शठ्यादिवर्ग संनिपातज्वर, दमा, खाँसी, दिनकीनिद्रा, रात्रिमें जागना, मुखशोष, प्यास, दाह, और त्रिदोष इनका नाशकरे ॥

कफोल्बणसन्निपातनिदान

आलस्यारुचिहृल्लासदाहवम्यरतिभ्रमैः ।
कफोल्बणंसन्निपातंतंद्राकासेनचादिशेत् ॥

अर्थ—कफाधिक संनिपातमें आलस्य, अरुचि, हृल्लास, दाह, वमन, बेचैनी भ्रम, तन्द्रा, और खाँसी एलक्षण होते है ॥

कफोल्बणचिकित्सा

बृहत्यौपुष्करंभार्गीशठीशृंगीदुरालभा ॥ वत्सकस्यच-
बीजानिपटोलंकटुरोहिणी ॥ बृहत्यादिगणःशस्तःस-
न्निपातेकफोत्तरे ॥ श्वासादिषुचसर्वेषुहितःसोपद्रवेषुच ॥

अर्थ—दोनो कटेरी, पुहकरमूल, भारंगी, कचूर, काकडासिंगी, धमासों, इन्द्रजो, पटोलपत्र, और कुटकी यह बृहत्यादिगण कफादिकसंनिपात, दम और सर्वउपद्रवपर हितकारक है ॥

कफोल्बणोपरकाथ

कफोतरेबृहत्यादिगणश्चदशमूलजः ।
परूषकाणित्रिफलादेवदारुसकट्फलं ॥

अर्थ—कफाधिक संनिपातपर बृहत्यादिगण, दशमूल, फालसे, त्रिफला, देवदारु, और कायफल इनका काढा देय ॥

त्र्युल्बणसन्निपात

सर्वलक्षणसंयुक्तस्त्र्युल्बणस्तुमतोबुधैः

अर्थ—सर्वलक्षणोंकर्के युक्त होय उसको त्र्युल्बणसंनिपात जानना ॥

नागरादिकाढा

नागरंधान्यकंभार्गीपद्मकंरक्तचंदनं ॥ पटोलःपिचुमं-
दश्चत्रिफलामधुकंबला ॥ शर्कराकटुकामुस्तागजा-
ह्वाव्याधिघातकः ॥ किराततिक्तममृतादशमूलीनि-
दिग्धिका ॥ योगराजोनिहंत्येषःसन्निपातज्वरापहः ॥
सन्निपातसमुत्थानंमृत्युमप्यागतंजयेत् ॥

अर्थ—सोंठ, धनिया, भारंगी, पद्माख, लालचंदन, पटोलपत्र, नीमकीछाल, त्रिफला, मुलहटी, खटेरी, मिश्री, कुटकी, नागरमोथा, गजपीपल, अमलतास, कडुओ चिरायतो, गिलोय, दशमूल, और कटेली इनका काढा मृत्युसमानभी संनिपातका नाशकरे ॥

व्योषादिकाढा

व्योषाब्दत्रिफलारिष्टपटोलीतिक्तवत्सकैः ।

सभूनिंबामृतापाठैस्त्रिदोषज्वरजिज्जलं ॥

अर्थ—सोठ, मिरच, पीपल, नागरमोथा, हरड, वहेडा, आवला, नीमकी, छाल, पटोलपत्र, कुटकी, इंद्रजो चिरायता, गिलोय, और पाढ इनका काढा त्रिदोषज्वरका नाशकरे ॥

वातपित्तोल्बणसन्निपात

भ्रमःपिपासादाहश्चगौरवंशिरसोतिरुक् ॥
वातपित्तोल्बणेविंद्याल्लिंगंमंदकफज्वरे ॥

अर्थ—भ्रम, प्यास, दाह, गौरव, मस्तकपीडा, ये वातपित्तोल्वण और हीनकफ अेसे सन्निपातमें लक्षण होते है ॥

वातपित्तोल्बणचिकित्सा

वातपित्तहरंवृष्यंकनीयःपंचमूलकं ॥
तत्काथोमधुनाइंतिवातपित्तोल्बणंज्वरं ॥

अर्थ—वातपित्तनाशक, और वृष्य अेसो लघुपंचमूल है, अतएव इसका काढा सहत डालके देय तो वातपित्तोल्वण सन्निपातका नाशहोय ॥

वातश्लेष्मोल्वण

शैत्यंकासोरुचिस्तंद्रापिपासादाहरुक्तथा ॥
वातश्लेष्मोल्वणेव्याधौलिंगंपित्तावरेविदुः ॥

अर्थ—वातकफाधिक और हीनपित्त अेसा सन्निपात होनेसैं सरदी, खांसी-अरुचि, तंद्रा, प्यास, दाह और पीडा ए लक्षण होते है ॥

चिकित्सा

किराततिक्तकंमुस्तंगुडूचीविश्वभेषजं ॥
चातुर्भद्रकमित्याहुर्वातश्लेष्मोल्बणेज्वरे ॥

अर्थ—चिरायताकडुआ, नागरमोथा, गिलोय, और सोंठ, इनका काढा करके वातकफोल्वणज्वर वालेको देय, इसको चातुर्भद्र कहते है ॥

पित्तकफोल्बण

छर्दिःशैत्यंमुहुर्दाहस्तृष्णामोहोस्थिवेदना ॥
मंदेवातेऽव्यवस्यंतिलिंगंपित्तकफोल्बणे ॥

अर्थ—पित्तकफाधिक और हीनवात एसेसंनिपातके होने सैं वांती, शीत वा रंवार दाह, प्यास, मोह और हड्डियोंमें पीडा, ए लक्षण होते है ॥

चिकित्सा

पर्पटःकट्फलंकुष्ठमुशीरंचंदनंजलं ॥ नागरंमुस्तकंशृंगी-
पिप्पल्येषांशृतंहितं ॥ तृष्णादाहाग्निमांद्येषुपित्तश्ले-
ष्मोल्बणेज्वरे ॥

अर्थ—पित्तपापडा, कायफर, कूठ, खस, लालचंदन, नेत्रवाला, नागरमोथा सोंठ, काकडा सिंगी, और पीपल, इनका काढा प्यास, दाह, मंदाग्नि और पित्तकफात्मकज्वर इनका नाश करे ॥

(हीनवातमध्यपित्तवश्लेष्माधिकसं०)

प्रतिश्याछर्दिरालस्यंतंद्रारुच्यग्निमार्दवं ॥
हीनवातेमध्यपित्तेचिन्हंश्लेष्माधिकेमतं ॥

अर्थ—कफाधिक हीनवायु और मध्यपित्त अैसे सन्निपातहोनेसैं, सरेकमां, वमन, आलस्य, तंद्रा, अरुचि, और मंदाग्नि ये लक्षण होतेहै ॥

(हीनवातमध्यकफवपित्ताधिकसं०)

हारिद्रनेत्रमूत्रत्वक्दाहस्तृष्णाभ्रमोरुचिः ॥
हीनवात्तमध्यकफेलिंगंपित्ताधिकेमतं ॥

अर्थ—पित्ताधिक, हीनवायु, और मध्यकफ, अैसे संनिपातके होनेसैं नेत्र मूत्र और त्वचा ये पीलेहो, तथा दाह, प्यास, भ्रम और अरुचि ये लक्षण होते है ॥

(हीनपित्तमध्यकफववाताधिकसं०)

शिरोरुग्वेपथुश्वासप्रलापच्छर्द्यरोचकाः ॥
हीनपित्तेमध्यकफेलिंगंवाताधिकेमतं ॥

अर्थ—हीनपित्त. मध्यकफ. और वाताधिक अैसे सन्निपातमें मस्तकशूल, कंप, श्वास, प्रलाप, वमन और अरुचि ए लक्षण होते है ॥

(हीनपित्तमध्यकफश्लेष्माधिकसं)

शीतगौरवतंद्राश्चप्रलापोस्थिशिरोतिरुक् ॥
हीनपित्तेमध्यवातेलिंगंश्लेष्माधिकेमतं ॥

अर्थ—हीनपित्त. मध्यवात, और कफाधिक संनिपात होनेसैं शीतलगे, अंगोंमेंगौरवता, तन्द्रा, प्रलाप, हड्डी और मस्तकमें पीडा ए लक्षण होते है ॥

(कफहीनमध्यवातवपित्ताधिकसं०)

पर्वभेदोग्निदौर्बल्यंतृष्णादाहोरुचिभ्रमः ॥
कफेहीनेमध्यवातेलिंगंपित्ताधिकेविदुः ॥

अर्थ—कफहीन, मध्यवात और पित्ताधिक संनिपातमें संधियोंमें पीडा, मंदाग्नि, प्यास, दाह, अरुचि, और भ्रम ए लक्षण होते है ॥

(हीनकफमध्यपित्तववाताधिकसं०)

कासश्वासप्रतिश्यायमुखशोषोतिपार्श्वरुक् ॥
कफेहीनेमध्यपित्तेलिंगंवाताधिकेस्मृतम् ॥

अर्थ—हीनकफ. मध्यपित्त और वाताधिक सन्निपातमें खांसी, श्वास, सरेकमा, मुखशोष, और पसवाडोमें अत्यंत पीडा, ये लक्षण होते है ॥

(छहोंकिएकश्लोकसैंचिकित्सा)

प्रवृद्धंकर्षयेद्दोषंक्षीणंसंवर्द्धयेद्भिषक् ॥
चिकित्सेयंविधातव्यादोषयोर्हीनवृद्धयोः ॥

अर्थ—जो दोष बढाहो उसको क्षीण करे, और क्षीणदोषको वढावे, इसप्रकार वैद्य क्षीण वृद्धदोषोंकी चिकित्साकरे ॥

प्रवृद्धेशमितेदोषेमध्यमःस्वयमेवहि ॥
शांतिंयातिशमंनीतेत्वनुबंध्यनुबंधवत् ॥

अर्थ—वढे दोषके शांतिहोनेसैं मध्यमजो दोष है सो स्वयं शांति होजाते है जैसैं साथीका शांतहोनेसैं अर्थात् दूसरा दुर्बलहोनेसैं आपभी शांति होजाता है॥

द्वात्रिंशांगक्काथ

भार्गीभूनिंबनिंबाघनकटुकवचाव्योषवासाविशाला रा-

स्नानंतापटोलीसुरतरुरजनीपाटलातिंदुकैश्च॥ब्राह्मी-
दार्वीगुडूचीत्रिवृतमतिविषापुष्करत्रायमाणै र्व्याघ्री·
सिंहीकलिंगैस्त्रिफलशठियुतैःकल्पितस्तुल्यभागैः ॥
क्वाथोद्वात्रिंशनामात्रिभिरधिकदशान्सन्निपातान्निहं-
ति शूलंकासादिहिक्काश्वसनगदरुजाध्यानविध्वंसका-
री ॥ ऊरुस्तंभांत्रवृद्धीगलगदमरुचिंसर्वसंधिग्रहार्ति-
मातंगौघान्निहन्यान्मृगरिपुरिहचेद्रोगजालंतथैव ॥

अर्थ—भारंगी, चिरायता, नीमकीछाल, नागरमोथा, कुटकी, वच, सोंठ, मिरच, पीपल, अडुसा, इंद्रायणकागूदा, रासना, धमासा, पटोलपत्र, देवदारु, हलदी, पाढल, कुचला, ब्राह्मी, दारुहलदी, गिलोय, निसोथ, अतीस, पुहकरमूल, त्रायमाण, दोनोकटेरी, इन्द्रजो, हरड, वहेडा, आमला, और कचूर, ये सव औषध समानभागले काढाकरे, इसको द्वात्रिंशनामक्काथ कहते है यह तेरह प्रकारके संनिपात, शूल, खाँसी, हिचकी, श्वास, अफरा, उरुस्तंभ, अंत्रवृद्धि, गलेकारोग, अरुचि, और संधिग्रह, इनको जैसें, हाथियोंकी पंक्तिको सिंह नाश करताहै इसप्रकार यह काढा नाशकरे ॥

अष्टादशांगकाढा

भूनिंबदारुदशमूलमहौषधाब्दातिक्तेंद्रबीजधनिकेभक-
णाकषायः ॥ तंद्राप्रलापकसनारुचिदाहमोहश्वासा-
दियुक्तमखिलज्वरमाशुहंति ॥ अष्टादशांगइत्येषमृ-
त्युकल्पंज्वरंजयेत् ॥

अर्थ—चिरायता, देवदारु, दशमूल, सोंठ, नागरमोथा, कुटकी, इन्द्रजो, धनियां, और गजपीपल, इनका काढा करके पीवेतो तंद्रा, प्रलाप, खांसी, अरुचि, दाह, मोह, श्वास, इनकरके युक्त सर्वज्वरोंका नाशकरे यह अष्टादशांग काढा मृत्युतुल्य ज्वरका नाशकरे ॥

द्वादशांग

दशमूलीकषायस्तुसपौष्करकणान्वितः ॥
सन्निपातज्वरेदेयःश्वासकाससमन्विते ॥

अर्थ—दशमूल, पुहकरमूल, और पीपल इनका काढा संनिपात ज्वरपर देवे तो श्वास, खांसी, और सन्निपात इनका नाशकरे ॥

सन्निपातपररेचन

बिल्वकंत्रिवृतादंतीसमूलंचतुरंगुलं ॥ पक्कंकषायंविस्राव्यनीलीचूर्णविमिश्रितं ॥ ससर्पिष्कंपिबेच्चूर्णंसंनिपातेविरेचनं ॥

अर्थ—वेलगिरी, निसोथ, दंती, और अमलतासकागूदा, इनकाकाढा करके इसमें नीलकाचूरा और घीमिलाय देवेतो यह संनिपातका नाशकरे ॥

संज्ञानाशचिकित्सा

कंपःप्रलपनंयस्यसंज्ञानाशश्चदारुणः॥रसैश्चलावबर्तैश्चकुलिंगैःशशतित्तिरैः ॥ तर्पयेत्प्राक्पुराणेनसर्पिषाभ्यंजयेन्नरं ॥ बलारास्नागुडूच्याद्यैस्तैलैश्चपरिषचयेत् ॥

अर्थ—जो रोगी कंप, प्रलाप, और संज्ञानाश इनके युक्तहो इसको लवा, वटेर, चिड़ा, कबूतर, और तीतर, इनके मांसरस प्रथम पिलायके फिर अंगोंमें पुरानेघीकी मालिस करावे। तथा खरेटी, रासना, और गिलोय इनका तेल देहमें लगावे ॥

बिल्वादिकाढा

बिल्वाग्निमंथःस्योनाकःकाश्मरीपाटलातथा ॥ शालिपर्णीपृश्निपर्णीबृहतीद्वयगोक्षुरैः । उभयंदशमूलंस्यात्सान्निपातहरोगणः ॥

वेलगिरी, अरनी, टेंटू, कंभारी, पाढ, सालपर्णी, पृष्टपर्णि, दोनोकटेरी, और गोखरू, ये दशमूल है इनका काढा सन्निपात नाशक है ॥

शुंठ्यादिकाढा

शुंठीदारुशठीरजोबृहतिकातिक्ताकिरातांबुदानंताभिर्जनितःकषायकवरःकृष्णामधुभ्यांयुतः ॥ निःशेषंत्रितयोद्भवज्वरहरोजीर्णज्वरस्यांतकृत्कासारिर्विषमापहोनिगदितःशुंठ्यादिकःसूरिभिः ॥

अर्थ—सोंठ, देवदारु, कचूर, पित्तपापडा, कटेरी, कुटकी, चिरायता, नागरमोथा, और धमासा इनका काढा पीपलका चूर्ण और सहतडालके देवे तो निःशेष संनिपात, जीर्णज्वर, और खाँसी इनको यह शुंठ्यादि काढा नाशकरे॥

अर्कादिकाढा

अर्कानंताकिरातामरतरुरसनासिंधुवारोग्रगंधातर्का-
रीशिग्रुपंचोषणघुणदयितामार्कवाणांकषायः॥ सद्य-
स्तीव्रान्त्रिदोषानपहरतितथामारुतंदंतबधंशैत्यंगा-
त्रेषुगाढंश्वसनकसनकंसूतिकावातरोगान्॥

अर्थ—आककीजड, धमासो, चिरायता, देवदारु, रासना, निर्गुंडी, वच, अरनी, सहजना, पीपर, पीपरामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, अतीस, और भाँगरा, इनका काढा देय तो घोर त्रिदोष, धनुर्वात, बत्तीसीकाभिचना, देहकी अत्यंत सरदी, श्वास, खाँसी, प्रसूतके और वादीके सर्वरोगोंको नाशकरे॥

तिक्तादिकाढा

तिक्तातिक्तकपर्पटामृतसठीरास्नाकणापौष्करं त्रायं-
तीबृहतीसुरौषधशिवादुःस्पर्शभार्गीकृतः॥ क्वाथो-
नाशयतित्रिदोषनिकरंस्वापंदिवाजागरंनक्तंतृण्मुख-
शोषदाहकसनश्वासानशेषानपि॥

अर्थ—कुटकी, चिरायता, पित्तपापडा, गिलोय, कचूर, रास्ना, पीपल, पुहकर मूल, त्रायमाण, कटेरी, देवदारु, सोंठ, हरड, धमासो, और भारंगी इनका काढा करके देवेतो त्रिदोष, दिनकीनिद्रा, रात्रिकाजागना, प्यास, मुखशोष, दाह, खांसी, और संपूर्णश्वास, इनका नाशकरे॥

त्रिदोषपर

पित्तप्रायेचशठ्यादिर्बृहत्यादिःकफादिके॥
वातोत्तरेसन्निपातेकट्फलादिःप्रयोजयेत्॥

अर्थ—पित्ताधिक संनिपातवालेको शठ्यादिकाढा और कफाधिकवारेको बृहत्यादिकाढा एवं वाताधिक्य संनिपातवालेको कट्फलादिकाढेकी योजना करे॥

दार्व्याद्यष्टादशांग

दारुनागरभूनिंबधान्यतिक्ताकलिंगजैः ॥ गजाह्वाद-
शमूलाब्दैर्मृत्युकल्पंज्वरंजयेत् ॥ अष्टादशांगइत्येषः
सन्निपातज्वरापहः ॥ कासहृद्ग्रहपार्श्वार्तिश्वास-
हिक्कावमीहरः ॥

अर्थ—देवदारु, सोंठ, चिरायता, धनिया, कुटकी, इन्द्रजौं, गजपीपल, द-शमूल, और नागरमोथा, इन अठारह औषधोंका काढा देयतो अत्यंत कठिन मृत्युके समान ज्वर, सन्निपातज्वर, खांसी, हृदयशूल, पसवाडेकीपीडा, श्वास, हिचकी, और वमन इनका नाशकरे ॥

गुडूच्यादिकाढा

गुडूचीचंदनंपद्मंनागरेंद्रयवासकं॥ अभयारग्वधोशी-
रपाठाधान्याब्दरोहिणी॥कषायंपाययेदेतंपिप्पली-
चूर्णसंयुतं ॥ तंद्राकासज्वरश्वासपिपासादाहनाशनः॥
विण्मूत्रानिलविष्टंभत्रिदोषप्रभवस्यच ॥ गुडूच्यादि-
गणोह्येषःपाचनोदीपनःपरः ॥

अर्थ—गिलोय, चंदन, पुहकरमूल, सोंठ, इन्द्रजो, धमासा, हरड, अमलतासका गूदा, नेत्रवाला, पाढ, धनिया, नागरमोथा, कुटकी, इनका काढा कर उसमें पीपलका चूर्ण मिलायके देवेतो तन्द्रा, खांसी, ज्वर, श्वास, प्यास, दाह, मलमूत्र, वायुकारुकना, त्रिदोषजन्यज्वर, इनको यह गुडूच्यादिगणकाढा दूरकरे और दीपन पाचनहै ॥

अमृतादिकाढा

अमृतादशमूलीभ्यांसाधितंविधिवज्जलं ॥
संनिपातज्वरंहन्यात्त्रयोदशविधंनृणां ॥

अर्थ—गिलोय और दशमूल इनका काढा तेरहप्रकारके संनिपातज्वरोंको दूरकरे

विश्वादिकाढा

विश्वशुंठीदशमूलीछिन्नापाठाचपिप्पलींद्रयवैः ॥
सकिराततिक्तवासाशमयातिहतौजसंसद्यः ॥

अर्थ—अतीस, सोंठ, दशमूल, गिलोय, पाठ, पीपर, इन्द्रजो, कडुआचिरायता, और अडूसा इनका काढा देयतो ज्वरकर्के क्षीणहुआ रोगी शीघ्र अच्छाहोय॥

त्र्यूषणादिकाढा

त्र्यूषणदशमूलशुंठीभार्गीछिन्नोद्भवःक्वाथः।
पीतःशमयतिसहसाज्वरमुग्रंसंनिपाताख्यं॥

अर्थ—त्रिकुटा, दशमूल, सोंठ, भारंगी, और गिलोय इनका काढा उग्रसंनिपातको शमन करे॥

दशमूलादिकाढा

द्विपंचमूलीषड्ग्रंथाविश्वगृध्रनखीद्वयं।
कफवातहरःक्वाथोसंनिपातहरःपरः॥

अर्थ—दशमूल, पीपरामूल, सोंठ, वेर, और, झरियावेर इनका काढा कफवात हारक और संनिपातको दूरकरे॥

आढरूषादिकाढा

सिंहास्यपर्प्पटारिष्टयष्टीधान्याब्दनागरं॥ दारूग्रगंधेंद्रयवाश्वदंष्ट्राग्रंथिकंतथा॥ एषांकषायमाहृत्यसंनिपातज्वरीपिबेत्॥ श्वासातिसारकासघ्नशूलारुचिहरंपरं॥

अर्थ—अडूसा, पित्तपापडा, नीमकीछाल, मुलहटी, धनिया, नागरमोथा, सोंठ, देवदारु, वच, इन्द्रजो, गोखरू, और पीपलामूल, इनका काढा सन्निपातज्वर, श्वास, अतिसार, खाँसी, शूल और अरुचिको दूरकरे॥

कट्फलादिकाढा

कट्फलंत्रिफलादारुचंदनंसपरूषकं॥ कटुकंपद्मकोशीरंविपचेत्कार्षिकंजले॥ तत्संनिपातदाहघ्नंपानमात्रेणपूजितं॥ दीर्घकालप्रयुक्तानांज्वराणाममृतोपमं॥

अर्थ—कायफर, त्रिफला, देवदारु, लालचंदन, फालसे, पटोलपत्र, पद्माख, और नेत्रवाला, इनका काढा संनिपात, दाह, जीर्णज्वर, इनपर साक्षात् अमृतके तुल्यहै

किरातादिकाढा

चिरज्वरेवातकफोल्बणेवात्रिदोषजेवादशमूलमिश्रः। किराततिक्तादिगणःप्रयोज्यःशुद्ध्यर्थिनेवात्रिवृताविमिश्रः ॥ किराततिक्तकोमुस्तंगुडूचीविश्वभेषजं ॥ किरातादिगणोह्येषश्चातुर्भद्रकमित्यपि ॥

अर्थ—बहुतादिनका वात कफोल्बण ज्वर और त्रिदोष ज्वर इनपर चिरायता, नागरमोथा, गिलोय और सोंठ यह किरातादिगण और दशमूलकी औषध इनका काढा करके देवे यदि इसको दस्तलानेके अर्थ देवेतो इसमें निसोथ और मिलायलेवे ॥

अष्टादशांगकाढा

दशमूलीशठीशृंगीपौष्करंसदुरालभं॥ भार्गीकुटजबीजंचपटोलंकटुरोहिणी ॥ अष्टादशांगइत्येषःसंनिपातज्वरापहः ॥ कासहृद्ग्रहपार्श्वार्तिश्वासहिक्कावमीहरः॥

अर्थ—दशमूल, कचूर, काकडासिंगी, पुहकरमूल, धमासो, भारंगी, इन्द्रजो, पटोलपत्र, और कुटकी इसको अष्टादशांग कहते है यह काढा सन्निपात ज्वर, खाँसी, हृद्रोग, पार्श्वशूल, श्वास, हिचकी, और वमन इनको नाशकरे ॥

पंचतिक्तककाढा

क्षुद्रापुष्करभूनिंबगुडूचीविश्वभेषजैः ॥ पंचतिक्तकनामायंक्काथोहंत्यष्टधाज्वरं ॥

अर्थ—कटेरी, पुहकरमूल, चिरायता, गिलोय, और सोंठ, यह पंचतिक्तनामक गणहै, इसका काढा आठप्रकारके ज्वरोंको नाशकरे ॥

दार्व्यंबुदादिकाढा

दार्व्यंबुदातिक्तफलत्रिकंचक्षुद्रापटोलीरजनीसनिंबा। क्काथंविदध्याज्ज्वरसन्निपातेनिश्चेतनेपुंसिविबोधनार्थं ॥

अर्थ—दारहलदी, नागरमोथा, चिरायता, त्रिफला, कटेरी, पटोलपत्र, हलदी और नीमकीछाल, इनका काढा संनिपातज्वरोंमें जो मूर्च्छा आतीहै उसे दूरकरे।

ग्रंथ्यादिकाढा

ग्रंथींद्रजामरपुरक्रमिशत्रुभार्गीभृंगत्रिकट्वनलकट्फलपौष्कराणां ॥ रास्नाभयाबृहतिकाद्वयदीप्यभूतकेशीकिरातकवचाचविकावृकीणां ॥ क्वाथोहन्यात्संनिपातान्समग्रान्बुद्धिभ्रंशस्वेदशैत्यप्रलापान् ॥ शूलाध्मानंविद्रधिंश्लेष्मवातान्वातव्याधीन्सूतिकानांचतद्वत् ॥

अर्थ—पीपरामूल, इन्द्रजो, देवदारु, गूगल, वायविडंग, भारंगी, भागरों, त्रिकुटा, चित्रक, कायफर, पुहकरमूल, रास्ना, हरड, दोनोंकटेरी, अजमायन, निर्गुंडी, चिरायता, बच, चव्य, और पाठ, इनका काढा सर्वसंनिपात, बुद्धिभ्रंश पसीने, शीत, प्रलाप, शूल, अफरा, विद्रधि, कफबात, वादीकेरोग, और प्रसूतकेरोग, इनका नाशकरे ॥

लशुनादिकाढा

लशुनंतिक्तकंकांडंभार्गीचातिविषातथा ।
नरमूत्रेणचक्काथःसन्निपातेसुदारुणे ॥

अर्थ—लहसन, चिरायता, तिरकांड, भारंगी, और अतीस इनको घोडेके मूत्रमें काढाकरके देयतो दारुणसंनिपातज्वर नाशहोय ॥

दशमूलादिकाढा

दशमूलस्यनिर्यूहःकट्फलादिरजोयुतः ।
तुल्यार्द्रकरसोपेतोमृत्युकल्पंज्वरंजयेत् ॥

अर्थ—दशमूलका निर्यूहकरके उसमें कायफलका चूर्ण और काढेके समान अदरखका रस डालके देयतो मृत्युके समान कठिन ज्वरका नाशकरे ॥

पंचमूलादिकाढा

पंचमूलीकिरातादिर्गणोयोज्यस्त्रिदोषजे ।
पित्तोत्कटेतुमधुनाकणयाचकफोत्कटे ॥

अर्थ—पंचमूल, और किरातादिगण इनका काढा त्रिदोषजनित ज्वरपर तथा पित्तोत्कटपर सहतके और पीपलका चूर्ण मिलाय के देवे ॥

अर्कादिकाढा

अर्कग्रंथिकशिग्रुदारुचविकानिर्गुंडिकापिप्पलीरा-
स्नाभृंगपुनर्नवानलवचाभूनिंबशुंठीकृतः ॥ क्वाथःसं-
हरतित्रिदोषमखिलंस्वापानिलंसूतिकानानामारु-
तशैत्यशांतिकृदपस्मारस्मरत्र्यंबकः ॥

अर्थ—आककीजड, पीपरामूल, आमलतासकोगुदो, देवदार, चव्य, निर्गुंडी, पीपल, रास्ना, भाँगरो, साँठ, चित्रक, वच, चिरायता, और सोंठ, इनका काढा सर्व त्रिदोष ज्वर, निद्रा, प्रसूतकेरोग, अनेक प्रकारकीवायू, शीत, अपस्मार, इनका नाशकहै ॥

मृतसंजीवनविटिका

विषंत्रिकटुकंगंधंटंकणंमृतशुल्बकं॥ धतूरस्यचबीजा
निहिंगुलंनवमंमतं॥ एतानिसमभागानिदिनैकंविज-
याद्रवैः ॥ मर्दयेच्चणकाकाराकर्तव्यावटिकाथसा॥
भक्षणीयानुपातव्योरविमूलकषायकः॥ मृतसंजीव-
नीनाम्नासंनिपातज्वरांतकृत् ॥

अर्थ—सिंगियाविष, त्रिकुटा, गंधक, सुहागा, ताम्रकीभस्म, धतुरेकेबीज, और हिंगुल, ए नौऔषध समान लेकर चूर्णकर भाँगरेकेरसमें एकदिन खरलकरे फिर चनेके प्रमाण गोली बनावे एकगोली खायके ऊपरसे आककीजडका काढा पीवे तो संनिपातज्वरका नाशहो ॥

त्रिनेत्ररस

शुद्धसूतंसमंगंधंसूतांशंमृतताम्रकं ॥ त्रिभिस्तुल्यैर्ग-
वांक्षीरैर्मर्दयेदातपेखरे ॥ मर्दयेद्दिनमेकंतुनिर्गुंडीशि-
ग्रुजद्रवैः ॥ विधायगोलंतंगोलमंधमूषागतंपचेत् ॥
त्रियामान्वालुकायंत्रेततःखल्वेविचूर्णयेत्॥ अष्टमां-
शंविषंतत्रक्षिपेत्तेनापिमर्दयेत्॥ त्रिनेत्राख्योरसोह्ये-
षदेयोगुंजाद्वयोन्मितः॥ पंचकोलकषायेणछागीदु-

अंतकसं० निदान

दाहंकरोतिपरितापनमातनोतिमोहंददातिविदधातिशिरः प्रकंपं ॥ हिक्कांकरोतिकसनंचसमाजुहोतिजानीहितंविबुधव-र्जितमंतकाख्यं ॥

अर्थ—दाह, संताप, मोह, शिरःकंप, हिचकी, और खांसी येअंतक संनिपा-तके लक्षणहै इसअंतकसंनिपातकोवैद्यत्यागदे॥

अंतकेरोटिकाबंधनं

अयंप्रयोगोयदिसन्निपातेभिषग्वराणांकथितोनुभूतः ॥ सरा-गिकापिष्टपलांडुतोयंविधायसम्यक्सरोटिकांच ॥ मूर्द्धीपुनः स्निग्धविभर्जिताचसोष्णाचताल्वोपरिबंधनीया ॥ यामद्वयं-बध्यपुनश्चवध्वायावन्मनुष्योधृतिमातनोति ॥ एवंविधिश्चां-तकसंनिपातेमृत्युव्यथागच्छतिनिश्चयेन ॥

अर्थ—वैद्योंने बहुत अनुभव करके अंतक संनिपातपर यह प्रयोग कहा है कि राईकेचूर्णको लहसनके रसमें सानके उसकीरोटि बनाय तेलमें अथवा घृतमें सेक गरमागरम मस्तकपर बाँधे, दोपहरकेवाद फिर बाँधे तो मनुष्यके अंतक सं-निपातकी व्यथा दूरहोय परंतु हमारी समझमें उसरोटीको अंडिके तेलमें सेके ॥

मृतसंजीवनीरस

शुद्धंसूतंसमंगधंखल्वेवैकज्जलीकृतं ॥ तथालोहकभस्मात्र-ताम्रभस्मसमंसमं ॥ विषतालककंकुष्ठंशिलाहिंगुलचित्रकैः ॥ हस्तिमुंडीचातिविषंत्र्यूषणंहेममाक्षिकं ॥ भृंगीकुंभीमिघना-दाःप्रतिचूर्णरसांशकं ॥ त्रिदिनंमर्दयेत्खल्वेद्रवैरार्द्रकसंभवैः॥ निर्गुंडीविजयाद्रावैस्त्रिदिनंमर्दयेत्पुनः ॥ जंबीरस्यचचांगे-र्याद्रवैःसंमर्दयेद्दिनं ॥ काचकुप्यांनिवेश्याथवालुकायंत्रगंप चेत् ॥ द्वियामांतेसमुद्धृत्यमर्दयेच्चार्द्रकद्रवैः ॥ दिनैकंशोषि-तंचूर्णंत्रिगुंजंसंनिपातजित्॥ मृतसंजीवनोनामरसोयंशंकरो-

दितः ॥ मृतोपिसंनिपातेनजीवत्येवनसंशयः ॥ सक्षीरंदापयेत्पथ्यंदेयोवानंदभैरवः ॥

अर्थ—पारा, और गंधक दोनो की कजलीकरे फिर लोहभस्म, विष, हरताल, मुरदासिंग, मनसिल, हींगरू, चित्रक, इन्द्रायनका गूदा, अतीस, त्रिकुटा, सोनामक्खी, भांग, जमालगोटा, और चौलाईकीजड, सब समानले अदरक और भांगरेके रसमें एकदिन खरलकरे, फिर काँचकी शीशीमें भर वालुका यंत्रमें २ प्रहर पचन करावे, फिर अदरखके रसमें एक दिन घोटे तो शिवप्रोक्त मृतसंजीवनीरस तयारहो इसको तीन रत्ती देय तो सन्निपातसैं आसन्नमरणवालाभी रोगी बचजावे। इसके ऊपर दूध भात पथ्यदेवे अथवा यह रस नमिले तो आनंद भैरव रस देना चाहिये. ॥

पथ्यादिकाढा

पथ्यावृषारग्वधदारुतिक्तारास्नागुडूचीगदजःकषायः ॥
सोपद्रवाच्चांतकनामधेयाज्ज्वरान्नरंमोचयतीतिचित्रं ॥

अर्थ—हरड, अडूसा, अमलतासका गूदा, देवदारु, कुटकी, रास्ना, गिलोय, और कुलीजन इनका काढा उपद्रवसहित मनुष्यको अंतकज्वरसैंमुक्तकरे इसमें क्या आश्चर्य है ॥

असाध्यत्वकहते है

इहापहायवृतमुष्णवारिज्वरारियूषादिगदापहारि।
ज्वरच्छिदंजीवितदंचनित्यंमृत्युंजयंचेतसिचिंतयस्व ॥

अर्थ—अंतक संनिपात होनेसैं गरम जल, ज्वरनाशक काढे, यूष इत्यादिको त्यागके जीवनका देनेवाला और ज्वर नाश कर्त्ता जो मृत्युंजय शिव उसका चिंतवन करे ॥

भिषग्भिरितिनिर्णीतंसंनिपातेंतकाभिधे।
भेषजंजान्हवीनीरंवैद्योगोविंदएवहि ॥

अर्थ—अंतक संनिपात होनेसैं वैद्योंने ऐसा निश्चय करा है कि उस रोगीका विष्णुभगवान् वैद्यहै और गंगाजल यही औषधी है अर्थात् भगवन्नामस्मरण और गंगाजल पीवे. ॥

रसमें सहत मिलायके पीवेतो जठराग्निकी वृद्धि होय, और घृत मांसादिक भारी अन्न यथेष्ट भक्षणकरे तोभी पचजावे तथा मस्तकपर जलकीधार देनी चाहिये ॥

उन्मत्तरस

रसगंधकतुल्यांशंधतूरफलजैरसैः ॥ मर्दयेद्दिनमेकं-
चतत्तुल्यंत्रिकटुक्षिपेत् ॥ उन्मताख्योरसोनामनस्ये-
स्यात्संनिपातजित् ॥

अर्थ--शुद्धपारा. १ भाग, गंधक १ भाग, इनको धतूरेके फलके रसमें एकदिन खरलकर फिर इसमें वराबरका त्रिकुटाका चूर्ण मिलावे, इस रसकी नस्य लेनेसैं संनिपात दूरहोवे ॥

कनकसुंदररस

कनकस्याष्टशाणाःस्युःसूतोद्वादशभिर्मतः ॥ गंधो-
पिद्वादशप्रोक्तस्ताम्रंशाणद्वयोन्मितं ॥ अभ्रकस्यच-
तुःशाणंमाक्षिकस्यद्विशाणकं ॥ वंगोद्विशाणःसौवीरं-
त्रिशाणंलोहमष्टकं ॥ विषंत्रिशाणकंकुर्यात्लांगलीप-
लसंमिता ॥ मर्दयेद्दिनमेकंचरसैरम्लफलोद्भवैः ॥ द-
द्यान्मृदुपुटेवन्हौततःसूक्ष्मंविचूर्णयेत् ॥ माषमात्रोर-
सोदेयःसंनिपातेसुदारुणे ॥ आर्द्रकस्वरसेनैवरसोन-
स्वरसेनवा ॥ किलासंसर्वकुष्टानिविसर्पंचभगंदरं ॥
ज्वरंगरमजीर्णंचजयेद्रोगहरोरसः ॥

अर्थ--सोना २४ मासे, पारा ३ तोले, गंधक ३ तोले, तामेकीभस्म ८ मासे, अभ्रकभस्म १६ मासे, सोनामक्खीकीभस्म ८ मासे, वंगभस्म ८ मासे, शुद्धसुरमा २ तोलेभर, लोहभस्म २॥ तोले, सिंगियाविष ६ तोलेभर, कलयारीकीजड ४ तोलेलेय, सवको नीवूके रसमें १ दिन खरलकर मिट्टीके सराव संपुटमें रख कपडमिट्टी चढाय आरने उपलोंकी हलकी पुटदेवे, शीतलहोनेपर उसमेंसे निकाल खरलमें डाल वारीक चूर्णकरके धररक्खे, इसको कनकसुंदर रस कहतेहै यह १ मासे अदरखके रसमें अथवा लहसनके रसमें लेयतो घोर संनिपातको दूरकरे, तथा किलासकुष्ट, इतरकुष्ट, विसर्प, भगंदर, ज्वर, विषदोष, और अजीर्ण, ये रोग दूरकरे ॥

तंद्रासा०

सन्निपातज्वरोत्पन्नांयुक्त्यातंद्रांजयेद्भिषक् ॥
उपद्रवःकष्टतमोज्वराणांसविशेषतः ॥

अर्थ—सन्निपातज्वरमें तन्द्राउत्पन्नहोतीहै उसको वैद्य युक्तिसैं जीते, यह ज्वरमें कष्टसाध्य उपद्रवहै ॥

तंद्रालक्षण

आचितामाशयकफेसंनिपातज्वरेदृढे॥ शांतेत्ववश्यंतस्याशुतंद्रासमुपजायते ॥ अभिद्रवरसक्षीरादिवास्वापनिषेवणात् ॥ दुर्बलस्याल्पवातस्यजंतोःश्लेष्माप्रकुप्यति ॥ वायुर्मार्गंसमावृत्यधमनीरनुसृत्यसः॥ तंद्रासुघोरांजनयेत्तस्यावक्ष्यामिलक्षणं॥ उन्मीलितविनिर्भुग्नेपरिवर्तिततारके ॥ भवतस्तस्यनयनेलुलिते चलपक्ष्मणी ॥ विवृताननदंतौष्ठं मुहुरुत्तानशायिनं ॥ पिच्छिलोच्छिन्नतंतुश्चकंठेश्लेष्मास्यगच्छति ॥ कंठमार्गविरोधश्चवैकृतंचोपजायते ॥ सोर्वाक्त्रिरात्रंसाध्यः स्यादसाध्यस्तुततः परं ॥

अर्थ—जिसज्वरमें आमाशयमें आम और कफ इनके संचय करके दृढसंनिपात होकर शांतिहोनेपर उस रोगीके निश्चय तन्द्रा उत्पन्नहोती है। और पतलेरस, दूध, और दिनकीनिद्रा इनके सेवन करनेसैं दुर्बल तथा अल्पवायूवालेरोगीकै कफ कुपितहोता है और वो कफवायूके मार्गको रोककर धमनियोंमें प्रवेशकरते है और घोर तन्द्रा उत्पन्नकरे उसके लक्षण कहताहूं। उसरोगीके नेत्र आधे मिचेहुए किंवा टेढेसे हो, तारे फिरे तथा नेत्रोंकी वन्नी चंचलहो, नेत्रगिरेसैं प्रतीतहो, होट अचंचलहोकर मुख खुला तथा दांत वाहरसैं दीखे, वारंवार चित्त लेटे, चिकना तंतुयुक्त कफको गलेमें लावे तथा कंठमार्ग रुकजावे इसप्रकार विकृतिहोतीहै यह तीनरात्रिके पूर्व साध्यहै और त्रिरात्रानंतर असाध्य जानना ॥

असुरादिअंजन

असुराह्वस्य विट्चूर्णं कस्तूरी मधुसंयुतं ।

अंजनाद्बोधयेन्मुग्धं तंद्रितं सन्निपातिनं ॥

अर्थ—कांसेके मलका चूर्ण, कस्तूरी, और सहत, इनका अंजन करनेसें संनिपातरोगीकी तन्द्रा दूरहोय ॥

लोहांजन

अयोरजः श्वेतलोध्रमंजनंमरिचंतथा ।
गोरोचनसमायुक्तंतंद्रानाशनमुत्तमं ॥

अर्थ—लोहभस्म, सपेदलोध, मिरच, और गोरोचन ये सर्वऔषध खरलकर अंजन करेतो तंद्राका नाश करनेमें उत्तमहै ॥

सैंधवादिअंजन

अंजनं सम्यगारब्धं मधुसिंधुशिलोषणैः ।
प्रमोहद्रोहिभवति भाषितं भिषजांवरैः ॥

अर्थ—सैंधानिमक, मनसिल, और त्रिकुटा ये समानले सहतसैं खरलकर अंजन करेतो तंद्राकी नाशकहो ऐसैं उत्तम वैद्योंने कहाहै ॥

जोतिष्मतीनस्य

ज्योतिष्मत्यास्तथातैलंमूलंपिंडारकस्यच ।
बस्तमूत्रेणसंपिष्टानस्यंतंद्रानिवारणं ॥

अर्थ—मालकागनीकातेल, और पिंडारककी जड इनको बकराके मूत्रमें पीस नस्यदेवेतो तन्द्रा दूरहो ॥

जातीपुष्पनस्य

जातीपुष्पप्रवालंचमरिचंरोहिणिवचा ॥
सैंधवंबस्तमूत्रेणतंद्रानाशनमुत्तमं ॥

अर्थ—जाईकेफूल, औरमूंगा, कालीमिचर, कुटकी, वच और सैंधानिमक, इनका वकराके मूतमें नस्यदेवेतो तंद्राको नाशकरे

द्राक्षाद्यवलेह

स्विन्नमामलकंपिष्ट्वाद्राक्षयासहमेलयेत् ॥ विश्वभेषजसंयुक्तंमधुनासहलेहयेत् ॥ तेनास्यशाम्यातिश्वासःकासोमूर्च्छारुचिस्तथा ॥

अर्थ—आमलेनको सिजायकर पीसडाले, फिर इसमें मुनकादाख, सोंठ, इनकाचूर्ण मिलाय सहतके साथ देवेतो खाँसी, श्वास, मूर्छा, अरुचि, ये रोग दूरहो

संनिपातप्रकोपकारण

अम्लस्निग्धोष्णतीक्ष्णैः कटुमधुरसुरातापसेवाकषायैःकामक्रोधातिरूक्षैर्गुरुतरपिशिताहारसौहित्यशीतैः ॥ शोकव्यायामचिंताग्रहणवनितयात्यंतसंगप्रसंगैः प्रायःकुप्यंतिपुंसांमधुसमयशरद्वर्षणेसंनिपाताः ॥

अर्थ—खट्टे, चिकने, गरम, विदाही, चरपरे, मधुर, मद्य, धूप, कसेंलेपदार्थोंके सेवनसैं तथा काम, क्रोध, अतिरूक्ष, भारीपदार्थोंका कंठपर्यंतभोजन, मांसभक्षण, शीतपदार्थसेवन, शोक, श्रम, चिंता, पिशाचबाधा, अतिस्त्रीप्रसंग, इनकारणोंसैं और चैत्र, वैशाख, आश्विन, कार्तिक, श्रावण, भाद्रपद, इनमहिनोंमें संनिपातका प्रायः प्रकोपहोताहै ॥

संनिपातोंकेनाम

संधिकश्चांतकश्चैवरुग्दाहश्चित्तविभ्रमः ।शीताङ्गस्तंद्रिकःप्रोक्तःकंठकुब्जश्चकर्णकः ॥ ३ ॥ विख्यातोभुग्ननेत्रश्चरक्तष्ठीवीप्रलापकः । जिह्वकश्चेत्यभिन्यासस्सन्निपातास्त्रयोदश ॥ ४ ॥

अर्थ–१ संधिक, २ अंतक, ३ रुग्दाह, ४ चित्तविभ्रम, ५ शीतांग, ६ तंद्रिक ७ कंठकुब्ज, ८ कर्णक, ९ भुग्ननेत्र, १० रक्तष्ठीवी, ११ प्रलापक, १२ जिव्हक, और १३ अभिन्यास, ये तेरह संनिपात कहेहैं ॥

उनकीमर्यादा

संधिकेवासराःसप्त चान्तकेदशवासराः । रुग्दाहेविंशतिर्ज्ञेया वन्ह्यष्टौचित्तविभ्रमे ॥ ५ ॥ पक्षमेकंतुशीतांगेतन्द्रिकेपंचविंशतिः । विज्ञेयावासराश्चैवकंठकुब्जेत्रयोदश ॥६ ॥ कर्णकेचत्रयोमासाभुग्ननेत्रेदिनाष्टकं । रक्तष्ठीविदशाहानिचतुर्दशप्रलापके ॥ ७ ॥ जिह्वकेषोडशाहानिकलाभिन्यासलक्षणे । परमायुरिदंप्रोक्तंम्रियतेतत्क्षणादपि ॥ ८ ॥

अर्थ—संधिककी ७, अंतककी १०, रुग्दाहकी २०, चित्तविभ्रमकी २४, शी-

तांगकी १९, तंद्रिककी २५, कंठकुब्जकी १३, कर्णककीतीन महीना (९०, दिन) भुग्ननेत्र ८, रक्तष्ठीवीकी १०, प्रलापककी १४, जिव्हककी १६, अभिन्यासकी १६ दिनकीये, सन्निपातोंकी परमायुके दिन कहेहैं । परंतु रोगी शीघ्रवी मरजाता है ॥

साध्यासाध्य

सन्धिकस्तन्द्रिकश्चैवकर्णकःकंठकुब्जकः ।
जिव्हकश्चित्तविभ्रंशःषट्साध्याःसप्तमारकाः ॥ ९ ॥

अर्थ—संधिक १, तंद्रिक २, कर्णक, ३, कण्ठकुब्ज ४, जिव्हक ९, चित्तविभ्रंश ६, येछह साध्य हैं बाकी बचे सातसो मारक हैं ॥

संधिकसन्निपात

पूर्वरूपकृतशूलसंभवंशोषवातबहुवेदनान्वितं ॥ श्लेष्मतापबलहानिजागरंसन्निपातमितिसंधिकंवदेत् ॥

अर्थ—जिसज्वरके पूर्वरूपमें शूल, शोष, वायुकी अत्यंतपीडा, कफ, संतापबलकी हानी, और जागरण येलक्षण हो उसको संधिक संनिपात जानना ॥

संधिकारिरस

शुद्धंसूतंसमंगंधंमारितंचाभ्रकंसमं॥ त्रिक्षारजीरकव्योषत्रिफलालवणैःसमं॥चित्रकस्यकषायेणदिनैकंमर्दयेद्दृढं ॥ गुंजापंचमितंखादेत्संधिकारिरितिस्मृतः ॥ पिप्पलीमधुनाचानुपिबेदुष्णोदकंतथा ॥

अर्थ—शुद्धपारा, शुद्धगंधक, अभ्रकभस्म, तीनोक्षार, जीरा, त्रिकुटा, त्रिफला, निमक, येसमानभागले, चित्रकके काढेमें १ दिनखलकरे यह संधिकारी रस ५ रत्ती सहत पीपल इनके साथ देवे, और ऊपर गरमजल पीवावे तो यह संधिक सन्निपातको दूरकरे ॥

संनिपातानलरस

रसभस्मसमंगंधंताम्रभस्मद्वयोःसमं ॥ ताम्रतुल्यंखर्परंचखर्परांशंचहिंगुलं ॥ अम्लवेतसकाभावेक्षारंचणकसंभवं ॥ जंबीरैर्गर्भितंरुध्वापुटकेभूधरेपचेत् ॥ आदायखल्लयेच्चूर्णंहिंगुक-

पूरत्र्यूषणं ॥ चत्वारःसूततुल्याःस्युःसप्तब्राम्हचार्द्रकद्रवैः ॥
भावयेच्चमहाराष्ट्र्यानिर्गुंड्याकरवीरजैः ॥ द्रवैरेतैःपृथग्भाव्य-
सप्तधासप्तधाक्रमात् ॥ चूर्णयित्वातुषड्गुंजंदापयेदार्द्रकद्रवैः॥
सन्निपातानलःसोयंरसःस्यात्संनिपातजित् ॥अतितंद्राज्वर-
श्वासक्लमकासातिसारजित् ॥

अर्थ--पारदभस्म, और गंधक, दोनो एक, २ भाग ताम्रभस्म, खपरिया, और हिंगुल, ये प्रत्येक दो दो भाग, लेकर अमलवेतके रसमें यदि अमलवेत न मिले-तो चनाखार और जंभीरीके रसमें खरलकर भूधरयंत्रमें एकपुटदेवे फिर हींग, कपूर, सोंठ, मिरच, पीपल, ये एक एक भागले उन्हींसें खरल करे, और ब्रह्मी, अदरख, जलपीपल, निर्गुंडी, कनेर, इन प्रत्येकके रसकी सात २ भावनादेय, तो यह संनिपातानल रस तयारहो, इसमेंसें छःरत्तीरस अदरखके रससें देय तो संनिपात, तंद्रा, ज्वर, श्वास ग्लानि, खाँसी, और अतिसार इनको नाशकरे ॥

निर्गुंड्यादिधूप

निर्गुंडीपुरसहितःसिद्धार्थकनिंबपत्रसंयुक्तः ॥
सर्जरसेनसमेतोधूपःसंधिकग्रहंहरति ॥

अर्थ—निर्गुंडी, गूगल, सरसो, नीमकेपत्ते, और राल इनकी धूनी संधिक संनिपातका नाशकरे ॥

दुसरानिर्गुंड्यादिधूप

निर्गुंडीपिचुमंदकुष्ठविजयाकार्पाससिद्धार्थकैःषड्ग्रंथातगरा-
मरेंद्रतरुभिमार्तंडमूलान्वितैः ॥ चंडापावकरुद्रमाल्यसहि-
तैर्मध्वासवैर्मोदितैर्धूपोयंग्रहसंनिपातजनितांपीडांपिनष्टिक्षणात्

अर्थ—निर्गुंडी, नीमकीपत्ती, कूठ, भाँग, विनोले, सरसों, वच, तगर, देवदार, आककीजड, किरमानी अजमायन, चित्रक और वेलगिरी इनका चूर्णकर इसको सहत और दारूसें भिगोय धूपदेवेतो संनिपात और ग्रहोंकीपीडा इनको क्षणमात्रमें दूरकरे ॥

देवदारुकाढा

सुरदारुसठीसुधालतासवहाशुंठियुताःशृताजलेन ॥
सपुराःशमयंतिसेविताःसततंहंतिसदासदागतिं ॥

अर्थ—देवदारु, कचूर, गिलोय, रास्ना, और सोंठ, इनके काढेमें गूगल डालके सेवन करेतो वायूका नाशकरे ॥

मुस्तादिकाढा

मुस्तैरंडप्राणदावाणदारुच्छिन्नारास्नाभीरुकचूरतिक्ताः ॥ -
वासाविश्वापंचमूलीयुगाढ्योहन्यान्मन्यास्तंभसंधिग्रहार्ति ॥

अर्थ—नागरमोथा, अंडकीजड, जलपीपल, नीलापियावासा, तेलियादेवदार, गिलोय, रास्ना, शतावर, कचूर, कुटकी, अडूसा, सोंठ,और दशमूल, इनका काढा मन्यास्तंभ, और संधिवात इनका नाशकरे ॥

वचादिकाढा

वचाकत्रचकछुरासहचरामृताभंगुरासुराव्हघननागरातरुण-
दारुरास्नापुरा ॥ वृषातरुणभीरुभिःसहभवंतिसंधिग्रहव्यथो-
रुजडिमक्कमभ्रमणपक्षघातापहाः॥

अर्थ—वच, धमासों, गिलोय, भारंगी, पियावासा, देवदार, नागरमोथा, सोंठ, विधायरों, रास्ना, गुग्गुल, असगंध, अंडकीजड, सतावर, इनका काढा संधिक संनिपात, जडता, ग्लानि, भ्रम, और पक्षाघात इनका नाशकरे ॥

रास्नादिकाढा

रास्नाशुंठीगुडूचीसहचरजलदैर्भारिपथ्यासुराव्हैस्तिक्ताकचूर-
वासानिलरिपुसहितैःपंचमूलीद्वयेन ॥ एभिर्द्रव्यैःकषाय-
स्त्वरितमपहरेत्पीतमात्रःप्रभातेमन्यास्तंभांत्रवृद्धिंज्वरपिटि-
ककटिसंधिसर्वांगपीडा ॥

अर्थ—रासना, सोंठ, गिलोय, पियावासा, नागरमोथा, शतावर, हरड, देवदारु, कुटकी, कचूर, अडूसा, अंडकीजड, और दशमूल, इनका काढा मन्यास्तंभ, अंत्रवृद्धि, ज्वर, पिडिका, कमर, तथा संधि इनका शूल, और सर्वदेहकी पीडा को दूरकरे ॥

अमृतादिकाढा

अमृतोरुबुकविश्वासुरतरुरास्नाहरीतकीक्काथः ।
सकलसमीरणरोगान्प्रातःसद्योहरेत्पीत ॥

अर्थ—गिलोय, अंडकीजड, सोंठ, देवदारु, रास्ना, हरड, इनका काढा प्रातःकाल पीवेतो सर्ववातकेरोगोंका नाशकरे ॥

ग्रंथ्यादिकाढा

ग्रंथीकलितरुपथ्याक्तमालशिवाढरूषकैर्विहितः ।
एरंडतैलयुक्तःक्वाथो हन्यान्मरुन्मांद्यं ॥

अर्थ—पीपरामूल, वहेडा, हरड, आमलतासकोगूदो, आमले, और अडूसा इनकेकाढेमें अंडीकातेल मिलायके पीवेतो वादीसैंहुए मंदत्वको नाशकरे ॥

पंचमूल्यादिकाढा

मूलीपंचककल्ककल्पितमिदंसन्मागधीमिश्रितं
कौलत्थेनरसेनसैंधवयुतंपेयंचविश्वौषधं ॥

अर्थ—पंचमूल, पीपल, सैंधानिमक, सोंठ, इनकेचूर्णको कुलथीके जलकेसाथ देवेतो वायुका नाशकरे ॥

रास्नादिकाढा

रास्नागुडूचीशठिवृद्धदारुसुराव्हविश्वात्रिफलावरीभिः ।
क्वाथंपिबेद्गुग्गुलसंनियुक्तंसमग्रसंधिग्रहसंनिपाते ॥

अर्थ—रास्ना, गिलोय, कचूर, विधायरो, देवदारु, सोंठ, त्रिफला, और सतावर इनकेकाढेमें गूगलमिलायके पीवेतो संधिक संनिपातको दूरकरे ॥

क्षारादिपरिमाण

जीरकंगुग्गुलुंक्षारंलवणंचाशिलाजतु ।
हिंगुत्रिकटुकंचैवक्वाथेशाणोन्मितंक्षिपेत् ॥

अर्थ—जीरा, गूगल, क्षार, नोन, शिलाजीत, हींग, और त्रिकुटा इनका चूर्णकाढेआदिमें ४ मासेडाले ॥

संधिकपरलंघन

संधिस्थेहितमस्तिलंधनविधिःस्वेदोपनाहादिकं ।
सूक्ष्मंकर्मसमग्रमेवविहितंकुर्याद्यवागूरसं ॥

अर्थ—संधिक संनिपातपर लंघन, स्वेदन, पिंडीआदि बाँधना इत्यादि देहहलकाकरनेके उपचार करना योग्यहै और यवागू आदि पथ्यहै ॥

अंतकसं०निदान

दाहंकरोतिपरितापनमातनोतिमोहंददातिविदधातिशिरः प्रकंपं ॥ हिक्कांकरोतिकसनंचसमाजुहोतिजानीहितंविबुधवर्जितमंतकाख्यं ॥

अर्थ—दाह, संताप, मोह, शिरःकंप, हिचकी, और खांसी येअंतक संनिपातके लक्षणहै इसअंतकसंनिपातकोवैद्यत्यागदे॥

अंतकेरोटिकाबंधनं

अयंप्रयोगोयदिसन्निपातेभिषग्वराणांकथितोनुभूतः ॥ सरागिकापिष्टपलांडुतोयंविधायसम्यक्सरोटिकांच ॥ मृद्वीपुनःस्निग्धविभर्जिताचसोष्णाचताल्वोपरिबंधनीया ॥ यामद्वयंबध्यपुनश्चबध्वायावन्मनुष्योधृतिमातनोति ॥ एवंविधिश्चांतकसंनिपातेमृत्युव्यथागच्छतिनिश्चयेन ॥

अर्थ—वैद्योंने बहुत अनुभव करके अंतक संनिपातपर यह प्रयोग कहा है कि राईकेचूर्णको लहसनके रसमें सानके उसकीरोटि बनाय तेलमें अथवा घृतमें सेक गरमागरम मस्तकपर बाँधे, दोपहरकेबाद फिर बाँधे तो मनुष्यके अंतक संनिपातकी व्यथा दूरहोय परंतु हमारी समझमें उसरोटीको अंडिके तेलमें सेके ॥

मृतसंजीवनीरस

शुद्धंसूतंसमंगधंखल्वेवैकज्जलीकृतं ॥ तथालोहकभस्मात्रताम्रभस्मसमंसमं ॥ विषतालककंकुष्ठंशिलाहिंगुलचित्रकैः ॥ हस्तिमुंडीचातिविषंत्र्यूषणंहेममाक्षिकं ॥ भृंगीकुंभीमिचनादाःप्रतिचूर्णरसांशकं ॥ त्रिदिनंमर्दयेत्खल्वेद्रवैरार्द्रकसंभवैः॥ निर्गुंडीविजयाद्रावैस्त्रिदिनंमर्दयेत्पुनः ॥ जंबीरस्यचचांगेर्याद्रवैःसंमर्दयेद्दिनं ॥ काचकुप्यांनिवेश्याथवालुकायंत्रगंपचेत् ॥ द्वियामांतेसमुद्धृत्यमर्दयेच्चार्द्रकद्रवैः ॥ दिनैकंशोषितंचूर्णंत्रिगुंजंसंनिपातजित्॥ मृतसंजीवनोनामरसोयंशंकरो-

दितः ॥ मृतोऽपिसंनिपातेनजीवत्येवनसंशयः ॥ सक्षीरंदाप-
येत्पथ्यंदेयोवानंदभैरवः ॥

अर्थ—पारा, और गंधक दोनो की कजलीकरे फिर लोहभस्म, विष, हरताल, मुरदासिंग, मनसिल, हींगरू, चित्रक, इन्द्रायनका गूदा, अतीस, त्रिकुटा, सोनामक्खी, भांग, जमालगोटा, और चौलाईकीजड, सब समानले अदरक और भांगरेके रसमें एकदिन खरलकरे, फिर काँचकी शीशीमें भर वालुका यंत्रमें २ प्रहर पचन करावे, फिर अदरखके रसमें एक दिन घोटे तो शिवप्रोक्त मृतसंजीवनीरस तयारहो इसको तीन रत्ती देय तो सन्निपातसैं आसन्नमरणवालाभी रोगी बचजावे। इसके ऊपर दूध भात पथ्यदेवे अथवा यह रस नमिले तो आनंद भैरव रस देना चाहिये. ॥

पथ्यादिकाढा

पथ्यावृषारग्वधदारुतिक्तारास्नागुडूचीगदजःकषायः ॥
सोपद्रवाच्चांतकनामधेयाज्ज्वरान्नरंमोचयतीतिचित्रं ॥

अर्थ—हरड, अडूसा, अमलतासका गूदा, देवदारु, कुटकी, रास्ना, गिलोय, और कुलीजन इनका काढा उपद्रवसहित मनुष्यको अंतकज्वरसैंमुक्तकरे इसमें क्या आश्चर्य है ॥

असाध्यत्वकहते है

इहापहायवृतमुष्णवारिज्वरारियूषादिगदापहारि ।
ज्वरच्छिदंजीवितदंचनित्यंमृत्युंजयंचेतसिचिंतयस्व ॥

अर्थ—अंतक संनिपात होनेसैं गरम जल, ज्वरनाशक काढे, यूष इत्यादिको त्यागके जीवनका देनेवाला और ज्वर नाश कर्त्ता जो मृत्युंजय शिव उसका चिंतवन करे ॥

भिषग्भिरितिनिर्णीतंसंनिपातेंतकाभिधे।
भेषजंजान्हवीनीरंवैद्योगोविंदएवहि ॥

अर्थ—अंतक संनिपात होनेसैं वैद्योंने ऐसा निश्चय करा है कि उस रोगीका विष्णुभगवान् वैद्यहै और गंगाजल यही औषधी है अर्थात् भगवन्नामस्मरण और गंगाजल पीवे. ॥

रुग्दाहसंनि॰निदान

प्रलापपरितापनप्रबलमोहमांद्यश्रमः परिभ्रमणवेदनाव्य-
थितकंठमन्याहनुः ॥ निरंतरतृषाकरःश्वसनकासहिक्काकुलः
सकष्टतरसाधनोभवतिहंतिरुग्दाहकः ॥

अर्थ—प्रलाप, संताप, अत्यंतमोह, मंदत्व, श्रम, भौर, और कंठ, मन्यानाडी, तथा ठोड़ी इनमें पीडा, सर्वकाल तृषा, श्वास, खाँसी, और हिचकी, इन लक्षणकरके युक्त अेसा रुग्दाह संनिपात कष्टसाध्य और मारक है ॥

जलधरकाढा

जलधरमलयजनागरसवालकोशीरपर्प्पटैःक्वथितं ।
यःपिबतिपयःसुशीतंशाम्यतिरुग्दाहकस्तस्य ॥

अर्थ—नागरमोथा, लालचंदन, सोंठ, नेत्रवाला, खस, और पित्तपापड़ा, इनका काढा शीतल होनेपर देवे तो रुग्दाह सन्निपातको शमन करे ॥

अभयादिकाढा

अभयापर्पटमुस्ताकटुकीशम्याकगोस्तनीक्वाथः ।
पीतःकरोतिनाशंरुग्दाहरुजोनसंदेहः ॥

अर्थ—हरड़, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, कुटकी, अमलतासका गूदा, और मुनक्कादाख इनका काढा करके पीवे तो रुग्दाह संनिपात नाश होय. ॥

ब्राम्ह्यादिकाढा

ब्राह्मीद्राक्षाजलधरवचोशीरशम्याकतिक्तापथ्याधात्रीकलि-
तरुबलानिंबकोशातकीभिः ॥ भूनिंबाढ्याभवतिसहितः पं-
चमूलीद्वयेनपीतःक्वाथःसकलपवनव्याधिरुग्दाहहंता ॥

अर्थ—ब्राह्मी, दाख, नागरमोथा, वच, खस, अमलतासको गूदो, कुटकी, त्रिफला, खरेटी, नीमकीछाल, कडुई घीयाके बीज, चिरायतो और दशमूल इनका काढा सर्ववात व्याधियोंको और रुग्दाह संनिपातको नाश करे ॥

उशीरादिषडंगकाढा

उशीरचंदनोदीच्यद्राक्षामलकपर्पटैः ।
शृतंशीतंजलंदद्यादाहतृड्ज्वरशांतये ॥

अर्थ--नेत्रवाला, लालचंदन, खस, दाख, आमले और पित्तपापडा इनका काढा शीतलकरके देय तो दाह, तृषा, और ज्वर ये शांति होय ॥

धान्याककाढा

ससितोनिशिपर्युषितःप्रातर्धान्याकतंडुलक्काथः ॥
पीतःशमयत्यचिरादंतर्दाहंज्वरंशैत्यं ॥

अर्थ—धनिया, और चावल, इनको रात्रिमें भिगोय देवे, प्रातःकाल इसकी पेयाकर शीतल होनेपर देवे तो अंतर्दाह और पित्तज्वर इनका शमन करे ॥

अगर्वादिधूप

अगरुघनसारसल्लककररुहनतनीरचंदनैर्युक्तः ॥
सर्जरसेनसमेतोधूपोरुग्दाहकंहंति ॥

अर्थ—कालीअगर, कपूर, सल्लकी, नख, तगर, नेत्रवाला, चंदन और रार, इनकी धूनी रुग्दाह नाशक है ॥

दध्यादिलेप

शमयतिदाहमचिराद्दधियुक्तकर्कंधुपल्लवैर्लेपः ॥
लेपोहिमकरमलयजनिंबदलैस्तक्रपिष्टैर्वा ॥

अर्थ—वेरके पत्तोको पीस दहीमें मिलाय अंगोंमें लेपकरे अथवा कपूर, चंदन नीमकेपत्ते, ये एकत्र छाछमें पीसके लेपकरे तो इस्सै दाह शमन होवे ॥

बदर्यादिलेप

बदरीपल्लवलेपःश्रीखंडारिष्टकेनसंयुक्तः ॥ दा-
तव्यःपादतलयोस्त्वरयारुग्दाहसंनिपातघ्नः ॥

अर्थ—वेरकेपत्ते, चंदन, और नीम ए औषध एकत्र पीस पैरोके तलूएमें लेपकरे तो रुग्दाह शमन होय ॥

लाजतर्पण

दाहवम्यर्दितंक्षामंनिरन्नंतृष्णयान्वितं ॥
शर्करामधुसयुक्तंपाययेल्लाजतर्पणं ॥

अर्थ—दाह और वमन इनकर्के कृश अन्नचले नही, और तृषार्त्त अैसे रोगीको खीलोंका यूष, बूरा और सहत मिलायके देवे ॥

स्त्रीकाआलिंगन

पयोधराढ्यांकुशलांसुरूपांनवयौवनां ॥
प्रमदांस्वभुजाश्लेषैर्भजेद्रुग्दाहपीडितः ॥

अर्थ—रुग्दाह युक्तमनुष्यका स्वरूपवती, पीनस्तनी, विलासचतुर ऐसी स्त्रीका आलिंगन करनेसै रुग्दाह शमन होय ॥

पथ्यावलेह

पथ्यांतैलघृतक्षौद्रैर्लिहेद्दाहज्वरापहां ॥
कासासृक्सर्ववीसर्पश्वासान्हंतिवमीरपि ॥

अर्थ—हरडकाचूर्ण, तेल, घी, अथवा सहत इनके साथ खायतो खाँसीमें जो रुधिर गिरे वो तथा विसर्प, श्वास, वमन, (वांति,) इनका नाश होय ॥

भैरवीगुटी

शुद्धसूतंद्विधागंधंमर्दयेदिक्षुकद्रवैः । दिनंभाव्यंचमर्द्यंचशोषयित्वातुभृंगजैः॥ चतुर्धाभावयेद्द्रावैस्तिलपर्ण्याद्रवैश्चसः॥ भावितंचविशोष्याथचूर्णयेद्वस्त्रगालितं ॥ चूर्णतुल्यंमृतंताम्रंताम्रादष्टांशंकंविषं ॥ कृष्णाशीतविडंगानिकृष्णाजीरासनंबला ॥ ताम्रार्धंप्रतिचूर्णंस्यात्सर्वमेकत्रकारयेत् ॥ यामैकंभृंगजद्रावैर्मर्दयेत्कल्कतांगतं ॥ स्निग्धभांडगतंपाच्यंपिंडंयामात्कृशाग्निना ॥ चणमात्रावटीयोज्याचित्रकार्द्रकसैंधवैः ॥ सम्यक्त्रिदोषजंहंतिसंनिपातंसुदारुणं॥ भैरवीगुटिकाख्याताद्ध्यन्नंपथ्यमाचरेत् ॥

अर्थ—शुद्धपारा, और गंधक इनकी कजली कर ईखके रसमें १ दिन भावना देवे, फिर भाँगरेके रसकी ४ भावनादेय, फिर तिलपर्णीकें रसकी भावना देकर सुखाय कपडछन कर लेवे। पीछे इस चूर्णके समान ताम्रभस्म,ताम्रका अष्टमांश सिंगियाविष, और काली तथा सपेद वायविडंग, पीपर, जीरा, रास्ना-खरेटी, ये प्रत्येक ताम्रसै आधी २ लेवे, सबको एकत्रकर भांगरेके रससै १ प्रहर खरल करे जब घुटते २ कल्कके समान हो जावे तबघीके चिकने बरतनमें रखके मंदाग्निपर जबतक गोला होय तबतक पचन करावे फिर इसकी चनेके प्रमाण गोली करे इसको चीता, अदरख और सैंधानिमक इनके साथ देवे तो त्रिदोष-

जन्य सँनिपातका नाश करे इसको (भैरवीगुटी) कहतेहै इसके ऊपर दही भातकी पथ्यदेनी चाहिये ॥

चित्तभ्रमसन्निपात

यदिकथमपिपुंसांजायतेकायपीडाभ्रममदपरितापोमोहवैकल्यभावः ॥ विकलनयनहासोद्गीतनृत्यप्रलापीह्यभिदधातिनसाध्यंकेपिचित्तभ्रमाख्यं ॥

अर्थ—किसीप्रकार शरीरमें पीडा, भ्रम, उन्माद, संताप, मोह, विकलपना-नेत्रोमें व्याकुलता, हसना, गाना, नाचना और बकना ये लक्षण होनेसैं इसको चित्तविभ्रम संनिपात कहते है यह असाध्य है ॥

मध्वादिकाढा

मधुनखशाल्मलिक्टष्णावनतरुपथ्यामुरागरूभिश्च ॥
मलयजसहितैरेतैःक्काथश्चित्तभ्रमंहंति ॥

अर्थ—महुआकी छाल, नख (सुगंधद्रव्य) सेमरका मूसला पीपर, कोहवृक्षकी छाल, हरड, मुरा, अगर और लाल चंदन इनका काढा चित्तविभ्रम को शमन करे ॥

द्राक्षादिकाढा

मृद्वीकामरदारुमत्स्यशकलामुस्तामलक्योमृतापथ्यारेवतरामसेनकरजाराजीफलैःसंयुतः॥हन्युश्चित्तरुजोथदर्दुरदलद्राक्षापटोलीपयःपथ्यापर्पटराजवृक्षकटुकाशंबूकपुष्पशृतः ॥

अर्थ—दाख, देवदारु, कुटकी, नागरमोथा, आमले, गिलोय, हरड, अमलतासकागूदा, चिरायता, पित्तपापडा, और पटोलपत्र, इनका अथवा ब्राम्ही, दाख, पटोलपत्र, नेत्रवाला, हरड, पित्तपापडा, अमलतासको गूदो, कुटकी, और शंखपुष्पि, इनका काढा चित्तविभ्रमको शमनकरे ॥

ब्राम्ह्यादिकाढा

ब्राम्हीवचाभीरुफलत्रिकेणतिक्ताबलारग्वधतिक्तकेन ॥ निंबाब्दकोशातकिदारहूराद्विपंचमूलीभिरसौकषायः॥ पीतोहिचित्तभ्रमसंनिपातंनिहंतिरुद्राहमपिप्रभूतं ॥

अर्थ—ब्राम्ही, वच, शतावर, त्रिफला, कुटकी, खरेटी, अमलतासकागुदा, चिरायता, नीमकीछाल, घीयाकेबीज, दाख, और दशमूल, इनका काढा चित्त-भ्रम संनिपातको और रुग्दाहको नाशकरे ॥

पथ्यादिकाढा

पथ्यापर्पटकटुकामृद्वीकादारुजलदभूनिंबाः ॥
शम्याकपटोलशिवाक्काथश्चित्तभ्रमंहंति ॥

अर्थ—हरड, पित्तपापडा, कुटकी, दाह, देवदार, नागरमोथा, कडुआचिरा-यता, अमलतासकागूदा, पटोलपत्र, और आमले इनका काढा, चित्तविभ्रम सं-निपातको नाश करे ॥

हरीतक्यादिकाढा

हरीतकीपर्पटहारहूराशंखूकपुष्पैःकटुकीपयोदैः ॥
शम्याकदेवाव्हयभारतीभिश्चित्तभ्रमंहंतिकृतःकषायः ॥

अर्थ—हरड, पित्तपापडा, दाख, शंखपुष्पी, कुटकी, नागरमोथा, अमलता-सकागूदा, देवदार, और ब्राम्ही इनका काढा चित्तभ्रम संन्निपातका नाशकहै ॥

कणाद्यंजन

कणोषणोग्रालवणोत्तमानिकरंजबीजक्षणदामलानि॥पथ्या-
क्षसिद्धार्थकहिंगुशुंठीयुतानिबस्तांबुविमिश्रितानि ॥ पिष्ट्वा-
गुटीयंनयनेविधेयाप्रचेतनेतिप्रथितान्वितार्था ॥ चितभ्रमा-
पस्मृतिभूतदोषशिरोक्षिरोगभ्रमनाशहेतुः ॥

अर्थ—पीपर, कालीमिरच, वच, सैंधानिमक, कंजाकेबीज, हलदी, आमले, हरड, बहेडा, सरसो, हिंग, और सोंठ इनका चूर्ण एकत्रकर बकराकेमूत्रमें ख-रलकरकेगोलीबाँधे इसका नेत्रोंमें अंजन करे तो चैतन्यता होय और चित्तविभ्र-म, मृगी, भूतदोष, मस्तकरोग, नेत्ररोग और भ्रम इनका नाशकरे ॥

कुभोद्भवनस्य

कुंभोवद्भतरोरंभोगुडविश्वाकणान्वितं ॥
निहितंनसिनूनंस्याश्चित्तभ्रमविनाशनं

अर्थ—अगस्तीयाके पत्तोंके रसमें गुड, सोंठ, औरपीपलको डालके नस्यदेवे तो चित्तभ्रमको नाशकरे ॥

धूप

मुरामूर्धजमेघाऽहमधूकमलयोद्भवैः ॥ मरुत्तरुमधून्मिश्रैःपुर पाणिजपांसुभिः ॥ लोहलामज्जकैलाभिर्धूपश्चित्तभ्रमापहः ॥ ग्रहदोषहरःश्रीदःसौभाग्यकरउत्तमः ॥

अर्थ—मुरा(गंधद्रव्य) नेत्रवाला, महुआकीछाल, चंदन, देवदारु, सहत, नखद्रव्य, पित्तपापड़ा, अगर, पीलासुगंधवाला, और इलायची इनकी धूनी चित्तभ्रम संनिपात और ग्रहदोष इनकी नाशक तथा लक्ष्मीकारक और कांतिप्रदहै

संनिपातगजांकुश

शुद्धंसूतंमृतंचाभ्रंशुद्धेतालकमाक्षिके ॥ हिंगुंचतुल्यतुल्यं स्यान्मर्दयेत्खल्वकेद्रवैः ॥ वंध्यापटोलनिर्गुंडीसुगंधानिंबचित्रकैः ॥ धत्तूरलांगुलीपाठाभृंगाजंबीरजद्रवैः॥ त्रिदिनंमर्दयेदेभिश्चूर्णीकृत्यविमिश्रयेत्॥ त्रिक्षारसैंधवंवालंविषंमधुरसारकं । तुल्यंतुल्यंविचूर्ण्याथपूर्वोक्तचंद्रमासमं ॥एकीकृत्यभवेत्सिद्धःसन्निपातगजांकुशः॥ सन्निपातंनिहत्याशुमाषमात्रःप्रयोजितः ॥

अर्थ—पारा, अभ्रकभस्म, हरताल, सुवर्णमाक्षिक, ए शुद्धलेवे उसमें समानभाग हींग डालके घीगुवार, वाँझककोडा, परवल, सपेद और कालीनिर्गुंडी, नीम, चित्रक, धतूरा, कलयारी, पाढ, भाँग और जँभीरी इनकेरसमें ३ दिनखरलकरे, तथा इसमें क्षारत्रय, सैंधानिमक, विष, कांकोली, और जमालगोटा ये समानभागले अर्थात् ए पूर्व औषधोंकी वरावर होय इसप्रकारमिलावे तो यह संनिपातगजांकुश रसबने इसमेंसें १ मासे देनेसें संनिपातका नाशकरे ॥

प्राणेश्वररस

रसंगंधंसमंशुद्धंमृतंताम्रंमृतंरसं ॥ दिनैकंतालमूल्याश्ववाराह्यारसमर्दितं॥निरुद्धंकाचकुप्यांतुवालुकायंत्रगंपचेत्॥ दिनंवाभूधरेपक्त्वासमादायविचूर्णयेत्॥ त्रिक्षारंपंचलवणंत्रिफलाव्योषचित्रकैः ॥ सजीरकैःसैंद्रयवैर्हिंगुगुग्गुलुदीप्यकैः ॥ सर्वैःसमैःपूर्वसमंचूर्णीकृत्यविमिश्रयेत् ॥माषमात्रंप्रदातव्यांकिं-

त्रिदुष्णोदकंपिबेत् ॥ सन्निपाताचलेवज्रंसज्वरग्रहणीप्रणुत्॥ कुर्यात्प्राणपरित्राणमतःप्राणेश्वरोरसः॥

अर्थ—शुद्धपारा, गंधक, ताम्रभस्म, पारदभस्म, इन सवको मूसली और वाराहीकंदके रसमें खरलकर शीशीमें भरके वालुका यंत्रमें अथवा भूधरयंत्रमें पचन करावे जव शीतल होजावे तव इसमें क्षारत्रय, निमकपाँचो, त्रिफला, त्रिकुटा, चित्रक, जीरा, इन्द्रजो, हींग, गूगल, और अजमायन, सव समानले इनका चूर्ण पहिलीऔषधोंके वरावर लेकर मिलावे, फिर इसमेंसे १ मासे लेकर ऊपरसैं गरमपानीपीवे तो संनिपात संग्रहणी, और ज्वर इनको नाशकरे यह प्राणेश्वररस प्राणोंकी रक्षाकरनेवालाहै ॥

मोरेश्वररस

शुद्धंसूतंद्विधागंधंदिनैकंचार्द्रकद्रवैः ॥ मर्दयित्वाचतंगोलंगोलार्धेताम्रसंपुटे ॥ क्षिप्त्वानिरुध्यतत्संधिंमृन्मूषायांनिरुध्यच ॥ रात्रौगजपुटेपाच्यंप्रातरादायचूर्णयेत् ॥ गुंजैकंनागरसमंसघृतंसन्निपातनुत् ॥ अनुपानंपिबेत्पश्चात्ततंवारिपलद्वयं॥ दध्यन्नंदापयेत्पथ्यंतृषायांशीतलंजलं ॥ कृशंचकुरुतेस्थूलंनरंमोरेश्वरोरसः ॥

अर्थ—शुद्धपारा १ भाग, गंधक २ भाग, इनको एकदिन अदरकके रससैं खरलकर गोली बाँधे उन गोलियोका आधा तामा ले उसकी डिव्वी वनाय उसमें वोगोली भरके बंदकर दुसरे मिट्टीके पात्रमें रखके मुख बंदकर संधियों को लेपकर बंदकरदेवे फिर १ रात्रि गजपुटमें रखके आँच देवे प्रातः काल निकालकर चूर्ण करे इसमेंसे १ रत्ती सोंठ, और घीसैं देवे उपर ८ तोले गरम जलपीवे, ओर दहीभातका पथ्यदेके जव प्यासलगे तब शीतल जलदेवे तोयह (मोरेश्वर रस) कृशपुरुषको मोटा करे ॥

शीतांगसं०निदान

हिमसदृशशरीरोवेपथुःश्वासहिक्काशिथिलितसकलांगःखिन्ननादोग्रतापः॥ क्लमथुःदवथुकासच्छर्द्यतीसारयुक्तस्त्वरितमरणहेतुःशीतगात्रःप्रभावात् ॥

अर्थ—देह अत्यंत शीतल, कंप, श्वास, हिचकी, अंगोमे शिथिलता, शब्द

वारीक, भीतरसंताप, विनाकारण श्रम, संताप, खाँसी, वमन, और अतिसार, इनलक्षणों करके युक्त संनिपातको शीतगात्र (शीतांग) संनिपात कहते है यह तत्काल प्राण नाश करे ॥

शीतांगकीचिकित्सा

मृतसंजीवनोवाथरसोगुंजाद्वयोहितः ॥ सर्वांगसुंदरोवाथस्व च्छंदोभैरवोपिवा ॥ दातव्यःपंचवक्रोवाशीतांगंनाशयेत्धुवं ॥

अर्थ—शीतांग संनिपातपर मृतसंजीवन रस दो रत्तीकिंवा सर्वांग सुंदरअथवा स्वच्छंद भैरव किंवा पंचवक्र रस देवे तो शीतांगसंनिपात नाश होय ॥

अर्कादिकाढा

भास्वन्मूलंजीरकव्योषभार्गीव्याघ्रीशृंगीपुष्करंगोजलेन ॥ सिद्धंसद्यःशीतगात्रातिमोहश्वासश्लेष्मोद्रेककासान्निहंति ॥

अर्थ—आककीजड, जीरा, त्रिकुटा, भारंगि, कटेरी, काँकडासिंगी, और पुहकरमूल, इनका काढा गोमूत्रमें सिद्धकरके पीवे तो तत्काल शीतगात्रसंनिपात मोह, श्वास और कफवृद्धि, इनका नाश हो ॥

मातुलिंगादिकाढा

मातुलिंगादिभूनिंबग्रंथिकंदेवदारुच ।
दशमूलाजमोदंचशुंठीशीतांगनाशनं ॥

अर्थ—बिजोरेकीकेशर, चिरायतो, पीपरामूल, देवदारु, दशमूल, अजमोद, और सोंठ इनका काढा शीतांग संनिपात नाशक है ॥

कर्कोटकाद्युद्वर्तन

कर्कोटिकाकंदरजःकुलित्थाकृष्णावचाकट्फलकृष्णजीरैः ॥ किराततिक्ताग्निककटुवलांबुपथ्याभिरुद्वर्त्तनमत्रशस्तं ॥

अर्थ—ककोडेकाका कंद, पित्तपापडा, कुलथी, पीपल, वच, कायफर, कालाजीरा, चिरायता, चित्रक, कडई, तूंबी, और हरड, इनके चूर्णको देहमें मले तो शीतांग संनिपातका नाश करे॥

श्रीवेष्टादिचूर्ण

श्रीवेष्टफलसंभूतभस्मभागाष्टकंशुभं॥ मरीचस्यचचत्वारोरस- स्यैकोविषस्यच ॥ सूक्ष्मचूर्णततःकृत्वामर्दयेदतियत्नतः॥ अ-

साध्येपिहिशीतांगेस्वेदोयातिहिनिश्चितं॥ चूर्णंचणकभृष्टोत्थं-
भृष्टभृंगीभवंतथा ॥ कुलित्थकोत्थचूर्णेनस्वेदोयातिहिनिश्चितं ॥

अर्थ-शरलवृक्षके फलोंकी भस्म ८ भाग, भांग ४ भाग, कालीमिरच ४ भाग, पारा और सिंगियाविष ये सब एकत्रकर इनका वारीक चूर्णकरे इसके सेवनसैं असाध्य शीतांगवालेके भी पसीने आवे, भुनाहुआ चनेका चून, भुना हुआ भांगका चूर्ण और कुलथी का चूर्ण इनकीमालीस करनेसैं पसीने दूरहो ॥

तंद्रिकसं० निदान

प्रभूतातंद्रार्तिज्वरकफपिपासाकुलतरोभवेच्छ्यामाजिव्हापृ-
थुलकटिनाकंटकवृता॥अतीसारःश्वासःक्लमथुपरितापःश्रुति-
रुजोभृशंकंठेजाड्यंशयनमनिशंतंद्रिकगदे ॥

अर्थ- (तंद्रिक) संनिपातमें अत्यंत तंद्रा, शूल, ज्वर, कफ, प्यास, इनसैं रोगी पीडित हो जीभ काली, कठोर और ऊपर कांटे युक्त हो, अतीसार स्वास, ग्लानि, संताप, कानोंमें पीडा, गलेमें जडता, और निरंतर निद्राका आना ये लक्षण होते है ॥

तंद्रिकपरीक्षा

ज्वरेप्रथममुत्पन्नेचक्षुर्भ्यांनैवपश्यति ॥
तंद्रिकःसंनिपातोयंकष्टसाध्योभवेत्ततः ॥

अर्थ-ज्वर उत्पन्न होतेही नेत्रौंके आगे अंधेरा आवे तो यह तंद्रिक संनिपात कष्टसाध्य जानना ॥

भार्ग्यादिकाढा

भार्गीगुडूचीधनकंटकारिहरीतकीपौष्करनागराणां ॥
कृतःकषायस्त्रिदिनंनिपीतोघोरंजयेत्तंद्रिकसंनिपातं ॥

अर्थ-भारंगी, गिलोय, नागरमोथा, कटेरी, हरड, पुहकरमूल, और सोंठ, इनका काढा तीनदिन पीवे तो घोर तंद्रिक संनिपात दूर होय ॥

दुसराप्रकार

भार्गीपुष्करपथ्यानिदग्धिकानागरामृताक्वाथः ॥
अपनत्तितंद्रिकभयंनिःसंशयंप्रगेतनेपीतः ॥

अर्थ—भारंगी, पुहकरमूल, हरड, कटेरी, सोंठ, और गिलोय इनका काढा प्रातःकाल पीवे तो निःसंदेह तंद्रिक संनिपात शमन होय ॥

अमृतादिकाढा

अमृतापटोलवासाव्योषयुतस्तंद्रिकेक्काथः॥

अर्थ—गिलोय, पटोलपत्र, अडूसा, और त्रिकुटा इनका काढा तंद्रिकपर देवे

रास्नाद्यंजन

रास्नामनःशिलातैलमंजनंचैवतंद्रिके ॥

अर्थ–रास्ना, मनसिल, इनसै सिद्धकरे हुए तेलका अंजन तंद्रिक संनिपातनाशक है

तुरंगलालाअंजन

तुरंगलालालवणोत्तमेंदुमनःशिलामागधिकामधूनि ॥
नियोजितान्यक्षिणिनिश्चितंद्राक्तंद्रांसनिद्रांविनिवारयंति॥

अर्थ—सैंधानिमक, कपूर, मनसिल, और पीपल, ये चार औषधोंको घोडे-की लारमें और सहतमे घिसके अंजन करे तो तंद्रिक को दूरकरे ॥

कृष्णादिनस्य

कृष्णामनःशिलातालमंजनमेवतंद्रिकेत्विष्टं ॥
अमृतापटोलयूषोव्योषयुतस्तंद्रिकंजयति ॥

अर्थ—पीपल, मनसिल, हरताल, इनका अंजन हितकारी है और गिलोय पटोलपत्र, इनका काढा त्रिकुटाके चूर्णसैं देवे तो तंद्रिक संनिपातका नाशकरे ॥

कुष्टादिनस्य

कुष्टगवाक्षीनागरनिशाद्वयमरीचकणावचायुक्तं ।
बस्तसलिलेनपिष्टंतंद्रिकहिंस्रंभवेन्नस्यं ॥

अर्थ—कूठ, इंद्रायन, सोंठ, हलदी, दारहलदी, मिरच, पीपर, और वच, इनको बकराके मूत्रसैं पीस नस्य देवे तो तंद्रिकसंनिपात को दूरकरे ॥

मरिचादिनस्य

मरीचकंचपचंपचावचारुकूष्ठामिहरनागरशर्वरीगवाक्ष्यः। छ-गलकजलकान्वितानितांतंनासिनिहितानन्नुतंद्रिकंजयंति ॥

अर्थ—मिरच, दारहलदी, वच, कूठ, वायविडंग, सोंठ, हलदी,और इनको ब-करीके मूत्रमें खरलकर नस्यदेवे तो तंद्रिकको निश्चय दूरकरे ॥

क्षुद्रादिनस्य

क्षुद्रामृतापौष्करनागराणिशृतानिपीतानिशिवायुतानि ।
शुंठीकणागस्त्यरसोषणानिनस्येनतंद्राविजयोल्बणानि ॥

अर्थ—कटेरी,गिलोय, पुहकरमूल, सोंठ, और हरड, इनका काढा देकर, अगस्तियाके रसमें त्रिकुटा को मिलाय नस्यकरे तो यह नस्य और ऊपर कहाहुआ काढा तंद्राके जीतने को समर्थ है ॥

कंठकुब्जनिदान

शिरोर्तिकंठग्रहदाहमोहकंपज्वरोरक्तसमीरणार्तिः ॥
हनुग्रहस्तापविलापमूर्छास्यात्कंठकुब्जःखलुकष्टसाध्यः ॥

अर्थ—मस्तकका दूखना, कंठका जिकडना, दाह, मोह, कंप, ज्वर, वातरक्त, रक्तकी पीडा, ठोडीका जिकडना, संताप, प्रलाप, और मूर्च्छा इतने लक्षण युक्त ज्वरको (कंठकुब्ज) संनिपात कहते है ॥

शृंग्यादिकाढा-

शृंगीवत्सकचेतकीघनसठीभूनिंबभार्गीनिशातिक्तापुष्करचित्रकैःसमरिचैर्व्याघ्रीवृषामिश्रितैः ॥ धात्रीदारुबिभीतकैश्चचविकाविश्वाकणाकट्फलैःपीतःकृंततिकंठकुब्जमचिरात्कोष्णःकषायस्त्विह ॥

अर्थ— काकडासिंगी, कूडाकी छाल, हरड, नागरमोथा, कचूर, चिरायता, भारंगी, हलदी, कुटकी, पुहकरमूल, चित्रक, कालीमिरच, कटेरी, अडूसा, आमरे, देवदार, बहेडा, चव्य, सोंठ, पीपल, और, कायफल, इनका काढा किंचित् उष्ण पीवे तो कंठकुब्ज संनिपात को जीते ॥

त्रिकट्वादिकषाय

त्रिकटुकलिंगककटुकाहरीतकीबिभीतकामलकैः ॥
ध्वंसयतिकंठकुब्जंवृषरजनीद्वयसंयुतःकषायः ॥

अर्थ—त्रिकुटा, इन्द्रजो, कुटकी, हरड, बहेडा, आमले, अडूसा, हलदी, और दारुहलदी, इनका काढा कंठकुब्जवाले रोगीका हितकारी है ॥

फलत्रिकादिकाढा

फलत्रिकत्र्यूषणमुस्तकट्वीकलिंगसिंहाननशर्वरीभिः ॥

क्वाथःकृतःकृंततिकंठकुब्जंकंठीरवःकुंजरमाशुयद्वत् ॥

अर्थ— त्रिफला, त्रिकुटा, मोथा, कुटकी, इन्द्रजो, अडूसा, और हलदी, इनका काढा करके पीवे तो जैसे सिंह हाथीको जीते इसप्रकार कंठकुब्जको जीते

किरातादिकाढा

किरातकटुकाकणाकुटजकंटकारीसटीकलिद्रुकिलिमाभया-कटुककट्फलांभोधरैः ॥ विषामलकपुष्करानलकुलीरशृंगी-वृषैर्महौषधसखैरयंजयतिकंठकुब्जंगणः ॥

अर्थ— चिरायता, कुटकी, पीपर, इन्द्रजो, कटेरी, कचूर, वहेडा, देवदारु, हरड़, कालीमिरच, कायफल, नागरमोथा, अतीस, आमले, पुहकरमूल चित्रक काकडासिंगी, अडूसा, और सोंठ, इनका काढा कंठकुब्ज संनिपातको जीते ॥

कृष्णादिनस्य

अपनयतिकंठकुब्जंकृष्णापामार्गयुङ्नस्यं ॥
अथहंतिसलिलसहितंत्रिकटुककटुतुंविनीनस्यं ॥

अर्थ— पीपल, और ओंगाके रसकी नस्य अथवा त्रिकुटा, कडुई घीयाके बीज, इनको पानीमें औटायके इसकी नस्य देवे तो कंठकुब्जको दूरकरे ॥

सिद्धवटि

शुद्धसूतंतथागंधंकाकडंसैंधवंसमं ॥ सद्योबालस्यविष्ठांचद्र-वैर्ब्राह्मयाविमर्दयेत् ॥ गुटिकाबदराकाराभक्षितारोगनाशि-नी ॥ इयंसिद्धवटीनामसंनिपातंनियच्छति ॥ पूर्वोक्तेनानु-पानेनदेयोवानंदभैरवः ॥

अर्थ-शुद्धपारा, शुद्धगंधक, काकडासिंगी, सैंधानिमक तथा सदजाए बालक की विष्ठा ये सव समान भाग ले ब्राह्मीके रसमें खरलकर बेरके बराबर गोली ब-नावे यह गोली संनिपातरोग नाशक है अथवा पूर्वोक्त अनुपानके साथ आनंद भैरव रस देय वोभी संनिपात नाशक है ॥

कर्णकसंनिपातनिदान

प्रलापश्रुतिर्‍हासकंठग्रहांगव्यथाश्वासकासप्रसेकप्रभावं ॥
ज्वरंतापकर्णांतयोर्गल्लपीडाबुधाःकर्णकंकष्टसाध्यंवदंति ॥

अर्थ—प्रलाप, बहरेंपना, कंठका स्तंभ, अंगोंमें पीडा, श्वास, खांसी, लारकागिरना, संताप, कान और गाल इनमें पीडा इत्यादि लक्षणों करके कर्णक संनिपात जानना, यह कष्टसाध्य ज्वर है॥

रास्नादिकषाय

रास्नाश्वगंधाघनकंटकारीभार्गीवचापौष्कररोहिणीनां ॥
क्राथःकृतःशृंग्यभयायुतानांपीतोजयेत्कर्णकसंनिपातं ॥

अर्थ—रास्ना, असगंध, नागरमोथा, कटेरी, भारंगी, वच, पुहकरमूल, कुटकी, काकडासिंगी, हरड, इनका काढा कर्णक संनिपात नाशक है॥

रास्नादिकाढा

रास्नाबृहतीपथ्याव्योषकटुकाघनपुष्कराव्हंच ॥
शृंगीधाराभार्गीक्राथोयंकर्णकंहरेत्स्मरणात् ॥

अर्थ—रास्ना, कटेरी, हरड, त्रिकुटा, कुटकी, नागरमोथा, पुहकरमूल, काकडासिंगी, आमरे और भारंगी, इनका काढा कर्णक सन्निपातको दूर करे॥

मरीचादिकाढा

मरीचदशमूलमगधाफलत्रयनिशामहौषधीतिक्ता॥ भूनिंबसैंधवयुतःकर्णकहंताभवेत्क्राथः॥

अर्थ— कालीमिरच, दशमूल, पीपर, त्रिफला, हलदी, सोंठ, कुटकी, चिरायता, इनके काढेमें सैंधानिमक डालके पीवे तो कर्णकको दूर करे॥

भार्ग्यादिकाढा

भार्गीजयापुष्करकंटकारिकटुत्रिकोग्रावनकंडलीभिः॥
कुलीरशृंगीकटुकारसाभिःकृतःकषायःकिलकर्णकघ्नः॥

अर्थ— भारंगी, छोकरा, पुहकरमूल, कटेरी, त्रिकुटा, वच, वनका जमीकंद काकडासिंगी, कुटकी, और रास्ना इनका काढा कर्णक संनिपात नाशकहै॥

दशमूलादिकाढा

दशमूलमत्स्यशकलाचपलात्रिफलामहौषधकिरातयुताः॥
मरिचपरिक्राथितमायुबलादपहंतिकर्णकरुजःसकलाः॥

अर्थ—दशमूल, कुटकी, पीपल, त्रिफला, सोंठ, चिरायता, कालीमिरच, इनका काढा कर्णक संनिपातको शीघ्र दूरकरे॥

इंगुद्यादिलेप

इंगुदिनिशाविशालासैंधवसुरदारुरविदुग्धैः ।
दत्तःक्रमेणलेपोहरतिमहाकर्णकग्रंथिं ॥

अर्थ—हिंगोट (गोंदी) हलदी, इन्द्रायनका गूदा, सैंधानिमक, देवदार, और आकका दूध, इनका लेप कर्णमूलपर क्रमसैं एकके ऊपर दूसरा वारंबार करावे तो कर्णक दूर हो ॥

प्रलेप

प्रलेपस्समस्तंनयत्यल्पमेकःसमुद्रिक्तशोथंचरक्तावसेकः ॥
विपक्कंचशस्त्रक्रियापूयजित्स्याद्व्रणत्वंगतेचेतद्रुतंतच्चिकित्सा ॥

अर्थ—प्रथम कर्णमूलपर शीघ्र लेप देय जिससै सूज न वैठजावे,यदि सूजन वहुत भारी होय तो उसका रुधिर निकलवावे, यदि पकजावे तो उसमें चीरादेकर राधनिकाल फिर व्रणचिकित्सा करे ॥

व्रणचिकित्सा

निशाविशालामयपाणिमंथदार्वींगुदीमूलकृतःप्रलेपः ।
प्रभाकरक्षीरयुतःप्रभावाद्वयस्तःसमस्तोप्यथकर्णकघ्नः ॥

अर्थ—हलदी, इन्द्रायनकागूदा, कूठ, करोदाकीपत्ती, दारुहलदी, और हिंगोटकी जड, ये औषध आकके दूधमें गरम करके उसका लेप करे यदी ये सब औषध नमिले तो जो ओषध मिले उसीको गरम करके लेप करे तो कर्णक सन्निपातका नाश होय ॥

कुलित्थादिलेप

कुलित्थःकट्फलंशुंठीकारवीतैःसमांशकैः ।
सुखोष्णैर्लेपनंकार्यंकर्णमूलेमुहुर्मुहुः ॥

अर्थ—कुलथी, कायफल, सोंठ, सोफ, इनका समभाग चूर्णकर गरम जलमें मिलायके लेप करे तो कर्णमूल वैठ जावै ॥

गैरिकादिलेप

गैरिकंकंटिनीशुंठीकट्फलैःसवचैःसमैः ॥
उष्णैःकांजिकसंपिष्टैःप्रलेपःकर्णमूलनुत् ॥

अर्थ—गेरु, गोखरू, सोंठ, कायफल, और वच, इनको काजीमें पीस गरम कर लेप करे तो कर्णमूल शांती हो ॥

शिग्र्वादिलेप

शिग्रुराजिकयोःपिष्टंकर्णमूलेप्रलेपयेत् ॥
कर्णमूलभवःशोफस्तेनलेपेनशाम्यति ॥

अर्थ—सहजनेकी छाल, और शिरस इनको महीन पीस कर्णकपर लेप करे तो कर्णमूल संबंधी सूजन शांतिहो ॥

अर्कादिलेप

दशशतकरदुग्धंपुष्करत्वक्समेतंदहनगुडनिकुंभाकुष्ठ-
कासीसयुक्तं ॥ अपनयतिवितीर्णंलेपनंसप्तरात्रात्श्व-
यथुहरणयुक्तंकर्णकग्रंथिमेतत् ॥

अर्थ—पुहकरमूल, दालचीनी, चित्रक, गुड, कायफल, कूठ और हीराकसीस, इन औषधोंका चूर्ण करके आकके दूधमें घोंटकर लेप करे तो यह लेप सातही दिनमें कर्णमूलको शमन करे ॥

दंत्यादिलेप

दंतीचित्रकयोर्मूलंस्नुह्यर्कपयसागुडः ॥
भल्लातकास्थिकासीसंलेपोभवतिकर्णके ॥

अर्थ—दंती, चित्रक, दोनोकी जड, थूहर, आकका दूध, गुड, भिलावेकी मिंगी, और कसीस इनको जलमें पीस लेप करे तो कर्णकसंनिपात दूर हो ॥

नागरादिलेप

सनागरंदेवदारुरास्नाचित्रकपेषितं ॥
प्रलेपनमिदंश्रेष्ठंगलशोफनिवारणं ॥

अर्थ—सोंठ, देवदारु, रास्ना, और चित्रक, इनको जलसैं पीस लेप करे तो गलेकी सूजन दूर हो ॥

निशादिलेप

निशेंगुदीसैंधवदारुकुष्ठदार्वीविशालारविदुग्धलेपः ॥
तंकर्णग्रंथिंसमपाहरेद्वाजलौकयापातनमत्रशस्तं ॥

अर्थ—हरदी, हिंगोट, सैंधानिमक, देवदारु, कूठ, इन्द्रायनकीजड, इनको आकके दूधसैं पीस लेप करे तो कर्णकशांति हो, अथवा उस गांठमें जोखलगायके रुधिरको निकाल डाले तो अच्छा होय ॥

बीजपूरादिलेप

बीजपूरकमूलत्वक्रुवन्हिमंथस्तथैवच ॥ शरपुंखाशिखीतुंबीसकृष्णाविषमुष्टिभिः ॥ प्रलेपोवाहिंडिबीभिःश्वयथौकर्णमूलजे ॥

अर्थ—विजोरेकी जड, दालचीनी, अरनी, सरफोका, चित्रक, कडुईतुंबी, पीपल, कुचलाकेबीज इनका लेप कर्णमूलकी सूजनपर करे ॥

वज्रमुष्ट्यादिलेप

वज्रमुष्टिभवःकंदोशोथविध्वंसनक्षमः ॥ कर्कटस्यचमांसेनस्वेदनंबंधनंतथा ॥ कर्णमूलभवंशोथंनाशयत्यविलंबतः॥

अर्थ—वज्रमुष्टीका कंद कर्णककी सूजनको नष्ट करे और कैंकडेका मांससैं सेकैं और वहीमांस उसपर बांध देवे तो कर्णक संबंधी सूजन शीघ्र नाश होय ॥

सिद्धार्थादिलेप

सिद्धार्थसैंधववचाग्रहधूमविश्वैःपिष्टैर्जलेननिशयासहितंसुसूक्ष्मं ॥ लेपोहितोरुधिरनिष्क्रमणेप्रभातेशोफव्रणस्यशमनःसरुजश्चकर्णे ॥

अर्थ—प्रथम कर्णमूलकी सूजनपर जोख लगायकर रुधिर निकलवाय डाले, और दूसरे दिम प्रातःकाल उस सूजनपर सरसो, सैंधानिमक, वच, घरकाधूआं, सोंठ, हलदी, इनको पानीमें पीस उसका लेप करे तो सूजनयुक्त व्रणको और पीडाको शमन करे ॥

रोहीतकादिलेप

लेपेनरोहीतकपीलुसिंधुपुत्रींद्रवल्लीकटुहंजिकावा ॥ तुत्थालसर्षपशिलानवसारगंधकासीसकुष्ठपटुहंसपदीकरंजः ॥ लेपात्पलंकषयुताश्वसयावशूकानिःसंशयंसपदिकर्णकवेदनाघ्नाः॥

अर्थ—रुहेडा, अखरोटवृक्षकी छाल, मोतीकी सीप, इन्द्रायन, करेले, लीलाथोथा, हरताल, सरसो, मनसिल, नोसदर, गंधक, हीराकसीस, कूठ, निम-

क, हंसपदी, कंजा, गूगल, और जवाखार, इनका लेप कर्णमूलपर करे तो तत्काल, कर्णमूलकी पीडा दूर करे ॥

मरीचादिनस्य

अशिशिरजलपरिमर्दितंमरिचकणालवणजंरजस्त्वरितं ॥
नस्यविधौसेवितंकिलकर्णकरुङ्नाशनंगदितं ॥

अर्थ—गरमजलमें मिरच, पीपल, और सैंधानिमक, औटायकर नस्यलेय तो कर्णककी पीडा दूर हो ॥

कर्णकपरनस्य

अशिशिरजलयुक्तंनावनंकर्णकार्तौजनयतिसुखसिद्धिंघ्राणरं-
ध्रप्रवेशात् ॥ लवणपरमकृष्णाचूर्णयुक्तंप्रभातेसकलमुनिभिरु-
क्तंव्याधिविध्वंसकारि ॥

अर्थ—कर्णकरोगमें सैंधानिमक, और पीपल, इनका चूर्ण गरमपानीमें डालके प्रातःकाल नस्य लेवे तो कर्णक पीडावालेको सुख होय ॥

सामान्यउपचार

तंजयेच्छोणितस्रावैःसर्पिःपानप्रलेपनैः ॥
प्रदाहैःकफपित्तघ्नैर्वमनैःकवलग्रहैः ॥

अर्थ—रक्तस्राव, घृतपान, लेप, दागना, कफपित्तनाशक वमन और मुखमें कवल धरना इत्यादि उपचार कर्णककी सूजनपर करे

कांजिकादिलेप

कांजिकेनसुपिष्टंतुधूर्तबीजप्रलेपनं ॥
राजिकागुडमिश्रेणकर्णमूलेसुखावहं ॥

अर्थ—धतूरेके वीज, राई, और गुड, इनको एकत्रकर पीस कांजीमें मिलाय लेप करे तो सुख होय ॥

उपचार

रक्तस्रावोजलौकाभिर्घृतपानंचयुज्यते ॥
कर्णग्रंथिविनाशार्थमायुर्वेदविदांवरैः ॥

अर्थ—कर्णमूलवालेकें जोख लगाय रुधिर कढावे और घृत पिवावे तो अच्छाहोय

अन्न

जीर्णानांरक्तशालीनांज्वरघ्नःक्काथसाधितः ॥ प्रसृत-
स्त्वोदनोद्विस्त्रिकार्योयूषादिकोपिवा ॥ सचेज्जीर्यत्य-
विघ्नेनज्वरीजीवेत्तदाध्रुवं ॥

अर्थ—पुराने लालचावलोंका ज्वरघ्न काढेमें भात अथवा यूष वनायके देवे यादि यह जिस रोगीको निर्विघ्न पचजावे तो रोगी निःसंदेह वचे ॥

भुग्ननेत्रसंनिपातनिदान

ज्वरबलापचयस्मृतिशून्यताश्वसनभुग्नविलोचनमोहितः ॥
प्रलपनभ्रमवेपथुशोथवान्त्यजतिजीवितमाशुसभुग्नदृक् ॥

अर्थ—ज्वरकर्के बलक्षीण, स्मरण शक्तिका नाश, श्वास, टेढीदृष्टी, मूर्च्छा, प्रलाप, भ्रम कंप, ये लक्षण भुग्ननेत्र संनिपातमें होतेहैं यह रोगी तत्काल मरे ॥

दार्व्यादिकाढा

दार्वीपटोलाघनकंटकारीतिक्तानिशानिंबफलत्रिकाणां ॥
क्काथोनियोज्योज्वरसंनिपातेविभुग्ननेत्रेप्रतिबोधनाय ॥

अर्थ—दारुहलदी, पटोलपत्र, नागरमोथा, कटेरी, कुटकी, हलदी, नीमकी-छाल, हरड, बहेडा, और आमला, इनका काढा ज्वर और भुग्ननेत्र संनिपात इ-नपर बोध होनेके लिये देय ॥

श्रेष्ठादिकाढा

श्रेष्ठापटोलकटुकाघननिंबसुराह्वधावनीसहिताः ॥
घ्नंतिभृशंमोहंपित्तज्वरमुग्रसंनिपातोत्थं ॥

अर्थ—पीपल, पटोलपत्र, कुटकी, नागरमोथा, नीमकीछाल, देवदार और कटेरी, इनका काढा मोह, पित्तज्वर, तथा संनिपातज्वर इनका नाश करे

यष्ट्यादिकाढा

यष्टीपटोलकटुकाघननिंबसुराह्वधावन्यः ॥
अपहरंतिमोहपित्तंज्वरमुग्रंसंनिपातोत्थं ॥

अर्थ—मुलहटी, पटोलपत्र, कुटकी, नागरमोथा, नीमकीछाल, देवदार, औ-र कटेरी इनका काढा पित्तज्वर और उग्रसंनिपातज्वर इनका नाशक है ॥

मरिचादिनस्य

मरिचतुरगगंधामागधीसिंधुजातंलशुनमधुकसारैरुग्रगंधार्द्रकाभ्यां ॥ छगलकजलपिष्टंसंयुतंशास्त्रविद्भिःसपदिभवतिनस्यंभुग्ननेत्रप्रमाथि ॥

अर्थ—कालीमिरच, असगंध, पीपल, सैंधानिमक, लहसन, महुआकागोंद, वच, और अदरख, इनको वकरेके मूत्रमें पीस नस्यदेवे तो भुग्ननेत्र संनिपातको दूर करे ॥

अश्वगंधादिनस्य

तुरंगगंधालवणोग्रगंधामधूकसारोषकमागधीभिः ॥
बस्तांबुशुंठीलशुनान्विताभिर्नस्यंत्वसंभुग्नदृशंकरोति ॥

अर्थ—असगंध, सैंधानिमक, वच, मुलहटी, अनारदाना, त्रिकुटा, और लहसन, इनको वकराके मूत्रमें नस्यदेवे तो नेत्र स्वच्छ करे

भूनिंबादिअवलेहअंजनवनस्य

भूनिंबमाक्षिकवचासहितंचकुर्याल्लेहंकणोषणरसोनकराजिकाभिः ॥ नेत्रांजनंचलवणोत्तमपिप्पलीभ्यांनस्यंवचामरिचहिंगुमधूकसारैः ॥

अर्थ—चिरायता, सहत, वच, पीपल, मिरच, लहसन, और राई, इनका अवलेह देवे, तथा निमक और पीपल इनका अंजनकरे और वच, मिरच, हींग, मुलहटी, और अनारदाना इनका नस्य करावे ॥

मार्तंडभैरवरस

शुद्धसूतंसमंगंधंगंधात्पादांशटंकणं॥ ताम्रपात्रेक्षिपेत्पिष्टंजयंत्यालोडयेद्द्रवैः ॥शिग्रुमूलरसेनाथभावयेदष्टधातपे ॥कटुत्रयस्यवासायावन्हिरुद्रजटाद्रवैः ॥ तिलपर्णीतथाजातीपिप्पलीपत्रमूलकैः ॥ द्रावैरेवतुसप्ताहंशोष्यंशोष्यंविभावयेत् ॥ताम्रपात्रात्समुद्धृत्यकृत्वागोलंविशोषयेत् ॥ वस्त्रबद्धामृदाप्यत्रभूधरैःस्वेदयेत्पुटे ॥ द्वियामांतेसमुद्धृत्यचूर्णयेदोषधैःसह ॥ विषकर्पूरजात्येलारसस्यदशमांशतः ॥भावयेद्विजयाद्रावैर्दिनमे-

कंचमर्दयेत्॥चतुर्गुंजासकर्पूरमधुनासान्निपातजित् ॥ मार्तंडो-यंरसोनामअसाध्यंसाधयेयेत्ध्रुवं ॥ दशमूलंपिबेच्चानुपथ्यं-स्यान्मुद्गयूषकैः ॥

अर्थ–पारा१ भाग, गंधक१ भाग, सुहागा चतुर्थांस, सवको एकत्र कर तामेके पात्रमे डालके जयंतीके रसकी तथा सहजनेकी जडके रसकी आठ २ भावना धूपमें धरके तामेके पात्रमें देय और त्रिकुटा, अडूसा, चित्रक, ईश्वरी, तिलपर्णी, जावित्री, पीपलके पत्ते और जड इन प्रत्येकके रसकी सात २ भावना देवे; फिर सुखावे फिर तामेके पात्रमेंसे निकाल उसका गोला कर सुखायके ऊपर कपड़-मिट्टी कर भूधर यंत्रमें दो प्रहर पचन करावे; जब शीतल हो जाय तब निकाल वारीक घोटे उसमें विष, कपूर, जावित्री, और इलायची ये सव वस्तु पारेके दशांश डालके भाँगके काढेमें एक दिन खरल करे तो यह (मार्तंड रस) वने इसमेंसे चार रत्ती सहत और कपूर इनसैं देवे ऊपरसैं दशमूलका काढा देवे तो असाध्यभी संनिपातका नाश करे ॥

रक्तष्ठीवीसंनिपातनिदान

रक्तष्ठीवीज्वरवमितृषामोहशूलातिसारहिक्काध्मानभ्र-मणदवथुश्वाससंज्ञाप्रणाशः॥श्यामारक्ताधिकतररस-नामंडलोत्थानरूपारक्तष्ठीवीनिगदितग्रहप्राणहंता-प्रसिद्धः ॥

अर्थ—रुधिर गेरना, ज्वर, वमन, तृषा, मूर्च्छा, शूल, अतिसार, हिचकी, पेटका फूलना, भौर, नेत्रोंमें दाह, श्वास, चित्तभ्रम, जिव्हा काली किंवा लाल उसपर चकत्ते हो असे लक्षणयुक्त जो हो उसको (रक्तष्ठीवी) संनिपात कहते है यह प्राणनाशक प्रसिद्ध है ॥

पर्पटादिकाढा

पर्पटकधन्वयासकवासाभूतृणकैःकटुकीफलनस्यं ॥
शर्करयासहितोपिकषायोलोहितमास्यगतंविनिहंति ॥

अर्थ—पित्तपापरा, धमासा, अडूसा, रोहिस (सुगंधि तृण) इनका काढा खांड मिलायके देवे और कंकोलका चूर्ण करके इसकी नस्य करे तो मुखसैं रुधिर गिरनेको दूर करे ॥

जलदादिकाढा

जलदाव्हयपद्मकपर्पटकमलयोद्भवजातिवरीमधुकैः ॥
मधुनिंबजलानलचंदनकैःक्वथितंमुखरक्तदरंसलिलं ॥

अर्थ--नागरमोथा, पद्माख, पित्तपापडा, चंदन, चमेली, सतावर, मुलहटी, सहत, नीमकीछाल, नेत्रवाला, चित्रक, और लालचंदन इनका काढा मुखसें रुधिर वहते को बंद करे ॥

रौहिषादिकाढा

रौहिषधन्वयवासकवासापर्पटगंधलताकटुकाभिः ॥
शर्करयासममेषकषायःक्षतजष्ठीविनउदितउपायः ॥

अर्थ—सुगंधितृण, धमासो, अडूसा, पित्तपापडा, गंधलता, कुटकी, इनका काढा खांडके साथ देवे तो रक्तष्ठीवी सन्निपात दूर हो ॥

पद्मादिकाढा

पद्मकचंदनपर्पटमुस्ताजातिवरारुणचंदनवारि ॥
क्लीतकनिंबयुतंपरिपक्वंवारिभवेदिहशोणितहारि ॥

अर्थ--पद्माख, चंदन, पित्तपापडा, नागरमोथा, चमेलीके पत्ते, त्रिफला, लालचंदन, सुगंधवाला, मुलहटी, और नीम, इनका काढा रक्तष्ठीवीको नष्ट करे॥

मधुकादिकाढा

मधुकमधूकपरूषकषायश्चंदनपल्लवदारूसनाथः ॥
श्रीपर्णीफलशीतकषायःससितइहस्यादस्रजयाय ॥

अर्थ—महुआ, मुलहटी, फालसा, रक्तचंदन, पत्रज, देवदार, सालवनके फल' इनका काढा शीतल करके खांड मिलायके देय तो रुधिर बंद होय॥

दूर्वादिनस्य

देयंदूर्वारसैर्नस्यंरसैर्दाडिमपुष्पजैः ॥
अथवात्रिफलादूर्वाजलंरक्तहरंपरं ॥

अर्थ--दूवके रसकी अथवा अनारके फूलके रसकी किंवा त्रिफला, और दूवके रसकी नस्यदेवे तो रक्तष्ठीवी संनिपात नष्ट होय ॥

आम्रादिनस्य

आम्रास्थिचपलांडुर्वानासिकाच्युतरक्तजित् ॥

अर्थ—आमकी गुठलीकी अथवा लइसनके रसकी नस्यदेवे तो नाकसें रुधिर गिरना बंद हो ॥

चिकित्सा ॥

पंचवक्रोरसोप्यत्रदेयोगुंजाद्वयोहितः ॥
भस्मेश्वरोरसोवाथमाषैकंसंनिपातजित् ॥

अर्थ-पंचवक्ररस दो रत्ती अथवा भस्मेश्वर १ मासे देय तो रक्तष्ठीवीकोनाश करे॥

रक्तष्ठीवीचिकीत्सा

रक्तेमोरेश्वरोदेयोरसोगुंजाद्वयंघृतैः ॥ सनागरोनिहंत्याशुसंनिपातंसुदारुणं ॥ अनुपानविशेषाच्चतप्तंवारिपलद्वयं ॥ दध्यन्नंदापयेत्पथ्यंतृषार्तंशीतलंजलं ॥

अर्थ—रक्तष्ठीवीमें मोरेश्वररस घृतके और सोंठके चूर्णसें दो रत्ती देय अनुपान विशेषमें गरम जल ८ तोले देय और पथ्यमें दहीभात देय, और अतितृषामें शीतल जल देवे॥

सोमपाणीरस

सूतनिष्कंगंधनिष्कंमर्दयेच्चित्रकद्रवैः ॥ माषैकंमृततीक्ष्णंस्यान्मृतंशुल्वंचमाक्षिकं ॥ माषैकैकंचसंमिश्र्यपूर्वसूतेथमर्दयेत् ॥ धत्तूरत्रिफलाकन्यावृद्धादार्व्यार्द्रकद्रवैः ॥ कोशाम्रकस्यमंडूक्यानिर्गुंड्याभृंगिचित्रकैः वयस्थापिचवातारिशक्रासनद्रवैरपि ॥ प्रतिद्रावंपलैकैकंदत्त्वास्वल्पंविमर्दयेत्॥ रसांसंत्र्यूषणंक्षिप्त्वाचणमात्रावटीकृता॥तांमिश्रसांनिपातार्तेंदापयेज्जीरकद्रवैः ॥ कषायःपंचमूलानामनुपानंप्रशस्यते ॥ दध्यन्नंदापयेत्पथ्यंतृषार्तंशीतलंजलं ॥ सांनिपातांनिहंत्याशुसोमपाणीरसोवरः ॥

अर्थ—पारा, और गंधक, चारचार मासे लेकर उनको चीतेके रसमें खरल करे फिर १ मासा तीक्ष्ण लोहकी भस्म १ मासा ताम्रभस्म, और एक मासा शुद्ध माक्षिक ये एकत्र कर उक्तपारे गंधकमें मिलाय धतूरा, त्रिफला, घीगुवार, विधायरो, अदरख, लाल आम, ब्राह्मी, निर्गुंडी,भाँगरो, चीता, आमले, अंडकी जड, और भांग इनके एक एक पल काढेमें अथवा रसमें घोटे फिर पारेका समान भाग त्रिकुटेका चूर्ण डालके चनेकी बराबर गोली बनावे ये रक्तष्ठीवी संनिपातपर जीरेके काढेसें देवे और पीछे पंचमूलका काढा देय तथा दहीभातका पथ्य देय जव प्यास लगे तव शीतल जल देवे तो यह (सोमपाणिरस) संनिपातको दूर करे

प्रलापकसंनिपातनिदान

कंपप्रलापपरितापनशीर्षपीडाप्रौढप्रभावपवमानपरोन्य-
चिंता ॥ प्रज्ञाप्रणाशविकलप्रचुरप्रवादःक्षिप्रंप्रयाति-
पितृपालपदंप्रलापी ॥

अर्थ—कंप, प्रलाप, संताप, मस्तकपीडा, अत्यंत प्रभाव, स्वच्छता विषय इच्छा अन्य पुरुषकी चिंता, बुद्धिका नाश, विकलता, अत्यंतबकवाद करना, अथवा वादकरना, इन लक्षण करके (प्रलापक) संनिपात जानना. यह रोगीको तत्काल यमलोकको पहुचावे ॥

मुस्तादिकाढा

मुस्तवारिदशमूलनागरंपर्पटोमलयजंधवत्वचः ॥
वासकःकृतसमानविभागःक्वाथएवहरतिप्रलापकं ॥

अर्थ—नागरमोथा, नेत्रवाला, दशमूल, सोंठ, पित्तपापडा, लालचंदन, धौंकी छाल, और अडूसा, ए समान भाग ले काढाकर पीवे तो प्रलापक संनिपात दूर होय।

तगरादिकाढा

तगरतुरगगंधापर्पटीशंखपुष्पीत्रिदशविटपितिक्ताभा-
रतीभूतकेशी ॥ जलधरकृतमालश्वेतकीगोस्तनीभ्यां
सहहरतिकषायोमंक्षुपानात्प्रलापं ॥

अर्थ—तगर, असगंध, पापरी, शंखा हूली, देवदार, कुटकी, ब्राम्ही, जटामांसी, नागरमोथा, अमलतासका गूदा, हरड, और दाख इनका काढा प्रलापक संनिपातको तत्काल शमन करे ॥

श्रीः ।

बृहन्निघण्टुरत्नाकरे

चतुर्थभागः ४

चिकित्साखण्डः

मथुरानिवासिमाथुरचतुर्वेदिकृष्णलालतनयपंडित-

दत्तरामविरचितः

स च

मुंबय्यां

खेमराज श्रीकृष्णदासइत्यनेन

स्वकीये

"श्रीवेंकटेश्वर" मुद्रालये मुद्रयित्वा

प्रकाशं नीतः ।

शाके १८१४ संवत् १९४९

प्रस्तावना.

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं साधनं मतम् ॥

समस्त पीयूषपाणि वैद्यजनों को हम अत्यंत विनयपूर्वक बडे उत्साहके साथ आज विदित करते हैं कि,—अहो समस्तभूमंडलनिवासि वैद्यमहाराजहो ! इस भूतलमें आयुर्वेदका प्रकाश प्रायः सर्वत्र सुप्रसिद्धहीहै, कि जिसके प्रभावसें यावत्जीवमात्रोंके प्राणधारणादिक व्यापार यथावत् चलरहेहैं. जिससें इस क्षणभंगुर मानवीय शरीरमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, ए चारों पुरुषार्थ सिद्धहोते है, उस आयुर्वेदके अनेक आचार्योंनें अनेक संहिताग्रंथ बनाकर प्रसिद्ध किये हैं परंतु उन ग्रंथोंके अनेक मतोंके अनुरोधसें अनेक प्रकारके निदान, लक्षण, चिकित्सा आदिक प्रकरणोंका क्रमसे ज्ञान होना कठिनथा, इस लिये हमनें पंडित दत्तरामजी चौबे मथुरा निवासीके द्वारा सर्व वैद्यकशास्त्रके संहिता ग्रंथोंको मंथन करके ऐसा एकग्रंथ बनवायाहै कि, जिससें शरीरचिकित्साके अनेक उपायोंकों सर्व साधारण भी वैद्यलोग अनायाससें जान ले—जिस ग्रंथका नाम बृहन्निघंटुरत्नाकर रखाहै, जो इस सर्व भारतखंडमें सुप्रसिद्धहीहै, उसके तीन वर्षोंके तीन भाग सर्व वैद्य महाशयोंकें समीपमें पहुंचकर सर्व कार्य करनेको तत्पर हुआहीहै,—अब उसका यह चतुर्थ भाग चिकित्साखंड जो चिकित्सा प्रकरणसें आदिसें अंततक बिलकुल परिपूर्ण है, सो यह—आप महाशयोंके सेवा करनेके वास्ते तैयार होकर प्रकाशमें आयाहै, इसमें जो विषय है, उन्होंमे अनेक २ उपायोंके साथ चिकित्सा कहीहै, जिन्होंका विस्तार अनुक्रमणिकासें और प्रत्यक्ष इसीही ग्रंथसें आप महाशयोंके चित्तको प्रसन्न करेगा, ऐसी हम आशा करते हैं, और उम्मेद रखते हैं कि,—इस सर्वोपयोगी अत्यंत उपकारी चिकित्साके ग्रंथ सरीखा दूसरा कोईभी ग्रंथ इस भूतलमें आजतक छपाभी नहीं होगा, इस वास्ते सर्व महाशय इस ग्रंथको अपना उदार आश्रय देकर सर्व प्राणिमात्रके रोग नष्टकरके धर्म आदिक चतुर्विध पुरुषार्थको सिद्धकर अपने जन्मका सार्थक करेंगे.

पहिले और दूसरे भागमें प्रत्येकके साठ साठ फार्म है, तीसरे भागके ७० फार्म् है और इस चतुर्थ भागके ७४ फार्म् हैं, और वर्ष वर्षमें ग्रंथ संख्या बढतीही जातीहै. इसके आगे पंचम भाग बराबर छपरहाहै, वहभी जलदीही तैयार होकर आप सज्जनोंके सेवामें आवेगा.

आपका कृपाभिलाषी—

खेमराज श्रीकृष्णदास

श्रीवेंकटेश्वर छापखाना.

मुंबई.

श्रीः ।

अथ बृहन्निघण्टुरत्नाकरचतुर्थभागविषयानुक्रमः ।

धातुशोषकअतिकष्टसाध्य विषमज्वर

विषमभेदवातबलासकज्वर

प्रलेपक

रक्तातिसार

अर्श (बवासीर)

वातार्शः ।

पित्तार्शः

अनुक्रमणिका समाप्ता.

जलधरादिकाढा

जलधरदशमूलंवारिशुंठीसमेतंमलयजकृतमालंवासकंपर्पटंच॥समधरणघृतांशःक्वाथएषप्रभातेशमयतिसमुदीर्णंपीतमात्रःप्रलापम् ॥

अर्थ––नागरमोथा, दशमूल, नेत्रवाल, सोंठ, चंदन, अमलतासको गूदो, अडूसा, और पित्तपापडा, ए प्रत्येक पाव तोला लेय, इसका काढा लेनेसैं शीघ्र प्रलापक दूर हो ॥

दुसरातगरादिकाढा

सतगरवरतिक्तारेवतांभोदतिक्तानलदतुरगगंधाभारती-
हारहूराः ॥ मलयजदशमूलीशंखपुष्प्यःसुपक्काःप्रलपनम-
वहन्युःपानतोनातिदूरात् ॥

अर्थ––तगर, पाढ, अमलतासको गूदो, नागरमोथा, कुटकी, जटामांसी, असगंध, ब्राम्ही, दाख, चंदन, दशमूल. और शंखाहूली, इनका काडा पीवेतो प्रलापक संनिपातको, तत्काल हरणकरे ॥

उपचार

सांत्वनैरंजनैर्नस्यैस्तीक्ष्णैस्तीमिरसेवनैः ॥
सर्वतोविकृतंचित्तमस्यप्रकृतिमानयेत् ॥

अर्थ––शांतिपूर्वक, वोलना, अंजन, तीक्ष्णनस्य, अंधकार नाश, इन उपायोंसैं विकृत हुए चित्तको प्रकृतिपर लाना चाहिये ॥

मृतोत्थापनरस

शुद्धसूतंद्विधागंधंशिलाचविषहिंगुलौ ॥ मृतकांताभ्रताम्राय-
स्तालकंमाक्षिकंसमं ॥ अम्लवेतसजंबीरचांगेरीनागरेणच ॥
निर्गुंड्याहस्तशुंडचाश्वरसैर्मर्द्यंदिनद्वयं॥ रुध्वाथभूधरेपक्त्वा-
दिनांतेतत्समुद्धरेत् ॥ चित्रकस्यकषायेणमर्दयेत्प्रहरद्वयं ॥
माषमात्रंप्रदातव्योहिंगुत्र्यूषार्द्रकद्रवैः॥ सकर्पूरानुपानैःस्या-
न्मृतोत्थापनकोरसः ॥ पीडितःसन्निपातेनगतोवापयमाल-
यं ॥ तत्क्षणाज्जीवदःसत्यंपथ्यंक्षीरंप्रयोजयेत् ॥

अर्थ–शुद्धपारा, १ भाग, गंधक २ भाग, मनसिल, विष, हिंगलू, कांतलोहकीभस्म, अभ्रक भस्म, ताम्रभस्म, हरतालभस्म, और माक्षिक भस्म ए एक २ भाग ले सबको एकत्र कर अमलवेत, जंभीरी, चूका, अदरख, सह्मातू, इनप्रत्येकके रसमें एक २ दिन खरलकरे और मुंडीके रसमें दोदिन खरल कर सराव संपुटमें धर कपड मिट्टी चढाय भूधर यंत्रमें चार प्रहर पचावे सायंकालको निकाल चीतेके काढेसैं दो प्रहर खरल करे तो (मृतोत्थापन)रसवने इसमेंसैं १ मासे अदरकके रसमें हींग, त्रिकुटा, और कपुर डालके देय तो संनिपात करके मृतप्राय हुआभी तत्क्षण सावधान होय इसके ऊपर दूधभात पथ्य देवे ॥

जिव्हकसंनिपातनिदान

श्वसनकासपरितापविव्हलःकठिनकंटकवृतोजिव्हकः ॥
बधिरमूकबलहीनलक्षणोभवतिकष्टतरसाध्यजीवकः ॥

अर्थ—श्वास, खाँसी, संताप, और विव्हल, कठिन और काँटेयुक्त जिव्हा, वेहरेपना, गूंगा, और वलहानि इन लक्षण करके युक्त अेसा जिव्हकसंनिपात कष्ट साध्य है ॥

उग्रादिकाढा

उग्रासिंहीयासरास्नामृताव्हाशुंठीतिक्ताभृंगिकापौष्कराणां ॥
ब्राह्मीभार्गीतिक्तवासासठीनांक्काथोहन्याज्जिव्हकंसंनिपातं॥

अर्थ—वच, कटेरी, धमासा, रास्ना, गिलोय, सोंठ, कुटकी, काकडासिंगी, पुहकरमूल, ब्राह्मी, भारंगी, चिरायता, अडूसा, और कचूर इनका काढा जिव्हक संनिपातको दूर करे ॥

क्षुद्रादिकाढा

क्षुद्रानागरापुष्करमृतलताब्राह्मीवचासुव्रताभार्गीवासकया-
सतोयसुरसाक्काथोजयेज्जिव्हकं ॥ विश्वाचर्मविभावरीयुगवरा-
वत्सादनीवारिदव्याघ्रीनिंबपटोलपुष्करजटारुग्दारुभिर्वाक्ृतः॥

अर्थ—कटेरी, सोंठ, पुहकरमूल, गिलोय, ब्राह्मी, वच, कपूरकचरी, भारंगी, अडूसा, धमासा, नेत्रवाला, तुलसी, इनका अथवा सोंठ, पित्तपापडा, हलदी, दारुहलदी, त्रिफला, नागरमोथा, कटेरी, नीमकी छाल, पटोलपत्र, पुहकर, मूल कूठ और देवदारु इनका काढा देय तो जिव्हक संनिपातको जीते ॥

सिंह्यादिकाढा

सिंहीनागरपुष्करैसकटुकैरास्नागुडूचीयुतैर्भार्गीकर्कटशृंगि-
कासठिसमैर्दुःस्पर्शवासाघनैः॥ पीतंजिव्हकहारिवाऽभिवति-
ब्राह्मीवचामिश्रितैःप्रोक्तंवैद्यवरेणवंद्यमुनिभिर्भूनिंबमिश्रंश्टतं॥

अर्थ—कटेरी, सोंठ, पुहकरमूल, कुटकी, रास्ना, गिलोय, भारंगी, काकडासिंगी, कचूर, धमासो, अडूसो, नागरमोथा, ब्राह्मी, वच, और चिरायता इनका काढा जिव्हक संनिपातको हरण करे॥

देवदार्वादिकाढा

सुरतरुकटुनिंबैरूक्षपथ्यापटोलीरजानियुगुलविश्वासिंहिकापु-
ष्कराव्हैः॥ सलिलधरगुडूचीवासकःसर्वमेभिःप्रशमयतिक-
षायोजिव्हकंकष्टसाध्यं॥

अर्थ—देवदार, नीमकीछाल, वहेडा, हरड, पटोलपत्र, हलदी, दारुहलदी, सोंठ, कटेरी, पुहकरमूल, नागरमोथा, गिलोय, और अडूसा, इनका काढा कष्टसाध्य ऐसाजिह्वकका नाशक है॥

किरातकवल

किराततिक्ताकुलकृतकलिंजकचूरकृष्णाकटुतैलयुक्तः॥
अम्लद्रवःसंशमयेद्रसज्ञादोषांस्तुतोदाशरथिर्यथाघं॥

अर्थ—चिरायता, अकरकरा, कुलीजन, कचूर, और पीपल, इनका चूर्ण सरसोंके तेल और बिजोरेके रससैं एकत्रकर मुखमें रक्खे तो जिव्हाका दोष शमन करे जैसे रामचंद्रकी स्तुति करनेंसैं पाप शमन होते है॥

शालूरपर्ण्यादिअवलेह

शालूरपर्णीमालूरमूलामयमधुप्लुता॥
शंबूकपुष्पीसहितासेव्यावाचांविशुद्धये॥

अर्थ—कमलकंद (भसीडे) पिठवन, कूठ, और शंखपुष्पी इनका चूर्ण सहत मिलायके चाटे तो वाणी शुद्धहोय॥

त्रिपुरभैरवरस

विश्वाभमविभावरीयुगवरावत्सादनीवारिदव्याघ्रीनिंबपटो-
लपुष्करजटारुग्दारुभिर्वाकृतः॥ विषमहौषधमागधिकोष-

णाद्रुमणिरक्तकमार्द्रकमर्दितं ॥ क्रमविवर्धितमुद्दलितंज्वरं-
त्रिपुरभैरवएषरसोवरः ॥

अर्थ—सोंठ, सुवर्णभस्म, हलदी, दारुहलदी, त्रिफला, गिलोय, नागरमोथा, कटेरी, नीमकी छाल, पटोलपत्र, पुहकरमूल, कूठ, और देवदार, इनका काढा देय तो जिव्हक संनिपात दूरहोय ॥ अथवा विष, सोंठ पीपर, गजपीपर, आक, और लाल अंडौआ ये औषध क्रमसैं बढती लेये (जैसै विष १ भाग, सोठ २ भाग, पीपर ३ भाग,) इसप्रकार ले अदरखकेरसमें खरल करे तो इसेत्रिपुरभैरव रस कहवे है इसको चाटनेसै जिव्हक संनिपात दूर होय ॥

सामान्यउपचार

गुंजैकंमधुनाप्यत्रदेयोह्यानंदभैरवः ॥
दध्यन्नंदापयेत्पथ्यंत्रिनेत्राख्योरसोहितः ॥

अर्थ—आनंदभैरव रस सहतसैं चाटे और दहीभात पथ्य देवे अथवा त्रिनेत्राख्य रस देय तो जिव्हक संनिपात नाश होय ॥

अभिन्याससन्निपातनिदान

दोषत्रयास्निग्धमुखत्वनिद्रावैकल्यनिश्चेष्टनकष्टवाग्मी ॥
बलप्रणाशःश्वसनादिनिग्रहोभिन्यासउक्तोननुमृत्युकल्पः ॥

अर्थ—दोषत्रयोंके कोप करके मुखपर चिकनाई, निद्रा, अंगोंमे विकलता, निश्चेष्टता, बडे कठिनतासैं बोलना, बलनाश, दमकाचढना ए लक्षण अभिन्यास संनिपातमें होते है यह केवल मृत्युही है ॥

औषधोंकीअवधि

यावच्चश्वसतेजीवोयावत्क्रामतिभेषजं ॥
तावत्क्रियाप्रकर्तव्यादैवस्यकुटिलागतिः ॥

अर्थ—यावत्पर्यंत यह प्राणी श्वासोच्छ्वास लेता है और औषध कंठमें उतरती है, तवतक औषधके विषयमें उपेक्षा न करे;अर्थात् तावत्काल पर्यंत औषध दीये जाय क्यो कि दैवकी गति विचित्र है कदाचित् रोगी वचजावे ॥

इसमेंदृष्टांत

दुर्गेभासियथामज्जन्भाजनंत्वरयाबुधः ॥ गृण्हीयात्तलमप्राप्तं-

तथाभिन्यासपीडितं॥ निद्रोपेतमभिन्यासंक्षिप्रंविद्याद्धतौजसं ॥

अर्थ—जैसै अथाह जलमें वरतन गिरे हुएको तलमें न पहुचने पावे उस्से प्रथमही पकडले उसीप्रकार अभिन्यास संनिपात पीडित रोगीका वहुतही शीघ्र यत्न करना चाहिये अभिन्यासमें निद्रा आतेही हतवीर्य जानना ॥

सामान्यउपचार

सन्निपातांतकंचात्रमासैकंदापयेद्रसं ॥
पथ्यंपूर्वोदितंदेयंरसोह्यानंदभैरवः ॥

अर्थ—अभिन्यास संनिपातमें एक मासे संनिपातांतक रस देवे किंवा आनंद भैरव रस देय और पूर्वोक्त पथ्य देवे ॥

सिंह्यादिकाढा

सिंहिव्याघ्रीमृताद्राक्षाअजाजीसकटुत्रिकं ॥ भृंगीविडंगंचसमंपक्त्वाविश्वांव्यसाधयेत्॥ घृताक्तैस्तंडुलैर्भ्रष्टैःपेयामुष्णांज्वरीपिबेत ॥ हिक्काश्वासंचकासंचतथाभिन्यासपीडितः ॥
विबद्धवातविण्मूत्रोपानमस्मिन्प्रयोजयेत् ॥

अर्थ—कटेरी, वडीकटेरी, गिलोय, दाख, जीरा, सोंठ, मिरच, पीपर, काकडासिंगी, वायविडंग, इनका काढा कर उस काढेमें चावल घीमे भून उनकी पेया करावे उस पेयाको गरमागरम ज्वरवालेको देय तो हिचकी, श्वास, खाँसी, अभिन्यास संनिपात और वायु मलमूत्र इनका अवरोध ये दूर होय ॥

कंटकार्यादिकाढा

बृहतीपौष्करंभार्गीसठीशृंगीदुरालभा ॥
पक्त्वापानंप्रशंसंतिश्लेष्मातेनोपशाम्यति ॥

अर्थ—कटेरी, पोहकरमूल, भारंगी, कचूर, और धमासो इनका काढा देय तो इससै कफशांति होय ॥

त्रिवृतादिकाढा

त्रिवृद्विशालात्रिफलाकटुकारग्वधैःकृतः ॥
सक्षारोभेदनःक्काथोज्ञेयःसर्वज्वरापहः ॥

अर्थ—निसोथ, इन्द्रायनकी जड, त्रिफला, कुटकी, और अमलतासका गूदा, इनके काढेमें जवाखार डालके देय तो रेचक और सर्व ज्वरनाशक है ॥

त्रायंत्यादिकाढा

त्रायंतीदशमूलपुष्करजःशवातारिभिःकारवीभार्गीस्यादमृता-
टरूषकशटीगोमूत्रसंयोजितैः ॥ शृंगीव्योषपुनर्नवाभिरचिरादु-
ष्णःकषायोहरेत्साभिन्यासगदंकफज्वरहरंनिःसंशयंपाययेत् ॥

अर्थ—त्रायमाण, दशमूल, पुहकरमूल, अंडकीजड, सोफ, भारंगी, गिलोय, अडूसा, कचूर, काकडासिंगी, सोंठ, मिरच, पीपल, पुनर्नवा, इनका गोमूत्रमें काढा कर किंचित् उष्ण पीवावे तो अभिन्यास संनिपात कफज्वरको नाश करे॥

सुरभ्यादिकाढा

सुरभिसलिलयुक्तःसिंहिकाश्रीफलाभ्यांप्रवरलवणया-
सोविश्वपाषाणभेदैः ॥ पवनारिपुजटाभिःसंयुतःकाथ-
एषांप्रतिदिनमपिपीतोहंत्यभिन्यासशूलं ॥

अर्थ—कटेरी, वेलगिरी, सैंधानिमक, धमासा, सोंठ, पाखानभेद, अंडकीजड, जटामांसी इनका काढा करके गोमूत्रके साथ देवे तो अभिन्यास सन्निपात और शूल इनको नाश करे ॥

शृंग्यादिकाढा

शृंगीभार्ग्यभयाजाजीकणाभूनिंबपर्पटैः ॥ देवदारुवचाकुष्ठ-
यासकट्फलनागरैः॥ मुस्तधान्यकतिक्तेंद्रयवपाठाहरेणुभिः॥
हस्तिपिप्पल्यपामार्गपिप्पलीमूलचित्रकैः ॥ विशालारग्व-
धारिष्टशठीवाकूचिकाफलैः॥ विडंगरजनीदार्वीयवानीद्वयसं-
युतैः ॥ समांशैर्विहितःक्काथोहिंग्वार्द्रकरसान्वितः॥अभिन्या-
सज्वरंघोरंहंतितंद्रांचतत्क्षणात् ॥ प्रमोहंकर्णमूलंचसन्निपा-
तांस्त्रयोदश ॥ हिक्कांश्वासंचकासंचतथासर्वानुपद्रवान् ॥

अर्थ—काकडासिंगी, भारंगी, हरड, जीरा, पीपल, चिरायतो, पित्तपापडो- देवदारु, वच, कुठ, धमासो, कायफर, सोंठ, नागरमोथा, धनिया, कुटकी, इन्द्रजो, पाढ, रेणुकाद्रव्य, गजपीपर, ओंगा, पीपरामूल, चीतेकी, छाल, इन्द्रायनकी जड, अमलतासको गूदो, नीमकी छाल, कचूर, बावची, वायविडंग, हलदी, दारुहलदी, अजमायन, अजमोज ये औषध सब समान भाग ले काढा क

रके उसमें हींग और अदरखका रस डालके पीवे तो अभिन्यास संनिपात ज्वर, तंद्रा, मोह, कर्णमूल, तेरह प्रकारके संनिपात, हिचकी, श्वास, खांसी और ज्वरके सर्व उपद्रव इनको नाश करे ॥

शृंग्यादिकाढा

शृंगीधन्वयवासपुष्करजटाभार्गीशठीसिंहिका-
क्वाथःपानविधानतःकफहरोभिन्यासविध्वंसकः ॥

अर्थ—कांकडासिंगी, लालधमासो, पुहकरमूल, भारंगी, कचूर, कटेरी, इनका काढा पीवे तो कफ, और अभिन्यास संनिपात इनका नाश करे ॥

तिक्तादिकाढा

तिक्ताभयाबृहद्दंतीत्रायंतीराजवृक्षकः ॥
क्षाराढ्यःसैंधवोपेतःक्वाथोभेदीज्वरापहः ॥

अर्थ—कुटकी, हरड, बडीदंती, त्रायमाण, और अमलतासका गूदा, इनका काढा जवाखार और सैंधानिमक डालके देय तो भेदी और ज्वरनाशक होय ॥

व्याघ्र्यादिकाढा

व्याघ्रीदुरालभाभार्गीसठीशृंगीसपौष्करं ॥
पक्वांबुश्लेष्महृदयमभिन्यासप्रशांतये ॥

अर्थ—कटेरी, धमासा, भारंगी, कचूर, काकडासिंगी, और पुहकरमूल, इन औषधोंका काढा करके पीवे तो कफ, पेटका दूखना, और अभिन्यास संनिपात शांति होय ॥

भार्ग्यादिकाढा

भार्गीपुष्करमूलंचरास्नाबिल्वंसमुस्तकं ॥ नागरंदशमूलंचपि-
प्पल्याविश्वसाधितं॥ हिंग्वार्द्रकरसोपेतंपिप्पलीचूर्णसंयुतं॥
सन्निपातज्वरंघोरमभिन्यासंचदारुणं ॥ हृत्पार्श्वशूलमात्रा-
हंसद्यःपीतंनियच्छति ॥

अर्थ—भारंगी, पुहकरमूल, रास्ना, वेलगिरी, नागरमोथा, सोंठ, दशमूल पीपल, अतीस इन औषधोंका काढा करके उसमें हींग और अदरखका रस तथा पीपलका चूर्ण मिलायके देवे तो संनिपातज्वर अभिन्यास, हृदय और पार्श्व इनका शूल इनको नाश करे ॥

बीजपूरादिकाढा

बीजपूरकबिल्वाश्मभेदकंबृहतीद्वयं ॥ सकार्षिकंतथै-
रंडंजलेचाष्टगुणेशृतं ॥ पक्वगोमूत्रसंयुक्तंबिडसौवर्चला-
न्वितं ॥ हृद्बस्तिशूलेसानाहेअभिन्यासेज्वरेहितं ॥

अर्थ—बिजोर, बेलगिरी, पाषाणभेद, कटेरी बडी, कटेरी छोटी, प्रत्येक एक २ तोले, ले इसमें अंडकी जड आठतोले डालके अठगुने जलमें काढा करे, इसमें गोमूत्र, बिडलोन, और संचरनोन डालके पीवे तो हृदय और वस्ती इनके शूलको मलवद्धता और अभिन्यास ज्वर इनपर हितकारक है ॥

मातुलुंगादिकाढा

मातुलुंगाश्मभिद्बिल्वव्याघ्रीपाठारूबूकजः ॥
क्वाथोलवणमूत्राढ्योभिन्यासानाहशूलनुत् ॥

अर्थ—बिजोरेकी केशर, पाषाणभेद, बेलगिरी, कटेरी, पाढ, और अंडकी जड इनके काढेमें निमक और गोमूत्र मिलायके पीवे तो अभिन्यास संनिपात अफरा और शूल दूर हो ॥

कारव्यादिकाढा

कारवीपौष्करैरंडत्रायंतीनागरामृता ॥ दशमूलसठीशृंगी-
वासाभार्गीपुनर्नवा ॥तुल्यामूत्रेणानिःक्वाथ्यपीताःस्रोतोवि-
शोधनी ॥ अभिन्यासज्वरायासमाशुघ्नंतिसमुद्धतं ॥

अर्थ—कलौजी, पुहकरमूल, त्रायमाण, सोंठ, गिलोय, दशमूल, कचूर, काँकडासिंगी, अडूसो, भारंगी, और साँठकी जड सबसमान ले गोमूत्रमें काढा करके पीवे तो नाडियोंके मार्गको शुद्धकरे और अभिन्यास ज्वर परिश्रम इन सबको तत्काल दूर करे ॥

पटोलादिक्वाथ

पटोलपत्रंबृहतीसुषवीकंटकारिका ॥ मरीचंपिप्पली-
बिल्वंचिरिबिल्वंसचित्रकं ॥ करंजबीजंमंजिष्ठात्रायं-
तीविश्वभेषजं ॥ गलप्रबोधनंश्रेष्ठमभिन्यासज्वरापहं ॥

अर्थ—पटोलपत्र, कटेरीवडी, कलोजी, छोटीकटेरी, कालीमिरच, पीपल, बेलगिरी, कंजेकीछाल, चीता, कंजेकेबीज, मजीठ, त्रायमाण, और सोंठ, इनका काढाकरके पीवे तो कंठको शुद्धकरे, और अभिन्यासज्वर दूर हो ॥

जयमंगलरस

मृतसूताभ्रकंनिंबंक्षारंमरिचमुंडकं ॥ तालकंमाक्षिकंव्योषं-विषंटंकणचित्रकं ॥ समांशंमर्दयेत्खल्वेपाठानिर्गुंडिबिल्व-जैः ॥ द्रवैर्यष्ट्यादिनैकंतुरुध्वापाच्यंतुभूधरे ॥ पुटैकेनभवे-त्सिद्धोरसोयंजयमंगलः ॥ दशमूलकषायेणमाषैकःसंनिपा-तजित् ॥ अंजनेवाथवानस्येअभिन्यासांतकोभवेत् ॥

अर्थ—पारद, अभ्रक, इनकी भस्म, नीम, जवाखार, मिरच, मुंडलोहकी भस्म, हरताल, सुवर्ण माक्षिक, त्रिकुटा, विष, सुहागा, और चीतेकी छाल सब बराबरले सबको पाढ, निर्गुंडी और बेल इनके रसमें एकदिन खरल करे, एक दिन मुलहटीके रसमें खरलकर भूधर यंत्रमें धरके पचावे तो एकही पुटमें यह (जयमंगलरस) सिद्ध होय १मासे दशमूलके काढेमें सेवन करे तो सांनिपात जीते इसके अंजन करनेसैं अथवा नाश लेनेसैं अभिन्यासको दूर हो ॥

स्वच्छंदनामकरस

शुद्धसूतंद्विधागंधंसूतांशंमृतहेमकं ॥ मृतरौप्यंचताम्रंचसूततु-ल्यंपृथक्पृथक् ॥ सूर्यावर्तस्यनिर्गुंड्यास्तुल्यंचार्द्रार्द्रकद्रवैः ॥ भृंगोन्मत्ताखुकर्णीनामाग्निकण्र्याग्निमंथयोः ॥ तिलपर्णीचित्र-कयोःकाकमाच्यारसैःसह ॥ मर्दयेत्रिदिनंखल्वेशुष्कंपित्तैर्वि-भावयेत् ॥ मत्स्यमाहिषवाराहछागमायूरजैर्दिनं ॥ अंधमूषा गतंपाच्यंवालुकायंत्रगैर्दिनं ॥ आदायचूर्णितंखादेन्माषैकं-चार्द्रकद्रवैः ॥ निर्गुंड्यादशमूलानांकषायंमरिचंपिबेत् ॥ अ-भिन्यासंनिहंत्याशुरसःस्वच्छंदनामकः ॥ पथ्यंस्यान्मुद्ग-यूषेणक्षीरैर्वाज्यैर्विध्यापयेत् ॥

अर्थ—शुद्धपारा तोलेभर, गंधक २ तोले, सुवर्णभस्म ३मासे, रूपरस, ताम्रभस्म दोनों तोले तोले भर लें सबको एकत्र कर हुलहुल, निर्गुंडी, अदरख,

भांगरो, धतूरो, मुसाकर्णी, अग्निकर्णी, अरनी, तिलपर्णी, चीता, और मकोय, इनके रसमें ३ दिन खरल करे जब सूख जाय तब रोहू मछली, भैसा, सूअर, बकरा, और मोर इनके पित्तेकी भावना देय फिर शीशीमें भरवालुकायंत्रमें अंधमूषामें १ दिन पचावे, फिर निकाल चूर्णकर १ मासे अदरखके रससैं खाय ऊपरसैं निर्गुंडी, दशमूल, मिरच इनका काढा पीवे तो यह(स्वच्छंद)रस अभिन्यास संनिपातको दूर करे इसके ऊपर मूंगका यूष, दूध, और घी देवे ॥

मातुलुंग्यादिरस

मातुलुंगरसंतस्यहिंगुशुंठीयुतंमुखे ॥
दद्यात्प्रधमनंतीक्ष्णंकटुतीक्ष्णोपसंहितं ॥

अर्थ—विजोरेके रसमें हींग और सोंठ, मिलायके मुखमें रक्खे और तीखी तथा चरपरी औषधनेत्र तथा नाक कानमें फूंके तो सन्निपातकी वेहोसी दूर हो ॥

आर्द्रकादिनस्य

आर्द्रकंस्वरसोपेतंसिंधूत्थंसकटुत्रिकं॥
प्रबोधायमुखेदद्यान्नस्यंवामरिचेनच॥

अर्थ—अदरखके रसमें त्रिकुटा और सैंधानिमक इनका चूर्ण मिलाय मुखमें धरनेको देय और अदरखके रसमें मिरच मिलायनाशदेवे तो संनिपातवाला रोगी सावधान होय ॥

रामठादिनस्य

रामठनागरसहितंभृंगरसाम्लंतुलेहतःप्रातः॥
अथकटुतिक्तोपयुतंभवतिसुखप्रबोधनंनस्यं ॥

अर्थ—हींग, और सोंठ इन औषधोंको भांगरेके और नींबूके रसमें मिलाय चाटे अथवा तीक्ष्ण और कडुई औषधोंकी नस्य देवे तो रोगी सावधान होय ॥

मरीचादिनस्य

मरिचलवणकृष्णाभूतकेशीमधूकैःकटुफलमृदुकृत्वा-
कोष्णनीरेणनस्यं ॥ प्रकटयतिविकीर्णश्वाष्टभिर्वाच-
तुर्भिःसकलकरणबोधांबिंदुभिर्दीयमानं ॥

अर्थ—कालीमिरच, सैंधानिमक, पीपल, निर्गुंडी, महुआके फूल, और काय-

फल, इन औषधोंका चूर्ण कर गरम जलमें डाल उसके आठ अथवा चार बूंद-की नाश लेय तो संनिपातका रोगी चैतन्य होय ॥

लशुनादिअंजन

लशुनमरिचकृष्णामाणिमंथोग्रगंधाशुकतरुफलबीजै-
र्विश्वगोमूत्रपिष्टैः ॥ कफपवनविकारेरक्तपित्तप्रभेदेग-
दितमगदविद्भिर्नेत्रयोरंजनंस्यात् ॥

अर्थ--लहसन, कालीमिरच, पीपल, सैंधानिमक, बच, सिरसकाफूल और सोंठ, इन औषधोंका चूर्ण गोमूत्रमें खरल कर अंजनकरे तो कफ, वायु, और रक्तपित्त, इनको दूर करे ॥

जात्यादिअंजन

जातीपुष्पंप्रवालंचमरिचंरोहिणींवचां ॥
सैंधवंबस्तमूत्रेणतंद्रानाशनमुत्तमं ॥

अर्थ—चमेलीके फूलोका रस, कालीमिरच, कुटकी, वच, और सैंधानिमक, इनका चूर्ण कर उसको बकरीके मूत्रमें घिसकर अंजन करे तो तंद्रा दूरहोय ॥

शिरीषबीजादिअंजन

शिरीषबीजंमरिचंबस्तमूत्रेणतत्समं ॥
अंजनंतदभिन्यासेसंज्ञाबोधनमिष्यते ॥

अर्थ—सिरसके बीज और मिरच ये समान भाग ले बकराके मूत्रमें पीस अंजन करे तो अभिन्यास सन्निपातमें उत्तम संज्ञा प्रबोध करे॥

दंभ अथवा दाग

संज्ञायस्यनजायतेचरणयोर्द्वंद्वंसमादह्यते
भालेलोहशलाकयासतिकृतेसर्वक्रियाकर्मणि ॥

अर्थ—सन्निपातमें जिसकी संज्ञा जाती रहे उसके दोनो पैर और कपाल इनमें लोहकी सलाईसे दाग देवे ॥

दागदेनेकेनंतरउपाय

एवंविधेस्मिन्विहितेविधानेनयातिसंज्ञायदियश्चजंतुः ॥
तंपादमूलेभ्रूकुटौललाटेशलाकयालोहजया दहेत्तु ॥

अर्थ—इस प्रकार दाग देने पर भी जिसको होस न होवे उसके तरवा, भौह, और ललाट, इनमें लोहकी सलाईसैं दाग देना चाहिये ॥

हारिद्रकसंनिपातनिदान

हारिद्रदेहनखनेत्रकरांघ्रितापनिष्ठीवनादिकसनैरुपलक्षितोयः ॥ हारिद्रकेनकथितःकिलसंनिपातःसाध्योनचैषभिषजांज्वरकालरूपः ॥

अर्थ—देह, नख, नेत्र, हाथ, पैर, ये हलदीके समान पीले हो जाय, ज्वर, थूकना, और खांसी ये लक्षण जिस संनिपातमें होय उसको (हारिद्रक) सन्निपातज्वर जानना यह कालरूप है अर्थात् वैद्यसैं साध्य नहीं हो सकता यह तेरह संनिपातोसैं पृथक् है ॥

सन्निपातकीमर्यादा

सद्यस्त्रिपंचसप्ताहादशाहाद्द्वादशादपि ॥
एकविंशद्दिनैः शुद्धःसन्निपातीसुजीवति ॥

अर्थ—सन्निपात प्रगट होनेके नंतर तत्काल अथवा तीन, पांच, सात, दश और बारह दिन व्यतीत होनेपर २१ दिन जब हो जावे तब संनिपातसैं मुक्त हुआ रोगी अच्छे प्रकार बचाता है ॥

त्रिदोषज्वरोंकीधारणमर्यादा

सप्तमीद्विगुणायावन्नवम्येकादशीतथा ॥ एषात्रिदोषमर्यादा मोक्षायचवधायच ॥ पित्तकफानिलवृद्ध्यादशदिवसद्वादशाहसप्ताहात् ॥ हंतिविमुंचतिपुरुषंत्रिदोषतोधातुमलपाकात् ॥

अथे—त्रिदोष होनेसैं वह रोगी ७, १४, ९, १८, ११, २२, इतने दिनमें कितो मर जावे, अथवा इतने, दिनके पश्चात् बचनेसैं ज्वरमुक्त होय तिनमें सात, नौ, और ग्यारह, ये तीन मर्यादा वाताधिक, पित्ताधिक, और कफाधिक, इस क्रमसैं है, इस मर्यादामे त्रिदोषज्वरमें धातुपाक होनेसैं रोगी मरे और मलपाक होनेसैं रोगी सन्निपातसैं छूटे धातुपाक और मलपाकका होना ईश्वरके आधीन है ॥

धातुपाकलक्षण

निद्रानाशोहृदिस्तंभोविष्टंभोगौरवारुची ॥
अरतिर्बलहानिश्चधातूनांपाकलक्षणं ॥

अर्थ—निद्राका नाश, हृदयका स्तंभित होना, मलमूत्रका रुकना, शरीर भारी अरुचि मनका न लगना, वलक्षीणता, ये धातुपाकके लक्षण है ॥

मलपाक

दोषप्रकृतिवैकृत्यंलघुताज्वरदेहयोः ॥
इंद्रियाणांचवैमल्यंदोषाणांपाकलक्षणं ॥

अर्थ—पूर्वदोषोंका पलटना, ज्वर और देहमें हलकापना, इन्द्रियोंकी शुद्धता ये मलपाकके लक्षण है ॥

सन्निपातकेअसाध्यलक्षणः

दोषेविबद्धेनष्टेग्नौसर्वसंपूर्णलक्षणः ॥
सन्निपातज्वरोसाध्यःकृच्छ्रसाध्यस्ततोन्यथा ॥

अर्थ—मलादि और पित्तादि दोष वद्ध होनेसें तथा अग्नि शांति होनेसैं वातादि सर्व दोषोंके संपूर्ण लक्षण होकर संनिपातज्वर असाध्य होता है, और इसके विपरीत अर्थात् दोषोंकी प्रवृत्ति होकर अग्नि थोडीसी दीप्तहो, सबके लक्षण थोडे २ होय तो सन्निपातज्वर कष्टसाध्य होता है ॥

आगंतुकज्वर

अभिचाराभिघाताभ्यामभिषंगाभिशापतः ॥
आगंतुर्जायतेदोषैर्यथास्वंतंविभावयेत् ॥

अर्थ—मारणादि प्रयोग, ताड़न, भूतप्रेत बाधा, तथा ब्राह्मण, गुरु, वृद्ध, इनके कोप सैं और शाप इन कारणोसैं वातादि दोष कुपित हो आगंतुक ज्वरको उत्पन्नकरते है वो ज्वर वात, पित्त, और कफ इन भेदोंसैं तीन प्रकार का है ॥

आगंतुकज्वरचिकित्साक्रम

आगंतुकज्वरेनैवनरःकुर्वीतलंघनं ॥
शुद्धवातक्षयागंतुजीर्णज्वरिषुलंघनं ॥

अर्थ—आगंतुक ज्वरमें मनुष्यको लंघन नहि कराने,केवल शुद्ध वात क्षय दोषजन्य आगंतुक ज्वर और अजीर्ण ज्वर इनपर लंघन करावे ॥

अभिचाराभिघातज्वरदिनान

अभिचाराभिघाताभ्यांमोहस्तृष्णाचजायते ॥

अर्थ—अभिचाय और अभिघात इनसे प्रगट हुए ज्वरमें मोह होता है और प्यास लगती है ॥

अभिचारज्वरपरचिकित्सा

अभिचाराभिशापोत्थौज्वरौहोमादिनाजयेत् ॥
देहंस्वस्त्ययनैस्तीर्थैरुत्पातग्रहपूजनैः ॥

अर्थ—अभिचार और अभिघात इनसैं उत्पन्न हुए ज्वरको होम, देवपूजा, तथा देहमें मंगलकारी मणि आदिका धारण, तीर्थस्नान, और जिससैं पीडा हो उस ग्रहका पूजन इत्यादि यत्नोसैं जीते ॥

अभिघातज्वरपर चिकित्सा

अभिघातज्वरेयुंज्यात्क्रियामुष्णविवर्जितां ॥
कषायंमधुरंस्निग्धंयथादोषमथापिवा ॥

अर्थ—अभिघात ज्वरपर उष्णवर्जित और कषेली, मधुर, स्निग्ध असी अथवा जो दोषहोय उसपर जो चिकित्सा लिखीहै वो करनी चाहिये ॥

सामान्यउपचार

अभिघातज्वरोनश्येत्पानाभ्यंगेनसर्पिषः ॥
रक्तावसेकैर्मध्यैश्वतथामांसरसोदनैः ॥

अर्थ—अभिघात ज्वरपर घृतकापान, तथा देहमें घीकी मालिस, रुधिर निकलवाना, शेक देना, ये उपचार करके पथ्यमें मांसरस और भात देवे ॥

व्यधादिकोंपर

व्यधबंधश्रमात्यध्वभंगभ्रंशसमुद्भवान् ॥
ज्वरानुपचरेत्पूर्वंक्षीरमांसरसोदनैः ॥

अर्थ—वेध, बंधन, श्रम, बहुत मार्ग चलना, गिरना इन कारणोंसे उत्पन्न ज्वरपर प्रथम दूध, मांसरस, और भात देवे ॥

मार्गश्रमजन्यज्वरपर

अध्वश्रांतेबुचाभ्यंगंदिवानिद्रांचकारयेत् ॥

अर्थ—बहुत चलनेसैं जो थकगया हो इसकारणसे जो ज्वर आया हो उसका मालिस कर दिनमें सुलाना चाहिये ॥

दुसराप्रकार

व्यधबंधसमावेशभग्ननष्टसमुद्भवान् ॥
ज्वरानुपाचरेत्पूर्वंमदिराक्षीरभोजनैः ॥

अर्थ—वेध, बंध, भूतबाधा, चोटलगनेसैं और प्रियवस्तूके नाश होनेसैं जिसको ज्वर आया हो उसको प्रथम मद्य और दूध पिलाना चाहिये ॥

भूताभिषंगज्वरनिदान

कामशोकभयाद्वायुःक्रोधात्पित्तंत्रयोमलाः ॥
भूताभिषंगात्कुप्यंतिभूतसामान्यलक्षणं॥

अर्थ—काम शोक और भय इनसें वात कुपित होताहै क्रोधसैं पित्तकुपित होताहै और भूताभिषंगसैं तीनोंदोष कुपित होतेहैं इसमें औरभी लक्षण होतेहैं अर्थात् उन्माद निदानमें जिसजिस देवग्रहोंके लक्षण (हास्यरोदनकंपादिक) कहेहैं वो लक्षण होतेहैं ॥

दुसरा प्रकार

भूताभिषंमादुद्वेगोहास्यरोदनकंपनं ॥

अर्थ–भूतवाधा करके ज्वर आनेसैं चित्तमें उद्वेग हो, हँसे, रोवे, और काँपता है ॥

सामान्यचिकित्सा

शीतभंजीरसोवात्रह्यनुपानेद्विगुंजकः ॥

अर्थ–भूतज्वरपर शीतभंजीर नामक रस यथायोग्य अनुपानसैं दो रत्ती देवे ॥

त्रिकट्वादियोग

गंधकंत्रिकटुंसाज्यंपिबेद्भूतज्वरापहं ॥

अर्थ—गंधक और त्रिकुटा इनके चूर्णको घीमें मिलायकें देवे तो भूतज्वर दूर हो।

गंधकादियोग

गंधकेनसमाधात्रीभुक्तासाभूतजंज्वरं ॥
कर्षमात्रंप्रदातव्यंसर्वभूतज्वरेहितं ॥

अर्थ—गंधक और आमले इनके समभाग चूर्ण को १० मासे पर्यंत देवे यह सर्वभूत ज्वरोपर हितकारक है ॥

अष्टमूर्तिरस

हेमरूप्यंताम्रनागंमृतंगंधकमाक्षिकं ॥ विमलाचाशिलाशुद्धा

सर्वांशंशुद्धसूतकं ॥ अम्लेनमर्दयेद्यामंपुटेकुंभधरेपचेत् ॥ अ-
ष्टमूर्तिरसोनामगुंजैकंभूतिकेज्वरे ॥ देयश्चातुर्थिकंत्र्याहंद्व्या
हिकंचविनाशयेत् ॥

अर्थ—सुवर्ण, चांदी, तामा, और शीशा इनकी भस्म, गंधक. विमला, मनसिल ए शुद्ध करी हुई समान भाग ले, इन सबकी बराबर शुद्धपारा ले, सबको एकत्र कर नींबूके रसमे एक प्रहर घोटके फिर कुंभपुट देवे यह (अष्टमूर्ती रस) १ रत्ती ज्वरवालेको देय तो भूतज्वर, चातुर्थिक, त्र्याहिक, द्व्याहिक, इनको दूर करे ॥

मधुकनस्य

मधुकसारमरिचंसैंधवंपिप्पलीवचा ॥
संज्ञाप्रबोधनंनस्यंदेयंभूतज्वरेसदा ॥

अर्थ—महुआका गोंद कालीमिरच, सैंधामनिक पीपल,और वच, इनकी नस्य भूतज्वरमें सदैव देवे॥

व्योषादिनस्य

कुर्याद्भूतज्वरेनस्यंव्योषाष्टतुलसीदलैः ॥

अर्थ–सोंठ, मिरच, पीपल, और तुलसीके आठ पत्र, इनके रसकी नस्य देवे तो भूतज्वर दूर होय ॥

सहदेवीमूलिकाबंध

सहदेवायामूलंविधिनाकंठेनिबद्धमपहरति ॥
एकद्वित्रिचतुर्भिर्दिवसैर्भूतज्वरंपुंसाम् ॥

अर्थ–सहदेईकी जडको विधियुक्त कंठमे बाँधे तो एक, दो, तीन, चार दिनमें भूतज्वर दूर हो ॥

सूर्यावर्तबंध

सूर्यावर्तस्यमूलंचकर्णेभूतज्वरापहं ॥

अर्थ—हुलहुलकी जडको कानमें बाँधे तो भूतज्वर दूर हो ॥

विजयाबंध

सायंकालेभिमन्त्र्यैवविजयांप्रातरुद्धरेत् ।
बद्ध्वाशिरसितन्मूलंभूतज्वरहरंपरं ॥

अर्थ—भांगके वृक्षको सायंकालमे निमंत्रणकर आवे प्रातःकाल उखाड उसकी जडको मस्तकमें बाँधे तो भूतज्वरको नाश करे ॥

पुष्यार्कयोग

पूष्यार्केकाकतुंडयाश्वमूलंभूतज्वरापहं।
बंधयेद्रक्तसूत्रेणबाहौशिरसिवागले ॥

अर्थ—पुष्यार्कमें काकडोडीकीजडको लावे उसको लालसूतसै भुजामेंअथवा मस्तकमें वा गलेमें बाँधे तो भूतज्वरको दूर करे ॥

मृत्तिकातिलक

कर्कटस्यबिलोद्भूतमृदातुतिलकेकृते ॥

अर्थ—केकडेके बिलेकी मिट्टीका तिलक करनेसैं भूतज्वर दूर हो ॥

मंत्र

गोमयंमंडलंकृत्वापुष्पगंधाक्षतादिभिः ॥ अर्चयेन्मंत्रवित्सम्यक्स्वहस्तंमंडलोपरि ॥ स्थापयित्वाजपेन्मंत्रंस्पृशेत्साध्यस्यमस्तकं ॥ स्पृष्ट्वातत्रजपेन्मंत्रंयावदष्टोत्तरंशतं ॥ अथमंत्रः ॥कालकालमहाकालकालदंडनमोस्तुते ॥ कालदंडनिपातेनभूम्यंतर्निहितंज्वरं ॥ त्रिदिनंकारयेदेवंहन्याद्भूतादिकान्ज्वरान् ॥

अर्थ—गौके गोवरका चौका देकर उसकी गंधाक्षतसैं पूजनकर उसके ऊपर हात धरके (काल काल महा काल) इस मंत्रको १०८ वार जपके उस हाथको रोगीके मस्तकपर धरके फिर १०८ वार मंत्रको जपे इसप्रकार तीन दिन करेतो भूतज्वरादिक दूरहो ॥

(अभिषंगज्वरउपरचिकित्सा)

भूतविद्यासमुद्दिष्टैर्बंधावेशनताडनैः ॥
जयेद्भूताभिषंगोत्थंअनुशांत्यादिभिर्ज्वरं ॥

अर्थ—भूतविद्यामें कहे जो गाडना, देहमें भराना, और मारना, इत्यादिप्रयोगइनसैंअथवा शांति आदि करके भूतबाधाजनित ज्वरको जीते ॥

अभिशापज्वरऊपरचिकित्सा

लंघनंनहितंकामशोकाचिंताप्रहारजे ॥ भयभूतश्रमक्रोधलंघ-
नैश्चकृतेज्वरे ॥ किंतुदीप्ताग्नयेतत्रदद्यान्मांसरसौदनं ॥

अर्थ—काम, शोक, चिंता, प्रहार, भय, भूतबाधा, श्रम, क्रोध, और लंघन इ-नसैंउत्पन्नज्वरवालोंको लंघन हितकारी नही है इसका यह कारण है कि रोगीकी जठराग्नि प्रदीप्त होती है इसवास्ते उसको मांसरस तथा भात पथ्यमें देवे ॥

दुसराप्रकार

अभिचाराभिशापोत्थौज्वरौहोमादिभिर्जयेत् ॥
दानस्वस्त्यनातिथ्यैरुत्पातग्रहदूषितौ ॥

अर्थ—अभिचार (घात मूठ आदि) अभिशाप, उत्पात, और दुष्टग्रह इनसैं प्रगट हुवा ज्वरको होम, दान, पुण्याहवाचन, तथा आतिथ्य इन उपचारोसैं जीते

विषजन्यआगंतुकज्वर.

शावास्यताविषकृतेदाहोतीसारएवच ॥
भक्तारुचिःपिपासाचतोदश्चसहमूर्छया ॥

अर्थ—विषके संबंधसैं उत्पन्न हुए ज्वरमें मुखकाला, दाह, अतिसार, अरुचि, तृषा, चोटनी, और मोह, ए लक्षण होते है, इसकी चिकित्सा विषनिदानमें कही है

औषधीगंधसैंहोनेवालाज्वर

औषधीगंधजेमूर्छाशिरोरुग्वमथुःक्षवः ॥

अर्थ—दुष्टविषैल औषध सूंघनेसैं जो ज्वर होता है उसमें मूर्च्छा, मस्तकशूल, वांति, हृल्लास, और छींक ए लक्षण होते है ॥

चिकित्सा

औषधीगंधविषजौविषपित्तप्रबाधनैः ॥
जयेत्कषायैर्मतिमान्सर्वगंधकृतैर्भिषक् ॥

अर्थ—औषधिगंध और विष इनसै प्रगट हुए ज्वरमें विष और पित्तनाशक औषध इन करके अथवा सर्व गंधादिगणके क्काथ इत्यादि करके जीते ॥

सर्वगंधकहते है

चातुर्जातककर्पूरंकंकोलागरुकुंकुमम् ॥

लवंगसहितंचैवसर्वगंधंविनिर्दिशेत् ॥

अर्थ—इलायची, दालचीनी, तालीसपत्र, नागकेशर, कपूर, कंकोल, कालीअगर, केशर, और लौंग, ए एकत्र करनेसैं उसको सर्व गंध कहते है ॥

कामज्वरनिदान

कामजेचित्तविभ्रंशस्तंद्रालस्यमभोजनं ॥
हृदयेवेदनाचास्यगात्रंचपरिशुष्यति ॥

अर्थ—चित्तका डमाडोल होना, तंद्रा आलस्य, भोजनमें अरुचि, हृदयमें और देहमें शुष्कता, ये लक्षण कामज्वरमें होते है ॥

चिकित्सा

श्रीखंडमंडितकलेवरवल्लरीणांमुक्ताफलाकुलितंलोलकुचस्थलीनां[1] ॥ वैदग्धमुग्धवचसांसुविलसिनीनामालिंगनंसकलदाहमपाकरोति ॥

अर्थ—चंदन करके चर्चित देह मोतियोंके हार जिस्के स्तनोपर गिरे हुए तथा शृंगार रस भरित मिष्टभाषण करनेमें चतुर और रूप लावण्य संपन्न ऐसी प्यारी स्त्रियोके आलिंगन करनेसैं कामज्वर और पित्तज्वर शांति होता है ॥

दुसराप्रकार

शय्यापल्लवपद्मपत्ररचितावासोवयस्यैःसमंकांतारेकुसुमस्फुरत्तरुवरेवापीजलालोकनं ॥ आलापाश्वशुकालिकोकिलकृताःकांताश्वकांताःकथाःवाताश्चामलवालकव्यजनजादाघंनिराकुर्वते ॥

अर्थ—वृक्षकी नवीन कोमल, उलहाती पातीसैं अथवा कमलके पत्रोंकी सेज बिछाकर उसपर निद्रा लेना, मित्रोंके साथ रहना, बागोंमें डोलना, बावडी अथवा सरोवरके किनारे बैठकर पवनलेना, सुंदर स्वर युक्त गान, तथा तोतामैना इनके मंजुल शब्द सुनना, परस्पर हाँसी ठठोरीकी वार्त्ता करना, तथा खसके पंखोसैं पवनका करना ये उपचार कामज्वरकीशांति करते हैं ॥

तिसराप्रकार

अयिनितंबिनिगायनलालसेमधुरचारिणिकाममदालसे[2] ॥

---

१ मुक्ताफलाकुल विशालकुचस्थलीनाम् । इतिमुख्यपाटः

२ वीणान्वितंगायनम् । इतिमुख्यपाठः ।

वपुषिदाहंवतांविहितंहितंहिमहिमांशुजलैरनुलेपनं ॥

अर्थ–हे नितंबिनि ! चंद्न, कपूर, और खस, इनके जलका लेप करना दाहको दूर करता है ॥

चौथाप्रकार

शुभ्राभ्रविभ्रमधरेशशांककरसुंदरे ॥
चंदनैश्चर्चितेहर्म्येस्वापस्तापमपोहति ॥

अर्थ––मेघके समान शुभ्र, तथा चंद्राकिरणों करके सुंदर और चंदनसैंपुता हुआ अैसे घरमें शयन करनेसैं ताप शमन होता है ॥

पाचवाँप्रकार

यदिपर्य्युपितंधान्यसलिलंसितयासह ॥
प्रभातसमयेपीतमंतर्दाहंविनाशयेत् ॥

अर्थ–सायंकालमें धनियेको कोरे कुल्हडेमें भिगो देवे दूसरे दिन प्रातः काल हाथोंसैं मसलकर कपडेमें छान ले फिर इसमें मिश्री मिलायके पीवे तोदाह दूर हो

छटाप्रकार

पित्तज्वरेकिंरसफांटलेहैः किंवाकषायैरमृत्तेनकिंवा॥ पेयंप्रियायामुखमेकमेवलोलिंबराजेनसदानुभूतं ॥ प्राणप्रेयसिमापिबंतुपुरुषाः पित्तज्वरव्याकुलानानावह्लिजलांविलंबितफलंपाने विषादप्रदं ॥ तैस्तैः किंक्रियतांचिकित्सकपतेमुग्धेसुखंसेव्यतांसद्यस्तापहरःसुधाधिकतरःकांताधरःकेवलं ॥

अर्थ–हे प्रिये! पित्तज्वरपर अर्थात् कामज्वरपर रस, फांट, लेप, किंवा काढे अथवा अमृत देनेसै भी क्या उपयोग है, कुछ नही? किंतु उस रोगीको प्यारी मृगनयनींके मुखका चुंबन करनाही इस रोगकी उत्तम औषधही है, लोलिंबराज अपनी स्त्रीसैं कहते है कि यह प्रयोग मेरा अनुभव करा हुआ है. । हे प्राणप्यारी! कामज्वरपीडित पुरुषोंको बहुत कालमें गुणकर्त्ता अैसे अनेक प्रकार की वेलोंकारस, तथा कडुए काढे दुखदाई नही पीने चाहिये, किंतु उस रोगीको तत्काल ताप हरण कर्त्ता और अमृतसैं भी अधिक मिष्ठ तथा सुखसैं सेवन करा जाय अैसा अपनी प्यारीका अधरोष्ट चुंबन करना चाहिये॥

---

१ हरतिदाघमघर्मकरानने । इतिमुख्यपाठः

सातवाप्रकार

कांताकटाक्षदग्धानांवद्वैद्यकिमौषधं ॥
दृढमालिंगनंपथ्यंक्वाथश्चाधरचुंबनं ॥

अर्थ—स्त्रीके कटाक्ष अग्निसैं झुरसे हुएन्को यही औषध हितकारी हैं कि सुंदर स्त्रीका अधर चुंबन यह काढा और आलिंगन करना यह पथ्य ॥

(भयशोककोपइनसेपैदाहुवाज्वरकानिदान)

भयात्प्रलापःशोकाच्चभवेत्कोपाच्चवेपथुः ॥

अर्थ—भय, और शोकसैं प्रगट ज्वरमें रोगी बकवादकरे, और क्रोधसैं उत्पन्न ज्वरमें देह काँपता है ॥

सामान्यउपचार

व्याघ्रचित्तकघातार्थंस्थापयेज्जलमध्यगं ॥
अनयाशीतक्रिययाभयरोगःप्रशाम्यति ॥

अर्थ—व्याघ्रादिकोंकी भय चित्तसैं दूर करनेको रोगीको जलमें खडाकरे इस शीतल क्रियाके करनेसैं भय दूर होय ॥

चिकित्सा

हर्षणैश्चसमंयांतिकामशोकभयज्वराः ॥
कामैरथोमनोज्ञैश्चपित्तघ्नैश्चाप्युपक्रमैः ॥

अर्थ—काम, शोक, और भय, इनसैं उत्पन्न हुए ज्वर हर्षोत्पादक पदार्थ करके अथवा मित्रमंडलीमें बैठनेसैं दूर होता है, अथवा मनवांछित पदार्थके मिलनेसै अथवा पित्तनाशक यत्न करनेसैं शांति होय ॥

आश्वासनेष्टलाभेनवायोःप्रशमनेनच ॥
हर्षणेचशमंयांतिकामशोकभयज्वराः ॥

अर्थ—धीरजबधाना, इष्टवस्तुका लाभ, वायुका नाश करनेवाले, और आनंद दायक पदार्थ इन करके काम, शोक, और भयसैं उत्पन्न ज्वर शांत होते है

(कामज्वरवाक्रोधज्वरइसपरसामान्यउपचार)

कामक्रोधज्वरोनश्येत्क्रोधात्कामज्वरस्तथा ॥
यांतिताभ्यामुभाभ्यांचकामक्रोधज्वराःक्षयं ॥

अर्थ—क्रोधज्वर कामोत्पत्तिसैं दूर होय, और कामज्वर क्रोध उत्पन्न होने सैं

नाश होय, इस प्रकार ए दोनो परस्पर एक दूसरेकी उत्पत्तिसैं नाश होते है ॥

क्रोधज्वरचिकित्सा

क्रोधजेपित्तजित्कार्यानार्याःसद्वाक्यमेवच ॥
आश्वासेनेष्टलाभेनवायोःप्रशमनेनच ॥

अर्थ—क्रोध करके उत्पन्न ज्वरमें पित्तनाशक उपाय, सुंदर स्त्रियोंका भाषण उत्तम गोष्टी, आश्वासन (दिलासा देना) तथा इष्टपदार्थका लाभ और वायुके नाश करनेवाले उपचार इत्यादि करने चाहिये ॥

विसर्पादिज्वरेघृतपान

विसर्पेणज्वरोयश्चयश्चविस्फोटकज्वरः ॥
तत्रादौसर्पिषंपानंकफपित्तोत्तरेभवेत् ॥

अर्थ—विसर्पसैं किंवा विस्फोटक (फोडा) होनेसैं जो ज्वर होय अैसें कफपित्ताधिक ज्वर इनपर प्रथम घृतपान करावे ॥

विषमज्वरकीसंप्राप्ति

आतंकमुक्तेःकृशताश्रयाणांविमुक्तपथ्याद्युचितक्रियाणां ॥
अल्पोपिदोषोविषमंविदध्यात्ज्वरंविवृद्धंप्रतिपक्षरुद्धं ॥

अर्थ—रोगसैं मुक्ति होनेके पश्चात् कृशता करके अथवा कुपथ्य करनेसैं अल्पभी रहे हुअे दोष विरुद्ध होकर विषमज्वरको उत्पन्न करते है ॥

दुसराप्रकार

दोषोल्पोहितसंभूतोज्वरोत्सृष्टस्यवापुनः ॥
धातुमन्यतमंप्राप्यकरोतिविषमज्वरं ॥

अर्थ—जिसमनुष्यके ज्वर औषधादि सेवन करनेसैं शांति होगयाहो और आरंभसैं २१ दिन व्यतीत होनेपर तथा जीर्णावस्था होनेपर अपथ्य करनेसैं वातपित्तादिक दोष फिर थोडे २ कुपित हो रसरक्तादि धातुओंमें सैं किसी एक धातुमें प्राप्त हो उसको दूषित कर विषमज्वर(तिजारी चातुर्थिकादि ज्वर)को उत्पन्न करे, वा शब्दकरके प्रथमहीसैं विषमज्वर होता है ये सूचना करीं जैसैं (आरंभाद्विषमोयस्तु) अल्पशब्दसैं यह दिखाया कि उक्त दोष बलहीन होनेके कारण कालांतरमें बलिष्ट हो ज्वरको करे है और जो दोष बलीहैं वो सदैव ज्वर करते है विषमज्वरके लक्षण (भालुकीने) इस प्रकार कहे है (यःस्यादनियतात्कालाच्छीतोष्णाभ्यांप्रवर्त्तते)

अर्थात् जो शीत किंवा उष्ण इन करके अनियतकालमें ज्वर आवे उसको विषम ज्वर कहते है. दूसरे लक्षण ये है कि (मुक्तानुबंधित्वं विषमत्वम्) अर्थात् ज्वर चला-जाय और फिर आय जाव उसको विषमज्वर कहते है ॥

विषमज्वरकनाम

संततःसततोन्येद्युस्तृतीयकचतुर्थकौ ॥

अर्थ--संतत, सतत अन्येद्युष्क, तृतीयक, और चतुर्थक, अैसैं विषमज्वरके पांच भेद है ॥

संततादिकोंमें नियतदूष्य

संततोरसधातुस्थः सततोरक्तधातुगः ॥ भिषजासचविज्ञेयः सोन्येद्युःपिशिताश्रितः ॥ मेदोगतस्तृतीयेह्निअस्थिमज्जा-गतःपुनः ॥ कुर्याच्चातुर्थिकंघोरमंतकंरोगसंकरं ॥

अर्थ--रसधातुगत दोष सतत ज्वरको उत्पन्न करे है तथा रक्तधातुगतदोष संतत ज्वरको उत्पन्न करे वहीदोष मांसाश्रित होनेसैं अन्येद्युष्क (द्व्याहिक) ज्वरको उत्पन्न करे, और मेदोगत दोष होनेसैं त्र्याहिक (तिजारी) ज्वरको और अस्थि तथा मज्जागत दोष होकर मृत्युके समान तथा रोगोंमें संकर अेसा घोर चातुर्थिक (चौथैया) ज्वरको उत्पन्न करे है ॥

विषमज्वरचिकित्सा

विषमाश्चज्वरासर्वेसंन्निपातसमुद्भवाः ॥
अथोल्बणस्यदोषस्यतेषुकार्यंचिकित्सितं ॥

अर्थ—संपूर्ण विषमज्वर संनिपातसैं होते है परंतु उनमें अधिक दोषपर चिकित्सा करनी चाहिये ॥

शोधन

विषमेष्वथकर्तव्यमूर्ध्वंचाधश्चशोधनं ॥
स्निग्धोष्णैरन्नपानैश्चशमयेद्विषमज्वरं ॥

अर्थ—विषमज्वरमें ऊर्ध्वशोधन वांती आदि और अधः शोधन रेचनादि देवे, और स्निग्ध तथा उष्ण अेसे अन्न तथा पान करके विषमज्वर शमन करना चाहिये ॥

विषमपेअन्नकहतेहे

तक्रंमांसंपयोमांसंदधिमांसमथापिवा ॥

माषमांसंतुभुंजानोमुच्यतेविषमज्वरात् ॥

अर्थ—छाछ, तथा मांसरस, किंवा दूधमांस, अथवा दहीमांस, तथा माषमांस, इनका इनके भोजन करके विषमज्वर दूर होय, ॥

दुसरेप्रकारकेअन्न

सुरासमंडापानायभोजनेचरणायुधाः ॥
तित्तिराविष्किरापथ्याःकुक्कुटाविषमज्वरे ॥

अर्थ—मद्य और मंड इनका पीना तथा मुरगो, तीतर, विष्कर जीव इनका मांस भोजनको देवे ये विषम ज्वरपर पथ्यकारक है ॥

विषमज्वरपरसामान्यचिकित्सा

सततंविषमंवापिक्षीणस्यसुचिरोत्थितं ॥
ज्वरंसंभोजनैःपथ्यैर्ज्वरघ्नैःसमुपाचरेत् ॥

अर्थ—क्षीणरोगीका बहुत दिनमे आनेवाला संतत अथवा विषमज्वर पथ्यकारक भोजन तथा ज्वरघ्न औषध इन करके शमन करे ॥

घृतपान

ज्वरःकषायैर्विविधैर्लेपनैर्लघुभोजनैः॥
रूक्षस्यतेनशाम्यंतिसर्पिस्तेषांभिषङ्मतं ॥

अर्थ—रूक्षरोगीका ज्वर अनेक प्रकारके काढे अनेक प्रकारके लेप तथा लघु भोजन करके शांति नही होता इस वास्ते उस रोगीको वैद्यके संमतीसैं घृतपान करावे ॥

वाताधिकविषमज्वर

विषमज्वरनाशायचिकित्सावक्ष्यतेधुना॥
वातप्रधानंसर्पिर्भिर्बस्तिभिःसानुवासनैः॥

अर्थ—विषमज्वरके नाशार्थ चिंकित्सा कहते है वातप्रधान विषमज्वरको घृत पान अथवा अनुवासन वस्ति करके जीते ॥

पित्ताधिकविषमकीचिकित्सा

विरेचनंचपयसासर्पिषासंस्कृतेनच॥
विषमंतिक्तशीतैश्चज्वरंपित्तोतरंजयेत्॥

अर्थ—पित्ताधिक विषमज्वरको ओटे हुए दूधमें घृत मिलायके रेचनार्थ देवे तथा कडुशीतल असे उपचारों करके जीते ॥

कफाधिकविषमचिकित्सा

वमनंपाचनंरूक्षमन्नपानंचलंघनं॥
कषायोष्णंचविषमेज्वरेशस्तंकफोत्तरे॥

अर्थ—कफाधिक विषमज्वरमें वमन, पाचन, तथा रूक्ष ऐसे अन्न तथा पानलंघन, तथा कषेले और गरम ऐसे औषध इत्यादि उपचार करावे ॥

मार्कंडयादिपाचन

मार्कंडीवालपथ्याचमृद्वीकास्थूलजीरकं॥
पाचनंस्मृतमेतेषांदेयंचविषमज्वरे॥

अर्थ—आहुली, छोटी हरड, कालीदाख, और कलौजी, इनका काढा विषम ज्वरमें पाचनार्थ देवे ॥

महौषधादिपाचन

महौषधाग्रंथिकतालपर्णीमार्कंडिकारग्वधवालपथ्या॥
सक्षारमेषांविषमज्वरेच हितंशृतंपाचनेरेचनंच ॥

अर्थ—सोंठ, पीपरामूल, वडीसोंफ, आहुली, किरवारेकी गिरी, और छोटी हरड इनका काढा सैंधानिमक डालके पिवावे यह विषमज्वरमें पाचन और रेचन है॥

पाचनवरेचन

नलिकावालपथ्यानांचूर्णंचसितयासह ॥
पाचनंरेचनंचोष्णसलिलैश्चगुडैःसमं॥

अर्थ—नलिका (यवारी) और छोटीहरड इनका चूर्ण मिश्री अथवा गुडमिलाय गरमकर पानीके साथ देय यह पाचक और रेचक है ॥

द्राक्षादिपाचन

गोस्तनीत्रिफलाविश्वधान्यकैःपाचनंमतं॥
द्रावकंस्मृतंभेजोषत्तमंयोजयेत्सदासर्वकर्मणि॥

अर्थ—कालीदाख, त्रिफला, सोंठ, और धनिया, इनका काढा पाचन और द्रावक ऐसा है यह औषध सर्व कर्मोमें देना चाहिये ॥

कुमारिमूलादिवमन

कुमारिमूलंकर्षैकंपीत्वाकोष्णजलैर्वमेत् ॥

विषमंतुज्वरंहंतिवमनेनाचिरंतनं ॥

अर्थ--घी गुवारका कंद १० मासे लेकर गरम जलसैं देय और वमन करे तोपुराना विषमज्वर दूर हो ॥

पटोलादिकाढा

पटोलयष्टीमधुतिक्तरोहिणीघनाभयाभिर्विषमज्वरघ्नम् ॥
कृतः कषायस्त्रिफलामृतावृषैः पृथक्पृथग्वाविषमज्वरापहः ॥

अर्थ--पटोलपत्र, मुलहटी, चिरायता, कुटकी, नागरमोथा, और हरड इनका अथवा त्रिफला, गिलोय, अडूसा, इनका काढा विषमज्वर नाशकरे ए दोनो काढेन्को एकत्रकर देवे अथवा पृथक् २ देवे ॥

यष्ट्यादिकाढा

यष्टीदुरालभावासात्रिफलावालकामृता ॥
मुस्ताक्काथः सितायुक्तोविषमज्वरनाशनः ॥

अर्थ--मुलहटी, धमासा,अडूसा,त्रिफला नेत्रवाला,गिलोय, और नागरमोथा, इनका काढा मिश्री मिलायके देवे तो विषमज्वर दूर हो ॥

मुस्तादिकाढा

मुस्ताक्षुद्रामृताशुंठीधात्रीक्काथः समाक्षिकः ॥
पिप्पलीचूर्णसंयुक्तोविषमज्वरनाशनः ॥

अर्थ--नागरमोथा, कटेरीका पंचांग, गिलोय, सोंठ, आमले इनके काढेमें सहत और पीपलका चूर्ण मिलायके पीवे तो विषमज्वर दूर हो ॥

महाबलादिकाढा

महाबलामूलमहौषधाभ्यांक्काथोनिहन्याद्विषमज्वरंहि ॥
शीतंसकंपंपरिदाहयुक्तंविनाशयेद्द्वित्रिदिनप्रयोगात् ॥

अर्थ—सहदेईकीजड, और सोंठ, इनका काढा शीत, कंप और दाह इन करके युक्त ऐसे विषमज्वरपर दो अथवा तीन दिन लेनेसैं ज्वरनाश होय॥

नागरादिदुसराकाढा

सनागरायाःसपयोधरायाःससिंहिकायाःसगुडूचिकायाः ॥
धात्र्याःकषायोमधुनाविमिश्रःकणाविमिश्रोविषमज्वरघ्नः ॥

अर्थ—सोंठ, नागरमोथा कटेरीका पंचांग, गिलोय, और आमले इन औषधोंका काढा सहत और पीपलका चूर्ण मिलायके देवे तो विषमज्वरका नाश करे

पटोलादिकाढा

स्वकांतिजितरोचनेचपललोचनेमालतिप्रसूननिकरस्फुरत्कबरिपंचवक्रोदरि ॥ पटोलकटुरोहिणीमधुकचेतकीमुस्तकप्रकल्पितकषायकोविषममाशुजेजीयते ॥

अर्थ–हे स्वकांति जितरोचने ! हे चपललोचने ! पटोलपत्र, कुटकी, मुलहटी, हरड और नागरमोथा इनका काढा करके देनेसैं विषमज्वरको शीघ्र दूर करे ॥

कुलकादिकाढा

किमुभ्रमयसिप्रियेकुवलयंकराभ्यामिदंमदीयवचनंसुधारससमंसमाकर्णय ॥ पुराणविषमज्वरेकुलकनिंबसिंहींद्रजामृताकृतकषायकोमधुयुतोवरीवर्तति ॥

अर्थ—पटोलपत्र, नीमकीछाल कटेरिका पंचांग, इन्द्रजो, और गिलोय इनका काढा करके सहत डालके लेयतो पुराना विषमज्वर नाश होय ॥

भार्ग्यादिकाढा

भार्गीपर्पटविश्ववासककणाभूनिंबनिंबामृतामुस्ताधन्वकभेषजैश्चदशभिर्निघ्नंतिसर्वज्वरान् ॥ जीर्णान्धातुगतांस्तथाचविषमान्सोपद्रवान्दारुणान्क्काथोयंयदियुग्मवासरमिदंदद्याद्यमाद्रक्षिता ॥

अर्थ--भारंगी, पित्तपापडा, सोंठ, अडूसा, पीपल, चिरायता निमकीछालगिलोय, नागरमोथा और धमासा इनका काढा जीर्णज्वर धातुगतज्वर उपद्रव सहित विषमज्वर तथा सर्वज्वर इनको नाश करे यह दो दिन करनेसैं यमराजसैंभी बचजावे ॥

भार्ग्यादिकाढा

भार्ग्यब्दपर्पटकधन्वयवासविश्वभूनिंबकुष्ठककणासिंह्वयमृताकषायः॥ जीर्णज्वरंसततसंततकौनिहन्यादन्येद्युकंसहतृतीयचतुर्थकंच ॥

अर्थ—भारंगी, नागरमोथा, पित्तपापडा, धमासो सोंठ, चिरायता, कूठ, पीपल, कटेरी, और गिलोय, इनका काढा जीर्णज्वर, संततज्वर, अन्येद्युष्क ज्वर, तृतीय ज्वर, और चातुर्थिक इनका नाश करे॥

निशाद्यंजन

ज्वरेंजनंनिशातैलकृष्णामरिचसैंधवैः ॥

अर्थ—हलदी, तिलका तेल, पीपल, कालीमिरच, और सैंधानिमक इनका अंजन विषमज्वरको दूर करे ॥

नरकेशनस्य

नरकेशोत्थितेतैलेकाकचंचुंविघर्षयेत् ॥
नस्यंसर्वज्वरहरंनात्रकार्याविचारणा ॥

अर्थ—मनुष्यके वालोंके तेलमें कौअेकी चौच घिसके नस्य देवे तो ज्वरनाशहोय इसमें संदेह नहीं है ॥

कणादिनस्य

कृष्णामलकसरामठदार्वीवचाराजसर्षपरसोनैः ॥
छागमूत्रसुपिष्टैर्नस्यंचैकाहिकादिहरं ॥

अर्थ—पीपल, आमले, हींग, दारुहलदी, वच, सपेद्सरसो, और लहसन इन औषधोंको वकरेके मूत्रमें पीसकर नस्य देय तो एकाहिकादि विषमज्वर नाश होय ॥

सैंधवादिअंजन

सैंधवंपिप्पलीनांचतंडुलाःसमनःशिलाः ॥
नेत्रांजनंतैलपिष्टंशस्यतेविषमज्वरे ॥

अर्थ—सैंधानिमक, पीपलकेवीज, और मनासिल, इनको तेलमें पीस नेत्रोंमें लगावे तो विषमज्वर दूर होय॥

लशुनादिअंजन

लशुनंपिप्पलीराजीवचाकुष्टंसमांशतः ॥
एतच्चूर्णंजलेपिष्टंचक्षुष्यंज्वरनाशनं ॥

अर्थ--लहसन, पीपल, राई, वच और कूट इनका समान भाग चूर्ण पानीमें पीस अंजन करनेसें विषमज्वर नष्ट होय ॥

चतुःषष्टिककाढा

शृंगीरामठरामसेनरजनीरुक्रेणुकारोहिणीरास्नैरंडरसोनदारुरजनीराजद्रुराजीफलैः ॥ त्रायंतीत्रिवृताहुताशनलतानंतामृतामुद्रितादंतीतुंबरुचित्रतंडुलत्रुटित्वक्तिक्तनक्तंचरैः ॥ वासावत्सकबीजवासवसुराबल्यावरीवेछजंब्राम्हीब्राम्हणयष्टिवारणकणाविश्वावयस्थावृषैः ॥ मूर्वामालविकासमूलमगधामुस्ताजमोदाद्वयैर्मिश्रेयागरुचंदनेंद्रचविकास्फोटावचाकट्फलैः ॥ इत्येतैर्दशमूलयुङ्निगदितःक्काथश्चतुषष्टिकःशृंग्यादिर्मदनागसिंहभिषजासर्वामयोन्मूलने ॥ पुंसामष्टविधज्वरार्तिशमनेवाताग्निसंधुक्षणेसर्वांगेचसमीरणद्विपघटेशार्दूलविक्रीडितं ॥

अर्थ—काकडासिंगी, हींग, कायफल, हलदी, कूठ, रेणुका, कुटकी, रास्ना, अंडकी जड, हलसन, दारुहलदी, अमलतालका गूदा, पटोलपत्र, त्रायमाण, निसोथ, चित्रक, मूर्वा, धमासो, गिलोय, खरैटी, दंती, तुंबरू, वायाविडंग, छोटी इलायचीके वीज, दालचीनी, चिरायता, गूगल, अडूसा, इन्द्रजो, कालीमूंग, क्षीरकांकोली, वला, शतावर, मिरच, ब्रह्मी, भारंगी, गजपीपल, सोंठ, हरड, फालसे, मूर्वा, काली निसोथ, पीपरामूल, नागरमोथा, अजमोद, अजमायन, सोंफ, कालीअगर, लालचंदन, कूडेकीछाल, चव्य, सारिवासपेद, वच, कायफल, और दशमूल, इनको एकत्रित करे, यह चतुःषष्टिक काढाहै इसको शृंगादि अथवा मदनादि कहते है, यहरोगरूपी हाथीको मारनेंमें सिंहके समान है यह आठ प्रकारकी ज्वर पीडाका शामक है और अग्निको वढानेवाला तथा सर्व वातके रोगोको नाश कर्ता है ॥

निंबादिचूर्ण

भूनिंबपथ्याघनकंटकारीत्रायंतिकानागरयासतिक्तः ॥ वाप्या

लकर्चूरकणापटोलीक्षुद्राजलग्रंथिकपर्पटाश्च ॥ एषांततोषोड
शकांगचूर्णंज्वरान्समस्तान्विषमान्निहंति ॥

अर्थ—चिरायता, हरड, नागरमोथा, कटेरी, त्रायमाण, सोंठ, कुटकी, कटेरी, कचूर, पीपल, पटोलपत्र, छोटीकटेरी, नेत्रवाला, पीपरामूल, और पित्तपापडा, इन सोल्हह औषधोंका चूर्ण सर्व विषमज्वरोंको नाश करे ॥

जीरकादिचूर्ण

कालाजाजीतुसगुडाविषमज्वरंनाशिनी ॥
मधुनाचाभयालीढाहंत्याशुविषमज्वरं ॥

अर्थ—कालेजीरेका चूर्ण गुडके साथ, अथवा छोटी हरडका चूर्ण सहतके साथ, खानेसैं विषमज्वर नाश होय ॥

तुलसीद्रोणपुष्पीस्वरस

पीतोमरीचचूर्णेनतुलसीपत्रजोरसः ॥
द्रोणपुष्पीभवोवापिनिहंतिविषमज्वरान् ॥

अर्थ—तुलसीके पत्तोके रसमें कालीमिरचका चूर्ण मिलायके अथवा गोमाके रसमें कालीमिरचका चूर्ण मिलायके पीवे तो विषमज्वर दूर होय ॥

कुमारीमूलकादियोग

कुमारिमूलंकर्षैकंपीत्वाकोष्णजलैर्वमेत् ॥
विषमंतुज्वरंहंतिवातश्लेष्मगदानपि ॥

अर्थ—घीगुवारकीजड तोले भरलेकर गरम जलसैं देय तो बमन होकर विषमज्वर वातरोग इनका नाश होय ॥

वर्धमानपीपल

क्षीरेणपंचवृद्ध्यावादुग्धान्नाशीकणांपिबेत् ॥ यावत्पूर्णंशतंत
त्स्यात्तांतथैवापकर्षयेत् ॥ वातास्रस्तापपांड्वर्शोगुल्मशोफो-
दरापहं ॥ विषमेषुचतद्वृष्यंपिप्पलीवर्धमानकं ॥

अर्थ—दूधसैं पांच पांचकी वृद्धि करके पीपल पीसके पिवावे, इस प्रकारसौं पीपल पर्यंत करे फिर उसी पांच पांचके क्रमसैं घटाता हुआ चला आवे, और दूधभात भोजनको देवे तो वातरक्त, दाह, पांडु, बवासीर, गोला, सूजन, उदर और विषमज्वर इनका नाश होय, ये वृष्य है इसको वर्द्धमान पीपल कहते है॥

गुडजीरकयोग

जीरकंगुडसंयुक्तंविषमज्वरनाशनं ॥
अग्निमांद्यंजयेच्छीतंवातरोगहरंपरं ॥

अर्थ—जीरा गुडकेसाथ खानेसै विषमज्वर मंदाग्नि, शीत और वातके रोगको दूर करे ॥

हरडादिकोंकाचूर्ण

भवतिविषमहंत्रीचेतकीक्षौद्रयुक्ताभवतिविषमहंत्रीपिप्पलीवर्धमाना ॥ विषरुजमजाजीहंतियुक्तागुडेनप्रशमयतितथाद्र्यासेव्यमानागुडेन ॥

अर्थ–छोटी हरडका चूर्ण सहतसैं चाटे, अथवा जींरा और गुड मिलायके खाय, एवं त्रिफलेका चूर्ण गुडमें मिलायके खाय ए चारयोग पृथक्२ विषमज्वर नाशक जानने ॥

वंदाकयोग

वंदाकंविषजातंचतक्रेणविषमज्वरे ॥
सर्पिषादधिमंडेनहिंगुनाचप्रयोजितं ॥

अर्थ–विषवृक्षके ऊपरका वांदा छाछ, घृत, दहीकामांढ, अथवा हींगसैं सेवन करे तो विषमज्वर दूर हो ॥

निंबादिचूर्ण

निंबच्छदोदशपलंत्र्यूषणंचपलत्रयं ॥ त्रिपलंत्रिफलाचैवत्रिपलंलवणत्रयं ॥ द्वौक्षारौद्विपलंचैवयवानीपलपंचकं ॥ सर्वमेकीकृतंचूर्णंप्रत्यूषंभक्षयेन्नरः॥ एकाहिकंद्व्याहिकंचतथात्रिदिवसंज्वरं ॥ चातुर्थिकंमहाघोरंशमयेत्सततज्वरं ॥

अर्थ—नीमकी पत्ती ४० तोले, सोंठ, मिरच, पीपल, १२ तोले, त्रिफला १२ तोले, तीनो नोन १२ तोले, दोनो क्षार ८ तोले और अजमायन २० तोले इन सबका चूर्ण कर प्रातःकालमें देवे तो इकतरा, संतत, तिजारी चौथैया और सतत ज्वरको शांति करे ॥

भृंगराजचूर्ण

समूलंभृंगराजंचछायाशुष्कंविचूर्णयेत् ॥ तत्समंत्रिफलाचूर्णं
सर्वतुल्यासिताभवेत्॥ एकीकृत्यपलैकैकंभक्षयेच्चानुपानतः
अग्निमांद्यंचविट्‌बंधंपाडुतांहरेतध्रुवं॥

अर्थ--जडसुद्धा भांगरेको छायामें सुखाय उसका चूर्ण और इतनाही त्रिफलेका चूर्ण तथा सबकी वरावर मिश्री मिलायके इसमेंसैं ४ तोले योग्य अनुपानके साथ देवे तो मंदाग्नि, विट्‌बंध, और पांडुरोग इनको हरण करे

दीप्यादिचूर्ण

दीप्याजयारामठवन्हिविश्वाक्षारद्वयंजीरकयुग्मकृष्णा॥
फलत्रयंसंचलसैंधवंच कृतांहिचूर्णंविषमज्वरघ्नं॥

अर्थ—अजमोद, हरड, हींग, चित्रक, सोंठ, जवाखार,सज्जीखार, कालाजीरा, पीपल, त्रिफला, संचरनोन, और सैंधानोन इनका चूर्ण विषमज्वर नाशक है-

पंचसार

सर्पिः क्षौद्रंसिताक्षीरंपिप्पल्यः सितशर्करा॥पिबेत्खजेनमथितंपंचसारमिदंस्मृतम् ॥ विषमज्वरहृद्रोगकासश्वासक्षयापहं॥

अर्थ--घृत, सहत, पीपल,दूध,सपेद खांड इन पांचोंको एकत्र मिलायकेपीवे तो यह पंचसार विषमज्वर, हृद्रोग, खांसी, श्वास, और क्षय इनको दूरकरे.

पद्मकादिसार

पद्मकंविल्वजंपेयंसर्पिषामथितेनवा॥
विषमज्वरनाशायक्षीरंवागोमयान्वितं

अर्थ—पद्माख, वेलगिरी इनके चूर्णको घृत अथवा मट्ठा इनमें मिलायके पीवेतो विषमज्वर दूर होय॥

लशुनादिकल्क

तिलतैललवणयुक्तःकल्कोलशुनस्यसेवितःप्रातः॥
विषमज्वरमपहरतेवातव्याधीनशेषांश्च॥

अर्थ—लहसनके कल्कमें तिलका तेल और निमक मिलायके प्रातःकाल सेवन करे तो विषमज्वर, और संपूर्ण वातव्याधियोंको हरण करे॥

गुडूचीकल्क

अमृतायाःशृतंचूर्णंवाससापरिशोधितं ॥ पृथक्षोडशभागाः स्युर्गुडमाक्षिकसर्पिषां॥यथाग्निभक्षयेदेतन्नरोहितमिताशनः॥ नास्यकाश्चिद्भवेद्व्याधिर्नजरापलितंनच ॥ नज्वराविषमा-नैवमेहाश्चानिलरक्तकं ॥ नचनेत्रगतारोगाःपरमेतद्रसायनं॥ मेधाकरंत्रिदोषघ्नंप्रयोगादस्यबुद्धिमान् ॥ जीवेद्वर्षशतंसाग्रं-यथैवादितिजस्तथा ॥

अर्थ—गिलोयका चूर्ण कपडछान १०० तोले तथागुड, सहत, घी ये प्रत्येक सोलह २ तोले लेकर मिलावे, इसको अग्निका वल देखकर भक्षण करे, तथा हितकारी और परिमाणका ऐसा अन्न भक्षण करे तो किसीप्रकारकी व्याधि तथा वृद्धावस्था वालोंकी सपेदी, ज्वर, विषमज्वर, प्रमेह, वातरक्त, और नेत्ररोग कदाचित् नहीं हो, यह उत्कृष्ट रसायन बुद्धि देनेवाली त्रिदोष नाशक है, इसके सेवनसैं मनुष्य १००वर्षजीवे तथा देवता ओंके समान वली होय ॥

विषमपरमहाज्वरांकुशरस

शुद्धसूतंविषंगंधंधूर्तबीजंत्रिभिःसमं ॥ चतुर्णांद्विगुणंव्योषंचूर्णंगुंजाद्वयंहितं ॥ जंबीरकस्यमज्जाभिरार्द्रकस्यद्रवैर्युतं ॥ महाज्वरांकुशोनामज्वराणामंतकोभवेत् ॥ एकाहिकंद्व्याहिकंवात्र्याहिकंवाचतुर्थकं॥ विषमंवात्रिदोषोत्थंनाशयेद्याममात्रतः

अर्थ—शुद्धपारा, विष, गंधक सब समान भाग लेय, और इन तीनोंके वरावर धतूरेके वीजले और सवसैं दूनी सोंठ, मिरच और पीपलका चूर्ण ले इन सवको नींबू और अदरखके रसमें खरलकर दो रत्तीकी गोली बनावे यह महाज्वरांकुश सर्व ज्वरोंको कालरूप है और एकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक, चातुर्थिक, विषम, अथवा संनिपातज्वर, इनको एक प्रहरमें नाश करे ॥

दुसरारस

रसस्यद्विगुणोगंधोगंधतुल्यश्चटंकणः ॥ रसतुल्यंविषंयोज्यं-मरीचंपंचधाभिषक् ॥कट्फलंदंतिबीजंचाक्षिणोतिज्वरमुत्क-

टं ॥ क्वचिद्रात्रौदिवाक्वापिद्वितीयंत्र्याहिकंक्वचित् ॥ चलचा- तुर्थिकंचापिविषमज्वरलक्षणं ॥

अर्थ—पारा१भाग, गंधक २ भाग, सुहागा २ भाग, विष १ भाग कालीमिरच ५ भाग और कायफल तथा जमालगोटा एक एक भाग सबका चूर्ण कर अदरखके रसमें गोली बनायले इसके सेवन करनेसैं दिन रात्रिमें आनेवाला ज्वर द्व्याहिक त्र्याहिक, चलज्वर और चातुर्थिक ज्वर असे विषमज्वरोंकी शांति करे

मेघनादरस

आरंकास्यंमृतंताम्रंत्रिभिस्तुल्यंतुगंधकं॥ क्वाथेनमेघनादस्य पिष्ट्वारुध्वापुटेपचेत् ॥षड्भिस्तुजायतेसिद्धोमेघनादोमहार सः ॥पर्णखंडेनमाषैकोविषमज्वरनाशनः ॥

अर्थ—लोह, काँसा, और तामा इनकी भस्म बराबर लेवे सबकी बराबर गंधक लेय, सबको खरलमें डाल चौलाईके रसमें खरलकर संपुटमें फूंक देवे इस प्रकार छःपुट चौलाईके देवे तो यह मेघनाद महारस सिद्ध होवे एक मासे पानके टुकडेमें खाय तो विषमज्वर दूर होवे ॥

गोपीडयादिघृत

गोपीडयामलकीस्थिरामगधजातिक्तापयःपालिनीद्राक्षाश्री फलवावनीहिमविषामुस्तेंद्रजैःसाधितं॥स्यादाज्यंविषमज्वर क्षयाशिरःपार्श्वव्यथारोचकच्छर्दीशोषहलीमकप्रशमनंलीला लतामंजरी ॥

अर्थ—सारिवा, भूयआमला, आमला, सालपर्णी, पीपल, कुटकी, नेत्रवाला मुनक्का दाख, वेलगिरी, चंदन, लालचंदन,अतीस, नागरमोथा और इन्द्रजो इनका काढा कर उसमें घृत मिलाय घृतको सिद्धकरे इसके पीनेसैं विषमज्वर, क्षई, मस्तकशूल, पसवाडेकी पीडा, अरुचि, वमन, शोष हलीमक, इनको तत्काल शांत करे ॥

पंचतिक्तकघृत

वृषनिंबामृताव्याघ्रीपटोलानांश्रितेनच॥कल्केनपक्वंसर्पिस्तु निहन्याद्विषमज्वरान् ॥पांडुंकुष्ठंविसर्पंचक्रमीनर्शांसिनाशयेत् ॥

अर्थ—अडूसा, नीमकी छाल, गिलोय, कटेरी, पटोलपत्र इनको कल्ककी विधीसें पककर पीवे तो विषमज्वर, पांडुरोग, कोढ, विसर्प, कृमि, और बवासीर इनको दूर करे ॥

षट्पलघृतं

शुंठीकणाचित्रकंचचव्यंग्रंथिकमेवच ॥ कुर्यात्पंचपलान्भागानेकैकस्यचकुट्टितान् ॥ जलद्रोणेविपक्तव्यंयावत्पादावशेषितं ॥ एतैस्तुपालिकैःकल्कैःसैंधवेनसमन्वितैः ॥ षट्पलंनामविख्यातंविषमज्वरनाशनं ॥ कासश्वासातिदौर्बल्यंप्रतिश्यायित्वमेवच ष्लीहोर्ध्ववातश्वयथुपांडुरोगांश्चनाशयेत् ॥

अर्थ—सोंठ, पीपल, चित्रक, चव्य, और पीपरामूल, इनके २० वीस तोले लेय, सबको कूटपीस १०२४ तोले जल डाल चतुर्थांश शेष काढा करे, फिर इसकाढेका जल और सैंधानिमक डालके घृत तयार करावे यह षट्पल घृत विषमज्वर, कांस, श्वास, दुर्बलता, पीनस, ष्लीहा, ऊर्ध्ववात, सूजन और पांडुरोग इनको नाश करे ॥

क्षीरषट्पलघृत

पंचकोलैःससिंधूत्थैःपालिकैःपयसासमं ॥
सर्पिःप्रस्थंघृतंप्लीहविषमज्वरनाशनं ॥

अर्थ—पीपल, पीपरामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, तथा सैंधानिमक ये सब औषध चार तोले ले, कूटके काढाकरे तथा काढेके बराबर दूध और घी सेरभर डालके वचावे जव सिद्ध हो जाय तव उतारके धर रक्खे इसके सेवन करनेसें प्लीह और विषमज्वर दूर होय ॥

दुसराप्रकार

दशमूलरसेसर्पिःसक्षीरपंचकोलकैः ॥ पक्वंनिहंतिसत्पीतंज्वरकासाग्निमार्दवं ॥ वातपित्तज्वरव्याधिंप्लीहानंचापिपांडुतां ॥

अर्थ—दशमूल, और पंचकोल इनका काढा कर उसमें काढेके समान दूध तथा घीडालके सिद्धकरे, इसके सेवन करनेसें ज्वर, खांसी, मंदाग्नि, वातपित्तज्वर, प्लीहा, और पांडुरोग इनको नाश करे ॥

अमृताद्यघृत

अमृतात्रिफलापटोलयासैःसंपक्कंविधिवद्घृतेविपक्कं ॥
विषमज्वरनाशनंप्रधानंक्षयगुल्मारुचिकामलापहारि ॥

अर्थ—गिलोय, त्रिफला, पटोलपत्र, और धमासा, इनका काढा और घृत डालके पचावे, जब घृत सिद्ध हो जावे तव उतारले इसके सेवन करनेसैं विषमज्वर, क्षय, गोला, अरुचि, और कामला इनको दूर करे ॥

शुंठ्यादिघृत

शुंठीकणाग्रंथिकचव्यवन्हिक्षाराःपृथक्त्वेकपलप्रमाणाः॥ प्रस्थंघृतंनागरवारिमस्तुप्रस्थद्वयंतद्विपचेत्कषाये ॥ संसिद्धमाज्यंविषमज्वरेषुजीर्णज्वरेवर्षभवेपिशस्तं ॥

अर्थ—सोंठ, पीपर, पीपरामूल, चव्य, चित्रक, जवाखार, प्रत्येक चार २ तो ले लेवे इनका काढा करके इस काढेमें सेरभर घी और अदरखका रस तथादही काजल दोसेर मिलाके फिर अग्निपर चढायके घृत सिद्धकरे यह विषमज्वर, जीर्णज्वर, एक वर्षका ज्वर इनको नष्ट करे ॥

चंदनाद्यघृत

चंदनंचित्रकंसिंहीवत्सकंमुस्तनागरैः ॥ कटुकात्रायमाणाचधात्र्यूशीरेद्विसारिवे॥ द्रव्यार्धपलमात्राणिसौम्यवारेषुसंहरेत्॥ क्षीराढकसमायुक्तांसर्पिषोर्धतुलांपचेत्॥ चातुर्थिकंहरेत्पीतंउन्मादंविषमज्वरं॥त्र्याहिकंश्वासकासौचसर्वापस्मारमेवच

अर्थ—चंदन, चित्रक, कटेरीकी जड, इन्द्रजौ, नागरमोथा, सोंठ, कुटकी, त्रायमाण, आमले, नेत्रबाला, तथा दोनो प्रकारकी सारिवाइन औषधोंका काढा करके उसमें दूधचार सेर, घृत सेरभर डालके सिद्ध करे जव घृतमात्र बाकी रहे तव उतार लेवे यह चातुर्थिक, उन्माद, विषमज्वर, श्वास, खाँसी, और मृगीरोगको नाश करे, इस चंदनादि घृत कहते है. ॥

महाकल्याणघृत

एतदेवहविःपक्कंजीवनीयोपसंसृतं ॥ द्विपंचमूलक्काथेनशताविर्यारसेनच ॥ चतुर्गुणेनपयसामहाकल्याणमिष्यते ॥ अप-

स्मारज्वरंशोषंक्लैब्यंकाश्मर्यबीजतः ॥ घृतमेतन्निहंत्याशुये- चापिविषमज्वराः ॥ जीवनीयगणत्वेनकाकोल्यादिगणग्रहः महाकल्याणकेकार्योघृतेतुदशकार्षिकः ॥

अर्थ—अब महाकल्याण घृतको कहते है–कल्याण घृतकी औषध और जीवनीय गण दशतोले, कांकोल्यादिगण १० तोले, तथा दशमूल, इन औषधोंका काढा लेकर उसमें शतावरका रस डालके सबसें चौगुना दूध डाले और सेर मात्र घृत डालके सिद्धकरे इस घृतके सेवन करनेसें मृगी, ज्वर तृषा, इनको नष्ट करे तथा कंभारीके फलका चूर्ण डालके लेय तो नपुंसकता और विषमज्वर इनका नाश करे ॥

कल्याणघृत

विडंगमुस्तात्रिफलामंजिष्ठादाडिमोत्पलैः ॥ श्यामैलवालुकैलानिचंदनागरुदारुभिः ॥ बर्हिष्ठकुष्ठरजनीपर्णिनीसारिवाह्वयैः ॥ हरेणुत्रिवृतादंतीवचातालीसपत्रकैः ॥ बलाविशालाबृहतीमालतीपृष्ठिपर्णिभिः ॥ एतैश्चकार्षिकैःकल्कैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ चतुर्गुणेनपयसाद्विगुणेनजलेनच ॥ एतत्कल्याणकंनामसर्पिःपक्वंत्रिदोषनुत्॥विषमज्वरश्वासकासगुल्मोन्मादज्वरापहं ॥

अर्थ—अव कल्याण घृत कहते है. वायविडंग, नागरमोथा, त्रिफला, मजीठ अनारदाना. नीलकमल, पीपल, नेत्रवाला, चंदन काली अगर, देवदारु, सुगंधवाला, कूठ, हलदी, दोनो सारिवा, पित्तपापडा, निसोथ, दंती, वच. तालीसपत्र, खरेटी. इन्द्रायनकागूदा, वडीकटेरी, मालती, पृष्टपर्णी, ये प्रत्येकऔषध तोले २ भरले इनका कल्ककर इसमें सेरभर घृत और चारसेर दूध डाले, तथा दुगना जल डालके सिद्ध करे जब घृत मात्र शेषरहे तब उतार लेवे इसकल्याण घृतके सेवन करनेसें त्रिदोष, विषमज्वर, श्वास, खाँसी, गोला, उन्माद, और ज्वर इन रोगोंको नाश करे ॥

कोलादिघृत

कोलाग्निमंथत्रिफलाक्काथोदध्नाघृतैःपिबेत् ॥
तिल्वकावाचपमेताद्धिविषमज्वरनाशनं ॥

अर्थ—वेर, अरनी और त्रिफला, इनके काढेमें दही और घृत तथा हिंगोटका चूर्ण डालके घृत सिद्ध करे यह विषमज्वरको दूर करता है ॥

अमृतषट्पलघृत

नागरंचविकाक्षारः पिप्पलीमूलचित्रकं॥कृष्णाचपलिकान्भागान्घृतप्रस्थेविपाचयेत् ॥शृंगवेररसंप्रस्थंमधुप्रस्थंतथैवच ॥ एकाहिकंद्व्याहिकंचत्र्याहिकंचचतुर्थकं ॥एतान्सर्वज्वरान्हंतिस्थूलंचकुरुतेभृशम् ॥ दुर्नामश्वासकासघ्नंबलवर्णाग्निवर्धनं ॥

अर्थ—सोंठ, चव्य, जवाखार, पीपरामूल, चित्रक, पीपर, ये प्रत्येक औषध तोले २ लेकर काढा अथवा कल्क करे, उसमें सेरभर घृत और सेरभर अदरखका रस तथा सेरभर सहत डालके सिद्ध करे जब घृतमात्र बाकी रहे तब उतारले, इसके सेवन करनेसें एकाहिक,द्व्याहिक, त्र्याहिक,चातुर्थिक इत्यादि सर्वज्वरोंका नाशकरे और देहको स्थूल करे एवं बवासीर, श्वास, खांसी को नष्ट करे और बल वर्ण तथा अग्निको बढावे ॥

घृतपान

सर्पिर्दद्यात्कफेमंदेवातपित्तोत्तरेज्वरे॥
पक्वेषुदोषेष्वमृतंतद्विषोपममन्यथा ॥

अर्थ—मंदकफ, और वातपित्तोल्वण ऐसे ज्वरवालेको घृत पान करावे, ये पक्वदोषोंमें अमृतके समान तथा अपक्व दोषोंमें विषके समान दुष्टगुण करता है॥

षट्तक्रतैल

सुवर्चिकानागरकुष्ठमूर्वलाक्षानिशालोहितयष्टिकाभिः ॥
तैलंज्वरेषड्गुणक्वाथसिद्धमभ्यंजनात्शीतविदाहनुत्स्यात् ॥
दध्नासंसारकंतत्स्यात्षट्तक्रंतैलमुत्तमं ॥

अर्थ—षट्तक्र तैल१ कहते है- तैल भाग,तथा सज्जीखार,सोंठ,कूठ,मूर्वा,लाख, हलदी और मजीठ इनका काढा छः भाग तथा दही एक भाग लेकर तेल सिद्ध करे इस षट्तक्र तैलकी देहमें मालिस करनेसैं दाहको शांति करे यह विषमज्वरपर अति उत्तम है ॥

लाक्षादितैल

पद्मकोत्पलकल्हारमृणालविषपौष्करैः ॥ कुमुदोशिरमंजिष्ठा

ग्नेयगैरिककट्फलैः। सारिवाद्वयलोध्राब्दक्षीरीखर्जूरमुस्तकैः॥ धात्रीशतावरीयुक्तैःक्काथकल्पैःप्रयोजितैः॥ लाक्षारसपयस्त क्रमस्तुभिः सहकांजिकैः॥पक्कंतैलमिदंत्वच्यंदाहज्वरहरंपरं॥

अर्थ—पद्माख, कूठ, लालकमलको कंद, अतीस, पुहकरमूल, कमोदनी, खस, मजीठ, चित्रक, गेरू, कायफल, दोनो सारिवा, लोध, मोथा, क्षीरकाकोली खजूर, नागरमोथा, आमले, और सतावर, इनका काढा और कल्क, तथा लाखका सीरा, दहीका तोर और कांजी इस सबको मिलाय तेल सिद्ध करे ये त्वचाको हितकारक तथा दाह, पूर्वज्वरका नाशक है॥

दुसराप्रकार

लाक्षारसाढकेप्रस्थंतैलस्यविपचेद्भिषक्॥ मस्त्वाढकसमायुक्तंपिष्ट्वाचात्रविनिःक्षिपेत्॥ शतपुष्पांहरिद्रांचमूर्वांकुष्टंहरेणुकं॥ कटुकंमधुकंरास्नाअश्वगंधाचदारुच॥ मुस्तकंचंदनंचैवपृथगक्षंसमांशकैः॥ द्रव्यैरेतैस्तुसंसिद्धमभ्यंगान्मारुतापहं॥ विषमाख्यान्ज्वरान्सर्वान्नाश्वेवप्रशमंनयेत्॥ कासंश्वासंप्रतिश्यायंकंडूंदौर्गंध्यमेववा॥ त्रिकपृष्टगृहंशूलंगात्राणांकुट्टनंतथा॥ पापालक्ष्मीप्रशमनंसर्वग्रहनिवारणं॥ अश्विभ्यांनिर्मितंसम्यक्तैलंलाक्षादिकंत्विदं॥

अर्थ—२५६ तोले लाखका काढा, ६४ तोले तेल, दहीका तोर २५६ तोले ये सब एकत्र कर उसमें सोंफ, हलदी, मूर्वा, कूठ, पित्तपापडा, कुटकी, महुआके फूल, रास्ना, असगंध, देवदारु, मोथा, और चंदन, ये प्रत्येक तोले तोले भर लेय, सबका कल्ककर पूर्वोक्त लाखके काढे आदिमें मिलाय तेल सिद्ध करे यह तेल वादी, विषमज्वर, खाँसी, श्वास, पीनस, खुजली, अंगकी दुर्गंधी तथा त्रिकस्थान, पीठ, इनका शूल, देहका फड़कना, पाप, दुष्टचेष्टा, सर्व ग्रहदोष इनको नाश करे यह अश्विनी कुमारने निर्माण करा लाक्षादितैल जानना॥

षट्चरणतैल

लाक्षामधुकमंजिष्ठामूर्वाचंदनसारिवाः॥
तैलंषट्चरणंनामअभ्यंगाज्ज्वरनाशनं॥

अर्थ—लाख, महुआ, मजीठ, मूर्वा, चंदन, और सारिवा इनके काढेमें तेलको सिद्ध करे तो यहषट् चरण तैल मालिस करनेसैं सर्वज्वरोंको नाश करे ॥

अजादिधूप

अजायाश्चर्मरोमाणिवचाकुष्टंपलंकषा ॥
निंबपत्राणिमधुचधूपनंज्वरनाशनं ॥

अर्थ—बकरीकी चाँम और बाल, वच, कूठ, गूगल, नीमके पत्ते और सहत इनकी धूनी देनेसैं सर्वज्वर नाश होय ॥

वचादिधूप

वचाहरीतकीसर्पिर्धूपःस्याद्विषमज्वरे ॥

अर्थ—वच, हरड, और घी, इनकी धूनी विषमज्वर नाशक है ॥

मसुराधूप

मसुरातूषकैर्धूपःसर्वज्वरगदापहः ॥

अर्थ—मसूरकी भुसीकी धुनी देनेसैं सर्वज्वरदूर हो ॥

सहदेव्यादिधूप

सहदेवीवचाभद्रानाकुलीभिः प्रधूपनं ॥
प्रदेहोद्वर्तनंकुर्यादेभिर्वाज्वरशांतये ॥

अर्थ—सहदेई, बच, हलदी, और रास्ना, इनकी धूनी देना, अथवा देहमें उवटना करनेसैं सर्वज्वर दूर हो ॥

गुग्गुलादिधूप

पुरध्यामवचासर्जनिंबार्कागरुदारुभिः ॥
सर्वज्वरहरोधूपः श्रेष्ठोयमपराजितः ॥

अर्थ—गूगल, रोहिसतृण, वच, राल, नीमके पत्ते,आकके पत्ते अगर, और, दारुहलद,इनकी धूनी सर्वज्वरोंको नष्ट करे है इसे अपरानिता धूप कहतेहै ॥

माहेश्वरधूप

रुद्रजटागोशृंगंबिडालविष्टोरगस्यनिर्मोकः ॥ मदनफलभूत
केशैर्वंशत्वक्रुद्रनिर्माल्यं ॥ घृतयवमधुरंचंद्रकलाछागलरो
माणिसर्षपाःसवचाः ॥ हिंगुगवाक्षीमरिचाःसमभागाश्छागमू

त्रसंपिष्टाः॥ धूपनविधिनाशमयंत्येतेसर्वेज्वरान्नियतं ॥ ग्रह शाकिनीपिशाचप्रेतविकारानयंधूपः॥

अर्थ—शिवलिंगी, गौकासींग, विलावकी विष्टा, स्यांपकी काँचली, मैनफल जटामांसी, बाँसकीछाल, शिवानिर्माल्य, घृत, जौ, गुड, बावची, बकरीकेवाल, सपेदसरसों, वच, हींग, इन्द्रायन, और कालीमिरच, ये समान भाग, लेकरके मूत्रमें पीस धूनी देवे तो सर्वज्वर, शाकिनी, पिशाच, और प्रेतविकार इनको दूर करे इसे (माहेश्वर धूप) कहते है ॥

सर्पत्वचादिधूप

सर्पत्वचासर्षपहिंगुनिंबपत्राण्यमीषांसमचूर्णधूपः ॥
विनिग्रहंराक्षसडाकिनीनांकरोतिरक्षांविषमज्वरस्य ॥

अर्थ—साँपकी काचली, सरसो, हिंग, नीमकेपत्ते इनका समान भाग चूर्ण-कर धूनी देय तो राक्षस, डाकनी और विषमज्वरको दूर करे ॥

पलंकषादिधूप

पलंकषानिंबपत्रंवचाकुष्ठंहरीतकी ॥
सर्षपाः सयवासर्पिर्धूपनंज्वरनाशनं ॥

अर्थ—लाख, नीमकेपत्ते, वच, कूठ, हरड, सरसों, जो और घृत इनकी धू-नी ज्वरको नाश करे ॥

माहेश्वरधूप

कार्पासास्थिमयूरपिच्छबृहतीनिर्माल्यपिंडीतकत्वङ्मांसी-विषदंशविड्नखवचाकेशाहिनिर्मोचनैः॥वागेंद्राद्विजशृंगहिंगु-मरिचैस्तुल्यंकृतंधूपनंस्कंदोन्मादपिशाचराक्षससुरावेशज्वर-घ्नंपरं ॥

अर्थ—विनोले, मोरपंख, कटेरी, लजालू, मैनफल, दालचीनी, जटामांसी, विलावकी विष्टा, नखसुगंध द्रव्य, वच, मनुष्यके बाल, साँपकी काँचली, हा-थीदाँत, शींग, हींग, और कालीमिरच ये समान भाग लेकर कूट पीस धूनी दे-वे तो स्कंदग्रहोन्माद, पिशाच, यक्ष, राक्षस, और देवताओंका देहमें आना इनको नाश करे ॥

निंबपत्रादिधू०

निंबपत्रंवचाकुष्टंपथ्यासिद्धार्थकंघृतं ॥
विषमज्वरनाशायगुग्गुलुश्चेतिधूपनं ॥

अर्थ—नीमकेपत्ते, वच, कूठ, हरड, सपेदसरसौं घृत और गूगल इनकी धूनी विषमज्वरको दूर करती है ॥

मार्जारविष्ठाधूप

वैडालंवाशकृद्योज्यंवेपमानस्यधूपने॥

अर्थ—जिसको ज्वरके कारण सरदी लगनेसैं कांपता हो उसको विलावके विष्टाकी धूनी देवे ॥

सहदेवीमूलिकाबंध

श्मशानसहदेव्यावादूर्वायावाथमूलिका ॥
सूत्रेणवेष्टिताबत्धाहस्तेसर्वज्वरापहा ॥

अर्थ—स्मशानमें उत्पन्न हुई सहदेई अथवा दूबकी जडको सूतमें लपेट कर हाथमें बाँधे तो सर्वप्रकारके ज्वर दूर हो ॥

बादेबंधन

आम्रबंदंविशेषोयंकरेबध्वाज्वरंजयेत् ॥ आहरेदनुराधायांक रवीरस्यबंदकं ॥ ब्रम्हवृक्षस्यवंदंवाऋक्षेउत्तरभाद्रके ॥ करे- बद्धंज्वरंहंतिसर्वमेतत्पृथक् पृथक्॥

अर्थ—अनुराधा नक्षत्र, अथवा उत्तराभाद्रपद नक्षत्रमें आमका अथवा कन्हैर तथा ढाकका बाँदा लायकर हाथमें बाधे तो सर्वप्रकारके ज्वरोंको दूर करे ॥

उलूकपक्षबंध

उलूकदक्षिणंपक्षांसितसूत्रेणवेष्टयेत् ॥
बद्धंवावामकर्णेतुहरत्येकाहिकंज्वरम् ॥

अर्थ—उल्लू (घुग्घू) का दहना पंख सपेद सूतमें लपेट कर बाए कानमें बाधे तो एकाहिकज्वर दूर होय ॥

गोपालिकामूलबंध

गोपालपत्रिकामूलंसहदेवीबलाथवा ॥

गोजिव्हाविजयामूलंगलेबत्धंज्वरापहम् ॥

अर्थ—गोपालककडी, सहदेई, खरेटी, गोभी, और भांग इनमेंसैं किसीएक-की जडको गलेमें बांधनेसैं ज्वर दूर होय ॥

भूतकेशीमूलबंध

भूतकेश्याश्चमूलंवासप्तखंडानिकारयेत् ॥
बंधयेद्रक्तसूत्रेणहस्तेचज्वरनाशनम् ॥

अर्थ—भूतकेशीकी जडके सात टुकडे कर उनको लाल सूतमें बांधके हाथमें बांधे तो ज्वर दूर होय ॥

निर्गुंडिबंध

निर्गुंड्याःसहदेव्यश्चकटौबद्धंजटाद्वयं ॥
प्रातरादित्यवारेचसर्वज्वरविनाशकृत् ॥

अर्थ—रविवारको निर्गुंडी और सहदेई की जडको प्रातःकाल कमरमें बांधे तो सब ज्वरोंको दूर करे ॥

कण्हेरमूलिकाबंध

कर्णेवद्धारवौश्वततुरगरिपुमूलिका ॥
सर्वज्वरहराश्वेतमंदारस्यचमूलिका ॥

अर्थ—रविवारमें सपेद कनेरकी अथवा सपेद मंदारकी जडको कानमें बांधे तो सर्वज्वरका नाश करे ॥

संततज्वरनिदान

सप्ताहंवादशाहंवाद्वादशाहमथापिवा ॥
संतत्यायोविसर्गीस्यात्संततःसनिगद्यते ॥

अर्थ—७-१०-अथवा १२-दिन पर्यंत एकसा ज्वर रहें उसको संततज्वर कहते है । सात, दश और बारह ये जो विकल्प कहा वो अनुक्रम करके वात, पित्त, और कफ, इनके उल्वण करके कहा है । यह संततज्वर त्रिदोषज है, वातादि-दोषसे ३, सप्तधातु ७, मूत्र ११, पुरीष (मल) १२ ये बारह वस्तु दुष्ट होने सैं-इनके कोप करके मलका आकर्षण होकर संतत ज्वर होता है यह चरकका मत है

पटोलादिकाढा

पटोलेंद्रयवादारुगुडूचीनिंबपल्लवाः ॥

हंतिक्काथोनिपीतोयंसंततंविषमज्वरं॥

अर्थ—पटोलपत्र, इन्द्रजो, देवदारु, गिलोय, नीमके पत्ते इन सबका क्वाथ पीनेसैं संतत नाम विषमज्वर दूर होय ॥

दुसराप्रकार

पटोलेंद्रयवादारुत्रिफलामुस्तगोस्तनैः ॥ मधुकामृत
वासानांक्काथंक्षौद्रयुतंपिबेत् ॥ संततेसततेचैवद्विती
यकतृतीयके ॥ ऐकाहिकेवाविषमेदाहपूर्वेंनवज्वरे ॥

अर्थ—पटोलपत्र, इन्द्रजो, देवदारु, त्रिफला, नागरमोथा, दाख, मुलहटी, गिलोय, और अडूसा, इनका काढा सहतके साथ पिवे तो संतत, सतत, द्वितियक, तृतीयक, ऐकाहिक, तथा दाह पूर्बक नवीन ज्वरको दूर करे ॥

तिसराप्रकार

पटोलाब्दवृषातिक्तासारिवाभिःशृतंजलं ॥
संतताख्येज्वरेदेयंवातादीनांनिवृत्तये ॥

अर्थ—पटोलपत्र, नागरमोथा, अडूसा, कुटकी, सारिवा, इनको, जलमें रातको भिगो देवे प्रातःकाल छानके पीवे तो संततादि ज्वर और वातादि दूर होवे

चौथाप्रकार

पटोलेंद्रयवानंतापथ्यरिष्टामृताजलं ॥
क्वथितंतज्जलंपीतंज्वरंसंततकंजयेत् ॥

अर्थ—पटोलपत्र, इन्द्रजो, धमासों, हरड, नीमकी छाल, गिलोय, नेत्र वाला, इनके काढेको पीवे तो संतत ज्वर दूर होवे ॥

आमलक्यादिकाढा

आमलकीघननागरसिंहिछिन्नलताविहितश्चकषायः ॥
माक्षिकमागधिकापरिमिश्रोहंत्यनिशंसंततज्वरमाशु ॥

अर्थ—आमला, नागरमोथा, कटेरी, गिलोय इनके काढेमें सहत और पीपलका चूर्ण डालके पीवे तो अत्यंत निद्रा और संततज्वर दूर होवे ॥

ज्वरभेद

एकद्वित्रिचतुर्थः स्याद्विषमोन्यस्तुजीर्णकः ॥

एतेपंचज्वराःपीडयंत्येवबहुवासरं ॥

अर्थ—एकाहिक, इकतरा, तिजारी, और चौथैया, ये चार विषमज्वर और दुसरा जीर्णज्वर अैसे ये पांचज्वर बहुतदिनतकपीडा देते है ॥

(सततवाअन्येद्युष्कादिकोंकेलक्षणनिदान)

अहोरात्रेसततकौद्वौकालावनुवर्तते ॥ अन्येद्युष्कस्त्वहोरा-
त्रंएककालंप्रवर्तते ॥ तृतीयकस्तृतीयेन्हिचतुर्थेन्हिचतुर्थकः ॥
केचिद्भूताभिषंगोत्थंवदंतिविषमज्वरं ॥

अर्थ—सततज्वर दिनरात्रिमें दोवार आताहै, अन्येद्युष्कज्वर दिनरात्रिमें एकवार आता है,तृतीयक (तिजारी) ज्वरआए दिनके फिर तीसरे दिन आता है, और चातुर्थिक ज्वर जिसदिन आता है उसके चौथे दिन आता है,और कोई आचार्य इस विषमज्वरको भूताभिषंगोत्थ अर्थात् भूतबाधा जनितकहते है।

त्रायंत्यादिकाढा

त्रायंतीकटुकानंतासारिवाभिःशृतंजलं ॥
सतताख्येज्वरेदेयंवातादीनांनिवृत्तये ॥

अर्थ—त्रायमाण, कुटकी, जवासो, सारिवा, इनके काढेको शीतल करके पीनेसै संतत ज्वर दूर होय तथा वातादिरोग दूर हो ॥

पटोलादिकाढा

पटोलपथ्यापिचुमंदशक्रबीजामृतायासकृतःकषायः ॥
निपीतमात्रःशमयत्युदीर्णंकासादियुक्तंसततंज्वरंहि ॥

अर्थ—पटोलपत्र,हरड, नींबकीछाल, इन्द्रजो, गिलोय, जवासो इनका काढापीतेही खाँसीयुक्त सतत ज्वर दूर होय ॥

द्राक्षादिकाढा

द्राक्षापटोलनिंबाब्दाशक्राव्हात्रिफलाशृतं ॥
जलंजंतुःपिबेच्छीघ्रंअन्येद्युज्वरशांतये ॥

अर्थ—मुनक्कादाख,पटोलपत्र,नींमकीछाल नागरमोथा, इन्द्रजो,त्रिफला इनका काढा अन्येद्युष्क (इकतरा)ज्वरकोशांतिकरे ॥

पटोलादिकाढा

पटोलत्रिफलानिंबद्राक्षाशम्याकवासकैः ॥

काथःसितामधुयुतोजयेदेकाहिकंज्वरं ॥

अर्थ—पटोलपत्र,त्रिफला, नीमकीछाल, दाख,अमलतासको गूदो और अडुसा इन आठ औषधोंकाकाढा सहत मिश्रीमिलायके पीवे तो नित्य आने वालेज्वरको दूर करे

ब्रम्हदंडीनस्य

एकाहिकंज्वरंहंतिनस्याद्धागिरिकर्णिका ॥
ब्रम्हदंडीतिविख्याताअधःपुष्पीतुनामतः ॥

अर्थ—गिरिकर्णिकाके अथवा ब्रह्मदंडी जिसको अधःपुष्पी कहते है उसके रसकी नस्य देनेसैं एकाहिक ज्वर नाश होय ॥

सर्पाक्षिमूलिकाबंध

सोमग्रहणवेलायांसर्पाक्षीमभिमंत्रयेत ॥ शिफांहिकृष्णसूत्रेण
वामकर्णेनिबंधयेत ॥ एकाहिकंज्वरंहंतिद्व्याहिकंदक्षकर्णके ॥

अर्थ—चंद्रग्रहणके समय सरफोकाको निमंत्रकर, विधिसै उखाड उसकी जडको काले सूतसैं वाए कानमें बाँधे तो एकाहिक ज्वर जाय, यदि द्व्याहिक ज्वर होय तो दहने कानमें बाँधे तो द्वाहिकभी दूर हो ॥

एकाहिकऊपरअपामार्गमूलिकाबंधन

कन्याकर्तितसूत्रेणबद्धापामार्गमूलिका ॥
एकाहिकंज्वरंहंतिशिखायांमतिवेगतः ॥

अर्थ—कन्याके हाथसैं कते सूतमें ओंगेकी जड लपेट चुटियामें बाँधनेसैं एकाहिक ज्वर दूर हो ॥

काकमाचीमूलिकाबंधन

काकमाच्याश्चमूलंतुकर्णेबद्धंनिशिज्वरं ॥

अर्थ—जिसको रात्रिमें ज्वर आता होय उसके मकोयकी जडको कन्याके काते हुए सूतसैं बाँधे तो आराम होय ॥

सर्पाक्षीतिलक

श्मशानजातसर्पाक्ष्यारवौमूलंसमुद्धरेत ॥

घृतैर्घृत्वाललाटेतुतिलकःस्याद्धितत्प्रणुत् ॥

अर्थ—श्मशानमें उत्पन्न हुई सरफोकेकी जडको रविवारके दिन उखाड कर उसे घीमें सानके ललाटमें तिलक करनेसैं एकाहिक ज्वर दूर होय ॥

दान

अंगवंगकलिंगेषुसौराष्ट्रमगधेषुच ॥
वाराणस्यांचयद्दत्तंतत्तदैकाहिकेस्मरेत् ॥

अर्थ—अंग, बंग, कालिंग, सौराष्ट्र, मगध, और काशीक्षेत्रमें एकाहिक ज्व रका स्मरण कर दान देवे तो एकाहिक ज्वर दूर हो ॥

तर्पण

योसौसरस्वतीतीरअपुत्रस्तापसोमृतः ॥
तस्मैतिलोदकंदद्यान्मुंचेदैकाहिकोज्वरः ॥

अर्थ—जो सरस्वतीके किनार अपुत्र तपस्वी मरा, उसके अर्थ तिलांजलीदेनेसैं एकाहिक ज्वर दूर हो ॥

(उलूकपक्षबंधअन्येद्युष्कपर)

उलूकस्योत्तरंपक्षंरक्तसुत्रेणवेष्टयेत् ॥
बद्धंतुदक्षिणेकर्णेद्व्याहिकंवाज्वरंजयेत् ॥

अर्थ—उल्लूके वामपंखको लाल सूतमें लपेट दहने कानमें बांधे तो अन्येद्युष्क तथा द्व्याहिक ज्वरको दूर करे ॥

वासादिकाढा

वासापटोलत्रिफलाद्राक्षाशम्याकनिंबजः ॥
समधुःससितः क्काथोहन्याद्वैद्व्याहिकज्वरं ॥

अर्थ—अडूसा, पटोलपत्र, त्रिफला, मुनक्कादाख, अमलतासको गूदो, और नीमकी छाल इनके काढेमें सहत और मिश्री मिलायके पीनेसैं द्व्याहिक ज्वर दूर होय ॥

पटोलादिकाढा

पटोलारिष्टमृद्वीकाशम्याकत्रिफलावृषं

क्वाथएकाहिकंहंतिशर्करामधुसंयुतः ॥

अर्थ—पटोलपत्र, नीमकीछाल, दाख, अमलतासका गूदा, त्रिफला, और अडूसा इनके काढेमें मिश्री सहत मिलायके पीवे तो एकाहिक ज्वर दूरहो ॥

अंजन

ऊर्णनाभिस्थजालेनवर्तिंकृत्वाप्रयत्नतः ॥ ज्वालयेत्तिलतैलेन कज्जलंग्राहयेच्छनैः ॥ अंजयेन्नेत्रयुगलंद्व्याहिकंतुज्वरंजयेत्

अर्थ—मकडीके जालकी वत्ती वनाय तिलके तेलमें गेर काजल पाडे, उसका जलको दोनोनेत्रोंमें लगावे तो द्व्याहिक ज्वर (इकतरा)दूर हो ॥

एकाहिकादिकोपेहिंगुलयोग

म्लेच्छंसमंविषंपिष्ट्वाप्रदद्याद्गद्रिकासमं ॥ ऐकाहिकंद्व्याहिकं वातृतीयंचचतुर्थकं ॥ निहन्यान्नात्रसंदेहोयथासूर्योदयेतमः ॥

अर्थ—हींगलू और सिंगिया विष ये समान ले एकत्र खरल कर १ रत्ती देय तो एकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक, और चातुर्थिक ज्वरोंको नाश करे ॥

तृतीयकज्वरनिदान

कफपित्तात्त्रिकग्राहीपृष्ठाद्वातकफात्मकः ॥
वातपित्ताच्छिरोग्राहित्रिविधः स्यात्तृतीयकः ॥

अर्थ—कफपित्तात्मक जो तृतीयक ज्वर वो कमर तथा पीठके बांसकी संधिमें उत्पन्न होकर फिर शरीरमें प्रवेशकरे है और जो वातकफात्म तृतीयज्वर है वोपींठमें उत्पन्न होता है, उसीप्रकार वातपित्तजन्य जो तृतीयज्वर है वो मस्तक मेउत्पन्न हो फिर सब देहमें फैलेहै इस प्रकार तीनप्रकारका तृतीयकज्वर है ॥

महोषधादिकाढा

मुस्तामहोषधामृताचंदनोशीरधान्यकैः ॥
क्वाथस्तृतीयकंहंतिशर्करामधुयोजितः ॥

अर्थ—सोंठ, गिलोय, नागरमोथा, लालचंदन, खस, और धनिया इनके काढेमें मिश्री और सहत मिलायके देवे तो तृतीयक (तिजारी) दूर होय ॥

शिशिरादिकाढा

सशिशिरः सघनः समहौषधः सनलदः सकणः सपयोधरः॥

समधुशर्करएषकषायकोजयतिबालमृगाक्षितृतीयकं ॥

अर्थ—हे बालमृगाक्षि! लालचंदन, धनिया, सोंठ, नेत्रवाला, पीपर, और नागरमोथा, इन औषधोंका काढा करके उसमें सहत और मिश्री मिलायके देवे तो तृतीयक ज्वर दूर हो ॥

उशीरादिकाढा

उशीरंचंदनंमुस्तंगुडुचीधान्यनागरं॥ अंभसाक्कथितंपेयंश
र्करामधुयोजितं ॥ ज्वरेतृतीयकेपुंसातृष्णादाहसमन्विते॥

अर्थ—खस, लालचंदन, नागरमोथा, गिलोय, धनिया, और सोंठ, इनका काढा करके उसमें सहत और मिश्री मिलायके रोगीको देय तो तृतीयकज्वर तृषा, तथा दाहयुक्त ज्वर इनका नाश होय ॥

शीतभंजीरस

शीतभंजीरसोप्यत्रसानुपानोद्विगुंजकः ॥
मुसलीमारनालेनपीत्वाहंतितृतीयकं ॥

अर्थ—इस तिजारीके ऊपर (शीतभंजीर) रस दो रत्ती अनुपानके साथ देवे अथवा मूसलीको पीस काँजीके साथ देय तो तृतीयकज्वर नाश होय ॥

अपामार्गमूलिकाबंध

आपामार्गजटाकट्यांलोहितैःसप्ततंतुभिः ॥
बद्धावारेरवेस्तूर्णंज्वरंहंतितृतीयकं ॥

अर्थ—ओंगेकीजड, सात लाल डोरेमें लपेट रविवारके दिन कमरमें बाँधे तो तृतीयकज्वर शीघ्र शांति होय ॥

वाराहीमूलिकाबंध

वाराहीशिखिकामूलंकर्णबद्धंतृतीयकं ॥ ज्वरंहंत्यथबाहुस्थो
पक्षस्तूलूकसंभवः ॥ वेष्टयेत्पंचरंगेणसूत्रेणाबंधयेद्गले ॥

अर्थ—विलारीकीकंद गाँठ अथवा जडको अथवा उल्लूकी पाँखको पचरंगी डोरेमें कसके गलेमें अथवा भुजामें बाँधे तो तिजारी जाती रहे ॥

चातुर्थिकज्वरनिदान

चातुर्थिकोदर्शयतिप्रभावंद्विविधंज्वरः॥ जंघाभ्यांश्लेष्मिकः

पूर्वंशिरसोनिलसंभवः ॥ विषमज्वरएवान्यश्चातुर्थिकाविपर्ययः ॥ समध्येज्वरयत्यह्निआदावंतेचमुंचति ॥

अर्थ—चातुर्थिक (चौथैया) ज्वर अपनी सामर्थ्य दो प्रकारकी दिखाता है, जो कफजन्य चातुर्थिक है वो प्रथम पैरोंकी पीड़रीन्सैं देहमें फैले है, और जो वातजन्य है वो मस्तकमें प्रथम उत्पन्न हो फिर सब देहमें संचार करे है, और एक चातुर्थिकका भेद यह है कि आदिअंतके दोदिन छोडके बीचके दोदिनोमें रोगीको चढे ॥

विषमकेसामान्यउपद्रव

विषमज्वरस्यतेस्युःपंचसाध्याउपद्रवाः॥ अधिशेतेयथाभूमिं बीजंकालेप्ररोहति॥अधिशेतेतथाधातौदोषःकालेप्रकुप्यति ॥

अर्थ—विषमज्वरके पूर्वकहे हुए पांच उपद्रव औषधादिकसैं साध्य जानने जैसै पृथ्वीमें पडे हुए बीज अपने २ समय पर उत्पन्न होते है। उसीप्रकार धातुमें वातादिक दोष सूक्ष्मरूपसैं रहते है, जब काल आता है तब कुपित होते है॥

वेगेतुसमतिक्रांतेगतोयमितिलक्ष्यते ॥
धात्वंतरेषुलीनत्वात्सौक्ष्मान्नैवोपलक्ष्यते ॥

अर्थ—ज्वरका वेग शांति होनेपर ज्वर गयासाप्रतीत होता है, परंतु वह ज्वर अन्य धातूके प्रति पहुच कर सूक्ष्म रूपसैं रहता है अत एव दीखता नही है ॥

सामान्यचिकित्सा

कर्मसाधारणंत्यक्त्वातृतीयकचतुर्थकौ ॥
भिषजाप्रतिकर्तव्यौविशेषोक्तचिकित्सितैः ॥

अर्थ—तृतीय और चतुर्थक ज्वरोंकी साधारण क्रिया त्याग कर जो विशेष क्रिया कही है उस क्रियाको करनी चाहि ये ॥

दुसराप्रकार

ज्वरस्यवेगकालंचचिंतयन्ज्वर्यतेतुयः ॥
तस्येष्टैरद्भुतैर्वापिविषयैर्नाशयेत्स्मृतिं ॥

अर्थ—जिस रोगीको ज्वरके भयसै (अर्थात् आज मेरी ज्वर आनेकी पाली है सो मुझको ज्वर आवेगा इस कारण) ज्वर आता है उसको इष्टसाधन अर्थात्

जिस वस्तुकी रोगी इच्छा करे वो देना, अथवा कोई अद्भुत साधन करके उसकी उस चिंतवनको दूर करे तो ज्वर अवश्य नाश होय ॥

तिसराप्रकार

सततंविषमंवापिक्षीणस्यसुचिरोत्थितं ॥
ज्वरंसंभोजनैःपथ्यैर्ज्वरघ्नैःसमुपाचरेत् ॥

अर्थ—संतत, अथवा विषमज्वर क्षीणपुरुषको बहुत दिन आता है उसको उत्तम भोजन, पथ्य अेसे ज्वर नाशक यत्नोंकरके उपाय करे ॥

वासादिकाढा

वासाधात्रीस्थिरादारुधान्यानागरसाधितं ॥
सितामधुयुतंकुर्याच्चातुर्थिकनिवारणं ॥

अर्थ—अडूसा, आमले, सालपर्णी, देवदारु, धनिया, और सोंठ, इनका काढा सहत और मिश्री मिलायके पीवे तो चातुर्थिक ज्वर दूर होय ॥

पथ्यादिकाढा

पथ्यास्थिरानागरदेवदारुधात्रीवृषैरुत्कथितःकषायः ॥
सितोपलामाक्षिकसंप्रयुक्तश्चातुर्थिकंहंत्यचिरेणपीतः ॥

अर्थ—हरड, सालपर्णी, सोंठ, देवदार, आमले, और अडूसा इनके काढेको मिश्री और सहत मिलायके पिवे तो शीघ्र चातुर्थिक ज्वरको दूर करे ॥

देवदार्व्यादिकाढा

देवदारूशिवावासाशालिपर्णीमहौषधैः ॥धात्रीयुतंश्रितंशीतंदद्यान्मधुसितायुतं ॥चातुर्थिकज्वरेश्वासेकासेमंदानलेतथा ॥

अर्थ—देवदारु, छोटीहरड, अडूसा, सालपर्णी, सोंठ, और आवले, इन छः औषधका काढा शीतल होनेपर उसमें सहत और खांड मिलायके पीवेतो चातुर्थिक ज्वर, श्वास, खाँसी, और मंदाग्निको नाश करे ॥

स्थिरादिकाढा

स्थिरासामलकादारुश्रीवेष्टकमहौषधैः ॥श्रितंशीतंजलंदद्यात्सितामधुविमिश्रितं ॥ चातुर्थिकेज्वरेतीव्रमंदेचैवाथपावके ॥

अर्थ—सालपर्णी, आमले, देवदारु, सरलवृक्ष, और सोंठ, इनका काढा क-

रक शीतल होनेपर सहत मिश्री मिलायके पीवे तो तीव्र चातुर्थिकज्वर और मंदाग्निको दूर करे ॥

दुस्पर्शादिकाढा

दुस्पर्शोशीरसिंहीघनमधुकशिवावाजिविश्वाढरूषाश्छिन्नारेणूकषायःसमधुमगधकोवापितश्चाष्टमांशं॥दाहंस्वेदंचशोषंक्रिमिमथरुधिरंशैत्यमुद्भ्रांतिचिंतंश्वासंशूलंचतृष्णांदिनानिशिविषमंहंतिचातुर्थिकाद्यम् ॥

अर्थ—कटेरीका पंचांग, खस, छोटी कटेरी, महुआ, हरड, असगंध, सोंठ, अडूसा, गिलोय, और पित्तपापडा, इन औषधोंके काढेमें सहत और पीपलका चूर्ण डालके देवे तो दाह, पसीने, प्यास, कृमिरोग, रुधिरविकार, शीत लगना, भ्रांति, श्वास, शूल, शोष, दिनका ज्वर, रात्रिज्वर, और चातुर्थिक आदि ज्वर दूर हो ॥

दार्व्यादिकाढा

दार्वीदारुकलिंगलोहितलताशम्याकपाठाशठीशौंडीविश्वकिरातवारणकणात्रायंतिकापद्मकैः॥ उग्राधान्यकनागराब्दसरलैः शिग्रुत्वगंबुशिवाव्याघ्रीपर्पटदर्भमूलकटुकानंतामृतापौष्करैः॥ धातुस्थंविषमंत्रिदोषजनितंचैकाहिकंद्व्याहिकंकाथोहंतितृतीयकंज्वरभयंचातुर्थिकंभूतजं ॥

अर्थ—दारुहलद, देवदार, इन्द्रजो, मजीठ, अमलतासको गूदो, पाढ, कचूर, पीपल, सोंठ, चिरायता, गजपीपल, त्रायमाण, पद्माख, वच, धनिया, अदरख, नागरमोथा, सहजना, दालचीनी, नेत्रवाला, हरड, कटेरी, पित्तपापडा, कुशाकीजड, कुटकी, धमासा, गिलोय, और पुहकरमूल, इन औषधोंका काढा करके देवे तो धातु गतज्वर, विषमज्वर, त्रिदोषज्वर, एकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक, और चातुर्थिक ज्वरको नाश करे ॥

मुस्तादिकाढा

मुस्तापाठाशिवाक्वाथश्चातुर्थिकज्वरापहः ॥
दुग्धेनत्रिफलापीताहंतिचातुर्थिकंज्वरं ॥

अर्थ—नागरमोथा, पाढ, और आमले इनका काढा अथवा त्रिफलेका चूर्ण दूधसैं पीवेतो चातुर्थिक ज्वर दूर होय ॥

बेलफलचूर्ण

शैलूषमंडनरजोवयसानुरूपशुभ्रांगवत्ससुरभीपयसानिपीतं॥
आदित्यवारभवपालिदिनेनरेणचातुर्थिकंसुचिरजंजयतिक्षणेन

अर्थ—बेलगिरी, और मधुमाधवी इनके चूर्णको तरुण और सपेद बछेरवाली गौके दुधसैं रविवारके दिन पीवे या जिस दिनकी पाली हो उस दिन पीवे तो बहुत दिनका भी चातुर्थिक ज्वर क्षणमात्रमें दूर होय ॥

पुनर्नवादुग्धयोग

सितवर्षाभवोमूलंपयसापीतंचपैत्तिकंहरति ॥
चातुर्थिकंसुचिरजंतांबूलेनैवभक्षणादथवा ॥

अर्थ—सपेद पुनर्नवाकी जडको दूधके साथ पीवे अथवा बीडीमें धरके खाय तो पुरानाभी चातुर्थिक ज्वर दूर होय ॥

वृषदंशपुरीषादियोग

वृषदंशपुरीषंचपयसालोड्यपाययेत् ॥
चातुर्थिकस्यागमनेनियतंनभविष्यति ॥

अर्थ—बिल्लीकी विष्टाको दूधमें मिलायके चातुर्थिक आनेके समय पीवे तो निश्चय चातुर्थक ज्वर दूर हो ॥

शिरीषकल्क

कल्कः शिरीषपुष्पस्यरजनीद्वयसंयुतः ॥
तस्यसर्पिः समायोगाज्वरंचातुर्थिकंजयेत् ॥

अर्थ—सिरसके फूल, हलदी, और दारुहलदी, इनको एकत्र पीस कर कल्क करके उसमें घृत मिलायके देवे तो चातुर्थिक (चौथैया) ज्वरको नष्ट करे॥

हिंगुनस्य

चातुर्थिकोगच्छतिरामठस्यघृतेनजीर्णेनयुतस्यनस्यात् ॥
लीलावतीनांनवयौवनानांमुखावलोकादिवसाधुभावः ॥

अर्थ—पुराने घृतमें हींग ओंटायकै उस घीकी नस्य देवे उससैं चातुर्थिक

ज्वर नाश होय। इसमें दृष्टांत है, जैसैं तरुण नवयौवना स्त्रीके मुख देखते ही साधुता नष्ट होती है ॥

अगस्तिपत्रनस्य

अखंडितशरत्कालकलानिधिसमानने ॥
चातुर्थिकहरंनस्यंमुनिद्रुमदलांबुना ॥

अर्थ—हेपूर्ण शरदकालीन चंद्रानने!अगस्तियाके पत्तोका रस निकालके उसकी नस्य लेनेसैं चातुर्थिक ज्वर दूर होय ॥

उलूकपक्षधूप

कृष्णांबरेदृढंबद्धोगुग्गुलूलूकपक्षकः ॥
धूपश्चातुर्थिकंहन्यात्तमः सूर्यइवोदितः ॥

अर्थ—काले कपडेमें गूगल और उल्लूकी पंख लपेटके धूनी देवे तो जैसैं सूर्योदय होतेही अंधकार नष्ट होता है उस प्रकार चातुर्थिक ज्वर नष्ट होय ॥

अपामार्गमूलिकाबंध

कन्याकर्तितसूत्रेणअमामार्गस्यमूलिका ॥
रवौबद्धाज्वरंहंतितृतीयकचतुर्थकं ॥

अर्थ—क्वारी कन्याके काते हुए सूतसैं ओंगाकी जड बाँधके रविवारके दिन ज्वरवालेके हाथमें बाँधनेसैं तिजारी और चौथैया ज्वर दूर हो ॥

सहदेवीमूलबंधः

विवस्त्रेणधृतादेवीमूलिकाकर्णबंधनात् ॥
चातुर्थिकंज्वरंहंतिद्रोणपुष्पीरसांजनात् ॥

अर्थ—नंगा होकर सहदेईकी जडको उखाड कानमें बांधे तो चातुर्थिक ज्वर दूर हो। तथा गोमाके रसका अंजन करनेसैं चातुर्थिक ज्वर दूर हो ॥

काकजंघादिबंध

काकजंधाबलाश्यामाभृंगराजापमार्गकाः ॥
एकैकंपुष्ययोगेनबध्वाचातुर्थिकंहरेत् ॥

अर्थ—काकजंघा, खरेटी, पीपल, भांगरो, और ओंगा, इनमेंसैं किसी एककी जड मूलनक्षत्रमें उखाडके हातमें बांधे तो चातुर्थिक ज्वर नष्ट होय ॥

पंचपंचकषाय

कालिंगकःपटोलस्यपत्रंचकटुरोहिणी॥पटोलंसारिवामुस्तंपाठाकटुकरोहिणी॥ निंबःपटोलंत्रिफलामृद्वीकामुस्तवासकौ॥ किराताक्तिक्तोह्यमृत्ताचंदनंविश्वभेषजं ॥ गुडूच्यामलकंमुस्तमर्धश्लोकसमापना॥ःकषायाःशमयंत्याशुपंचपंचविधंज्वरं॥

अर्थ—(१)कूडाकी छाल, पटोलपत्र, और कुटकी इनका (२)पटोलपत्र, सारिवा, नागरमोथा, पाढ, और कुटकी इनका (३)नीमकी छाल, पटोलपत्र, त्रिफला, दाख, नागरमोथा, और अडूसा, इनका अथवा (४)चिरायता, गिलोय, लालचंदन, और सोंठ, इनका अथवा (५)गिलोय, आमरे, नागरमोथा, इनमेंसैं किसीएककाढेको पीवे तो पांच प्रकारके ज्वर दूर करे ॥

धातुकोशोषणकरनेवालाअत्यंतकष्टसाध्यऐसाविषमज्वरकेहेतुहै

विदग्धेऽन्नरसेदेहेश्लेष्मपित्तेव्यवस्थिते ॥
तेनार्धंशीतलंदेहमर्धमुष्णंचजायते॥

अर्थ—शरीरमें अन्न रस दुष्ट होनेसैं तथा कफ और पित्त कुपित होनेसैं शरीरका अर्ध भाग (कमरके नीचेका भाग अथवा उपरका भाग, अथवा दहना वाया)कफसैं शीतल रहता है और आधा भाग पित्तसैं गरम रहता है ॥

कायेदुष्टंयदापित्तंश्लेष्माचांतेव्यवस्थितः॥
तेनोष्णत्वंशरीरस्यशीतत्वंहस्तपादयोः ॥

अर्थ—जिस समय कोठेके भीतर पित्त दुष्ट होता है और कफ हाथपैर आदि शाखा गत होता है उस समय देह ज्वरसैं गरम रहती है और हाथ पैर शीतल होते है।

कायेश्लेष्मायदादुष्टःपित्तंचांतेव्यवस्थितं॥
शीतत्वंतेनगात्राणामुष्णत्वंहस्तपादयोः ॥

अर्थ—जिस समय कोठेके भीतर कफ दुष्ट होय और पित्त हाथ पैरमेंप्राप्त हुआ हो उस समय ज्वर आनेसैं देह शीतल रहती है और हाथ पैर गरम होते है।

ऋतेनिलान्नविषमोज्वरःसमुपजायते ॥
कफपित्तेहिनष्टेचेच्चेष्टयत्यनिलःसदा ॥

अर्थ—वादीके विना विषमज्वर नही होता और कफ तथा पित्त ये नष्ट होनेपर वायु विशेष करके शरीरमें संचार करता है ॥

शीतपूर्वकवादाहपूर्वकसंततादिविषमोंकेस्वरूपकहतेहैं

त्वक्स्थौश्लेष्मानिलौशीतमादौजनयतोज्वरं ॥
तयोः प्रशांततयोः पितमंतेदाहंकरोतिच ॥

अर्थ—त्वचामें अर्थात् रसधातुमें कफ और वात ये रहकर शीतज्वरको उत्पन्न करे है जब कफ वात शांति होजाते है तत्पश्चात् पित्त दाहको करता है ॥

विषमभेदवातबलासकज्वर

नित्यंमंदज्वरोरूक्षः शुनः कृच्छ्रेणसिध्यति ॥
स्तब्धांगः श्लेष्मभूयिष्टोनरोवातबलासकी ॥

अर्थ—जिस रोगीके अल्पज्वर, रूक्षता, सूजन, देहका भारीपना, और अति कफाधिक्य ये लक्षण सर्वकाल हो उसको वातबलासक ज्वर कहते है यह कृच्छ्रसाध्य है ॥

प्रलेपकलक्षण

प्रलिंपन्निवगात्राणिश्लेष्मणागौरवेणच॥
मंदज्वरोविलेपीचसशीतः स्यात्प्रलेपकः ॥

अर्थ–जिस ज्वरमें देह पसीनोंसे सर्वकाल पुता हुआसारहे, तथा भारीहो, इसी योगसें ज्वर मंद होय, शीत लगे यह ज्वर कफपित्तजन्य है यह राजयक्ष्मा रोगमें होता है इसे प्रलेपक ज्वर कहते है ॥

चिकित्सा

प्रालेपकेप्रयुंजीतश्लेष्मज्वरहरींक्रियां ॥

अर्थ—प्रलेपक ज्वरपर कफज्वर नाशक यत्न करना चाहिये तो इसकी शांति होय

शीतदाहपूर्वविषम

करोत्यादौतथापित्तंत्वक्स्थंदाहमतीवच ॥
तस्मिन्प्रशांतेत्वितरौकुरुतः शीतमंततः ॥

अर्थ—त्वचामें कहिये रक्तधातुमें पित्त स्थित होकर अत्यंत दाह पूर्वक ज्वर उत्पन्न करे जब पित्त शांति हो जावे तब कफ और वादी शीत उत्पन्न करते है ॥

दुसराप्रकार

द्वावेतौदाहशीतादिज्वरौसंसर्गजौस्मृतौ ॥
दाहपूर्वस्तयोः कष्टः कृच्छ्रसाध्यस्तथेतरः ॥

अर्थ--ये दोनो शीत पूर्वक और दाह पूर्वक ज्वर त्रिदोष संसर्गजमुनियोंने कहे है तिनमें दाह पूर्वक ज्वर अत्यंत दुःसाध्य है और शीत पूर्वक ज्वर कृच्छ्र साध्य जानना ॥

सामान्यचिकित्सा

शीताभिभूतेपुरुषेकुर्याच्छीतहरांक्रियां ॥
दाहाभिभूतेतुविधिंविदध्याद्दाहनाशनं ॥

अर्थ—शीतज्वर करके रोगीके व्याकुल होनेपर शीत नाशक यत्न करे तथा दाह होनेपर दाह नाशक यत्न बैद्यको करना चाहिये ॥

शीतनाशकक्रिया

आच्छादनैर्बहुतरैर्गुरुभिःकंबलादिभिः ॥
तूलवत्यामहाशीतंशीतादिज्वरिणोहरेत् ॥

अर्थ—शरदी लगने वाले ज्वर रोगीको बहुत उढाना बिछाना, तथा भारी कंवल, रजाई तोषक इत्यादि करके शीतका निवारण करे ॥

क्षुद्रादिकाढाशीतपूर्वज्वरपर

क्षुद्रानागरमुस्तपर्पटधनाभूनिंबनिंबामृताभार्गीचंदनपुष्करा
व्हकुलकैस्तिक्ताटरूषान्वितैः ॥ पञ्चास्थैंद्रयवान्वितैश्वरचि
तःक्काथोनिपीतःप्रगेशीताद्यंज्वरमुत्थितंतुविषमंत्रिद्व्येकघस्रोद्भवं

अर्थ—कटेरी, सोंठ, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, धनिया, चिरायता, नीमकी छाल, गिलोय, भारंगी, लालचंदन, पुहकरमूल, पटोलपत्र, कुटकी, अडूसा, मजीठ, और इन्द्रजो, इनका काढा प्रातःकाल देवे तो शीतज्वर, विषमज्वर, एकाहिक, द्व्याहिक, और त्र्याहिक, इत्यादि ज्वरोंको नाश करे ॥

शक्राव्हादिकाढा

शक्राव्हदद्रुघ्नवृषामृतानांनिर्गुंडिकाभृंगमहौषधानां ॥
क्षुद्रायवानीसहितःकषायःशीतज्वरारण्यहिरण्यरेताः

अर्थ—कूडाकी छाल, पमारकी जड़, अडूसा, गिलोय, निर्गुंडी, भाँगरो, सौंठ, कटेरी, और अजमायन, इनका काढा शीतज्वररूप वनके नाश करनेको दावानल रूप है ॥

घनादिकाढा

घननिंबमहौषधामृताकटुवार्ताकिपटोलवत्सजैः ॥
विहितंमधुनायुतंपिबेत्रकिलशीतज्वरशांतयेशृतं ॥

अर्थ—नागरमोथा, नीमकी छाल, सोंठ, गिलोय, कटेरी, पटोलपत्र, और इन्द्रजो इनका काढा सहत डालके देवे तो शीतज्वर नाश होय ॥

भद्रादिकाढा

भद्राधान्याकशुंठीभिर्गुडूचिमुस्तपद्मकैः॥रक्तचंदनभूनिंबपटोलवृषपौष्करैः॥ कटुकेंद्रयवारिष्टभार्गीपर्पटकैःसमं ॥ क्वाथः प्रातर्निषेवेतसर्वशीतज्वरापहं ॥

अर्थ—थूहर, धनिया, सोंठ, गिलोय, नागरमोथा, पद्माख, लालचंदन, चिरायता, पटोलपत्र, अडूसा, पुहकरमूल, कुटकी, इन्द्रजो, नीमकीछाल, भारंगी और पित्तपापडा ये समानभाग लेकर काढाकर प्रातःकाल देनेसैं सर्व शीतज्वर दूर हो

दाहपूर्वविषमपेविभीतादिकाढा

विभितोव्याधिघातश्चकटुकीत्रिवृताभया ॥
क्वाथोह्ययंतृषादाहविषमज्वरनाशकृत् ॥

अर्थ—बहेडा, अमलतासका गूदा, कुटकी, निसोथ, और हरड, इनका काढा तृषा, दाह, और विषमज्वर को नाश करे ॥

महाबलादिकाढा

महाबलामूलमहौषधाभ्यांक्वाथोनिहन्याद्विषमज्वरंहि ॥ शीतंसकंपंपरिदाहयुक्तंविनाशयेद्द्वित्रिदिनप्रयोगात्॥

अर्थ—खरेटीकी जड, और सोंठ, इनका काढा शीत, कंप, और दाहयुक्त ज्वरको दो तीन दिनमें नाश करे ॥

व्याघ्र्यादिकाढा

व्याघ्रीविश्ववितुन्नपुष्कररजोभूनिंबवासामृताभार्गीनिंबपटोल

पद्मकघनैस्तिक्ताकलिंगैःकृतः ॥ क्वाथोहंतिसचंदनःकफमरु त्पित्तंसदाहंतृषांकासंपंचविधंज्वरंक्रमिरुजंपांडुंवमिंकामलां॥

अर्थ—कटेरी, सोंठ, गुडतजी, पुहकरमूल, पित्तपापडा, चिरायता, अडूसा, गिलोय, भारंगी, नीमकी छाल, पटोलपत्र, नागरमोथा, कुटकी, इन्द्रजो और लालचंदन, इनका काढा कफवात, पित्त, दाह, प्यास, पांचप्रकारकी खांसी, ज्वर, कृमि, पांडुरोग, वमन, और कामला इनको नाश करे ॥

देवतापूजन

सोमंसानुचरंदेवंसमातृगणमीश्वरं ॥
पूजयन्प्रयतःशीघ्रंमुच्यतेविषमज्वरात् ॥

अर्थ—पार्वती, तथा पार्वतीके गण मातृगण, और प्रमाथादि गण इनके साथ शिवकीभक्ति करके पूजा करनेसैं रोगी विषमज्वरसैं शीघ्र मुक्त हो ॥

दुसराप्रकार

विष्णुंसहस्रमूर्धानंचरचरपतिंविभुं ॥
स्तुवन्नामसहस्रेणज्वरान्सर्वान्व्यपोहति ॥

अर्थ—जो अनंतशिर, तथा चराचरका स्वामी, ऐंसे विष्णुभगवानके सहस्र नाम पाठ करनेसैं सर्वज्वर दूर हो ॥

ज्वरपूजा

तीर्थाध्ययनदेवाग्निगुरुवृद्धोपसर्पणैः ॥
श्रद्धयापूजनैश्चापिसहसाशाम्यतिज्वरः ॥

अर्थ—तीर्थसेवन, वेदपाठ, देव, अग्नि, गुरु, वृद्ध इनकी सेवा भक्ती और पूजनकरनेसैं विषमज्वर दूर होय ॥

पद्मकादितैल

पद्मकोत्पलकल्हारमृणालबिसपौष्करैः ॥ कुमुदोशीरमंजिष्ठापद्मगैरिककट्फलैः॥ सारिवाद्वयलोध्राब्दक्षीरीखर्जूरमुस्तकैः ॥ धात्रीशतावरीयुक्तैःक्वाथकल्केप्रयोजितैः ॥ द्राक्षारसपयःशुक्लामस्तुभिःसहकांजिकैः॥पक्वंतैलमिदंपाच्यंदाहज्वरहरंपरं

अर्थ—कूठ, कमलका कंद, लालकमलका कंद, खस, पुहकरमूल, कमोदनी-

नेत्रवाला, मजीठ, पद्माख, गेरू, कायफल, दोनो सारिवा, लोध, मोथा, मोखा-वृक्षकी छाल, खजूर, नागरमोथा, आमले, और शतावर, इनका काढा कर इ, समें इन्हीं औषधोंका कल्क मिलाय और लाखका सीरा, दूध, विदारीकंदका रस, दहीका तोड, और काँजी ये प्रत्येक तेलके समान डालके तैल सिद्ध करे इसको देहमें मालिस करनेसैं दाह ज्वरका नाश करे ॥

माहेश्वरधूप

जटाधारीतुगोशृंगंबिडालविष्टोरगस्यनिर्मोकः ॥ मदनफलभूत केशीवंशत्वगुद्रनिर्माल्यं॥घृतयवमयूरचंद्रच्छगलकलोमानि सर्षपाःसवचाः ॥ हिंगुगवास्थिमरिचासमभागाश्छागमूत्रसं पिष्टाः ॥ धूपनविधिनाशमयंत्येतेसर्वान्ज्वरान्नियतं ॥ ग्र हडाकिनीपिशाचप्रेतविकारानयंधूपः ॥

अर्थ—ईश्वरी, गौका सींग, बिलावकी विष्टा, साँपकी काँचली, मैनफल, भूतकेशी, वांसकी छाल, शिवनिर्माल्य, घी, जौ, मोरकी चंद्रिका, बकरीके वा-ल, सपेद सरसों, वच, हींग, गौका हाड, और कालीमिरच, सब समान भाग लेकर बकरीके मूत्रसैं पीसैं इसकी धूनी देनेसैं यह सर्व ज्वरोंको, ग्रहपीडाको, डाकिनी, पिशाच, और प्रेतवाधा, इन सबको दूर करे ॥

गोजिव्हादिचूर्ण

गोजिव्हाचजयामूलंपिष्टातंडुलवारिणा ॥
पीतंशीतज्वरंहंतिपाठाद्भिर्मरिचानिच ॥

अर्थ—गोभी, और जयाकी जड़, इनको चांवलके पानीसैं पीस कर पीवे अथवा पाढके काढेमें कालीमिरच डालके पीवे तो शीतज्वर नष्ट होय ॥

जीरकादिचूर्ण

जीरकंलशुनंव्योषंपाठापिष्टोष्णवारिणा ॥
शीतज्वरस्यागमनेपिबेद्गुडयुतेनच ॥

अर्थ—जीरा, लहसन, त्रिकुटा, पाढ, और गुड इनको गरम जलके साथ पीवे तो शीतज्वर दूर हो प्रथम इन औषधोंको पीसके कल्क कर लेवे फिर गुड मिलावे

त्रपुसभक्षण

त्रपुसंभक्षयित्वाग्रेतक्रमम्लंपिबेदनु॥ ततोद्गताशंसेवेतप्रावृतो

वातपेस्फुटं ॥ ततःप्रस्विद्यसर्वांगंयातिशीतज्वरःक्षयं ॥

अर्थ—खीरा खायकर ऊपरसै खट्टी छाछ पीवे फिर अग्निसैं तापे अथवा धूपमें ओंढ कर बैठे तो सर्व देहमें पसीने आनकर शीतज्वर दूर होय॥

कायस्थादिधूपलेपनवतैल

कायस्थानाकुलीतिक्तावयस्थापुरचोरकैः॥सहदेवीवचाकुष्ठैः शीतघ्नैर्धूपलेपनैः ॥ एतैरेवौषधैःपिष्टैर्लवणक्षारसंयुतैः ॥ साम्लैर्विपाचितंतैलमभ्यंगाच्छीतनाशनं ॥

अर्थ—तुलसी, रास्ना, कुटकी, दारुहलदी, गूगल, गठोना, सहदेवी, वच, और कूठ, इनकी धूनी अथवा लेप करे अथवा इस औषधोंका कल्क और सैंधानिमक, जवाखार, और नींबकारसडालके तेल सिद्ध करे इसकी मालिस करनेसैं शीतज्वर दूर हो ॥

मृतकर्पटककाधूप

मृतकर्पटधूपेनसद्यः शीतज्वरंजयेत् ॥

अर्थ—मुरदेके कपडेकी धुनी देनेसैं शीतज्वर तत्काल दूर होय ॥

जयामूलीबंध

जयामूलंशीरोबद्धाहंतिशीतज्वरंध्रुवं ॥ किंवागुंडफलामूलं कर्णेबद्धंनिशिज्वरं ॥ शीतज्वरंहरेत्तूर्णमथवाम्रस्यमूलकं॥शिखायांचकरेबद्धंहंतिचोष्णज्वरंद्रुतं ॥

अर्थ—अरनीकी जडको मस्तकमें बाँधनेसैं निश्चय शीतज्वर दूरहो, अथवा वंदालकी जडको कांनमें बाँधे तो रात्रिमें आनेवाला ज्वर नाश होय तथा आमकी जडको चोटीमें अथवा हाथमें बाँधे तो उष्णज्वरका तत्काल नाश होय ॥

बांदाबंधनं

ऋक्षेपुनर्वसौग्राह्यंमंदारस्यतुवंदकं ॥
तद्दक्षिणकरेबद्धंशीतज्वरविनाशनं ॥

अर्थ—पुनर्वसु नक्षत्रमें मंदारका वंदा लायके दहने हाथमें बाँधे तो शीतज्वर अवश्य नष्ट होय ॥

कांतालिंगन

चेतोमुषांपीनपयोधराणांकस्तूरिकाचंदनचर्चितानां ॥

शीतज्वरेशस्तमथांगनानामालिंगनंचारुहिमावधिस्यात् ॥

अर्थ—चित्तको हर्ष देनेवाली पुष्टस्तनी, तरुण, और कस्तूरी देहमें लगीं हुई ऐसी स्त्रीयोंका आलिंगन जवतक शीत दूर न होय तबतक करे ॥

दूरीकरण

कांतांगसंगसंजातातस्यशीतेनिवारिते ॥

प्रल्हादंचास्यविज्ञायपृथक्कुर्तांकारयेत्स्त्रियं ॥

अर्थ—स्त्रीके आलिंगन करनेंसैं जव शीत चलाजाय और जब जानेकि रोगीको आनंद हुआ अब मैथुन करेगा तभी स्त्रीको दूर करदेवे अन्यथा मैथुन करनेसै विषमज्वर होजाता है ॥

रसोनकल्क

रसोनकल्कंतैलेनसर्पिषावातिलैरपि ॥

सेवितंविषमंहंतिवातश्लेष्मगदानपि ॥

अर्थ—लहसनका तथा तिलोंका कल्क घृतसैं अथवा तेलसैं सेवन करे तो विषमज्वर और वातश्लेष्म संबंधि ज्वरनाश होय ॥

रास्नादिकाढा

रास्नानागरकृष्णांकल्कमुष्णांबुनापिबेत् ॥

श्वासकासाग्निमांद्यंचज्वरंशीतंविनाशयेत् ॥

अर्थ—रास्ना, सोंठ, और पीपल, इनका कल्क करके गरम जलसैं देय तो खांसी, श्वास, मंदाग्नि, और शीतज्वर, इनका नाश करे ॥

भूतभैरवचूर्ण

तालकंशुक्तिकाचूर्णंतुल्यंतत्रोभयोरपि ॥ नवमांशंतुतुत्थंस्यान्मर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ॥ तच्चसंशुष्कमुपलैर्वन्यैर्गजपुटेपचेत् ॥ शीतंतत्पेषयेच्चूर्णंगुंजामात्रंसितायुतं॥प्रभातेभक्षयेत्तेनयातिशीतज्वरःक्षयं ॥ वांतिर्भवतिकस्यापिकस्यापिनभवत्यपि ॥ एकेनादिवसेनैवशीतज्वरहरंपरं ॥ मध्यान्हसमयेपथ्यंभक्तंशिखरिणीतथा ॥

अर्थ—हरताल, सीपका चूर्ण, दोनो बराबर ले इन दोनोका नववां भाग ली-

लाथोथा लेवे सबको घीगुवारके रसमें खरल करे जब सूख जावे तब गजपुटमें धरके फूंक देवे जब शीतल होजाय तब निकालके खरल कर डारे और १ रत्ती रस मिश्रीके साथ प्रातः काल देवे तो शीतज्वर एकदिनमें दूर होय जब दोप्रहर हो जावे तब भात और सिखरनका भोजन करावे इस औषधसें किसीको वमन होती है और किसीको नही होती ॥

पथ्यादिचूर्ण

पथ्याशक्रशताचूर्णकर्षमात्रंगुडेनतु ॥
भक्षितंनाशयत्याशुशीतकंविषमज्वरं ॥

अर्थ--हरड, और इन्द्रजो इनका तोले भर चूर्ण गुडके साथ खाय तो शीतज्वर तत्काल दूर होवे ॥

हरिद्रादिचूर्ण

हरिद्रानिंबमात्रापिपिप्पल्यामरिचानिच ॥ भद्रमुस्तविडंगानिसप्तमंविश्वभेषजं ॥ सैंधवंचित्रकंकुष्ठंविषपाठाहरीतकी ॥ एतानिसमभागानिअजामूत्रेणपेषयेत् ॥ नावनांजनपानेषुगोमूत्रासृग्रसांजनैः ॥ जयेत्प्रयुक्तंविषमंज्वरमाशुनिकृंतति ॥ सर्वजंसमधुव्योषंगवांमूत्रेणशीतलं ॥ मधुनाशीतकंदेयंरक्तपित्तंवृषस्यता ॥ क्षयंक्षीराश्वगंधाभ्यांकासश्वासार्दितान्गदान् ॥ तक्रादिग्रहणीरोगान्कृच्छ्रंतंडुलवारिणा ॥ प्रमेहंमधुनागुल्मशूलंचगुडवारिणा ॥ पीतमुष्णांभसावातंशूलस्यालेपनाद्रुजात् ॥

अर्थ--हलदी, नीमके पत्ते, पीपल, कालीमिरच, नागरमोथा वायविडंग, सोंठ, सैंधानिमक, चीता. कूठ, पाढ, और हरड, ये समान भाग लेकर बकरीके मूत्रसें पीसै इसचूर्णको गोमूत्रसै नस्य देवे, रक्तमें अंजन करावे और रसोतके साथ पान करे तो विषमज्वर जाय और सन्निपातमें सहत तथा त्रिकुटाके साथ शीतज्वरमें गोमूत्र अथवा सहतसें देवे,रक्तपित्तमें अडूसेंके साथ, क्षय, खाँसी, श्वास, इनमें दूध, तथा असगंधके चूर्णके साथ । संग्रहणीमें छाछके साथ,मूत्रकृच्छ्रमें चाँवलोंके धोवनके पानीके साथ, प्रमेहमें सहतके साथ, गोला और शूल इनमें

गुडके पानीके साथ, वादीके रोगमें गरम जलके साथ तथा शूलमें अदरखके रस के साथ, देवे तो उक्त रोगोंको दूर करे ॥

आरोग्यरागीरस

रसोगंधकणामूलंवंशजंजयपालकं ॥ व्योषञ्चबाणलवणंबिडं- चंद्रलवंक्षिपेत् ॥ तांबूलरसतोमर्द्यदिनंतांबूलपत्रयुक् ॥ द- त्तोनवज्वरंहंतितापेशीतक्रियोचिता ॥ सर्वज्वरेसन्निपातेदद्- त्तंतुद्विगुंजकं ॥ आरोग्यरागिनामायंरसःपरमदुर्लभः ॥

अर्थ--पारा, गंधक, पीपरामूल, वंसलोचन जमालगोटा, सोंठ मिरच, पीपर, पाँचोनिमक, और विड, ये सब एक २ भाग, एकत्र कर पानके रसमें एकदिन खरल कर २ रत्तीकी गोली करे एक गोली दो पानमें धरके देय तो यह (आरोग्यरागी रस) पूर्णज्वर, तथा संनिपात इनका नाश करे यह रस अत्यंत दुर्लभ है ॥

शीतांकुश

तुत्थंटंकणसूतखर्परविषंस्याद्गंधकंतालकंसर्वंखल्वतलेविमर्द्य घटिकांतंकारवेल्लीरसैः ॥ गुंजैकागुटिकासशर्करयुतासंजीरके णाथवाएकाद्वित्रिचतुर्थशीतहरणाच्छीतांकुशोनामतः ॥

अर्थ—लीलाथोथा, सुहागा, पारा, खपरिया, विष, गंधक, और हरताल, इन सबको करेलेके रससैं घडीभर खरल कर रत्तीभरकी गोली बनावे एकगोली मिश्रीके साथ अथवा जीरेके साथ देवे तो यह (शीतांकुश) रस एकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक और चातुर्थिक, ज्वरोंका नाश करे ॥

तालकादिशीतारिरस

तालकखर्परमूषकयुग्मं कांचनपल्लवजरसेनघृष्टं ॥ मर्दयमर्दयपुनरपिमर्दय शीतभयादिनिवारणगुटिका ॥

अर्थ—हरताल, खपरिया, तथा छोटी वडी दोनो मूषाकर्णी इनकोधतूरेके पत्तोंके रसमें खरलकर गुटिका बनावे इसके सेवन करनेसैं शीतज्वर दूर हो ॥

दुसराप्रकार

पिष्ट्वातालकमेकभागममलंशंबूकचूर्णंक्षिपेद्दत्वाचाथनवांशतो पिचशिखिग्रीवंपुनः पेषयेत् ॥कौमारीरसमर्दितंगजपुटेपाकं

चशीतंततोगृण्हीयादथगुंजयाज्वरहरंखंडेनसंयोजयेत् ॥ एक द्वित्रिभवंचतुर्थकमयंवेलाज्वरंनाशयेच्छीतारिश्वपलाययेज्वरमिमंभानुंयथाशर्वरी ॥

अर्थ—हरताल१भाग, शंखकी भस्म और लीलाथोथा नवमांस इन तीनोका चूर्ण घीगुवारके रसमें खरलकर गजपुटमें फूंक देवे जब शीतल होजाय तब निकालके१रत्ती यह रसखांडके साथ देवे तो एकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक, चातुर्थिक, और वेलाज्वर इनका नाश होय इसको (शीतारि रस) कहते है इसके देतेही ज्वर दूर हो जैसें सूर्यके उदयसे रात्रि ॥

तिसराप्रकार

मनःशिलातालकतुत्थताम्ररसेनगंधंसमकर्षभागं ॥ संमर्दयेत त्रिफलारसेनगोलंन्यसेत्संपुटकेप्रदद्यात् ॥ पुटांततोद्धृत्यच भानुवज्रीदुग्धेनभाव्यःकिलसप्तवारं ॥ क्वाथेनदंतीत्रिवृत्तोद्भवेनविभावनाःसप्तपुनःप्रदेयाः॥ ततोस्यमाषंमरिचैःशतार्धैर्गद्याणमात्रेणगुडेनयुक्तं ॥ संभक्षयेद्वातुलसीदलाभ्यांदिनत्रयं पथ्यमितोदनंच ॥ शीतारिनामारसएषहंतिशीतज्वरंघोरतरंसवातं ॥

अर्थ—मनसिल, हरताल, लीलाथोथा, ताम्रभस्म, पारा, गंधक, ये सब समान भागले त्रिफलेके रसमें खरलकर गोला बनाय उसपर कपड मिटी कर गजपुटमें फूंक देवे, फिर निकालके आक, थूहर, इनके रसकी सात २ भावना देफिर दंती निसोथ. इनके काढेकी सात २ भावना देकर मासेभरकी गोली बनाय ले, एक गोली तुलसीके रसमें पचास कालीमिरचका चूर्णछःमासे और गुड इनके साथ देवे और तीन दिन पथ्य तथा अल्पभोजन करे तो यह(शीतारिनामा) रस घोर शीतज्वरको नाश करे ॥

चौथाप्रकार

रसंगंधंचदरदंजेपालंक्रमवर्धितं ॥ दंतीरसेनसंपिष्यवटीगुंजामिताकृता ॥ प्रभातेसितयासार्धंभक्षिताशीतवारिणा ॥ एकेनदिवसेनैवशीतज्वरमपोहति ॥

अर्थ—पारा १ भाग, गंधक २ भाग, हिंगुल ३ भाग, और जमालगोटा चार भाग, ले दंतीके रसमें खरलकर रत्तीभरकी गोली करे इस गोलीको प्रातःकाल मिश्री और शीतल जलके साथ लेवे तो, यह (शीतारी रस) जीर्ण ज्वरका नाश करे ॥

भूतभैरवरस

एककर्षंभवेत्तालंद्विकर्षंतुत्थकंभवेत् ॥ षट्कर्षभृष्टशुक्तीनांचूर्णमेकत्रकारयेत् ॥ धत्तूरपत्रस्वरसैर्मर्दयेद्याममात्रकं ॥ निधायभाजनेलौहेसंमर्द्यक्रमशोबुधः ॥ उपर्यग्नेःस्थापयित्वातच्चसंशोषयेद्भिषक्॥ पुनःपर्युषितंप्रातर्गृहीत्वाकिंचिदग्नितः ॥ कोष्णंकृत्वाकल्कमेतत्ततोवैद्यःप्रसाधितः ॥ चणकप्रमितांदद्यादेकांशर्करयासह ॥ शीतज्वरंनिहंत्येवसर्वंनास्त्यत्रसंशयः ॥

अर्थ—हरताल १ तोले, लीलाथोथा २ तोले, शीपकी भस्म ६ तोले, सबको एकत्र कर धतूरेके पत्तोंके रसमें लोहेके पात्रमें प्रहरभर खरल करे फिर उसको चूल्हेपर चढायके घोटे जब रस सूख जाय तब उसमें नींबूका रस दे प्रातःकाल अग्निपर कुछ गरम कर धतूरेका रस डालके सिद्धकरे और इसकी चनेके प्रमाण गोली बनावे एक गोली मिश्रीके साथ देय तो यह (भूतभैरव रस) सर्व शीतज्वरोंको निःसंदेह नाश करे ॥

दाहपूर्वपरशीतोपचार

एरंडस्यतुपत्राणिलिप्त्वाभूमौनिधापयेत्॥ दाहादिज्वरिणोदेहेतानिपत्राणिधारयेत् ॥ तेननश्यतिदाहोस्यज्वरश्चैवोपशाम्यति ॥ दाहेशांतेयदाशैत्यंतच्चयुक्त्यानिवारयेत् ॥

अर्थ—अंडकेपत्ते लिपीहुई पृथ्वीमें बिछायदे जब शीतल होजावे तब दाह ज्वरवाले रोगीके देहपर लगावे तो उसका दाह शांति हो और ज्वरभी नष्ट हो जब दाह शांति होजावे और शीतलगे तो उसको वैद्य युक्तिपूर्वक अपनी बुद्धिसें दूर करे ॥

दाहऊपरस्त्रीकाआलिंगन

जघनचक्रचलन्मणिमेखलासरसचंदनचंद्रविलेपना ॥
वनलतेवतरुंपरिवेष्टयेत्प्रबलदाहनिपीडितमंगना ॥

अर्थ—प्रबलदाहसैं पीडित रोगीको जिसके कमरमें कोंधनी बजनी हो, तथा जिसने सुगंध, चंदन, और कपूर, अंगमें लगाय रक्खा हो ऐसी स्त्री जैसे वेल वृक्षसैं लपटती है इस प्रकार आलिंगन करे तो दाह शांति हो ॥

स्त्रीदूरीकरण

तदंगसंगसंजातैः शैत्यैर्दाहेनिवारिते ॥
प्रल्हादंचास्यविज्ञायतांस्त्रीमपनयेत्पुनः ॥

अर्थ—जबस्त्रीके आलिंगन करनेसैं दाह जाता रहे और रोगीको हर्ष हो तब ही उस स्त्रीको शीघ्र उसके पाससैं हटाय लेवे ॥

शीतोपचार

उत्तानसुप्तस्यगभीरताम्रकांस्यादिपात्रंप्रणिधायनाभौ ॥
तत्रांबुधाराबहुलापतंतीनिहंतिदाहंत्वरितंसुशीतं ॥

अर्थ—दाहवाले पुरुषको चित्त (सीधा) लिटायकर उसकी नाभीपर तामेका अथवा कांसेका पात्र धरके उसमें शीतल पानीकी धार दिवावे इस प्रकार शीतल धारासैं तत्काल दाह दूर होय ॥

दाहपरषट्तक्रतैल

सुवर्चिकानागरकुष्ठमूर्वालाक्षानिशालोहितयष्टिकाभिः ॥
सिद्धंहरेत्षड्गुणतक्रपक्वं तैलंज्वरंदाहसमन्वितंच ॥

अर्थ—सज्जीखार, सोंठ, कूठ, मूर्वा, लाख, हलदी, पतंग,और मुलहटी, इनके काढेमें तेल तथा तेलसैं छःगुना दहीका जल डालके सिद्ध करे जब तेल मात्र रहे तब उतारके इस तेलका मालिस करे तो दाहयुक्त ज्वरको शांति करे ॥

महाषट्कतैल

रास्नानागरकुष्टचंदननिशायष्ट्याव्हकृष्णाबलालाक्षासैंधव-
सारिवामधुरसादेवद्रुरोहीतकैः ॥ सोशीरांबुधिफेनरौहिषज-
लैस्तैलंपचेत्षड्गुणेतक्रेतच्छमयेज्ज्वरंदढतरंदाहादिशीतादिकं

अर्थ—रास्ना, सोंठ, कूठ, लालचंदन, हलदी, मुलहटी, पीपल, खरेटी, लाख, सैंधानिमक, सारिवा, मूर्वा, देवदार, लालरोहिडा, नेत्रवाला, समुद्रफेन, और रोहिसतृण, इनका काढेमें तेल और तेलसै छः गुनी छाछ मिलाय तेल सिद्ध करे यह तेल दाहपूर्वक तथा शीतपूर्वक ज्वरका शमन करे ॥

अंगारतैल

मूर्वालाक्षाहरिद्रेद्वेमंजिष्ठासेंद्रवारुणी ॥ बृहतीसैंधवंकुष्टंरास्ना मांसीशितावरी॥ आरनालाढकेचैवतैलप्रस्थंविपाचयेत्॥ तैल मंगारकंनामसर्वज्वरविमोक्षणं ॥

अर्थ—मूर्वा, लाख, हलदी, दारहलदी, मजीठ, इन्द्रायनका गूदा, कटेरी, सैंधानिमक, कूठ, रास्ना, जटामांसी, और सतावर, इनका काढा और कांजी २५६ तोले लेय, तथा तेल १ सेर सबको एकत्रकर तेल सिद्धकरे इसकी मालिस करनेसैं सर्व ज्वरोंको नाश करे इसे (अंगारक तेल) कहते है ॥

रसादिधातुगतज्वरलक्षण

गुरुतात्हृदयोत्क्लेदसदनंछर्द्यरोचकौ ॥
रसस्थेतुज्वरेलिंगंदैन्यंचास्योपजायते ॥

अर्थ—रसधातुगतज्वर होनेसैं देहमें भारीपना, हृदयस्थ दोष उलटी द्वारा निकल पडेसे प्रतीतहो, देहके सब अवयवोमें ग्लानि, वमन, अरुचि, और उदासपना, ये लक्षण होते है ॥

रसरक्तगतज्वरकीचिकित्सा

रसस्थेचज्वरेतस्मिन्कुर्याद्वमनलंघनं

अर्थ—रसधातुगतज्वर होनेसैं वमन और लंघन कराने चाहिये ॥

धातुगतज्वरचिकित्साप्रक्रिया

रसस्थेरससंशुद्धिरक्तस्थेरक्तमोक्षणं ॥ मांसस्थेरेचनंशस्तंमेदस्थेचासहिष्णुता॥रेचनंवमनंस्वेदंचास्थिस्थेस्वेदमर्दनं॥ मज्जाशुक्राशयंदृष्टातमसाध्यंज्वरंजयेत् ॥

अर्थ—रसधातुगतज्वर होनेसैं पसीने निकालना, और रक्तधातुगतज्वर होनेसैं फस्तखोलना, मांसधातुगतज्वर होनेसैं उसमें दस्तकराना, और मेदधातुगतज्वर होनेसैं कोई वस्तु सहन नही होती परंतु रेचन, वमन, और पसीने निकालना ये क्रिया करावे, अस्थिगतज्वर होनेसैं पसीने निकाले और मर्दन करावे मज्जा और शुक्रधातुगतज्वर होनेसैं असाध्य जानना इनकायत्न नही है ॥

रक्तधातुगतज्वरलक्षण

रक्तनिष्ठीवनंदाहोमोहश्छर्दनविभ्रमः॥

प्रलापःपीडिकातृष्णारक्तप्राप्तेज्वरेनृणां॥

अर्थ--रुधिर मिला थूके, देहमेंदाह, मोह, ओकी, भ्रम, असंबद्ध भाषण, देहमें फुंसी, और प्यास ये रक्तधातुगतज्वरके लक्षण जानने ॥

गायत्र्यादिकाढा

गायत्रीत्रिफलानिंबपटोलीवासकामृता ॥
क्वाथोमधुघृताभ्यांचरक्तदोषेतिशस्यते ॥

अर्थ--खैर, त्रिफला, नीमकी छाल, पटोलपत्र, अडूसा, और गिलोय, इनका काढा सहत और घी डालके देय तो यह रक्तदोष पर अति उत्तम है ॥

वराप्यजादिकाढा

वराप्यजाजीबृहतीहरिद्रावेण्वाटरूषप्रभवः कषायः॥
जहातिदूरंमधुवाविमिश्रितोरक्तोद्भवंदारुणमूर्तिवेगं ॥

अर्थ--त्रिफला, अजमायन, कटेरी, हलदी, रेणुकाबीज, और अडूसा, इसमें सहत डालके पीवे तो रुधिरसें उत्पन्न हुआ दारुणज्वरका नाश करे ॥

वृषादिकाढा

वृषोदुरालभाश्यामापर्पटः कटुरोहिणी ॥ किरातमथमेतेषांक्वाथः पीतः सितायुतः॥रक्तोद्भवंमहादाहंतृष्णांमूर्छांमतिभ्रमं॥पित्तज्वरंहरत्याशुपापमीशोयथास्मृतः ॥

अर्थ--अडूसा, धमासा, पीपल, पित्तपापड़ा, कुटकी, और चिरायता इनका काढा सहत मिलायके देवे तो रक्ताश्रितज्वर, दाह, तृषा, मूर्च्छा, मतिभ्रंश, और पित्तज्वर ए दूर हो, जैसे परमात्माके स्मरणसें पाप दूर होते है ॥

रक्तगतचिकित्साक्रम

सेकसंशमनालेपरक्तमोक्षस्त्वसृग्गते ॥

अर्थ—रक्तगतज्वर होनेसें देह पर पानीका तरडा देना ज्वरशमन कर्त्ता औषध लेना,लेप करना और रुधिर निकलवाना ये उपचार कराने चाहिये ॥

मांसगतज्वरलक्षण

पिंडिकोद्वेष्टनंतृष्णासृष्टमूत्रपुरीषता ॥
उष्मांतर्दाहविक्षेपोग्लानिः स्यान्मांसगेज्वरे ॥

अर्थ—जानुके नीचे मासकी गांठ हो, प्यासलगे, मलमूत्र ये बहुत हो, गरमी तथा अंतर दाह हो, हाथ पैर अस्तव्यस्त हले, शरीरमें ग्लानि आवे, इत्यादिक मांस गतज्वरके लक्षण होते है ॥

मांसगतज्वरचिकित्सा

तीक्ष्णानविरेकांश्चतथाकुर्यान्मांसगतेज्वरे ॥

अर्थ—मांसमें ज्वर चलागया होवे तो तीक्ष्ण (तेज) जुलाब देय ॥

मेदगतज्वरलक्षण

भृशंस्वेदस्तृषामूर्छाप्रलापश्छर्दिरेवच ॥
दौर्गंध्यारोचकोग्लानिर्मेदस्थेचासहिष्णुता ॥

अर्थ—अंगमें अत्यंत पसीने, प्यास, मूर्च्छा, और बकवाद, वमन, अंगमें दुर्गंधी, अरुचि, और ग्लानि, तथा अल्प कारणसें बहुत दुख हो, येभेदगत ज्वरके लक्षण जानने ॥

अस्थिगतज्वरलक्षण

भेदोस्थ्नांकूजनंश्वासोविरेकश्छर्दिरेवच ॥
विक्षेपणंचगात्राणांविद्यादस्थिगतेज्वरे ॥

अर्थ—हाडोंमेंपीडा, तथा हाडोंका बोलना, श्वास, दस्तहोना, वमन, और हात पैरोंका इधर इधर गिरना इत्यादि लक्षण अस्थिगतज्वरके जानने ॥

चिकित्सा

अस्थित्वेवांतिनाशनं ॥ वस्तिकर्मप्रयोक्तव्य
मभ्यंगोद्वर्तनंतथा ॥

अर्थ—अस्थिगतज्वर होनेसें वाँति नाशक औषध, बस्तिकर्म, अभ्यंग, और उवटना ये उपचार करने चाहिये ॥

मज्जागतज्वरलक्षण

तमःप्रवेशनंहिक्काकासः शैत्यंवमिस्तथा ॥
अंतर्दाहोमहाश्वासोमर्मछेदश्चमज्जगे ॥

अर्थ—अंधकार दर्शन, हिचकी, खाँसी, शीतलगना, वमन, देहके भीतर दाह, महाश्वास, और अंडकोश, ललाट, हृदय, नेत्र इन मर्मस्थानोंमें अत्यंत व्यथा होय ये मज्जागतज्वरके लक्षण जानने ॥

मज्जाशुक्रगतज्वर

मज्जाशुक्रेक्रियानोक्तामरणंतत्रभाषितं॥

अर्थ—मज्जागत तथा शुक्रगतज्वरका कोई यत्न नहीं कहा, यदि मज्जा और शुक्रमे ज्वर पहुच जाय तो रोगी अवश्य मरे ॥

शुक्रगतज्वरलक्षण

शेफसः स्तब्धतामोक्षः शुक्रस्यतुविशेषतः ॥
मरणंप्राप्नुयात्तत्रशुक्रस्थानगतेज्वरे ॥

अर्थ—शुक्रस्थानमें ज्वर पहुचनेसैं लिंगेन्द्री जिकडीसी होजावे, और वीर्य क्षण क्षणमे बहुत गिरे ऐसा रोगी मरजावे ॥

रसादिधातुसंबंधसेसाध्यासाध्य

रसरक्ताश्रितः साध्योमांसमेदगतश्चयः ॥
अस्थिमज्जागतस्थोपिशुक्रस्थोपिनजीवति ॥

अर्थ—रस, रुधिर, मांस, मेद, इन धातुओंमें ज्वर पहुचनेसैं औषधोंकर साध्य होय, हड्डी और मज्जागतज्वर दुःसाध्यहै तथा शुक्रगतज्वर होनेसै रोगी मरणको प्राप्त हो ॥

प्राकृतवैकृतज्वर

वर्षाशरद्वसंतेषुवाताद्यैः प्राकृतैः क्रमात् ॥
वैकृतोन्यः सुदुःसाध्यः प्राकृतश्चानिलोद्भवः ॥

अर्थ—वर्षा, शरद, और वसंत इनमें क्रम करके वातादि करके ज्वर उत्पन्न होय वो (प्राकृतज्वर) जानना, और अन्यऋतुमें उत्पन्न होनेवाले ज्वरको (वैकृत) जानना जैसे वर्षाकालमें बातज्वर, शरद्कालमें पित्तज्वर, और वसंतकालमें कफज्वर ये प्राकृत है, एवं वर्षाकालमें पित्तज्वर, शरत्कालमें कफज्वर, वसंतकालमें बातज्वर ये वैकृत दुःसाध्य जानना, और प्राकृत बातज्वर दुःसाध्य है तथा प्राकृत पित्तज्वर सुसाध्य है ॥

प्राकृतज्वरकीउत्पत्तिक्रमकहतेहे

वर्षासुमारुतोदुष्टःपित्तश्लेष्मान्वितोज्वरं ॥ कुर्याच्चपित्तंशरदितस्यचानुबलःकफः ॥ तत्प्रकृत्याविसर्गाच्चतत्रनानशनाद्भयं ॥ कफोवसंतेतमपिवातपित्तंभवेदनु ॥

अर्थ-ग्रीष्मऋतुमें संचित वायु वर्षाकालमें कुपित हो पित्तकफयुक्त हो कर ज्वर उत्पन्न करता है, उसप्रिकारका वर्षाकालमें संचित पित्त शरत्कालमें दुष्टहो, ज्वरको करे है, उसका सहाय कर्त्ताकफ है, उसज्वरमें कफपित्तके स्वभाव करके और विसर्ग काल होनेके कारण लंघन करानेसैं भय नहीं रहता है,उसीप्रकार हेमंत कालमें संचित कफ बसंतकालमें ज्वर उत्पन्न करता है, उसके वातपित्तये सहाय करता जानने ॥

कालेयथास्वंसर्वेषांप्रवृत्तिर्वृद्धिरेववा ॥
निदानोक्तोऽनुपशयोविपरीतोपशायिता॥

अर्थ—काल-जैसैं दोषोंको उत्पन्न कर वढाने वाला है उसीप्रकार उपशयानुपशय भी है तहां दोषोंके वढानेवाले जे आहार विहारादि आचार वो अनुपशय अर्थात् उससैं पीडा होती है, और दोषोंका नाश करनेवाले जे आहारादि आचार वो उपशय कहिये इसके द्वारा सूख होता है ॥

अंतर्वेगज्वरकेलक्षण

अंतर्दाहोधिकातृष्णाप्रलापःश्वसनंभ्रमः ॥ संध्यस्थिशूलम स्वेदोदोषवर्चोविनिग्रहः ॥ अंतर्वेगस्यालिंगानिज्वरस्यैतानि लक्षयेत् ॥

अर्थ—अंतर्दाह, अत्यंततृषा, वकवाद करना, श्वास, भ्रम, संधि और हड्डी इनमें पीडा, पसीने आवे तथा अधोवायु और मलका अच्छी तरह न उतरना ये अंतर्वेग ज्वरके लक्षण है यह असाध्य है ॥

बहिर्वेगज्वरलक्षण

संतापोह्यधिकोबाह्यस्तृष्णादीनांचमार्दवं ॥
बहिर्वेगस्यलिंगानिसुखसाध्यत्वमेवच ॥

अर्थ—देहमें अत्यंत संताप और तृष्णादिक लक्षण अल्पहो, ये वहिर्वेग ज्वरके लक्षण जानने यह सुसाध्य है इस कहनेसैं यह सिद्ध हुआ कि उक्त अंतर्वेग ज्वर असाध्य है ॥

आमाशयगतज्वरलक्षण

लालाप्रसेकहृल्लासहृदयाशुध्यरोचकाः ॥ तंद्रालस्याविपाकास्यवैरस्यंगुरुगात्रता॥ क्षुन्नाशोबहुमूत्रत्वंस्तब्धतावलवा

नृज्वरः ॥ आमज्वरस्यचेन्हानिनदद्यात्तत्रभेषजं॥ भेषजंह्या मदोषस्यभूयोजनयतिज्वरं॥शोधनंशमनीयंचकरोतिविषमज्वरं

अर्थ—लारका गिरना, ओकारी आने कीसी भ्रांति, छातीभरीसी प्रतीत हो,अन्नद्वेष, अरुचि, तंद्रा, आलस्य, अन्न पचे नहीं, मुख बेरस हो,देहमें भारीपना, क्षुधा न लगे, वारंवार मूत्रका उतरना, अंगोका जिकडना, तथा अंगोंमे आधिक ज्वर होना ये अपक्व ज्वरके लक्षण जानने। इस ज्वरपर औषध नही देनी, अपक्व दोषोंमें औषध देनेसैं ज्वरकी वृद्धि होती है शोधन अथवा शमन औषध देनेसै विषमज्वर करे है ॥

कटुक्यादिकाढा

कटुकारोहिणीमुस्तापिप्पलीमूलमेवच ॥
हरीतकीततोतोयमामाशयगतेज्वरे ॥

अर्थ—कुटकी, नागरमोथा, पीपलामूल, और छोटी हरड इनका काढा देनेसैं आमाशय गतज्वर नाश होवे ॥

सर्वेश्वररस

रसात्द्विगुणितंगंधंचतुर्भागंतुटंकणं ॥ तथाष्टभागंजैपालंग्यहं संमर्दयेद्दृढं ॥ वल्लोनवज्वरंहंतिरसःसर्वेश्वराभिधः ॥ वल्लद्वयहरीतक्यायुक्तंवातज्वरंतथा ॥ द्विवल्लोमधुखंडेनपीतःक्षौद्रयुतःकफं ॥ गुंजाजीर्णज्वरंघोरमतिलंघितजंतथा ॥ वल्लस्तुसूतिकारोगेपिप्पलीमधुसंयुतः ॥ पंचवर्षस्थबालस्ययवमात्रोज्वरंजयेत् ॥ गुंजाभिवृध्याविषयान्यावच्चातुर्थिकानापि ॥ मलखंडेनसंयुक्तोहन्याज्ज्वरत्रयंतथा ॥ यवानीक्रिमिशत्रुभ्यां वल्लोहन्यात्क्रमीनपि ॥ एवंसर्वगदान्हंतिरसोभैरवभाषितं ॥

अर्थ—पारा १ भाग, गंधक २ भाग, सुहागा ४ भाग, और जमाल गोटा ८ भाग, ये सब एकत्रकर तीनदिन खरलकरे यह सर्वेश्वर रस नवज्वरको नाशकरे हरडके साथ वातज्वरमें देय दो वल्लके अनुमान सहत और मिश्रीके साथ कफमें देय, १ रत्ती जीर्णज्वरमें देय, और पीपल तथा सहतके साथ ३ रत्ती प्रसूतके रोगमे देय, और पांच वर्षके बालकके ज्वरमें यव मात्र देवे यह रत्ती २ की वृद्धि सैं विषमज्वरमे देवे तो चातुर्थिक आदिका नाश करे तथा सपेद मिश्रीके

साथ ज्वरत्रयका नाश करे तथा ३ रत्ती अजमायन, तथा वायविडंगके साथ देनेसैं कृमिरोग दूर हो इस प्रकार यह सर्वरोगोंको नाश करे है ऐसा भैरवका वाक्य है ॥

त्रिपुरभैरव

विषटंकंबलिम्लेच्छदंतिबीजंक्रमाद्वहु ॥ दंत्यंबुमर्दितोयामंरसस्त्रिपुरभैरवः ॥ वल्लव्योषेणचार्द्रस्यरसेनासितयाथवा ॥ दत्तोनवज्वरंहंतिमांद्यमानिलशोथहा ॥ हंतिशूलंसविष्टंभमर्शांसिक्रमिजान्गदान् ॥ पथ्यंतक्रेणभुंजीतरसेस्मिन्रोगहारिणि

अर्थ—बच्छनागविष १ तोला, गंधक, ताम्रभस्म, और जमालगोटा, ये समान भाग लेवे इनको दंतीके रसमें प्रहरमात्र खरल करे इसको (त्रिपुर भैरव) रस कहते है यह तीन रत्ती सोठ, मिरच, और पीपल, अदरखका रस, अथवा मिश्री, इनमेंसै किसीएकके साथ भक्षण करे तो नवज्वर, मंदाग्नि, वातशोथ, शूल, मलका रुकना, ववाशीर, और कृमिसैं होनेवाले रोग इनको नाश करे इसपर छाछ भातका पथ्य देना चाहिये ॥

रत्नगिरि

सूताभ्रताम्रवर्णानिगंधश्चार्धांशलोहकं ॥ लोहार्धंमृतवैक्रांतं मर्दयेद्भृगजैर्द्रवैः ॥ पर्पटीरसवत्पाच्यंचूर्णितंभावयेच्छनैः ॥ शिग्रुवासकनिर्गुंडीगुडूच्याग्राग्निभृंगजैः ॥ क्षुद्रामुंडीजयंत्याथ मुनिब्राह्यथातिक्तकैः॥ कन्यायाश्चद्रवैर्भाव्यंत्रिवारंतुपृथक्पृथक् ॥ ततोलघुपुटेपक्कंस्वांगशीतंसमुद्धरेत् ॥ माषोदत्तःकणाधान्ययुक्तश्चाभिनवज्वरं ॥ कुर्याज्ज्वरविनिर्मुक्तंरोगिणंघटिकाद्वयात् ॥ अयंरत्नगिरिर्नामरसोयंयोगवाहकः ॥ मुद्गान्नंमुद्गयूषंवासमरिंतक्रभुक्तकं ॥ रसेचोक्तंपथ्यमस्मिन्शाकंसर्वज्वरोदितं ॥

अर्थ—पारा, अभ्रक, ताम्र, सुवर्ण और गंधक समान ले गंधकसैं आधा लोहभस्म, और लोहसैं आधा वैक्रांत भस्म ले सबको एकत्रकर भाँगरेके रसमें खरलकर पर्पटी रसके समान पचाय पर्पटीकरे फिर इसका चूर्णकर, सहजना ,

डूसा, सह्मौंलू, गिलोय,त्रिफला, चीता, भाँगरा, कटेरी, गोरखमुंडी अरनी, अग स्तिया, ब्रह्मी, चिरायता, और घीगुवार प्रत्येक रसकी तीन २ भावना, पृथक् २ देके फिर इसको लघुपुटमें धरके भूंक देवे, जब स्वांगशीतल होजाय तब निका लके धर रक्खे इसमेंसैं ६ रत्ती पीपल, और धनियेके साथ देवे तो नवीन ज्वर. दो घडीमें दूर हो इस रसको (रत्नगिरी) कहते है इसको जिस औषधके यो- गसैं देवे उसी उसी रोग को दूर करे इसके ऊपर मूंग अथवा मूंगका यूष, प- वन, छाछ, और जो जो ज्वर रोगमें शाकदने पथ्य कहे है वो देने चाहिये ॥

नवज्वरेभसिंह

शुद्धसूतंतथागंधंलोहंताम्रंचसीसकं ॥ मरीचंपिप्पलीविश्वं- समभागानिचूर्णयेत् ॥ अर्धभागंविषंदत्वामर्दयेद्दासरद्वयं ॥ शृंगवेरानुपानेनदद्याद्गुंजाद्वयंभिषक् ॥ नवज्वरेमहाघोरेवातसं ग्रहणीगदे ॥ नवज्वरेभसिंहोयंसर्वरोगेप्रशस्यते ॥

अर्थ—शुद्धपारा, गंधक, लोहभस्म, सीसा, कालीमिरच, पीपल और सोंठ, सब समान भाग लेवे, पारेसैं आधा विष शुद्ध डाले, सबको एकत्र कर अदरखके रससै दोदिन खरल करे, फिर दो रत्तीकी गोली करे, इसको अदरखके रसके साथ घोर नवीन ज्वरमे और वातसंग्रहणीमें देवे, यह (नवज्वरेभसिंहरस) सर्व रोगमें देना चाहिये ॥

ज्वरघ्नीवटिका

एकभागोरसःशुद्धोशैलेयःपिप्पलीशिवा ॥ आकारकरभोगंधः कटुतैलेनशोधितः ॥ फलानिचेंद्रवारुण्याश्चतुर्भागमिताअ- मी ॥ एकत्रमर्दयेत्तूर्णमिंद्रवारुणिकारसैः ॥ माषोन्मितावटी कृत्वादद्यात्सद्योज्वरेबुधः ॥ छिन्नारसानुपानेनज्वरघ्नीव- टिकामता ॥

अर्थ—शुद्धपारा १ भाग, और शिलाजीत, पीपर, हरड, अकरकरा, सरसों के तेलमें शुद्ध करी हुई गंधक और इन्द्रायनके फलका गूदा, प्रत्येक चार२भाग लेकर इन्द्रायनकेही रसमें खरल करे पश्चात् १ मासेकी गोली बनावे एक गो- ली गिलोयके रससैं देवे तो नवीन ज्वर दूर हो इसैं ज्वरघ्नी गुटिका कहते है ॥

विश्वतापहरण

सूतंशुल्बंत्रिवृतावलितिक्तादंतीबीजंचपलाविषंतिदु ॥ पथ्यायासहविचूर्ण्यसमांशंमेहवारिसहितंदिनमेकं ॥ वल्लयुग्मगुटिकार्द्रकतोयैर्नाशयेदभिनवज्वरमाशु ॥ विश्वतापहरणोत्रचपथ्यंमुद्गयूषसहितंलघुभुक्तं ॥

अर्थ—पारा, ताम्रभस्म, निशोथ, गंधक, कुटकी, जमालगोटा, पीपर, विष, कुचला, और हरड, ये समान भाग लेकर उनको धतूरेके रसमें १ दिन खरल कर ६ रत्तीकी गोली करे १ गोली अदरखके रससैं देवे तो नवीन ज्वरका नाश करे इस विश्वताप हरण रसपर मूंगकी दाल और हलका अन्न देवे ॥

श्वासकुठाररस

सूतंगंधंविषंचैवटंकणंचमनःशिला ॥ एतानिटंकमात्राणिमरिचंत्वष्टटंककं ॥ कटुत्रयंचषट्टंकंखल्वेक्षिप्त्वाविचूर्णयेत् ॥ रसःश्वासकुठारोयंश्वाससर्वज्वरापहः ॥

अर्थ—पारा, गंधक, विष, सुहागा और मनसिल, येप्रत्येक समान भाग लेवे और कालीमिरच एक औषधसैं आठ गुनी लेय, तथा सोंठ, कालीमिरच, पीपल ये छः छः भाग ले, सबको खरल कर बारीक चूर्ण करे यह श्वासकुठार श्वास, और सर्वज्वर इनका नाश करे ॥

उदकमंजरीरस

सूतोगंधश्चोषणंटंकणंचसर्वैस्तुल्याशर्करामत्स्यपित्तैः॥ भूयो भूयोमर्दयेत्तंत्रिरात्रंवल्लोदयःशृंगवेरद्रवेण ॥ तापेशीतंवीजनैस्तक्रभक्तंवृंताकाढ्यंपथ्यमेतत्प्रदिष्टं ॥ अन्हैवोग्रंहंतिसद्योज्वरंतुपित्ताधिक्येमूर्ध्नितोयंचदद्यात् ॥

अर्थ—पारा, गंधक, कालीमिरच, और सुहागा, ये समान भागले, तथा सबकी बराबर मिश्रीमिलाय सबको मछलीके पित्तेसैं ३ दिन खरल करे जब बराबर तीन दिन हो चुके तब ३ रत्तीकी गोली बनावे, एक गोली अदरखके रससैं देय यदि इसके खानेसैं दाह होय तो पंखेकी पवन करे, छाछ, भात, बैंगनका शाक, ये पथ्यमें देवे इस प्रकार करनेसैं एक दिनमें नवीन ज्वर दूर

होय यदि पित्त अधिक उपद्रव करे तो उस रोगीके मस्तक पर शीतल जलका तरडा देवे ॥

ज्वरधूमकेतुरस

जह्यात्समंसूतसमुद्रफेनांहिंगूलगंधंपरिमर्द्दयेयामं ॥
नवज्वरेवल्लयुगंत्रिघस्रमार्द्राभसायंज्वरधूमकेतुः ॥

अर्थ—पारा, गंधक, समुद्रफेन, और हिंगलू इनको अदरखके रससे प्रहरभर खरलकर ६ रत्तीकी गोली वनावे१ गोली अदरखके रसमैं ३ दिन देवे तो नव ज्वरको नाश करे इसको ज्वरधूमकेतु रस कहते है ॥

वटिका

रसंगंधंचदरदंजैपालंक्रमवर्द्धितं ॥ दंतीरसेनसंपिष्यवटीगुंजा मिताकृता ॥ प्रभातेसितयासार्धमाशिताशीतवारिणा ॥ एकेन दिवसेनैषानवज्वरहराभवेत् ॥

अर्थ—पारा १ भाग, गंधक २ भाग, हिंगुल ३ भाग, जमालगोटा ४ भाग, इस प्रकार लेकर दंतीके रसमैं खरलकर रत्तीभरकी गोली वनावे इसको प्रातः काल शीतलजल और मिश्रीके साथ सेवन करे तो एकदिनमें नवज्वरका नाश करे

दुसरीवटी

रसोगंधोविषंशुंठीपिप्पलीमरिचानिच ॥ पथ्यंविभीतकंधात्री दंतीबीजंचशोधितं ॥ चूर्णमेषांसमांशानांद्रोणपुष्पीरसैर्भवेत् ॥ वटीमाषनिभांकुर्याद्भक्षयेन्नूतनज्वरे ॥

अर्थ—पारा, गंधक, विष, सोंठ, पीपर, कालीमिरच, हरड, आमला और शुद्ध जमालगोटा, ये समान भागले चूर्णकरे फिर गोमाके रसमें खरलकर उ-डदके बराबर गोली वनावे इसके खानेसैं नवीन ज्वर दूर हो ॥

ज्वरांकुश

खंडितंहारिणशृंगंज्वालमुख्यारसैःसमं ॥रुध्वाभांडेपचेच्चुल्यां याममुग्मंततोनयेत् ॥ अष्टांशंत्रिकटुंदद्यान्निष्कमात्रंचभक्ष येत् ॥ नागवल्यारसैःसार्धवातपित्तज्वरापहं ॥ अयंज्वरांकु शोनामरसःसर्वज्वरापहः ॥

अर्थ–हिरणके सींगका बारिक टुकडेकर किसी पात्रमें रखके ज्वाला मुखीके रसको उसमें डाल उसके मुखपर दूसरा छोटा पात्र उलटा रखके कपर मिट्टी कर देवे, चूल्हेपर रखके दो प्रहरकी अग्नि देवे, जब शीतल होजावे तब उन टुकणोंकी भस्म बाहर निकाल लेवे फिर इस भस्मका आठवाँ भाग सोंठ, मिरच, पीपल, इनका चूर्ण करके उस भस्ममें मिलाय देवे फिर इस भस्मको १ टंकके अनुमान नागरवेल पानके रससें खाय तो यह ज्वरांकुश संपूर्ण ज्वरोंको दूर करे परंतु बहुधा वातपित्त ज्वरको दूर करे ॥

नवज्वरेभांकुश

सगंधटंकंरसमूषणंचविमर्दितंभावयमीनपित्तैः ॥ दिनत्रयंवल्ल युगंप्रदद्याद्वृंताकतक्रोदनपथ्यमत्र।। नवज्वरेभांकुशनामधेयः क्षणेनघर्मोद्गममातनोति ॥

अर्थ—गंधक, सुहागा, पारा, और कालीमिरच, इनको मछलीके पित्तेमें तीनदिन खरल करे ४ रत्ती रोगीको देय पथ्यमें वैंगन, छाछ भात देवे यह रस क्षणभरमें पसीने उत्पन्न करता है ॥

अमृतकलानिधि

अमृतवराटिकमरीचैर्द्विपंचनवमांशकैःकुर्यात् ॥
मुद्गप्रमाणावटिकाज्वरपित्तकफाग्निमांद्यहारीस्यात् ॥

अर्थ—वच्छनाग विष दो भाग, कौडीकी भस्म ५ भाग, कालीमिरच ९ भाग लेकर खरलकरे, इस रसकी मूंगके प्रमाण गोली बनावे तो ज्वर, पित्त, कफ और मंदाग्नि इनको दूर करे ॥

पंचामृतरस

स्वर्णरौप्यरविनागलोहकंचंद्रदस्रशिखिचतुःशरभागं ॥ मर्दितंदृढतरंदिनमेकंभावितंमकरपित्तरसेन॥वल्लयुग्ममखिलज्वर शान्त्यैशर्कराद्रकरसेनददीत ॥

अर्थ—सोनेकी भस्म १ भाग, रूपेकी भस्म २ भाग, ताम्रभस्म ३ भाग, शीशेकी भस्म ४ भाग, और लोहेकी भस्म ५ भाग, ले ये सब एकत्र कर मगरके पित्तेकी भावना देकर ४ रत्तीकी गोली बनावे इनको मिश्री और अदरखके रससे १ गोली देवे तो संपूर्णज्वर दूर हो ॥

जीर्णज्वरांकुश

मृतंसूताभ्रनागार्ककांतवैक्रांतमेवच॥हिंगुलंटंकणंगंधंविषंकुष्ठं समांशकं॥त्रिकटुत्रिफलामुस्ताभृंगनिर्गुंडिकाद्रवैः॥भावयेत्त्रि दिनंचैवमाषमात्रानुपानतः ॥ जीर्णज्वरंक्षयंकासंदोषान्मंदा नलंतथा ॥ पांडुहलीमकंगुल्ममुदरंचार्दितंजयेत् ॥ ग्रहणीशू लरोगांश्वअरोचकमनेकधा ॥ कांतितेजोबलंपुष्टिंवीर्यवृद्धिंवि वर्द्धयेत् ॥ साध्यासाध्यंनिहंत्याशुरसोजीर्णज्वरांकुशः ॥

अर्थ—पारेकी भस्म, अभ्रकभस्म, शीशेकी भस्म, ताम्रभस्म कांतलोहभस्म, वैक्रांतकी भस्म, हिंगुल, सुहागा, गंधक, विष, और कूठ, ये औषध समान भाग लेकर सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, वहेडा, आमला और नागरमोथा इनके का- ढेमें तथा भँगरा, निर्गुंडी, इनके रसमें तीन दिन भावना देवे और यथा योग्य अनुपानके साथ देवे तो यह जीर्णज्वर, क्षय, खाँसी, त्रिदोष, मंदाग्नि, पांडुरोग, हलीमक, गोला, उदररोग, अर्दितवायु, संग्रहणी, शूल, और सर्व प्रकारकी अ- रुचि इनका नाश करे तथा कांति, तेज, बल, पुष्टि, और वीर्यवृद्धी इनको ब ढावे, एवं यह जीर्ण ज्वरांकुश रस साध्य अथवा असाध्यरोगोंको नाश करे है ॥

पच्यमानज्वरलक्षण

ज्वरवेगोधिकातृष्णाप्रलापःश्वसनंभ्रमः
मलप्रवृत्तिरुत्क्लेदोपच्यमानस्यलक्षणं॥

अर्थ—ज्वरका अधिक वेग, प्यास, प्रलाप, श्वास, भ्रम, मलकाउतरना, और उत्क्लेश ए पच्यमान ज्वरके लक्षण है ॥

निरामज्वरलक्षण

क्षुत्क्षामतालघुत्वंचगात्राणांज्वरमार्द्दवं ॥
दोषप्रवृत्तिरुत्साहोनिरामज्वरलक्षणं॥

अर्थ—क्षुधाका लगना, देहमें हलका पना, ज्वरका नम्र होना, दोषोंकी प्र- वृत्ति और उत्साहका होना, ए निराम ज्वरके लक्षण है ॥

ग्रंथांतरोक्तजीर्णज्वरनिदान

त्रिःसप्ताहेव्यतीतेतुज्वरोयस्तनुतांगतः ॥
प्लीहाग्निमांद्यंकुरुतेसजीर्णज्वरउच्यते ॥

अर्थ--इक्कीस दिन व्यतीत होनेपर जो ज्वर देहमें बारीक होकर रहे औ तापतिल्ली मंदाग्नि को करे उसे जीर्ण (पुराना) ज्वर कहते है ॥

सामान्यचिकित्साशास्त्रार्थ

जीर्णज्वरीनरःकुर्यान्नोपवासंकदाचन ॥
लंघनात्सभवेत्क्षीणोज्वरस्तुस्याद्बलीयतः ॥

अर्थ--जीर्णज्वरवाला मनुष्य लंघन कदाचित् न करे कारण कि लंघन करनेसें रोगी क्षीण होजाता है और ज्वर बलवान् हो जाता है ॥

लंघन

पुराणेपिज्वरेदोषायद्यपथ्यैःपुनस्तथा ॥
लंघयेत्तत्रतंपश्चात्पूर्ववत्कारयेत्क्रियां ॥

अर्थ--यदि जीर्णज्वरमें अपथ्यके करनेसें दोष कुपित हुए होय तो उस जीर्णज्वरवालेको लंघन करावे जब लंघन करके क्षीण दोष होजावे फिर पूर्व प्रमाण क्रिया करावे ॥

ज्वरक्षीणको वांतिनिषेध

ज्वरक्षीणस्यनहितंवमनंनविरेचनं ॥
कामंतुपायसंतस्यनिरूहैर्वाहरेन्मलान् ॥

अर्थ-जो मनुष्य ज्वरसें क्षीण है उसको वमन और विरेचन सर्वथा अहितहै उसको यथेच्छ दूधपिवावे अथवा निरूहण वस्ती करके उसके मलको निकाले ॥

ज्वरफेरआनेकाकारण

आवर्ततेगात्रसादेवैवर्ण्येमंगलादिषु ॥
शांतज्वरोप्यसाध्यःस्यादनुबंधभयान्नरः ॥

अर्थ--अंगोंका रहजाना विवर्णता इत्यादि विकार करके अथवा अमंगलादिकोके देखनेसें शांतज्वरभी फिर लौटकरके आता है ॥

वातजीर्णज्वर

ज्वरोष्मणाज्वरेजीर्णेवायुःकुप्यतिरूक्षिते ॥
घृतंसंशमनंतस्यदीप्तस्येवांबुवेश्मनः ॥

अर्थ--जीर्णज्वरकी गरमीसें देहरूक्ष होनेसें वायुका कोप होता है उसकी शांति होनेके वास्ते घृतपान योग्य है जैसे फुकते हुए घरमें पानीका डालना ॥

जीर्णज्वरमेंपक्वाशयाश्रितदोषकीचिकित्सा

जीर्णज्वरेषुसर्वेषुदोषेपक्वाशयाश्रिते ॥
स्नेहबस्तिःप्रकर्तव्यःसनिरूढोयथाविधि ॥

अर्थ--संपूर्ण जीर्णज्वरमें दोष पक्वाशयाश्रित होनेसें स्नेहवस्ती, अथवा यथाविधि निरूहण वस्ती करनी चाहिये ॥

छिन्नादिकाढा

पिप्पलीचूर्णसंयुक्तःक्वाथश्छिन्नोद्भवोद्भवः ॥
जीर्णज्वरकफध्वंसीपंचमूलकृतोथवा ॥

अर्थ--कुटकीके काढेमें पीपलका चूर्ण डालके पीवे तो जीर्णज्वर और कफको नष्ट करे अथवा पंचमूलका काढा करके पीवेतो जीर्णज्वर और कफ दूर हो

त्रिकंटकादिकाढा

निदिग्धिकानागरकामृतानांक्वाथंपिबेन्मिश्रितपिप्पलीकं ॥
जीर्णज्वरारोचककासशूलश्वासाग्निमांद्यार्दितपीनसेषु ॥
हंत्यूर्ध्वजानयंप्रायः सायंतेनोपयुज्यते ॥

अर्थ—कटेरीका पंचांग, सोंठ, गिलोय, इनके काढेमें पीपलका चूर्ण मिलायके पीवे तो जीर्णज्वर, अरुचि, खांसी, शूल, श्वास, मंदाग्नि, अर्दितवायु, पीनस तथा ऊर्ध्वविकार इनका नाश करे यह काढा सायंकालको देवे ॥

गुडूचीकाढा

अमृतायाःकषायंतुशतिलीकृतमीरितं॥
मधुपादयुतंपीतंजीर्णज्वरहरंपरं॥

अर्थ—गिलोयका काढा करके शीतल होनेपर उसमें चतुर्थांस सहत मिलायके पीवे तो जीर्णज्वर दूर हो ॥

द्राक्षादिअष्टादशांगकाढा

द्राक्षामृताशठीशृंगीमुस्तकंरक्तचंदनं ॥ नागरंकटुकापाठा
भूनिंबःसदुरालभः ॥ उशीरंधान्यकंपद्मंवालकंकंटकारिका ॥
पुष्करंपिचुमंदश्चस्यादष्टांगमिदंस्मृतं ॥ जीर्णज्वरारुचिश्वा
सकासश्वयथुनाशनं ॥

अर्थ--मुनक्कादाख, गिलोय, कचूर, काकडासिंगी, नागरमोथा, लालचंदन, सोंठ, कुटकी, पाढ, चिरायता, धमासा, नेत्रवाला, धनिया, पखाख, खस, कटेरी, पुहकरमूल, और नीमकी छाल, इनका काढा जीर्णज्वर, अरुचि, श्वास, खांसी, और सूजन, इनका नाश करे ॥

शुंठीकाढा

अरुचिमनलमांद्यंपीनसश्वासकासानुदरमुदकदोषानाशुह न्यादशेषान्॥ जनयतितनुकांतिंचित्तनेत्रप्रसादंपलपरिमितशुंठीक्षौद्रसिद्धःकषायः ॥

अर्थ--चारतोले सोंठके काढेमें सहत डालके पीवे तो अरुचि, मंदाग्नि, पीनस, श्वास, खांसी, उदर, जलदोष, इनको दूरकरे तथा कांति, चित्त और नेत्र इनको प्रसन्नता देता है ॥

कणादिकाढा

कणामधुकमृद्वीकाबलाचंदनसारिवा ॥
निःक्वाथ्यपयसापीताःक्षीणज्वरविनाशनाः ॥

अर्थ—पीपल, महुआके फूल, मुनक्कादाख, खरेटी, लालचंदन, और सारिवा इन औषधोंका काढा करके देवे तो जीर्णज्वरका नाश करे ॥

तिक्तादिकाढा

तिक्तापर्पटभूनिंबमुस्ताच्छिन्नरुहांपिबेत् ॥
अभ्यासेनजयत्येषज्वरमामृत्युमातुरः ॥

अर्थ--कुटकी, पित्तपापडा, चिरायता, नागरमोथा, और गिलोय इनका काढा करके कुछ काल सेवन करे तो असाध्यभी ज्वर जाय ॥

कलिंगादिकाढा

कलिंगकटुकीमुस्ताभूनिंबोग्रंथिनागरं॥ राजकन्यादेवदारुः पिबेत्क्वाथंसकृष्णकं ॥ जीर्णज्वरगदेनित्यंसामेचैवनिरामये ॥ ज्वरांश्चविषमांश्चैवशीतंचातुर्थिकंजयेत् ॥

अर्थ—इन्द्रजो, कुटकी, नागरमोथा, चिरायता, पीपरामूल, सोंठ, और देवदारु, और पीपल इनका काढा कर पीवे तो जीर्णज्वर, साम और निराम ज्वर तथा विषमज्वर, शीतज्वर, चातुर्थिक आदिको दूर करे ॥

द्राक्षादिचूर्ण

द्राक्षामृतानागरतोयमुष्णंकृष्णात्रिपाकंबहुरोगनिघ्नं ।
श्वासंचशूलंकसनंचमांद्यंजीर्णज्वरंचैवजलेनतृष्णा ॥

अर्थ—दाख, गिलोय, सोंठ, और पीपल इनका चूर्ण कर गरम जलके साथ लेवे तो अनेक रोग दूर हो, और श्वास, खाँसी, शूल, मंदाग्नि, जीर्णज्वर और तृषा इनको शीतल जलके साथ लेनेसैं दूर करे ॥

लवंगादिकाढा

देवपुष्पचपलाग्रथितंचसिंहिकानलकिरातपयोदाः ॥ त्रायमाणभृगुजासुरवासाब्राह्मिकाकरिकणादशमूल ॥ शक्रपुष्पशरटीनवरास्नाशृंगिनागरवचाः समभागाः ॥ साधितंचकथनंकिलपेयंयोजितंचसुरसास्वरसेन ॥ ज्वरेचसूतिकारोगेशीतेरोचकसंभ्रमे ॥ अग्निमांद्येवातगुल्मेलवंगादिःप्रशस्यते ॥

अर्थ—लौंग, पीपल, पीपरामूल, कटेलीकीजड़, चित्रक, चिरायता, नागरमोथा, त्रायमाण, भारंगी, देवदारु, अडूसा, ब्राह्मी, गजपीपर, दशमूल, इन्द्रजो, खदिरपर्णी, रास्ना, काकडासिंगी, सोंठ, और वच, इनके काढेमें तुलसीका रस मिलायके देवे यह, ज्वर, प्रसूत, शीत, अरुचि, भ्रम, मंदाग्नि, वायगोला इनमें यह परमोत्तम उपाय है ॥

तालीसादिचूर्ण

तालीसंमरिचंशुंठीपिप्पलीवंशरोचनं ॥ एकद्वित्रिचतुः पंचकर्षैर्भागान्प्रकल्पयेत् ॥ एलात्वचोस्तुकर्षार्धंप्रत्येकंभागमावहेत् ॥ द्वात्रिंशत्कर्षतुलिताप्रादेयाशर्कराबुधैः॥तालीसाद्यमिदंचूर्णरोचनंपाचनंस्मृतं ॥ कासश्वासज्वरहरंछर्द्यतीसारनाशनं॥शोफाध्मानहरंप्लीहग्रहणीपांडुरोगजित् ॥ पक्त्वावाशर्कराचूर्णंक्षिपेत्सागुटिकामता ॥

अर्थ—तालीसपत्र, कालीमिरच, सोंठ, पीपल, और वंशलोचन ए क्रमसैं १-२-३-४-५ भाग लेवे तथा इलायची दालचीनी ये आधे २ भाग लेय, और मिश्री ३२ तोले लेवे इस प्रकार सब वस्तू ले चूर्णकरे यह तालीसादि चूर्ण रो

चक और पाचक है तथा खांसी, श्वास, ज्वर, वमन, अतिसार, सूजन, पेटका फूलना, प्लीह, संग्रहणी, और पांडुरोग इनका नाश करी यदि इसकी गोली बनानी होय तो खांडकी चासनीमें बनावे ॥

त्रिफलादिचूर्ण

कासश्वासज्वरहरापिप्पलीत्रिफलायुता ॥
चूर्णितामधुनालीढाभेदिनीचाग्निबोधिनी ॥

अर्थ—पीपर और त्रिफला इनका चूर्ण सहतसैं चाटे तो भेदक और अग्नि दीप्त कर्ता है ॥

कट्फलादिचूर्ण

कट्फलंमुस्तकंतिक्तासठीशृंगीचपौष्करं ॥ चूर्णमेषांचमधुना शृंगवेररसेनवा लिहेज्जीर्णज्वरहरंकासश्वासारुचिंजयेत् ॥ वायुंशूलंतथाछर्दिंक्षयंचैवव्यपोहति ॥

अर्थ—कायफर, नागरमोथा, कुटकी, कचूर, काकडासिंगी, और पुहकरमूल, इनका चूर्ण सहतसैं अथवा अदरखके रसमें चाटे तो जीर्णज्वर, खांसी, श्वास, अरुचि वायशूल, वमन, और क्षयरोग इनको नाश करे ॥

त्रिवृच्चूर्ण

चूर्णंत्रिवृत्कणाश्यामात्रिफलानांसितासमं ॥
भेदिकोष्ठरुजादाहगौरवज्वरनाशनं ॥

अर्थ—निसोथ, पीपल, सारिवा, हरड, वहेडा, और आमला, इनका समान भाग चूर्ण करे सब चूर्णके वरावर मिश्री मिलावे यह भेदी, पेटके शूलको, दाह भारीपना, और ज्वर इनका नाश करे ॥

दुसरालवंगादिचूर्ण

लवंगजातीफलपिप्पलीनांभागंप्रकल्प्याक्षसमानमेषां ॥ पलार्धमेकंमरिचस्यदेयंपलानिचत्वारिमहौषधस्य ॥ सितासमंचूर्णमिदंप्रगृह्यरोगांश्चचाशुप्रबलान्निहंति ॥ कासज्वरारोचकमेहगुल्मश्वासाग्निमांद्यग्रहणीप्रदोषं ॥

अर्थ—लौंग, जायफल, और पीपल ये प्रत्येक छः छः मासे, कालीमिरच

२ तोले सोंठ ११ तोले इन सबका चूर्ण करके इसमें बराबरकी मिश्री मिलायके देने सैं प्रबलरोग, खांसी, ज्वर, अरुचि, प्रमेह, गोला, श्वास, मंदाग्नि, और, संग्रहणीके विकारोंको दूर करे ॥

पंचाजादि

पंचाज्यंपंचगव्यंवापंचाविकमथापिवा ॥ जीर्णज्वरविनाशार्थंपिबेद्वापंचमाहिषं॥ दधिदुग्धंतथाज्यंचविण्मूत्रंपंचशस्यते॥ पूर्वोक्तंपंचकंज्ञेयंचिकित्सायांभिषग्वरः ॥

अर्थ—बकरी और गौका दूध, दही, घी गोवर, मूत्र ये एकत्र कर जीर्णज्वरमें देय तो जीर्णज्वर दूर हो, अथवा भैसका दूध दही आदि पांचो पदार्थ रोगीको देवे तो उसका जीर्णज्वर दूर हो ॥

लोध्रादिचूर्ण

लोध्रचंदनषड्ग्रंथिशर्कराघृतमाक्षिकैः ॥ सक्षीरेणविषंयुक्तंजीर्णज्वरहरंपरं ॥

अर्थ—लोध, चंदन, पीपरामूल, और अतीस इनके चूर्गमें मिश्री, सहत, घृत, और दूध मिलायके लेवे तो ये जीर्णज्वरको दूर करे ॥

वर्धमानपिप्पलीयोग

क्रमवृद्धयादशाहानिदशपैप्पलिकंदिनं ॥ वर्धयेत्पयसा सार्धं तथैवानमयेत्पुनः ॥ पिप्पलीनांसहस्रस्यप्रयोगोयंरसायने ॥ पिष्टास्ताबलिभिः पेयाः शृतामध्यबलैर्नरैः ॥ चूर्णिताहीनबलिनांहितामधुसमायुताः ॥ कासाजीर्णारुचिश्वासहृत्पांडुकृमिरोगिणाम्॥मंदाग्निविषमाग्नीनांशस्यतेगुडपिप्पली ॥ पंचद्वौसप्तदशवापिप्पल्यः क्षौद्रसर्पिषा ॥ लीढाज्वरंश्वासकासंहृद्रोगंपांडुकामलां ॥ प्रदरंचप्रमेहंचहन्यात्तत्रांकिमद्भुतं ॥

अर्थ—क्रमवृद्धिसैं दसपीपल दशदिन दूधमें ओटायके पीवे इस प्रकार रसायनमें यह हजार पीपलोंका प्रयोग कहा है, तहां वलवान पुरुषको पीसके देवे तथा मध्यवलवारे पुरुषको दूधमें ओटायके देवे, और हीनवली रोगीको चूर्ण कर सहतके साथ चाटे तो खांसी, अजीर्ण, अरुचि, श्वास, हृद्रोग, पांडुरोग, कृमि मंदाग्नि, तथा विषमाग्नि, इनको उत्तम है, यदि गुड, सहत, घृत इनसैं दस अथ-

वा इससें अधिक देवे तो श्वास, खांसी, हृद्रोग, पांडु, कामला, प्रदर, और प्रमे ह इनका नाश करे इसमें आश्चर्य नहीं है ॥

पिप्पलीमोदक

क्षौद्राद्द्विगुणितंसर्पिर्घृताद्द्विगुणपिप्पली ॥ सिताचद्विगु-
णातस्याः क्षीरंदेयंचतुर्गुणं ॥ चातुर्जातंक्षौद्रतुल्यंपक्त्वाकु-
र्याच्चमोदकान् ॥ धातुस्थांश्चज्वरान्सर्वान्श्वासंकासंचपांडु
तां धातुक्षयंवन्हिमाद्यंपिप्पलीमोदकोजयेत् ॥

अर्थ—सहत १ भाग, घृत २ भाग, पीपर ४ भाग, मिश्री ८ भाग, दूध बत्तीसभाग, और चातुर्जात १ भाग इस प्रमाण सब वस्तु लेकर पाककी विधिसैं लड्डू वनावे इसमेंसे १ लड्डू नित्य खावे तो यह पिप्पलीमोदक धातुगत संपूर्ण ज्वरोंको, श्वास, खांसी, पांडुरोग, धातुक्षय, और मंदाग्नि इनको नाश करे

मधुपिप्पलीयोग

पिप्पलीमधुसंयुक्तामेदःकफविनाशिनी ॥
श्वासकासज्वरहरापांडुप्लीहोदरापहा ॥

अर्थ—पीपल सहतके साथ सेवन करनेसैं मेद, कफ, श्वास, खाँसी, ज्वर, पांडुरोग, प्लीहा और उदररोगको दूर करे ॥

दुग्धयोग

क्षीणेकफेज्वरेजीर्णेअल्पदोषेपिपासिते ॥
दाहार्तेतुपयोयोज्यंतेनैवतुविषंभवेत् ॥

अर्थ—क्षीण कफवालेके तथा जीर्णज्वर होनेपर अल्पदोष होनेंके कारण प्यास और दाह होते है, इसीसैं उसको दूध पिवावे परंतु नवीन ज्वरमें दूध देना विषतुल्य है ॥

पंचमूलीक्षीर

सर्वज्वराणांजीर्णानांक्षीरंभैषज्यमुत्तमं ॥ श्वासात्कासाच्छिरः
शूलात्पार्श्वशूलात्सपीनसात ॥ मुच्यतेज्वरितःपीत्वापंचमू
लाशृतंपयः ॥

अर्थ—सालपर्णी, पृष्टपर्णी, छोटी कटेरी, वडी कटेरी, और गोखरू, इन पां-

चौंकी जडको कूट उसमे अठगुना दूध और दूधका चौगुना पानी डालके औं-टावे जब दूध मात्र रह जावे तब रोगीको पिवावे तो श्वास, खाँसी, मस्तकशूल-पीठका दर्द, पीनस, और जीर्णज्वर ये दूर होय, इन संपूर्ण जीर्ण ज्वरों मे यह दुग्ध पीना उत्तम है ॥

सितादिपेया

सिताज्यविश्वखर्जूरीमृद्वीकाभिःशृतंपयः ॥ पृथक्चिचबिल्वव
र्षाभूपयश्चोदकमेवच ॥ क्षीरावशिष्टंतत्पीतंतद्धिसर्वज्वरापहं ॥

अर्थ—मिश्री, घृत, सोंठ, छुहारे और दाख, इनको डालके औटाए हुए दू-धको, अथवा वेलगिरी, सोंठ, दूध और पानी ये एकत्र करके दूध मात्र शेषर हने पर्यंत औटावे फिर इसको पीवे तो सर्वज्वरको दूर करे ॥

बिल्वादिकाढा

साधितंबिल्वपेशीभिर्मूलेनामंडकस्यच ॥
सद्योहंतिपयःपीतंज्वरंसंपरिवर्तकं ॥

अर्थ—दूधमें वेलगिरीका अथवा सपेद वडीजाईके जडका काढा करके लें-नेसैं यह घोर ज्वरका नाश करे ॥

मधुकादिकाढा

मधुकारग्वधाद्राक्षातिक्तायासफलत्रिकैः॥
सपटोलैर्जलंभेदिज्वरंहंतित्रिदोषजं ॥

अर्थ–मुलहटी, अमलतासका गूदा, मुनक्कादाख, कुटकी,धमासो, हरड,वहेडा, आमला, और पटोलपत्र इनका काढा भेदी और सबतरहके ज्वरोंका नाशकरेहै ॥

अमृतादिहिम

अमृतायाहिमःपेयोजीर्णज्वरहरःपरः ॥

अर्थ—पूर्वोक्त- प्रकारसे गिलोयका हिम करके पीवेतो जीर्णज्वरका नाशहोय

गुडयोग

गुडंपिप्पलिमूलस्यजलेनालोडितंपिबेत् ॥
चिरादपिचसन्नष्टांनिद्रामाप्नोतिमानवः॥

अर्थ—गुडको पीपरामूलके जलमें पीस छानके पीवे तो बहुत कालकी गई हुई निद्रा आवे

वार्ताकभक्षणयोग

सायंस्विन्नमशेषंकृत्वावार्ताकमेवपूर्वाण्हे ॥
मधुयुतमश्नन्नचिरान्नष्टामथाजयेन्निद्रा ॥

अर्थ–सायंकालमें बैगनको भून सहतमें मिलायके खाय तो तत्काल निद्रा आवे

गुडूचीस्वरस

पिप्पलीमधुसंमिश्रंगुडूचिस्वरसंपिबेत् ॥
जीर्णज्वरकफप्लीहाकासारोचकनाशनं ॥

अर्थ—गिलोयके रसमें पीपल और सहत मिलायके पीवे तो जीर्णज्वर, कफ प्लीहा, खांसी, और अरुचि इनको नाश करे ॥

गुडपिप्पलीयोग

जीर्णज्वरेऽग्निमांद्येचशस्यतेगुडपिप्पली ॥ कासाजीर्णारुचि श्वासहृत्पांडुकृमिरोगनुत् ॥ द्विगुणःपिप्पलीचूर्णात्गुडोत्र भिषजांमतः ॥

अर्थ—जीर्णज्वरपर और मंदाग्निपर गुड और पीपर सेवन उत्तम है, तथा खांसी, अजीर्ण, अरुचि, श्वास, पांडु, और कृमिरोग इनको नाश करे, इस जगह गुड पीपलसें दुना मिलाना चाहिये ॥

वातकफात्मकज्वरोंपर

वातश्लेष्माज्वरोक्तास्यात्क्रियावातबलासके ॥ जीर्णज्वरेक फेक्षीणेदाहतृष्णासमन्विते ॥ पयःपीयूषसदृशंतन्नवेतुविषो पमं ॥ चंदनाद्यंहितंतैलंशोषाधिकारकीर्तितं॥तथानारायणं तैलंजीर्णज्वरहरंपरं ॥

अर्थ—वातकफ संबंधी जीर्णज्वरपर वातश्लेष्म ज्वरोक्त क्रिया करनी चाहिये, और जिनके कफ न होय केवल दाह, और तृषा मात्र विकार हो उसको दूध पीना अमृतके तुल्य है और वही दूध नवीन ज्वरवालेको विषके समान अवगुणकरता है, और शोषाधिकारमें चंदनादि तैल कहा है वो तथा नारायण तैल ये जीर्णज्वर नाशक है इसवास्ते इनका मालिस करे ॥

वर्धमानपिप्पली

त्रिवृध्यापंचवृध्यावासप्तवृध्याथवाकणाः ॥ गव्यक्षीरेणसंपि

णः पिबेद्दशदिनानिह॥तैर्वह्रासयेदेताएवंविंशतिवासरान्॥ पिबतांज्वरशांतिः स्यात्पांडुरोगश्चशाम्यति॥कासश्वासोग्नि मांद्यंचकफाधिक्यंचनश्यति ॥

अर्थ—तीन २ वृद्धि करके अथवा पांच पांच वृद्धि करके पीपल गौके दूधमें औटाय और पीसके दसदिनतक सेवन करे, फिर उसी प्रकार क्रमसैं घटाता चला आवे इस प्रकार वीस दिनतक लेय तो ज्वरकी शांति होय, तथा पांडुरोग, खांसी, श्वास, मंदाग्नि, और कफ इनको नाश करे ॥

नस्य

शिरोगौरवशूलघ्नमिंद्रियप्रतिबोधनं ॥ जीर्णज्वरेरुचिकरंद द्याच्छिर्षविरेचनम् ॥ मधुनावाथतैलेनज्वरघ्नेनप्रयोजयेत् ॥

अर्थ—जीर्णज्वरमें मस्तकका भारीपनशूल इनके नाशके वास्ते और इन्द्रियोंके चैतन्यता करनेके वास्ते, तथा रुचि देनेवाला ऐसा मस्तक रेचन देवे वो सहतसैं अथवा तैल करके किंवा ज्वरघ्न योगों करके देवे ॥

रक्तकरवीरादिलेप

रक्तकरवीरपुष्पंकुष्ठंधात्रीफलंसधान्यांबु ॥
कल्कैः कोष्णोलेपोज्वरेषुशिरसोरुजोहंति

अर्थ—लालकनेरके फूल, कूठ, आमला, धनिया और नेत्रवाला इनको गरमजलमें पीस गरम करके जब थोडा गरम रहे तब लेप करे तो मस्तक पीडा दूर होय ॥

हिंग्वादिनस्य

हिंगुसैंधवसंयुक्तंनस्यंस्यादनवंघृतं ॥

अर्थ—पुराने घीमें हींग, और सैंधानिमक मिलायके नस्य देवे तो ज्वरशांति होय

जयंतीमूलिकाबंध

श्वेतजयंतीमूलंविधिनाबद्धंशिखांतरेहंति ॥
क्षीणज्वरंनराणांखलइवदुरितेनचात्मानं ॥

अर्थ—सफेद जयंती कीजडको विधियुक्त चुटियामें बांधे इससैं जीर्णज्वर दूर होय जैसे दुष्टपुरुष पापोसैं अपनी आत्माको नाश करता है ॥

वायसजंघाबंध

वायसजंघामूलंशिरसिनिबद्धंतुकाकमाच्याश्च ॥
विधृतंनिद्राकरणंस्नुङ्मूलंवाशितंसगुडं ॥

अर्थ—कौआडोडीकी जडको अथवा मकोयकी जडको मस्तकमें बाँधनेसैं निद्राको उत्पन्न करे, अथवा थूहरकी जडको गुडके साथ खानेसैं निद्राको उत्पन्न करे

मुक्तापंचामृत

मुक्ताप्रवालखुरवंगककंबुशुक्तिभूनिंबभूदधिदगिंदुसुधांशुभागं॥इक्षूरसेनसुरभेःपयसाविदारीकन्यावरीषुरसहंसपदीरसैश्च ॥संमर्दयामयुगलंचवनोत्पलाभिर्दद्यात्पुटानिमृदुलानिचपंच पंच॥पंचामृतंरसविभुंभिषजाप्रयोज्यंगुंजाचतुष्टयमितंचपलारजश्च ॥ पात्रेनिधायचिरसूतवनस्पतीनांदुग्धेनयःप्रपिबतः खलुचात्मभुक्तं ॥ जीर्णज्वरःक्षयमियादथसर्वरोगाःस्वीयानुपानकलिताश्चशमंप्रयांति ॥

अर्थ—मोती १ तोले, मुंगा ४ तोले, उत्तम वंग २ तोले, शंख १ तोले, सीपी १ तोले, इनकी भस्म तथा चिरायता, १ तोले, इन सबको एकत्र कर ईखके रस, गौका दूध, विदारीकंद, घी गुवार, सतावर, डाभ, और हंसपदी, इनके रसमें दो दो प्रहर खरलकर आरने उपलोकी पांच पाँच पुट देवे यह (पंचामृत रस) नित्य ४ रती और पीपलका चूर्ण पात्रमें डालके बहुत दिनकी व्याही और वनस्पति खानेसैं उत्पन्न हुआ दूध उसके साथ सेवन करे थोडा भोजन करे तो जीर्णज्वर, तथा रोगोक्त अनुपानके साथ देनेसैं सर्व रोगोका नाश करे है।

जीर्णज्वरांकुश

मृतसूताभ्रनागार्ककांतवैक्रांतमेवच ॥ हिंगुलंटंकणंगंधंविषं कुष्ठसमांशकं॥त्रिकटुत्रिफलामुस्ताभृंगनिर्गुंडिकाद्रवैः॥ भावयेत्रिदिनंचैवमाषमात्रानुपानतः ॥ जीर्णज्वरेक्षयेकासेदोषेमंदानलेषुच ॥ पांडूहलीमकंगुल्ममुदरंचार्दितंजयेत् ॥ ग्रहणीशूलरोगांश्चअरोचकमनेकधा ॥ कांतितेजोबलंपुष्टिंवीर्यवृद्धिं विवर्धयेत ॥ साध्यासाध्यंनिहंत्याशुरसोजीर्णज्वरांकुशः ॥

अर्थ—पारेकी भस्म, अभ्रक, शीशेकी भस्म, तामेकी भस्म, कांतलोह, और वैक्रांत इनकी भस्म, तथा हिंगुल, सुहागा, गंधक, विष, कूठ, ये औषध समान भाग ले फिर त्रिफला, त्रिकुटा, नागरमोथा, भांगरा, और निर्गुंडी, इनके काढेकी अथवा स्वरसकी तीनदिन भावना देवे और अनुपानके साथ एक उडदमात्र देवे तो जीर्णज्वर, क्षई, खाँसी, मंदाग्नि, पांडुरोग, हलीमक, गोला, उदर, अर्दितरोग, संग्रहणी, शूल, सर्वप्रकारकी अरुचि ये रोग साध्य अथवा असाध्य होय तो भी नाश होवे, तथा यह जीर्णज्वरांकुश, कांति तेज, बल, पुष्टि, और वीर्य इनको बढावे ॥

धातुज्वरांकुश

लोहाभ्रकंताम्रभस्मपारदंगंधकंविषं ॥ व्योषाफलत्रिकंकुष्टंसमभागेनमर्दयेत् ॥ भृंगनीरेणचार्द्रस्यावरानिर्गुंडिकारसैः ॥ त्रिदिनंमर्दयित्वातुमुद्गमानावटीकृता ॥ यथारोगानुपानेनसर्वव्याधिविनाशिनी॥अजीर्णवातंकासघ्नीदीपनीरुचिवर्धनी॥ सर्वधातुज्वरान्हंतिसोयंधातुज्वरांकुशः ॥

अर्थ—लोह, अभ्रक, तथा तामा इनकी भस्म, और पारा, गंधक, विष, सोंठ मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आमला, कुठ, ये समान भाग ले खरलकर भांगरा, अदरख, और निर्गुंडी इनके रसकी तीनदिन भावना देवे, फिर मूंगके बराबर गोली बनावे एक गोली रोगोक्त अनुपानके साथ देवे तो सर्व व्याधियोंको नाश करे तथा अजीर्ण और वात कफ इनको नाश करे तथा दीपन, रुचि बढानेवाला, और सर्व धातुगत ज्वरनाशक है इसको धातुज्वरांकुश कहते है ॥

कल्याणघृत

तालीसत्रिफलैलवालफलिनीसौम्यापृथक्पर्णिनीदंतीदाडिमचारुचंदननिशादार्वीनिशालोत्पलैः ॥ जातीपद्महरेणुपद्मकयुतैर्जंतुघ्नमंजिष्ठकारुक्सिंहीत्रुटिसारिवाढ्यनतैर्नागेंद्रपुष्पान्वितैः ॥ अष्टाविंशतिभिश्चतुर्गुणजलंकल्याणमेभिःशृतं हंत्येतत्त्रिचतुर्थकज्वरमुरःकंपंसवंध्यामयं॥ सापस्मारगदोदरामपवनोन्मादाःसजीर्णज्वराजायंतेनपुनःकृतेनहविषाकल्याणकेनामुना ॥

अर्थ—तालीसपत्र, त्रिफला, इलायची, नेत्रवाला, सालपर्णी, दंती, अनारदाना, उत्तमचंदन, हलदी, दारुहलदी, इन्द्रायनकीजड, कमलकंद, जाई, कमल, पित्तपापडा, पद्माख, वायाविडंग, मजीठ, कूठ, कटेरी, छोटीइलायची, दोनोप्रकारकी सारिवा, तगर, वांझककोडी और लौंग, इन अठाइस, औषधोंका चौगुनापानीडालके काढाकरेउस काढेमें घी डालके पचावे जब जल जरके घृतमात्र शेष रहे तब उत्तार लेवे, यह कल्याण घृत, त्र्याहिक, चातुर्थिकज्वर, हृदयका कंप, वंध्यापना, मृगी, उदर, आमवात, उन्माद, जीर्णज्वर, इन व्याधियोंको फिर नहीं होने देवे ॥

चंदनादितैल

चंदनाद्यंहितंतैलंशोषाधीकारकीर्तितं ॥
तथानारायणंतैलंजीर्णज्वरहरंपरं ॥

अर्थ—शोषाधिकारमें कहा चंदनादि तैल तथा नारायण तैल ये जीर्णज्वरको नाश करे ॥

लाक्षादितैल

लक्षारसस्याढकमस्तुतैलप्रस्थंपचेन्मस्तुचतुर्गुणंच॥पिष्टाशताव्हारजनीमधूकंरास्नाश्वगंधाकटुकासमूर्वा ॥ हरेणुकंचंदनमुस्तदारुकुष्टंपृथक्कर्षमितंक्षिपेत्तत् ॥ पृष्टत्रिकांगस्फुटनंसशूलंदौर्गंध्यकंडूभ्रमवातरोगान् ॥

अर्थ—२५६ तोले लाखका रस, तेल सेरभर, दहीकीतोड चारसेर, शतावर- हलदी, मुलहटी, रास्ना, असगंध, कुटकी, मूर्वा, पित्तपापडा, लालचंदन, नागरमोथा, देवदारु, और कूठ, ये प्रत्येक तोले २ भर लेय, सबको एकत्रकर तेल सिद्ध करावे इसको (लाक्षादि तैल) कहते है ये सर्व विषमज्वर, और पीठका दर्द, त्रिकस्थानकी पीडा, सरीरका फटना, शूल, दुर्गंध, खुजली, भ्रम, और वातरोगको नाश करे ॥

दूसराचंदनादितैल

चंदनांबुनृपंवाटचंयष्टिशैलेयपद्मकं ॥ मंजिष्ठासरलादारुसठ्येलानागकेसरं ॥ पत्रंतैलंसुरामांसीकंकोलंचनतांबुदं ॥ हरिद्रेसारिवेतिक्तंलवंगागरुकुंकुमं ॥त्वग्रेणुनालिकाचेतितैलंम

स्तुचतुर्गुणं ॥ लाक्षारससमंसिद्धंग्रहघ्नंबलवर्णकृत् ॥ अपस्मार क्षयोन्मादक्षतालक्ष्मीविनाशनं ॥ गात्रस्यस्फुटनंदाहंकंडूंजी र्णज्वरापहं ॥

अर्थ—चंदन, नेत्रवाला, खिरनीकावृक्ष, खरेठी, मुलहटी, शिलाजीत, पद्माख, मजीठ, सरल (देवदारुका भेद) देवदार, कचूर, इलायची, नागकेशर-तमालपत्र, तेल, कांकोली, जटामांसी, कंकोल, छड, नागरमोथा, हल्दी, दारुहल्दी, सारवा, चिरायता, लौंग, अगर, केशर, दालचीनी, पित्तपापडा, गुडतजी, तेल तथा चौगुना दहीका पानी और इतनाही लाखका रस, सबको एकत्र कर तैलकी विधिसैं इसको सिद्धकरे तो यह ग्रहपीडा नाशक, बल, कांति, इनको करे तथा अपस्मार, क्षय,उन्माद, घाव, अलक्ष्मी, देहका फटना, दाह, खुजली, जीर्णज्वर इनको नाश करे ॥

हरीतकीपाक

प्रस्थमेकंशिवानांचजलद्रोणेनिपापयेत् ॥ द्विप्रस्थंदशमूलस्य सार्धप्रस्थायवाः स्मृताः ॥ ग्रंथिकंचित्रकंभार्गीशंखपुष्पीबला सठी ॥ विश्वापामार्गमेघाश्वपुष्करंगजापिप्पली ॥ इमानितत्र योज्यानिप्रत्येकंचपलंपलम् ॥ अष्टांशेनिसृतेचैषापथ्यापि ष्टापचेत्ततः ॥ गुडप्रस्थत्रयंयोज्यंगोघृतंपलपंचकं ॥ जातीफलं केसरंचचतुर्जातंचधात्रिका ॥ दीप्याक्षौजातिपत्रींचताम्रंलोहं कटुत्रिकं ॥ चूर्णमेषांक्षिपेत्तत्रप्रत्येकंचपलार्धकं ॥ पथ्यापाकइ तिख्यातःकथितोभृगुणागुणा ॥ जीर्णज्वरहरःसद्यस्तुष्टिपुष्टिब लप्रदः ॥ रसकोपेग्रहण्यांचक्षीणधातौचनिःसृतौ ॥ गुदामयेश्वा सकासेवातरक्तेहितोमतः ॥

अर्थ-हरड ६४ तोले, जल १०२४ तोले, दशमूल,१२८ तोले, इन्द्रजों ९६ तोले, तथा पीपरामूल, चीताका छाल, भारंगी शंखाहुली, खरैटी, कचूर, सोंठ, औंगा, नागरमोथा, पुहकरमूल, गजपीपल, ये प्रत्येक चार २ तोले इन सबका अष्टावशेष काढा कर उसमें हरडोंको पीसके डाल देवे, और इसमे गुड १९२ तोले, गौका घी २० तोले, तथा जायफल, केशर, चातुर्जात, आवले, अजमायन, वहेडा,

जावित्री, ताम्रभस्म, लोहभस्म, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, इन प्रत्येकका चूर्ण दो दो तोले डालकर पाक बनावे इसको (हरीतकीपाक) कहते है यह जीर्ण ज्वर, संग्रहणी, क्षीणता, अतिसार, बवासीर, श्वास, खाँसी, वातरक्त, और रसकोप इनको दूरकरे तथा तत्काल तुष्टी, पुष्टी, और बल, इनको देय है ॥

कौक्कुटघृत

कुक्कुटंतरुणंसद्यःशिरःपादांत्रवर्जितं ॥ तस्यमांसस्यकुर्वीत-शृतंपलशतंभिषक् ॥ बृहतीकंटकारीचशृंगीकर्कटकस्यच ॥ बदराणिकुलित्थाश्वभार्गीआमलकीतथा ॥ शठीपुष्करमूलंचपंचमूलंमहत्तथा ॥ एतत्तुलांचसंगृह्यद्विद्रोणेत्वंभसःपचेत् ॥ पादशेषंपरिस्राव्यकषायंग्राहयेद्भिषक् ॥ षड्गुणंक्षीरमाहृत्यविपचेत्तुघृताढकं ॥ तत्रकल्कीकृतंदद्यादस्वल्पंपंचमूलकं ॥ तत्साधुसिद्धंविस्राव्यशुभेभांडेनिवापयेत् ॥ तस्यकालेपिबेन्मात्रांबलदोषमवेक्ष्यच ॥ जीर्णेतस्मिंस्तुभुंजीतरक्तशाल्योदनंतथा ॥ जीर्णज्वरोपसृष्टानांशुष्यतांश्वासकासिनाम् ॥ प्रयोज्यंकौक्कुटंसर्पिर्यक्ष्मिणांविषमज्वरे ॥ लेखनंबृंहणीयंचबलवर्णाग्निवर्धनं ॥

अर्थ–उत्तम तरुण मुरगेका मस्तक, पैर और आँतडी निकालके उसके मांसका काढा ४०० तोले लेकर उसमें दोनों कटेरी, कांकडासिंगी, वेर, कुलथी, भारंगी, आमल, कचूर, पुहकरमूल, और बृहत्पंचमूल मिलाय सब ४०० तोले लेवे, उसको२०४८ तोले जलमें डालके चतुर्थांशावशेष काढा करे, और काढेका छः गुना दूध और १०२४ तोले घृत डालके उसमें बृहत्पंचमूलका कल्क मिलाय सबको एकत्र कर मंदाग्निसें घी शेष रहने पर्यंत पचावे जब सिद्ध होजाय तब उतारके उत्तम पात्रमें भरके धर रक्खे, फिर दोषोंका बलाबल देखके देवे इसके जीर्णहोनेके उपरांत लाल चाँवलोंका भात भोजन करावे तो यह (कौक्कुट घृत) जीर्णज्वर, श्वास, खांसी, क्षया, विषमज्वर, इनको दूरकरे, तथा लेखन, बृंहण, और बल, वर्ण तथा अग्नि इनको बढावे ॥

वासाद्यंघृतं

वासांगुडूचींत्रिफलांत्रायमाणांदुरालभां ॥ पक्त्वातेनकषाये-

णपयसोद्विगुणेनच ॥ पिप्पलेमुस्तमृद्वीकाचंदनोत्पलना-
गरैः॥ कल्कीकृतैश्चविपचेद्घृतंजीर्णज्वरापह ॥

अर्थ—अडूसा, गिलोय, त्रिफला, त्रायमाण, और धमासो इनके काढेमें दुगना दूध और पीपल, नागरमोथा, दाख, लालचंदन, कमलगट्टा, औरसोंठ इनको डालके सबको एकत्रकर उसमें घृत सिद्धकरे तो यह जीर्णज्वरकोनाश करे

पिप्पल्यादिघृत

पिप्पल्यश्चंदनंमुस्तमुशीरंकटुरोहिणी ॥ कलिंगकात्वामल
कीसारिवातिविषंस्थिरा ॥ द्राक्षामलकबीजानित्रायमाणा
निनिदिग्धिका ॥ सिद्धमेतत्घृतंसद्योजीर्णज्वरमपोहति॥क्षयं
कासंशिरःशूलंपार्श्वशूलमरोचकं॥अंगाभिपातमग्निंचविषमंस
न्नियच्छति ॥ पिप्पल्यादित्विदंक्कापितंत्रेक्षीरेणपच्यते ॥

अर्थ—पीपल, लालचंदन, नागरमोथा, नेत्रवाला, कुटकी, इन्द्रजव, आमले, सारिवा, अतीस, सालपर्णी, दाख, इमलीकेचीया, त्रायमाण, कटेरी, इनके काढेमें अथवा कल्कमें घृत सिद्धकरे तो यह जीर्णज्वरको तत्काल नाश, करे तथा क्षय, खांसी, मस्तक पीडा, पसवाडेका दर्द, अरुचि, अंगको गरमी, और अग्नि इनका नाश करे यह पिप्पल्यादि घृत किसी ग्रंथमें दूधके साथ पचावे असा कहाहै

क्षीरवृक्षादितैल

क्षीरवृक्षासनारिष्टाजंबूसप्तच्छदार्जुनैः ॥ शिरीषखदिरास्फो
तामृतवल्याटरूषकैः ॥कटुकापर्पटोशिरवचातेजोवतीघनैः॥
साधितंतैलमभ्यंगादाशुजीर्णज्वरःक्षयं ॥

अर्थ—पीपर, विजैसार, नीमकी छाल, सतोना, कोह, सिरस, खैर, सारिवा, गिलोय, अडूसा, कुटकी, पित्तपापडा, खस, वच, मालकांगनी, और नागरमोथा, इनके काढेमें अथवा कल्कमें तेल सिद्धकरे फिर इसका देहमें मालिस करे तो तत्काल जीर्णज्वरका नाश करे ॥

सेवंतीपाक

श्वेतपुष्पसहस्राणिघृतप्रस्थेविपाचयेत् ॥ घृतेपक्केकृतेतास्मि
न्निक्षिपेद्वैतदौषधं ॥ सितोपलाचतुर्भागाचातुजातंपलंपलं॥

मृद्वीकाषट्पलंचैवक्षिपेन्मधुपलाष्टकं॥ धारासत्वंचार्धपलंमवे मेकत्र कारयेत्॥कर्षप्रमाणंतत्लेह्यंसततंचगदातुरैः॥जीर्णज्वरे क्षयेकासेअग्निमांद्येप्रमेहके॥प्रदरंरक्तजान्रोगान्कुष्ठ र्शांसि विनाशयेत्॥नेत्ररोगान्सुदुःसाध्यास्तथासर्वान्मुखोत्थितान्॥

अर्थ—सेवतीके सफेद फूल १००० लेकर घीमें सिजवावे, फिर इसमें मिश्री चार भाग, दालचीनी, तमालपत्र, इलायची, नागकेशर, ये प्रत्येक चार २ तोले लेवे, दाख २४ तोले, और सहत ३८ तोले तथा गिलोयका सत्व २ तोले, इन सबको एकत्र कर पाककीविधिसें बनावे इस पाकको तोले भर नित्य प्रातःकाल लेय तो (यह सेवती पाक,) जीर्णज्वर, क्षई, खांसी, मंदाग्नि, प्रमेह, प्रदर, रक्त-विकार, कोढ, अर्शरोग, और दुःसाध्य नेत्ररोग, तथा मुखरोगोंको नाश करे ॥

पिप्पलीपाक

प्रस्थंपिप्पलिमादायक्षीरेणैवानुपेषयेत् ॥ अर्थाढकंघृतंगव्यं शुद्धंखंडाढकंतथा ॥ पचेन्मृद्वग्निनाताश्चावत्पाकमुपागतं ॥ शीतीभूतेक्षिपेतस्मिंश्चातुर्जातंपलत्रयं ॥ योजयेन्मात्रयायु क्तंदोषधात्वग्निसाम्यतः ॥ बल्यंवृष्यंतथाहृद्यंतेजोवृद्धिकरं परं ॥ जीर्णज्वरक्षतक्षीणमश्रांतंचैवबृंहयेत॥ छर्दितृष्णारुचि श्वासशोषजिव्हासकामलाः ॥ हृद्रोगंपांडुरोगंचप्रदरंचत्रिदो षजं ॥ वातरक्तप्रतिश्यायमामवातंविनाशयेत् ॥ संवत्सरप्र योगेणवलीपलितवर्जितः ॥

अर्थ—६४ तोले पीपल लेके दूधसें पीसें फिर १२८ तोले घीमें मंदाग्निसें कुछभूने तथा १०२४ तोले मिश्रीकी चासनीमें पाक बनावे और दालचीनी, तमालपत्र, इलायची, नागकेशर,इनका चूर्ण १२तोले डालके कतरी जमायलेवे पश्चात् रोगीका दोष धातु अग्निका बलाबल देखके देवे तो धातुको बढावे, बलकरे. हृद्रयको हितकारी, तथा तेजकी वृद्धिकरे, और जीर्णज्वरवालेको, तथा क्षतक्षयसें क्षीणपुरुषको पुष्टिकरे, वमन, प्यास, अरुचि, श्वास, शोष, जिव्हाके रोग, कामला, हृदयरोग, पांडु, प्रदर, त्रिदोष, वातरक्त, पीनस, और आमवात, इनका नाश करे. इस पाकको एकवर्ष सेवन करनेसें अंगकी गुजलट, और सपेद बालोंका नाश कर तरुणता करे है ॥

ज्वरमुक्तलक्षण

प्रकाशोलाघवंग्लानिः स्वस्थतासुप्रसन्नता ॥
उपद्रवानिमितंचसम्यक्लंघितलक्षणं ॥

अर्थ—इन्द्री आपने अपने विषयग्रहण करनेमें समर्थ हो, शरीरमें हलकापना, ग्लानि, चित्तकी स्वस्थता, तथा प्रसन्नता और सर्व उपद्रवकी शांति ये ज्वर मुक्तके लक्षण हैं ॥

साध्यज्वरलक्षण

वलवत्स्वल्पदोषेतुज्वरःसाध्योनुपद्रवः ॥

अर्थ—जिसज्वरमें मनुष्यकी शक्ति क्षीण न होय और वातादिक दोषोंका कोप थोडा होय तथा ज्वरके उपद्रव विशेष न होय उसज्वरको साध्य कहा है

असाध्यज्वरलक्षण

हेतुभिर्बहुभिर्जातोबलिभिर्बहुलक्षणः॥ज्वरःप्राणांतकृद्यश्चशीघ्रमिंद्रियनाशनः ॥ ज्वरक्षीणस्यशूनस्यगंभीरोदैर्घ्यरात्रिकः ॥ असाध्योवलवान्यश्चकेशसीमंतकृज्ज्वरः ॥

अर्थ—अत्यंतज्वर और प्रवल हेतुओं कर्के उत्पन्न हुआ, तथा जो उत्पन्न होतेही किसी एक इन्द्रियको नष्ट कर देवे,वो ज्वर प्राणांतकारी जानना। तथा जिस ज्वरमें मनुष्यकैं क्षीण हो कर अंगोंमें सूजन आय जावे वो तथा गंभीर धातुप्रत जानेवाला और बहुत दिन तक देहमें रहने वाला तथा अंतर्वेगी, और जो ज्वर बहुत आनकर वालोंमें स्त्रियोंके मांगके समान रचना करने वाला असै सब ज्वर असाध्य हैं ॥

गंभीरज्वरलक्षण

गंभीरश्चज्वरोज्ञेयोह्यंतर्दाहेनतृष्णया ॥
आनद्धत्वेनदोषाणांश्वासकासोद्गमेनच ॥

अर्थ—अंतर्दाह, तृषा, दोषोंकी प्रबलता, श्वास, खांसी, ये लक्षण जिस ज्वरमें हों उसको गंभीरज्वर कहते हैं ॥

असाध्यलक्षण

आरंभाद्विषमोयस्तुयस्तुस्याद्दैर्घ्यरात्रिकः ॥
क्षीणस्यचातिरुक्षस्यगंभीरोयस्यहंतितं ॥

अर्थ—जोज्वर उत्पन्न होतेही संतत सतत आदिरूप करके विषम हो जावे और बहुत रात्रिपर्यंत आवे तथा गंभीर हो ये तीनज्वर तथा क्षीण किंवा रूक्ष मनुष्यका ज्वर प्राणनाशक जानना ॥

दुसराप्रकार

शंखस्वेदोतिबहुलंपिच्छलोयातिसर्वशः ॥
देहिनःशीतगात्रस्यतदामरणमादिशेत् ॥

अर्थ—शंख कहिये कनपटीमें बहुत पसीने आनकर सर्व देहमात्र पसीनोंसें चिकट जाय तथा रोगीका देह शीतल पडजावे वो ज्वर प्राणनाशक जानना ॥

तिसराप्रकार

विसंज्ञस्ताम्यतेयस्तुशेतेनिपतितोपिवा ॥
शीतार्दितोंतरुष्णश्चज्वरेणम्रियतेनरः ॥

अर्थ—जो मनुष्य ज्वरसैं विह्वल हो मोहित होजावे, और सोकर तथा बेठकर उठे नहीं, एवं बाहरशीत और भीतरसैं दाहयुक्त हो वो पुरुष ज्वर करके मरणको प्राप्त होवे ॥

चौथाप्रकार

शीतस्वेदोल्ललाटेस्यश्लथसंधानबंधनः ॥
मुह्यत्युत्थाप्यमानस्तुसस्थूलोऽप्यनुजीवति ॥

अर्थ—जिस मनुष्यके मस्तकपर शीतल पसीने आवे और सर्वांगके बंधन ढीले होजावें, तथा उठनेमें मोहको प्राप्त हो ऐसा मनुष्य पुष्टभी हो तथापि नही वचे॥

पांचवाप्रकार

योहृष्टरोमारक्ताक्षोहृदिसंघातशूलवान् ॥
वक्रेणचैवोछ्वसितितंज्वरोहंतिमानवं ॥

अर्थ—ज्वरमें रोगीके रोमांच खडे रहें, नेत्र लाल हों, हृदयमें शस्त्रप्रहार होनेकीसीपीडा, और उँचे मुख करके जो श्वास लेवे, असा ज्वर रोगीका प्राण हरण कर्त्ता जानना ॥

दुसरेप्रकारकेअसाध्यलक्षण

प्रेतैःसहपिबेन्मद्यंस्वप्नेयःकृष्यतेशुना ॥ सघोरंज्वरमासाद्यन

जीवेन्नचमुच्यते ॥ ज्वरःपूर्वाह्निकोयस्यशुष्ककासश्चदारुणः ॥ बलमांसविहीनश्चयथाप्रेतस्तथैवसः ॥ ज्वरोयस्यापराण्हेतुश्लेष्माकासश्चदारुणः ॥ बलमांसविहीनश्चयथाप्रेतस्तथैवसः ॥ सहसाज्वरसंतापस्तृष्णामूर्छाबलक्षयः ॥ विश्लेषणंचसंधीनांमुमूर्षोरुपजायते ॥ गोसर्गेवेदनायस्यस्वेदःप्रच्यवतेध्रुवं ॥ लेपज्वरोपसृष्टस्यदुर्लभंतस्यजीवितं ॥ स्वेदोललाटेहिमवान्नरस्यशीतार्दितस्यातिसपिच्छिलस्य ॥ कंठस्थितोयस्यनयातिवक्षोनूनंयमस्यैतिग्रहंसमर्त्यः ॥ यस्यस्वेदोतिबहलःपिच्छिलोयातिसर्वतः ॥ रोगिणःशीतगात्रस्यतदामरणमादिशेत् ॥

अर्थ—जो स्वप्नमें प्रेतोंके साथ मद्यपान करे, तथा जिसको कुत्ते घसीटे, वो भयंकर ज्वरसैं मरे, जिसको पूर्वाह्नमें घोर ज्वर आवे और सूखी दारुण खांसी हो, तथा वल मांस, जिसका नष्ट हो जावे उसको प्रेतके समान जानना, जिसको अपराण्हमें ज्वर आनकर कफ–खांसी–अत्यंत पीडा देवे, वल, मांस नष्ट होजावे उसको मुरदेके तुल्य जानना, अकस्मात् ज्वरका दाह, तृषा, मूर्च्छा, और वलक्षय तथा संधि २ ढीले होजावें, ए लक्षण आसन्न मरण वालेके होते हैं। प्रातःकाल जिसके मुखपर पसीने आवे और लेपज्वर करके व्याप्त हो उसका वचना कठिन है । जिसके मस्तकपर शीतल पसीने और शीत अधिक लगे अंग-पसीनेसैं चीकटसे होजावे और गलेका पसीना छातीपर आवे नहीं वो मनुष्य यमराजके घर जल्दी जाता है । तथा जिसके अत्यंत और चिकने पसीने चारों तरफसैं आवे और अंग शीतल हो तो रोगी तत्क्षण मरे ॥

दुसराप्रकार

हिक्काश्वासतृषायुक्तंमूढंविभ्रांतलोचनं ॥
सततोछ्वासिनंक्षीणंनरंक्षपयतिज्वरः॥

अर्थ—हिचकी, श्वास, तृषा, इन करके युक्त और जिसके नेत्र चलायमान होतथा वेहोश हो, और निरंतर ऊर्ध्व श्वास लेवे तथा जो क्षीण हो गया हो उसको ज्वर मारता है ॥

असाध्यलक्षणज्वर

हतप्रभेंद्रियंक्षाममरोचकनिपीडितं ॥
गंभीरतीक्ष्णवेगार्तंज्वार्तंपरिवर्जितं ॥

अर्थ—जिस मनुष्यके निस्तेजता आय जावे, इंद्रियोंकी शक्ति चली जावे-कृश हुआ तथा जिसको अरुचि हो तथा अंतर्गत और बाह्य वेगसैं पीडित उसको वैद्य त्याग देवे अर्थात् चिकित्सा न करे ॥

ज्वरमोक्षकेपूर्वरूप

दाहःस्वेदोभ्रमस्तृष्णाकंपोविड्भेदसंज्ञिता ॥
कूजनंचातिवैगंध्यमाकृतिज्वरमोक्षणे ॥

अर्थ—दाह, पसीने, भ्रम, तृषा, कंप, मलका न उतरना, मूर्च्छा, गुंजना, अंगोंमें पसीनोंकी दुर्गंधी ये जानेवाले ज्वर के पूर्वलक्षण होते है, परंतु ये त्रिदोष ज्वरमें होते है अन्यज्वरमें नहीं ॥

ज्वरमुक्तलक्षण

देहोलघुर्व्यपगतक्लममोहतापंपाकोमुखेकरणसौष्ठवमव्यथत्वं॥ स्वेदःक्षवःप्रकृतियोगमनोन्नलिप्साकंडूश्वमूर्ध्निविगतज्वरलक्षणानि॥

अर्थ—शरीर हलकाहो, क्लम, मोह, और ताप, मुखका पाक, कर्णेन्द्रिय वहुत उत्तम शरीरकी सर्व व्यथा दूर हो जावे, पसीने आवे, प्रकृतिके तारतम्य करके छींक आवे, अन्नपर इच्छाहो और मस्तकमें खुजली चले ये सब लक्षण ज्वरमुक्त मनुष्यके जानने ॥

मधुरज्वरलक्षण

ज्वरोदाहोभ्रमोमोहोह्यतिसारोवमिस्तृषा ॥ अनिद्राचमुखंरक्तंतालुजिव्हाचशुष्यति ॥ ग्रीवायांपरिदृश्यंतेस्फोटकाःसर्षपोपमाः ॥ क्षताशनात्स्वेदरोधान्मंथरोजायतेनृणां ॥

अर्थ—ज्वर, दाह, भ्रम, मोह, अतिसार, वांती, प्यास, निद्रानाश, मुखपर लाली, तथा तालु और जिव्हा इनका सूखना, नाडमें सरसोंके समान फुंसी उठे, ये मधुरज्वर अत्यंत घृतपान करनेसैं अथवा पसीनोके रुकनेसैं होता है ॥

सुरसादियोग

सुरसागोमयरसोअजाजीमृतमक्षिका ॥ अथवासावरंशृंगंचंदनंजीरकंजलं ॥ कैरातंकुटजोजाजीछिन्नेलापद्मकंफलं ॥ घृष्ट्वा पीत्वानिहंत्याशुज्वरंमधुरकाभिधं ॥

अर्थ—तुलसी, गोवरका रस, जीरा, मरीहुई मक्खी सावरसींगा, लालचंदन, कालाजीरा, नेत्रवाला, चिरायता, इन्द्रजो, गिलोय, इलायची, और कमलगट्टा, इन सबको जलमें घिसके ४ तोले पीवे तो शीघ्र मधुरज्वर दूर हो ॥

मुस्तादिकाढा

मुस्तापर्पटकोयष्टीगोस्तनीसमभागतः ॥ अष्टावशेषितःक्काथोनिपीतोमधुनासह ॥ पित्तभ्रमंज्वरंदाहंहंतिछर्दिसमंथरां ॥

अर्थ—नागरमोथा, पित्तपापड़ा, मुलहटी, और दाख, ए समान भाग ले अष्टावशेष काढा कर सहत डालके देवे तो पित्त संबंधी भ्रम, ज्वर, दाह, वान्ती, और मधुर ज्वर ए नष्ट हो ॥

विण्मक्षिकाकाढा

विण्माक्षिकोद्भवसमूलसुश्वेतमिक्षुकर्पूरिकापणदरंसुरसाद्रशाखा॥ न्यग्रोधपर्णक्कथनंसमभागकर्षमष्टावशेषज्वरमंथरघातिशीघ्रं॥

अर्थ—मक्खियोकी वीठ, जडसमेत सपेद ईखकी जड, कपूर, कौडी, शंख, तुलसीकी मंजरी, वडके पत्ते, प्रत्येक एक एक तोले लेवे इनका अष्टावशेष काढा करके देवे तो मधुरज्वर नाश होय ॥

चंदनादिकाढा

चंदनोशीरधान्यंचवालकंपर्पटंतथा ॥
मुस्ताशुंठीसमायुक्तंमंथरज्वरनाशनं ॥

अर्थ—चंदन, खस, धनिया, नेत्रवाला, पित्तपापडा, नागरमोथा, और सोंठ, इनका काढा मंथर ज्वरको नष्ट करे ॥

मक्षिकादियोग

माक्षिकागुडसंयुक्ताज्वरेमंथरकेहिता ॥
भ्रममोहातिसारश्चनाशयत्यविलंबतः ॥

अर्थ—मधुरज्वरमें मक्खीको गुडमें मिलायके खाय तो भ्रम, मोह, और अतीसार इनको शीघ्र शमन करे ॥

कृष्णमधुरालक्षण

ज्वरंचचक्षुर्मोहंचदंतोष्ठौचैवश्यामकौ ॥ जिव्हाकंठमुखघ्राण
रक्तताचाक्षिकर्बुरं ॥ कंठेमुक्तावलीहारः सप्ताहाद्धार्यतेनवा ॥
त्रिसप्तकादिनादर्वाक्स्फोटाः स्युः सर्षपोपमाः ॥

अर्थ—ज्वर, नेत्रोंका मिचना, और दाँत, होठ, जिव्हा, कंठ, मुख, और नासिका ये काले तथा नेत्र चित्रविचित्र वर्ण, ये लक्षण होते है और जिसके गलेमें साताहिनके भीतर मोतियोंका हार न पहनावे तो इक्कीस दिनमें सरसोंके समान फोडे उत्पन्न हो ये लक्षण कृष्णमधुरज्वरके जानने ॥

सहस्रवेधपाषाणादियोग

सहस्रवेधपाषाणंकपालंकच्छपस्यच ॥ वृद्धैलातुलसीपत्रंना
रिकेलस्थिचूतजं ॥ दाणाखसखसाख्याश्वगोमयस्यरसेनच॥
घृष्ट्वापानायदातव्यंमधोरकप्रशांतये ॥

अर्थ—हींगका छोटासा टुकडा, कछुएके कपालकी हड्डी, वडीइलायची, तुलसीके पत्ते, नारियलकी नरेली, आमकी गुठली, खसखसके दाने, इन सबको गोवरकेरसमें पीसके पिवावे तो मधुरज्वर शांति होय ॥

भूनिंबादिकाढा

भूनिंबातिविषालोध्रंमुस्तकेंद्रयवामृता॥वालकंधान्यबिल्वंच
कषायोमाक्षिकान्वितः॥ विड्भेदश्वासकासांश्चरक्तपित्तज्वरंहरेत्

अर्थ—चिरायता, अतीस, लोध, नागरमोथा, इन्द्रजो, गिलोय. नेत्रवाला, धनिया,और वेलगिरी इनको काढेमें सहत मिलायके पिवावे तो अतिसार, श्वास, खाँसी, ओर रक्तपित्तको दूर करे ॥

वासाद्यकाढा

वासाद्राक्षाभयाक्काथः पीतः सक्षौद्रशर्करः ॥
निहंतिरक्तपित्तार्तिश्वासंकासंज्वरंतथा ॥

अर्थ—अडुसा, दाख, और छोटी हरड, इनके काढेमें सहत और मिश्रीमिलायके पिवे तो रक्तपित्तकी पीडा, श्वास, खाँसी, ओर ज्वर इनको नष्ट करे ॥

मधुकादिकाढा

मधुकंवल्कलंकुष्टमुत्पलंचंदनंवचा ॥ त्रिफलादुर्लभावासा
द्राक्षाशिरीषपद्मकं ॥ मूर्वायष्टिरयंक्काथोदाहंमूर्छांतृषांभ्रमं ॥
रक्तपितज्वरंहंतिनिपीतोमधुनासह ॥

अर्थ—मुलहटी, दालचीनी, कूठ, नीलाकमल, चंदन, वच, त्रिफला,, अडूसा दाख, सिरसकी छाल, पद्माख, मूर्वा, और भारंगी इनके काढेमें सहत डालके-पीवे तो दाह, मूर्च्छा, प्यास, भ्रम, रक्तपित, और ज्वरको दूरकरे ॥

दुर्जलजनितज्वरपर पटोलादिकाढा

पटोलमुस्तामृतवल्लिवासकंसनागरंधान्यकिराततिक्तकं ॥
कषायमेषांमधुनायुतंनरोनिवारयेद्दुर्जलदोषमुल्बणं ॥

अर्थ—पटोलपत्र, नागरमोथा, गिलोय, अडूसा, सोंठ, धनिया, चिरायता, और कुटकी, इनका काढा सहत मिलायकर पीवे तो दुष्टजलका घोरदोष निवारणहोय

किराततिक्तादिचूर्ण

किराततिक्तात्रिवृदंबुपिप्पलीविडंगविश्वाकटुरोहिणीरजः ॥
निहंतिलीढंमधुनातिसत्वरंसुदुस्तरंदुर्जलदोषजंज्वरं ॥

अर्थ–कडुवाचिरायता, निसोथ, नागरमोथा, पीपल, वायविडंग,सोंठ, और कुटकी इन सबका चूर्ण सहतमें मिलायके चाटे तो दुष्टजल जनित ज्वर शीघ्र दूर होय

हरीतक्यादिचूर्ण

हरीतकीनिंबपत्रंनागरंसैंधवोऽनलः ।
एषांचूर्णंसदाखादेद्दुर्जलज्वरशांतये ॥

अर्थ—हरडकी छाल, नीमकेपत्ते, सोंठ, सैंधानिमक, चितकीछाल इन सबका चूर्ण दुर्जल जनित विकारकी शांतिके अर्थ नित्य खाना चाहिये ॥

शुंठ्यादिकल्क

भोजनादौनरैर्भुक्तंशुंठीराज्यभयोत्थितं ।
कल्कंतुसहतेनित्यंनानादेशोद्भवंजलं ॥

अर्थ–जोमनुष्य नित्य प्रतिभोजनके आदिमें सोंठ, राई और हरड, इनका कल्क नित्य पीता है उनको अनेक देशका जल विकार नहीं करता है ॥

आर्द्रकादिचूर्ण

महार्द्रकयवक्षारौपीत्वाचोष्णेनवारिणा ।
नानादेशसमुद्भूतंवारिदोषमपोहति ॥

अर्थ--जो मनुष्य सोंठ, और जवाखारको गरम जलके साथ पीताहै उसके अनेक देशोंका उत्पन्न जल विकार दूर होता है ॥

दुर्जलजेतारस

विषंभागद्वयंदग्धकपर्दःपंचभागकः ॥ मरीचंनवभागंचचूर्णंवस्त्रेणशोधयेत्॥ आर्द्रकस्यरसेनास्यकुर्यात्मुद्गसमांवटीं ॥ वारिणावटिकायुग्मंप्रातःसायंचभक्षयेत् ॥ अयंरसोज्वरेयोज्यस्तस्मिन्दुर्जलजेपिच॥अजीर्णाध्मानविष्टंभशूलेषुश्वासकासयोः।

अर्थ-विष २ तोले, कौडीकी भस्म ५ तोले, कालीमिरच ९ तोले ले सबकोकूट पीस कपड़छानकर अद्रकके रससैं मूंगके समान गोली बनावे, २ गोली जलके साथ प्रातःकाल और सायंकालमें खाय, इस रसको ज्वरमें तथा जलजनित ज्वरमें देय एवं अजीर्ण, अफरा, विष्टंभ, शूल, श्वास, और खाँसीमे देवे तो दूर हो।

ज्ञानोदयरस

कलावेदांकचंद्रांशैःसर्वांशसितयायुतैः ॥ शक्रासनरजोजातीफलंशुक्लैःसुमेलितैः ॥ ज्ञानोदयोभवेदेषसाधकानंदसिद्धिदः ॥
सेवितःसात्म्यतोग्राहीजलदोषापनोदकः ॥

अर्थ—इन्द्रजो १६ तोले, पित्तपापडा ४ तोले, जायफल ९ तोले, सपेद अंडकी जड १ तोले, लेवे सबका चूर्ण कर बराबरकी मिश्री मिलावे तो यह (ज्ञानोदय) तयार हो, इसके सेवन करनेवालोंको सिद्ध देवे और सात्म्य होकर जलसंबंधी दोषोंको दूर करे ॥

हरिद्रकवृक्षयोग

सहरिद्रयवक्षारौपीत्वाचोष्णेनवारिणा ।
नानादेशसमुद्भूतंवारिदोषमपोहति ॥

अर्थ—जो मनुष्य हलदी और जवाखार मिलाके गरम जलके साथ पीवे तो अनेक देशोके दुष्ट जलविकारको दूर करे ॥

मद्योद्भवज्वर

मद्याजीर्णसमालोक्यवामयेच्छर्करोदकैः ॥ पित्तज्वरोपचारे-
णमद्यज्वरमुपाचरेत् ॥ मद्यपानज्वरस्यादौलंघनंनैवकारयेत् ॥

अर्थ–मद्यजीर्णवालेको सरबत पिलाकर वमन करावे, तथा मद्यजनित ज्वरका य-त्न पित्तज्वरके सदृश करे, परंतु मद्यजन्य ज्वरके आदिमें लंघन नहीं कराना चाहिये

फेरउलटकरज्वरआयाउसपरलंघन

अपथ्यदोषाद्यदिसंप्रवृत्तोभवेत्ज्वरश्चेद्बलिनश्चपुंसः॥
हितंपुनर्लंघनमादिशंतिसतोल्पदोषस्यचभेषजानि ॥

अर्थ—यदि बलवान् पुरुषके अपथ्य करनेसै फिर ज्वर हो आवे तो दोषकी अधिक ताके अनुसार लंघन् कराना हित है और अल्पदोषमें पाचनादि औषधि देवे।

रेचन

यदिनिर्व्याहृतमलःपुनरेवभवेज्ज्वरः ।
मलंचनिर्हरेच्छीघ्रंततःसंपद्यतेसुखं ॥

अर्थ—यदि दस्त करानेके अनंतर फिर ज्वर हो आवे तो वैद्य उसको फिर दस्त कराके मलको निकाले तो तत्काल सुखी होवे ॥

किराततिक्तादिकाढा

किराततिक्तकंतिक्तामुस्तापर्पटकामृता ।
निःक्वाथ्यपीतानिघ्नंतिपुनरावर्तिकज्वरं॥

अर्थ—कडुआ चिरायता, कुटकी, नागरमोथा, पित्तपापडा, गिलोय, इनका काढा प्राशन करनेसैं फिर लौटकर आनेवाले ज्वरको नाश करे ॥

तिक्तादिकाढा

तिक्तोशीरबलाधान्यपर्पटांभोधरैः कृतः॥
क्वाथःपुनः समायातंज्वरंशीघ्रंनिवारयेत् ॥

अर्थ—कुटकी, खस, बला, धनिया, पित्तपापडा, और नागरमोथा, इनका काढा फिर लौटकर आनेवाले ज्वरको शीघ्र नष्ट करे ॥

अपथ्यज्वरलक्षण

अपथ्यजेमद्यभवेचहेतुर्हेतुर्ज्वरेपित्तमुदाहरंति ॥ दाहश्चशैत्यं

चशिरोव्यथाचकोष्ठाभिवृद्धिः कटितोदकंडु॥मलातिपातस्त्व
तिनद्धताचअपथ्यदोषेणभवेज्वरेच ॥

अर्थ--अपथ्य और मद्यजन्य ज्वरमें पित्तप्रधान होता है, तिनमें कुपथ्य कर-नेसें हुए ज्वरमें दाह, शीतल, मस्तकपीडा, उदरवृद्धि, और कमरकी पीडा, खु-जली, दस्त, अथवा मलवद्धता इन विकारोंको करे है ॥

कटुक्यादिकाढा

कटुकीपिप्पलीमूलंमुस्ताचैवहरितकी ॥
गिरिमालसमः क्वाथः सर्वज्वरविनाशनः ॥

अर्थ—कुटकी, पीपलामूल, नागरमोथा, हरडकी छाल, और किरवारेकी गिरी, सब समान लेकर क्वाथ करे यह क्वाथ सर्वज्वरोंको नाश करे ॥

आमलक्यादिचूर्ण

अमलंचित्रकंपथ्यासैंधवंपिप्पलीकृतं ॥ चूर्णसोयंगणोह्येषस
र्वज्वरविनाशनः ॥ भेदीरुचिकरःश्लेष्मजेतादीपनपाचनः

अर्थ—आमला, चित्रक, बडीहरडकी छाल, सैंधानिमक और पीपल, इनका चूर्ण सर्वज्वर और कफको दूर करे, दस्तकर, रुचिकारी और दीपन पाचन है ॥

गुडूच्यादिकाढा

गुडूचीधनकारिष्टपद्मकोरक्तचंदनं ॥ गुडूच्यादिगणःक्वाथःस
र्वज्वरहरःपरः ॥ दीपनोदाहहृल्लासतृष्णाछर्द्यरुचीर्जयेत् ॥

अर्थ--गिलोय, धनिया, नीमकीछाल, पद्माख, और लालचंदन, यह गुडू-च्यादि गण क्वाथ सर्वज्वर, दाह, हल्लास, प्यास, बमन, और अरुचिको दूर करे तथा दीपन है ॥

क्षुद्रादिकाढा

क्षुद्राकिराततिक्तंचशुंठीछिन्नाचपौष्करं ॥
कषायएषांशमयेत्पीतश्चाष्टाविधंज्वरं ॥

अर्थ—कटेरी, चिरायता, सोंठ, गिलोय, अंडकीजड, और पुहकर मूल, इन छः औषधोंका काढा पीनेसें आठ प्रकारके ज्वर दूर करे ॥

नागरादिपाचन

नागरंदेवकाष्ठंचधान्यकंबृहतीद्वयं ।

दद्यात्पाचनकंपूर्वंज्वरितानांज्वरापहं ॥

अर्थ—सोंठ, देवदार, धनिया, दोनो कटेरी, इनका काढा कर ज्वरवालोंके ज्वर दूर करनेको यह पाचन देवे ॥

चलदलतरुसेवाहोममंत्रौत्रिनेत्रिद्विजजनगुरुपूजाविष्णुनाम्नां सहस्रं ॥ मणिधृतिरपिदानान्य.शिषस्तापसानांसकलमिदमरिष्टंस्पष्टमष्टज्वराणां ॥

अर्थ—पीपरकी सेवा, होम, गायत्र्यादि मंत्रोंका जप, श्रीशिव, ब्राह्मण, गुरु-इनका पूजन, विष्णुसहस्रनामका पाठ, मणिधारण, दान तपस्वियोंके आशीर्वाद, इन यत्नो करके अष्टविध ज्वर शांति हों ॥

समुद्रस्योत्तरेतीरेद्विरदोनामवानरः ।
तस्यस्मरणमात्रेणज्वरोयातिदिगंतरं ॥

अर्थ—समुद्रके उत्तरतीरमें द्विरदनाम वानर रहता है उसके स्मरण करतेही ज्वरभाग जाता है, ये श्लोक मंत्ररूप है ज्वरवाला इसका स्मरण कराकरे ॥

वेलाज्वर

शोकात्क्रोधात्तथाजीर्णात्संतापाद्बलहानितः ।
अंतकालेचमर्त्यानांजायंतेदारुणाज्वराः ॥

अर्थ—शोक, क्रोध, अजीर्ण, संताप, और बलहानि, इनसें मनुष्यको अंतकालमें भयंकर ज्वर उत्पन्न होता है ॥

मूलिकाबंधनं

सर्वज्वरापहंनीलिमूलंरात्रिर्ज्वरापहं ।
दुग्धिकामूलिकाकर्णेहंतिवेलाज्वरंतथा ॥

अर्थ—नीलीवृक्षकी जड, और हलदी, ए सर्वज्वर नाशक है उसीप्रकार दुधीकी जडको कानमें रखनेसें वेलाज्वर दूर हो ॥

पिप्पलीचूर्णज्वरऊपर

मधुनापिप्पलीचूर्णंलिहेत्कासज्वरापहं ।
हिक्काश्वासहरंकंठ्यंप्लीहघ्नंबालकोचितं ॥

अर्थ—एकमासे पीपलके चूर्णको सहतसें चाटे तो इससें कासज्वर, हिचकी

और श्वास, ये दूरहो, तथा चूर्ण कंठको हितकारी है पीहको दूर करे तथा, बालकोके उपयोगी है ॥

धान्यादिचूर्ण

धान्यंलवंगंत्रितयंचशुंठीकोष्णांबुपीतंतरुणज्वरापहं ॥
तेभ्यःशतंवारितथाग्निमांद्यंश्वासाद्यजीर्णंविषमंचवातं ॥

अर्थ—धनिया, लौंग, निशोथ, और सोंठ, इनके चूर्णको गरम जलके साथ-सवन करनेसैं तरुण ज्वरका नाश हो, अथवा इन औषधोंका काढा देवे तो मंदाग्नि, श्वास, अजीर्ण, विषमज्वर, और वादीको नाश करे ॥

गोरोचनादिचूर्ण

गोरोचनंचमरिचंरास्नाकुष्ठंचपिप्पली ॥
उष्णोदकेनपीतंचसर्वज्वरविनाशनं ॥

अर्थ—गोरोचन, कालीमिरच, रास्ना, कूठ, और पीपल, इनका चूर्णगरम जलके साथ पीनेसैं सर्व ज्वर दूर हो ॥

सितोपलादिचूर्ण

सितोपलाषोडशीस्यादष्टौस्याद्वंशरोचना॥पिप्पलीस्याच्चतुष्कर्षाएलास्याच्चद्विकर्षिका ॥एककर्षत्वचः कार्यश्चूर्णयेत्सर्वमेकतः ॥ सितोपलादिकंचूर्णमधुसर्पिर्युतंलिहेत् ॥ कासश्वासक्षयहरंहस्तपादांगदाहजित्॥मंदाग्निंसुप्तजिव्हत्वंपार्श्वशूलमरोचकं ॥ ज्वरमूर्ध्वगतंरक्तंपित्तमाशुव्यपोहति ॥

अर्थ—मिश्री १६ तोले, वंशलोचन ८ तोले, पीपर ४ तोले, छोटीइलायची केवीज २ तोले, और दालचीनी अथवातज १ तोले, इनका चूर्ण कर सहत और घृतसैं देवे तो यह सितोपलादि चूर्ण खाँसी, श्वास, क्षय, हाथपैरोका दाह, मंदाग्नि, जीभकी शून्यता, पसवाडेका शूल, अरुचि, ज्वर ऊर्ध्वगत रक्तविकार और-पित्त इनका नाश होय ॥

भार्ग्यादिचूर्ण

भार्गीकर्कटशृंगीचव्यंतालीसपत्रकं॥मरिचंमागधीमूलंप्रत्येकं-द्विपलंभवेत्॥षट्पलंशृंगबेरंचद्विपलंपिप्पलीद्वयं॥ चातुर्जात-

मुशीरंचपलमेकंपृथक्पृथक् ॥ चातुर्जातसमाशुभ्राशर्करासम-
योजिता ॥ ज्वरमष्टविधंहंतिकासंश्वासंचदारुणं॥ शोफशूलो-
दराध्मानदोषत्रयहरंपरं ॥

अर्थ–भारंगी, काकडासिंगी, चव्य, तालीसपत्र, कालीमिरच, और पीपरामूल, ये प्रत्येकआठ २ तोले, सौंठ २४ तोले, पीपर ८ तोले, तथा गजपीपर, चातुर्जात और खस, ए ४ तोले, पृथक् २ लेवे, मिश्री ४ तोले,सबका चूर्णकरे इस भार्ग्यादि चूर्णके सेवनसैं आठप्रकारके ज्वर, खाँसी, श्वास, सूजन, उदर, पेटका, फूलना, और त्रिदोष इनको दूर करे ॥

अनंतादिचूर्ण

अनंतंवालकंमुस्तानागरंकटुरोहिणी ॥ सुखांबुनाप्रागुदया
त्पिबेदक्षसमंरवेः ॥ एतत्सर्वज्वरान्हंतिदीपयत्याशुचानलं ॥

अर्थ–जबासो, नेत्रवाला, नागरमोथा, सोंठ, कुटकी, इनका एकतोले चूर्ण कुछ गरम जलके साथ सूर्योदयसै पूर्व पीवे तो सर्व ज्वर दूर हो और जठराग्निमबल हो

भेडोक्तसुदर्शनचूर्ण

तालीसंत्रिफलात्रुटीत्रिकटुकंत्वक्त्रायमाणंत्रिवृन्मूर्वाग्रंथिनि
शायुगंशठिवलारुक्कंटकारीयुगं ॥ मुस्तापर्पटनिंबपुष्करजटा-
भार्गीयवानीहिमंचव्यंचित्रकपुंडरीकतगरंसेव्यंविडंगंवचा ॥
यासोवत्सककुंडलींद्रयवकंदेवद्रुमंवालकंवीजंशिग्रुभवंपटोल
कटुकापद्माव्हपत्रंविषा॥ काकोलीमधुकुंकुमंचसतवक्षीरील-
वंगंपृथक्पर्णीशैलजशालिपर्णसहितंशामंतकीपुष्पकं ॥ सर्वं
समंचूर्णतदर्धभागंकैरातकंश्रेष्ठतमंहिचूर्णं ॥ सुदर्शनंनाममरु-
द्बलासामयोद्भवान्हंतिपृथक्कृतान्ज्वरान् ॥संसर्गजान्सकल-
जान्विषमान्निहन्याद्धातूद्भवान्विषकृतानभिघातजांश्च ॥सा-
मान्समानसकृतानातिदाहयुक्तान्शीतान्तृतीयकचतुर्थविपर्य
यांश्च॥ ऐकाहिकद्व्याहिकसन्निपातान्नानाविधान्पाक्षिकता
सजातान् ॥ तृटदाहमोहभ्रमदैन्यतंद्रासश्वासकासारुचिपा-

डुरोगान् ॥हलीमकंकामलपार्श्वशूलंपृष्ठोद्भवंजानुभवंतथैव॥ त्रिकग्रहंवातविकारजातंविनाशयत्येवशिरोग्रहंच ॥ स्त्रीणां-रजोदोषसमुद्भवांश्चविनाशयेदुष्णजलेनपित्तं॥शीतांबुनापित्त-भवान्विकारान्नानामुनींद्रैर्गदितंजगद्धितं॥ सुदर्शनंदानवना-शनंयथासुदर्शनंयोगविनाशनंतथा ॥

अर्थ—तालीसपत्र, त्रिफला, इलायची, त्रिकुटा, तज, त्रायमाण, निसोथ मूर्वा पीपरामूल, हलदी, दारुहलदी, कचूर, वला, कटेरीकीजड, बडीकटेरीकी जड, नागरमोथा, पीत्तपापडा, नीमकीछाल, पुहकरमूल, भारंगी, अजमायन, नेत्रवाला, चव्य, चीतेकीछाल, कमलगट्टा, तगर, खस, वायविडंग, वच, जवासो, कुडाकी छाल, गिलोय, इन्द्रजो, देवदारु, पीलीखस, सहजनेके बीज, पटोलपत्र, कुटकी-पदमाख, पत्रज, कलियारी, काकोली, मुलहटी, केशर, तवाखीर, लौंग, पृष्ट-पर्णी, पत्थरका फूल, सालपर्णी और सूखी अंवाडा, ए सब औषध समान ले औ-सब औषधोंका अर्धभाग चिरायता डाले, तो यह (सुदर्शन चूर्ण) वात कफसै प्र-गट ज्वरोंको तथा पृथक् २ ज्वरोंको, संसर्गज ज्वर, संनिपातजन्य, विषमज्वर, धातुगतज्वर, विषजन्यज्वर, अभिघातज्वर, सामज्वर, मानसज्वर, दाहज्वर-शीतज्वर, तृतीयक, चातुर्थिक, विपर्यय, एकाहिक, द्व्याहिक, त्रिदोषात्मक, प,क्षज्वर, मासज्वर, तृषा, दाह, मोह, भ्रम, दैन्य, तंद्रा, श्वास, खाँसी, अरुचि, पांडुरोग, हलीमक, कामला, पार्श्वशूल, पृष्ठशूल, जानुशूल, त्रिकशूल, संपूर्ण बातविकार, मस्तकशूल, अनेक देशोंके जलविकार, दूषीविष, स्त्रीके रजविकार, इन सब रोगोंको गरम जलके साथ लेनेसैं दूर करे और शीतलजलसैं पित्तके वि-कारोंको नाशकरे, ये पहले अनेक मुनियोंने जगत्के हितार्थ कहाहै, जैसैं सु-दर्शन चक्र दैत्योंका नाश करे उसीप्रकार यह सुदर्शन चूर्ण रोगोंको नाश करता है॥

सुदर्शनचूर्ण

त्रिफलारजनीयुग्मंकंटकारीयुगंसठी ॥ त्रिकटूग्रंथिकंमूर्वागुड्
चीधन्वयासकः ॥ कटुकापर्पटोमुस्तात्रायमाणाचवालकं ॥
निंबुपुष्करमूलंचमधुयष्ठीचवत्सकः ॥ यवानींद्रयवाभार्गीशि
ग्रु बीजंसुराष्ट्रजा ॥ वचात्वक्पद्मकोशीरचंदनातिविषाबला ॥
शालिपर्णीपृष्ठिपर्णीविडंगंतगरंतथा ॥ चित्रकंदेवकाष्ठंचच

व्यंद्राक्षापटोलजं ॥ जीवकर्षभकौचैवलवंगंवंशलोचना ॥ पुंडरीकंचकाकोलीपत्रजंजातिपत्रकं ॥ तालीसपत्रंचतथासमभागानिचूर्णयेत् ॥ सर्वचूर्णस्यचार्धांशंकैरातंप्रक्षिपेत्सुधीः॥ एतत्सुदर्शनंनामचूर्णंदोषत्रयापहं ॥ज्वरांश्चनिखिलान्हंतिनात्रकार्याविचारणा ॥ पृथग्द्वंद्वागंतुकांश्चधातुस्थान्विषमज्वरान् ॥ सन्निपातभवांश्चापिपीनसानपिनाशयेत् ॥ शीतज्वरैकाहिकादीन्मोहंतंद्रांभ्रमंतृषां ॥ श्वासकासौचपांडुंचहृद्रोगंहंतिकामलां ॥ त्रिकपृष्ठकटीचानूपार्श्वशूलनिवारणं ॥ शीतांबुनापिबेद्धीमान्सर्वज्वरनिवृत्तये ॥ सुदर्शनंयथाचक्रंदानवानांविनाशनं ॥ तद्वज्ज्वराणांसर्वेषामिदंचूर्णंप्रणाशनं ॥

अर्थ—हरड, बहेडा, आमला, हलदी, दारुहलदी, छोटी बडी कटेरी, कचूर, सोंठ, मिरच, पीपल, पीपरामूल, मूर्वा, गिलोय, धमासो, कुटकी, पित्तपापडा-नागरमोथा, त्रायमाण, नेत्रवाला, नीमकी छाल, पुहकरमूल, मुलहटी, कूडाकी छाल, अजमायन, इन्द्रजो, भारंगी, सहजनेके वीज, फिटकरी, वच, दालचीनी, पद्माख, खस, लालचंदन, अतीस, खरेटी, सालपर्णी, पृष्टपर्णी, वायविडंग, तगर, चीतेकी छाल, देवदार, चव्य, दाख, पटोलपत्र, जीवक, ऋषभक, लौंग, वंशलोचन, कमलगट्टा, काकोली, पत्रज, जावित्री, और तालीसपत्र, ये समान भागले चूर्ण करे, और सव चूर्णसैं आधा चिरायता डाले तो यह (सुदर्शन) चूर्ण संपूर्ण ज्वरोंको नाश करे तथा वात, पित्त, कफ इनका नाशक है; इसमें विचार नही करना । तथा वातज्वर, पित्तज्वर, कफज्वर, वातपित्तज्वर, वातकफज्वर, पित्तकफज्वर, आगंतुकज्वर, धातुगतज्वर, विषमज्वर, संनिपातज्वर, पीनस, शीतज्वर, एकाहिकादिज्वर, मोह, तंद्रा, भ्रम, तृषा, श्वास, खाँसी, पांडुरोग, हृद्रोग, कामला, त्रिक, पीठ, कमर, घोटू, और पार्श्व इनका शूल, इन सबको नाश करे ये चूर्ण शीतल जलके साथ पीवे तो जैसे सुदर्शन चक्र सर्व दैत्योंको नाश करे उसीप्रकार यह सुदर्शन चूर्ण रोगोंको नाशकरै है॥

लघुसुदर्शनचूर्ण

गुडूचीपिप्पलीमूलंकणातिक्ताहरीतकी ॥नागरंदेवकुसुमंनिंबत्वक्चंदनंतथा ॥सर्वचूर्णस्यचार्धांशंकैरातंप्रक्षिपेत्सुधीः ॥

एतत्सुदर्शनंलघ्वंनाम्नादोषत्रयापहं॥ ज्वरांश्चखिलान्हन्या-
न्नात्रकार्याविचारणा॥

अर्थ—गिलोय, पीपरामूल, पीपर, कुटकी, हरडकी, छाल, सोंठ, लौंग, नीमकी छाल, लालचंदन, ए सब बराबर लेवे सब चूर्णसैं आधा चिरायता ले यह लघु सुदर्शन चूर्ण तीनो दोषोंको और संपूर्ण ज्वरोंको नाश करे है॥

आमलक्यादिचूर्ण

धात्रीशिवासैंधवचित्रकाणांकणायुतानांसमभागचूर्णं।
जीर्णज्वरारोचकवन्हिमांद्येविड्विग्रहेशस्तामितिप्रातिज्ञा॥

अर्थ—आमले, हरड, सैंधानिमक, चीतेकी छाल, और पीपल, समान भाग ले चूर्णकरे तो जीर्णज्वर, अरुचि, मंदाग्नि, वद्धकोष्ट, को दूर करे॥

केसरादि

केसरंमातुलिंगस्यमधुसैंधवसंयुतं।
जिंव्हातालुगलक्लोमशोषेमूर्धनिदापयेत्॥

अर्थ—विजोरेकी केशरमें सहत और सैंधानिमक मिलाकर मस्तकपर लगावे तो जीभ, तालुआ, गला, और पिपासा स्थानका सूखना दूरहोय॥

विदार्यादिलेप

विदारीदाडिमंलोध्रंदधित्थंबीजपूरकं।
एभिःप्रलिंप्यान्मूर्धानंतृड्दाहार्तस्यदेहिनः॥

अर्थ—जो मनुष्य प्यास और दाहसैं पीडित हो उसका मस्तक, विदारीकंद, आनारदाना, लोध, कमरख, और विजोरेकीके शर पीसकर लेप करे॥

ज्वरघ्नीगुटिका

भागैकःस्याद्रसाच्छुद्धादेलीयःपिप्पलीशिवा॥ आकारक-
भोगंधःकटुतैलेनशोधितः॥ फलानिचेंद्रवारुण्याश्चतुर्भाग-
मिताअमी॥ एकत्रमर्दयेच्चूर्णमिंद्रवारुणिकारसैः॥ माषो-
न्मितांगुटींकृत्वादद्यात्सर्वज्वरेबुधः॥छिन्नारसानुपानेनज्वर-
घ्नीगुटिकामता॥

अर्थ—शुद्धपारा १ तोले, एलुआ पीपल छोटीहरड, अकरकरा, और सरसों-

के तेलमें)शुद्धकरी गंधक, तथा इन्द्रायनका गूदा, ए छः औषध चारचार तो ले लेवे चूर्णकर इन्द्रायनके गूदेके रसमेंखरलकर मासे मासे की गोली करे- गिलोयके रससैं देवे तो ज्वर दूर हो ॥

बलाद्यघृत

बलांश्वदंष्ट्रांबृहतींकलशींधावनींपुनः ॥ निंबपर्पटकंमुस्तांत्रा- यमाणांदुरालभां॥ कृत्वाकषायंकल्कार्थंदद्यादामलकींसठीं॥ द्राक्षापुष्करमूलंचमेदामामलकानिच ॥घृतंपयश्चतत्सिद्धंस र्पिज्वरहरंपरं ॥ क्षयकासप्रशमनंशिरःपार्श्वरुजापहं ॥

अर्थ—खरेटी, गोखरू, कटेरी, पृष्टपर्णी, धायके फूल, नीमकी छाल, पित्त- पापडा, नागरमोथा, त्रायमाण, और धमासो इनका काढा करके उसमें भूय आमला, कचूर, दाख, पुहकरमूल, मेदा और आमले इनका कल्क तथा १४ तोले घृत, और चौसठतोले दूध डालके अग्निपर घृत सिद्धकरे । ये ज्वर, क्षय, खांसी, और शिर पसवाडेकी पीडा इनको नाश करे ॥

मंजिष्ठाद्यघृत

मंजिष्ठातिविषापथ्यावचानागररोहिणी ॥ देवदारुहरिद्राच- द्रोणिन्यांपालिकांपचेत्॥क्वाथेस्मिन्साधयेत्पिष्टैर्घृतप्रस्थंपि- चून्मितैः ॥ शृंगवेरकणाहिंगुद्विक्षारकटुपंचकैः ॥ तत्कफावृ तसर्वैकज्वरिणाममृतोपमं ॥ वर्ध्महिध्मारुचिश्वासपांडुरोग- विकारिणि ॥ मलग्रहप्रमेहार्शःप्लीहापस्मारशोषिणां ॥ उदा- वर्तपरीतानांमंदाग्निक्रिमिकुष्टिनि॥

अर्थ—मजीठ, अतीस, हरड, वच, सोंठ, कुटकी, देवदारु, हरदी, और गु- डतजी, ये सर्व पदार्थ चार २ तोले लेकै काढा करे उसमें सोंठ, पीपल, हींग, जवाखार, और कटुपंचक, इनका कल्क एक तोले और ६४ तोले घीमि- लायके अग्निपर सिद्ध करे ये घृत, कफज्वरवालेको अमृतके समान है तथा अं- डवृद्धि, हिचकी, अरुचि, श्वास, पांडुरोग, मलवद्धता, प्रमेह, ववासीर, प्लीह- अपस्मार, क्षय, उदावर्त्त, मंदाग्नि, और कृमिरोग इनको नाश करे ॥

कुलित्थाद्यघृत

कुलित्थकोलत्रिफलादशमूलयवान्पचेत् ॥ त्रिफलासलिलद्रो-

णेघृतेपक्त्वाक्षकान्निक्षिपेत् ॥ पंचकोलकसमाह्वावयस्था- हिंगुतुंवरुः ॥ सठीपुष्करमूलार्कमूलप्रतिविषावचा ॥ किरा ततिक्तकंमुस्तंकर्कटाख्यांदुरालभा ॥ नक्तमालमुभेपाठेक- टुकाशिग्रुतेजिनी ॥सोमवल्कश्चरजनीकटुकीकंटकारिका ॥ पटोलनिंबगोजिह्वाकसकामदनोजटा ॥ लवणानिपलांशा- निक्षारानर्धपलोन्मितान् ॥ प्रस्थंवाज्यस्यतत्सिद्धंदीपनंकफ वातनुत्॥गृध्रसीग्रहणीगुल्मश्वासकासार्शसांहितं॥दीर्घज्वरा- भिभूतानांज्वरिणाममृतोपमम्

अर्थ—कुलथी, वेर,हरड, वहेडा, आमला, दशमूल, और (इन्द्रजो) ये एवं त्रिफलाके १६३८४ तोले काढेमें, पंचकोल, सतोना, आमले, हींग, तुंवरू, क- चूर, पुहकरमूल, आककीजड, अतीस, वच, चिरायता, नागरमोथा, कांकडासिं गी, धमासो, कंजा, पाढल, काष्टपाटला, कुटकी, कटेरी,पटोलपत्र, नीमकी छा ल, गोभी, कसोदी, मैनफल, जटामांसी, ये सव एक एक तोले ले नीमक ४ तोले, क्षार २ तोले, और, घी६४ तोले डालके सिद्ध करे, ये कफवात, गृध्रसी संग्रहणी,गोला,श्वास, खांसी, और ववासीर वाले रोगियोंको हितकारी है,और बहुत दिनके ज्वरवालोंको अमृत तुल्य है ॥

अमृताद्यघृत

अमृतात्रिफलापटोलयासैःसपयस्कविधिवत्घृतंविपक्कं ।
विषमज्वरनाशनंप्रधानंक्षयगुल्मारुचिकामलापहारि ॥

अर्थ—गिलोय, त्रिफला, पटोलपत्र, और धमासो, इनका, अथवा कल्क, दू ध और घृत ये सब एकत्र कर घृत सिद्ध करावे, तो ये विषमज्वर, क्षय, गुल्म,- अरुचि, और कामला इनका नाश करे ॥

गडूच्यादिघृत

गुडूच्यारसकल्काभ्यांत्रिफलायारसेनतु ।
मृद्वीकावाबलायाश्चसिद्धाःस्नेहाज्वरच्छिदः ॥

अर्थ--गिलोयके कल्क, और रससैं तथा त्रिफलाके रससैं, अथवा दाख, और खरेटीके रससैं सिद्ध कराहुआ घृत ज्वरको दूर करताहै ॥

पंचतिक्तघृत

वृषनिंबामृताव्याघ्रीपटोलानांकृतेनच॥ कल्केनपक्वंसर्पिस्तु-
निहन्याद्विषमज्वरान् ॥ पांडुंकुष्टंविसर्पंचकृमीनर्शांसिनाशयेत्॥

अर्थ—अडूसा, नीमकीछाल, गिलोय कटेरी और पटोलपत्र इनके कल्क करके सिद्ध करा हुआ घृत विषमज्वर, पांडु, कोढ, विसर्प, कृमि, और ववासीर, इनके दूर करे

अमृताद्यघृत

अमृतात्रिफलापटोलयासैःसपयस्कंविधिवद्घृतंविपक्वं॥ ससैं
धवैश्चपलिकैर्घृतप्रस्थंविपाचयेत् ॥ क्षीरंचतुर्गुणंदद्यात्तद्-
घृतंप्लीहनाशनं ॥ विषमज्वरमंदाग्निहरंरुचिकरंपरं ॥

अर्थ—गिलोय, त्रिफला, पटोलपत्र, और जवासा, तथा दूध, तथा सैंधानिमक, इनसे विधिपूर्वक घृत सिद्धकरे ।इसमें सेरभर घी और चारसेर दूध डालके सिद्धकरे ये घृत प्लीह, विषमज्वर, मंदाग्नि, और अरुचि इनको दूर करे ॥

महाषट्पलघृत

पूतिकाग्निकपंचकोलरुचकैः साजाजियुग्मोद्भिदैः सक्षारैः स-
विडैः सहिंगुहपुषासिंधूद्भवैः कल्कितैः ॥ सूक्तेनार्द्रकसंभवेन
चरसेनैतन्महाषट्पलंसर्पिःपक्वमरोचकाग्निसदनप्लीहज्वरश्वा-
साजित् ॥

अर्थ—कंजा, चित्रक, सोंठ, मिरच, पीपल, पीपरामूल, चव्य, जीरा, कालाजीरा, सज्जीखार, जवाखार, विडनोन, हींग, हौऊवेर, और सैंधानिमक इनका चूर्ण काँजीमें अथवा अदरखके रसमें मिलाय और उसमें घृत मिलायके अग्निद्वारा सिद्ध करे इसको षट्पलघृत कहते है ये प्लीहा, विषमज्वर और अरुचि इनको दूर करे ॥

दुसराप्रकार

पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्यचित्रकनागरैः। ससैंधवैश्चपलिकैर्घृ
तप्रस्थंविपाचयेत् ॥ क्षीरंचतुर्गुणंदत्वातद्घृतंप्लीहनाशनं ॥
विषमज्वरमंदाग्निहरंरुचिकरंपरम् ॥

अर्थ—पीपर, पीपरामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, और सैंधानिमक ये सब औ षध४तोलेकेप्रमाण लेकर कूट पीस चौगुने पानीमें डालके काढा करे इस काढेमें घी ६४ तोले डालके औंटावे इसको महाषट्पलघृत कहते है,ये प्लीह, विषमज्वर, मंदाग्नि, और अरुचि, इनको दूर करे ॥

लघुलाक्षादितैल

लाक्षाहरिद्रामंजिष्ठाकल्कैस्तैलंविपाचयेत् ॥
षडगुणेनारनालेनदाहशीतज्वरापहं ॥

अर्थ—लाख, हलदी, और मजीठ, इनका कल्क और तेलसैं छ गुनी कांजी मिलायके तेलको सिद्ध करे तो यह तेल दाह, और शीतज्वर, इनका नाश करे

लाक्षादितैल

लाक्षादशाक्षाअरुणातदर्धासचंदनंलोहितचंदनंच।।त्वक्पत्रकंवारिमुरासमुस्ताप्रत्येकमेतानिपलोन्मितानि।।किराततिक्तास्त्रिवृतासविश्वामृताकणापर्पटकंटकार्यः।। विडंगविश्वामलकानिवासारसानिशावारुणसिंधुवाराः ॥ एतानिदेयानिपृथक्पलार्धमानानिसर्वाणिचऔषधानि ॥ कल्काह्यमीषांविदधीतगव्यदुग्धेनवैसार्धतुलोन्मितेन ॥ तैलंतिलानांतुतुलानुमानंतेनैवकल्केनशनैः पचेत्तत् ॥ हन्याज्ज्वरांस्तैलमिदंसमस्तान्कुर्याद्बलंवीर्यमतीवपुष्टं ॥ विमर्दनादाशुपरिश्रमंभ्रमं शमंनयेत्संजनयेत्द्युतिंतनोः ॥ तथाव्यथामस्थिससमुद्भवामपिप्रहृत्यनिद्रांसमुपार्जयेत्सुखं ॥

अर्थ—लाख १० तोले, मजीठ ५ तोले, चंदन, लालचंदन, दालचिनी, तमालपत्र, नेत्रवाला, एकांगीमुरा, और नागरमोथा, ये प्रत्येक चार २ तोले प्रमाण लेवे, तथा चिरायता, निसोथ, सोंठ, गिलोय,पीपर, पित्तपापडा, कटेरीवायविडंग, सोंठ, आमले, अडूसा, हलदी, वरना, और निर्गुंडी, ये प्रत्येक दो दो तोले लेवे, सब औषधोंका कल्ककर ६०० तोले गौके दूधमें मिलाय उसमें ४०० तोले तिलका तेल मिलायके तैलपाक विधिसैं सिद्ध करे ये तेल सर्वज्वरका नाश करे और बलवीर्य तथा पुष्टी इनको करे। इसके मर्दनसैं श्रम, भ्रम.

शांतिहो, शरीरमें कांति और इन्द्रियोंकी पीडा नष्ट कर निद्रा, और सुखको उत्पन्न करे ॥

मध्यमलाक्षादितैल

तैलंप्रस्थमितंचतुर्गुणजतुक्काथंचतुर्मुस्तरुग्यष्टीदारुनिशाब्दमूर्वकटुकामिश्यश्वकौंतीहिमैः॥रास्नाह्वैःपिचुसंमितैः कृतमिदंशस्तंतुजीर्णज्वरेसर्वस्मिन्विषमेपियक्ष्मणिशिशौवृद्धेसगर्भासुच ॥

अर्थ—तेल ६४ तोले, चौगुना लाखका काढा उसमें नागरमोथा, कूट, मुलहटी, दारुहलदी, मोथा, मूर्वा, कुटकी, सोंफ, रेणुका, चंदन, रास्ना, ये एक २ तोले सब लेकर इनका कल्कलाखके काढेमें डालके ओंटायकर तेल सिद्ध करावे ये तेलके मालिससैं जीर्ण ज्वर, सर्व विषमज्वर राजयक्ष्मा, गर्भिणीके रोग और प्रसूत ये दूर हो ॥

षट्तक्रतैल

लाक्षानिशाकुष्टशुंठीमंजिष्ठाचसुवर्चिका॥ मूर्वाचंदनसंसिद्धेतैलंतक्रेथषड्गुणे ॥ अभ्यंगेनप्रशमयेद्दाहंशीतज्वरंनृणां ॥

अर्थ—लाख, हलदी, कुठ, सोंठ, मजीठ, सज्जीखार, मूर्वा और चंदन इनके-काढेमें तेल,तेलसै छ गुनी छाछ मिलायके तेल सिद्ध करे इसके मालिस करनेसै दाहज्वर, और शीतज्बर नष्ट हो ॥

स्वर्जिकाद्यतैल

स्वर्जिकाकुष्टमंजिष्टालाक्षामूर्वाविषौषधैः ॥
सक्षीरैः साधितंतैलमभ्यंगाद्दाहशीतनुत् ॥

अर्थ—सज्जीखार, कूठ, मजीठ, लाख मूर्वा, सोंठ, और, अतीस इनकेकाढे-में दूधडाल और तेल डालके औटावे इसतेलके मालिस करनेसैं दाह तथाशीत-ज्वर, इनको दूर करे ॥

बलाद्यतैल

बलामधुकमंजिष्ठापद्मपद्मकचंदनैः ॥ समुद्रफेनह्रीबेररजनीगैरिकोत्पलैः ॥ पिष्टैरेतैः पचेत्तैलंमस्तुक्षीरचतुर्गुणं ॥ वातापित्तज्वराज्जीर्णातेनाभ्यक्तोविमुच्यते ॥

अर्थ—खरेटीकीजड, मुलहटी, मजीठ, पद्माख, अंडकीजड, चंदन, समुद्रफेन, सोंठ,हलदी, गेरू, और कमलगट्टा, इनका कल्क करके उसमें तेल और दूध तथा दहीका तोड दूधसै चौगुना डालके तेल सिद्ध करे,तो यह बलादितैल मालिस करनेसैं वातपित्तज्वर, और जीर्णज्वर इनका नाश करे ॥

पटोलाद्यस्नेह

पटोलपिचुमंदाभ्यांगुडूच्यामलकेनच ॥
मदनैश्चशतः स्नेहोज्वरघ्नमनुवासनं ॥

अर्थ—पटोलपत्र, नीमकी छाल, गिलोय, आमरे, और मैनफल, इनके काढेसैं सिद्धकराहुआ तैल ज्वरमें पिचकारी द्वारा गुदामें देय तो ज्वरको नाश करे

चंदनाद्यनुवासन

चंदनोत्पलकाश्मर्यमधुकागरुमूलकैः ॥
सिद्धंतैलंविधातव्यंबस्तौसर्वज्वरापहं ॥

अर्थ—चंदन, कमलगट्टा, कंभारी, महुआके फूल, अगर, तथा, मूली इनके काढेसैं सिद्ध करे हुए तेलकी अनुवासन बस्ति करनेसैं संपूर्ण ज्वरोंको दूर करे ॥

पटोलाद्यनुवासन

पटोलमदनारिष्टगुडूचीमधुकैः स्मृतं ॥ श्वदंष्ट्रामदनंशृंगामधुकारिष्टवासकैः ॥ अश्वगंधेतितैलस्यकार्षिकैराढकंपचेत् ॥ अनुवासनकेतैलंसर्वज्वरविनाशनं ॥ कृच्छ्रान्वातविकारांश्च नाशयेदपिचोत्थितान् ॥

अर्थ—पटोलपत्र, मैनफल, नीमकी छाल, गिलोय, महुआके फूल, गोखरू, खैर, कांकडासिंगी, मुलहटी, रीठा, अडूसा और असगंध,ये प्रत्येक तोले २ लेकर काढा करे इसमें २५६ तोले तेल डालके पचावे, इस तेलसैं अनुवास बस्ती करनेसै संपूर्ण ज्वर और कष्टसाध्यवात विकारोंका नाश करे ॥

आरग्वधादिनिरूहबस्ति

आरग्वधमुशीरंचमदनस्यफलानिच ॥ पर्ण्यश्चतस्रोमधुकंनिरूहमनुकल्पयेत् ॥ प्रियंगुमदनंमुस्तंमधुकंचशताह्वयं ॥ कल्कः सर्पिर्गुडक्षौद्रैर्ज्वरघ्नोबस्तिरुत्तमः ॥

अर्थ—अमलतासका गूदा, खस, मैनफल, चारप्रकारकी पर्णी और मुलहटी इनका काढा करके निरूह वस्ती करावे अथवा फूल प्रियंगु, मैनफल, मोथा मुलहटी, और सतावर इनका कल्क, घी गुड और सहत लालके इनकी वस्ती देवे यह उत्तम ज्वरघ्न है ॥

तैलपाकविधि

घृततैलगुडादींस्तुएकाहान्नैवसाधयेत् ॥ उषितास्तुप्रकुर्वंति विशेषेणगुणान्बहून् ॥ स्नेहकल्कोयदांगुल्यावर्तितोवर्तिवद्भवेत् ॥ वन्हौक्षिप्तेचनोशब्दस्तदासिद्धंविनिर्दिशेत् ॥

अर्थ-घृत, तेल, और गुड आदि औषधोंको एकदिनमें सिद्ध न करे, वासेहोनेसैं विशेष गुण करतेहै । जिससमय तैलमें कल्क ओढावे और औटते २ उँगलियोंमें मसलनेसैं वत्तीके समान हो जावे और तेल अग्निमें डालनेसैं चर्रचर्र शब्द न करे उस समय तेल सिद्ध हुआ ऐसा जानना ॥

मंदमध्यमवतीक्ष्णस्नेहपाक

नस्येमृदुः खरोभ्यंगेस्नेहेकिट्टंतुमध्यमं ॥
नातिस्थिरंपचेद्वस्तौखरमभ्यंजनेपचेत् ॥

अर्थ—स्नेहनस्यविषयमें मृदु रखना चाहिये,उवटनेकेलियेखर (तेज) पाककरे मध्यम स्नेह कल्कका किट्टहोने पर्यंत पचन करावे उसीको बस्ती विषयमें तीव्र पचावे ॥

खरपाकलक्षण

स्नेहपाकोत्थकल्केस्यान्मृदुरंगुलिकोपिन ॥
अगृण्हात्यंगुलिमथशीर्यमाणोखरः स्मृतः ॥

अर्थ—पाककेसमय स्नेहपाकमें कल्क मृदुभी न हो,ओटानेमें काढाभी न होजावे,उगलियोंपर मलनेसैं उंगलीयोंको पकडे नहीं,फैल जावे उसे खरपाक जानना

खरवमृदुपाककाफल

खरोभ्यंगेमृदुर्नस्येमध्यः स्याद्वस्तिपानयोः ॥ परंपाकोमृदुः कार्योद्रव्यस्यनखरोमतः॥किंचित्तुशीर्षमादत्तेनजहातिखरःपुनः

अर्थ—खर पाक स्नेह उवटनेके विषय, और मध्यपाक वस्ति और पीनेके विषय देवे,परंतु द्रव्यपाक मृद करावे, खर न करे खरपाक होनेसैं मस्तक शूलादि विकारोंको करे है और यह छुटता नही है ॥

चंदनबलातैल

चंदनंचबलामूलंलाक्षालामज्जकंतथा ॥ पृथक्पृथक्प्रस्थमात्रं द्रोणेचसलिलेपचेत् ॥ चतुर्भागावशेषेस्मिन्तैलंप्रस्थद्वयंक्षिपेत् ॥ चंदनोशीरमधुकशताह्वाकटुरोहिणी ॥ देवदारुनिशाकुष्ठंमंजिष्ठागुरुवालकं ॥ अश्वगंधाबलादार्वीमूर्वामुस्तासमूलिका ॥ एलात्वङ्नागकुसुमंरास्नालाक्षासुगंधिका ॥ चंपकंपीतसारंचसारिवारोचकद्वयं ॥कल्कैरेतैः समायुक्तंक्षीराढकसमन्वितं ॥ तैलमभ्यंजनेश्रेष्ठंसप्तधातुविवर्धनं ॥कासश्वासक्षयहरंसर्वच्छर्दिनिवारणं ॥ असृग्दरंरक्तपित्तंहंतिपित्तंकफामयं ॥ कांतिकृद्दाहशमनंकंडूविस्फोटनाशनं ॥ शिरोरोगंनेत्रदाहमंगदाहंचनाशयेत् ॥ वातामयहतानांचक्षीणानांक्षीणरेतसां ॥ बालमध्यमवृद्धानांशस्यतेशोफकामलां ॥ पांडुरोगंविशेषणज्वरान्सर्वान्विनाशयेत् ॥

अर्थ—चंदन, खरेटीकी जड, लाख, और नेत्रवाला, ये चार औषध पृथक्२ चौसठ तोले ले १०२४ तोले जलमें ओंटावे जब पानी चतुर्थांश बाकी रहे तब तेल १२८ तोले डालके फिर चंदन, नेत्रवाला, महुआके फूल, सोफ, कुटकी, देवदार, हलदी, कूठ, मजीठ, अगर, खस, असगंध, खरेटी, दारुहलदी, मूर्वा, नागरमोथा, इलायची, दालचीनी, नागकेशर, रास्ना, लाख, निर्गुंडी, चंपा, सिलारस, सारिवा, सैंधानिमक, और संचरनोन, ए सब समान भाग लेके कल्क करे, पीछे यह कल्क और दूध २९६ तोले मिलायके ओंटावे जब तेल सिद्ध होजावे तब उतारके धर रक्खे। इसे मालिस करे तो सातों धातु बढावे, तथा कांतिकरे खांसी, श्वास,क्षय, वमन, प्रदर, रक्तपित्त, कफ, दाह, खुजली, फोडा मस्तकशूल, नेत्रदाह, अंगदाह, और वादीके रोग इनको नाश करे तथा क्षीणधातुक्षीण, बालक, तरुण, और वृद्ध, इनको हितकारी है, तथा सूजन, कामला, पांडु, और ज्वर इत्यादिकोको नाश करे ॥

अश्वगंधादितैल

अश्वगंधाबलालाक्षाप्रस्थंप्रस्थंपृथक्पृथक् ॥ जलेद्रोणेविप

क्थ्यंचतुर्भागावशेषितं ॥ तैलंत्रिमानकंदद्याद्दधिमस्तुचतुर्गुणं ॥ अश्वगंधाशिलादारूकौंतीकुष्टाब्दचंदनैः ॥ निशातिक्ताशताव्हाचलाक्षामूर्वासमूलकैः ॥ सुरादारुचमंजिष्ठामधुकौशीरसारिवा ॥ समभागानिसर्वाणिकल्कीकृत्यविपाचयेत् ॥ सर्वज्वरान्हरत्याशुसर्वधातुविवर्धनं ॥ एतदभ्यंजनेनाशुक्षयरोगंविमुंचति ॥

अर्थ—असगंध, खरेटी, लाख, प्रत्येक ६४ तोले ले १०२४ तोले जलमें काढा करे, जब चतुर्थांश रहे तब १९२ तोले तेल डालके काढेसैं चौगुना दहीका तोड डाले, फिर असगंध, मनसिल, दारहलदी, रेणुका, कूठ, नागरमोथा, चंदन, हलदी, कुटकी, सौफ, लाख, मूर्वा, देवदार, मंजीठ, महूआके फूल, खस, सारिवा ये सब औषध, कूटके डाले और तेलको ओटावे जब सिद्ध हो जाय तब उतारके धर रक्खे इसकी मालिस करनेसैं सर्व प्रकारके ज्वरनाश होय, तथा ये धातु वढावे और क्षयरोगको नष्ट करे ॥

बृहल्लाक्षादितैल

तैलंलाक्षारसंक्षीरंपृथक्प्रस्थंसमंपचेत् ॥ चतुर्गुणेरितेक्काथेद्रव्यैरेतैः पलोन्मितैः ॥ लोध्रकट्फलमंजिष्ठामुस्तकेसरपद्मकैः ॥ चंदनोशीरयष्ट्याव्हैस्तैलंगंडूषधारणात् ॥ दंतरोगाः प्रणश्यन्तिलेपात्सर्वान्ज्वरान्जयेत् ॥ एतल्लाक्षादिकंतैलंबलपुष्टिप्रदायकं ॥

अर्थ—लाखका काढा, दूध, ये प्रत्येक, ६४ तोले लेके चतुर्थांश काढा करे उसमें लोध, कायफल, मजीठ, नागरमोथा, केशर, पद्माख, चंदन, नेत्रवाला, और मुलहटी, ये सब औषध चार ४ तोले ले, कूटके कल्ककरे इसको पूर्वोक्त कषायमें मिलायके औटावे तो यह लाक्षादि तैल बनकर तयार हो इसको देहमें मालिस करे तो सर्वज्वरदूर हो तथा दांतोंके रोगदूरहो ॥

पंचसमहालाक्षादितैल

लाक्षाहरिद्रामंजिष्ठाफेनिलंमधुकंबला॥लामज्जकंचंदनचंपकंनीलमुत्पलं॥प्रत्येकमेषांषण्मुष्टीः पक्त्वातोयेचतुर्गुणे॥ च-

तुर्भागावशेषेतुगर्भेचैतत्समावपेत् ॥ रेणुकापद्मकंचैववाजि-
गंधातथैवच ॥ वेतसंचोरकंकुष्ठंदेवदारुनखंत्वचं ॥शतपुष्पां-
पुंडरीकंमांसीमधुकमेवच ॥ एभिरक्षामितैः कल्कैः कषायेणै-
वपेषितैः ॥ मस्तुसूक्तारनालानामाढकाढकमावपेत् ॥ क्षी-
राढकसमायुक्तंतैलप्रस्थंविपाचयेत् ॥ अभ्यंगात्तैलमेतद्धि-
शीघ्रंदाहमपोहति॥व्यपोहतितथावातपित्तश्लेष्मभवंज्वरं ॥
सप्रलापंसतृष्णंचतालुशोषभ्रमान्वितं ॥ग्रहोपसृष्टायेबालार
क्षःसंदूषिताश्चये॥ तेषांकष्टंशमयतेतैलंलाक्षादिकंमहत्॥

अर्थ—लाख, हलदी, मजीठ, बेर, मुलहटी. खरेटी, चंदन, चंपाकेपुष्प नीलकमल, ये प्रत्येक २४ तोले लेय, और इन सब औषधोंका चौगुना जल, डालके ओटावे जब चतुर्थांश रहे तब इसमें रेणुका, पद्माख, असगंध, वेत, गठोना, कूठ, देवदारु, नख, दालचीनी, सौंफ, कमल, जटामांसी, मुलहटी, ये प्रत्येक औषध तोले २ भरले कूट पीस पूर्वोक्त काढेमें डाल देवे फिर दहीका पानी कांजी, सिरका, दूध ए प्रत्येक ५५६ तोले ले सबको मिलाय इसमें ६४ तोले तेल तथा २५६ तोले दूध डालके पकावे जब तेल मात्र आय रहे तब जानेकि सिद्ध होगया इसके मालिस करनेसै दाह, वादी, कफ, सर्व ज्वर, इनको नाशकरे तथा ग्रह, राक्षस, इनकी पीडासैं पीडित वालककी पीडाशांत करेहै ॥

निरूहबस्तिद्रव्यमान

एकादशाष्टौषट्कंचकषायस्यपलंमतं ॥ कफपित्तानिलोत्थे-
षुविकारेषुयथाक्रमं॥स्नेहस्यात्रिचतुः षट्चश्चत्वारोमधुनस्त-
था ॥तथाद्वयंतुकल्कस्यकर्षःस्यात्सैंधवस्यच॥रसक्षीराम्ल-
मत्स्यानामेकैकंप्राक्षिपेत्पलं ॥ निरूहकल्पनामात्राकथितै-
षामहर्षिणा ॥

अर्थ—निरूहबस्तीमें काढा लेना लेय तो कफमें ११ तोले, पित्तमें ८ तोले-वातमें ६ तोले इसप्रकार लेवे और सहत तथा स्नेह लेना होय तो कफ, वात, और पित्तइनमे क्रमसै ४ – ६ – और ४ पल लेवे तथा कल्क दो पल सैंधानिमक १ तोला और मांसरस, दूध, खटाई. मछली, डालना होय तो चार चार तोले डालना, ये निरूह बस्तीमे द्रव्य डालनेका मान महर्षियोंने कहाहै ॥

चतुर्थलाक्षादितैल

लाक्षारससमंतैलंतैलान्मस्तुचतुर्गुणं ॥ अश्वगंधानिशादारु कौंतीकुष्ठाब्दचंदनैः ॥ समूर्वारोहिणीरास्नाशताव्हामधुकैः समैः ॥ सिद्धंलाक्षादिकंनामतैलमभ्यंजनादिना ॥ सर्वज्वरक्षयोन्मादश्वासापस्मारवातनुत् ॥ यक्षराक्षसभूतघ्नंगर्भिणीनां चशस्यते ॥

अर्थ—लाखका काढा, तथा काढेके तुल्य तिलका तेल, और तेलसैं चौगुना दहीकाजल, और असगंध, हलदी, देवदारु, रेणुका, कूठ, नागरमोथा, चंदन मूर्वा, कुटकी, रास्ना, सतावर, और मुलहटी, ये औषध समानभाग डालके तेल सिद्धकरे यह लाक्षादितैल, मालिस अथवा पीनेसैं, सर्वज्वर, क्षय, उन्माद, श्वास, मृगी, वादीके रोग, यक्ष, और, राक्षसकी, बाधा, तथा भूतबाधा इनको दूर करे और गर्भिणीको हितकारी है ॥

घृतवातैलपक्कहुएकीपरीक्षा

शब्दव्युपरमेप्राप्तेफेनव्युपरमेतथा ॥ गंधवर्णरसादीनांसम्यक्त्वेसिद्धमादिशेत् ॥ फेनातिमात्रंतैलस्यशब्दंघृतवदादिशेत्॥

अर्थ—घृततैल आदिकी सिद्धीके समय कटकट शब्द बंद हो जावे,झागोंका आना बंद हो जाय, तथा गंध, वर्ण, और रस इनकी शुद्धता होनेपर जानेकि अब घृत अथवा तेल सिद्ध हो गया ॥

औषधिकितनेदिनउपयोगपडतीहै

पक्कतैलोद्भवेवीर्यंहीनमब्दार्धतःपरं॥ घृताच्चाब्दात्पुरावृद्ध्यागुडादेस्त्वब्दतः परं॥गुणहीनंभवेद्वर्षादूर्ध्वतोन्यूनमौषधं॥मासद्वयात्तथाचूर्णंहीनवीर्यंप्रजायते॥ हीनत्वंगुटिकालेहाद्वचब्दात्तेवत्सरात्परं॥हीनाःस्युर्घृततैलाद्याश्चातुर्मासाविकारास्तथा॥

अर्थ—सिद्धहुआ तेल १ वर्षके पश्चात् हीनवीर्य होता है, उसीप्रकार घृत एक वर्ष पर्यंत उत्तमगुणकरता है, और गुड आदि वर्षदिनके उपरांत गुणकारी होते है सामान्यकाष्टौषधी एकवर्ष व्यतीत्त होनेंपर हीनवीर्य हो जाती है, चूर्ण दोमहिने में हीन वीर्य होता है,तथा गुटका और अवलेह दोवर्षमें हीनवीर्य होते है, और घृत तेल आदिद्रव्य चार माहिनेके अनंतर हीनवीर्य हो जाते है ॥

दुसरामहाज्वरांकुश

शुद्धसूतोविषंगंधः प्रत्येकंशाणसंमिताः ॥ धूर्तबीजंत्रिशाणं-स्यात्सर्वेभ्योद्विगुणाभवेत् ॥ हेमाव्हाकारयेदेषां सूक्ष्मचूर्णंप्र-यत्नतः । देयंजंवीरमज्जाभिश्चूर्णंगुंजाद्वयोन्मितं ॥आर्द्रकस्व-रसैर्वापिज्वरंहंतित्रिदोषजं ॥ एकाहिकंवाद्व्याहिकंवात्र्याहि-कंचचतुर्थकंविषमंचज्वरंहन्याद्विख्यातोयंज्वरांकुशः ॥

अर्थ—शुद्धपारा ३ मासे, शुद्धविष ३ मासे, गंधक ३ मासे, धतूरेकेबीज ९ मासे, चोकसवसैं दुगना इन सबका चूर्ण कर जभीरीके रससैं खरल कर दो रती-की गोली बनावे १ गोली अदरखके रससैं खाय तो त्रिदोषज ज्वर, एकाहिक, द्व्याहिक,त्र्याहिक,चातुर्थिक,विषम तथादिनरात्रिमें आनेवाला ज्वरदूर हो, इसको (महाज्वरांकुश) कहते है,यदि जभीरीका रस न मिले तो अदरखके रसमे हीं घोट कर गोली बनावे ॥

ज्वरघ्नीवाटिका

एकोभागोरसाच्छुद्धाच्छैलेयः पिप्पलीशिवा ॥ आकारकर-भोगंधः कटुतैलेनशोधितः ॥ फलानिचेंद्रवारुण्याश्चतुर्भाग-मिताअपी ॥ एकत्रमर्दयेच्चूर्णमिंद्रवारुणिकारसैः॥माषोन्मि-तांवटींकृत्वादद्यात्सद्योज्वरेबुधः ॥ छिन्नारसानुपानेनज्वर-घ्नीवटिकामता ॥

अर्थ—शुद्धपारा १ भाग, एलुआ शुद्ध, पीपल, हरड, अकरकरा, कडुएतेलमें शुद्ध करी गंधक और इन्द्रायनके फल ये प्रत्येक चार २ भागलेवे सबको इन्द्रा यन के फलके रसमें खरलकर १ मासेकी गोली बनावे १ गोली गिलोयके रसके साथ ज्वरमें देवे तो यह (ज्वरघ्नीगुटिका) तत्काल ज्वरोंको दूर करे ॥

दुसराज्वरमुरारि

त्रिः सप्तजंभजलभावितखर्परस्यचूर्णंनिशोत्थनवनीतविमर्दि-तंस्यात् ॥ वल्लद्वयंहरतिशर्करयानुपानंसद्योज्वरंज्वरमुरारि-रसश्चपुंसां ॥

अर्थ—खपरियाके चूर्णमें नींबूके रसकी २१ भावना देय फिर ताजे मक्खनमें

खरल करे इसकी मात्रा ४ रत्ती मिश्रीके साथ देवे तो यह सद्यज्वरको नाश करे इसे (ज्वरमुरारि) रस कहते है. ॥

स्वर्णमालिनिवसंत

स्वर्णमुक्तादरदमरिचंभागवृद्ध्याप्रदेयंखर्पर्यष्टौप्रथमनवनीतेननिंब्वंबुनाच॥ यावत्स्नेहोव्रजतिविलयंमर्दयेद्दीयतेसौगुंजाद्वंद्वंमधुचपलयासर्वरोगेवसंतः ॥

अर्थ—सुवर्ण १ तोले, मोती २ तोले, कालीमिरच ३ तोले, और खपरिया ८ तोले इनका चूर्णकर मक्खनमें घोटे,फिर नीवूके रसमें जवतक घोटे कि चिकनाई न रहे इसको २ रत्ती सहत, पीतलके साथ देवे ये सर्वरोगोंपर चलती है इसैं (स्वर्णमालनी) कहते है ॥

लघुमालिनीवसंत

रसकयुगलभागंवह्लिजंभागमेकंद्वितयमथसुखल्वेमर्दयेन्मसृणेन ॥ भवतिघृतविमुक्तोनिंबुनीरेणयावज्ज्वरहरमधुकुल्योमालिनीप्राग्वसंतः ॥ जीर्णज्वरेधातुगतेऽतिसारेरक्तान्वितेरक्तभवेविकारे ॥ घोरव्यथेपित्तभवेचदोषेवल्लद्वयंदुग्धयुतंचपथ्यं ॥ प्रदरंनाशयत्याशुतथादुर्नामशोणितं ॥ विषमंनेत्ररोगंचगजेंद्रमिवकेसरी ॥ वसंतोमालिनीपूर्वःसर्वरोगहरः शिशोः॥ गर्भिण्यैतच्चदेयंचजयंत्यापुष्पकैर्युतं ॥ सर्वज्वरहरंश्रेष्ठंगर्भपालनमुत्तमं ॥

अर्थ—खपरिया २ तोले, कालीमिरच १ तोले, दोनोको एकत्रकर मक्खनमें घोटे फिर नीवूके रसमें चिकनाई दूर होने पर्यंत घोटे, इसमेंसैं ४ रत्ती सहत और पीपलके चूर्ण के साथ देवे, इसे (मालनीवसंत) रसकहते है । यह जीर्णज्वर, धातुगतज्वर, अतिसार, रक्तातिसार, रुधिरसैं उठे विकार, घोर पित्तविकार, प्रदर, अर्शसंबंधी रुधिर, विषमज्वर, और नेत्ररोग इनमें देवे यह हाथीको सिंहके समान सर्वरोग नाशक है तथा जयंतीके पुष्पके साथ गर्भिणीको देय तो सर्वज्वरोको नाश करके गर्भका उत्तमरीतिसैं पालन करे इसपर दूध भातकी पथ्य देवे ॥

दार्व्यादिवटिका

दारूनिशाशिखिग्रीवारसकंचपृथक्पृथक् ॥ टंकंवयानुमाने
नगृहीत्वाकनकद्रवैः ॥ मर्दयेत्रिदिनंकार्यावटीचणकमात्रया॥
मरीचैरेकविंशत्यासप्तभिस्तुलसीदलैः॥ खादेद्वटीद्वयंपथ्यदु-
ग्धभक्तंसशर्करं ॥ तरुणंविषमंजीर्णंहन्यात्सर्वज्वरंध्रुवं ॥

अर्थ—दारुहलदी ३ तोले, लीलाथोथा ३ तोले, खपरिया ३ तोले, इस प्रकार लेकर धतूरेके रसमें ३ दिन खरलकरे, चनेके प्रमाण गोली बनावे उसको पचीस कालीमिरच और ७ पत्ते तुलसीके साथ दो गोली देवे और दूध भात मिश्री ये पथ्यमें देय तो तरुणज्वर, विषमज्वर और जीर्णज्वर, इत्यादि सर्वज्वरोंका नाश करे इसे दार्व्यादिवटी कहते है ॥

हुताशनरस

नागरंकर्षमात्रंस्यात्कर्षमात्रंचटंकणं ॥ मरिचंसार्धकर्षस्या-
त्तावद्दग्धवराटकं ॥ विषंकर्षचतुर्थांशंसर्वमेकत्रचूर्णयेत् ॥
रसोहुताशनोनाम्नाखाद्योगुंजामितोज्वरे ॥

अर्थ—सोंठ १ तोले, सुहागा १ तोले, कालीमिरच १ तोले, कौडीकी भस्म १ तोले, विष पाव तोले इन सबका चूर्ण कर लेवे इसे (हुताशनरस) कहते है १ रत्ती पानके साथ देनेसें ज्वरोंको दूर करे ॥

दुसरालघुमालिनीवसंत

खर्परंमानुषेमूत्रेस्थितंघस्रेत्रिसप्तकं ॥ निस्त्वक्कृतदर्धमरिचंन
वनीतेनमर्दयेत् ॥शतधाभावयेन्निंबुरसैःस्याद्रसकेश्वरः॥पि-
प्पलीमधुयुग्दतःससितोवास्यभेषजं॥ ज्वरंधातुगतंपित्तंभ्रम-
पितास्रजान्गदान् ॥ रक्तातिसारग्रहणीदुर्नामास्रंनिवारये
त् ॥ अनम्लंदधिवादुग्धंपथ्यंचास्मिन्प्रयोजयेत् ॥

अर्थ—खपरियाको २१ दिन मनुष्यके मूत्रमें भिगोवे फिर बाईसवे दिन निकाल चूर्ण कर इससे आधी धुली हुई कालीमिरच डालके चूर्ण करे, फिर मखनमें घोटके नीबूके रसकी १०० भावना देवे,तो यह रस तयार हो, यह (रसकेश्वर) पीपल और सहत तथा मिश्री इनके साथ देवे तो धातुगत ज्वर, पित्त-

भ्रम, रक्तपित्त, रक्तातिसार, संग्रहणी, अर्शविकार, इनको नाश करे इसपर मीठा दही अथवा दूध पथ्यमें देवे ॥

अपूर्वमालिनीवसंत

वैक्रांतमभ्रंरविताप्यरौप्यंवंगंप्रवालंरसभस्मलोहं ॥ सुटंकणं कंबुकभस्मसर्वसमांशकंपाच्यवरीहरिद्रा॥ द्रव्यैर्विभाव्यंमुनि संख्ययाचमृगांकजाशीतकरेणपश्चात् ॥ वल्लप्रमाणोमधुपि प्पलीभिर्जीर्णज्वरेधातुगतेनियोज्यः ॥ गुडूचिकासत्वसिता युतश्चसर्वप्रमेहेषुनियोजनीयः ॥ कृच्छ्राश्मरींनिहंत्याशुमातुलुं गंघ्रिजैर्द्रवैः ॥ रसोवसंतनामायमपूर्वोमालिनीपदः ॥

अर्थ—वैक्रांत मणि, अभ्रक, ताम्र, सुवर्ण, माक्षिक, रूपा, वंग, मूंगा, पारा, लोह, इनकी भस्म और सुहागा तथा शंखभस्म, ये समान भाग लेके सतावरी और हलदी, इनकी सात २ भावना देवे और चाँदनीमें धर देवे फिर टिकडी बनायले इसमेंसैं २ रत्ती रस सहत पीपलके साथ देय तो जीर्णज्वर, धातुगत ज्वर दूरहो, और गिलोय सत्वके और मिश्री साथ देय तो सर्व प्रमेह दूर हो बिजोरेके पत्तेके रससैं देय तो पथरी नष्ट हो इस रसको (अपूर्वमालिनी वसंतरस) कहते है ॥

दुसरालघुमालिनीवसंत

नरांबुमध्येरसकस्यचूर्णंदिनानिसप्तत्रिगुणानिपूर्वं ॥ धृत्वात पेशोषितमेतदेवनृवारिजीर्णंभवतीतियावत् ॥ पलप्रमाणंमरि चंचनिस्तुषंपलद्वयंस्याद्रसकस्यतस्य॥एकत्रसंचूर्णकृतंतदेव पलार्धकंगोनवनीतकंच ॥ निंबूत्थतोयेनविमर्दनीयंशतैकमा नंभिषजावरिष्ठं ॥ वल्लद्वयंचास्यकणामधुभ्यांप्रदापयेद्व्याधि गजस्यकेसरी ॥ नाम्नाप्रसिद्धोरसराजएषःसद्योग्रहण्यामति सारकेच ॥ ज्वरेक्षयेर्शस्सुतथैवतापेशूलेग्निमांद्येनिलजेवि कारे ॥ प्रदरंनाशयत्याशुतथादुर्नामशोणितं ॥ विषमंनेत्ररो गंचगजेंद्रमिवकेसरी ॥

अर्थ—घोडेके मूत्रमें खपरियाको भिगोय २१ दिनतक धरा रहेने दे फिर-

धूपमें सूखाय उसका चूर्ण ८ तोले लेवे और ४ तोले मिरचका चूर्ण तथा हींगलू ८ तोले सबको एकत्रकर दो तोले गौके मक्खनमें खरलकरे फिर १०० नीबूके रसमें खरल करे तो रसवनके तयारहो इसकी ४ रत्ती मात्रा सहत पीपलके साथ देवे तो यह (व्याधिगजकेशरी रस) संग्रहणी, अतिसार, ज्वर, क्षय, ववासीर, ताप, शूल, मंदाग्नि, वादीकाविकार, और प्रदर इनको नाश करे तथा अर्शसंबंधी रुधिर, विषमज्वर, नेत्ररोग इनमें देवे, यह रोगरूप हाथियोंके मारनेमें सिंहके समान है ॥

लघुसूचिकाभरणरससान्निपातपर

विषंपलमितंसूतः शाणिकंचूर्णयेद्द्वयं ॥ तच्चूर्णंसंपुटेक्षिप्त्वा काचलिप्तशरावयोः ॥ मुद्रांदत्वाचसंशोष्यततश्चूल्यांनिवेशयेत्॥वन्हिं शनैः शनैः कुर्यात्प्रहरद्वयसंख्यया॥ततउद्घाटयेन्मुद्रामुपरिस्थांशरावकात् ॥ संलग्नोयोभवेत्सूतस्तंगृण्हीयाच्छनैःशनैः ॥ वायुस्पर्शोयथानस्यात्तथाकुप्यांनिवेशयेत् ॥ यावत्सूच्यामुखेलग्नः कुप्यानिर्यातिभेषजं॥ तावन्मात्रोरसोदेयोमूर्छितेसन्निपातिनि ॥ क्षौरेणप्रास्थितेमूर्ध्नितत्रांगुल्याचघर्षयेत् ॥ रक्तभेषजसंपर्कान्मूर्छितोपिहिजीवति ॥ तथैवसर्पदष्टस्तुमृतावस्थोपिजीवति ॥ यदातापोभवेत्तस्यमधुरंतत्रदीयते ॥

अर्थ—विष ४ तोले, शुद्धपारा ३ मासे, दोनोको खरलकर चूर्णकरे फिर मिट्टीके प्यालेमे कांचको पीस लेप कर सिद्ध करलेवे इसप्रकार सिद्धकरे कांचके वडे २ दो प्याले लेवे एकमें पूर्वोक्त घुटे पारेको डालके दूसरेसैं संपुख वंदकर कपर मिट्टी करके सुखायले फिर चूल्हेपर धरके मंद मंद आग्नि दोप्रहर तक देवे फिर नीचे उतार मुद्राको दूर कर ऊपरके पारेमें लगी हुई भस्मको धीरे२ हवासैं वचायके युक्तिसैं निकाल शीशीमें भरके धर देवे, फिर उसशीशीमें सूईडाले सुईके अग्रभागमें जितनी भस्म लगे इतनी निकाल सन्निपातवाले मनुष्यके मस्तकके वाल दूर कर और किंचिन्मात्र चीरा देके उसमें भरदेवे और जवतक रुधिरमे ये औषधी नामिले तवतक धीरे२ऊगलीसैं घिसता रहे इसके रुधिरसैं मिलाप होतेही तत्काल संनिपातकी मूर्च्छा दूर हो उसीप्रकार सर्पका काटा हुआ जो विषसैं मूर्च्छित हो वोभी इस उपायके करनेसैं बचजावे, यदि इस उपायके कर

जैसें मनुष्यके देहमें दाह होवे तो गुलकंद, बिलायती अनार, दाख, अंगूर, ईख-की गडेरी, इत्यादि मधुर पदार्थ खवावे तो उस रोगीका दाह शांति होय ॥

जलचूडामणिरस

भस्मसूतसमंगधंगंधात्पादंमनःशिला॥माक्षिकंपिप्पलीव्योषं-
प्रत्येकंशिलयासमं ॥ चूर्णयेद्भावयेत्पित्तैर्मत्स्यमायूरसंभवैः ॥
सप्तधाभावयेच्छुष्कंदेयंगुंजाद्वयेहितं ॥ तालपर्णीरसश्चानुपं
चकोलशृतेनवा ॥ जलचूडोरसोनामसन्निपातंनियच्छति ॥
जलयोगश्चकर्तव्यस्तेनवीर्यंभवेद्रसे ॥

अर्थ--पारेकीभस्म १ तोले, गंधक १ तोले, मनसिल ३ मासे, सोनामख्खी-की भस्म, पीपल, सोंठ, कालीमिरच, सब तीन तीन मासे लेवे सबका चूर्णकर इसको मछलीके पित्तेकी सात भावना देवे, उसीप्रकार सात पुट मोरके पित्तेकी देवे फिर दो रत्तीकी गोली बनावे, १ गोली मूसलीके रससैं अथवा पंचकोलके काढेसैं देवे तो यह (जल चूडा मणिरस) संनिपातको दूर करे, इस गोलीको देकर फिर उस रोगी मनुष्यके मस्तकपर शीतल जलका तरडा देवे कि जिससैं रसमें वीर्य आनकर संनिपातको दूर करे ॥

कनकसुंदररससन्निपातादिकोंपर

कनकस्याष्टशाणाःस्युःसूतोद्वादशभिर्मतः ॥ गंधोपिद्वादश
प्रोक्तस्ताम्रशाणद्वयोन्मितं ॥ अभ्रकस्यचतुःशाणमाक्षिकंच
द्विशाणकं ॥ वंगोद्विशाणःसौवीरंत्रिशाणंलोहमष्टकं ॥ विषं
त्रिशाणिकंकुर्याल्लांगलीपलसंमिता ॥ मर्दयेद्दिनमेकंचरसैर
म्लफलोद्भवैः ॥ दद्यान्मृदुपुटेवन्हौततः सूक्ष्मंविचूर्णयेत् ॥मा
षमात्रोरसोदेयःसन्निपातेसुदारुणे ॥ आर्द्रकस्वरसेनैवरसोन
स्यरसेनवा ॥ किलासंसर्वकुष्टानिविसर्पंचभगंदरं ॥ ज्वरंगरम
जीर्णंचजयेद्रोगहरोरसः ॥

अर्थ—धतूरेके वीज ८ टंक, पारा १२ टंक, गंधक १२ टंक, ताम्रभस्म २ टंक, अभ्रकभस्म ४ टंक, सोनामक्खीकी भस्म २ टंक, वंगभस्म २ टंक, शुद्धकरा-सुरमा ३ टंक, लोहभस्म ८ टंक, शुद्धविष ३ टंक, और कटेरीकी जड ४ तो-

ले सबको एकत्रकर नींबूके रससैं एकदिन खरल करे फिर मिट्टीके सरावमें संपुट करके आरने उपलोमें धरके मंद पुट देवे जब शीतल हो जावे तब सरावमेंसैं निकालके चूर्ण कर डाले १ मासे रस संनिपात वाले रोगीको अदरखके रसके साथ देवे, और लहसनके रससैं देय तो किलास तथा सर्वप्रकारके कुष्ठ, विसर्प, भगंदर, ज्वर, विषरोग, और अजीर्ण इन सब रोगोंको यह (कनकसुंदररस) दूर करे है ॥

सन्निपातभैरवरस

रसोगंधस्त्रिस्त्रिकर्षौकुर्यात्कज्जलिकाद्वयोः॥ताराभ्रताम्रवंगाहिसाराश्चैकैककार्षिकाः ॥शिग्रुज्वालामुखीशुंठीबिल्वेभ्यस्तंडुलीयकान् ॥ प्रत्येकंस्वरसैःकुर्याद्यामेकैकंविमर्दयेत् ॥ कृत्वागोलंवृतंवस्त्रेलवणापूरितेन्यसेत् ॥ काचभांडेततःस्थाल्यांकाचकूपींनिवेशयन् ॥ वालुकाभिःप्रपूर्याथवन्हिर्यामद्वयंभवेत् ॥ ततउद्धृत्यतंगोलंचूर्णयित्वाविमिश्रयेत् ॥ प्रवालचूर्णकर्षेणशाणमात्रविषेणच॥ कृष्णसर्पस्यगरलेदिवसंभावयेत्तथा ॥ तगरंमुसलीमांसीहेमाव्हावेतसः कणा ॥ नीलिनीपत्रकंचैलाचित्रकश्चकुठेरकः॥शतपुष्पादेवदालीधत्तूरागस्त्यमुंडिका ॥ मधूकजातिमदनरसैरेषांविमर्दयेत् ॥ प्रत्येकमेकवेलंचततःसंशोष्यधारयेत् ॥ वीजपूरार्द्रकद्रावैर्मरिचैःषोडशोन्मितैः ॥ रसोद्विगुंजाप्रमितःसन्निपातस्यदीयते ॥ प्रसिद्धोयंरसोनाम्नासंन्निपातस्यभैरवः ॥

अर्थ–शुद्धपारा ३ तोले और गंधक ३ तोले, दोनोको खरलकर कजली करे फिर चांदीकी भस्म, अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म, वंगभस्म, नागभस्म, और लोहभस्म, ये प्रत्येक तोले २ भर लेवे सबको पारेगंधककी कजलीमें मिलाय देवे, फिर सहजनेके रससें १ प्रहर खरल करे, ज्वालामुखीके रससैं,सोंठके काढेसैं, वेल फलके रससैं और चौलाईके रस इन प्रत्येक पृथक् २ एक एक प्रहर खरल करेमें,फिर इसको गोलाकर कांचके पात्रमें रखके दूसरेसैं मुख वंककर उस पर कपरमिट्टी कर के मिट्टीके मटकेको आधा निमकसैं भरके वीचमें उस पूर्वोक्त कांचके पात्रको

रखके बाकी सबको निमकसें भर देवे. फिर उस मिट्टीके संपुटको चूल्हेपर चढाय दो प्रहरकी अग्नि देवे जब स्वांग शीतल हो जावे तब उस गोलेमेंसे रसको निकाल चूर्ण कर डाले, ओर उसमें १ तोले मूँगेका चूर्ण, १ टंकले शुद्धविष डालके उसमें काले सर्पका जहर मिलायके एक दिन खरलकरे, फिर इस रसको कांचकी शीशीमें भरके वालुका यंत्रमें दो प्रहरकी अग्नि देवे जब शीतल हो जाय तव शीशीमेंसें औषध निकाल खरलमें डालके आगे लिखी औषधोंकी भावनादेवे, तगर, मूसली, जटामांसी, चोक, वेत, पीपल, नीलपुष्पी, पत्रज, इलायची. चीता, वनतुलसी, सोंफ, देवदाली (घघरवेल) धतूरा, अगस्तिया, मुंडी, महुआ, जाई, और मैनफल, इन १९ औषधोंके स्वरस न्यारे २ निकालके एक एकके रसमें पृथक् २ भावना देवै, इस प्रकार सब औषधोंकी भावना देवे जिस औषधका रस न निकलेउसके काढेमें घोटे, जब घुटकर तयारहो जावे तब इसको दो रत्तीकी गोली वनायके धररक्खे इसमेंसें १ गोली बिजोरेके रस और अदरखके रसमें १६ कालीमिरचका चूरा मिलायके जो संनिपातसैं बेहोस होय उसको देवे तो उसका संनिपात दूर हो ये संनिपातभैरव रस नामसैं प्रसिद्ध है॥

रसपर्पटी

जयापत्ररसेनापिवर्धमानरसेनच ॥ भृंगराजरसेनापिकाकमाच्यारसेनच ॥ रसंसंशोध्ययत्नेनतत्समंशोधयेद्वलिं ॥ भृंगराजरसैःपिष्ट्वाशोषयेदर्करश्मिभिः॥सप्तधावात्रिधावापिपश्चाच्चूर्णंचकारयेत् ॥ चूर्णयित्वासमंतेनरसेनसहमर्दयेत् ॥ नष्टसूतंयदाचूर्णंभवेत्कज्जलसन्निभं ॥ निर्धूतेबदरांगारेद्रवीकुर्यात्प्रयत्नतः॥तत्रतन्महिषीविष्टास्थापितेकदलीदले॥निक्षिप्यतदुपर्यन्यत्पत्रंदत्वाप्रपीडयेत् ॥शीतलत्वंगतेपत्रात्समुद्धृत्यविचूर्णयेत् ॥ एवंसिद्धाभवेद्व्याधिघातिनीरसपर्पटी ॥ ज्वरादिव्याधिभिर्व्याप्तंविश्वंदृष्ट्वापुराहरः॥ चकारकृपयायुक्तःसुधावद्रसपर्पटीं ॥ रक्तिकासंमितांतावद्भ्रष्टजीरकसंयुतां॥ गुंजार्धभ्रष्टहिंग्वाढ्यांभक्षयेद्रसपर्पटीं॥ रोगानुरूपभेषज्यैरर्पितांभक्षयेद्बुधः ॥ पिबेत्तदनुपानीयंशीतलंचुलकत्रयं ॥

प्रत्यहंवर्धयेत्तस्यएकैकांरक्तिकांभिषक्॥नाधिकांदशगुंजातो-
भक्षयेत्तांकदाचन ॥ एकादशदिनारंभात्तांतथैवापकर्षयेत् ॥
एवमेतांसमश्नीयान्नरोविंशतिवासरान् ॥ शिवंगुरुंतथाविप्रा-
न्पूजयित्वाप्रणम्यच ॥ श्रद्धयाभक्षयेदेतांक्षीरमांसरसाशनः॥
ज्वरंचग्रहणींचापितथातीसारएवच ॥ कामलांपांडुरोगंचशू-
लप्लीहजलोदरं॥ एवमादीन्गदान्हत्वाहृष्टःपुष्टश्चवीर्यवान्॥
जीवेद्वर्षशतंसाग्रंवलीपलितवर्जितः ॥

अर्थ—अरनीके पत्ते, अंडकेपत्ते, भांगरा, और मकोय, इनके रसमें पारेको शोधे उसीप्र कार गंधकको भांगरेके रसमें घुटायके धूपमे सुखाय देवे इस प्रकार सातवार शुद्धकरे अथवा तीनवार करे फिर इस पारा और गंधक दोनोको मिलाय कजली करे उस कजलीको लोहके कडछलेमें धरके वेरकी लकडीके कोलेन्पर गरम करे जव कजली पतली हो जावे तव गोवरसैं लिपी हुई पृथ्वीवर केलेका पत्ता विछायके उसपर उस कजलीकी चासनीको ढाल दे और तत्काल दूसरे पत्तेसे ढकके गो वरसे दावदेवे, जब शीतल होजावे तव निकाल लेय, यह(रस पर्पटी) प्रथम शि-वने ज्वर व्याप्त जगके देख कृपा करके निर्माण करी, यह पर्पटी १ रत्ती भुने जीरे और अधभुनी हींगकेसाथ देवे अथवा रोगोक्त अनुपानके साथ देय, और इस-के ऊपर तीन चुल्लूशीतल पानीके पीये, इस प्रकार नित्य एक २ रत्ती चढावे जब दस रत्ती होजावे तब एक एक रत्ती घटाय देवे इस प्रकार वीस दिन भक्ष-ण करे इसको अपने इष्टदेवको नमस्कार करके श्रद्धा पूर्वक भक्षण करके दूध और मांस ये पथ्यमें देवे तो ज्वर, संग्रहणी, अतीसार, कामला, पांडुरोग, शूल, प्लीह, जलोदर, इत्यादि रोगका नाश करे और पुरुषको हृष्ट पुष्ट, वीर्यवान् करे, इसके सेवन करनेसैं वृद्धावस्था रहित सौ वर्ष जीवे ॥

रविसुंदररस

द्विभागतालेनहतंचताम्रंरसंचगंधंचसमानमाहुः ॥ विषंसमंच
द्विगुणंचताम्रंत्रिसप्तरात्रंणदिवाकरांशो ॥ विमर्द्यरिष्टस्वर
सेनचूर्णंगुंजैकदत्तांसितयासमेतं ॥ ज्वरांकुशोयंरविसुंदराख्यो
ज्वरान्निहंत्यष्टविधान्समग्रान् ॥

अर्थ—दोभाग हरताल लेकर उससें एकभाग ताम्रकी भस्म करे,इस प्रकार करी तामेकी भस्म २ तोले, पारा१ तोले, गंधक१ तोले, और शुद्धविष १ भाग इस प्रकार लेके इक्कीस दिन नींबके रसमें खरल करे,फिर१रत्तीके प्रमाण मिश्री सैं खाय तो यह रविसुंदरज्वरांकुश रस आठ प्रकारके ज्वरोंको दूर करे॥

कज्जलीगुण

शुद्धसूतंतथागंधंखल्वेतावद्विमर्दयेत् ॥ सूतोनदृश्यतेयाव-त्किंतुकज्जलवद्भवेत् ॥ एषाकज्जलिकाख्याताबृंहणीवीर्यव-र्धिनी ॥ नानानुपानयोगेनसर्वव्याधिविनाशिनी ॥

अर्थ—शुद्धगंधक पारा दोनोंको जबतक खरल करे कि जहां तक पारा न दीखे इसे कज्जली कहते है ये बृंहण है, वीर्यवर्धक, और नानाप्रकारके अनुपानसे सर्वरोगनाशक करने वाली है

गदमुराररिस

रसबलिफणिलोहव्योमताम्रेणतुल्यान्यथरसदलभागोवत्सनागःप्रदिष्टः ॥ भवतिगदमुरारिश्चास्यगुंजार्द्रवाराक्षपयतिदिव-सेनप्रौढमामज्वराख्यं ॥

अर्थ—पारा, गंधक, शीशेकी भस्म, लोहभस्म, अभ्रक और ताम्र ये समान भागले और पारेसैं आधा शुद्ध विष डाले सबको खरल कर १ रत्तीकी गोली बनावे १ गोली अदरखके रससैं देय तो तरुणज्वरको एक दिनमें नष्ट करे इसे गदमुराररिस कहते है ॥

बालार्करस

रंगहिंगुलजेपालवृद्धयादंत्यंबुमर्दयेत् ।
दिनार्धेनज्वरंहंतितमःसूर्योदयोयथा ॥

अर्थ—पारा, गंधक, हींगलू, और जमालगोटा, इस सबको दंतीके रससैं खरलकर रत्तीकी गोली बनाय ले १ गोली भक्षण करे तो जैसैं सूर्य अंधकारका नाश करैहै इस प्रकार यह एकदिनमें ज्वरको नाश करे इसे बालार्करस कहते है॥

ज्वरांकुश

शुद्धसूतंविषंगंधंधूर्तबीजंत्रिभिसमं ॥ चतुर्णाद्विगुणंव्योषचूर्णंगुंजाद्वयंहितं ॥ पक्वजंबीरकद्रावैर्युक्तार्द्रस्यद्रवैर्युतं ॥ महा-

ज्वरांकुशोनामज्वराणामंतकोभवेत् ॥ ऐकाहिकंद्व्याहिकंवा-
त्र्याहिकंवाचतुर्थकं ॥ विषमंवात्रिदोषोत्थंनाशयेद्यामात्रतः ॥

अर्थ—पारा, गंधक, और विष प्रत्येक समान लेवे और इन तीनोकी बराबर धतूरेके बीजले, तथा सबसें दूनी सोंठ, मिरच और पीपल लेवे सबका चूर्ण कर पकी जभीरी तथा अदरक इनके रससें खरल करे फिर दो रत्तीकी गोली बनावे एक गोली खाय तो एक प्रहरमें एकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक, चातुर्थिक, विषम, और संनिपात ज्वर इनको नष्ट करे इसको महाज्वरांकुश कहते है यह सर्वज्वरोंका नाश करनेवाला कालके समान है ॥

विश्वतापहरण

सूतशुल्वत्रिवृत्तावलितिक्तादंतिबीजचपलाविषतिंदुः ॥ पथ्य
यासहविचूर्ण्यसमांशंहेमवारिसहितंदिनमेकं ॥ वल्लयुग्मगुटि-
कार्द्रकवारानाशयेदभिनवज्वरमाशु॥ विश्वतापहरणोत्रचप-
थ्यंमुद्गयूषसहितंदिनमेकं ॥

अर्थ—पारा, ताम्रभस्म, निशोथ, गंधक,कुटकी, जमालगोटा, पीपर, विष, कुचला, और हरड, सब समान ले चूर्णकर धतूरेके रससें १ दिन खरलकरे फिर ४ रत्तीकी गोलियां बनावे १ गोली अदरखके रससें खाय तो नवीन ज्वरका नाश करे इसको (विश्वतापहरण) रस कहते है इसपर मूंगकी दाल और भात पथ्य देवे ॥

सन्निपातभैरवरस

सूतंगंधंलोहकिट्टंविमर्द्यसर्वैस्तुल्यंवत्सनागंनिगुंज्यात् ॥ आ
र्द्रंभृंगंबीजपूरंजयंतीनिर्गुंडीकाभृंगराजद्रवैश्च ॥ युक्त्यावैद्यो
भावयित्वाविधेयाशाणार्धंसन्निपातस्यनूनं ॥ शीतंवातंनि
र्मलंस्नानपानंपथ्यंदुग्धंशर्कराभिर्युतंच ॥

अर्थ—पारा, गंधक, और मंडूरकी भस्म ये समान भाग ले और तीन्योंकी बराबर शुद्धविष, अदरख, भांगरा, बिजोरा, भाँग, और निर्गुंडी ये लेकर भाँगरेके रससें खरल करे, तथा १ मासेकी गोली बनावे १ गोली भक्षण करे तो सन्निपातका नाश करे शीतल जलसें स्नान करे, पवनमें बैठे, शीतलजल, तथा दूध भात और चीनी पथ्यमें देवे ॥

त्रिभुवनकीर्ति

हिंगुलंचविषंव्योषंटंकणंमागधीशिफा ॥ संचूर्ण्यभावयेत्रेधा सुरसार्द्रकहेमभिः ॥ रसेभुवनकीर्तिः सगुंजैकार्द्रद्रवेणवै ॥ सर्वज्वरविनाशंचसन्निपातांस्त्रयोदश ॥

अर्थ—हींगलू, विष, सोंठ, मिरच, पीपल, सुहागा, और पीपरामूल, इन सब औषधोंको बारीक पीस, तुलसी, अदरख, धतूरा, इन प्रत्येकके रसमें पृथक् २ खरल करे इसको(त्रिभुवनकीर्त्तिरस) कहते है यह१ रत्ती अदरखके रससें खाय तो सर्वज्वर और तेरह प्रकारके सन्निपातोंको नाश करे ॥

मृतप्राणदायीरस

रसंगंधकंटंकणंवत्सनाभंसुसंमर्दयेत्धूर्तबीजेनयामं॥ततोवत्सनागेनहैमैश्चबीजैरसैर्भावयेच्चत्रिवारंत्रिवारं ॥ कटुत्र्यादिनापंचवारंततः स्यादयंसुतराजोमृतप्राणदायी ॥ ज्वरेसन्निपातेज्वरेनूतनेवामहाश्लेष्मरोगेचगुंजाप्रमाणं ॥ पयःपायसंदाधिकंतक्रभक्तंसितावानवीनज्वरेचार्द्रनीरैः॥ज्वरेचातिसारेघनद्रावयुक्तेग्रहण्यर्शसांक्षौद्रसंसीतयावा ॥ ज्वरेवायुनात्रिकट्वग्निपीतंप्रकंपेचबाहूकफेकांगवाते ॥ अपस्मारमुन्मादवातंनिहंतिप्रयुक्तोसितापंचभिर्धूर्तबीजैः ॥

अर्थ—पारा, गंधक, सुहागा, विष, और धतूरेके वीज ये सब समान भाग लेके धतूरेके बीजोंके और वच्छनाग विष इनके काढेमें तीन २ भावना देवे फिर सोंठ, मिरच, और पीपल, इसके काढेकी पांच भावना देवे तो यह सूतराज मृत प्राण दायीरस तयार हो यह सन्निपातज्वर, नवीनज्वर घोर कफका रोग, इनमें एकरत्तीअदरखके रससें देवे, इसपर पथ्य दूध भात, खीर, दहीभात, छाछभात,देवेतो यह रस ज्वरातिसार,संग्रहणी, मूलव्याधि, इनमें सहत और मिश्रीके साथ देवे तथा वातज्वर, प्रकंपवायु, वाहुकंप, एकांगवायु, इनमें सोंठ, मिरच पीपल, और चित्रक इनके साथ देय, एवं मृगी, उन्माद, इनमें मिश्री और पांच धतूरेके वीज इनके साथ देवे ॥

ज्वरोपद्रव

श्वासोमूर्च्छारुचिश्छर्दिस्तृष्णातिसारविड्ग्रहः॥

हिक्काकासांगभेदश्चज्वरस्योपद्रवादश ॥

अर्थ--श्वास, मूर्च्छा, अरुचि, वमन, तृषा, अतिसार, मलबद्धता, हिचकी-खांसी, अंगोका टूटना ये ज्वरके दश उपद्रव है ॥

ज्वरोपद्रवकीचिकित्सा

संजातोपद्रवोव्याधिस्त्याज्योनस्याच्चिकित्सकैः॥व्याधौशांतेप्रणश्यंतिसद्यः सर्वेप्युपद्रवाः ॥ अतोव्याधिंजयेद्यत्नात्पूर्वंपश्चादुपद्रवं॥भिषग्य ःकुशलःसोत्रजयेत्पूर्वमुपद्रवं॥तेष्वपिप्रचुरेषुप्राङ्नाशयेदाशुकारिणं ॥ मूलव्याधिंजयेत्पूर्वंजेयोयोवाभवेद्बली ॥ अविरोधेनवाकुर्यादुभयोरपिचक्रियां ॥

अर्थ— वैद्यको उपद्रव युक्त व्याधिकी अपेक्षा नहीं करनी चाहिये,व्याधिके शांति होतेही संपूर्ण उपद्रव तत्काल शांति हो जाते है, अतएव यत्नपूर्वक प्रथम व्याधिको जीते फिर उपद्रवोंकी चिकित्सा करे।अथवा कुशल वैद्य प्रथम उपद्रवोंको जीते उनमें भी जो शीघ्र बढनेवाला है उसको प्रथम चिकित्सा करे पश्चात् अन्यान्यको जीते ॥

अथवा कुशल वैद्य प्रथम मूलव्याधिको जीते अथवा उसमें जो बलवान् उपद्रव होय उसको जीते किंवा व्याधि और उपद्रव दोनोकी अविरोधी चिकित्सा करें ॥

सिंह्यादिकषाय

सिंहीव्याघ्रीताम्रमूलीपटोलीशृंगीभार्गीपुष्कररोहिणीच ।
सार्कंशठ्याशैलमल्याश्चबीजंश्वासंहन्यात्सान्निपातेदशांगः ॥

अर्थ—कटेरी, बडीकटेरी, धमासो पटोलपत्र, काँकडासिंगी, भारंगी, पुहकरमूल, कुटकी, कचूर, केरैया इन दश औषधोंका काढा सन्निपातोत्पन्न श्वासका नाश करे ॥

द्वात्रिंशांगकाढा

भार्गीनिंबघनाभयामृतलताभूनिंबवासाविषात्रायंतीकटुकावचात्रिकटुकस्योनाकशक्रद्रुमैः ॥ रास्नायासपटोलपाटलिशठीदार्वीविशालात्रिवृत्ब्राह्मीपुष्करसिंहिकाद्वयनिशाधान्याक्षदेवद्रुमैः ॥ क्वाथोयंखलुसान्निपातनिवहान्द्वात्रिंशतात्पा

नतोदुर्धर्षान्निजतेजसाविजयतेसर्पान्गरुत्मानिव ॥ किंच-
श्वासबलासकासगदहृद्रोगहिक्कामरुन्मन्यास्तंभगलामयार्दि-
तमलावष्टंभवर्ध्मानपि ॥

अर्थ—भारंगी, नीमकीछाल, नागरमोथा, छोटीहरड, गिलोय, चिरायता-अडूसा, अतीस, त्रायमाण, कुटकी, वच, सोंठ, मिरच, पीपल, टेंटू, कूडाकी, छाल, रास्ना, धमासो, पटोलपत्र, पाढ, कचूर, दारुहलदी, इन्द्रायनकीजड, निशोथ, ब्राह्मी, पुहकरमूल, छोटीकटेरी, वडीकटेरी, हलदी, बहेडा, आवला और देवदारु ये सब औषध समान भाग लेकर काढाकरे तो यह (द्वात्रिंशांग-काढा) अपने पराक्रमसे श्वास, खाँसी, कफ, हिचकी, वादी, मन्यानाडीका जिकड़ना, गलेके रोग, अर्दित वायु,मलावष्टंभ, और वदरोग इन सबको नाश करे जैसे गरुड़ अपने तेजसें सर्पोंको जीतता है ॥

मध्वाद्यकाढा

मधुनाकृष्णाकट्फलकर्कटशृंगीभवंचूर्णं ।
श्वासामयेमहोग्रेलीढ्वालोकःसुखीभवति ॥

अर्थ—पीपल, कायफल, और काकडासिंगी, इनका चूर्ण सहतसैं चाटे त, घोर उग्रश्वासको दूर करे ॥

श्वासपरदाग

वन्योपलग्नितापितदात्रस्याग्रेणपंजरेदाहः ।
अपहरतिश्वासामयमसंशयंभाषितंमुनिभिः ॥

अर्थ—आरने उपलोंकी अग्निमें दरातको तपायके उसके अग्रभागसे हड्डियोंके पंजरमें दागदेवे तो श्वासको अवश्य दूर करे ॥

आर्द्रकादिनस्य

आर्द्रकस्यरसैर्नस्यंमूर्छायामाचरेन्नरः ।
अंजनंचप्रयुंजीतमधुसिंधुशिलोषणैः ॥

अर्थ—यदि ज्वरमें मूर्च्छा आय जावे तो अदरखके रसकी नस्य देवे और सहतसैंधानिमक, मनसिल, और कालीमिरच इनका अंजन करे तो मूर्च्छा दूर हो॥

शीतांभसादियोग

शीतांभसाक्षिसेकःसुरभिर्धूपःसुगंधिपुष्पंच॥

मृदुतालवृंतवातःकोमलकदलीदलस्पर्शः ॥

अर्थ—मूर्च्छामें शीतलजल नेत्रोंपर छिड़के सुगंधित धूनीदे, अथवा सुगंधित फूल सुँघावे, ताडके पंखेसैं धीरे २ पवनकरे तथा केलेके कोमल पत्ते देहपर रखने चाहिये ॥

अरुचिचिकित्सा

अरुचौतुशृंगवेरजरसकैःसहासिंधुजैःकवलः ॥
सिंधूत्थमातुलुंगीफलकेसरधारणंवक्रे ॥

अर्थ—यदि ज्वरमें अरुचि होय तो अदरखके रसमें सैंधानिमक मिलाय उसको मुखमें रक्खे अथवा विजौरेकी केशरमें सैंधानिमक मिलायके मुखमें रक्खे तो अरुचि दूर हो ॥

मातुलिंगकवल

अरूचौमातुलुंगस्यकेसरंसाज्यसैंधवं ॥
धात्रीद्राक्षासितानांवाकल्कमास्येतुधारयेत् ॥

अर्थ—अरुचि होनेसैं विजोरेकी केशरमें सैंधानिमक और घी मिलायके मुखमें रक्खे ॥

सैंधवादियोग

नीरेणसिंधुत्थरजोतिसूक्ष्मंनस्येतिनूनंविनिहंतिहिक्का॥
शुंठीहठाद्वासितयासमेताधूपोथवाहिंगुसमुद्भवश्च ॥

अर्थ—ज्वरमें हिचकी होनेसैं सैंधानिमक वारीक पीस जलमें मिलायके नस्य देवे अथवा सोंठ, मिश्री, और तीक्ष्ण पदार्थ इनके सेवन करनेसैं अथवा हींगकी धूनी देनेसैं हिचकी वंद होवे ॥

अश्वत्थक्षार

अश्वत्थंवल्कलंशुष्कंदग्धंनिर्वापितंजले ॥
तज्जलंपानमात्रेणहिक्कांछर्दिंचनाशयेत् ॥

अर्थ—पीपलकी सूखी छालको भस्म करके जलमें भिगोय देवे फिर उसको नितारके पानी निकाल लेवे इसे पीनेसैं हिचकी और वमन ए नाश होवे ॥

शुष्कअश्वपुरीषयोग

शुष्कस्याश्वपुषस्यधूपोहिक्कांनिवारयेत् ॥

अपिसर्वात्मिकांचैवयोगराडयमीरितः ॥

अर्थ—सूखी हुई घोडेकी लीदकी धूनी संनिपातकी हिचकीको नाश करे ॥

यावकादिनस्य

यावकस्यरसेनापिनस्यतोहंतिहिक्किकां ॥

अर्थ—सीजे हुए जौंके रसकी नस्य देवे तो हिचकी दूर हो ॥

ज्वरकीखाँसीपरकणाद्यलेह

कासेकणाकणामूलंकलिद्रुमफलंरजः ॥
सविश्वभेषजंलिह्यान्मधुनावावृषारसं ॥

अर्थ--ज्वरमें खाँसी होनेसैं पीपल, पीपरामूल, वहेडा, पित्तपापडा, और सोंठ, इनके चूर्णका अवलेह अडूसेके रससैं अथवा सहतसैं देवे तो दूर होय ॥

पुष्करादिचटनी

पुष्करमूलकटुत्रिकशृंगी कट्फलयासककारविकाभिः ॥ मधुलुलिताभिरयंखलुलेहः कासरिपुःकफरोगहरश्च ॥

अर्थ—पुहकरमूल, त्रिकुटा, काकडासिंगी, कायफल, धमासा, और अजमायन इनका चूर्ण सहतसैं चाटे तो खाँसी, और कफ, इनका नाश होय ॥

विभीतकयोग

विभीतकंघृताभ्यक्तंगोशकृत्परिवेष्टितं ॥
स्विन्नमग्नौहरेत्कासंध्रुवमास्यविधारितं ॥

अर्थ—वहेडेको घीसैं लपेट उसपर गोवर लपेटके पुटपाककरे इसकी छालको मुखमें रखनेसैं खाँसीको दूर करे ॥

लवंगादिबटी

विभीतकत्वङ्मरिचंलवंगंसर्वैःसमानंखदिरस्यसारं ॥
बब्बूलजक्वाथकृतावटीयंमुखस्थिताकासहरीक्षणेन॥

अर्थ—वहेडेकी छाल, कालीमिरच, और लौंग सब समान लेवे और सबकी बराबर खैरसार लेवे सबको बबुलके काढेमें खरलकर गोली बनावे इस गोलीको मुखमें रक्खे तो यह तत्काल खाँसीको दूर करे ॥

ज्वरीदाहचिकित्सा

दाहाधिकारलिखितंदाहेकुर्याच्चिकित्सितं ॥
परंज्वराविरुद्धंयन्मुख्योनाश्योज्वरोयतः ॥

अर्थ—ज्वरमें दाह होनेसैं दाहाधिकारमें जो दाहकी चिकित्सा लिखी है सो करनी चाहिये, परंतु ज्वर दाहमें ज्वर मुख्य है अतएव उसमें ज्वरके विरुद्ध चिकित्सा न करे ॥

गुडूच्यादिकाढा

क्वाथोगुडूच्याःसमधुःसुशीतःपीतःप्रशांतिवमनस्यकुर्यात् ॥
विण्मक्षिकाणांमधुनावलीढासचंदनाशर्करयान्विताचा ॥

अर्थ—गिलोयका काढा शीतल होनेपर उसमें सहत मिलायके पीवे तो ज्वरमें वमन होना शांति होय । अथवा मक्खीकी विष्ठा सहतसैं चंदनका चूरा मिलायके देवे अथवा मिश्री और चँदन मिलायके देवे तो ज्वरमें रद होना बंदहोवे ॥

दंतशठादिकाढा

दंतशठबीजपूरकदाडिमबदरैःसचुक्रकैर्वदने ॥
लेपोजयतिपिपासामथरजतगुटीमुखांतस्था ॥

अर्थ—जंभीरी, बिजोरा, अनार, वेर, और अमलवेत इनका कल्क तालुएमें, जीभमें और गालोंके भीतर लेप करे सो प्यासको शमन करे । अथवा चांदीकी गोली मुखमें रखनेसैं प्यास दूर होवे ॥

जलादियोग

शीतंपयःक्षौद्रयुतंनिपीतमाकंठमाश्वेवतदुद्वमेच्च ॥
तर्षप्रकर्षप्रशमायवक्त्रेदध्याद्रुदक्षौद्रवटाग्रलाजान् ॥

अर्थ—ज्वरमें तृषाके रोकनेको शीतल जलमें सहत मिलायके कंठपर्यंत पीवे और तत्काल वमन द्वारा कुरलाकर देवे, अथवा कूट, वडकीकोपल, और खील इनकी अवलेहमें सहत मिलायके मुखमें राखे तो तृषा शांति होय ॥

ज्वरेतिसारचिकित्सा

लंघनमेकंमुक्त्वानचान्यदस्तीहभेषजंबलिनः ॥
समुदीर्णदोषनिचयंशमयतितत्पाचयत्यपिच ॥

अर्थ—ज्वरमें दस्त होनेसैं यदि रोगी वलिष्ट होयतो उसको लंघनही करना औषधि कही है, हुए वो लंघन वढे दोष समूहका नाश करे है और उनको पचावे भी है ॥

वत्सादन्यादिकाढा

वत्सादनीवत्सकवारिवाहविश्वंभरानिंबविषाः सविश्वाः ॥
ज्वरेतिसारंत्वरितंजयंतीविश्वामृतावत्सकवारिवाहाः ॥

अर्थ—गिलोय, कूडेकीछाल, नागरमोथा, चिरायता, नीमकी छाल, अतीस, और सोंठ, इनका अथवा सोंठ, गिलोय, कूडेकीछाल, और नागरमोथा, इनका काढा पीवेतो ज्वरमें होनेवाले अतीसारका नाश करे ॥

पाठादिकाढा

पाठामृतापर्पटमुस्तविश्वाकिराततिक्तेंद्रयवान्विपाच्य ॥
पिबन्हरत्येवहठेनसर्वज्वरातिसारानपिदुर्निवारान् ॥

अर्थ—पाढ, गिलोय, पित्तपापडा, नागरमोथा, सोंठ, चिरायता, और इन्द्रजो इनके काढेको पीनेसैं निश्चय दुर्निवार अतीसारको दूर करे ॥

ज्वरमेंदस्तकेअवरोधकीचिकित्सा

विड्ग्रहेवातजित्कर्मकुर्यादत्रानुलोमनं ॥
मलंप्रवर्तयेदाशुतीक्ष्णाभिःफलवर्तिभिः ॥

अर्थ—ज्वरमें यदि दस्त न उतरता होय तो वातनाशक ऐंसे अनुलोमन देवे अथवा प्रथम तीक्ष्णफलवर्ति आदि करके मलको निकालना चाहिये ॥

पथ्यादिकाढा

पथ्यारग्वधतिक्तात्रिवृदामलकैःशृतंतोयं ॥
जीर्णज्वरेविबंधेदद्यादाश्वेवविड्ग्रहःशाम्येत् ॥

अर्थ—छोटीहरड, अमलतासको गूदो, कुटकी, निसोथ और आमले इनका काढा जीर्णज्वर, उसीप्रकार मलवद्धताको नाश करे ॥

ज्वरपरपथ्य

वमनंलंघनंकालेयवागुःस्वेदनानिच ॥ कटुतिक्तोरसश्चेति-
पाचनंतरुणज्वरे ॥ संनिपातेत्विदंसर्वंकुर्यादामेकफापहं ॥
अवलेहांजनंनस्यंगंडूषश्चरसक्रियाः ॥ पादयोर्हस्तयोर्मू-

लेकंठकूपेचगंडयोः ॥ स्वेदेभ्रष्टकुलित्थानांचूर्णघर्षणमेवच ॥

अर्थ—वमन और लंघन करना, प्रातःकाल यवागू देवे, पसीने काढने तथा चरपरे, कडुएये रस, और पाचन ये उपचार तरुणज्वरमें करे। और संनिपात में सब कर्म करावे। तथा आमज्वरमें कफनाशक क्रियाकरे,अवलेह, और अंजन, नस्य, कुरलेकरना,पसीने काढना और हाथपैर इनकी जडमें तथा कंठके गड्ढे एवं कपोलकी जडमें पसीने आनेसें कुलथीकोभून और पीसके इसके चूर्णको मालिस करे॥

तरूणज्वरपरअपथ्य

स्नानंविरेकःसुरतंकषायंव्यायाममभ्यंजनमन्हिनिद्रा ॥ दुग्धंघृतंवैदलमामिषंचतक्रंसुरास्वादुगुरुद्रवंच॥ अन्नंप्रवातंभ्रमणंचक्रोधंत्यजेत्प्रयत्नातरुणज्वरार्तः ॥

अर्थ—स्नान, दस्त, मैथुन, काढा, दंडकसरत, दिनकीनिद्रा, दूध, घी दोदलका अन्न (दालआदि) मांस, छाछ, मद्य, भारीपदार्थ, स्वादुपदार्थ, पतली वस्तु, अन्न हवाखाना, डोलना, क्रोध, और बहुत बोलना ये सर्व वस्तु तरुण ज्वर वालेको त्याज्य है॥

मध्यमज्वरमेंपथ्य

पुरातनाः षष्टिकशालयश्चवार्ताकसौभांजनकारवेल्लं।।वेत्राग्र माषाढफलंतथैवकर्कोटिकंमूलकपोतिकांच ॥ मुद्गैर्मसूरैश्चणकैःकुलित्थैर्मकुष्टकैर्वाविहितश्चयूषः॥ पाठामृत्तावास्तुकतंदुलीयजीवंतिशाकानिचकाकमाची ॥द्राक्षाकपित्थानिचदाडिमानिवैकंकतान्येवपचेलिमानि ॥ लघूनिसात्म्यानिचभेषजानिपथ्यानिमध्यज्वरिणाममूनी

अर्थ—पुराने सांठी चावल, शालीचावल, वैंगन, सहजना, करले, बासकी कोपल,उडद,अरहर, आषढमहिनेके फल, ककडी, मूली, पोई, मूंग, मसूर, चना कुलथी, मोंठ, इनका यूष, पाढ, गिलोय, वथुआ, चौलाई, जीवंती (डोढी) और मकोय इनका, शाक, दाख, कैथ, अनार, विकंकत, पचेलिम, तथा हलके और हितकारी ऐसी औषध, ये ज्वरवाले मनुष्यको हितकारी कही है॥

सर्वज्वरमेंपथ्य

तंदुलीयकवास्तुकवालमूलकपर्पटान् ॥ पटोलतिक्तशाकंचगु-

डूचीपल्लवान्यपि ॥कालशाकंनिंबपुष्पंमारिषंदार्विकादलं ॥ जीवंतीचापिचांगेरीसुनिषण्णाकमाविकैः ॥ पत्रशाकप्रियाणांतुज्वरितानांप्रदापयेत् ॥ मुद्गान्मसूरान्चणकान्कुलित्थांश्चमकुष्टकान् ॥यूषार्थयूषसात्म्यानांज्वरितानांप्रदापयेत्॥लावान्कपिंजलानेणान्पृषतान्शरभान्शशान् ॥ कालपुच्छान्कुरंगांश्चतथैवमृगमातृकान् ॥ मांसार्थमांससात्म्यानांज्वरितानांप्रदापयेत् ॥ सारसक्रौंचशिखिनस्तथातित्तिरकुक्कुटाः॥ ज्वरितानांनशस्यंतेइतिकेचिद्व्यवस्थिता ॥ वृंताकंपीलुककोंटपटोलककठिल्लकं॥ फलशाकक्लेदेयंसर्वंनिस्नेहमेवच ॥ वत्सरोषितधान्यस्यतंदुलाद्यंज्वरेहितं॥ रोटिकार्थंप्रदातव्यंद्विवर्षोषितमल्पशः ॥गोधूमादियथासात्म्यमन्यदप्यल्पमर्पयेत्।

अर्थ—चौलाई, बथुआ, छोटी नवीन मूली, पित्तपापडा, पडवल, बरना गिलोय, पालक, कालशाक (नाडीकाशाक,) नीमके फूल, मारिषशाक (मरसेकासाग(डोडीकाशाक, चूकाकाशाक, चौपतियाका,बकरीके दूधके पदार्थ, अथवा पत्रका शाक, और मूंग, मसूर, चना, कुलथी, मोठ, मटर इनका यूष जिनको हित होवे उनको देय । तथा दुंवाकामांस,लवा, सपेदतीतर,मृग, चित्तलमृग, शरभ, और सर्वप्रकारके मृगोका मांस, मांसभक्षण करनेवालोको देवे, सारस, क्रौंच, मोर,तीतर,मुरगा,इन पक्षियोंका मांस ज्वरवालेको नदेवे ऐंसैं कई आचार्य कहते है,तथा बैंगन,पीलू, ककोडा पडवल, करेले,ये फल शाकोंमें देवे, परंतु चिकनाई युक्त पदार्थ नदेवे, यदि भात देवे तो एक वर्षके पुराने चावलोंका देय यादि रोटी देय तो एक वर्षके चावलोंकी देवे और गेंहू आदि नित्यही खाते हैं इससै दे बाकी अन्यवस्तु थोडी २ देवे ॥

जीर्णज्वरपथ्य

विरेचनंछर्दनमंजनंचनस्यंचधूमोप्यनुबासनंच॥संशोधनंसंशमनंव्यवायोभ्यंगोवगाहःशिशिरोपचारः ॥ एणःकुलिंगोहरिणोमयूरोलावःशशस्तित्तिरिकुक्कुटौच॥क्रौंचःकुरंगःपृषतश्चकोरःकपिंजलोवार्तिककालपुच्छो॥ गव्यामजायाश्वपयो-

घृतंचहरीतकीपर्वतनिर्झरांभः॥एरंडतैलंसितचंदनंचद्रव्याणिसर्वाणि पुरेरितानि ॥ ज्योत्स्नाप्रियालिंगनमप्यथस्याद्वर्गः पुराणज्वरिणांसुखाय॥

अर्थ—रेचन, वमन, अंजन, नस्य, धूप, अनुवासन बस्ति, पसीने काढना, स्त्रीसंभोग, उवटना, पानीमेंघसकरस्नान, शीतलउपचार, हरिण, घरकाचिडा, एण, मोर, लवा, ससा, तीतर. मुरगा, क्रौंच. कुरंग, चित्तलहिरण, चकोर, सपेदतीतर, बतक, और कालपुच्छ इनका मांस और गौ, बकरीका दूध, और घी, हरड, पर्वतके झरनेका पानी, अंडीका तेल, सपेद चंदन, और पूर्वोक्त कही हुई संपूर्ण द्रव्य, चांदनी,स्त्रीका आलिंगन, ये जीर्णज्वरवाले रोगीको सुखकारक पथ्य वर्ग कहा है

आगंतुकज्वरपथ्य

आगंतुजेज्वरेनैवनरःकुर्वीतलंघनं॥ अभिघातसमुत्थानेपानाभ्यंगेचसर्पिषः॥ रक्तावसेकैर्मद्यैश्चतथामांसरसोदनैः॥ क्षतजेव्रणजेवापिक्षतव्रणचिकित्सितं॥इत्यागंतुज्वरेपूर्वैभिषग्भिःपथ्यमीरितं॥ क्रोधजेपित्तजित्कार्याक्रियासद्वाक्यमेवच॥ औषधीगंधजेकुर्यात्कर्मपित्तप्रसादनं॥ अभिचाराभिशापोत्थेजपहोमादिभेषजं॥उत्पातग्रहपीडोत्थेदानंस्वस्त्ययनादयः॥ क्रोधोत्थितेपित्तहरंकामजेक्रोधमेवच॥ कामशोकभयोद्भूतेसर्वावातहरीक्रिया॥आश्वासनंचेष्टलाभोहर्षदायीनियानिच॥हर्षेणचसमायांतिकामशोकभयज्वराः॥ विशेषतःपुनःश्चात्रकामक्रोधसमुत्थिते॥ भयशोकसमुद्भूतेकामक्रोधकरौषधं॥ भूताभिषंगजेभूतबाधावेशनताडनं॥ अध्वश्रांतेषुचाभ्यंगादिवानिद्राचकारयेत्॥ मनःक्षोभेसमुत्पन्नेमनसःसांत्वनानिच॥ इत्यागंतुज्वरेपूर्वैर्भिषग्भिःपथ्यमिष्यते॥

अर्थ—आगंतुक ज्वरमें लंघन न करावे,अभिघातज्वरमें घृतका पीना,और मालिस रुधिरका निकालना,मद्यपान,मांसरस,और भात ये पथ्य,है,और क्षतजनि-

त अथवा व्रणजनितज्वरमें क्षत (घाव) और व्रण (फोडे) के ऊपर जो चिकित्सा लिखी है वो करनी चाहिये,ये आगंतुक ज्वरपर प्रथम पथ्य है। क्रोधज्वरपर पित्तशमन कर्त्ता क्रिया करे और अच्छी अच्छी वात करे, औषधी गंधज्वरपर चित्तको प्रसन्न कारक चिकित्साकरे। और अभिचारज्वर तथा अभिशापज्वरोंमें जप, होम, इत्यादि क्रियाकरे। उत्पात और ग्रहपीडा इनसें उठे हुए ज्वरपर दान देना, पुण्याहवाचन इत्यादि करे। और क्रोधज्वरमें पित्तहरण कर्त्ता क्रिया तथा कामज्वरमें क्रोधज्वरकी चिकित्साकरे। और क्रोधज्वरमें कामज्वरोक्त चिकित्सा करे। एवं काम, शोक, और भय इनसें उत्पन्न हुए ज्वरपर सर्व वातनाशक क्रिया तथा उस रोगीको आश्वासन (दिलासादेना) इष्टलाभ तथा हर्षदायक पदार्थ ये देवे। तथा कामक्रोध इनसें उत्पन्न ज्वरमें क्रमसें क्रोध और कामोत्पादक करता क्रिया करे। भूताभिषंग जनितज्वरमें भूतकू देहमें बुलाना, ताडन करना इत्यादि कर्म करे। मार्गश्रम करके आयेहुए ज्वरपर अभ्यगं, दिनमें सोना इत्यादि करे, तथा मनके क्षोभसें उत्पन्न ज्वरपर मनकी शांति करना इसप्रकार आगंतुक ज्वरपर वैद्योंने पथ्य कहा है ॥

विषमऊपर

विषमेप्रतिकुर्वीतभिषग्वमनरेचनैः॥ विष्णोर्नामसहस्रस्यपठनंश्रवणंश्रुतेः॥ देवानांब्राह्मणांचगुरूणामपिपूजनं॥ब्रह्मचर्यंतपोहोमःप्रदानंनियमोजपः॥ साधूनांदर्शनंनित्यरत्नौषधविधारणं॥मंगलाचरणंचैववर्गः सर्वज्वरापहः॥

अर्थ—विषमज्वरमें वमन, और विरेचन देवे विष्णुसहस्रनामका पाठ, वेदोंका श्रवण गुरु, ब्राह्मणोंकापूजन, ब्रह्मचर्य, तप, होम, दान नियमजप, साधुमहात्माओंके दर्शन, रत्न और औषध इनका धारण करना, तथा मंगल कर्म ये पथ्य वर्ग है ॥

सर्वज्वरऊपरअपथ्य

वमिवेगंदंतकाष्ठमसात्म्यमपिभोजनं॥ विरूद्धान्यन्नपानानिविदाहीनिगुरूणिच ॥ दुष्टांबुक्षारमम्लानिपत्रशाकंविरूढकं॥ललदंबुचतांबूलंकलिंगंलकुचंफलं॥ तोडिमत्स्यंचपिण्याकंनवान्नंपिष्टवैकृतम्॥ अभिष्यंदीनिचैतानिज्वरितःपरिवर्जयेत्॥ व्यायामंचव्यायंचस्नानंचंक्रमणानिच ॥ ज्वरमुक्तोनसेवेतयावन्नोबलवान्भवेत् ॥

अर्थ—वमनकरना, दांतनकरना, आपको अहित ऐंसा भोजन, विरुद्ध भोजन, दाहकारी, और भारी पदार्थ, दूषित जलपान, खार, खटाई, पत्तेकाशाक अंकुर आएहुए धान्य, पोखरका पानी, तांबूल, तरबूज, वडहर, तथा तोंडिजातिकी मछली, खल, नवीनधान्य, पिष्टपदार्थ, और पौष्टिक ये पदार्थ ज्वरवाले रोगीको छोड देने उसीप्रकार मेहनत, स्त्रीसंग, स्नान, डोलनाफिरना, इत्यादि कर्म जबतक ज्वरमुक्त रोगीके देहमें बळ न आवे तबतक न करे ॥

मंत्र

वज्रहस्तोमहाकायोवज्रतुंडोमहेश्वरः ॥ हतोसिवज्रतुंडेनभ्रम्यांगच्छमहाज्वर॥ ठः ठः ठंतः ॥ तालपत्रेलिखित्वातूकंठेबाहौचबंधयेत्

अर्थ—ऊपर कहा हुआ मंत्र ताडके पत्तेपर लिख गलेमें अथवा भुजामें बांधे तो ज्वर दूर हो ॥

पेज

आम्रातकसहस्त्रेणदलेनसुकृतीपिबेत् ॥
पेयांघृतप्लुतांजंतुश्चातुर्थिकहरींत्र्यहे ॥

अर्थ—जो भीतर घृत मिली पेयाको तीनदिनपर्यंत महुआके हजार पत्तोंसें पीवे तो उसका चातुर्थिक ज्वर दूर होवे ॥

ज्वरनाशकपत्रम्

स्वस्तिश्रीलंकातःकौणपाधिपतिर्विभीषणोयथास्थानेवास्तव्यस्यामुकस्यमहाविषमज्वरंसमाज्ञापतिररेपापिष्ठदुरात्मन्ज्वरममपार्श्वंशीघ्रमागन्तव्यंनोचेदन्यथाकरिष्यसितदाचंद्रहासखड्गेनत्वच्छिरकर्त्तयिष्यामिमाभणिष्यसितन्नाख्यातमितिह्रांह्रींह्रः ॥

विभिषणेनप्रहितांपत्रिकांलिख्यबुद्धिमान्
विषमज्वरनाशायभुजायांरोगिणोन्यसेत्

अर्थ–इस मंत्रको शुभदिनमें अष्टगंधसें लिख और गूगलकी धूनी देकर विषमज्वर दूर करनेको रोगीकी भुजामें बांधे तो ज्वर अवश्य दूर हो ॥

लंकेश्वरोरस

तालकंमाक्षिकंतुत्थंहरवीजंसगंधकम्॥कर्कोटीपत्रतोयेनर्दये-दिनसप्तकम्॥चुल्यांपाच्यंचतुर्यामंसशर्करज्वरापहः॥अयंलंके-श्वरोनामशीतमातंगकेशरी ॥

अर्थ–हरताल, सुवर्णमाक्षिक, नीलाथोथा, पारा, और गंधक, ए सब समान भाग ले सबको ककोडेके पत्तोंके रससैं सातदिन खरलकर चूल्हेपर चढाय ४ प्रहरकी अग्नि देव, फिर इसमेंसै वलावल विचारके रसकी मात्रा मिश्रीके साथ देवे तो यह (लंकेश्वर) रस शीतज्वर हाथीके नाश करनेमें सिंहरूपहै ॥

दुग्धफेनगुणाः

गोदुग्धप्रभवंकिंवाछागीदुग्धमथापिवा॥भवेत्फेणंत्रिदोषघ्नंरो-चनंवलबर्द्धनम्॥वन्हिवृद्धिकरंपथ्यंसद्यस्तृप्तिकरंलघु ॥ अति-सारेग्निमांद्येचज्वरजीर्णेप्रशस्यते ॥

अर्थ–गौके दूधके अथवा बकरीके दूधको मथकर झाग प्रगट करे ये झाग त्रिदोष नाशक, रुचिकारी, बलवर्द्धक, जठराग्निवर्द्धक, पथ्य, तत्काल तृप्तिकरता, और हलके है इनको अतिसार रोग, मंदाग्नि, और जीर्णज्वरपर देना हितकारी होता है ॥

लाक्षारसविधि

दशांशंलोध्रमादायतद्दशांशंचस्वर्जिका ॥किंचिच्चबदरीपत्र-वारिषोडशधामतं॥वस्त्रपूतोरसोग्राह्यः लाक्षायाः पादशेषितः॥

अर्थ—वहुतसैं वैद्योंको लाक्षादितैल वनाते देखा परंतु इसमें मुख्य लाखका रस निकाला जाता है उसकी विधि बहुत वैद्य नहीं जाने फिर लाक्षादितैलक बनाना वो क्या जाने, उनकेवास्ते लाखका रस निकालनेकी विधि कहते है जैंसै कि—प्रथम जितनी लाख हो उसका दशमाँ भाग लोध लेवे और लोधका दशमाँ भाग सज्जी डाले और उसमें थोडीसी वेरकी पत्ती डाले और लाखसैं पानी १६ सोलह गुना डालके ओंटावे जव चौथाई जल रहे तव उत्तारके बारीक कपड़ेमें इस लाखके रसको छान लेवे, फिर इसको लाक्षादि तैलमे मिलाना चाहिये ॥

रोगमुक्तस्नानम्

चरेविलग्नेरविभौमवारेरिक्तातिथौ
चंद्रबलेचहीने । केन्द्रत्रिकोणार्थगतैश्चपापैः
स्नानंहितंरोगविमुक्तकानाम् ॥

अर्थ—मेष, कर्क, तुला, और मकर, ये लग्न–रविवार और भौमवारमें तथा रिक्तातिथी (४ ९ १४) में,और चंद्रमा बलकरके हीन हो, तथा पापग्रह (सूर्य, मंगल, शनि, और इनका साथी बुद्ध,) ये केन्द्र (प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, और दशम) स्थांनमें तथा त्रिकोण (पंचम और नवम) स्थानमें वैठे होवे अेसे समयमें रोगीको रोगमुक्त होनेपर प्रथम स्नान कराना उत्तम कहा है ॥

चरलग्न स्नानमें लेनेका यह कारण है कि चरलग्न चलायमान होती है इस वास्ते इसमें स्नान रोगी करे तो उसका रोग फिर आगे चला जावे रोगीके पास नहीं आवे । इसी प्रकार दुष्टवार भी अमंगली है इस कारण अमंगल वारमें स्नान करनेसै रोग भी अमंगल सैं डरता है, इसी प्रकार रिक्ता तिथी और हीनवली चंद्रमाका फल जान लेना चाहिये ॥

यह मत ज्योतिषीयोंका है मेरा नही हैं न वैद्यशास्त्रका है वैद्योंकामत सात्म्यके आधीन होता है ॥

ज्वरमुक्तिलक्षण

संक्षोभणाच्चधातूनांदोषसंचालनादपि ॥ भूयोभवतिवेगस्तु-
मोक्षकालेज्वरस्यतु ॥ त्रिदोषजेज्वरेह्येतदंतर्वेगेचधातुगे ॥
लक्षणंमोक्षकालेस्यादन्यस्मिन्स्वेददर्शनं ॥

अर्थ––ज्वरके जानेके समय धातुओंके क्षोभसैं अथवा दोषोके चलायमान होनेसैं ज्वरका अत्यंत वेग होता है, त्रिदोषज्वर, अंतर्वेगज्वर. और धातुगतज्वर इनमें ये लक्षण होते है, शेषज्वरोंमें केवल पसीने मात्र आते है ॥

इतिश्री माथुर कृष्णलालतनय दत्तराम निर्मिते आयुर्वेदोद्धारे बृहन्निघंटुरत्नाकरे सर्वज्वर निदान चिकित्सा पथ्यापथ्य पूर्णता गमात्

समाप्तोयंज्वरप्रकरणम्

अतिसारकाकर्मविपाक

स्मार्ताग्निंशमयेद्यस्तुसोऽतिसारयुतोभवेत् ॥ अग्निरइमीत्यृचं जप्त्वादशांशंजुहुयात्तिलान् ॥ सर्पिषाचाप्लुतान्दद्याद्धिरण्यं ब्राह्मणायवै ॥ अग्निरइमीतीयमृक्चतारतम्येनवाजपेत् ॥

अर्थ—जो प्राणी स्मार्त्ताग्निको शमन(शांति)करता है वो अतीसार रोगसे-पीडित होता है, इसके दूर करनेको (अग्निराइम) इस ऋचाका जप और दशांश-तिलोंका हवन करे तथा घृत मिले तिल और सुवर्णका दान करे, अथवा अग्निराइम इस ऋचाका जप और हवनादि करे ॥

दुसराप्रकार

अतिसारीसभवतियस्त्रेताग्निविनाशकः ॥ सुवर्णेनाथताम्रेण-कुर्यात्प्रतिष्ठांतिंबुधः ॥ वन्हेःशक्त्यनुसारेणपलेनार्धेनवापुनः ॥ तथाज्वालाकुलांरक्तचंदनेनविलेपितां ॥ रक्तवस्त्रेणसंवीतां-मेषस्योपरिसंस्थितां ॥ रक्तमाल्यैश्चसंछन्नांमुक्तादामपरि-ष्कृतां ॥ कनकाचलवर्णाभांद्वादशार्कनिभांशुभां ॥ ब्रह्मच-र्यान्वितेविप्रेकनिष्ठेचाग्निहोत्रिणि ॥ अंगुलीयकवस्त्राद्यैर्भूषि-तेतांनिवेदयेत् ॥ मंत्रेणानेनविधिवदग्निप्रीत्यर्थमादृतः ॥

अर्थ—जो मनुष्य अग्नि त्रयीको शांति करे वह अतिसार (दस्त) रोगवाला होता है। उसको सुवर्णकी अथवा तामेकी अपनी शक्तिके अनुसार अग्निकी प्रतिमा बनायकर दानकरे परंतु दो तोलेसें न्यून न करे उस अग्निका ध्यान कहते है, ज्वालासें व्याप्त लालचंदन लगाहुआ, लालवस्त्र पहने, मेंढाके ऊपर सवार, लाल मालाओंकोऔर मोतियोंके हारको पहने, सुवर्णके पर्वतके समान, बारह सूर्यकी कांतिके समान ऐसी प्रतिमा करके ब्रह्मचारी अथवा अग्निहोत्री इनका वस्त्रालंकारआदिसें पूजन कर आगे कहे हुऐ मंत्रकरके दान करे ॥

दानकामंत्र

त्रेतारूपोग्निरीड्यस्त्वमंततश्चासिवैनृणां ॥ त्वंवेत्थप्राक्तनंपा-पमतिसारंविनाशय ॥ एवंकृत्वानरःसम्यगतिसारंव्यपोह-ति ॥ निरुजससुखीनित्यंदीर्घमायुश्चविंदाति ॥

अर्थ—हे अग्नि? तू अग्नि त्रय रूपी तथा पूज्य, मनुष्योंकैं मरण पर्यंत रहने बाली तथा मेरे जन्मान्तरके पापोको जानने वाला ऐसा है अतएव इस मेरे अतिसार रोगको शांति कर इस प्रकार कहकर दान करे इस विधि दान करनेसैं अतिसार रोगको नाश करे है, रोगरहित नित्य सुखी और दीर्घ आयुको प्राप्त होवे ॥

तिसरेप्रकारकाकर्मविपाक

स्त्रीहंताचातिसारीस्यादश्वत्थान्नरोपयेद्दश ॥
दद्याच्चशर्कराधेनुंभोजयेच्चशतंद्विजान् ॥

अर्थ—स्त्रीके मारनेवाला अतिसारीहोता है वह दशपीपलके वृक्ष लगावे, और शर्कराधेनुका दान करे, तथा १०० ब्राह्मणोंको भोजन करावे, शर्करा धेनुका दान आगेयक्ष्मा प्रकर्णमें कहेगे ॥

रक्तातिसाकाकर्मविकाक

दावाग्निदायकश्चैवरक्तातीसारवान्भवेत् ॥
तेनोदपानंकर्तव्यंरोपणीयस्तथावटः ॥

अर्थ—वनमें आग लगानेवाला प्राणी रक्तातिसारी होता है उसकोप्पाऊ इत्यादि जलदान करना चाहिये। तथा १० वडके वृक्ष लगावे इस प्रकार करनेसैं-रक्तातिसार दूर होवे ॥

अतिसारनिदान

गुर्वतिस्निग्धतीक्ष्णोष्णद्रव्यस्थूलातिशीतलैः ॥ विरुद्धाध्यशनाजीर्णैर्विषमैश्चातिभोजनैः ॥स्नेहाद्यैरतियुक्तैश्चमिथ्यायुक्तैर्विषैर्भयैः ॥ शोकदुष्टांबुमद्यातिपानैःसात्म्यर्तुपर्ययैः ॥ जलाभिरमणैर्वेगविघातैःक्रमिदोषतः ॥ नृणांभवत्यतीसारोलक्षणंतस्यवक्ष्यते ॥

अर्थ—भारी, अत्यंत चिकना, चरपरा, गरम, पतला, मोटा, अत्यंत शीतल-इनके सेवन, और देश, काल, तथा संयोग इनसैं विरुद्ध (जैसे मध्यदेशवालोंको-चारपानी आदि खाना विरुद्ध, वसंत ऋतुमें कफकारी और नदी आदिका जल-पीना यह काल विरुद्ध है, दूध मछली मिलाय कर खाना संयोग विरुद्ध) तथाभोजनके ऊपर फिर भोजन करना, अजीर्ण, भोजनका काल छोड फिर गरमागरम अधिक खाना, स्नेहादिक द्रव्यका अत्यंत पान, विरुद्ध फल देनेवाले हीनाधिक

योग, विष भक्षण, भय, शोक, इन करके तथा दूषितपानी और मद्य इनकाअत्यं त पान करनेसैं। ऋतु विपरीत पदार्थोंके भक्षणसें,जलमें गोता मारना, मलमूत्रका वेग रोकनेसैं, तथा पेटमें कीडे पडजाना इन कारणोंसैं इसप्राणीके अतिसार रोग होता है उसके लक्षण कहते है ॥

संप्राप्ति

संशाम्यापांधातुरग्निंप्रवृद्धोवर्चोमिश्रोवायुनाधःप्रणुन्नः ।
सरत्यतीवातिसारंतमाहुर्व्याधिघोरंषड्विधंतंवदंति ॥

अर्थ—शरीरमें जल द्रव रूप धातु (कफ,रस,मूत्र, स्वेद,मेद, पित्त और रुधिर आदि)अति वढे हुए जठराग्निको शमन (मंद) करके स्वयंवायु करके निकाले हुए मल संयुक्त वर्च (मल) वा झाडे को गुदाकेद्वारा अत्यंत वारंवार निकाले है अतएव वैद्य इसको अतिसार ऐसा कहते है यह घोर व्याधि छः प्रकारकी है ।

षट्प्रकार

एकैकशःसर्वशश्चापिदोषैःशोकेनान्यःषष्टआमेनयुक्तः ॥
केचिच्चाहुर्नैकरूपप्रकाराइत्येवतंकाशिराजोह्यवादीत् ॥

अर्थ—वातातिसार, पित्तातिसार, कफातिसार, संनिपातातिसार, शोकाति सार, और आमातिसार, ऐसे अतिसार रोग छः प्रकारका है, तथा सातवा द्वंद्वज अतिसार विद्वानोने माना है उक्त श्लोकमे यह द्वंद्वज अतिसार अधिक कहा है तथा अन्य ग्रंथोमें इस द्वंद्वज अतिसारकी चिकीत्सा लिखीहै तथा काशीराजकाभी यह मत है कि अनेक अतिसार है ॥

पूर्वरूप

हृन्नाभिपायूदरकुक्षितोदगात्रावसादानिलसन्निरोधाः ॥
विट्संगआध्मानतथाविपाकोभविष्यतस्तस्यपुरः सराणि ॥

अर्थ—हृदय, नाभि, गुदा, पेट, और, कूख, इनमें शूल होवे, अंग रहजावे, अधोवायू रुकजावे, मल उतरे नही, पेट फूले, तथा, अपक्वअन्न पेटमे रहा आवे ये अतिसार होनेवाले मनुष्यके लक्षण होतें है.

अतिसारकेपूर्वरूपकोचिकित्सा

हितंलंघनमेवादौपूर्ववत्तेनपाचनं ॥ षडंगयूषंकृत्वावापिपा-
सादिषुयोजयेत् ॥ मुद्गयुषंरसंतक्रंधान्यजीरकसंयुतं ॥ षडं-

गयूषामित्याहुः सैंधवेनसमन्वितं ॥ अग्निसंदीपनंप्रोक्तंग्रहणी-
दोषनाशनं ॥ अरोचकेज्वरेचैवश्रेष्ठमेतत्प्रवाहिके ॥

अर्थ—अतिसार रोगवालेको प्रथम लंघन करना हितकारी है, कारण लंघन पाचन करे है, फिरप्यासआदिउपद्रव होवे तो षडंगयूष देवे, मूंगका यूष, रस छाछ, धनियां, जीरा, सैंधानिमक, इनको षडंग यूष कहते है, यह अग्निको संदीपन करे, संग्रहणीका नाश करे, तथा अरुची, ज्वर, और प्रवाहिका इनपर हित कारी है ॥

विल्वादिषडंगयूष

विल्वंचधान्यंचसजीरकंचपाठाचशुंठीतिलसंयुताच ॥ पि-
ष्टाषडंगः सहितोनराणांआयूस्त्वतीसारहरः प्रदिष्टः ॥

अर्थ—वेलगिरी, धनिया, जीरा, पाढ, सोंठ, और, तिल, इनके, चूर्णका यूष करे इस षडंग यूषके पीनेसै, अतिसार नाश होवे.

यवागू

तृष्णापनयनीलध्वीदीपनीबास्तिशोधिनी ॥ विरेकेचाति-
सारेचयवागूः सर्वदाहिता ॥

अर्थ—यवागू तृष्णा नाशक, हलकी, दीपना, वस्त्याशयको शोधन करता, रेचक, और अतिसार, इन पर सदैव हितकारी है.

औषधीदेनावर्ज्य

नस्तंभयेदतीसारमपक्वंवृद्धिमागतं ॥
विनाक्षीणस्यवृद्धस्यगर्भिण्याबालकस्यच ॥

अर्थ—क्षीण, वालक, वृद्ध, और गर्भिणी, इनके हुए अतिसारको त्याग कर, अपक्व, और वढे हुए अतिसारको बंद न करे ॥

अतिसारपरलंघन

तस्यादौलंघनंप्रोक्तंज्ञात्वादेहबलाबलं ॥ पाचनंचविधातव्यं
त्र्यूषणाद्यंभिषग्वरैः॥ नपित्तेनाविनासोपिजायतेशृणुपुत्रक ॥
तस्यनोलंघनंप्रोक्तंज्वरजेचातिसारके ॥ तस्यादौलंघनंचैव-
मन्येवानैवलंघनं ॥ तस्माद्देयंकषायंतुपाचनंभोजनेनच ॥

अर्थ—देहशक्तिके अनुसार अतिसार रोगमें प्रथम लंघन करना चाहिये, फिर त्र्यूषणादि द्वारा पाचन देवे, कोई वैद्य अपने पुत्रसैं कहता है कि हे पुत्र! अतिसार रोग विनापित्तके नही होता, अतएव पित्ताधिक अतिसार पर लंघन नही कराना उसीप्रकार ज्वरातिसारपर भी लंघन न करावे इन दोनोको पाचन काढा भोजनके साथ देवे ॥

यवान्यादिदीपन

यवानीनागरोशीरधानिकाबिल्वमुस्तकं ॥
द्विपर्णिकापचेच्चैतदीपनंपाचनंस्मृतं ॥

अर्थ—अजमायन, सोंठ, खस, धनियाँ, वेलगिरी, नागरमोथा, सालपर्णी, औरपृष्टपर्णी, इनका काढा दीपन पाचन है ॥

अतिसारप्रक्रिया

अतिसारेज्वरेचैवरक्तपितेदृगामये ॥
आदौनप्रतिकुर्वीतव्याधिवेगोहिदुस्तरः॥

अर्थ—अतिसार, ज्वर, रक्तपित्त, नेत्ररोग, इतने रोगोंमें रोग उत्पन्न होतेही चिकित्सा न करे कारण यह है कि इन रोगोंका वेग कठिन है,अतएव जब इनका वेग घटे तब इलाज करना चाहिये ॥

दुसराप्रकार

आमपक्वक्रियाहित्वानातिसारेक्रियाहिता ॥
अतः सर्वातिसारेषुज्ञेयंपक्वामलक्षणम् ॥

अर्थ-आमपक्व करनेकी क्रियाको छोडकर दूसरी क्रिया अतिसारमें हितकारी नहीं है अतएव संपूर्णअतिसारों में आमपक्व हुई है या नहीं हुई ये जानना चाहिये

तिसराप्रकार

आमेविलंघनंशस्तमादौपाचनमेवच ॥
कार्यवानशनस्यांतेसद्रवंलघुभोजनम् ॥

अर्थ—आमातिसारमें प्रथम लंघन और पाचन उत्तम है अथवा लंघनके अनंतर पतला और हलका भोजन देवे ॥

धान्यपंचकपाचन

धान्यवालकबिल्वाद्भनागरैः साधितंजलं ॥ आमशूलहरंग्राहि

भेदिदीपनपाचनं ॥ पित्तेधान्यचतुष्कंतुशुंठीत्यागाद्बदंतिहि ॥

अर्थ—धनिया, नेत्रवाला, वेलगिरी, नागरमोथा, और सोंठ, इनका काढा, आमशूल नाशक, ग्राहि, रेचक, दीपन, और पाचन है, तथा पित्तमें शुंठीके विना धान्यपंचक देवे ॥

धातक्यादिमोदक

धातकीविश्वपाषाणमालूरमजमोदकं ॥
मुस्तंमोचरसंचुक्रंसर्वातीसारशांतये ॥

अर्थ—धायके फूल, सोंठ, पाखान भेद, वेलगिरी, अजमोद, नागरमोथा, मोचरस, और चूका इनका लड्डू सर्व प्रकारके अतिसारोंको शमन करे ॥

कुटजाष्टककाढा

कुटजबाळविषाघनधातुकीकुसुमदाडिमलोध्रमथोवृकी ॥ क्वथनमेभिरिदंमधुनायुतंविमलमोचरसेनसमाहितं ॥ पीयमानं महातीव्रमतिसारंसदाहकं॥रक्तशूलामरोगंचनिहंतिकुटजाष्टकं ॥

अर्थ—कूडाकी छाल, नेत्रवाला, अतीस, नागरमोथा, धायकेफूल, अनारकेछोतरा, लोध, और पाढ इनके काढेमें सहत, और मोचरस मिलायके पीवेतो दाहयुक्त अतिसार, रक्तशूल, आमका रोग इन सबको यह कुटजाष्टक नष्ट करे ॥

वातातिसारनिदान

अरुणंफेनिलंरुक्षमल्पमल्पंमुहुर्मुहुः ॥
शकृदामंसरुक्शब्दंमारुतेनातिसार्यते ॥

अर्थ—वादीके योगसैं अतिसारके दस्तोंका रंग लाल झागयुक्त, रुक्ष, और कच्चा, तथा वारंवार गुडगुडा हटके साथ गुदाके द्वार थोडा २ गिरता है, उसको वातातिसार जानना ॥

पूतिकादिकाढा

पूतिकंमागधीशुंठीबलाधान्यंहरीतकी ॥
पक्त्वांबुनापिबेत्सायंवातातीसारशांतये ॥

अर्थ—कंजा, पीपल, सोंठ, खरेटी, धनिया, हरड, इनका काढा सायंकालके समय लेनेसै आम और वातातिसार शमन होवे ॥

पथ्यादिकाढा

पथ्यादारुवचाशुंठीमुस्ताचातिविषामृता ॥
क्काथएषांहरेत्पीतोवातातीसारमुल्वणं ॥

अर्थ—हरड, देवदारु, वच, सोंठ, मोथा, अतीस, और गिलोय, इनका काढा घोर वातातिसारको नाश करे ॥

वचादिकाढा

वचाचातिविषामुस्तंबीजानिकुटजस्यच ॥
श्रेष्ठःकषायएतेषांवातातीसारशांतये ॥

अर्थ—वच, अतीस, मोथा, इन्द्रजो इनका काढा वातातिसारको नाश करे ॥

सुवर्चलादिकाढा

सुवर्चलंवचाहिंगुहैमज्योतिविषासमं ॥
वातातीसारहृत्प्रोक्तंसकटुत्रयमंभसा ॥

अर्थ—कालानिमक, वच, हींग, चिरायता, चीतेकीछाल, अतीस, सोंठ कालीमिरच, और पीपल, इनका काढा वातातिसार नाशक है ॥

कपित्थाष्टकचूर्ण

अष्टौभागाःकपित्थस्यषड्भागाशर्करामता॥दाडिमंतित्तिडी कंचश्रीफलंधातकीतथा ॥ अजमोदाचपिप्पल्यःप्रत्येकंस्यु स्त्रिभागिकाः ॥ मरीचंजीरकंधान्यंग्रथिकंवालकंतथा ॥ सौ वर्चलंयवानीचचातुर्जातंसचित्रकं ॥ नागरंचैकभागाःस्युःप्र त्येकंसूक्ष्मचूर्णिताः॥कपित्थाष्टकसंज्ञस्याचूर्णमेतज्जलामयान् ॥ निहंतिग्रहणीरोगानतिसारंव्यपोहति ॥

अर्थ—कैथकागूदा ८ तोले, मिश्री ६ तोले, अनादराना, इमली, वेलगिरी, धायके फूल, अजमोद, और पीपल ये प्रत्येक तीन २ तोले लेवे । तथा काली मिरच, जीरा, धनिया, पीपरामूल, नेत्रवाला, कालानिमक, अजमायन, दाल चीनी, पत्रज, इलायची, नागरकेश, चीत्तेकी छाल,और सोंठ,ये प्रत्येक एक एक तोले लेवे सबका चूर्ण करे इसको (कपित्थाष्टक) चूर्ण कहते हैयह संपूर्ण जल संबंधी रोग, संग्रहणीऔर अतिसार, इनको नाश करे ॥

लाईचूर्ण

चित्रकंत्रिफलाव्योषंविडंगंजीरकद्वयं ॥ भल्लातकंयवानीचहिंगुर्लवणपंचकं ॥गृहधूमंवचाकुष्ठंघनमभ्रंचगंधकं ॥ क्षारत्रयंचाजमोदापारदंगजापिप्पली ॥ एतेषांचूर्णितंयावत्तावच्छक्राशनस्यच॥अभ्यर्च्यलाइकांप्रातर्योगिनींकामरूपिणीं ॥बिडालपदमात्रंतुभक्षयेदस्यगुंडकं॥मंदाग्निकासदुर्नामप्लीहपांडुचिरज्वरान् ॥ प्रमेहशोथविष्टंभसंग्रहग्रहणीहरः ॥ सर्वातिसारशमनःसर्वशूलनिवारणः ॥ आमवातगजोच्छेदीसूतिकातंकनाशनः ॥ नैतस्मिन्व्याधयःसंतिवातपित्तकफोद्भवाः ॥काष्ठमप्युदरेतस्यभक्षणाद्यातिजीर्णतां ॥ वार्यंनचव्यवायंचस्नानंपिशितभोजनं ॥ कांजिकाम्लंसदापथ्यंदग्धमीनंतथादधि ॥ तस्मादसौसदासेव्योगुंडकोलाइकाकृतिः ॥

अर्थ—चीतेकी छाल, त्रिफळा, त्रिकुटा, बायविडंग, जीरा, कालाजीरा, भिलाये, अजमायन, हींग, पाचोनिमक, घरकाधूंआ, वच, कूठ, नागरमोथा, अभ्रक, गंधक, सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, अजमोद, पारा, गजपीपर, इन सबके चूर्णके बराबर भांग, अथवा (इन्द्रजव) मिलायके प्रातःकाल कामरूपी, णी लाई योगनीका पूजन कर दो तोले नित्यलेवे तोमंदाग्नि, खांसी, ववासीर-प्लीहा, पांडु, अरुचि, ज्वर, प्रमेह, सूजन, विष्टंभ, संग्रहणी, सर्वातिसार, शूल आमवात, प्रसूतकारोग, त्रिदोषजन्य व्याधी, ये सब नाशको प्राप्त हो, इस चूर्णके खानेवालेने यदि काष्ठ भक्षण कराहोय तो वोभी पचजावे इसपर पथ्य-नहीं है, मैथुन स्नान, मांसये वस्तु वर्जित नहीं है, खटीकांजी, भुनी मछली, और दही ए पथ्य है, और लाई के आकृतिवाले गोला सेवन करने चाहिये ॥

कुटजचूर्ण

इंद्रजमेघमदाकुसुमंश्रीलोध्रमहौषधमोचरसानां ॥
चूर्णमिदंगुडतक्रानिपीतंहंत्यचिरादतिसारमुदारम् ॥

अर्थ—इन्द्रजो, नागरमोथा, धायके फूल,वेलगिरी,लोध,सोंठ, और मोचरस इनके चूर्णकोगुड और छाछ के साथ लेवे तो घोर अतिसारको नष्ट करे ॥

शुंठीचूर्ण

कल्याणिकांचनलताललितांगयष्टेतांबूलशालिवदनेललने-शृणुस्व ॥ शुंठीमदाकुसुममोचरसाजमोदातक्रान्विताः प्रशम-यंत्यतिसारमुग्रं ॥

अर्थ—सोंठ, धायके फूल, मोचरस, और, अजमोद इनका चूर्ण छाछके साथ पीवे तो घोर अतिसार नष्ट होवे यह लोलिंवराजमें लिखा है ॥

वृहल्लवंगादिकचूर्ण

लवंगमेलातजपत्रजोत्पलमुशीरमासीतगरंसवालकं॥कंकोल-कृष्णागरुनागकेसरंजातीफलंचंदनजातिपात्रिका॥द्वचजाजि-सत्र्यूषणपुष्करंसठीफलत्रिकंकुष्टविडंगाचित्रकं॥तालीसपत्रंसु-रदारुधान्यकंयवानियष्टीखदिराम्लवेतसं ॥तुंगाजमोदाघन-सारमभ्रकंशृंगीविषाग्रंथिकमाग्निमंथकं॥प्रियंगुमुस्तातिविषाश-तावरीसत्वंगुडूच्यास्त्रिवृतादुरालभा ॥ समानिसर्वैश्चसमासि-ताभवेद्बृहल्लवंगाद्यमिदंनिगद्यते ॥ सायंप्रगेखादतिकर्षसंमि-तंभवंतिदेहेबलवीर्यपुष्टयः ॥ प्रमेहकासारुचियक्ष्मणीतथाक्ष-यास्रदाहंग्रहणीत्रिदोषनुत् ॥ हिक्कातिसारप्रदरंगलग्रहंनिहं-तिपांडुस्वरभंगमश्मरीं ॥

अर्थ—लोंग, इलायची, तज, पत्रज, कमलगट्टा, खस, जटामांसी, तगर नेत्रवाला, कंकोल, काली अगर, नागकेशर, जायफल, सपेदचंदन, जाबित्री, कालाजीरा, सपेदजीरा, सोंठ, मिरच, पीपल, कचूर, हरड, वहेडा, आमला, कूठ, वायविडंग, चीतेकीछाल, तालीसपत्र, देवदारु, धनिया, अजमायन, मुलहटी, खैरसार, अमलबेत, वंशलोचन, अजमोद, कपूर, अभ्रक, काकडासिंगी-अतीस, पीपरामूल, अरनी, फूल प्रियंगु, मोथा, सपेदअतिविष, सतावर, गिलोयसत्व, निसोथ, और धमासा, ये सब समान भाग ले सब चूर्णके समान मिश्री मिलावे इस चूर्णको वृहल्लवंगादि चूर्ण कहते है, इसमेंसे १ तोले सायंकाल-और प्रातःकाल देवे तो देहमें बल, वीर्य, और पुष्टिकरे तथा प्रमेह, खाँसी,

अरुचि, राजयक्ष्मा, पीनस, क्षई, रक्तदाह, संग्रहणी, सन्निपात, हिचकी, अतिसार, प्रदर, गलग्रह, पांडुरोग, स्वरभंग, और पथरी इन सबको नाश करे ॥

विजयायोग

मधुनाविजयाभवंरजोनिशिलीढंमधुनासुभर्जितं ॥
अतिसारमनिद्रतांहरेद्ग्रहणींवैदहनस्यमंदतां ॥

अर्थ—रात्रिमें भाँगका भुना हुआ चूर्ण सहतके साथ देवे तो अतिसार, निद्रानाश, संग्रहणी, और मंदाग्नि, इनको नाश करे ॥

कुटजावलेह

क्षुण्णंकुटजमूलस्यचूर्णंतोयार्मणेपचेत् ॥क्वाथेपादावशेषेस्मिन्लेहेपूतेपुनः पचेत् ॥ सौवर्चलयवक्षारविडसैंधवपैप्पलं ॥ पाठाचेंद्रयवाजाजीचूर्णंदत्वापलद्वयं ॥ लिह्याद्बदरमात्रंतुतच्छीतंमधुसंयुतं ॥ पक्वापक्वमतीसारंनानावर्णंसवेदनं ॥ दुर्वारंग्रहणीरोगंजयेच्चैतत्प्रवाहिकं॥

अर्थ—कूडाकी जडकी छालको बारीक कूट १०२४ जलमें काढाकरे जब चतुर्थांश रहे तब उतारके छान लेवे और इसमें संचर निमक जवाखार, विडनोन, सैंधानिमक, पीपल,पाढ,इन्द्रजों, ओर जीरा इनका चूर्ण दो २ पल मिलाय-शीतल करे; इस कुटजावलेहको वेरके समान सहतके साथ देवे तो पक्व, अपक्व, अनेकवर्णवाला, पीडायुक्त, ऐसा अतिसार तथा दुर्निवार संग्रहणी रोग और प्रवाहिका इनका नाश करे ॥

दूसराकुटजावलेह

क्वाथोवत्सकजोनितांतविमलैः पादावशेषः स्थितो मुस्ताक्षीरविडंगबीजरुचकंसिधूद्भवंधातकी॥कृष्णाचेतिविचूर्णितंसममिदंसंपाचयेत्पावकेयावत्तद्घनतांप्रयात्यतितरांशीतेमधुक्षेपणं॥ कृत्वावत्सकलेहएषशमयेत्कृच्छ्रातिसारंरुचंदुर्नामग्रहणीभगंदरगदान्श्वासप्रमेहानपि ॥

अर्थ—कूडाकी छालका चतुर्थांश काढा कर उसमें नागरमोथा, दूध, वायविडंग, पाँगानिमक, सैंधानिमक, धायकेफूल, और पीपल इनका चूर्ण समान

भाग ले अग्निपर रखके जबतक गाढा न होवे तबतक पचावे फिर कुछ पतले रहनेपर उतारके शीतल करे उसमें सहत मिलायके अनुपानके साथ देवे तो यह कुटजावलेह अतिसार, ववासीर, संग्रहणी, भंगदर, श्वास, और प्रमेह इनका नाश करे ॥

कुटजपुटपाक

तत्कालंकृष्णकुटजत्वचंतंडुलवारिणा ॥ पिष्ट्वाचतुःपलमितां जंबूपल्लववेष्टितां ॥ सूत्रेणबद्धांगोधूमपिष्टेनपरिवेष्टितां ॥ लिप्त्वाचघनपंकेनगोमयैर्वह्निनादहेत् ॥ अंगारवर्णांचमृद्दंदृष्ट्वावन्हेःसमुद्धरेत् ॥ ततोरसंगृहीत्वाचशीतंक्षौद्रयुतंपिबेत् ॥ जयेत्सर्वानतीसारान्दुस्तरान्सुचिरोत्थितान् ॥

अर्थ—कालेकूडाकी गीली छाल १६ तोले को चांवलोके धुले हुए पानीमें पीस गोला बनावे उसके चारोतरफ जामुनके पत्ते लपेटकर सूतसें लपेट देवे उसके ऊपर गैंहूंके चूनेको सानके गाढा गाढा लेप करे फिर उसपर गाढी गाढी कीचका लेपकरे उसको आरने उपलोकी अग्निमें धरके फूंक देवे जव गोला अंगारेके वर्ण होजावे तव निकाल ऊपरका लेप दूरकरे उसका रस निचोड सहत मिलायके शीतल पीबे तो बहुत दिनका घोर अतिसार दूर होवे ॥

तंडुलजल

कंडितंतंडुलपलंजलेष्टगुणितेक्षिपेत् ॥
भावयित्वाजलंग्राह्यंदेयंसर्वत्रकर्मसु ॥

अर्थ—उत्तम विने हुए चावल ३९ तोले लेकर अठगुणे पानीसें धोवे उस पानी पीनेको सर्वत्र योगमें देना चाहिये ॥

मृतसंजीवनरस

शुद्धसूतंसमंगंधंसूतपादंविषंक्षिपेत् ॥ सर्वतुल्यंमृतंचाभ्रंमर्द्यंधत्तूरजैर्द्रवैः ॥ सर्पाक्ष्याश्चद्रवैर्यामंकषायेणाथभावयेत् ॥ धातक्यतिविषामुस्ताशुंठीवालकजीरकं ॥ यवानीधातकीबिल्वं पाठापथ्याकणान्विता ॥ कुटजस्यत्वचंबीजंकपित्थंदाडिमीबला ॥ प्रत्येकंकर्षमात्रंस्यात्कल्कितंक्वथितंजलैः ॥ कल्काच्चतु

गुणंतोयंक्वाथंपादावशेषितं॥अनेनत्रिदिनंभाव्यंपूर्वोक्तंमर्दितं रसं ॥रुध्वातद्वालुकायंत्रेक्षणंमृद्वग्निनापचेत्॥मृतसंजीवनोनामरसोगुंजाचतुष्टयं॥दातव्यमनुपानेनअसाध्यमपिसाधयेत् ॥ नागरातिविषामुस्तादेवदारुवचाकणा॥ यवानीधान्यकंबालकुटजस्यत्वचाभया ॥ धातुकींद्रयवापाठाबिल्वमोचरसंसमम् ॥ चूर्णितंमधुनालेह्यमनुपानंसुखावहं ॥

अर्थ—शुद्धपारा, और गंधक, समानभाग तथा सिंगियाविष पारेकी चतुर्थांश लेवे और सबकी बराबर अभ्रक भस्म ये सब एकत्रकर धतूरेके रसमें खरल करे फिर सरफोंकाके रसकी अथवा काढेकी एकप्रहर भावना देवे और धायके फूल, अतीस, नागरमोथा, सोंठ, नेत्रवाला, जीरा, अजमायन, जौ, बेलगिरी, पाढ, हरड, पीपल, कुडाका छाल, इन्द्रजो, कैथ , अनारदाना, और खरेटी, ये प्रत्येक एक एक तोले लेकर सबका कल्क करे अथवा जब होजावे तब कल्कका चौगुना पानी मिलाय उसका चतुर्थांश काढा करे उसको पूर्वोक्त औषधोंकी तीन दिन भावना देकर सुखाय शीशीमें भर कपडमिट्टी कर वालुकायंत्रमें रखके इसको थोडी देर मंद आचसैं पचावे इसको मृतसंजीवन रस कहते है यह रस सोंठ, अतीस, नागरमोथा, देवदार,वच, पीपल,अजमायन,धनिया, नेत्रवाला, कूडाकी छाल, हरड, धायके फूल, इन्द्रजो, पाढ, बेलगिरी, और मोचरस इनकेचूर्ण और सहत इनसैं देवे यह अनुपान सुखकारी है, इस्सै सर्वप्रकारके अतिसार अवश्य दूर हो ॥

कारुण्यसागररस

रसभस्मद्विधागंतस्माद्द्विघ्नंमृताभ्रकं ॥ दिनंसक्रुतुतैलेनापि ह्वायामंविपाचयेत् ॥ रसंमार्कवमूलोत्थोनिर्यासैसंविमर्द्यच ॥ त्रिक्षारपंचलवणंविषंव्योषाग्निजीरके ॥ सचित्रकैः समानांशैर्युक्तः कारुण्यसागरः ॥माषद्वयंप्रयुंजीतरसःस्यादतिसारके ॥ सज्वरेविज्वरेवाथसशूलशोणितोद्भवे ॥ निरामेशोथयुक्तेवाग्रहण्यांसानुपानकः ॥ अनुपानंविनाह्येषकार्यसिद्धिंकरिष्यति ॥

अर्थ—चंद्रोदय १) गंधक २) अभ्रकभस्म ४) सबको एकत्रकर अंडीके तेलसैं १ दिन खरल कर १ प्रहर अग्निपर पचावे फिर भांगरेके रससैं, खरलकरे और जवाखार, सजीखार, सुहागा, निमक, सैंधा, विडलवण, संचर, सिंगियाविष, सोंठ, मिरच, पीपर, केशर, जीरा, चीतेकी छाल, इनका समान भाग चूर्ण मिलावे इसको करुणा सागर रस कहते है यह अतिसार पर दो मासे देवे तो यह ज्वरसहित किंवा ज्वर रहित और शूलसहित रक्तातिसार किंवासूजन युक्त अतिसार, संग्रहणी, इनपर अनुपानके साथ देवे अथवा यह विना अनुपानकेही सर्वकार्य करता है ॥

कुंकुमवटी

कीटनिष्ठीवनेघृष्टंनागफेनंसकुंकुमं ॥तंदुलंप्रमितंदत्तंअतिसारनिषूदनं ॥ इदंमयागुरोर्लब्धंनतुशास्त्राद्भिषग्वराः ॥ भवतामुपकारायगुरोस्तत्वंप्रकाशितं ॥

अर्थ–मोम,अफीम,और केशर ये समान भागले एकत्र खरल कर इसमेंसे चावलके अनुमान देवे तो अतिसारका नाश करे यह प्रयोग मैने गुरुसैं लेकर आप लोगोंके उपकारके वास्ते इस जगे प्रकाश करदीना, शास्त्रमें नहीं है, यह वैद्यामृत ग्रंथमें लिखाहै ॥

कपित्थादिपेया

कपित्थबिल्वचांगेरीतक्रदाडिमसाधिता ॥
ग्राहिणीपाचनीपेयावातेवापंचमूलिका ॥

अर्थ—कैथका गूदा, वेलगिरी, चूका, छाछ, और अनारदाना इनसै बनी हुई पेया ग्राहिणी और पाचनी है, किंवा वाताधिक अतिसारपर पंचमूलसैं बनी हुई पेया देवे ॥

पंचमूलबलादिपेया

पंचमूलीबलाविश्वाधान्यकोत्पलबिल्वजा ॥
वातातिसारिणोदेयासूक्तेनान्यतमेनच ॥

अर्थ—पंचमूल, खरेटी, सोंठ, धनिया, कमलगट्टा, और वेलगिरी, इन औषधोंसैं बनी पेया वातातिसारको नष्ट करे, अथवा इसको सिकीके साथ किंवा दूसरे योगोंके साथ देवे ॥

मसुराद्यघृत

मसुराणांपलशतंजलद्रोणेविपाचयेत् ॥ पादशेषंशृतंनीत्वाद्-
त्वाविल्बपलाष्टकं ॥ घृतप्रस्थंपचेत्तेनसर्वातीसारशनं ॥ ग्र-
हणीभिन्नविट्कंचनाशयेच्चप्रवाहिकां ॥

अर्थ— ४०० तोले मसूर लेकर १०५४ तोले पानीमें ओंटावे जब चतुर्थांश रहे तब उतार लेवे, फिर वेलगिरीका चूर्ण ३२ तोले, और घीं ६४ तोले मिला यके पचावे जब घी मात्र शेष रहे तब उतारले इसके सेवन करनेसैं सर्व प्रकार-के अतिसार, संग्रहणी, मलका टूटना, और प्रवाहिका इनका नाश करे ॥

लोकनाथरस

रसभस्मभागमेकंचत्वारः शुद्धगंधकं॥पिष्टावराटिकामूलंटंक-
णेननिरुध्यच ॥भांडेरुध्वापुटेपाच्यंस्वांगशीतंविचूर्णयेत् ॥
लोकनाथोरसोनाम्नाक्षौद्रेगुंजाचतुष्टयं ॥ नागरातिविषामु-
स्तादेवदारुवचान्वितं ॥ कषायमनुपानंस्याद्वातातीसारना-
शनं ॥ क्षीरिण्यावाकषायेणयोगवाहंनियोजयेत् ॥

अर्थ—चंद्रोदय, शुद्ध गंधक ४ दोनोको एकत्र खरल कर कजली करे इसको कौडियोमें भरके दूधसै पिसे हुए सुहागेसैं कौडियोंका मुख बंद कर देवे फिर शरावमें धरके कपड मिट्टी कर गजपुटमें फूकदे जब स्वांग शीतल होय तब नि-कालके खरल करे शीशीमें भरके धर रक्खे इसको (लोकनाथ रस) कहते है ४ रत्ती इस रसको सहतके साथ देवे अथवा सोंठ, अतीस, नागरमोथा, देवदारु, वच, इनके काढेसैं अथवा खिरनीके काढेसैं किंवा योगवाहक अनुपानोके साथ देवे तो वातातिसार दूर होवे ॥

महारस

भस्मसूतस्यतीक्ष्णस्यमरिचाज्यंसमंसमं ॥ स्नुक्क्षीरकाक-
माचीभ्यांमर्दयेद्याममात्रकं ॥ निरुध्यभूधरेपाच्यंदिनैकेन-
महारसं॥ निष्कार्धंभावयेच्चानुपाययेद्दधिसंयुतं ॥ सर्पाक्षिक-
र्षमात्रंतुपीत्वावातातिसारनुत् ॥

अर्थ—चंद्रोदय, खेरीलोहकीभस्म, कालींमिरच, और घी, ये पदार्थ समान

भाग ले इनको थूहरका दूध, मकोय, इनके रससे खरल करे फिर सराव संपुटमें रखके कपडमिट्टी कर १ दिन भूधर यंत्रमे पचावे तो यह (महारस) सिद्ध होवे इसमेंसे १॥ मासे अनुपानके साथ देवे और इसके ऊपर दही और सरफोका मिलाय १० मासे पिवावे तो वातातिसारका नाश होवे ॥

द्वितियमहारस

शुद्धसूतंसमंगंधंमरिचंटंकणंकणा ॥ स्वर्णबीजंसमंमर्द्यंभृंगिद्रावैर्दिनार्धकं ॥ सूततुल्योरसोयोज्योरसः कनकसुंदरः ॥ योज्योगुंजाद्वयंहंतिवातातीसारमद्भुतं ॥ दध्यन्नंदापयेत्पथ्यमाज्यंवाथगवांदधि ॥

अर्थ—शुद्धपारा १ गंधक १) कालीमिरच, सुहागा,पीपल और धतूरेकेबीज प्रत्येक दोदो तोले लेवे सबकी भाँगरेके रससैं दो प्रहर खरलकरे फिर पारेकी बराबर इसमें कनकसुंदर रस मिलावे सबको खरलकर इसमेंसैं २ रत्ती सेवनकरे तो यह महारस वातातिसारको दूर करे ऊपर दहीभातका पथ्य देवे अथवा गौका घी और दही देवे ॥

वातातिसारपरशाक

फंजीशाल्मलिरक्ताक्षीकपित्थंदाडिमान्यथ ॥ श्लेष्माटोबदरीवाथक्षीरिणीबाकुचीशिवा ॥ तर्कारिवाबलीचैषांबालपत्राणिवापुनः ॥ पक्कानिव्यंजनार्थाययोजयेदतिसारिणां ॥

अर्थ—सेमर, गूगल, कैथ, अनार, निसोरे, वेर, खिरनी, वावची, अरनी बबूर इनके कोमलपत्ते अथवा पुराने पत्रोंका शाक यथायोग बनायकर देवे तो अतिसारमें हितकारी जानना ॥

पित्तातिसारनिदान

पित्तात्पीतंनीलमालोहितंवातृष्णामूर्च्छादाहपाकोपपन्नं ॥

अर्थ—पित्तके कोपसैं पीला, नीला, अथवा कुछललोहीलिये दस्त होता है और प्यास मूर्च्छा, दाह, और गुदाका पकना ये लक्षण होते है ॥

पित्तातिसारचिकित्साक्रम व पेया

आमान्वितमतीसारंपैत्तिकंलंघनैर्जयेत् ॥ लंघितस्ययथासा-

त्म्यंयवागूमंडतर्पणैः॥ शृतंचंदनमुस्ताभ्यांपटोलादीप्यनागरैः ॥ पेयामम्लामतक्रांवापाचनींग्राहिणींपिबेत् ॥

अर्थ--आमयुक्त पित्तातिसारको लंघन द्वारा जीते अथवा लंघन करनेके उपरांत यथा सात्म्य यवागू, मंड, तृप्तिकारी पदार्थ और चंदन, मोथा, पटोलपत्र, जीरा, और सोंठ, इनका काढा देवे ॥

पित्तातिसारपरपानीवाअन्न

धान्योदीच्यशृतंतोयंतृष्णादाहातिसारवान् ॥
ताभ्यामेवसपाठाभ्यांसिद्धमाहारमाचरेत् ॥

अर्थ--धनिया और नेत्रवाला इनका काढा प्यास, दाह और अतिसार इनके निवारणार्थ जलके पलटेमें देवे और धनिया, नेत्रवाला,और पाठ, इनके काढेमें सिद्ध करा अन्न देवे ॥

मधुकादियोग

मधुकंकट्फलंलोध्रंदाडिमस्यफलत्वचौ ॥
पित्तातिसारेमध्वक्तंपाययेत्तंदुलांबुना ॥

अर्थ--मुलहटी, कायफल, लोध, अनारदाना,और अनारकी छाल,इनका चूर्ण और कल्क चावलके धोवनमें सहत डालके देवे तो पित्तातिसार को दूर करे ॥

शुंठ्यादिकाढा

शुंठीसुवर्चलाहिंगुरभयेंद्रयवामताः ॥
पित्तातिसारहृत्काथोनिपीतोमधुनासह ॥

अर्थ—सोंठ, ब्राह्मी, हींग, हरड, और इन्द्रजो इनके काढेमें सहत डालके देवे तो पित्तातिसारको दूर करे

बिल्वादिकाढा

बिल्वशक्रयवांभोदवालकातिविषाकृतः
कषायोहंत्यतीसारंसामंपित्तसमुद्भवं ॥

अर्थ--वेलगिरी, इन्द्रजो, नागरमोथा, नेत्रवाला, और अतीस, इनका काढा आम सहित पित्तातिसारको दूरकरें ॥

कट्फलादिकाढा

कट्फलातिविषांभोदवत्सकंनागरान्वितं ॥
शृतंपित्तातिसारघ्नंदातव्यंमधुसंयुतं ॥

अर्थ—कायफल, अतीस, नागरमोथा, कूडाकी छाल, और सोंठ इनका काढा सहत युक्त देवे तो पित्तातिसार दूर होवे

मधुयष्ट्यादिकाढा

मधुयष्टिः सितालोध्रमुत्पलंसमभागतः ॥
मधुक्षीरयुतंपीतंरक्तपित्तातिसारजित् ॥

अर्थ—मुलहटी, मिश्री, लोध, कमलगट्टा, इनका काढेमें सहत और दूध डालके देवेतो रक्तपितातिसारको नाश करे ॥

समंगादिचूर्ण

समंगाधातकीपुष्पंबिल्वंसौवर्चलंविडं ॥ सक्षौद्रंदाडिमंचैव-पीतंतंदुलवारिणा ॥ चूर्णंपित्तातिसारघ्नंशूलंचाशुनियच्छति ॥

अर्थ—खरेटी, धायकेफूल, वेलगिरी, संचरनोन, विडनोन, और इनके चूर्णमें सहत और अनारदाना मिलाय चावल धोवनके साथ पीवे शूल युक्त पित्तातिसार तत्काल दूरहो ॥

अतिविषादियोग

सक्षौद्रातिविषापिष्टावत्सकस्यफलंत्वचं ॥
तंदुलोदकसंयुक्तंपेयंपित्तातिसारनुत् ॥

अर्थ—अतीस, कूडाकीछाल, और इन्द्रजो इनके चूर्णको चावलके धोवन के साथ सहत डालके पीवे तो पित्तातिसार और शूल इनका नाश करे ॥

जंब्वादिचूर्ण

जंबूचूतफलस्यास्थिद्राक्षापथ्याचपिप्पली ॥ खर्जूरंशाल्म-लीछल्लीउदुंबरसवल्कलं ॥ एतच्चूर्णसमंश्लक्ष्णंमधुनासहभक्षितं ॥ रक्तपित्तोद्भवंशीघ्रंहंत्यतीसारमुल्वणं ॥

अर्थ—जामुन और आमकी गुठली, दाख, हरड, पीपल, खजूर, सेमरकी छाल और गूलर, लोध, इनका समान भाग चूर्ण कर सहतके साथ देवे तो रक्त और पित्त इनसें उत्पन्न हुए अतिसारका शीघ्र नाश करे ॥

लोकेश्वररस

रसस्यभस्मनाहेमपादांशंमारितंक्षिपेत् ॥ उभयोर्द्विगुणंगंधं-
मर्दयेच्चित्रकांबुना ॥ पूर्य्यावराटिकातेनटंकणेननिरोधये-
त् ॥ मृत्तिकाचूर्णलिप्तेतुभांडेक्षिप्त्वानिरुध्यच ॥ शुष्कंगजपुटे-
पक्वंरात्रौग्राह्यंसुशीतलं ॥ रसोलोकेश्वरोनामचूर्णंगुंजाचतुष्ट-
यं॥मधुनासहदातव्यंसर्वातिसारनाशनं॥बालबिल्वंगुडंतैलं-
पिप्पलीनागरंसमं ॥ लेहयेन्मधुनासार्धमनुपानंसुखावहं ॥

अर्थ—चंद्रोदय, स्वर्णभस्म ३ मासे और गंधक२॥ तोलाले, सबको चीतेकी छालके रसमें खरलकर कोडियोंमें भरके सुहागेसे मुख वंद करदे फिर मिट्टी और चूनेसें ल्हेस किसीपात्रमें भर मुख वंदकर गजपुटमें फूंक देवे जब शीतल हो जावे तव निकाल लेबे यह लोकेश्वररस ४ रत्ती सहतके साथ देवे तो सर्वप्रकारके अतीसारोंको नष्ट करे इसके ऊपर कच्चीवेलगिरी, गुड, तेल, पीपल, और सोंठ, इनका चूर्ण सहतके साथ चाटे यह अनुपान है ॥

दुसराप्रकार

लोकनाथोरसोप्यत्रक्षौद्रैर्गुंजाचतुष्टयं ॥
दातव्यश्चपिबेच्चानुपेषितंतंडुलोदकं ॥

अर्थ—इस अतिसार रोगमें लोक नाथरस ४ रती सहतके साथ देवे और उपर पीसे चावलोंका जल पीवे तो अतिसार रोग दूर हो ॥

वत्सकादिघृत

पलंवत्सकसंसिद्धंचतुर्गुणजलेघृतं ॥
पित्तातिसारेभिषजादेयंदीपनपाचनं ॥

अर्थ— ४ तोले कूडाकी छालके काढेमें घृत सिद्धकर देवे तो पित्तातिसार दूर हो और दीपन तथा पाचन है ॥

कफातिसारनिदान

शुक्लंसांद्रंसकफंश्लेष्मयुक्तंविस्रंशीतंहृष्टरोमामनुष्यः ॥

अर्थ—जिसका दस्त सपेद रंगका गाढा, कफ मिला, आम गंधी और शीतल हो और उसके रोमांच खडे रहे उसके कफातिसार जानना ॥

कफातिसारचिकित्साक्रम

श्लेष्मातिसारेप्रथमंहितंलंघनपाचनं ॥
योज्यश्चामातिसारघ्नोयथोक्तोदीपनोगणः ॥

अर्थ—कफातिसारमें प्रथम लंघन और पाचन देना हित है तथा आमातिसार हरणकर्ता यथा विधी पूर्वक दीपनीय गण देना चाहिये ॥

नतुसंग्रहणंदद्यात्पूर्वमामातिसारिणां ॥
दोषोह्यादौवर्धमानोजनयत्यामयान्बहून्॥

अर्थ—अमातिसारवालेको संग्राही अर्थात दस्त रोकनेवाली औषधी नदेवे क्योकि दस्त रोकने सैं दोष वढकर अनेक प्रकारके रोगोंको प्रगट करे है अतएव दस्तोंका रोकना अहित है ॥

डिंभजः स्थाविरोवापिवातपित्तात्मकश्चयः॥क्षिणधातुबलार्तस्यबहुदोषोतिविश्रुतः ॥ आमोपिस्तंभनीयः स्यात्पाचनान्मरणंभवेत् ॥

अर्थ—छोटेवालकके और वृद्धके तथा धातुक्षीणवालेके यदि आम अधिक वढगई होवे तो इसे पित्तयुक्त जाननी इसालिये उसको रोकनी चाहिये यदि उसका पाचन करे तो वो मरण करे ॥

पथ्यादिकाढा

पथ्याग्निकटुकापाठावचामुस्तकवत्सकैः॥
सनागरैर्जयेत्क्वाथकल्कोवाश्लैष्मिकांस्रुतिं॥

अर्थ—हरड, चीता, कुटकी, पाढ, वच, नागरमोथा, कूडाकी छाल, और सोंठ इनका काढा अथवा कल्क कफके दस्त होनेको दूर करे ॥

कृमिशत्र्वादिकाढा

कृमिशत्रुवचाबिल्वपेशीधान्याककट्फलं ॥
एषांक्काथंभिषग्दद्यादतीसारेबलासजे॥

अर्थ—वायाविडंग, वच, वेलगिरी, धनिया, कायफल, इनका काढा कफजन्य, अतिसार रोगमें वैद्य देवे ॥

पूतिकादिकल्क

पूतिकव्योषबिल्वाग्निपाठादाडिमहिंगुभिः॥

योजयेत्सत्कृतैः पेष्यैः श्लेष्मातीसारपीडितम् ॥

अर्थ—कंजा, सोंठ, मिरच, पीपल, वेलगिरी, चीतेकी छाल, पाठ, अनारदाना,और हींग इनका काढा कफातिसार पीडावाला पीवे ॥

गोकंटकादिकाढा

गोकंटकंगुहोव्याघ्रीकषायंसुश्रितंपिबेत् ॥
आमश्लेष्मातिसारघ्नंदीपनंपाचनंपरं ॥

अर्थ—गोखरू, कांगनी और कटेरी इनका काढा आमश्लेष्मातिसार नाशक और दीपन तथा पाचन है ॥

चव्यादिचूर्ण

चव्यंसातिविषाकुष्टंबालबिल्वंसनागरं ॥
वत्सकत्वक्फलंपथ्याछर्दिश्लेष्मातिसारनुत् ॥

अर्थ—चव्य, अतीस, कूट, वेलगिरी, सोंठ, कूडाकी छाल, इन्द्रजों, और हरड, इनका काढा वमनयुक्त कफातिसारको दूर करे ॥

कणादिचूर्ण

पाठावचात्रिकटुकंकुष्टंकटुकरोहिणी ॥
उष्णांबुनाविनिघ्नंतिश्लेष्मातीसारमुल्बणं ॥

अर्थ—पाठा, वच, सोंठ, मिरच, पीपल, कूढ, कुटकी इनका चूर्ण गरम जलके साथ पीवेतो कफातिसार दूर होवे ॥

हिंग्वादिचूर्ण

हिंगुसौवर्चलंव्योषमभयातिविषावचा ॥
पीतमुष्णांबुनाचूर्णमेतत्श्लेष्मातिसारनुत् ॥

अर्थ—हींग, संचरनोन, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, अतीस, और वच, इनका चूर्ण गरम जलके साथ पीवे तो कफातिसार दूर करे ॥

बब्बुलादियोग

बब्बूलपत्रंसंपिष्टंरात्रौजरिद्वयंहितं ॥
कर्षमात्रंभवेद्भक्ष्यंकफातीसारनाशनं ॥

अर्थ—रात्रिमें ववूलके पतोंको दोनों जीरेके साथ पीस १ तोले भक्षण करे तो कफातिसार नाश होवे ॥

पथ्यादिचूर्ण

पथ्यापाठावचाकुष्टंचित्रकः कटुरोहिणी॥
चूर्णमुष्णांभसापीतंश्लेष्मातीसारनाशनं ॥

अर्थ—हरड, पाठ, वच, कूठ, चीता, और कुटकी इनके चूर्णको गरमजलके साथ पीवे तो कफातिसार दूर होवे ॥

अभयादिचूर्ण

अभयातिविषाहिंगुसौवर्चलकटुत्रयं ॥
एतच्चूर्णसुतप्तांभः पीतंश्लेष्मातिसारजित् ॥

अर्थ—हरड, अतीस, हींग, संचरनोन, सोंठ, मिरच, पीपल, इनके चूर्णको गरम जलके साथ पीवें तो कफातिसार दूर होवे ॥

पथ्यादिचूर्ण

पथ्यासौवर्चलंहिंगुसैंधवातिविषावचा ॥
आमातिसारंसकफंपीतमुष्णांबुनाजयेत् ॥

अर्थ—हरड, संचरनिमक, हींग, सैंधानिमक, अतीस, और वच इनके चूर्णको गरम जलके साथ पीवे तो कफयुक्त आमातिसार दूर हो ॥

शुंठीपुटपाक

महौषधंसूक्ष्मचूर्णंकृत्वातोयेनपेषयेत् ॥ ततस्तुगोलकंकृत्वा-लेपयेतदनंतरं ॥ वातारिशूलकल्केनश्रीपत्रैर्वेष्टयेत्तथा ॥सूत्रबद्धंमृदालिप्तंमृदुवन्हौविपाचयेत् ॥ सुस्निग्धंगोलकंतंतुस्फोटयित्वासमुद्धरेत् ॥ शीतीभूतंमधुयुतंखादेन्माषद्वयोन्मितं ॥ अथतक्रेणगव्येनसहदेयंपलेनच ॥ योगोयंकफवातोत्थदुष्टातीसारनाशनः ॥ शोफकासहरः कांतिकृष्णवर्त्मविवर्धनः ॥

अर्थ—सोंठका वारीक चूर्ण कर जलसैं पीसैं फिर उसका गोला वनाय उसपर अंडके कल्कका लेपकर वेलकेपत्तोंसैं लपेट सूतसैं कस देवे, फिर ऊपर मिट्टी चढायके मंद अग्निमें पचावे फिर उसको फोडके सोंठके गोलेको निकाल लेवे शीतल होनेपर २ मासेके अनुमान सहतके साथ भक्षण करे अथवा ४ तो-

ले गौकी छाछके साथ देवे तो यह योगकफ और वायुके दुष्ट होनेसें उत्पन्न-दुष्ट अतिसारको नाश करे तथा सूजन खांसीको हरण करे और कांति तथा अग्निको वढावे ॥

त्रिदोषातिसारनिदान

वराहस्नेहमांसांबुसदृशंसर्वरूपिणं ॥
कृच्छ्रसाध्य तीसारंविंद्यादोषत्रयोद्भवं ॥

अर्थ—जिस रोगीके दस्त सूअरके वसाके समान मांस धोवन जलके समान; तथा वातादि सर्व अतिसारोंके लक्षण करके युक्त होवे उसको त्रिदोषका अतिसार जानना यह कष्टसाध्य है ॥

कुटजावलेह

कुटजस्यत्वचःक्वाथोवस्त्रपूतोघनीकृतः॥सलीढोतिविषायुक्तः स्यात्रिदोषातिसारनुत् ॥इच्छंत्यत्राष्टमांशेनक्वाथादतिविषा-रजः ॥ प्रक्षिपेद्वाचतुर्थांशमितिकेचिद्वदंतिहि ॥

अर्थ—कूडाकीछालके काढेको कपडेमें छान उसमें अतीसका चूर्ण मिलायके फिर पचावे जव गाढा होजावे तव उतारके उसे चाटे तो त्रिदोषका अतिसार दूर हो इसमें अष्ठमांस अतीस डाले ऐसे कोई आचार्य कहते है तथा चतुर्थांश डाले ऐसे किसी आचार्यका मतहै इसमें वैद्य अपनी वुद्धिसें दोषोंकी अनुसार कल्पना करे ॥

समंगादिकाढा

समंगातिविषामुस्ताविश्वह्रीबेरधातुकी ॥
कुटजत्वक्फलंबिल्वंक्वाथः सर्वातिसारनुत् ॥

अर्थ—खरेटी, अतीस, नागरमोथा, सोंठ, हाऊवेर, धायकेफूल, कूडाकी छाल, इन्द्रजो, और वेलगिरी इनका काढा सर्व प्रकारके अतिसारोंका नाश करे ॥

पंचमूलीबलादिकाढा

पंचमूलीबलाबिल्वगुडूचीमुस्तनागरैः ॥ पाठाभूनिंबबर्हिष्ट-कुटजत्वक्फलैः शृतं ॥ सर्वजंहंत्यतीसारंज्वरंचापितथावमिं ॥ सशूलोपद्रवंश्वासंकासंवापिसुदुस्तरं ॥

अर्थ—पंचमूल, खरेटी, वेलगिरी, गिलोय, नागरमोथा, सोंठ, पाढ, चिरायता, नेत्रवाला, कूडाकी छाल, इन्द्रजो, इनका काढा त्रिदोषातिसार, ज्वर, वाँात शूल, श्वास, और खाँसीको नाश करे ॥

पंचमूलयोजना

पंचमूल्यत्रसामान्यापित्तेयोज्याकनीयसी ॥
वातेपुनर्बलासेचसायोज्यामहतीमता ॥

अर्थ--पित्तमें लघुपंचमूल देवे और वादी तथा कफमें बृहत्पंच मूल देना-चाहिये ॥

कुटजपुटपाक

अवेदनंसुसंपक्वंदीप्ताग्नेः सुचिरोत्थितं ॥ नानावर्णमतीसारं-पुटपाकैरुपाचरेत् ॥ स्निग्धंघनंकुटजवल्कलजंत्वजग्धमादा-यतत्क्षणमतीवचपेषयित्वा ॥ जंबूपलाशदलतंडुलतोयसिक्तं-बद्धंकुशेनचबहिर्घनपंकालिप्तं ॥ सुस्विन्नपिष्टमपिपीडचरसं-गृहित्वाक्षौद्रेणयुक्तमतिसारवतेप्रदद्यात् ॥ कृष्णात्रिपुत्रमत-पूजितएषयोगः सर्वातिसारहरणेस्त्वयमेवराजा ॥

अर्थ–शूलरहित पक्व दीप्ताग्नीवालेका, अनेक वर्ण संयुक्त, और पुरा अतिसारको पुटपाक देवे, कूडाकी गीली छाल लाकर तत्काल पीस और ाबलके धोवनको मिलाय गोला करे फिर जामुनके पत्तोंसैं लपेट ऊपर सू-सैं लपेट देवे फिर उसके ऊपर गाढी २ कीचका लेपकर मंदाग्निमें पचन करावे फेर उसको निकाल उसकी मट्टी और पत्ते दूर कर रस निकाल ले उसमें सहत मेलायके अतिसार रोगवालेको देवे तो यह योग सर्वातिसारोको नष्ट करे य-ह कृष्णात्रेय ऋषिका कहा सर्व प्रयोगोंका राजा है ॥

सुतादिवटी

मृतंसूतंमृतंस्वर्णंमृतंताम्रंसमंसमं॥ तुल्यंचखादिरंसारंतथामो चरसंक्षिपेत् ॥ द्रवैःशाल्मलिमूलोत्थैर्मर्दयेत्प्रहरद्वयं ॥ चण-मात्रांवटींकृत्वाखादेज्जीरकसंयुतां ॥ त्रिदोषाढ्यमतीसारंस-ज्वरंनाशयेद्ध्रुवं ॥

अर्थ—चंद्रोदय, सुवर्णभस्म, तामेकीभस्म, प्रत्येक बराबर लेवे सबकी ब

रावर खैरसार, और मोचरस लेकर सेमरकी जडके रससैं २ प्रहर खरल कर चनेकी वरावर गोली वनावे इसको जीरेके साथ खाय तो त्रिदोषका अतिसार ज्वरयुक्त निश्चय दूर होवे

चतुः समागुटी

अभयानागरंमुस्तंगुडेनसहयोजितं ॥ चतुःसमेयंगुटिकात्रि-
दोषघ्नीप्रकीर्तिता ॥ आमातिसारमानाहसविबंधंविषूचिकां ॥
कृमीनरोचकंहन्याद्दीपयत्याशुचानलं ॥

अर्थ—हरड, सोंठ, नागरमोथा, और गुड, ये समानभाग ले गोली वनावे इसे खायतो त्रिदोष, आमातिसार, अफरा, विबंध, विषूचिका, कृमिरोग, और अरुचि इनको दूर करे और अग्निको दीपन करे ॥

तृप्तिसागररस

रसभस्मचभागैकंरसाद्द्विगुणगंधकं ॥गंधकाद्द्विगुणंचाभ्रंनिश्चं-
द्रंमर्दयेततः ॥ दिनैकंकटुतैलेनरुध्वाचुल्यांविपाचयेत् ॥ या-
मैकंवालुकायंत्रेसमुद्धृत्यविमर्दयेत् ॥ हयमारकमूलोत्थरसै-
र्यामंनिरुध्यच ॥ पूर्ववत्पाचयेच्चुल्यांसमादायाविमिश्रयेत् ॥
त्रिक्षारंपंचलवणंनिष्काग्निद्वयजीरकैः ॥ विडंगेनचतत्तुल्यंयु
क्तोयंतृप्तिसागरः॥भक्षयेन्माषमात्रंचसन्निपातातिसारजित्॥
सज्वरांग्रहणींहंतिह्यनुपानंविनारसः ॥

अर्थ—चंद्रोदय, १ तोला, गंधक, २ तोले, अभ्रक ४ तोले, ये संपूर्ण पदार्थ एकत्र कर एक प्रहर खरलकरे फिर उसको सरसोंकेतेलमे १दिन खरल करे फिर शीशीमें भरके मुख वंदकर १ प्रहर वालुकायंत्रमें पचावे फिर कनेरकी जडके रससैं १ प्रहर खरलकर पूर्वविधिसैं चूल्हेपर चढाय वालुकायंत्रमें पचावे फिर निकालकर तीनों क्षार, पाँचोनिमक, चीतेकी छाल, जीरा, कालाजीरा, वायविडंग इनका चूर्ण तीन २ मासे लेकर मिलावे इनको तप्तिसागर कहते है, १ मासे सेवन करे तो संनिपातातिसार ज्वरयुक्त संग्रहणी इसको विना अनुपानके नष्ट करे ॥

आनंदभैरवी

मूलंकटुकरोहिण्याविल्वमज्जागुडूचिका॥दध्नापिष्टापिबेच्चानु
वटीचानंदभैरवी ॥ सन्निपातातिसारघ्नीपथ्यमूलाचपूर्ववत् ॥

अर्थ—कुटकी, वेलगिरी, गिलोय इनके चूर्णको दहीसैं पीसकैं देवे तो संनिपातातिसार नष्ट हो इसको आनंदभैरवी कहते है इसपर पथ्य पूर्ववत् देवे ॥

शोकभयातिसारनिदान

तैस्तैर्भावैः शोचतोल्याशनस्यवाष्पोष्मावैवन्हिमाविश्यजंतोः ॥ कोष्टंगत्वाक्षोभयेत्तस्यरक्तंतच्चाधस्तात्काकणंतीप्रकाशं ॥ निर्गच्छेद्वैविड्विमिश्रंह्यविड्वानिर्गंधंवागंधवद्वातिसारः ॥ शोकोत्पन्नोदुश्चिकित्स्योतिमात्रंरोगोवैद्यैःकष्टएषप्रदिष्टः॥

अर्थ–जिसके धन बंधु इत्यादिक नाश होनेसैं अत्यंत भयभीत हो इसी कारण उसका अन्न थक जावे,उसके नेत्रोंसे उदकादि तथा देहसैं कांसादिक तेज ये भीतर प्रवेश होकर कोठेमें जायकर जठराग्निको व्याकुल कर रुधिरको क्षोभित करे फिर वह रुधिर अपान (गूदा) द्वारा निकलने लगे उसका रंग गुंजा (घूंघची) के समान होवे तथा वह रुधिर कभी २ मलमिश्रित किंवा केवल गंधरहित किंवा सगंध ऐंसा होय उसको शोकातिसार कहते है यह कष्टसाध्य है वैद्योकरके दुश्चिकित्स्य है, क्योकि विना शोकनष्ट हुए यह इसका दूर होना असंभव है ॥

चिकित्सा

भयशोकसमुद्भूतेज्ञेयौवातातिसारवत् ॥
तयोर्वातहरीकार्याहर्षणाश्वासनैः क्रिया ॥

अर्थ–भय और शोकसैं उत्पन्न हुए अतिसारोंकी चिबातातिसारके सदृश जानना ॥ तथा उसको हर्षकारक पदार्थ अथवा धीरजबढावना और वातहरण कर्त्ताक्रिया करावे ॥

पृश्निपर्ण्यादिकाढा

पृश्निपर्णीबलाबिल्वधान्यकोत्पलनागरैः॥विडंगात्तिविषामुस्तादारुपाठाकलिंगकैः॥ मरिचेनसमायुक्तंशोकातीसारनाशनं॥

अर्थ—पृश्नीपर्णी, खरेटी, वेलगिरी, धनिया, कूठ, सोंठ, वायविडंग, अतीस नागरमोथा, दारुहलदी, पाढमूल, और कूडाकी छाल इनका काढा कालीमिरचका चूर्ण मिलायके पीवे तो शोकातीसार नष्ट होवे ॥

आमातिसारनिदान

अन्नाजीर्णात्प्रद्रुताः क्षोभयंतः कोष्ठंदोषाधातुसंधान्मलांश्च ॥
नानावर्णंनैकशः सारयंतीशूलोपेतंषष्ठमेनंवदंति ॥

अर्थ—अन्नके अजीर्णसैं वातादिके दोष अपने स्थानसैं उठकर सब उदरको दूषित करते हुए संपूर्ण पेटमें फिरने लगते है, फिर रसादि सप्तधातु और पुरीषादि मल इनसैं अनेक वर्णका और अनेक प्रकारका अपान द्वारा शूलयुक्त थोडा२मल वाहर निकले उसे आमातिसार कहते है उसको छटा अतिसार जानना

आमातिसारीचिकित्साक्रम

आमपक्वक्रमंहित्वानातिसारेक्रियाहिता ॥
आतोतिसारेसर्वस्मिन्नामंपक्वंचलक्षयेत् ॥

अर्थ—आमपचन होनेके विना अतिसारपर औषध हितकारी, नहीं होती अतएव सर्व अतिसारमें आम पचन हुई यानहीहुई ये देखना चाहिये ॥

आमेपिलंघनंशस्तमादौपाचनमेवच ॥
कार्यंवानशनस्यांतेसद्रवंलघुभोजनं ॥

अर्थ–आमातिसारमें लंघन और पाचन अथवा लंघनके अंतमें हलाक भोजन करे

लंघनमेकंमुक्त्वानान्यदस्तीहभेषजंबलिनाम् ॥
समुदीर्णदोषनिचयंशमयातितत्पाचयत्येव ॥

अर्थ—आमातिसारमें लंघन और पाचन करावे किंवा लंघनके अंतमें द्रवरूप हलके भोजन करावे ॥

नतुसंग्रहणंदद्यात्पूर्वमामातिसारिणां ॥ दोषोत्ह्यादौवर्धमानोजनयत्यामयान्बहून् ॥ शोफपांड्वामयप्लीहकुष्ठगुल्मोदरज्वरान् ।। दंडकालसृकाध्मानग्रहण्यर्शोगदांस्तथा ॥ डिंभस्थः स्थविरस्थश्चवातपित्तात्मकश्चयः ॥ क्षीणधातुबलस्यापिबहुदोषोतिविश्रुतः ॥ आमोनस्तंभनीयः स्यात्पाचनान्मरणंभवेत् ॥ अतिसारेज्वरेचैवयस्तुपित्तेदगामये- ॥ आदौनप्रतिकुर्याद्वाव्याधिवेगोहिदुस्इरः

अर्थ—आमातिसारी रोगीको प्रथमही मल बांधनेवाली औषध नदेवे, वर्धमान आमरूप दोष, सूजन, पांडू, प्लीहा, कुष्ट, गुल्म, उदर, ज्वर, दंडक, अलसक, अफरा, संग्रहणी,ववासीर, इत्यादि अनेक रोग करे है, और वालक, तथा शुद्ध इनका तथा वातपित्तात्मक और धातुक्षीण, बलक्षीण इनका अनेक दोषयुक्त आमका स्तंभन न करे,स्तंभन, नकरनेसैं रोगी मरजावे और अतिसार, ज्वर, पित्त, नेत्ररोग, और कफ, इनपर प्रथमही चिकीत्सा न करे क्यो कि व्याधिका वेग दुःसह है अतएव तीनच्यार दिन व्यतीत होनेपर चिकित्सा करनी चाहिये ॥

धान्यकादिकाढापाचनवादीपन

धान्यनागरजःक्राथःपाचनोदीपनस्तथा ॥
एरंडमूलयुक्तश्चजयेदामानिलव्यथा ॥

अर्थ–धनिया, और सोंठ, इन दो औषधोंका काढा पीवे यह दीपन, और पाचन करे है, तथा इन काढेमें अंडकी जड डालकेलेवे तो आमवातको नाश करे॥

अभयाविरेचन

स्तोकंस्तोकंविवृद्धंवासशूलंयोतिसार्यते ॥
अभयापिप्पलीकल्कैः सुखोष्णैस्तंविरेचयेत् ॥

अर्थ—थोडा २ किंवा वहुत शूल युक्त अतिसार होय तो उसको हरड और पीपल इनके कल्कका रेचन देवे ॥

बिडंगादिरेचन

दीप्ताग्निर्बहुदोषोयोविबद्धमतिसार्यते ॥
विडंगत्रिफलाकृष्णाकषायैस्तंविरेचयेत् ॥

अर्थ—दीप्ताग्नि पुरुषको वहुत दोषयुक्त, तथा गांठदार मल उतरता है उसको वायविडंग, त्रिफला, और पीपल इनके काढे करके रेचन करावे ॥

क्षुधितकाअतिसार

क्षुत्क्षामस्यविरेकेतुपेयांयुज्याद्विचक्षणः ॥
भेषजैर्मारुतघ्नैश्चदीपनीयैश्चकल्पितां ॥

अर्थ—भूंकसै पीडित होनेसैं, जिसके दस्त होते हो उसकी वातनाशक दीपन ऐंसी औषधोसैं सिद्ध करी पेया पिलानी चाहिये ॥

देवदारुजलपान

योतिवद्धंप्रभूतंचपुरीषमतिसार्यते ॥ तस्यादौवमनंयोज्यंप
श्चाल्लंघनमेवच ॥ देवदारुवचाकुष्टंनागरातिविषाभया ॥ स
र्वाजीर्णप्रशमनंपेयमेतैःशृतंपयः ॥

अर्थ—जिस रोगिका अति कठोर और बहुत मल उतरता हो उसको प्रथम बमन फिर लंघन फिर देवदारु, वच, कूठ, सोंठ, अतीस, और हरड, इनसें दूधको ओंटायकर देवे तो अजीर्णको नाश करे ॥

चित्रकादिकाढा

चित्रकंपिप्पलीमूलंवचाकटुकरोहिणी ॥ पाठावत्सकवीजा-
निहरीतक्योमहौषधं ॥ एतदामसमुत्थानमतिसारंसवेदनं ॥
कफात्मकंसपित्तंचसवातंहंतिवैध्रुवं ॥

अर्थ—चीतेकी छाल, पीपरामूल, वच, कुटकी, पाढ, इन्द्रजों, हरड, और सोंठ, इनका काढा आमातिसार, कफातिसार, पित्ता तिसार, और वातातिसार को नाश करे ॥

विश्वादियोग

विश्वाभयाघनवचातिविषासुराह्वाक्काथोथविश्वजलदातिवि-
षाशृतोवा ॥ आमातिसारशमनः क्वथितः कषायोशुंठीघनाप्र-
तिविषामृतवल्लिजोवा ॥

अर्थ—सोंठ, हरड, नागरमोथा, अतीस, और देवदारु, इनका । अथवा सोंठ, नागरमोथा, और अतींस इनका । अथवा सोंठ, नागरमोथा, अतीस, और गिलोय इनका काढा आमातिसार नाशक है ॥

पथ्यादिकाढा

पथ्यादारुवचामुस्तैर्नागरातिविषान्वितैः ॥
आमातिसारशूलघ्नंदीपनंपाचनंपरं ॥

अर्थ—हरड, देवदारु, हलदी, वच, नागरमोथा, सोंठ, और अतीस इनका काढा देवे तो आमातिसार नाश करे ॥

एरंडादिरस

एरंडरससंपिष्टंपक्कमामंचनागरं ॥
आमातिसारशूलघ्नंदीपनंपाचनंपरं ॥

अर्थ—अंडके रसमें भुनि हुई और कच्ची सोंठको पीसके देवे तो आमातिसार और शूलको नाश करे तथा दीपन और पाचन है ॥

शुंठ्यादिचूर्ण

शुंठीप्रतिविषाहिंगुमुस्ताकुटजचित्रकैः ॥
चूर्णमुष्णांबुनापीतमामातीसारनाशनं ॥

अर्थ—सोंठ, अतीस, भुनी हींग, नागरमोथा, इन्द्रजो, और चीतेकी छाल इनका चूर्णकर चौगुने गरम पानीमें पीवे तों आमातिसार नाश होवे ॥

दुसराहरीतक्यादिचूर्ण

हरीतकीप्रतिविषासिंधुसौवर्चलंवचा ॥ हिंगुचेतिकृतंचूर्णंपिबेदुष्णेनवारिणा ॥ अमातिसारशमनंग्राहिचातिप्रबोधनं ॥

अर्थ--छोटीहरड, अतीस, सैंधानिमक, संचर निमक, वच, और भुनी हींग इन छः औषधोंका चूर्ण गरम जलके साथ पीवे तो आमातिसार दूर होवे तथा मलका अवष्टंभ होकर अग्नि प्रदीप्त होवे ॥

शुंठीपुटपाक

चूर्णंकिंचित्घृताभ्यक्तंशुंठ्याएरंडजैर्दलैः ॥वेष्टितंपुटपाकेनविपचेन्मंदवन्हिना ॥ ततउद्धृत्यतचूर्णंग्राह्यंप्रातः सित्तासमम् ॥ तेनयांतिशमंपीडात्यामातीसारसंभवा ॥कुक्षिशूलामशूलघ्नंविबंधाध्मानसारजित् ॥

अर्थ—सोंठके चूर्णको थोडेसे घींसें चुपड अंडके पत्तोंसें लपेट फिर ऊपर गोवर मिट्टीका लेपकर मंदाग्निसैं पचावे, फिर वराबरकी खांड मिलाय प्रातः कालमें खायतो आमातिसार दूर होवे, तथा आमातिसार संबंधी सर्व पीडा नाश हो, और कूखका शूल, आमशूल, मलबंद्धता, पेटकाफूलना तथा अतिसारको नाश करे ॥

दुसरेशुंठ्यादिचूर्ण

शुंठीजीरंसैंधवंहिंगुजातिबीजंतद्धत्साहकारंप्रशस्तं ॥ ज्ञेयंस-

द्भिः सावरूदंसाबिल्वंमार्कंडचावाशोधितंसूक्ष्मचूर्णं ॥ दध्ना-
चवटिकांकुर्यात्तेनैवसहलेहयेत् ॥ आमातिसारंमांद्यंचअरु-
चिंहंतितत्क्षणात् ॥

अर्थ—सोंठ, जीरा, सैंधानिमक, हींग, जायफल, आमकी गुठली, वेलगि-री, खाखसेके पत्र इनका वारीककपड़छन चूर्ण कर उसकी दहींसैं गोली ब-नावे और दहींसैं खाय तो तत्क्षण आमातिसार, मंदाग्नि, और अरुचि दूर होवे

तिसराशुंठ्यादिचूर्ण

सत्वाशुंठचोषणंभृंगीसमांशंसूक्ष्मचूर्णकं ॥यथासात्म्यंसेवनी-
यंशीततोयानुपानतः ॥सशूलमामदोषंचनाशमायातिसत्वरं॥
दध्योदनंपथ्यमात्रमुचितंरोगशांतये ॥

अर्थ—सोंठका सत्व, कालीमिरच, भांग, ए समान भाग ले चूर्ण करे, इ-सको शीतल जलके साथ सेवन करे तो शूल, आमातिसार, इनको शीघ्र दू-रकरे, इसपर दहींभात पथ्य कहा है

साखरुंडचूर्ण

जयाखंडंसाखरुंडंजीरकंदधिमिश्रितं ॥
आमातिसाररक्तंचहंतिवेगेनकौतुकं ॥

अर्थ—भांग, मिश्री, साखरुंड, जीरा, और दहीं, ये एकत्र करके पीवे तो आमातीसार और रक्तातिसारका बहुत जल्दी नाश करे यह कौतुक है ॥

यवान्यादिकाढा

यवानीनागरोशीरधनिकातिविषाघनैः ॥
बालबिल्वाद्विपर्णीभिर्दीपनंपाचनंभवेत् ॥

अर्थ—अजमायन, सोंठ, खस, धनिया, अतीस, नागरमोथा, वेलगिरी, सालपर्णी, और पृष्टपर्णी, इनका काढा दीपन और पाचन है ॥

कलिंगादिकाढा

कलिंगातिविषाहिंगुपथ्यासौवर्चलंवचा॥
शूलस्तंभविबंधघ्नंपेयंदीपनपाचनं ॥

अर्थ—इन्द्रजो, अतीस, हींग, हरड, कालानिमक, और वच, इनका का-ढा शूल, स्तंभता, मलका रुकना, इनको दूर करे दीपन और पाचन है ॥

त्रिकंटादियवकांजी

त्रिकंटकैरंडबिल्वैः साधितंथावकांजिकं ॥
आमातिसारशूलानिजयेत्क्षौद्रान्विताशिवा॥

अर्थ—गोखरू, अंडकीजड, बेलगिरी, ए वस्तु डालके जवोंकी कांजी बनावे यह आमातिसार, शूल, इनका नाश करे अथवा सहत और हरड देवे तो आमातिसार दूर हो ॥

शोषपरह्रीबेरादिकाढा

ह्रीवेरशृंगवेराभ्यांमुस्तापर्पटकेनच ॥
मुस्तोदीच्यशृतंतोयंदेयंवापिपिपासिते ॥

अर्थ—नेत्रवाला, अदरख, नागरमोथा, भद्रमोथा, खस, इनका काढा प्यासवालेको देवे ॥

त्र्युषणादिचूर्ण

त्र्युषणातिविषाहिंगुवचासौवर्चलाभया ॥
पीतोष्णेनांभसादत्यादामातीसारमुत्तमं ॥

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल, अतीस, हींग, वच, कालानिमक, और हरड इनका चूर्ण गरम जलके साथ देवे तो घोर आमातिसारको नष्ट करे ॥

पाठादिचूर्ण

पाठाहिंग्वाजमोदोग्रापंचकोलाब्दजंरजः ॥
उष्णांबुपीतंसरुजंजयत्यामंससैंधवं ॥

अर्थ—पाढ, हींग, अजमोद, वच, पीपल, पीपरामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, और नागरमोथा, इनके चूर्णमें सैंधानिमक मिलाय गरम जलसैं देवे तो पीडायुक्त आमरोगको नाश करे ॥

पयमुस्तायोग

पयसिक्वाथ्यमुस्तानांविंशतिस्त्रिगुणांभसि ॥
क्षीरावशेषंतत्पीतंहंत्यामंशूलमेवच ॥

अर्थ—दूध १ भाग, जल ३ भाग, और नागरमोथेका काढा २० भाग, सबको एकत्रकर औंटावे जब केवल दूध मात्र शेष रहे तब प्यावे यह आम और शूल इनका नाश करे ॥

आमपक्कातिसारलक्षण

संसृष्टमेभिर्दोषैस्तुन्यस्तमप्स्ववसीदति ॥ पुरीषंभृशदुर्गंधिपि च्छिलंचामसंज्ञितं ॥ एतान्येवंतुलिंगानिविपरीतानीयस्य- वै ॥ लाघवंचविशेषेणतस्यपक्कंविनिर्दिशेत् ॥

अर्थ—पूर्वोक्त कहे हुए वातादिक अतिसारोंके लक्षणों करके युक्त ऐंसा मल जलमें गेरनेसैं आम भारी है अतएववूडजावे, तथा उसमें अत्यंत दुर्गंध आवे, और चिकना होवे उसकी आमसंज्ञा है। इससैं विपरित लक्षणवाला और शरीरमें अत्यंत हलकापन होवे उस मनुष्यका मल पक्क जानना इस प्रकार वैद्यको आम और पक्कमलकी परीक्षा करनी चाहिये ॥

असाध्यलक्षण

पक्कजांबवसंकाशंयकृत्पिंडनिभंतनु॥ घृततैलवसामज्जावेसवारपयोदधि ॥ मांसधावनतोयाभंकृष्णंनीलारुणप्रभं ॥ मेचकं- कर्बुरंस्निग्धंचंद्रिकोपगतंघनं ॥ कुणपंमस्तुलिंगाभंदुर्गंधंकु- थितंबहु॥ तृष्णादाहारुचिश्वासहिक्कापार्श्वास्थिशूलिनं ॥ सं- मूर्छारतिसंमोहयुक्तंपक्कवलीगुदं ॥प्रलापयुक्तंचभिषग्वर्जयेद- तिसारिणं ॥

अर्थ—जिस रोगीका मल—पकीहुईजामुनके सदृश हो, कलेजेके रंग समान तथा घी,तेल, वसा,मज्जा इनके समान,वेसवार (मसाले)के पानीके समान, दूध, दही, मांस धोनेके जल समान, काजलके समान काला, नीला, ललोही लिये, मृदंगकी स्याहीके समान, अनेक प्रकारके रंगका, चकचकाहट लिये, मोरपंखके ऊपर जैसे अनेक प्रकारके रंग हो ऐंसा दस्तका रंग हो, गाढा मुर्दे कीसी दुर्गंधवाला, मस्तकसैं मेदनिकले ऐसा हो, दुर्गंधयुक्त,बहुत ऐंसा मल गिरे और रोगीको प्यास, दाह, अन्नद्वेष, श्वास, हिचकी, पसबाडेके हाडोंका दूखना मनको मोह, वेकली, ये लक्षण होवे और गुदाकी वली (आंटें) पकजावे तथा वकवाद करे ऐंसाअतिसार रोगी वैद्यको त्याज्य है ॥

दुसराअसाध्यलक्षण

असंवृत्तगुदंक्षीणंदुराध्मानमुपद्रुतं[1] ॥
गुदेपक्केगतोष्माणमतिसारिणमुत्सृजेत् ॥

[1] दुरात्मान मुपद्रुतम् इतिपाठा न्तनम् ।

अर्थ--जिस रोगीकी गुदा दस्त होनेके पश्चात मुदें नहीं, ऐसाक्षीणहुआ अत्यंत अफरा करकें और सूजन इत्यादि उपद्रवो करके युक्त तथा गुदाके ऊपर छोटी २ फुंसी हो कर पके तथा जिसके देहमें गरमी न रहे अथवा जठराग्नि शांति हो जावे ऐसा अतिसार रोगी वैद्यकरके त्याज्य है

अतिसारकउपद्रव

शोथंशूलंज्वरंतृष्णांश्वासंकासमरोचकं ॥
छर्दिमूर्छांचहिक्कांचदृष्ट्वातीसारिणंत्यजेत् ॥

अर्थ--सूजन, शूल, ज्वर, प्यास, श्वास, खाँसी, अरुचि, वमन, मूर्छा, और हिचकी इनको देखकर वैद्य अतिसारवाले रोगीको त्याग देवे ॥

असाध्यलक्षण

श्वासशूलपिपासार्तंक्षीणंज्वरनिपीडितं ॥
विशेषेणनरंवृद्धमतिसारोविनाशयेत् ॥

अर्थ—श्वास, शूल, प्यास, कृश और ज्वरसैं पीडित ऐंसे उपद्रवों करके युक्त वढाहुआ अतिसार रोग रोगीका नाश करे है ॥

लोध्रादिचूर्ण

सलोध्रंधातकीबिल्वंमुस्ताम्रास्थिकलिंगकं ॥
पिबेन्माहिषतक्रेणपक्वातीसारनाशनं ॥

अर्थ--लोधपठानी, धायके फूल, वेलगिरी, नागरमोथा, आमकीगुठली, इन्द्रजो, इनके चूर्णको भैसकी छाछके साथ पीवे तो पिक्कातिसार दूर हो ॥

पद्मादिचूर्ण

पद्मंसमंगामधुकंबिल्वजंतुशलाटुच ॥
पिबेत्तंडुलतोयेनसक्षौद्रमगदंकरं ॥

अर्थ—पद्माख, मुलहटी, महुआ, वेलगिरी, हरे औरकोंमल गूलर, इन सबके चूर्णको चावलोंके चूर्णके जलमें सहत डालके पीवे तो पक्कातिसार दूर होवे

कुटजादिचूर्ण

कुटजातिविषाचूर्णंमधुनासहलेहितं॥
चिरोत्थितमतीसारपक्वंपित्तास्रजंजयेत् ॥

अर्थ--कूडाकी छाल, अतीस, इनके चूर्णमें सहत मिलायके चाटे तो बहुत दिनका अतिसार, पक्वातिसार और रक्तपित्त इन सबको दूर करे ॥

अंबष्टादिगण

अबंष्टाधातकीलोध्रसमंगापद्मकेसरं ॥
मधुकारतुबिल्वंचपक्वातीसारहागणः ॥

अर्थ—पाढ, धायकेफूल, लोध, मजीठ, कमलकी केंशर, मुलहटी, टैटू, और वेलगिरी, इनका चूर्ण अथवा काढा पक्वातिसारको नाश करे ॥

समंगादिचत्वारिचूर्ण

समंगाधातकीपुष्पंमंजिष्ठालोध्रएवच ॥शाल्मलीवेष्ठकोलोध्रदाडिमद्रुफलत्वचौ॥आम्रास्थिमध्यंलोध्रंचबिल्वमध्यंप्रियंगुच॥ मधुकंशृंगबेरंचदीर्घवृतंत्वगेवच ॥चत्वारएतेयोगाश्वपक्वातीसारनाशनाः ॥ तेयोगाउपयोज्यावैसुक्षौद्रास्तंडुलांबुना॥

अर्थ—लजालू, धायकेफूल, मजीठ और लोध । अथवा मोचरस, लोध, अनारदाना, अनारकी छाल। अथवा आमकी गुठली, लोध, वेलगिरी, और फूलप्रियंगु । अथवा मुलहटी, अदरख, अरलू, और दालचीनी, ये चार योग इनमेसें कीसीएक योगको चावलोंको धोवनमें सहत मिलाय उसके साथ पीवे तो पक्वातिसार नष्ट होवे ॥

कंचटादिचूर्ण

कंचटजंबूदाडिमशृंगाटकपत्रबिल्वबर्हिष्टं ॥
जलधरनागरसहितंगंगामपिवेगवाहिनींरुंध्यात् ॥

अर्थ—गजपीपल, जामुनकेपत्ते, अनारकी छाल, सिंघाडेकेपत्ते, वेलगिरी, नेत्रवाला, नागरमोथा, और सोंठ, इनको समान भाग ले चूर्ण करके पीवे तो गंगाके प्रवाह समान भी दस्तोंको रोकै ॥

अंकोटकल्क

अंकोटमूलकल्कस्तंडुलपयसासमाक्षिकःपीतः॥
सेतुरिववारिवेगंझटितिनिरुंध्यादतीसारं ॥

अर्थ—अंकोलकी जडके कल्कको चावलोंके धोवनमें सहत मिलायके

पीवे तो जैसें नदीके वेगको सेतु (मैड) रोक देता है उसी प्रकार अतिसारको यह योग वंदकर देता है ॥

मोचरसादिचूर्ण

मोचरसमुस्तानागरपाठारलुधातुकीकुसुमैः ॥
चूर्णमथितसमेतंरुणाद्धिगंगाप्रवाहमपि ॥

अर्थ—मोचरस, नागरमोथा, सोंठ, पाढ, अरलू और धायके फूल, इसको समान भागले चूर्ण करे फिर इसमेंसैं १ तोले गौकी छाछके साथ पीवेतो यह गंगाके वेगसमान अतिसार रोगको दूर करे ॥

मुस्तादिचूर्ण

मुस्तमोचरसलोध्रधातुकिपुष्पबिल्वगिरिकोटजैः फलैः ॥
चूर्णितंसगुडतक्रसेवितंनिम्नगाजलरयोपिरुध्यते ॥

अर्थ—नागरमोथा, मोचरस, लोध, धायके फूल, वेलगिरी, इद्रजौ, इनके चूर्णको छाछ और उसमें गुड मिलायके पीवेतो नदीकेवेगको भी वंद करे फिर दस्तोंका वंद करना क्या बडी वात है ॥

विश्वादिवटी

विश्वजीरकसिंधुत्थहिंगुजातिफलानिच ॥ साम्रास्थिशंखखं-
डंचदध्नाम्लेनप्रपेषयेत् ॥ ईषदंगारकैर्भ्रष्टावटिकाकर्षसंमि-
ता ॥ पक्वापक्वमतीसारंसशूलंग्रहणीगदं ॥ चिरोत्थमचिरो-
त्थंचनाशयेन्नात्रसंशयः ॥

अर्थ—सोंठ, जीरा, सैंधानिमक, हींग, जायफल, आमकी भीतरकी गुठली शंखका टुकडा, इन सबको खट्टे दहींसैं घोटे फिर अंगारोंपर कुछ थोडी भून लेवे फिर एक २ तोलेकी गोलिया वनावे १ गोली नित्य सेवन करे तो पक्वातिसार शूल, संग्रहणी, ये रोग बहुत दिनके अथवा न ए हो सबका नाश होवे ॥

वटप्ररोहयोग

वटप्ररोहंसंपिष्ट्वाश्लक्ष्णंतंडुलवारिणा ॥
तंपिबेत्तक्रसंयुक्तंअतिसारप्रशांतये ॥

अर्थ—चाँवलके धोवनके जलमें बडके नवीन अंकुरोंको पीस छाछ मिलायके अतिसार नाशके अर्थ देवे ॥

कुटजावलेह

कुटजत्वक्तुलामार्द्रांद्रोणाद्भिश्चपचेद्भिषक् ॥ पादशेषंशृतं-
नीत्वावस्त्रपूतंपुनः पचेत् ॥ लज्जालुर्धातुकीबिल्वंपाठामो-
चरसस्तथा ॥ मुस्तंप्रतिविषाचैवचूर्णमेषांपलंपलं ॥ निक्षि-
प्यप्रपचेत्तावद्यावद्दर्वीप्रलेपनं ॥ जलेनछागदुग्धेनपीतोमंडे-
नवाजयत् ॥ घोरान्सर्वानतीसारान्नानावर्णान्सवेदनान्- ॥
असृग्दरंसमस्तंचतथार्शांसिप्रवाहिकां ॥

अर्थ—गीलीकुडाकी छाल ४०० चारसौं तोले,जल, १०२४ तोले लेकर काढा करे ।जव चतुर्थांश बाकी रहे तव उतारके छान लेवे, उसमे लजालूका कंद, धायकेफूल, वेलगिरी, पाढ, सेमकागोद, नागरमोथा, और अतीस प्रत्येक चार चार तोलेले कर चूर्ण करके उस काढेके जलमें मिलाय देवे। फिर उसको अग्निपर चढायके ओंटावे जब कलछीसैं लिपटने लगे तव इसको उतारके किसीपात्रमें भरके धर देवे, उसको जलसैं अथवा वकरीके दूधसैं, अथवा मंडसै देय तो घोरऔर अनेक वर्णके सर्व अतिसार, शूल, रक्तप्रदर, अर्श और प्रवाहिका इनको नाश करे ॥

राळयोग

चिरोत्थितमतीसारंरालोहन्यात्सितायुतः ॥

अर्थ—रालके चूर्णको मिश्रीसें मिलायके फंकी लेवे तो बहुतादिनके अतिसार रोगको नाश करे ॥

नाभौक्षेपणीय

कृत्वालवालंसुदृढंपिष्टैरामलकैर्भिषक् ॥ आर्द्रकस्वरसेनाशु
पूरयेन्नाभिमंडलं ॥ नदीवेगोपमंघोरंप्रवृद्धंदुर्जरंनृणां ॥ वृद्धा
तिसारमजयंनाशयत्येषयोगराट् ॥

अर्थ—रोगीके नाभिके चारो तरफ आमके चूर्णसैं थामलासा वनायके उसमें अदरखका रस भर देवे और रोगीको उसी तरहसैं ४ घडी पर्यंत लेटारहनेदे तो नदीके वेग समान घोर वढा हुआ दुर्जय अतिसारको यह योगराज नाश करे है ॥

पाठादियोग

पाठापिष्टाचगोदध्नातथामध्यत्वगाम्रजा ॥

अतिसारंव्यथादाहयुक्तंहंत्युदरेधृता ॥

अर्थ—पाढकी जडको अथवा आमके भीतरकी छालको दहींसें पीसके पेटपर रखनेसें दाहयुक्त अतिसारकी पीडाको नाश करे ॥

जातीफलादियोग

जातीफलंनागरसर्जकेनौखर्जूफलंभिन्नमिदंचनित्यं ॥ योज्यंद्विनिष्कंचकरीषजातादरण्यजाद्भस्मसमंचसर्वैः ॥ निष्कार्धमात्रंभिषजाप्रयोज्यंद्विवारमेतच्छुभतंदुलोदकैः ॥ जीर्णातिसारेरुधिरामयुक्तेहितः सशूलेबहुवेगयुक्ते ॥

अर्थ—जायफल, सोंठ, राल, केनावृक्षकी छाल, और छुहारा ये प्रत्येक छः छःमासे लेवे सबका चूर्ण करे सब चूर्णके बराबर आरने उपलेकी राख लेवे सबको एकत्र कर १॥ डेढ मासे चाँवलोंके धोवनके साथ दिनमें दोवार देवे तो जीर्णातिसार, रक्तातिसार, आमातिसार, और शूल इन रोगोंपर यह चूर्ण हितकारी है ॥

रक्तातिसारनिदान

पित्तकृंतियदात्यर्थद्रव्याण्यश्नातिपैत्तिके ॥
तदोपजायतेभीक्ष्णंरक्तातीसारउल्बणः ॥

अर्थ—पित्तातिसार होनेसें अथवा होनेवाला हो. उस समय यदि पित्तकारी पदार्थ बहुत और निरंतर भोजन करे तो बडाभारी घोर रक्तातिसार उत्पन्नहोवे उसके लाल ओर काले रंग आदिसें वातादि दोष जानने कोई आचार्य इसप्रकार कहते है की रक्तजभी अतिसार है परंतु यदि सातवा मानोंगे तो षट्संख्यामें विरोध आताहै इसवास्ते पैत्तिकका एक अवस्थाभेद है ऐसा मान लिया है ॥

यष्ट्यादिकाढा

यष्टीमधुसितालोध्रंमधुकंनलिमुत्पलं ॥
अजाक्षीरेणकथितंरक्तातीसारशांतये ॥

अर्थ—मुलहटी, मिश्री, लोध, महुआ, और नीलकमल, इनका बकरीके दूधमें काढा करके देवे तो रक्तातिसार शांति होवे ॥

कुटजादिकाढा

कुटजातिविषामुस्तावालकंलोध्रचंदनं ॥ धातुकीदाडिमंपा-

ठाक्काथंक्षौद्रयुतंपिबेत्॥ दाहेरक्तेचशूलेचआमरोगेचदुस्तरे ॥
कुटजाष्टमिदंख्यातंसर्वातीसारनाशनं ॥

अर्थ—कूडाकी छाल, अतीस, नागरमोथा, नेत्रवाला, पठानीलोध, रक्तचंदन, धायके फूल, और पाठ, इनके काढेमें सहत मिलायके पीवे तो दाह, रक्तशूल, आम, और सर्वातिसार इनको नष्ट करे इसको कुटजाष्टक कहते है॥

वत्सकादिकाढा

सवत्सकः सातिविषः सबिल्वः सोदीच्यमुस्तश्च कृतः कषायः ॥
सामेसशूलेचसशोणितेचचिरप्रवृत्तेपिहितोतिसारे ॥

अर्थ—कूडाकी छाल, अतीस बेलगिरी, नेत्रवाला, और नागरमोथा इनका काढा आमसंबंधी शूल, रक्तातिसार और बहुतदिनका अतिसार इनपर हितकारी है।

तंदुलजलयोग

लघुचेतकिजीरकेसमेमृदुभृष्टेसुचूर्णितेपीते ॥
सहतंदुलवारिणामतोतिसृतिघ्नइतिप्रसिद्धयोगः ॥

अर्थ—जंगीहरड, और जीरे दोनो समान भाग लेवे दोनोको कुछ २ भून लेवे फिर चूर्णकर चावलके जलसैं पीवे तो अतिसारका नाश करे यह सिद्धयोग अर्थात् सिद्धपुरुषोंका कहा हुआ है॥

दाडिमादिकाढा

अयिकंदुकतिंदुकस्तनिप्रमदारूपमदापहारिणि ॥
रुधिरातिसृतौकषायकः समधुर्दाडिमवत्सकत्वचः ॥

अर्थ—हेकंदुकतिंदुकस्तनि हे प्रमदारूपमदापहारिणि ! अनारकी छाल, और कूडाकी छाल इनके काढेमें सहत मिलायकैं देवे तो रक्तातिसारका नाश होवे॥

चंदनादियोग

चंदनंविमलतंदुलांबुनासंयुतंमधुयुतंसितायुतं ॥
तृड्विखंडनमसृग्विखंडनंखंडनंप्रचुरदाहमोहयोः ॥

अर्थ—चावलोंके धोवनमें चंदनको मिलायके उसमें सहत और मिश्री मिलायके देवे तो तृषा, रक्तातिसार, दाह, और मोह इनको नाश करे॥

ह्रीबेरादिकाढा

ह्रीबेरातिविषामुस्ताबिल्वधान्यकवत्सकं ॥समंगाधातकी-

लोध्रंविश्वंदीपनपाचनं ॥ हंत्यरोचकपिच्छामविबंधंचातिवे-
दनं ॥ सशोणितमतीसारंसज्वरंवाथविज्वरं ॥

अर्थ—नेत्रवाला, अतीस, नागरमोथा, वेलगिरी, धनिया, कूडाकी छाल, मजीठ, धायकेफूल, लोंग, और सोंठ, इनका काढा देवे तो यह दीपन और पाचन, है, तथा अरुचि, आम, बद्धकोष्ठ, शूल, रक्तातिसार, सज्वर, अथवा गतज्वर, अतिसार इनको नाश करे ॥

बिल्वादियोग

बिल्वंछागपयःसिद्धंसितामोचरसान्वितं ॥
कलिंगचूर्णसंयुक्तंरक्तातीसारनाशनं ॥

अर्थ—वेलगिरीको भेडके दूधमें ओंटावे, फिर इसमें मिश्री और मोचरस तथा इन्द्रजोके चूर्णको मिलायके पीवे तो रक्तातिसार नाश होवे ॥

कलिंगयवषट्क

सहरीतकीप्रतिविषारुचकंसहिंगुसकलिंगयुतं ॥
इतितत्कलिंगयवषट्कमिदंरुधिरातिसारगदशूलहरं ॥

अर्थ—हरड, अतीस ,संचरनिमक, हींग, कुडाकी छाल, और इन्द्रजो इनका काढा अथवा चूर्ण रक्तातिसार, शूल, इनका नाश करे इसको कलिंगयवषट्क कहते है ॥

कुटजक्षीर

निःक्वाथ्यमूलममलंगिरिमल्लिकायाः सम्पक्वपलंद्वितयमंबुचतुः-
शरावे ॥ तत्पादशेषसलिलंखलुशोषणीयंक्षीरेपलद्वयमिते-
कुशलैरजायाः॥प्रक्षिप्यमानकानष्टौमधुनस्तत्रशीतले॥रक्ता
तिसारीतत्पीत्वानैरुजत्वमवाप्नुयात् ॥

अर्थ—कूडाकी जडकी छाल ८ तोलेको लेकर १०० सौं तोले जलमें ओटायकर काढा करे चतुर्थांश रहनेपर उतार लेवे, और छानले फिर दूसरे पात्रमें भर चूल्हेपर चढावे और इसमें ८ आठ तोले वकरीका दूध डालके ओंटावे जब खूब ओंट जावे तव उतारके शीतल कर लेवे फिर इसमें आठमासे सहत मिलायके पीवे तो रक्तातिसारी इसको पीकर शीघ्र निरोगी होवे ॥

रसांजनादिचूर्ण

रसांजनंसातिविषंकुटजस्यफलत्वचं॥धातकीशृंगवेरंचपिबेत्तं-
दुलवारिणा ॥ क्षौद्रेणयुक्तंनुदतिरक्तातीसारमुल्बणं ॥

अर्थ—रसोत, अतीस, कूडाकी छाल, धायके फूल, और सोंठ इनके चूर्ण-को सहत मिले चावलोंको धोवनके साथ मिलायके पीवे तो रक्तातिसार दूरहोवे

कुटजावलेह

कुटजस्यपलंग्राह्यमष्टभागजलेभृतं ॥ तथैवाद्भिःपचेद्भूयोदा-
डिमोदकसंयुतं ॥ कुटजक्वाथतुल्योत्रदाडिमस्यरसोमतः॥
यावच्चरसिकाभासंमृतंतमुपकल्पयेत् ॥तस्यार्धंकर्षतक्रेणपि-
बेद्रक्तातिसारवान् ॥ अवश्यंमरणीयोपिनमृत्युर्यातिगोचरं॥

अर्थ—कूडाकि छाल १पल लेकर ८ पल जलमें अष्टावशेष काढा करे, फिर जितना कूडाका काढा होवे उतनाही अनारका रस लेवेदोनोका मिलायके फिर ओटावे जब गाढा हो जावे तब उतार लेवे, शीतल होनेपरइसमेंसैं छःमासे छाछके साथ रक्तातिसारीको देवे तो अवश्य मरनेवाला रोगीबी बचजावे ॥

सल्लक्यादिस्वरस

सल्लकीवदरीजंबूप्रियाल्वाम्राजुनत्वचः ॥
पीताःक्षीरेणमध्वाढ्याःपृथक्शोणितनाशनाः ॥

अर्थ--हरफारेवडी, वेर, जामुन, चिरोजी, आम, और कोह इनके वृक्षोंमेंसैं किसीएक वृक्षकी छालको दूधमें पीसके और सहत मिलायके पीवे तो रक्ताति सार नाशक होवैं ॥

जंब्वादिआंगरस

जंब्वाम्रामलकीनांचपल्लवोत्थोरसोजयेत् ॥
मध्वाज्यक्षीरसंयुक्तोरक्तातीसारमुल्बणम् ॥

अर्थ—जामुन, आम, और आमले इनमेंसैं किसीएकके पतोंका रस सहत घी और दूधके साथ पीवेतो घोर रक्तातिसार दूर होवे ॥

गुडबिल्वयोग

गुडेनखादयेद्बिल्वंरक्तातीसारनाशनं॥

आमशूलविबंधघ्नंकुक्षिरोगविनाशनं॥

अर्थ—वेलगिरीको गुडके साथ मिलायके खाय तो रक्तातिसार, आमकाश ल, विबंध, और कूखके रोग इन सबको दूर करे ॥

शतावरीकल्क

पीत्वाशतावरीकल्कंपयसाक्षीरभुग्जयेत् ॥
रक्तातिसारंपीत्वावातथासिद्धंघृतंनरः॥

अर्थ—शतावरीके कल्कको दूधके साथ पीकर ऊपर दूधकाहीं पथ्य करे अथवा सतावर करके सिद्ध घृतकोही पीवेतो अतिसार दूर होवे ॥

तिलादिकल्क

कल्कस्तिलानांकृष्णानांशर्कराढ्याश्वभागिकः॥
आजेनपयसापीतः सद्योरक्तंनियच्छति॥

अर्थ—काले तिलोंके कल्कमें एकभाग मिश्री मिलाय बकरीके दूधसैं पीवे तो तत्काल रुधिरका गिरना बंदहोवे ॥

नवनीतावलेह

गोदुग्धंनवनीतंतुमधुनासितयासह ॥
लीढंरक्तातिसारेषुग्राहिकंपरमंमतं ॥

अर्थ—गौका दूध, और गौका मक्खन इनको सहत और मिश्रीके साथ मिलायकेपीवे तो रक्तातिसारको दूर करे ॥

शाल्मलिपुष्पयोग

शाल्मलेरार्द्रपुष्पाणिपुटपाककृतानिच ॥ संकुटयोलुखलेत्त स्यगृण्हीयात्पयसिश्रिते ॥ गृहीत्वाचपलंतस्यत्रिफलंघृततै लयोः ॥ युक्तंमधुककल्केनमाक्षिकत्रिफलेनच ॥ युक्तस्तुवपु- षोदद्याद्धस्तोप्रत्यागतेरसे ॥ भोजयेत्पयसावापिपित्ताती- सारपीडितं ॥

अर्थ—सेमरके गीले फूल लेकर पुटपाकविधि पचायके फिर उनको खरलकर कूट गरम दूधमें १ पल रस मिलायके पीवे तथा उसमें घृत और तेल १२ तोले तथा मूलहटीका कल्क१२तोले, सहत वारह तोले, येसबै मिलायके देवे जब यह रसवस्तीमें आन पहुचे तब दूधभात भोजन करावे ॥

गुदपाक

विरेकैर्बहुभिर्यस्यगुदंपित्तेनदह्यते
पच्यतेवातयोः कार्यंसेकप्रक्षालनादिकं ॥

अर्थ—जिसकी गुदा बहुत दस्तोंके होनेसैं पित्त करके जलने लगे अर्थात् चिनाचिनाने लगे अथवा पकजावे उसको सेचन अथवा शीतल जलसैं धुलानी चाहिये ॥

पटोलादिकाढागुदक्षालनार्थ

पटोलयष्टिमधुकक्काथेनाशिशिरेणहि ॥
गुदप्रक्षालनंकार्यंतेनैवगुदसेचनं॥

अर्थ—पटोलपत्र, मुलहटी, और महुआकी छाल इनका शीतल काढा कर के उससैं गुदापर तरडा देवे अथवा इस काढेसैं धोवे तो गुदका पाक और पीडा होना शांति होवे ॥

गुदक्षालनार्थजल

दाहेपाकेहितंछागीदुग्धंसक्षौद्रशर्करं ॥
गुदस्यक्षालनेसेकेयुक्तंपानेचभोजने ॥

अर्थ—गुदामें दाह अथवा गुदापाक होनेसैं वकरिके दूधमें सहत और चीनी मिलायके गुदाका प्रक्षालनकरे अर्थात् धोवे सेचन पान (पीवे) और भोजन करे तो गुदाका विकार दूर हो ॥

चांगेरीघृत

गुदनिःसरणेशस्तंचांगेरीघृतमुत्तमं॥ अतिप्रवृत्त्यामहतीभवे द्यदिगुदव्यथा॥ स्विन्नमूषकमांसेनतथासंस्वेदयेद्गुदं ॥

अर्थ—गुदभ्रंश अर्थात् कांछ निकल आई होवे तो इसपर चांगेरी घृतसेवन उत्तम है यदि कांछ अधिक वाहर निकलनेसैं अत्यंत पीडा होती होवे तो मूसे(चूहे)का मांसको अग्निपर सेककर गुदाको सेके तो गुदाकी पीढा शांति हो

मूषकमांसस्वेद

स्वेदोथमूषिकामांसैस्तद्वत्साम्लक्षणंतथा॥ शंबूकमांसंसुस्वि-

न्नंसतैललवणान्वितं ॥ ईषद्भस्तेनचाभ्यक्तंस्वेदयेत्तेनयत्नतः ॥
गुदभ्रंशमशेषेणनाशयेत्क्षिप्रमेवच ॥

अर्थ—गुदभ्रंश अर्थात् कांछ निकलनेसैं मूसेके मांसका बफारा देवे, अथवा उसमांसको गुदाके ऊपर बांधे, उसीप्रकार छोटे शंखका मांसकैं सिजायके उसमें तेल और निमक मिलाय गुदापर तेल लगायके उसमांससैं शेक करावे तो निःशेष पीडा तत्काल दूर होवे ॥

गोधूमचूर्णस्वेद

अथगोधूमचूर्णस्यस्विन्नितस्यतुवारिणा ॥
साज्यस्यगोलकंकृत्वामृदुसंस्वेदयेद्गुदं ॥

अर्थ—गैंहूंके भीतरके रवाको जलमें भिगोय देवे, जब भीगजावे तब घी मिलाय गोला करके उसको भूनलेवे, फिर उस गोलेको निकालके उस्सैं सुहाता २ सेक करे तो गुदाकी पडा शांति होवे

गुदांतप्रवेशन

गुदभ्रंशेगुदंस्नेहैरभ्यज्यांतः प्रवेशयेत॥ प्रविष्टंस्वेदयेन्मंदंमूषकस्यामिषेणहि ॥ गुदभ्रंशाभिधोव्याधिः प्रणश्यातिनसंशयः ॥

अर्थ—कांछ निकलआई होवे तो उसपर तेल चुपडके धीरे २ भीतरी घुसेडे फिर मूंसेके मांससैं धीरे २ सेंकेतो गुदभ्रंश (कांछका निकलना) दूर होवे इसमें संशय नही है

चांगेरीघृत

चांगेरीकोलदध्यम्लक्षारनागरसंयुतं ॥
घृतंविपक्वंपातव्यंप्रणश्यातिनसंशयः ॥

अर्थ—चूका, वेर, दही, नींबू, जवाखार, और सोंठ, इनके काढेमें घी डालके घृतपाककी विधिसैं पचावे जब सिद्ध हो जावे तव उतारके धर रक्खे फिर इसमें सैं सेवन करे तो गुदभ्रंश रोगका नाश होय इसमें संदेह नहि है ॥

कमलपत्रभक्षण

कोमलंपाद्मिनीपत्रंयः खादेच्छर्करान्वितं ॥
एतान्निश्चित्यनिर्दिष्टंनतस्यगुदनिर्गमः ॥

अर्थ—कोमल कमलके पत्तोंको खांडमे मिलायके सेवन करे तो उसकी गुदा कदाचित् वाहर नही निकले यह निश्चय करके कहा है ॥

ज्वरातिसारचिकित्साक्रम

ज्वरातिसारयोरुक्तंभेषजंयत्पृथक्पृथक् ॥ नतन्मीलितयोः कार्यमन्योन्यंवर्धयेद्यतः ॥ अतस्तौप्रतिकुर्वीतविशेषोक्तचिकित्सितैः ॥

अर्थ—ज्वर और अतिसार इनपर जो पृथक २ औषधीकही है उनको मिलायके ज्वरातिसारपर उपचार कदाचित् नकरे यदि अज्ञानसैं मिलायके दे देवे तो वो औषध ज्वर और अतिसार दोनोको परस्पर वढाती है इसीसैं ज्वरातिसारपर विशेष क्रिया जो कहीहै वही करनी चाहिये ॥

उत्पलषष्टिक

लंघनमुभयोरुक्तंमीलितकार्योविशेषतस्तदनु ॥
उत्पलषष्टिकसिद्धंलाजकमंडादिकंपेयं ॥

अर्थ—ज्वर और अतिसार इन दोनोपर लंघनकहाहै सो लंघन ज्वरातिसारपर कराना चाहिये फिर कमलकंद (भसीडा) और सांठीचावल इनकी खीलोंका मंड करके देवे ॥

दाडिमावलेह

दाडिमादिरसप्रस्थंचतुः प्रस्थेजलेपचेत् ॥ चतुर्भागकषायेस्मिन्शर्कराप्रस्थमेवच ॥ नागरंपिप्पलीमूलंकणाधान्यकदीप्यकं ॥ जातीपत्रमरीभंजीजीरकंकरकंतुगा ॥ विजयानिंबपत्रंचसमंगावत्सशाल्मली॥अरलातिविषापाठालवंगंचपृथक्पलं ॥ घृतस्यमधुनःप्रस्थंसर्वलेहंविपाचयेत् ॥ दाडिंबलेहकंनामज्वरातीसारनाशनं ॥

अर्थ—अनारकारस १ सेर, जल ४सेर, दोनोको चूल्हेपर चढायके चतुर्थांश शेष काढा करके उसमें १ सेर खाँड, और सोंठ, पीपलामूल, पीपर, धनिया, अजमायन, जावित्री, कसोंदी, जीरा, वंशलोचन, भाँग, नीमकेपत्ते, लजालूकाकंद, कूडाकीछाल, सेमर, ठैंटू, अतीस, पाढकीजड, और लौंग ये प्रत्येक चार २

तोले लेवे घी, सहत, केशर,इन सबको एकत्र करके अवलेह सिद्धकरे इसको कुटजावलेह कहते है यह ज्वरातिसारको नाश करे ॥

कणादिकाढा

कणाकरेणुजलदक्काथोमधुसितायुतः॥
पीतोज्वरातिसारस्यतृष्णावम्योश्चनाशनः॥

अर्थ--पीपल, गजपीपल, और नागरमोथा, इनके काढेमें सहत और मिश्री मिलाय पीवे तो अतिसार, प्यास, और वाँति, इनको नाश करे ॥

पाठादिकाढा

पाठेंद्रयवभूनिंबमुस्तपर्पटकःशृतः ॥
जयत्याममतीसारंज्वरंचसमहौषधं ॥

अर्थ—पाढकीजड, इन्द्रजो, चिरायता, नागरमोथा, पित्तपापडा, और सोंठ, इनका काढा आमातिसार और ज्वर इनका नाश करे ॥

नागरादिकाढा

नागरातिविषामुस्ताभूनिंबामृतवत्सकैः॥
सर्वज्वरहरःक्काथःसर्वातीसारनाशनः॥

अर्थ--सोंठ, अतीस, नागरमोथा, चिरायता, गिलोय, और कूडाकी छाल, इनका काढा संपूर्ण ज्वर और संपूर्ण अतिसार इनका नाश करे ॥

कलिंगादिकाढा

कलिंगातिविषाशुंठीकिरातांबुयवासकं ॥
ज्वरातिसारसंतापंनाशयेदविकल्पतः ॥

अर्थ--कूडाकीछाल, अतीस, सोंठ, चिरायता, नेत्रवाला, और जवासा इनका काढा ज्वरातिसार संबधी संताप इनको निःसंशय नाश करे है ॥

गुडूच्यादिकाढा

गुडूच्यातिविषाधान्यशुंठीबिल्वाब्दवालकैः ॥पाठाकुटजभूनिंबचंदनोशीरपर्पटैः॥ पिबेत्कषायंसक्षौद्रंज्वरातिसारशांतये ॥ हृल्लासारोचकच्छर्दिपिपासादाहनाशनं ॥

अर्थ--गिलोय, अतीस, धनिया, सोंठ, वेलगिरी, नागरमोथा, नेत्रवाला

पाढ, कूडाकीछाल, चिरायता, लालचंदन, खस, और पित्तपापडा, इनका काढा, सहत डालके पीवे तो ज्वरातिसार, हृल्लास, अरुचि, वमन तृषा, और दाह इनको नाश करे ॥

वत्सकादिदोकाढे

वत्सकस्थफलंदारुरोहिणीगजपिप्पली ॥ श्वदंष्ट्रापिप्पलीधान्यबिल्वपाठायवानिका ॥ द्वावप्येताविमौयोगौश्लोकार्धेनावभाषितौ ॥ ज्वरातिसारशमनौविशेषाद्दाहनाशनौ ॥

अर्थ––इन्द्रजो, देवदार, कुटकी, गजपीपल, इनका अथवा गोखरु, पीपल धनिया, वेलगिरी, पाढ, और अजमायन इनका काढा ज्वरातिसार, और विशेष करके दाह इनको शमन करे ॥

उशीरादिकाढा

उशीरंवालकंमुस्तंधान्यकंबिल्वमेवच ॥ समंगाधातकीलोध्रंविश्वंदीपनपाचनं ॥हंत्यरोचकपिच्छामंविबंधमतिवेदनं॥सशोणितमतीसारंसज्वरंवाथविज्वरं ॥

अर्थ––नेत्रवाला, खस, नागरमोथा, धनिया, वेलगिरी, मजीठ, धायकेफूल-लोध, और सोंठ, इनका काढा दीपन और पाचन है तथा अरुचि आमाति, सार, मलबंध, शूल, रक्तातिसार, और ज्वर, इनका नाश करे यह काढा ज्वर रहित अतिसारहीपर चलता है ॥

बिल्वादिकाढा

बिल्वबालकभूनिंबगुडूचीधान्यनागरैः ॥
कुटजद्वामृताक्वाथोज्वरातीसारशूलनुत् ॥

अर्थ––बेलगिरी, नेत्रवाला, चिरायता, गिलोय, धनिया, सोंठ, कूडाकी छाल, नागरमोथा, और, आमले, इनका, काढा, ज्वरातिसार, और शूल, इनका नाशक है ॥

पंचमूलादिकाढा

पंचांघ्रिवृक्यब्दबलेंद्रबीजत्वक्सेव्यतिक्तामृतविश्वबिल्वैः ॥
ज्वरातिसारान्सवमीन्सकासान्सश्वासशूलान्शमयेत्कषायः ॥

अर्थ—पंचमूल, कटेरी, नागरमोथा, खिरेंटी, कूडाकीछाल, इन्द्रजो, नेत्रवाला, कुटकी, गिलोय, सोंठ, वेलगिरी, इनका काढा ज्वरातिसार, वमन खांसी श्वास और शूल इनको शमन करे है।!

अरल्वादिकाढा

अरल्वातिविषामुस्ताशुंठीबिल्वंसदाडिमं ॥
सर्वज्वरहरः क्वाथोसर्वातीसारनाशनः ॥

अर्थ—टैटू, अतीस, नागरमोथा, सोंठ, वेलगिरी, और अनारदाना इनका काढा संपूर्ण ज्वर और संपूर्ण अतिसारोंका नाश करे ॥

उत्पलादिचूर्ण

उत्पलंदाडिमत्वचंसंचूर्ण्यपद्मकेसरं॥
पिबेत्तंदुलतोयेनज्वरातीसारनाशनं ॥

अर्थ—कुलिंजन, अनारकीछाल, और कमलकी केशर इनको पीस चावलोके धोवनके साथ पीवे तो ज्वरातिसार नाश होय ॥

व्योषादिचूर्ण

व्योषवत्सकबीजानिनिंबभूनिंबमार्कवं॥चित्रकंरोहिणीपाठादार्वीत्यतिविषासमं ॥ श्लक्ष्णचूर्णीकृतानेतान्तत्तुल्यांवत्सकत्वचं॥सर्वमेकत्रसंयोज्यपिबेत्तंदुलवारिणा॥सक्षौद्रंवालिहेदेवंपाचनंग्राहिभेषजं ॥तृष्णारुचिप्रशमनंज्वरातीसारनाशनं ॥ कामलाग्रहणीरोगान्गुल्मंप्लीहानमेवच॥ श्वयथुंपांडुरोगंचप्रमेहंचविनाशयेत् ॥

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल, इन्द्रजो, नीमकीछाल, चिरायता, भांगरा, चीतेकीछाल, कुटकी, पाढकी जड, दारुहलदी, अतीस, इनकी समान भाग मात्रालेकर चूर्ण करे, तथा सब चूर्णकी बराबर कूडेकी छालका चूर्ण लेवे सबको एकत्र कर चावलके धोवनसैं अथवा सहतसैं देवे यह पाचन तथा ग्राहकहै तथा तृषा, अरुचि, ज्वरातिसार, कामला, संग्रहणी, गोला, प्लीहा, सूजन, पांडुरोग, और प्रमेह, इनका नाश करे ॥

इसबगोलयोग

इसबगोलइतिप्रथितंजनेहरतितज्ज्वरभाजमतिसृतिं ॥

अनुभवाल्लिखितंनतुशास्त्रतोभवतुतद्भिषजामुपयोगिकं॥

अर्थ—जिसको मनुष्य इसव गोल कहते है वह ज्वरातिसार नाशक है यह में अपने अनुभवसें लिखता हुं यह शास्त्रसें नही लिखा परंतु यह वैद्योंके उपकारार्थ होओ

लाजमंड

उत्पलषष्टिकसिद्धंलाजकमंडादिकंपेयं ॥

अर्थ—सांठी चावलकी खीलोंके मंडमें कमलकंदका चूर्ण मिलाय देवे तो ज्वरातिसारको शांति करे ॥

पृश्निपर्ण्यादिपेया

पृश्निपर्णीबलाबिल्वानागरोत्पलधान्यकैः॥
ज्वरातिसारीपेयांवापिवेत्साम्लांशृतांनरः ॥

अर्थ—पिठवन,खिरेटी,वेलगिरी, सोंठ, कमल और धनिया इनकी खट्टीपकाईहुई पेया ज्वरातिसारवाले रोगीको पीनी चाहिये ॥

धातक्यादिपेया

धातकीक्वाथसंसिद्धाविश्वभेषजकल्पिता ॥
दाडिमाम्लयुतापेयाज्वरातिसारशूलिनां ॥

अर्थ—धायकेफूलोंको काढा सोंठकाकल्क और अनारदाने का रस इनकर के तयार करी हुई पेया ज्वरातिसारमें शूलपर हितकारी है

विजयायोग

एरंडबिल्वयवगोक्षुरकारनालैः स्विन्नांलिहंतिविजयामधुनान्वितांये ॥ तेषांप्रणाशमुपयांत्युदरामयास्तुसर्वेसशूलविषमज्वरकासहिक्काः॥

अर्थ—अंडकीजड,वेलगिरी, इन्द्रजो, गोखरु,इनकें पेयामें भांग अथवा मोचरस सहत मिलायके सेवन करनेसें संपूर्ण उदररोग संपूर्ण शूल, विषमज्वर खांसी, और हिचकी ये संपूर्ण उपद्रव नाश होवे ॥

पंचामृतपर्पटीरस

सूतायसीचताम्राभ्रसमंद्विगुणगंधकं॥लोहपात्रेबादराग्नौमृदुपा

कोभवेद्रसः॥लेपयेत्कदलीपत्रेकर्तव्यारसपर्पटी॥पंचामृतापर्पटीचरसोवन्हिप्रदीपनः ॥ ज्वरातिसारकासघ्नीकामलापांडुमेहजित् ॥ अनुपानंमलेबद्धेज्वरेजीर्णेचमूत्रकं ॥ पलंपथ्यंतुतैलाम्लवर्ज्यमन्यच्चयुक्तितः ॥

आर्थ—पारा,लोहकीभस्म,तामेकीभस्म,और अभ्रककी भस्म, ये समान भाग लेवे, गंधक दो भाग ले, सबकी बारीक कजली करके लोहेके कडछलेमें रख के बेरकी लकडीकी धीमी २ अग्निसैं तपायके एक जीव करे, फिर पृथ्वीमें केलेका पत्र विछायके ऊपरसै इस कजलीके रसको अथवा पंचामृत पर्पटीको ताय के ढालदेवे, यह पर्पटी अग्निदीपकहै और ज्वरातिसार,खांसी, कामला, पांडुरोग,और प्रमेह इनका नाश करे । यह मलावष्टंभ होनेसैं अथवा जीर्णज्वर होनेसैं बकरीका चार तोले मूत्रसैं देवे इसपर पथ्यमें तेल और खटाई वर्जित है बाकीके युक्तिसैं जानने चाहियें ॥

दरदादिपुटपाक

दरदश्चैकभागोहिसार्धभागोहिफेनकः॥अर्धभागोभवेट्टंकःपिष्टिकांचप्रलेपयेत् ॥ जातीफलंचविन्यस्यसर्वंचपुटपाचितं ॥ मुद्गमात्रंपिबेन्नित्यंपयसाचगवांहितं ॥ ज्वरातिसारेमांद्येचनिद्रानाशेरुचौतथा ॥ योजयेद्भिषजानित्यंबलपुष्टिकरंपरं ॥

अर्थ—हींगलू ४ तोले अफीम ६ तोले, सुहागा २ तोले, और जायफल २ तोले, इन सबको एकत्र कर पुटपाक करे,फिर मूंगके समान गोली बनावे १ गोली गौके दूधसै देवे तो ज्वरातिसार, मंदअग्नि, निद्रानाश, अरुचि, इनको नष्ट करे तथा यह औषध बल और पुष्टता करती है ॥

दुग्धयोग

विबद्धवातोविट्शूलपरीतःसप्रवाहिकः ॥ सरक्तपित्तश्चपयःपिबेत्तृष्णासमन्वितः ॥ यथामृतंतथाक्षीरमतिसारेषुपूजितम् ॥ सरक्तोत्थेषुतत्तोऽयमपांभागेषुसंस्कृतम् ॥

अर्थ—आधाजल और आधा दूध मिलायके दूध मात्र रहने पर्यंत औटावे इसको पेटकी बादी औरशूल, प्रवाहिका, रक्तपित, और प्यास, इनपर देना चा

हिये जैसे अमृत होता है ऐसा यह दूध है इसको संपूर्ण रक्तविकारोंपर देना चाहिये ॥

कट्फलादिचूर्ण

कट्फलंमधुकंलोध्रोस्त्वग्दाडिमफलस्यच
सतंडुलजलंचूर्णंवातपित्तातिसारनुत् ॥

अर्थ—कायफर, मुलहटी, लोध, और अनारकी छाल इनका चूर्ण चावलोके धोवनके जलसैं पीवे तो वातपित्तातिसार नष्ट हो ॥

पित्तकफातिसारनिदान

द्विदोषलक्षणैर्विद्यादतिसारंद्विदोषजं ॥
तेषांचिकित्साप्रोक्तैवविशिष्टाचनिगद्यते ॥

अर्थ—दो दोषके लक्षणोंसैं द्विदोषज अतिसाररोग जानना, उस द्विदोषजोंकी चिकित्सा कह आए है परंतु इसजगे कुछ विशेष चिकित्साको कहतेहे ॥

मुस्तादिकाढा

मुस्तासातिविषामूर्वावचाचकुटजःसमाः ॥
एषांकषायःसक्षौद्रपित्तश्लेष्मातिसारहृत् ॥

अर्थ—नागरमोथा, अतीस, मूर्वा, वच, और कूडाकि छाल इनका काढा कर सहत मिलायके सेवन करे तो पित्तकफातिसारका नाश करे ॥

समंगादिकाढा

समंगाधातुकीबिल्वमम्रास्थ्यंभोजकेसरं ॥ बिल्वंमोचरसंलोध्रंकुटजस्यफलत्वचौ ॥ पिबेतंदुलतोयेनकषायंकल्कमेवच ॥ श्लेष्मापित्तातिसारघ्नंरक्तंवाथानियच्छति ॥

अर्थ—खिरेटीकी जड, धायके फूल, वेलगिरी, आमकी गुठली, कमलकेशर, वेलकी छाल,मोचरस, लोध, कूडाकी छाल, और इन्द्रजो इनका काडा अथवा चूर्ण चावलके धुले हुए पानीसैं पीवे तो कफपित्तातिसार और रक्तातिसार इनका नाश करे ॥

वातकफातिसारनिदान

रसैःस्वादुकटुप्रायैरुभौवातकफौनृणाम् ॥ कुरुतस्तावतीसा

रंरौद्रौवन्हिंहिनिहत्यच ॥ द्रवंसफेनंपुरिषंतत्वतोह्यामगंधिकं ॥ सशब्दंवेदनावच्चतत्रसंपरिपच्यते ॥ नित्यंगुडगुडायंतंतंद्रामूर्छाभ्रमक्लमैः ॥ प्रसक्तंसक्थिकक्ष्यूरुजानुपृष्ठास्थिशूलिनः ॥

अर्थ—मिष्ट, और तीखे रसोंके अत्यंत सेवनसैं वातकफ दोनो कुपित होते है और अग्निको शांत करके अतिसाररोगको प्रगट करे है वह पतला, झागदार कचीदुर्गंधयुक्त, शब्दयुत और शूल, आम, गुडगुडाहटशब्दयुक्त होवे तथा तन्द्रा, मूर्च्छा, भ्रम, ग्लानि, और कमर, जंघा, पीडरी, पीठकी हड्डी इनमें पीडा इन लक्षणोंकरके युक्त हो उसको वातकफातिसार जानना ॥

वातकफातिसारिअन्न

धान्यपंचकसंसिद्धोधान्यविश्वकृतोथवा ॥
आहारोभिषजायोज्योवातश्लेष्मातिसारिणे ॥

अर्थ—वातकफातिसारी रोगीको धान्यपंचकके काढेमें अथवा धनिया और सोंठ, इनके काढेमें सिद्ध करेहुए भोजनके पदार्थ वैद्य खानेको देवे ॥

चित्रकादिकाढा

चित्रकातिविषामुस्तंबलाबिल्वंसनागरं॥
वत्सकत्वक्फलंपथ्यावातश्लेष्मातिसारनुत् ॥

अर्थ—चीतेकी छाल, अतीस, नागरमोथा, खरेटी, वेलगिरी, सोंठ, कूडाकी छाल, इंद्रजो, और हरड इनका काढा वातकफातिसारको दूर करे ॥

उपचारक्रम

वातातिसारेयच्चोक्तंपाचनंग्राहिभेषजं ॥
तदत्रापिचयुंजीतसपित्तकफमारुते ॥

अर्थ—जो वातातिसारमें औषधी कही है अथवा पाचन और ग्राही औषधी कही हैं वो इस पित्तयुक्त वातकफातिसारमें भी देनी चाहिये ॥

बिल्वादिकाढा

बिल्वचूतास्थिनिर्यूहः पीतःसक्षौद्रशर्करः ॥
निहन्याच्छर्द्यतीसारंवैश्वानरइवाहुतिं ॥

अर्थ—वेलगिरी, आमकी गुठलीका रस, मिश्री और सहत इन सबको मि-

लायके सेवन करे तो वांति और अतिसार इनका नाश करे जैसें अग्नि सबका नाश करे है ॥

प्रियंग्वादिकाढा

प्रियंग्वंजनमुस्ताख्यंपाययेत्तुयथाबलं ॥
तृष्णातिसारच्छर्दिघ्नंसक्षौद्रंतंदुलांबुना ॥

अर्थ—फूलप्रियंगु, सुरमा और नागरमोथा, इनका चूर्ण अथवा कल्कको चावलोंके धोवनके साथ सहत मिलायके बलाबल देखकर देवे तो तृषा, अतिसार, और वाँति इनका नाश करे ॥

आम्रादिकाढा

आम्रास्थिमध्यंमालूरफलक्वाथःसमाक्षिकः ॥
शर्करासहितोहन्याच्छर्द्यतीसारमुल्बणं ॥

अर्थ—आमके भीतरकी गुठली, और वेलगिरी, इनका काढा सहत और मिश्री मिलायके देवे तो वमन, अतिसार, तृषा, दाह, ज्वर, और भ्रम, इनका नाश होय ॥

मुद्गकषाय

कषायोभृष्टमुद्गानांसलाजमधुशर्करः ॥
निहन्याच्छर्द्यतीसारंतृष्णांदाहंज्वरंभ्रमं ॥

अर्थ—भुनीहुई मूंगका काढा, खील, सहत और मिश्री मिलायके देवे तो छर्दि, अतिसार, तृषा, दाह, ज्वर, और भ्रम, इनका नाश करे ॥

पटोलादिकाढा

पटोलयवधान्याकक्वाथःपीतःसुशीतलः ॥
शर्करामधुसंयुक्तश्छर्द्यतीसारनाशनः ॥

अर्थ—पटोलपत्र, इन्द्रजो, और धनिया, इनका काढा शीतल करके सहत आर मिश्री डालके पीवे तो छर्द्यतिसारनाशक होय ॥

जंब्वादिकाढा

जंब्वाम्रपल्लवोशीरंवटशृंगावरोहकं ॥ रसःक्वाथोथवाचूर्णंक्षौद्रेणसहयोजितं ॥ छर्दिज्वरमतीसारंमूर्छांतृष्णांचदुर्जयां ॥
नियच्छत्याचिराद्धंतिस्तुतिंवानेकहेतुकां ॥

अर्थ—जामुन और आम इन दोनोंके कोमल पत्ते, नेत्रवाला, वडकोकली, और सिंघाडे इनका काढा अथवा चूर्ण अथवा रस सहतसैं सेवन करे तो ओकरियोंका आना, ज्वर, अतिसार, मूर्च्छा और प्यास ये यदि दुर्जयभी होवे तथापि इनका नाशकहै और अनेक प्रकारका अतिसारकाभी नाशकहै ॥

पुरीषातिसारऊपर

दीप्ताग्निभिःपुरीषंयत्सार्यतेफेनिलंशकृत
सपिबेत्फाणितंशुंठीदधितैलंपयोघृतं ॥

अर्थ—दीप्ताग्नि पुरुषको झागयुक्त और मलमिला दस्त होवैं वह राब, सोंठ, दही, तेल, दूध, घी, ये पदार्थ भोजन करे ॥

पुरीषक्षयऊपर

बलाविश्वशृतंक्षीरंगुडतैलानुयोजितं ॥
दीप्ताग्निंपाययेत्प्रातःसुखदंवर्चसःक्षये ॥

अर्थ—दीप्ताग्निवाले पुरुषकैं मलक्षय होनेसैं उसको खिरेटी,सोंठ, इनके योगसैं तपाहुआ दूध, तेल, और गुड, डालके प्रातःकाल पिलावे, तो सुखकारक होय ।

दुसराप्रकार

रंभाखंडंरुचिकरंसघृतंदधिमिश्रितं ॥
खादेत्सेवेच्चमृद्वन्नंताद्धितंशकृतःक्षये ॥

अर्थ—केलाकी गहरका टूक घी और दही, इनमें मिलायके भक्षण करे तथा नम्र अन्न भोजन करे तो पुरीषक्षयपर अत्यंत हितकारी होय ॥

शोफातिसारपरदेवदार्व्यादिकाढा

सदेवदारुःसविषःसपाठःसजंतुशत्रुःसघनःसतीक्ष्णः ॥
सवत्सकःक्काथउदाहृतोसौशोफातिसारांबुधिकुंभजन्मा ॥

अर्थ—देवदारु, अतीस, पाठ, वायविडंग, नागरमोथा, कालीमिरच, कूडाकी छाल, इनका काढा शोफातिसार रूप समुद्रको अगस्त्य ऋषिके समान है ॥

विडंगादिकाढा

विडंगातिविषामुस्तादारुपाठाकलिंगकं ॥
मरीचेनसमायुक्तंशोथातीसारनाशनं॥

अर्थ—वायविडंग, अतीस, नागरमोथा, देवदारु, पाढ, कूडाकी छाल, और कालीमिरच, इनका काढा शोथातिसार नाशक है ॥

किरातादिकाढा

किराताब्दामृताविश्वचंदनोशरिवत्सकैः ॥
शोथातीसारशमनंविशेषाज्ज्वरनाशनं ॥

अर्थ—चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, सोंठ, चंदन, खस, और कूडाकी छाल, इनका काढा शोथातिसार और विशेषकरके ज्वरका नाश करे है ॥

पाठादिकाढा

पाठाविषावत्सकमेघदारुविडंगकामोचरसैःकषायं ॥
कृतंप्रभातेप्रपिबेद्धृदार्तिशोफातिसारार्णववाडवाग्निः॥

अर्थ—पाढ, अतीस, कूडाकी छाल, नागरमोथा, दारुहलदी, वायविडंग, और मोचरस इनका काढा प्रातःकाल पीवे तो शोफातिसारसमुद्रके सोखनेको वाडवाग्निरूप है ॥

शोथघ्न्यादिकाढा

शोथघ्नींद्रयवापाठाविडंगातिविषाघनाः ॥
क्वथित्वासोषणाःपीताःशोथातीसारनाशनाः ॥

अर्थ—पुनर्नवा, इन्द्रजो, पाढ, वायविडंग, अतीस, और नागरमोथा, इनका काढा सोंठ, मिरच और पीपलका चूर्ण मिलाकर पीवे तो शोथातिसार नाश होवे ॥

भस्त्रातिसारनिदान

कोष्ठाग्निःशीतपवनेनपच्यतेनवारितृषार्तःसमयेनपिबतिजंतुः ॥ शैथिल्यस्निग्धसदृशंद्रवमामयुक्तंभस्त्रातिसारकगदः खलुएषदिष्टः ॥

अर्थ—शीतवायुके योग करके कोष्ठाग्नि आहारको उत्तम रीतिसैं पचावे नहीं तथा तृषा लगे उस समय पानी पीवे नही उसके सिथिल, चिकना, पतला, और आमयुक्त, असा भस्त्रा शौचका होता है उसको भस्त्रातिसार कहा है ॥

शाल्मलिचूर्ण

शाल्मलीशुष्कनिर्यासयवानीधातकीशिफा ॥ तिलासर्जर

सः सर्पिर्लोध्रंसमविचित्रितं ॥ तद्भक्षणमतीसारंनिहंतिभस्रापहं॥

अर्थ—मोचरस, अजमायन धायके फूल, तिल, राल और लोध इनका चूर्ण घृतके साथ सेवन करे तो यह भस्रातिसारको नाश करे ॥

हिंग्वादिजलयोग

हिंगुशुंठीविडंगंचसौवर्चलसमान्वितं ॥
कर्षयुग्ममितंतोयंभक्षितंभस्रापहं ॥

अर्थ—हींग, सोंठ, वायविडंग, और संचलनिमक, इनका चूर्ण दोतोले जलसै देय तो भस्रातिसारका नाश होय ॥

रोहिण्यादिपाचन

रोहिण्यतिविषापाठावचाकुष्ठसमुद्भवः ॥
क्काथः पीतोनिहंत्येवसर्वातीसारजांरुजं ॥

अर्थ—कुटकी, अतीस, पाढ, वच, और कूठ, इनका काढा पीवे तो यह संपूर्ण अतिसारको नाश करे ॥

ऱ्हीबेरादिकाढा

ऱ्हीबेरधातकीलोध्रपाठालज्जालुवत्सकैः ॥ धान्यकातिविषा मुस्तगुडूचीबिल्वनागरैः ॥ कृतःकषायःशमयेदतीसारंचिरोत्थितं ॥ अरोचकामशूलास्रज्वरघ्नःपाचनःस्मृतः ॥

अर्थ—नेत्रवाला, धायके फूल, लोध, पाढ, लजालू, कूडेकी छाल, धनिया, अतीस, नागरमोथा, गिलोय, कोमलवेलफल, और सोंठ इन बारह औषधोंका काढा पीनेसैं बहुत दिनका अतिसार, अरुचि, आमशूल, और ज्वर, इनको दूर करे [उसीप्रकार वेलकी छाल तथा बडे आमकी छाल इनका काढा करके उसमें सहत और मिश्री डालके पीवे तो सर्व अतिसार नष्ट हों ऐसें ग्रंथांतरमें लिखा है] ॥

धातक्यादिकाढाबालकोंकेसर्वातिसारऊपर

धातकीबिल्वलोध्राणिवालकंगजपिप्पली ॥एभिःकृतंशृतंशीतंशिशुभ्यःक्षौद्रसंयुतं ॥ प्रदद्यादवलेहंवासर्वातीसारशांतये ॥

अर्थ—धायकेफूल, वेलगिरी, लोध, नेत्रवाला और गजपीपल, इन पाँच

औषधोंका काढा करे फिर शीतल होनेपर उसमें सहत डालके पिवावे अथवा चटनी बनायके देवे तो बालकोंके सर्व अतिसार दूर होवे ॥

आनंदभैरवरस

दरदंवत्सनाभंचमरिचंटंकणंकणा ॥ चूर्णयेत्समभागेनरसोह्यानंदभैरवः ॥ गुंजैकंवाद्विगुंजंवाबलंज्ञात्वाप्रयोजयेत् ॥ मधुनालेहयेच्चानुकुटजस्यफलंत्वचं ॥ चूर्णितंकर्षमात्रंतुत्रिदोषोत्थातिसारनुत् ॥ दध्यन्नंदापयेत्पथ्यंगवाज्यंतक्रमेवच ॥ पिपासायांजलंशीतंविजयाचहितानिशि ॥

अर्थ— शुद्धकरा सिंगरफ, शुद्धकरा वच्छनागविष, कालीमिरच, सुहागा, और पीपल, ये पाँच औषध समान भाग लेकर सबको एकत्र खरल कर बारीक चूर्ण करे इसको (आनंद भैरवरस) कहते है यह आनंदभैरव इन्द्रजो और कूडाकी छाल दोनो १ तोले लेकर चूर्णकरके इसके साथ रोगीका बलाबल विचारके १ रत्तीके अनुमान देवे, अथवा दो रत्ती प्रमाण सहतसै देवे तो त्रिदोषसैं हुआ अतिसारको नष्ट करे) इसपर पथ्यमें गौका दही, भात, अथवा घी भात अथवा छाछ भात देवे, और जब २ प्यासलगे तब २ शीतल जल पीनेको देय, तथा रात्रिमें थोडी भाँग शुद्धकर घोट छानके पीवे तो यह भांग अतिसारवालेको हितकारक होती है ॥

आनंदरस

जातीफलंसैंधवहिंगुलंचवराटशुंठीविषहेमबीजम् ॥ सपिप्पलीकंवटिकांचकुर्याद्गुंजाप्रमाणांजठरामयघ्नीं ॥ निहंतिवातंकफशूलमात्रमामातिसारंग्रहणीविकारम् ॥ निहंतिशुष्कंसितयासमेतंरसोयमानंदइतिप्रदिष्टः ॥

अर्थ—जायफल, सैंधानिमक, हींगलू, कौडीकी भस्म, सोंठ, वच्छनागविष, धतूरेकेबीज, पीपल, ये सब एकत्र करके खरल करे फिर १ रत्तीकी गोली बनावे १ गोली मिश्रीके साथ देवे तो पेटका रोग, वादी, कफ, शूल, आमातिसार, संग्रहणी, और योनिरोग, इनका नाश करे इसको आनंदरस अैसे कहते है॥

दाडिमाष्टक

कर्षोन्मितातुगोक्षीरीचातुर्जातंत्रिकर्षिकम् ॥ यवानीधान्य-

काजाजीग्रंथीव्योषपलांशकम् ॥ पलानिदाडिमान्यष्टौसि-
ताया श्चैकतःकृतं ॥ गुणैःकपित्थाष्टकवचूर्णंतद्दाडिमाष्टकं ॥

अर्थ—वंशलोचन १ तोले, दालचीनी, पत्रज, इलाइचीके दाने, नागकेशर, सबको मिलायके ३ तोले लेवे, अजमायन, धनिया, जीरा, पीपरामूल, सोंठ, कालीमिरच, पीपर सब मिलाकर चार तोले लेवे. अनारदाना बत्तीसतोले, मिश्री ३२ बत्तीस तोले, सबको एकत्र करके चूर्ण करे इसको(दाडिमाष्टक) चूर्ण कहते है यह गुणोंमें कपित्थाष्टकके समान है ॥

लघुगंगाधरचूर्ण

मुस्तमिंद्रयवंबिल्वंलोध्रंमोचरसंतथा ॥ धातकींचूर्णयेत्तक्रगु-
डाभ्यांपाययेत्सुधीः ॥ सर्वातिसारशमनंनिरुणद्धिप्रवाहि-
कां ॥ लघुगंगाधरंनामचूर्णंग्राहकरंपरं ॥

अर्थ—नागरमोथा, इन्द्रजो, वेलगिरी, लोध, मोचरस, और धायके फूल, इन छः औषधोंका चूर्णकरके छाछमें गुडमिलायके उसमें इस चूर्णको मिलायके पीवे तो संपूर्ण अतिसारोको दूरकरे तथा प्रवाहिकाको बंद करे इस चूर्णको (लघुगंगाधर)कहते है तथा यह चूर्ण मलकोअवष्टंभ करता उत्तम है अेसा जानना ।

वृद्धगंगाधरचूर्ण

मुस्तारलुकशुंठीभिर्धातकीलोध्रवालकैः ॥ बिल्वमोचरसा-
भ्यांचपाठेंद्रयववत्सकैः ॥ आम्रबीजंप्रतिविषालज्जालूरि-
तिचूर्णितं ॥ क्षौद्रतंडुलपानीयैःपीतैर्यातिप्रवाहिका ॥ सर्वाति-
सारग्रहणीप्रशमंयातिवेगतः ॥ वृद्धगंगाधरंचूर्णंसरिद्वेगविबंधकं ॥

अर्थ—नागरमोथा, टेंटू, सोंठ, धायकेफूल, लोध, नेत्रवाला, वेलगिरी, मोचरस, पाढ, इन्द्रजो, कूडाकी छाल, आमकीगुठली, अतीस, और लजालू, इन चौदह औषधोंका चूर्ण चाँवलके धोवनमें सहतमिलायके इस पानीके साथ पीवे तो प्रवाहिका, और सर्वप्रकारके अतिसार, तथा संग्रहणी तत्काल दूर होवे इस (चूर्णकोवृद्धगंगाधर) कहते है यह चूर्ण नदीसमान वेगवालें अतिसारकोभी स्तंभन करे है ॥

अजमोदादिचूर्ण

अजमोदामोचरसंसशृंगवेरंसधातकीकुसुमं ॥

गोदधिमंथितयुक्तंगंगामपिवाहिनींरुंध्यात् ॥

अर्थ—अजमोद, मोचरस, अदरख, और धायके फूल, इन चार औषधोंका चूर्णको बिना पानीके मथीहुई गौकी छाछमें मिलायके पीवे तो गंगाके समान वेगवालाभी अतिसारको स्तंभन करताहै अर्थात् अत्यंत प्रबल अतिसारभी थम जावे।

बृहद्दाडिमाष्टक

दाडिमस्यफलान्यष्टौशर्करायाःपलाष्टकं ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलंयवानीमरिचंतथा ॥ धान्यकंजीरकंशुंठीप्रत्येकंपलसंमितं ॥ कर्षमात्रातु गोक्षीरीत्वक्पत्रैलाश्वकेसरं ॥ प्रत्येकं कोलमात्राःस्युस्तच्चूर्णंदाडिमाष्टकं ॥ अतिसारंक्षयंगुल्मंग्रहणींचगलग्रहं ॥ मंदाग्निंपीनसंकासंचूर्णमेतद्व्यपोहति ॥

अर्थ—अनारदाना ८ पल, मिश्री ८ पल, पीपल, पीपरामूल, अजमोद-कालीमिरच, जीरा, और सोंठ, ये सात औषध एक २ पल लेवे तथा वंशलोचन १ तोले, दालचिनी, पत्रज, इलायची और नागकेशर ये चार औषध एक एक कोल लेवे सब औषधोंको कूट पीस चूर्ण करे, इसको (बडा दाडिमाष्टक चूर्ण) कहते है यह सेवन करनेसैं अतिसार, क्षय, गोला, संग्रहणी, कंठरोग, मंदाग्नि, पीनस, और खाँसी इनको नष्ट करे ॥

धातक्यादिचूर्ण

श्रीधातकीमोचरसाब्दलोध्रकलिंगविश्वौषधचूर्णमेतत् ॥ पेयंगुणाढ्यंगुडतक्रयुक्तंगाढंत्वतीसारकनाशकंच ॥

अर्थ—वेलगिरी, धायकेफूल, मोचरस, नागरमोथा, लोध, कूडाकी छाल, और सोंठ, इनका चूर्ण गुड और छाछ इनसैं पीवे तो अतिसार नाश होवे ॥

भल्लातादिचूर्ण

भल्लातानांद्विखंडानांद्वेपलेभर्जितेक्षिपेत् ॥ शुंठ्याःपलंतुचेतक्याःपलार्धंसुमनापलं ॥ कर्षमेथिवल्लजीराःसर्षपाःकोलमात्रतः ॥ ततोयवान्यर्धपलंपिप्पलीरामठोषणं ॥ बिडंसैंधवजीरंचकिर्माणिसंज्ञिकंतथा ॥ कर्षप्रमाणंविज्ञेयंवैद्यविद्याविशारदैः ॥ सर्वमेकत्रसंचूर्ण्ययथासात्म्यंतुभक्षयेत्॥दध्नासहतथा खादेत्सर्वातीसारनाशनं ॥

अर्थ—भिलाये दोटूक करके भुनेहुए ८ तोळे, सोंठ ४ तोले, हरड २ तोले, मेथी, कालीमिरच, और जीरा ये एक तोले, सरसों २ मासे, अजमायन २ तोले, और पीपल हींग, चीता, विडनोन, सैंधा, जीरा, तथा किरमानी अजमायन येप्रत्येक एक एक तोले लेय, इस प्रमाण सब औषध एकत्रकर चूर्ण कर लेवे; इसमेंसें प्रकृतिके अनुसार दहीके साथ देवे तो यह सर्व अतिसारोका नाश करे।

लघुलाईचूर्ण

सूतंगंधंत्रिकटुकंदीप्यकंजीरकद्वयं ॥ सौवर्चलंसैंधवंचरामठं विडमेवच ॥ शक्राह्वस्यचचूर्णंतुचूर्णतुल्यंप्रदापयेत् ॥ संग्रहं शूलमानाहंहन्यान्नानातिसारकं ॥

अर्थ—शुद्धपारा, शुद्धगंधक, सोंठ, मिरच, पीपल, अजमायन, जीरा, कालाजीरा, संचलनिमक, सैंधा, हींग, और विडनोन, ये सब समान भाग लेवे और सब चूर्णके बराबर कूडाकी छालका चूर्णले,सबको एकत्रकरे इसको (लघुलाई) चूर्ण कहते है यह संग्रहणी, शूल, अफरा, और नानाप्रकारके अतिसार इनका नाश करे ॥

यवान्यादिचूर्ण

यवानीपिप्पलीमूलचतुर्जातकनागरैः ॥ मरीच्याग्निजलाजाजीधान्यसौवर्चलैःसमैः ॥ वृक्षाम्लधातुकीकृष्णाबिल्वदाडिमदीप्यकैः ॥ त्रिगुणैःषड्गुणासीतैःकपित्थाष्टगुणीकृतैः ॥ चूर्णोंतिसारग्रहणीक्षयगुल्मानलामयान् ॥ कासश्वासारुचीहिक्कांकपित्थाष्टमिदंजयेत् ॥

अर्थ—अजमायन, पीपरामूल, दालचीनी, पत्रज, इलायचीके दाने और नागकेशर, सोंठ, मिरच, चीतेकी छाल, नेत्रवाला, जीरा, धनिया, और संचल निमक, ये सब समान भाग लेवे और ततडीक, धायकेफूल, पीपर, वेलगिरी, अनारदाना, और पीलाजीरा ए तिगने लेवे, खाँड छः गुनी, और कैथका गूदा अठगुना, इनका चूर्ण एकत्र करे इसको(कपित्थाष्टक)चूर्ण कहते है यह अतिसार, संग्रहणी, क्षय, गोला, गलेकारोग, खाँसी, श्वास, अरुचि, और हिचकी इनका नाश करे ॥

वत्सकादिघृत

वत्सकस्यचबीजानिदार्व्याश्चैवत्वगुत्तमा ॥ पिप्पलीशृंगवेरं-

चलाक्षाकटुकरोहिणी॥षड्भिरेतैर्घृतंसिद्धंपेयंमंडविमिश्रितं॥

अर्थ—इन्द्रजो, दारुहलदी, पीपल, सोंठ, लाख, और कुटकी, इन छः औषधोंसें घीको सिद्धकर मंडके साथ पीवे तो अतिसार शमन होवे ॥

बिल्वतैल

तुलांसंकुट्यबिल्वस्यपचेत्पादावशेषितं ॥ सक्षीरंसाधयेत्तैलं श्लक्ष्णपिष्टैरिमैःसमैः ॥ बिल्वंसधातुकीकुष्ठंशुंठीरास्नापुनर्नवा ॥ देवदारुवचामुस्तालोध्रमोचरसान्वितं ॥ एतन्मृद्वग्निनापक्वंग्रहण्यर्शोविकारनुत् ॥ बिल्वतैलमितिख्यातमत्रिपुत्रेणभाषितं ॥ ग्रहण्यर्शोविकारेयेस्नेहाःसमुपदर्शिताः ॥ प्रयोज्यास्तेतिसारेपित्रयाणांतुल्यहेतुता ॥

अर्थ—वेलगिरी ४०० चारसौं तोलेको कूटकर उसका चतुर्थांश काढाकरे उसमें दूध, और तेल ये मिलायके फिर वेलगिरी, धायके फूल, कूठ, सोंठ, रास्ना, पुनर्नवा, देवदारु, वच, नागरमोथा, लोध, और सेमरका गोंद, इनका कल्क मिलावे, फिर अग्निपर धरके ओटावे जब तेल मात्र शेष रहे तब उतारले यह (बिल्वतेल,)आत्रिपुत्रने कहा है यह संग्रहणी, ववासीर, और अतिसार इन परयोजनाकरे तथा संग्रहणी, और अर्शरोगपर कहे हुए तैलादि उपचार वो तीन्योपरही सदृश हेतु है अतएव उनको संपूर्ण अतिसारोंपर योजना करने चाहिये ।

शंखोदररस

सूतभस्मबलीलोहंविषंत्रिकटुकंसमं ॥ पिष्ट्वानिंबुजतोयेनशंखेसर्वंचतुर्गुणे ॥ क्षिप्त्वामृदंशुकैर्लिप्त्वाभांडेगजपुटेपचेत् ॥ शीतेचप्राग्विषंक्षिप्त्वावल्लमात्रंप्रयोजयेत् ॥ जातीफलंचविजयामधुनातिसृतौददेत् ॥ ग्रहण्यांचित्रकार्द्रांबुविजयाविश्वभेषजं ॥ पृथक्देयंसमधुनामरिचैश्चघृतान्वितं ॥ वन्हिमांद्यक्षयेतद्वद्उदरार्त्यांनिलामये ॥ पथ्यादध्नाचतक्रेणक्षीरशाकैश्च संयुतं ॥

अर्थ—पारेकीभस्म, गंधक, सिंगियाविष, सोंठ, मिरच, और पीपल, ये समान भाग ले नींबूके रसमें खरलकर सवसें चौगुने शंखमें भर उसपर सात कप-

डमिट्टी करके किसीपात्रमें रखके गजपुटमें रखके फूंक देवे जब स्वांगशीतल होजावे तब उसमें एक भाग सिंगिया विष मिलायके सबका चूर्ण कर किसी शीशी आदिपात्रमें भरके धर देवे फिर २ रत्ती यह रसको जायफल, भाँग, और सहत इनसें अतिसार, और संग्रहणी इनपर देवे तथा चीतेकी छाल, अदरख, नेत्रवाला, भाँग, और सोंठ, मिरच, इनका चूर्ण, घी, और सहत इनके साथ मंदाग्नि, क्षय, उदर, और वायु इनपर देवे, तथा पथ्यमें दही, छाछ, दूध और शाग, ये पदार्थ देवे ॥

मूलिकाबंध

रक्तसूत्रैःकटौबध्वासर्पाक्षीवाट्यमूलकैः ॥
स्नुह्यावासहदेव्यावामूलंस्यादतिसारजित् ॥

अर्थ—लालसूत करके गिलोयको, खिरेटी, थूहर, अथवा सहदेई इनकी जडको बाँधे तो अतिसारका नाश करे [इस जगे सर्पाक्षी करके गिलोयकाही ग्रहण है।

दाडिमीवटी

शुंठीजातीफलंचाहिफेनकंद्विगुणंभवेत् ॥ अपक्वंदाडिमीबीजंसर्वतुल्यंप्रदापयेत्॥अपक्वदाडिमीबीजकोशेक्षिप्त्वामृदालिपेत् ॥ पुटपाकविधानेनपक्त्वाकोशसमन्वितं ॥ पिष्ट्वाकल्कंविधायाथगुटिकाःसंप्रकल्पयेत् ॥ बादरास्थिप्रमाणेनतक्रेण सहदापयेत्॥ पक्वातिसारशमनीदाडिमीवटिकामता ॥

अर्थ—सोंठ, और जायफल, इनकी दुगनी अफीम और इनके समान हरे अनारके दाने कच्चे अनारमें डालके कपडमिट्टी करके पुटपाककी विधिसें पाक करके पीसके कल्क कर बेरके समान गोली बनावे १ गोली छाछके साथ देय तो अतिसारका नाश करे ॥

बब्बूल्यादिस्वरस

स्थूलबब्बूलिकापत्ररसःपानाद्व्यपोहति ॥
सर्वातिसाराञ्श्योनाककुटजत्वग्रसोथवा ॥

अर्थ—कांटेरहित बडे बबूलके पत्तोंका स्वरस पीनेसें संपूर्ण अतिसार दूर होते है अथवा टेंटूकी छालका स्वरस अथवा कूडाकी छालका स्वरस इनमेंसें कोईसा स्वरस पीनेसें संपूर्ण अतिसार दूर होवे ॥

न्यग्रोधादिपुटपाक

न्यग्रोधादेश्वकल्केनपूरयेद्गौरतित्तिरैः ॥ निरंत्रमुदरंसम्यक्पु
टपाकेनतत्पचेत् ॥ तत्कल्कःस्वरसक्षौद्रयुक्तःसर्वातिसारनुत्

अर्थ—बड, गूलर, पीपल, पाखर, और जलवेत इनकी छालका चूर्ण करके पानीमें पीस कल्ककरे फिर इस कल्कको आँत रहित सपेद तीतरके पेटमें भरके पूर्वोक्त पुटपाककी विधीसैं अग्नि देकर पुटपाक करे, जब सिद्ध होजावे तब उस गोलेको बाहर निकाल मट्टी पत्ते आदिको दूर कर उस तीतरके पेटमेंसैं कल्क निकाल लेवे, उस रसमें सहत मिलायके पीवे तो संपूर्ण अतिसारके रोग दूर होते है ॥

अहिफेनयोग

अहिफेनंसुसंभृष्टंखर्परेमृदुवह्निना ॥
पक्वातिसारशमनंभेषजंनास्त्यतःपरं ॥

अर्थ—खिपडेमें अफीम डालके मंदी २ अग्निसैं भूने फिर बलाबल विचारकै देवे इसके समान पक्वातिसार शमन कर्त्ता दूसरी औषध नहीं है ॥

मुक्ताभस्मयोग

मुक्ताभस्मेतिनामेदंदोषंदृष्ट्वाप्रदापयेत् ॥ गुंजार्धमेकगुंजंवाक
पूरेणसुवासितं ॥ जातीफलादिसंयुक्तंरहस्यंपरमंमतं ॥

अर्थ—मोतीकी भस्म, दोषोंका बलाबल विचारकै एकरत्ती अथवा आध रत्ती अथवा डेढ रत्ती कपूर और जायफल आदिके साथ देवे यह अतिसार रोगपर परम रहस्य प्रयोग कहा है

जातीफलादिवटी

जातीफलंचखर्जूरमहिफेनंतथैवच ॥ समभागानिसर्वाणिना
गवल्लीरसेनच ॥ वल्लमात्रावटीकार्यादेयातक्रानुपानतः ॥ अ
तिसारंजयेद्घोरंवैश्वानरइवाहुतिं ॥

अर्थ—जायफल, छुहारा और अफीम, ये पदार्थ समान भाग लेकर नागरवेलपानके रसमे २ रत्ती गोली बनायके छाछके साथ देवे तो घोररूप अतिसारका नाश करे जैसैं अग्नि आहूतिका नाश करे है ॥

मरीचादिवटी

मरीचंखर्परंनागफेनंतंडुलतज्जलैः ॥ मर्द्यंतंडुलतोयेनगुटीस र्वातिसारजित् ॥ जीरकंविजयाबिल्वंनागफेनंसमांशकं ॥ द धिनीरेणसाकार्यागुटीसर्वातिसाराजित् ॥

अर्थ—मिरच, खपरिया, और अफीम इन तीनो औषधोंको चावलके धोवनसैं घोटके गोली बनावे इसके सेवन करनेसैं सर्वप्रकारके अतिसारोंका नाश करे। अथवा जीरा भाँग बेलगिरी, और अफीम, ये पदार्थ समान ले दहीके जलमें घोटके गोली बनावे यह गोली सर्वप्रकारके अतिसारोंका नाश करे है ॥

अंकोलकल्क

अंकोलमूलकल्कश्चसक्षौद्रस्तंडुलांबुना ॥
अतिसारहरःप्रोक्तस्तथाविषहरःस्मृतः ॥

अर्थ—अंकोल वृक्षकी जडको पीसके कल्क करे उसमें सहत मिलाय चाँवलोंके धोवनके साथ पीवे तो अतिसार दूर होय, तथा वच्छनागादिक विष तथा सर्पादिकका विष दूर होय. ॥

कपित्थकल्क

मध्यंलीढ्वाकपित्थस्यसव्योषक्षौद्रशर्करम् ॥
कट्फलंमधुयुक्तंवामुच्यतेजठरामयात् ॥

अर्थ—कैथका गूदा, सोंठ, मिरच, पीपल, और सहत, मिश्री, ये एकत्र करके भक्षण करे अथवा कायफलके चूर्णको सहतके साथ चाटे तो पेटका रोग नष्ट होय।

आर्द्रकुटजावलेह

कुटजत्वक्तुलामार्द्रांद्रोणनीरेविपाचयेत् ॥ पादशेषंशृतंनीत्वा चूर्णान्येतानिदापयेत् ॥ लज्जालुधातकीबिल्वंपाठामोचरस स्तथा ॥ मुस्तंप्रतिविषाचैवप्रत्येकंस्यात्पलंपलं ॥ततस्तुवि पचेद्भूतोयावद्दर्वीप्रलेपनं॥ जलेनछागदुग्धेनपीतोमंडेनवाज येत् ॥ सर्वातिसारान्घोरांस्तुनानावर्णान्सवेदनान् ॥ असृ ग्दरंसमस्तंचसर्वाशांसिप्रवाहिकां ॥

अर्थ—कूडाकी गीलीछाल १ तुला ले जव कुट करके उसमें १ द्रोण पानी

डालके काढा करे जब चतुर्थांश शेष रहे तब उतारके कपडेमें छान लेवे. फिर-लजालू, धायके फूल, वेलगिरी, पाढ, मोचरस, नागरमोथा, और अतीस ये सात औषध एक २ पल प्रमाण लेके चूर्ण कर उस काढेमें डाल देवे फिर इस काढेको कडाहीमें चढायके फिर औंटावे जब गाढा होकर कलछीसे लिपटने लगे तब उतार ले. इस अवलेहको पानीके साथ अथवा बकरीके दूधके साथ अथवा मंडके साथ पीवे तो पीडा युक्त तथा नीलपीतादिक अनेक प्रकारके वर्णवाला अतिसार. तथा घोररूप संपूर्ण अतिसार दूर होवे। तथा स्त्रियोंके संपूर्ण प्रकारके रक्तप्रदर तथा संपूर्ण ववासीर और प्रवाहिका जो अतिसारका भेद है ये सब रोग दूर होवे ॥

दाडिंबपुटपाक

पुटपाकेनविपचेत्सपक्वंदाडिमीफलं ॥
तद्रसोमधुसंयुक्तःसर्वातीसारनाशनः॥

अर्थ—पके हुए अनारको पूर्वोक्त पुटपाककी विधिसें पुटपाक करके फिर उसके पत्ते और मिट्टी आदिको दूर करके अनारको निकाल लेवे फिर उसको दाबकर उसका रस निकाल लेवे इसको पीवे तो संपूर्ण अतिसार दूर होवे ॥

जातीफलादिपुटपाक

जातीफलंसर्पफेनंटंकंगंधकजीरके ॥ एतानिसमभागानिवालदाडिमबीजकैः ॥ पेषयेत्तेनकल्केनपूरयेद्दाडिमीफलम् ॥ अंगारेतच्चगोधूमचूर्णेनालेपितंपचेत् ॥ अतिसारस्तंभनंस्यात्परंदीपनपाचनम् ॥

अर्थ—जायफल, अफीम, सुहागा, गंधक, और जीरा, ये समान भाग लेवे और इनकी बराबर ताजाअनारदाना लेवे सबको एकत्र खरल करे फिर इस घुटी हुई पिट्टीको अनारके भीतर भरके वाहर चून लगायके अंगारोंपर फूने तो यह अतिसारको स्तंभन करे- दीपन और पाचन होवे रोगीका बलाबल विचारके २ रत्ती या चार रत्ती देवे ॥

मोचरसादिपुटपाक

समोचसारंसहनागफेनंसतीनसस्यंपुटपाकयोगात्॥
निहंतिमालूरफलंनराणांसर्वातिसारंह्यनुभूतमेतत्॥

अर्थ—मोचरस, अफीम, जायफल, और बेलगिरी, इन सबको एकत्र कूट पीस विजोरेमें (नींबूका भेद है) भरके पुटपाककी विधिसैं पुटपाक करे यह सर्वातिसार नाशक अजमाया हुआ प्रयोग है ॥

लघ्वीमाईचूर्णम्

लघ्वीमाईमोचरसमाम्रबीजाश्मभेदकम् ॥ धातकीपुष्पकंचैवतथातिविषकंस्मृतम् ॥ १ ॥ सर्वाणिशाणमानानिपृथक्ग्राह्याणिपंडितैः ॥ अहिफेनंद्विशाणंस्याद्गैरकंचद्विशाणकम् ॥२॥ सूक्ष्मचूर्णंविधायाथमाषमानंतुदापयेत् ॥ तंदुलानांजलेनैवह्यामशूलातिसारके ॥ ३ ॥ रक्तजेपिविशेषेणदेयंसर्वातिसारके ॥ प्रेमाख्यपंडितेनैवह्यनुभूतंपुनःपुनः ॥ ४ ॥

अर्थ—छोटीमाई, मोचरस, आमके भीतरकी गुटली, पाखानभेद, धायकेफूल, अतीस, ये प्रत्येक चार २ मांसे ले, और अफीम ८ मांसे, गेरू ८ मांसे, सबका बारीक चूर्ण करे फिर इसमेंसैं १ मासे चावलोंके धोवनके साथ देवे तो आमकाशूल, और आमातिसार, रक्तातिसार एवं संपूर्ण अतिसारोमें देवे यह प्रेम पंडितका वारंवार अनुभव करा हुआ चूर्ण है ।

दूसरीदाडिमीवटी

विश्वाचशतपुष्पाचयष्टचाह्वंचाहिफेनकम् ॥ खर्जूरस्यफलंबिल्वंतथामोचरसंस्मृतम् ॥ १ ॥ समभागानिसर्वाणिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥ अपक्कदाडिमीबीजंसर्वतुल्यंप्रदापयेत् ॥ २ ॥ अपक्कदाडिमीबीजकोशेक्षिप्त्वाखिलंहितत् ॥ पुटपाकविधानेनपक्काकोशसमन्वितम् ॥ ३ ॥ पिष्ट्वाकल्कंविधायाथगुटिकाः संप्रकल्पयेत् ॥ कर्कंधुवत्प्रमाणेनतक्रेणसहदापयेत् ॥ ॥ ४ ॥ पक्कातीसारशमनीदाडिमीवटिकास्मृता॥

अर्थ—सोंठ, सोंफ, मुलहटी, अफीम, खजूरकेफल, अर्थात् छुहारे, कच्चावेलफल, और मोचरस ये सब बराबरले सबका बारीक चूर्ण करे फिर इसमें सबकी बराबर कच्चे अनारके बीज मिलावे सबको कूट पीस कच्चे अनारके फल खाली करके भर देवे ऊपर उसके कपडमिट्टी देकर पुटपाककी विधिसैं परिपक्क करे जबपुटपाक होजावे तब आगसैं निकालकैं उस अनारकी कपडमिट्टी दूर कर-

के खरलमें डालके उस अनारको पीस कल्ककर बेरके बरावर गोली बनावे एक गोलीको छाछके साथ देवे यह पक्वातिसारके शमनकरनेवाली दाडिमीगुटका कही है ।

शतपुष्पादिचूर्णम्

शतपुष्पाचविश्वाचश्वेताजाजीहरीतकी ॥ खाखसस्यफलंचैवपलार्धंतुपृथक्पृथक् ॥ १ ॥ सूक्ष्मचूर्णंविधायाथघृतभ्रष्टंतु कारयेत् ॥ सर्वार्द्धातुसितादेयापलार्द्धंदधिसंयुतम्॥२॥प्रातः कालेभक्षयेत्तुसर्वातीसारनाशनम् ॥ पथ्यंकुर्यात्विशेषेणशालिभक्तंसतक्रकम् ॥ ३ ॥

अर्थ—सोफ, सोंठ, सपेद्जीरा, हरड, पोस्तकेडोडा, येप्रत्येक दो दो तोले लेवे सबका बारीक चूर्ण करके घीमें भूनलेवे और सब चूर्णसैं आधी सपेद् कच्ची खांड मिलावे इस चूर्णको २ तोले लेके दहीके साथ प्रातःकाल खायतो सर्वप्रकारके अतीसार दूर होवे तथा इसके ऊपर दहीभातका पथ्य देना चाहिये ।

लीलावतीवटी

मस्तंगोतीक्ष्णलोध्रोदककुटजमदाश्चाम्रमज्जामधूकम्॥साभापुष्पंसजातीफलमथकलिकामुद्रितासारजाता ॥ वांसीपित्साथमाजूफलमपिलघुरंवष्टिकाशाणमेषाम् ॥ प्रत्येकंखादिरंत्रिस्त्वथपिचुयुगलंसोमकाबीजमज्जः ॥ १ ॥ एकीकृत्वाप्रमर्द्यंसकलमिदमथोयामसुग्मंनवीनैःनीरैःपोस्तप्रभूतैर्लघुवदरमिता संविधेयावटीसा ॥ सर्वातीसारहंत्रीबलजठरशिखीप्रोद्यदोजःप्रकर्त्रीतक्रश्यामाकलाजाकरकदधिहितंषष्टिकाकोद्रवाश्च २॥

अर्थ—रूमीमस्तंगी, राई, कालीमिरच, लोध, नेत्रवाला, कूडाकीछाल, आमकीगुठली, महुआ, साभपुष्प, जायफल, सेमरकी मुहमुदी कली, वंसलोचन, माजूफल, छोटीमाई, ये प्रत्येक चार २ मांसे लेवे खैरसार तीनतोले कोहफलके बीज इन सबको एकत्र कर पीसले फिर नएपोस्तके डोडानूके जलसैं दो प्रहर खरल करके छोटे बेरके समान गोली बनावे यह संपूर्ण अतिसारोंको नष्ट करे बलवढावे उदरकी जठराग्निको प्रबल करे इसके ऊपर पथ्यमें छाछ सामखिया खील अनार दही सांठी चावल और कोदोये देवे ।

नृसिंहपोटलीरसः

रसश्चगंधपाषाणःप्रत्येकःकर्षमात्रकः॥श्लक्ष्णचूर्णद्वयोःसम्यक्कुर्याद्वैद्येननिश्चितम् ।१।तच्चूर्णपीतवर्णाभाकपर्दाभ्यंतरेकृतम् ॥ शरावपुटकेन्यस्यालिप्त्वासंभृतगोमयैः ॥ सुदुह्याग्नौपचेत्तावद्यावद्गच्छतिभस्मताम्॥समुद्धृत्याश्मनासर्वंचूर्णितंसकपर्दकम् ॥ गव्येनसर्पिषानित्यंभक्षयेद्रक्तिकाद्वयम् ॥ ज्वरातिसारकंसर्वंहन्याच्चूर्णंचदुर्जयम् ॥४॥ अतिसारंसमग्रंचग्रहणींसर्वजांतथा ॥ चिरज्वरंचमंदाग्निंक्षीणज्वरहरंचतत् ॥५ ॥ रस एषनृसिंहस्यमतापोटलिकाहिता ॥ हितासर्वज्वरीणांतुसर्वातीसारिणांशुभा ॥

अर्थ—पारा, गंधक, प्रत्येक एक २ तोले, दोनोका बारीक चूर्ण करे इस चूर्णको पीली कौडियोंके भीतर भरे, फिर उन कोडियोंका सरावसंपुटमें रख कपडमिट्टी करके आरनेउपलोंमें रखके फूंकदेवे, जब भस्म होजावे तब सरावमेंसैं उन कोडियोंको निकाल खरलमें डालके पीस डाले, इस भस्ममेंसैं २ रत्ती ले गौके घीसैं नित्य भक्षण करे तो यह ज्वरातिसार दुर्जयकोभी शीघ्र दूर करे तथा सर्व प्रकारके अतिसार,सर्वदोषोंकी संग्रहणी, प्राचीनज्वर, मंदाग्नि, क्षीणज्वर, इन सर्वरोगोंको यह नृसिंहपोटलीरस दूर करे है। यह सर्वप्रकारके ज्वरोंमें तथा सर्वप्रकारके अतिसारोंमें हितकारी है ।

गंगाधरोरसः

मुस्तामोचरसंलोध्रंकुटजत्वक्तथैवच ॥ बिल्वास्थिधातकीपुष्पमहिफेनेचगंधकम् ॥ १॥ शुद्धंहिपारदंचैवसर्वमेकत्रमर्दयेत् ॥ रसोगंगाधरोनाम्नामाषमात्रंप्रयोजयेत् ॥२॥ वल्लमात्रमिदंखादेद्गुडतक्रसमन्वितम् ॥ सर्वातिसारग्रहणीप्रशमंयातिवेगतः ॥ ३ ॥ पथ्यंतक्रोदनंदेयंसात्म्यंज्ञात्वाभिषग्वरः ॥

अर्थ—नागरमोथा, मोचरस, लोध, कूडाकीछाल, वेलगिरी,धायकेफूल, अफीम, गंधक और शुद्धपारा प्रत्येक समानभाग लेकर खरल करे तो यह गंगाधररस सिद्ध होय इसमेंसैं १ महिनेपर्यंत ३ रत्ती गुड और छाछके साथ खाय

तो सर्वप्रकारके अतिसार दूर होवे। और संग्रहणी दूर हो इसके ऊपर छाछ भात खानेको वैद्य देवे परंतु उस रोगीको सात्म्यभी जानना जरूरहै अर्थात् इस रोगीको क्या २ वस्तु पचती है।

अतिसारमेलवणनिषेध.

सर्वेषुमलभेदेषुलवणंनप्रयोजयेत्
तद्धितैक्ष्ण्यात्सरत्वाच्चदोषक्षोभायकल्पते

अर्थ—संपूर्ण मलभेदोमें अर्थात् दस्तकी बिमारीमें निमक खानेको नही देना चाहिये, क्योकि निमक तीक्ष्णहै और दस्तावरहै इसवास्ते इसके सेवन करनेसे दोष क्षुभित होते है ॥

प्रवा हिकासंप्राप्ति

वायुःप्रवृद्धोनिचितंवलासंनुदत्यधस्तादहिताशनस्य ॥
प्रवाहतोल्पंवहुशोमलाक्तंप्रवाहिकांतांप्रवदंतितज्ज्ञाः ॥

अर्थ—अपथ्य सेवन करनेवाले पुरुषके कुपित हुई जो वात सो संचित हुए कफको मलसंयुक्त करके वारंवार गुदाके मार्गसे बाहर निकाले और मरोडाके साथ थोडा थोडा मल निकाले इसको प्रवाहिका कहते हैं। प्रवाहिका और अतिसार इन दोनोंका एकसा धर्म है इसीसें अतिसाररोगमें प्रवाहिका कही है। परंतु अतिसारमें अनेक प्रकारके द्रवधातु निकले हैं और प्रवाहिकामें केवल कफ निकले है। इतना भेद हैं इसमें (निचितंबलासं) ये जो पद कहा अर्थात् कफसें मिलकर सोये केवल कफका तो उपलक्षण है अर्थात् कफके कहनेसें पित्त और रुधिरभी जानना। भोजने इस रोगका नाम विवसी कहा है, पराशरऋषीने इसको अन्तरग्रंथी कहा है, हारीतऋषीने निश्वारक कहा है, कोई आचार्य निर्वाहिका कहते हैं ॥

प्रवाहिकावातकृतासशूलापित्तात्सदाहासकफाकफाच्च ॥
सशोणिताशोणितसंभवाचताःस्नेहरूक्षप्रभवामतास्तु ॥

अर्थ—वातकी प्रवाहिकामें शूल होताहै, पित्तकी दाहयुक्त, कफकी कफयुक्त और रक्तसें रक्तयुक्त होतीहै, यह चिकने और रूखे पदार्थ भोजन करनेसें होयहै अर्थात् चिकने पदार्थसें कफकी, रूखे पदार्थसें वातकी, तुशब्दकरके तीक्ष्ण और खट्टे पदार्थसे क्रमसें पित्तकी और रुधिरकी होतीहै ऐसें जानना ॥

प्रवाहिकालक्षणादि

तासामतीसारवदादिशेच्चलिंगंक्रमंचामविपक्वतांच ॥

अर्थ—इस प्रवाहिकाके लक्षण क्रम आम और पक्वावस्था ये अतिसार निदानके सदृश जानना ॥

अतिसारनिवृत्तिलक्षण

यस्योच्चारंविनामूत्रंसम्यग्वायुश्चगच्छति ॥
दीप्ताग्नेर्लघुकोष्टस्यस्थितस्तस्योदरामयः ॥

अर्थ—जिस मनुष्यको मूत्र करतेसमय दस्त न होय,और अपानवायु जिसकी शुद्ध निकले, और अग्नि देदीप्यमान होवे, कोठो हलका होवे, उस मनुष्यका अतिसार गया जानिये ॥

बालबिल्वकल्क

कल्कःस्याद्बालबिल्वानांतिलकल्कश्चतत्समः ॥
दध्नःसाराम्लस्नेहाढ्योहन्याद्वैतत्प्रवाहिकाम् ॥

अर्थ—कोमल बेलफलोको कूटकर कल्क तथा कल्कके समान तिलकल्क दहीकी मलाई तथा स्नेहयुक्त खटाई ये सब एकत्रकरके भक्षण करे तो प्रवाहिका का नाश करे ॥

मुद्गयूषादि

मुद्गयूषरसंतक्रंधान्यजीरकसंयुतं ॥ तत्षड्गुणमितिप्रोक्तंसैंधवेनसमन्वितं ॥ अग्निसंदीपनंप्रोक्तंग्रहणीदोषनाशनं ॥ अरोचकंज्वरंचैवश्रेष्ठमेतत्प्रवाहिके ॥

अर्थ—मूंगकायूष, रस, छाछ, धनिया, जीरा, और सैंधानिमक, इनके यूषको षड्गुण यूष कहते है यह अग्नि दीपन करता है, संग्रहणी, अरुचि ज्वर और प्रवाहिका, इनपर उत्तम है ॥

बालबिल्वादियोग

बालबिल्वंगुडंतैलंपीतंवामरिचोद्भवं ॥
त्र्यहात्प्रवाहिकांहन्याच्चिरकालानुबंधिनीम् ॥

अर्थ—कच्चावेलफल, और कालीमिरच, इसका काढा गुड और तेल डालके सेवन करे तो तीनदिनमें बहुत दिनकीभी प्रवाहिकाका नाश करे ॥

बिल्वपेश्यादिकाढा

बिल्वपेशीगुडंलोध्रंतैलंमरिचसंयुतं ॥
लिह्यात्प्रवाहिकाक्रांतःसत्वरंसुखमाप्नुयात् ॥

अर्थ—बेलगिरि, गुड, लोध, तेल, और कालीमिरच, ये पदार्थ समान भाग ले चूर्ण करके चाटे तो प्रवाहिकावाले रोगीको सुख होय ॥

धातक्यादियोग

धातकीबदरीपत्रंकपित्थरसमाक्षिकं ॥
सलोध्रमेकतोदध्नापिबेन्निर्वाहिकार्दितः ॥

अर्थ—धायकेफूल, बेरकीपत्ती, अथवा कैथका रस, सहत, और लोध,इनको दहीमें मिलायके प्रवाहिका रोगवाले प्राणीको पिवावे तो प्रवाहिकाका दुःख दूर हो॥

मुस्तावत्सकादियोग

मुस्तावत्सकबीजंमोचरसोबिल्वधातुकीलोध्रं ॥
भृगुमथितसंप्रयुक्तंगंगामपिप्रवाहिकांरुंध्यात् ॥

अर्थ—नागरमोथा, इन्द्रजो, मोचरस, बेलगिरी, धायके फूल, और लोध ये पदार्थ एकत्र करके इनमें दही डाल रईसैं थोडा मथकर उस दहीको पीवे तो गंगाके समान प्रवाहवाले प्रवाहिकाको नष्ट करे ॥

तैलादियोग

तैलंसर्पिर्दधिक्षौद्रंविषाविश्वंसफाणितं ॥
सर्वमालोड्यपातव्यंसद्योनिर्वाहिकांहरेत् ॥

अर्थ—तेल, घी, दही, सहत,अतीस, सोंठ, और गुडकी राव, ये सब एकत्र कर पीवे तो प्रवाहिकाको जीते ॥

त्र्यूषणादिघृत

त्र्यूषणात्रिफलाचैवचित्रकोगजपिप्पली ॥ बिल्वकर्कटिका हिंस्राविडंगंसनिदिग्धिकं ॥ घृतप्रस्थंपचेदेभिर्गवांमूत्रेचतुर्गुणे ॥ तत्प्रयोगंपिबेत्कोलंहन्यात्तेनप्रवाहिकाम्॥

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आवला, चीतेकी छाल, गजपीपल, बेलगिरी,कांकडासिंगी,जटामांसी, वायविडंग, और कटेरी, इनका काढा एक

भाग तथा गोमूत्र चार भाग, गौका घी६४तोले डाले मधुरी अग्निपर रखके घी-को सिद्ध करे फिर इसमेंसैं छः मासे सेवन करे तो प्रवाहिका नष्ट होवे ॥

मुस्तादिगुटी

मुस्तंमोचरसंलोध्रंधातुकीबिल्वकौटजं ॥ अहिफेनंरसंगंधंसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥ वल्लमात्रमिदंखादेत्गुडतक्रसमन्वितम्॥ अतिसारेप्रवाहेचग्रहण्यांचविशेषतः ॥

अर्थ—नागरमोथा, मोचरस, लोध, धायकेफूल, वेलगिरी, इन्द्रजों, अफीम, पारा और गंधक ये एकत्र कर चूर्ण करे इसमेंसैं ३ रत्तीकी गोली गुड तथा छाछ, इनसैं अतिसार और प्रवाहिका इनपर विशेष करके देवे, तथा संग्रहणी पर-भी देवे तो उक्तरोग निश्चय दूर होवे ॥

पथ्य

वमनंलंघनंनिद्रापुराणाःशालिषष्टिकाः ॥ विलेपीलाजमंडश्चमसूरस्तुवरीरसः ॥ शशोवैलावहरिणकपिंजलभवारसाः॥ सर्वक्षुद्रझषाशृंगींडिंडिशोमधुरालिका ॥ तैलच्छागघृतंक्षीरंदधितक्रंगवामपि ॥ दधिजंवापयोजंवानवनीतंगवांजयेत् ॥ नवंरंभाफलंपुष्पंक्षौद्रंजंबुफलानिच ॥ भव्यंसहार्द्रकंविश्वंशालूकंचविकंकतं ॥ कपित्थंबदरंबिल्वंतिंदुकंदाडिमद्वयं ॥ तालंवटफलंवापिचांगेरीविजयाकणा ॥ जातीफलमफेनंचजीरकंगिरिमल्लिका ॥ कुस्तुंबरुमहानिंबकषायःसकलोरसः ॥ अन्नपानानिसर्वाणिदीपनानिलघूनिच ॥ नाभेर्द्व्यंगुलतोधस्ताच्छस्त्रेनार्धेन्दुवद्दहेत् ॥ तथावंशास्थिमूलेपिपथ्यवर्गोतिसारिणां ॥

अर्थ—उलटीकरना, लंघनकरना, निद्रा, पुराने साठी चावल, और शालि-चावल, खीलोंका मंड, मसूर, अरहर इनका रस, तथा ससा, लवा, हिरण, सपेदतीतर इनका मांस, सर्वप्रकारकी छोटीमछली, तथा शृंगिजातिकी मछली ढेडसका फल, सहत, राल, तेल, वकरीका और गौका घी, दूध, दही, छाछ, तथा गौके दहीकी एवं दूधकी लोनी, नवीनकेलाकी गहर, मद्य, जामुन, करोंदा अदरख, सोंठ, कमलकंद विकंकत, कैंथ, वेर, वलकाफल, तेंदू, खट्टा अनार

और मीठा अनार, तालके फल, वडके फल, चूका, भांग, पीपल, जायफल, अफीम, जीरा, कूडा और धनिया, वकायन, संपूर्ण कषेले पदार्थ तथा दीपन, हलके ऐसे अन्न, और पान तथा नाभिके नीचे और ऊपर दो दो अंगुलपर अर्धचंद्राकार तथा वंशास्थिके नीचे अर्धचंद्रकार लोहेकी सलाईसै दाग देना यह अतिसार रोगीको पथ्यवर्ग कहा है ॥

जल

दशांशंषोडशांशंवाशतांशंवाशृतंजलं ॥ सुशीतंपाचनंग्राहिदीपनंदोषनाशनं ॥ यथायथाशृतंतोयंज्वरातिसारिणोभवेत् ॥ दीपनंपाचनंग्राहिआरोग्यंचतथातथा ॥

अर्थ—दशांश, षोडशांश, अथवा शतांश, औंटायके शीतल करा हुआ जल ग्राहक, दीपन, और सर्व दोषनाशक होताहै, एवं जैसे २ पानीको अधिकऔंटाया जावे उसी उसी प्रकार अधिक गुणकारी होताहै तथा आरोग्य देनेवाला है ॥

अतीसारपरअपथ्य

स्नानावगाहमभ्यंगगुरुस्निग्धान्नभोजनं ॥ व्यायाममग्निसंतापमतिसारीविवर्जयेत् ॥ नवान्नोष्णंगुरुस्निग्धंभोजनंनहितंनवं ॥ व्यायामंमैथुनंचिंतामतिसारीविवर्जयेत् ॥ स्वेदोंजनंरुधिरमोक्षणमंबुपानंस्नानंव्यवायमपिजागरधूमनस्यं ॥ अभ्यंजनंपललवेगविधारणंचरूक्षाण्यसात्म्यशयनंचविरुद्धमन्नं ॥ कूष्मांडतुंबिबदरंगुरुचान्नपानंतांबूलमिक्षुगुडमद्यमुपोदिकांच ॥ द्राक्षाम्लवेतसफलंलशुनंचधात्रीदुष्टांबुमस्तुग्रहवारिचनारिकेलं ॥ संस्नेहनंमृगमदाखिलपत्रशाकाक्षाररसानिसकलानिपुनर्नवाच ॥ उर्वारुकंलवणमाम्लमपिप्रकोपंवर्ज्योंतिसारगदपीडितमानवेषु ॥

अर्थ—स्नान, अवगाहन, उवटना, भारी, और चिकनाऐसा भोजन, दंड कसरत, अत्यंत अग्निका संताप, नवीन अन्न, उष्ण, भारी, स्निग्ध, अपथ्य पदार्थ, व्यायाम, मैथुनकरना, चिंता, पसीने काढना, अंजन, रुधिर निकलना, जल पीना, स्नान, स्त्रीगमन, जागरण, धूमपान, नस्य, अभ्यंजन, मांस, मलमूत्रादिवेगका धारण, तथा रूक्ष, और असात्म्य ऐसा भोजन, विरुद्ध भोजन, गैंहू, उड-

द, वथुआ, मकोय, चौरा, सहत, सहजना, आंव, पूडी, पूरन पोली, पेठा सपेदतूंवा, वेर, भारी अन्न, अथवा भारी पदार्थका भोजन, और भारी जलका पीना, वीडा, ईख, गुड, मद्य, पोईका साग, दाख, अमलवेत, ल्हसन, आवले, दूषितजल, छाछ, घरका पानी, नरियल, स्नेहन, कस्तूरी, सर्वप्रकारके पत्तोंका साग, खार, संपूर्ण रस, सूपपदार्थ, पुनर्नवा, (सांठ) कांकडी, खीरा, निमक खट्टेपदार्थ और क्रोधका करना यह अतिसार रोगवालेको वर्जित करना चाहिये

ज्योतिःशास्त्राभिप्रायेणअतिसाररोगस्यकारणमाह

जलराशौयदालग्नेजलर्क्षेलग्ननायकः
गुदेशेसूर्यसंयुक्तेसभवेदतिसारवान् ॥ १ ॥

अर्थ—यदि जलराशि (कुंभ मीन आदि) लग्नमें होय और लग्नका पती जलराशिमें होवे, एवं गुदास्थानका पती सूर्य करके युक्त होय तो वो प्राणी अतीसारवाला होवे ॥

एवंक्षितिजसंयोगेरक्तातीसारकारकः

अर्थ—यदि पूर्वोक्त ग्रह मंगलके साथ बैठे होय तो उस प्राणीके रक्तातिसार अर्थात् रुधिरका दस्त होनेवाला होवे ॥

मृत्युयोग

मारकेनयुतेविद्धेऽतीसारेणमृतिर्वदेत् ॥ २ ॥

अर्थ—यदि पूर्वोक्तग्रह मारकेशकरकेयुक्त अथवा विद्धहोवे तो उस प्राणीकी अतिसाररोग करके मृत्यु कहनी चाहिये ॥

लग्नेशेकफराशिस्थेकफग्रहसमन्विते
षष्ठेशेजलराशिस्थेछर्द्यतीसारकारकः ॥ ३ ॥

अर्थ—लग्नेश कफराशिस्थ होकर कफकर्त्ताग्रहोंकरके युक्त होवे तथा षष्ठेश (रोगेश) ग्रह जलराशिमें स्थित होय तो वमन और अतिसारकारक जानना ॥

मृतीशेस्वल्पराशिस्थेजलराशिगतेथवा
लग्नेशेनतथायुक्तेऽतीसारेणमृतिर्वदेत् ॥ ४ ॥

अर्थ—यदि अष्टमेश उन राशिमें हो अथवा जलराशिमें होय और वह लग्नेशकरके युक्त होय तो उसकी अतिसाररोग करके मृत्यु जाननी ॥

लग्नेशरिपुभावेशशत्रुदृष्ट्याविशेषतः
लग्नेमंदयुतेदृष्टेज्वरातीसारकारकः ॥ ८ ॥

अर्थ—लग्नेश और रिपुभावेश आपसमें शत्रु दृष्टि करके देखते हो और लग्न शनिकरके युक्त हो अथवा दृष्ट होय तो वो ज्वरातिसारकारक जानना ॥

इति बृहन्निघंटुरत्नाकरे अतिसारप्रवाहिकाचिकित्सासमाप्ता ।

संग्रहणी

ज्योतिःशास्त्राभिप्रायसैंग्रहणीरोगकानिदान

तहांसप्तधातुओंकेस्वामी

स्नाय्वस्थ्यसृक्त्वगथशुक्रवसाचमज्जा-
मंदार्कचंद्रबुधशुक्रसुरेज्यभौमाः ॥ १ ॥

अर्थ—स्नायु, हड्डी, रुधिर, त्वचा, शुक्र, वसा, मज्जा, इन सात धातुओंके स्वामी क्रमसैं शनि, सूर्य, चंद्र, बुध, शुक्र, बृहस्पती, और भौमकहिये मंगलहै ॥

अथग्रहणीकर्त्तायोग

शनिशुक्रौसप्तमस्थौनिर्बलौलग्नपुत्रपौ
विड्बंधग्रहणीचित्तवैकल्याद्यतिकष्टदौ ॥ २ ॥

अर्थ—शनि और शुक्र ये दोनोग्रह सप्तममें स्थितहों तथा लग्नेश और पंचमेश निर्बलहोवे तो विड्बंध (मलकानउतरना) संग्रहणी, चित्तमेंवेकली और अतिकष्ट होय ॥

गदेशेगदराशिस्थेगदभावानिरीक्षिते
क्षीणचंद्रोभवेत्तस्यग्रहणीदुःखकारिणी ॥ ३ ॥

अर्थ—रोगेश (छटेघरकास्वामी) छटेघरमें अर्थात् रोगघरमें बैठाहोवे, अथवा अन्य स्थानमें बैठकैं रोगघरको देखताहोय, और चंद्रमा जिसके क्षीण होय तो उसकैं दुःखकरता संग्रहणी रोगहोय ॥

लग्नस्थेक्षीणशीतांशुशनिभौमतमैर्युते
ग्रहणीरोगवान्जातअथवाकटिशूलवान् ॥ ४ ॥

अर्थ—क्षीणचंद्रमाजन्मलग्नमेंबैठाहोय और शनि भौम तथा राहूकरके युक्त होय तो उस प्राणीके संग्रहणीका रोगहोय अथवा कमरमें पीडा होय ॥

रोगाधीशोमृत्युभावेरोगसद्मेश्वरस्तनौ
ग्रहणीगदतोमृत्युर्जायतेनात्रसंशयः ॥ ५ ॥

अर्थ—रोगका मालिक अष्टमघरमें वेंठाहोय और छटेघरका मालिक लग्नमें बैठा होय तो उस मनुष्यकी संग्रहणी रोगसें मृत्यु होय इसमें संदेह नहीं है ॥

एवंरविसमायोगेग्रहणीपित्तसंभवा
गुरुणाकफकोपेनजायतेनात्रसंशयः ॥ ६ ॥

अर्थ—इसी प्रकारके योगमें यदि सूर्यका समागम होय तो पित्तजन्य संग्रहणीका रोग होय और बृहस्पतिका संयोगहोवे तो कफजन्य संग्रहणी होय इसमें संदेह नही है ॥

रोगसद्मेश्वरोमंदभूपुत्रेणसमन्वितः
वातामयोत्थाग्रहणीजायतेनात्रसंशयः ॥ ७ ॥

अर्थ—रोगघरका मालिक शनिश्चर और मंगलकरके युक्तहोवे तो उस प्राणीके बादीकी संग्रहणी होती है इसमें संदेह नही है ॥

ग्रहणीरोगकाकर्मविपाक

साध्वींभार्यांचयोमर्त्यःपरित्यजतिकामतः
ग्रहणीरोगसंयुक्तःसदाभवतिमानवः ॥ ८ ॥

अर्थ—जो प्राणी विनाकारण अपनी सुशीलास्त्रीका परित्याग करताहै वह प्राणी सदैव संग्रहणी रोगकरके पीडित होताहै ॥

अनन्यगतिकांभार्यामदुष्टांकारणंविना ॥
परित्यजतियःसोऽपिग्रहणीरोगवान्भवेत् ॥

अर्थ—जो दुष्टपुरुष अनन्यगतिक (जिसको दूसरेका आसरा न हो) और पवित्र असी सुशीला अपनी स्त्रीको कारणके बिना त्याग देवे इस अपराधसें इस प्राणीके संग्रहणी रोग होताहै ॥

संग्रहणीरोगकीशांति

शिवसंकल्पसूक्तस्यजपःस्यात्तत्रशांतये ॥ अष्टोत्तरसहस्रंहि हिरण्यंचतथामधु ॥ दद्याद्वित्तानुसारेणसौरमंत्रजपस्तथा ॥ धेनुंसलक्षणांदद्याद्वस्त्राभरणसंयुतां ॥ पयस्विनींगुणोपेतांब्राह्मणायकुटुंबिने ॥ वत्साभरणसंयुक्तांवस्त्रेणाभरणेनच ॥

अर्थ—उस पापकी शांति करनेको शिवसंकल्प सूक्तको १००८ एकहजार आठ पाठ करावे, और ब्राह्मणको सुवर्ण और सहत अपने वित्तानुसार देवे, तथा सौर मंत्रका जप करावे, तथा सुंदर लक्षण युक्त और वस्त्राभरण करके युक्त असी गौका दान कुटुंबवाले विद्वान् ब्राह्मणको देवे तथा उस गौके वछडेको भी वस्त्र आभरणसैं भूषित करना चाहिये ॥

पद्मपुराणेगौतमः

धेनुंपयस्विनींदद्यात्घंटाभरणभूषिताम् ॥हेमशृंगींरौप्यखुरां वासोभिर्वेष्टितांनरः ॥ नवधान्यैःसमायुक्तामेकैकंद्रोणपंचकम् ॥ सहिरण्यांतुगांदद्याद्ब्राह्मणायकुटुंबिने॥अलोलुपायशांतायधर्मज्ञायविशेषतः ॥ १ ॥

अर्थ—पद्मपुराणमें गौत्तम ऋषिकावाक्यहै कि संग्रहणी रोगवाला प्राणी घंटा और भूषणोंसैं भूषित सुवर्णके सींग चांदीकेखुर और वस्त्रोंसैं आच्छादित और दूधके देनेवाली गौका दानकरे तथा नवधान्य पांच २ द्रोण उसके साथ तथ-सुवर्ण सहित कुटुंबी ब्राह्मण जो लोलुपन हो तथा शांतस्वभाववाला और धर्मज्ञ असेंको दान देवे ॥

होमंचपूर्ववत्कुर्यात्समिदाज्यचरूत्कटैः॥ तस्मैहुतवतेदद्यात्पूजितायांगुलीयकैः॥गांकृष्णांकृष्णरूपायमंत्रेणानेनरोगवान्

अर्थ—संग्रहणीरोगवाला ढाककी समिधा, घृत, चरू, इनसैं पूर्वोक्त क्रमसैं हवनकरे, फिर हवनकरानेवाले ब्राह्मणका पूजनकर उसको सुवर्णकी अंगूठी और काले रंगकी गौ, कृष्णस्वरूपी ब्राह्मणको नीचे लिखे मंत्रको पढकर देवे ॥

मंत्र

देवकीपुत्रचाणूरकंसारिष्टविनाशन ।
नाशयग्रहणींकृष्णगोपीजनमनोहर ॥

अर्थ—हेदेवकीपुत्र ! हेकंसअरिष्टासुरकेनाशक ! हेकृष्ण ! हेगोपीजनमनोहर-मेरे इससंग्रहणी रोगको नष्टकरो ॥

मंत्रेणानेनदानेनग्रहणीशांतिमृच्छति।
तस्मादेतच्चकर्त्तव्यंग्रहणीरोगिणांसदा॥

अर्थ—इस मंत्रकरके करे हुए दानसे संग्रहणीरोग शांति होताहै इसीवास्ते यह गोदान संग्रहणी रोगवालेको अवश्य कर्त्तव्यहै ॥

ग्रहण्याःस्वरूपमाह

ग्रहण्यग्निधराकला

अर्थ--जठराग्निके धारण करनेवाली कलाको ग्रहणी इसप्रकार कहतेहै ॥

यदाहचरकः

अग्न्यधिष्ठानमन्नस्यग्रहणाद्ग्रहणीमता॥
अपक्वंधारयत्यन्नंपक्वंत्यजतिचाप्यधः॥

अर्थ--जैसै चरकमें लिखाहै कि अन्नका अग्नि अधिष्ठानहै और उस अन्नके ग्रहण करनेसैं उसको ग्रहणी कही है, यह ग्रहणी अपक्व (कच्चे) अन्नको धारण करती है और पके अन्नको नीचे गेरदेतीहै ॥

ग्रहण्याबलमग्निर्हिसचापिग्रहणींश्रितः॥तस्मादग्नौप्रदुष्टेतुग्रहण्यपिविदुष्यति॥तस्मात्कार्यः परीहारोह्यतिसारेविरक्तवत्॥
विरक्तेने व विरक्तवत्

अर्थ--और भी लिखाहै ग्रहणीका बल अग्निहै वह ग्रहणीस्थानके आश्रयीभूतहै, इसीकारण अग्निके दूषित होनेसैं ग्रहणीभी दूषित होतीहै इसीवास्ते अतिसारमें विरक्त (वैराग्यवान्) पुरुषके समान पथ्याचरण करना चाहिये ॥

अन्यच्च

पक्वामाशयमध्येपित्तधरानामयाकलाकथिता।
साग्रहणीत्युपदिष्टादुष्टाग्रहणीगदंकुरुते॥

अर्थ--तथा अन्यवाग्भटादिग्रंथोंमें लिखाहै कि पक्वाशय और आमाशयके

अतिसाररोग संग्रहणीरोगमें इतनाहीं भेदहै कि अतिसारमें द्रवधातुनिकलेहै और संग्रहणीमें बंधाहुआभीमलनिकलेहै

बीचमें जो पित्तधरा नामक कलाहै उसीको ग्रहणी ऐसा कहाहै वह दुष्टहोकर संग्रहणी रोगको करती है ॥

ग्रहणीकास्थान

षष्ठीपित्तधरानामयाकलापरिकीर्त्तिता ।
पक्वामाशयमध्यस्थाग्रहणीसाप्रकीर्त्तिता ॥

अर्थ—छठी पित्तधरा नामक जो कला पक्वाशय और आमाशयके बीचमें है उसीको संग्रहणी वैद्योंने कहाहै ॥

संग्रहणीनिदान

अतिसारेनिवृत्तेपिमन्दाग्नेरहिताशिनः ॥
भूयःसंदूषितोवन्हिर्ग्रहणीमाभिदूषयेत् ॥

अर्थ—पहले मनुष्यके अतिसाररोग होकर जातारहा होय, फिर उस मनुष्यके कुपथ्य करनेसें मन्द हुई जो अग्नि सो पुरुषके उदरमें रहनेवाली जो पित्तधरानामक छटी कला जिसको ग्रहणी कहते हैं, उसको बिगाड अपिशब्द करके अतिसार न भया होय तोभी अपने कारणकरके पूर्वोक्त ग्रहणीको बिगाडकर संग्रहणीरोगको प्रगट करे यह सूचना करी । कोई आचार्य ऐसें कहते हैं कि अतिसार न गया होय बीचमेंही ग्रहणीरोग होताहै (मन्दाग्नेः) इसपद करके ये सूचना करी कि जिस पुरुषकी अग्नि तीक्ष्ण है वो कुपथ्यभी करे तथापि कुछ औगुन नहीं होय,अन्नको ग्रहण करेहै इसीसें इसको ग्रहणी कहेहैं। अतएव ग्रहणीके बिगडनेसें अन्नका परिपाक अच्छेप्रकार नहीं होय अर्थात् वारंवार आममिश्रित मल गुदाके मार्गसें गिरताहै ।

ग्रहणीकीसंप्राप्तिवालक्षण

एकैकशःसर्वशश्चदोषैरत्यर्थमूर्छितैः ॥ सादुष्टाबहुशोभुक्तमाममेवविमुंचाति ॥ पक्कंवासरुजंपूतिमुहुर्बद्धंमुहुर्द्रवम् ॥ ग्रहणीरोगमाहुस्तामायुर्वेदविदोजनाः ॥

अर्थ--अत्यंत कुपित हुए पृथक् पृथक् दोष (वात पित्त कफ) और सर्व दोष मिलकर ग्रहणीको दुष्ट करैं,सो ग्रहणी दुष्ट होकर कच्चे अथवा पक्के अन्नको गुदाके मार्ग होकर निकाले,और पीडा होय,तथा उस मलमें दुर्गंधि आवै, वादी

से पतला मल,और पित्तसैं गाढा दस्त वारंवार होवे,और कभी कफसैं पानीसरी खा अधोवायु युक्त निकले इसको आयुर्वेदके जाननेवाले वैद्य संग्रहणीरोग कहतेहैं॥

अन्यच्च

सामंसान्नमजीर्णेन्नेजीर्णेपक्वंतुनैववा ॥ अकस्माद्वा मुहुर्बद्धमकस्माच्चोपवेशयेत्॥साचतुर्द्धापृथग्दोषैः सन्निपाताच्चजायते ॥

अर्थ–अजीर्ण अन्नमें आमसहित और कच्चे अन्नसहित दस्तहो और वही भोजन कराहुआ अन्न जीर्ण होजावे तथा पक्व होजावे तब नगिरे तथा अकस्मात् वारंवार दस्त बंधा हुआ होय और अकस्मात् पतला तथा अकस्मात् दस्तबंद होजावे ऐसा संग्रहणीरोग चारप्रकारका है जैसे १वातका २ पित्तका ३ कफका और चतुर्थ संनिपातका ॥

संग्रहणीकेपूर्वरूप

प्राग्रूपंतस्यसदनंचिरात्पवनमम्लकः ॥ प्रसेकोवक्त्रवैरस्यमरुचिस्तृट्क्लमोभ्रमः॥ आनद्धोदरताछर्दिःकर्णच्छेदोंत्रकूजनं ॥ सामान्यंलक्षणंकार्श्यंधूमकस्तमकोज्वरः ॥ मूर्च्छाशिरोरुग्विष्टंभःश्वयथुःकरपादयोः ॥

अर्थ—अब उस ग्रहणीरोगका पूर्वरूप कहतेहै जैसे देहका थकासा होजाना और वहुत देरमें खट्टी डकार आवे, मुखसैं, लार वहे मुखमें सवाद नरहे, अरुचि, प्यास,क्लम, भ्रम, पेटकातनासाहोना, वमन,कानमें घाव, आतोंका बोलना, देहकृश, धूंएका मुखसैं निकलना, तमक, श्वास, ज्वर, मूर्च्छा, मस्तकमें पीडा, अफरा,हाथ पैरोंमें सूजन, ए ग्रहणीरोगके सामान्य लक्षणहैं ॥

पूर्वरूपंतुतस्येदंतृष्णालस्यंबलक्षयः विदाहोन्नस्यपाकश्चचिरात्कायस्यगौरवम् ॥

अर्थ—प्यास, आलस, वलनाश, अन्नका दाह, (पाकके समय अग्निसीजले) और अन्नका पाक देरमें होय, देह भारी होय, यह ग्रहणीरोगका पूर्वरूपहै ॥

पक्षाद्वापिदशाहाद्वाविंशतेर्वादिनात्परम् । मासाद्वापिभवेत्कोपोग्रहणीरुजमानवे ॥

अर्थ—इस प्राणीके पंद्रहदिनमें दशदिनमें बीसदिनमें अथवा एक महिनेमे ग्रहणीरोग कुपित होताहै ॥

वातिकग्रहणीकेकारण

कटुतिक्तकषायातिरूक्षसंदुष्टभोजनैः ॥ प्रमितानशनात्यध्ववेगनिग्रहमैथुनैः ॥ मारुतःकुपितोवह्निंसंछाद्यकुरुतेगदान् ॥

अर्थ—चरपरा, कडुआ, कसैला, अतिरूखा और संयोगविरुद्ध ऐसे भोजनसैं तथा थोडे भोजनसैं, उपवाससैं, बहुत चलनेसैं, मलमूत्रादि वेगोंके रोकनेसैं, अत्यंत मैथुनसैं, कुपित हुई जो वात सो अग्निको दूषित कर रोगोंको प्रगट करे है

वातिकग्रहणीकेरूप

तस्यान्नंपच्यतेदुःखंशुक्तपाकंखरांगता ॥ कंठास्यशोषःक्षुत्तृष्णातिमिरंकर्णयोःस्वनः ॥ पार्श्वोरुवंक्षणग्रीवारुगभीक्ष्णंविषूचिका ॥ हृत्पीडाकार्श्यंदौर्बल्यंवैरस्यंपरिकर्तिका ॥ गृद्धिसर्वरसानांचमनसःस्यंदनंतथा॥ जीर्णेजीर्यतिचाध्मानंभुंक्तेस्वास्थ्यमुपैतिच ॥ सवातगुल्महृद्रोगप्लीहाशंकीचमानवः ॥ चिरादुःखंद्रवंशुष्कंतन्वामंशब्दफेनवत् ॥ पुनःपुनःसृजेद्वर्चः कासश्वासार्दितोऽनिलात् ॥

अर्थ—उस वातग्रहणीवालेकैं अन्न दुःखसैं पचै, अन्नका पाक खट्टा होय, अंगमें कर्कशता (यह वायुको त्वचाके चिकनापन शोखनेसे होताहै) कंठ, मुखका सूखना, भूख प्यास लगे, मन्द दीखै, कानोंमें शब्द हो, पसवाडे जांघ पेडू और कंधेमें पीडा होवे, विषूचिका हो (अर्थात् दोनों द्वारसैं कच्चे अन्नकी प्रवृत्ति होवे) हृदय दूखे, देह दुबला होजाय, जीभका स्वाद जातारहै, गुदामें कतरनी कीसी पीडा हो, मीठेसैं आदि ले सर्व रसोंके खानेकी इच्छा,मनमें ग्लानि, अन्न पचनेउपरांत पेटका फूलना, भोजन करनेसैं स्वस्थता, पेटमें गोला, हृद्रोग, तापतिल्लीकीसी शंका, वातके योगसैं खांसी, श्वाससैं पीडित बहुत देरमें बडे कष्टसैं कभी पतला कभी गाढा थोडा शब्द और झागमिला वारंवार दस्त जाय ।

वातसंग्रहणीकाचिकित्साक्रम

ग्रहणीरोगमेंपाचन

धान्यबिल्वबलाशुंठीशालपर्णीसृतंजलम् ।

स्याद्वातग्रहणीदोषेसानाहेसपरिग्रहे ॥

अर्थ—धनिया, वेलगिरी, खिरेटी, सोंठ, और सालवन इनके काढेको वातकी संग्रहणीमें अफरामें और मलकी दुष्टतामें पीवे तो ये दूरहो ॥

दारुनागरनिशासुवासकंकुंडलीमगधयाशठीघनं ॥
रास्नाभांर्ग्यशरलाभपौष्करंपाचनंभवतिवातकेग्रहे ॥

अर्थ—देवदारु, सोंठ, हलदी, अडूसा, गिलोय, पीपल, कचूर, नागरमोथा, रास्ना, भारंगी, शरल, पुहकरमूल, यह क्काथ वादीकी संग्रहणीमें पाचन कहाहै ॥

यवान्यादिचूर्ण

यवानीव्योषसिंधूत्थंजीरकेद्वेचहिंगुकम् ।
आद्यग्रासाशितंसाज्यंचूर्णवातनुदग्निकृत् ॥

अर्थ—अजमायन, सोंठ, मिरच, पीपल, सैंधानिमक, सपेदजीरा,कालाजीरा और हींग इनका चूर्ण करके भोजनके प्रथम ग्रासमें घी मिलायके खाय तो अग्निको प्रबल करे यह यवानीचूर्ण है परंतु वास्तवमें हिंगाष्टक चूर्णहै ॥

ग्रंथिकाचाभयाकृष्णाविडंगात्केघटेस्थितम् ।
मासंतक्रंग्रहण्यार्शकाशगुल्मकृमीहरम् ॥

अर्थ—पीपरामूल, जंगीहरड, पीपल, वायविडंग, इनको पीसके एककोरे घडेमे लपेट देवे; फिर इसमें छाछको भरदेवे इस छाछको १ महिने पर्यंत पीवे तो संग्रहणी, ववासीर, खाँसी, गोला, और कृमिरोग, इनको हरण करे ॥

रामठादिचूर्ण

रामठातिविषापथ्यावचेन्द्रयवचूर्णकम् ।
वारिपीतंनिहंत्येवग्रहणींवातसंभवाम् ॥

अर्थ—हींग, अतीस, हरड, वच और इन्द्रजो इनका चूर्णकर जलके साथ पीवे तो वातकी संग्रहणीको नष्ट करे ॥

चूर्णंहिंग्वादिकंचापिवातिकेषड्घृतान्वितम् ।
स्नेहाम्ललवणैर्युक्तंबहुवातस्यशस्यते ॥

अर्थ—हिंगाष्टक चूर्णको थोडेसे घीमें मिलाय, स्नेह, खटाई और निमकके साथ जिस संग्रहणीवालेके अधिकवादी होवे उसको सेवन करना चाहिये ॥

शुंठीघृत

घृतनागरकल्केनसिद्धंवातानुलोमनं ॥
ग्रहणीपांडुरोगघ्नप्लीहकासज्वरापहं ॥

अर्थ—सोंठके कल्कमें घी डाल अग्निपर सिद्धकर,यह घृत वादीको अनुलोमन करे तथा संग्रहणी, पांडुरोग, प्लीहा, खांसी, और ज्वर इसको नष्ट करे ॥

पंचमूलघृत

पंचमूलाभयाव्योषपिप्पलीमूलसैंधवैः ॥ रास्नाक्षारद्वयाजाजीविडंगसटिभिर्घृतं ॥ पक्केनमातुलुंगस्यस्वरसेनार्द्रकस्यच ॥ शुष्कमुलककोलांबुचुक्रिकादाडिमस्यच॥तक्रमस्तुसुरामंडसौवीरकतुषोदकैः ॥ कांजिकेनचतत्पक्त्वापीतमग्निकरंपरं ॥ शूलगुल्मोदरानाहकार्श्यानिलगदापहं ॥

अर्थ—पंचमूल, जंगीहरड, सोंठ, मिरच, पीपल, पीपरामूल, सैंधानिमक, रास्ना, सज्जीखार, जवाखार. जीरा, वायविडंग, और कचूर इन सब औषधोंके कल्कमें घी सिद्ध करे, फिर उस घीको पके हुए बिजोरेके रसमें, अदरखके रसमें, सूखी हुई मूलीके काढेमें, सूखे हुए वेरके काढेमें, चूकके रसमें अनारके रसमें, छाछ, दहीका तोर, सुरा, जोंकी पेया, तुषोंके काढा और कांजी इन प्रत्येकमें पचाय २ के सिद्धकरे तो यह अग्निकारक, शूल, गोला, उदर, अफरा, देहकी कृशता, और वादीके रोग इन सबको नाशकरे ॥

संग्रहणीकाचिकित्साक्रम

ग्रहणीमाश्रितंदोषमजीर्णवदुपाचरेत् ॥ लंघनैर्दीपनीयैश्चसदातीसारभेषजैः ॥ दोषंसामंनिरामंचविद्यादत्रातिसारवत्॥ अतिसारोक्तविधिनातस्यचामंविपाचयेत् ॥ पेयादिपटुलघ्वन्नपंचकोलादिभिर्युतं॥दीपनानिचतक्रंचग्रहण्यांयोजयेद्भिषक्॥

अर्थ—संग्रहणीके रोगमें अजीर्णके समान औषध करे अर्थात् जो औषधी अजीर्णपर कही है वही इस संग्रहणीपरभी करे [तथा लंघन, दीपन, और अतिसारपर कही हुई औषधोंको देवे] अतिसारके समानही दोष आम सहित किंवा

आम रहित है यह प्रथमही देख लेवे, और अतिसारपर उक्तविधिके अनुसार आमका पाचन करे, पेया इत्यादि क्षार, पंचकोलादिक करके युक्त अेसे हलके अन्न सेवन करें, दीपन पदार्थ तथा तक्र (छाछ) देना चाहिये ॥

ज्ञात्वातुपरिपक्वंचवातजंग्रहणीगदं ॥
दीपनैर्भेषजैःपक्वैःसर्पिभिः समुपाचरेत्॥

अर्थ—परिपक्व वातसंग्रहणीकी परीक्षा करके उसको दीपन औषध और घृत इन करके उपचार करे ॥

शालिपर्ण्यादिकाढा

शालिपर्णीबलाविल्वंधान्यशुंठीकृतःशृतः॥
आध्मानशूलसहितांवातजांग्रहणींजयेत् ॥

अर्थ–शालपर्णी, खिरेटीकीजड, वेलगिरी, धनिया, और सोंठ, इन पांचऔषधों का काढा करके पीवे तो पेटका फूलना, और शूलयुक्त वातसंग्रहणीको दूर करे ॥

मधुपक्वहरीतकी

हरीतकीनांचशतंदोलायंत्रेशनैःपचेत्॥सुस्विन्नंगोमयेनीरेसंमृष्टंवापुनस्ततः ॥ पश्चात्क्षुद्रशलाकाभिश्छिद्रितंतत्समंततः ॥ शतंपलानांमधुनोवस्त्रपूतंविनिःक्षिपेत् ॥ स्निग्धभांडेविनिःक्षिप्यक्षौद्रंदेयंतथातथा॥ यथायथाहिमधुनोजलत्वंयातिनिश्चितं ॥ पुनर्देयंमधुतथायावन्नायातिविक्रियां ॥ तिष्ठत्येवंतथापथ्याकषायगुणवर्जिता॥पिप्पलीमरिचंशुंठीलवंगंवंशलोचनं ॥ प्रत्येकंकर्षमात्रंहिचूर्णितंतत्रनिःक्षिपेत्॥मधुपक्वभिधापथ्याबलवर्णाग्निदीपनी ॥एकैकांभक्षयेत्प्रातःसर्वरोगनिवारिणीम् ॥ दुष्टवातंसंग्रहंचतथामंदुष्टशोणितं ॥ जीर्णज्वरंप्रतिश्यायंव्रणंविस्फोटकंतथा ॥ वातशूलंसंग्रहणींसरुजांनाशयत्यपि ॥

अर्थ—वडी २ सौं हरडोको लेकर गौके गोवरके पानीमें दोलायंत्रकी विधिसैं नरम होनेपर्यंत ओंटाके जव नम्र हो जावे तव उतारके उनमें सलाईसैं छिद्र करके युक्तिसैं उनकी गुठली निकासले, फिर ४०० तोले सहत घीके चीकने

वासनमें भरके उसमें उन हरडोंको गेर देवे, फिर वह सहत जैसे २ जलरूप होता जाय उसीप्रकार उसमें और नवीन सहत डालता जावे इसप्रकार जबतक सहत जैसाका तैसा बना रहे तबतक डाले, इस क्रियाके करनेसैं हरडोंका कषेलापना नही रहे, फिर सोंठ, मिरच, पीपल, लौंग, वंशलोचन, ये प्रत्येक तोले २ ले चूर्ण करके उसमें गेर देवे इसे (मधुपक्कहरीतकी) कहते है, यह हरड बल वर्ण करे है और अग्निको दीपन करे है । नित्यप्रति प्रातःकाल एक एक भक्षण करे तो दुष्टवात, संग्रहणी, आमांश, दुष्टरक्त, जीर्णज्वर, सरेकमा, व्रण (घाव) विस्फोटक, वादीका शूल, और सशूल संग्रहणी इत्यादि सर्वरोगोंका नाश करे ॥

मुद्गयूष

मुद्गयूषंरसंतक्रंधान्यजीरकसंयुतं ॥
सैंधवेनान्वितंदद्यात्षडयूषमितिकीर्तितम् ॥

अर्थ—मूंगकायूष, मूंगकारस,छाछ, धनिया, और जीरा, इनके यूषमेंसैं धानिमक मिलावे, इसे षड्यूष कहते है यह संग्रहणी नष्ट करे है ॥

कपित्थादियवागू

कपित्थबिल्वचांगेरीतक्रदाडिमसाधिता ॥
यवागूःपाचयत्यामंशकृत्संवर्तयत्यपि ॥

अर्थ—कैथ, वेल, चूका, छाछ, और अनार इनके शाकमें यवागू सिद्ध कर यह आमको पचावे और मलको सारण करे अर्थात् निकाले ॥

पित्तसंग्रहणीनिदान

कट्वजीर्णविदाह्यम्लक्षाराद्यैःपित्तमुल्बणं ॥ आप्लावयद्धंत्यनलंजलंतप्तमिवानलं ॥ सोजीर्णंनीलपीताभंपीताभंसार्यतेद्रवं ॥ सधूमोद्गारहृत्कंठदाहारुचितृडर्दितः ॥

अर्थ—जो पुरुष कटु, अजीर्ण, मिरच आदि तीखी, दाहकारक (बंश-करीलकी कोपल आदि) खट्टी, खारी (ओंगा आदिका खार) आदिशब्दसैं नोनका, गरम पदार्थ, भक्षण करे इनकारणसैं कुपित हुआ जो पित्त सो जठराग्निको बुझायदे, जैसे तत्ता जल अग्निको शांति करदे औ कच्चाही नीले पीले रंगके पतले मलको निकाले, तथा धूमयुक्त डकार आवे, हिये और कंठमें दाह होवे अरुचि और प्यासकरके पीडित होवे यह पित्तकी संग्रहणीके लक्षण हैं ॥

पित्तसंग्रहणीकीचिकित्सा

वन्हेःप्रदूषकंपित्तंरेकेनवमनेनवा ।
कृत्वाभोज्यैर्लघुग्राहिदीपनैरविदाहिभिः॥
तिक्तकैर्बृंहयेद्वन्हिंचूर्णैःस्नेहैश्चतिक्तकैः।

अर्थ--जठराग्निके दूषित करनेवाले पित्तको जुल्लाब करके तथा वमन करके निकाल देवे फिर हलके, ग्राही, दीपनकर्त्ता और जो दाह न करे ऐसा भोजन करावे तथा तिक्तचूर्ण, और तिक्त स्नेहोसे जठराग्निको बढावे॥

नलवेणुकुशानांचकाशेक्षूणांचमूलकम् ।
क्वाथपानंहितंचात्रपाचनंपैत्तिकेग्रहे॥

अर्थ--सरपते, वांस, कुसा, कांस, और ईख इनकी जडोका काढा करके इसपित्तकी संग्रहणीमें देवे तो इसका पाचन करे तथा हितकारी है॥

द्राक्षादिक्षीरम्

द्राक्षाक्षीरेणसंपाच्ययावद्दार्व्युपलेपनं ॥ पश्चाद्द्याद्भिषक्प्राज्ञोऔषधानिपृथक्पृथक् ॥ पर्पटातिविषामूर्वापटोलंघनवालकम् ॥ तथाभयानांचूर्णंतुसमशर्करयायुतम् ॥ तेनक्षीरेणसंयोज्यविदार्याःकन्दमेवच ॥ घनेननवनीतेनपिंडंकृत्वातुभक्षयेत् ॥ ग्रहणींपित्तजांपांडुंकामलार्तितृषापहम् ॥ भ्रमंमूर्च्छांतथाहिक्कांतथोन्मादमपस्मृतिम् ॥ महत्पित्तंचकुष्ठंचनाशयत्याशुनिश्चितम्॥

अर्थ--दाखोंको दूधमें औंटावे जब औंटते २ कलछीसैं लिपटनेलगे तब आगेलिखीहुई औषध पृथक् २ मिलावे। पित्तपापड़ा, अतीस, मूर्वा, पटोलपत्र, नागरमोथा. नेत्रवाला, और जंगीहरड इनको समान भाग ले; चूर्ण करके मिलायदेवे। तथा सब चूर्णकी बराबर खाँड डाले। एवं विदारीकंदका चूर्ण एक औषधके बराबर उसदूधमें मिलावे फिर मक्खन मिलायके गोली बनाय लेवेइस गोलीके भक्षणकरनेसैं पित्तकी संग्रहणी, पांडुरोग, कामला, प्यास, भ्रम, मूर्च्छा, हिचकी, उन्माद, मृगी, घोरपित्त, और कोढ, इनको तत्काल नाशकरे॥

तंडुलोदकम्

जलमष्टगुणंदत्वापलकंडिततंदुलान्।

भावयित्वाततोदेयंतंदुलोदककर्मणि ॥

अर्थ--१ पल बिने छुने चाँवलोंमें आठ पल जल मिलावे और उनको थोडी देर भीगने दे फिर हाथोंसें मसलकें जलको छानले, यह तंदुलोदक जहाँ २ इसका प्रयोजन पडे उस जगे सवत्र देवे ॥

भूनिंबादिचूर्णम्

भूनिंबकटुकाव्योषमुस्तकेन्द्रयवान्समान् ॥ द्वौचित्रकाद्वत्सकत्वक्भागान्षोडशचूर्णयेत् ॥ गुडःशीतांबुनापीतोग्रहणीदोषगुल्मनुत् ॥ कामलाज्वरपांडुत्वंमेहारुच्यतिसारनुत् ॥

अर्थ--चिरायता, कुटकी, सोंठ, मिरच, पीपल, नागरमोथा, और इन्द्रजो ये प्रत्येक समान भाग ले, चीतेकी छालके दो भाग, और कूडाकी छाल सोलह भाग ले, सबका चूर्ण करे फिर इसमें गुड मिलायके सीतल जलसें पीवे तो संग्रहणी, गोला, कामला, ज्वर, पांडुरोग, प्रमेह, अरुचि, और अतिसार इनको दूर करे।

भूनिम्बाद्यंचूर्णम्

एकैकंभागमादायभूनिम्बव्योषमुस्तकम् ॥ कटुकेन्द्रयवोपेतं द्वौभागौचित्रकस्यच ॥ कुटजस्यत्वचोभागान्षोडशात्रविनिक्षिपेत् ॥ सर्वमेकीकृतंचूर्णंशीताम्बुगुडसंयुतं ॥ पिबेत्संग्रहणीपांडुज्वरातीसारनाशनम् ॥

अर्थ--चिरायता, सोंठ, मिरच, पीपल, नागरमोथा, कडुए इन्द्रजो, ये प्रत्येक एक २ भाग ले; चित्रककी छाल दो भाग, कूडाकी छाल सोलह भाग, सबको एकत्र कर गुड और शीतलजलके साथ पीवे तो संग्रहणी, पांडुरोग, ज्वर, और अतिसार रोग इनको नाश करे इन दोनो भूनिंबादि चूर्णोंमें पाठांतरहै औषधी दोनोंमें एकही है ॥

पाठाद्यंचूर्णम्

पाठाबिल्वानलव्योषंजंबुदाडिमधातकी ॥ कटुकातिविषामुस्तदार्वीभूनिंबवत्सकैः ॥ सर्वैरतैःसमंचूर्णंकौटजंतंदुलांबुना ॥ सक्षौद्रेणपिबेच्छर्दिज्वरातीसारशूलवान् ॥ हृद्दाहग्रहणीदोषारोचकानलसादजित् ॥

अर्थ--पाठ, छोटावेलफल, चीतेकीछाल, सोंठ, मिरच, पीपल, जामुन

अनारदाना, धायके फूल, कुटकी, अतीस, नागरमोथा, दारुहलदी, चिरायता, और कूडाकीछाल, ये समान भागले और सबकी बराबर इन्द्रजो मिलावे इसको चाँवलके धोवनके साथ सहत मिलायके पीवे तो वमन, ज्वर, अतिसार, शूल, हृद्रोग, दाह, संग्रहणी, अरुचि, और मंदाग्निको नाश करे ॥

कटुकेन्द्रयवापाठाकुटजत्वग्रसांजनम्॥धातक्यतिविषाशुंठी मुस्तापिष्टाचवारिणा ॥ विष्टंभमरुचिंरक्तंदाहंचगुदवेदनाम् ॥ पित्तोत्थांग्रहणींहन्तिमधुनासहभक्षितः ॥

अर्थ--कुटकी, इन्द्रजो, पाढ, कूडाकीछाल, रसोत, धायके फूल, अतीस, सोंठ, नागरमोथा, इन सबको जलमें पीसके पीवे तो अफरा, अरुचि, रक्तका दाह, गुदाकी पीडा, पित्तजन्य संग्रहणीका विकार, इनको दूर करे परंतु इसमें सहत और मिलाय लेना चाहिये ॥

चंदनादिघृत

चंदनंपद्मकोशीरपाठामूर्वाकटुत्रयं ॥ षड्ग्रंथासारिवास्फीता सप्तपर्णीपरूषकं ॥ पटोलोदुंबराश्वत्थवटप्लक्षकपित्थकं ॥ कटुकारोहिणीमुस्तानिंबंचद्विपलांशकं ॥ द्रोणेंभसिक्षिपेत्पादशेषप्रस्थंघृतंपचेत् ॥ किराततिक्तेंद्रयवावीरामागधिकोत्पलैः ॥ कल्कैरक्षसमैः पेयंतत्पित्तग्रहणीगदे ॥

अर्थ—चंदन, पद्माख, खस, पाढ, मूर्वा, सोंठ, मिरच, पीपल, वच, सरिवन, उपलसिरी, सातवन, फालसें, पटोलपत्र, गूलर, पीपल, वड, पाखर, कैथ, कुटकी, हरड, नागरमोथा, और नीमकी छाल ये प्रत्येक औषध आठ २ तोले लेय सब १०२४ तोले जलमें डालके काढा करे जब चतुर्थांश शेष रहै तव उतारके छान ले फिर इसमें ६४ तोले घी डालके फिर चूल्हेपर चढाय उसमे चिरायता, इन्द्रजो, काकोली, पीपल, कमल, इनका एक२तोला कल्क डालके घृत सिद्ध करे,इस घृतको वलावल विचारके१तोले देवे तो पित्तकी संग्रहणीका नाश होय।

तिक्तादिकाढा

तिक्तामहोषधरसांजनधातुकीभिः पथ्येंद्रबीजघनकौटजभंगुराभिः ॥ क्राथोहरेद्बहुविधंग्रहणीविकारंपित्तोद्भवंसगुदशूलमतिप्रवृद्धं ॥

अर्थ—कुटकी, सोंठ, रसोत, धायके फूल, हरड, इन्द्रजो, नागरमोथा कूडाकी छाल, और सपेद अतीस इनका काढा अनेक प्रकारकी संग्रहणी, गुदाकी पीडा, और पित्तसंग्रहणी इन सब रोगोंको नाश करे ॥

श्रीफलादिकल्क

श्रीफलशलाटुकल्कोनागरचूर्णेनमिश्रितःसगुडः ॥
ग्रहणीगदमत्युग्रंतक्रभुजाशीलितोजयति ॥

अर्थ—कच्चेबेल गिरीके कल्कमें सोंठका चूर्ण और गुड डालके देवे तथा छाछ भात पथ्यमें देवे तो संग्रहणीका नाश करे ॥

नागरादिचूर्ण

नागरातिविषामुस्ताधातकीसरसांजनं ॥ वत्सकत्वक्फलंबिल्वंपाठातिक्तकरोहिणी ॥ पिबेत्समांशकंचूर्णसक्षौद्रंतंदुलांबुना ॥ पित्तजेग्रहणीदोषेरक्तंयश्चोपवेश्यते ॥ अर्शांसिहृद्गुह्यशूलंजयेच्चैवप्रवाहिकां ॥ नागराद्यमिदंचूर्णकृष्णात्रेयेणभाषितम्॥

अर्थ—सोंठ, अतीस, नागरमोथा, धायके फूल, रसोत, कुडाकी छाल, इन्द्रजो, वेलगिरी, पाढ, चिरायता, और कुटकी, ये समान भाग लेवे सबको कूट पीस चूर्ण कर चावलके धोवनमें सहत मिलायके इसका सेवन करे तो पित्तकी संग्रहणी, रक्तसंग्रहणी, ववासीर, हृद्रोग, गुदाके रोग, शूल, और प्रवाहिका इनको नष्ट करे यह नागरादि चूर्ण कृष्णात्रेयने कहा है ॥

यवान्यादिचूर्ण

यवानीपिप्पलीमूलंचातुर्जातकनागरैः॥धातुकीतिंतिणीकृष्णावालकश्चैकभागिकः ॥ सिताषट्भागसंयुक्तंसर्वचूर्णंप्रकल्पयेत् ॥ कर्षैकंभक्षयेन्नित्यमजाक्षीरंपिबेदनु ॥ नाशयेद्ग्रहणीरोगंपित्तोत्थंसप्रवाहिकम् ॥

अर्थ—अजमायन, पीपरामूल, चातुर्जात, सोंठ, धायके फूल, इमली, पीपर और नेत्रवाला ये प्रत्येक तोले २ भरलेवे, तथा मिश्री छः तोले डाले इन, सवका चूर्ण कर नित्य १ तोले खाय, इसके ऊपर वकरीका दूध पीवे तो पित्त संग्रहणी, और प्रवाहिका इनका नाश करे ॥

चंदनादिकाढा

चंदनंपद्मकोशीरपाठामूर्वाकुटंनटं ॥ सौराष्ट्र्यातिविषापत्रत्व गेलादेवदारुच ॥ मरिचंचूर्णयेत्तुल्यंमधुनालेहयेदनु ॥ अजाक्षीरंजलार्धेनक्काथ्यदुग्धावशेषकं ॥ पिबेत्पित्तहरंरात्रौ क्षीरिणीशाकमाचरेत् ॥दध्यन्नंदापयेत्पथ्यंदुग्धैर्वालाजमंडकं

अर्थ—चंदन, पद्माख, खस, पाढ, मूर्वा, टेंटू, फिटकरी, अतीस, पत्रज, दालचीनी, इलायची, देवदारु, और कालीमिरच, सब समान भाग लेय। सबका चूर्ण कर सहतसैं सेवन करे और इसके ऊपर बकरीका दूधमें आधा पानी डालके औंटावे जब दूध मात्र शेष रहे तब उतारके इस पित्तहरण करनेवालेको रात्रिमें पीवे, खिरनीका साग पथ्यमें देवे, तथा दही भात अथवा खीलोंका मंड पथ्यमें देना चाहिये ॥

रसांजनादिचूर्ण

रसांजनंप्रतिविषावत्सकस्यफलत्वचौ ॥ नागरंधातकीचैतत्सक्षौद्रंतंदुलांबुना ॥ पित्तग्रहणिदोषार्शरक्तपित्तातिसारनुत्

अर्थ—रसोत, अतीस, इन्द्रजो, कूडाकी छाल, सोंठ, और धायके फूल ए समान भाग लेवे सबका चूर्णकर चावलके पानीमें सहत मिलायके इसके साथ सेवन करे तो पित्तसंग्रहणीके दोष, और बवासीर, रक्तपित्त, और पित्तातिसार, इनको नाश करे ॥

भूनिंबादिपुटपाक

भूनिंबरोहिणीपथ्यापटोलंनिंबपर्पटं ॥ तुल्यंमहिषिमूत्रेणमर्द्यमंतःपुटेदहेत् ॥ कर्षंकंलेहयेदाज्यैर्वन्हिदीपनमुत्तमं ॥ दीपनंबहुपित्तेस्यातिक्तंमधुरसंयुतं ॥

अर्थ—चिरायता, कुटकी, हरड, पटोलपत्र, नीमकीछाल, और पित्तपापडा ए समान भाग ले सबको भैसके मूत्रमें पीस पुटपाक विधिसे भूनके इसको १ तोले घीके साथ सेवन करे तो यह अग्नीका दीपन करे यदि पित्तरोगपर लेना होवे तो कुटकी और सहत इनके साथ लेवे ॥

आम्रादियोग

आम्रास्थिविश्वागोशृंगवत्सश्चाम्ररसेनतु ॥ मर्दयेत्रिदिनंसम्य-

क्सितयासहयोजयेत्॥ तस्यपित्तोद्भवांहंतिग्रहणीरोगकारिणीं ॥ ज्वरातिसारंतीव्रंचरक्तस्रावंसशूलनुत् ॥

अर्थ—आमकीकुठली, सोंठ, बबूर, और कूडाकी छाल, ये सब पदार्थोंको आमके रससैं तीनदिन खरलकर इसमें मिश्री मिलायके सेवन करे तो पित्तकी संग्रहणी, ज्वरातिसार, रक्तस्राव, और शूल इनका नाश करे ॥

आम्रादिपेया

आम्रमाम्रातकंजंबूत्वक्कषायेपचेद्भिषक् ॥
यवागूशालिभिर्युक्तांभुक्त्वातांग्रहणींजयेत् ॥

अर्थ—आम, अंबाडा, और जामुन इनकी छालका काढा करके उस काढेमे साली चांवलोंकी यवागू सिद्धकरे, चामल सहित सेवन करे तो पित्तकी संग्रहणी नष्टहोवे ॥

कफसंग्रहणीकी उत्पत्ति

गुर्वतिस्निग्धशीतादिभोजनादतिभोजनात् ॥ भुक्तमात्रस्यच स्वप्नाद्धंत्यग्निंकुपितः कफः ॥ १३ ॥ तस्यान्नंपच्यतेदुःखंहृल्लासच्छर्द्यरोचकाः ॥ आस्योपदेहमाधुर्यकासष्ठीवनपीनसाः ॥ १४ ॥ हृदयेमन्यतेस्त्यानमुदरंस्तिमितंगुरु॥ दुष्टोमधुरमुद्गारःसदनस्त्रीष्वहर्षणम्॥ १५ ॥भिन्नामश्लेष्मसंसृष्टगुरुवर्चःप्रवर्तनम्॥अकृशस्यापिदौर्बल्यमालस्यंचकफात्मके ॥

अर्थ—भारी, अत्यंत निकना, शीतल, आदि पदार्थके खानेसैं। अति भोजनसैं तथा भोजन करके सोनेसैं, इनकारणोंसे कुपित हुआ कफ जठराग्निको शांत करै तब इसके खाया अन्न कष्टसैं पचे, हृदयमें पीडा होय, वमन, अरुचि, मुखका कफसे लिपासा, तथा मुखका मीठा रहना, खांसी कफ थूके सरेकमा होय, हृदय पानीसे भरासदृश होय, पेट भारी और जड हो, दुष्ट और मीठी डकार आवै, अग्निशांति हो, स्त्रीरमणमें अरुचि, पतला आम कफ मिला और भारी ऐसा मल निकले, वल विना शरीर पुष्ट दीखै, आलस्य बहुत आवैयह कफकी संग्रहणीके लक्षण हैं ॥

पंचकोलाभयाधान्यपाठागंधपलांशकैः ॥ बीजपूरप्रवालैश्चसिद्धैः पेयादिकल्पयेत् ॥ ग्रहण्यांश्लेष्मदुष्टायांवमितस्ययथाविधि ॥

अर्थ--पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीतेकी छाल, सोंठ, हरड, धनिया, पाढ, और गंधक ये प्रत्येक एक २ पल लेवे; फिर विजोरेके पत्तों करके सहित पेया बनावे,इस पेयाके पीनेसै कफकी दुष्ट संग्रहणी, और वमन का रोग ये दूर होवे ॥

ग्रहण्यांकफदुष्टायांतीक्ष्णैःप्रच्छर्दनेकृते ॥
कट्वम्ललवणक्षारैस्तिक्तैश्चाग्निंविवर्द्धयेत् ॥

अर्थ--कफके दूषित होनेसैं जो संग्रहणी हुई हो उसको तीक्ष्ण वमनकी औषधी करके कटु, अम्ल, निमक, क्षार, और तिक्त (कडुए) रसों करके इस रोगीकी अग्निको वैद्य बढावे ॥

चित्रकंग्रंथिकंपथ्याकुष्टंप्रतिविषांवचां॥शुंठीमुस्तविडंगंचसुरातक्रोष्णवारिभिः ॥श्लैष्मिकेग्रहणीदोषेपीतंचाग्निविवर्द्धनम् ॥

अर्थ--चीतेकी छाल, पीपरामूल, हरड, कूठ, अतीस, वच, सोंठ नागरमोथा, वायविडंग, इनका चूर्णकरके दारू, छाछ, गरमजल इनकेसाथ कफका संग्रहणीमें पीवे तो संग्रहणी दूर होय और जठराग्नि बढे ॥

हिंगुक्षारौसमौपथ्याशुंठीपिप्पलिचित्रकाः ॥
द्व्यंशास्तत्पूर्ववत्पीतश्लेष्मग्रहणिदोषनुत्

अर्थ--हींग, जवाखार दोनो समान ले, हरड, सोंठ, तथा पीपर, और चित्रककी छाल, ये दोदो भागलेकैं चूर्णकरे और दारू, छाछ, अथवा गरम जलके साथ पीवेतो कफकी संग्रहणीका विकार नष्ट होय ॥

अभयातिविषाशुंठीवचामुस्ताकणाशिफा ॥ विडादिलवणंवन्हिकुष्टंदारुसमांशतः॥सुश्लक्ष्णचूर्णमेतेषांभक्षितंतप्तवारिणा॥ श्लेष्मजांग्रहणींहंतिरक्तामाभ्यांसहाचिरात् ॥

अर्थ--जंगीहरड, अतीस, सोंठ, वच, नागरमोथा, पीपरामूल, विडादिपंचनिमक चीतेकी छाल, कूठ, देवदार, येप्रत्येक समान भागलेवे सबका चूर्णकर गरम जलके साथ भक्षण करे तो कफजन्य संग्रहणी, तथा रक्त और आमयुक्त संग्रहणी-भी शीघ्र दूर होवे ॥

पलाशंचित्रकंचव्यंमातुलुंगंहरीतकी ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलं

पाठाधान्यकनागरम्॥ कार्षिकान्युदकप्रस्थेपक्त्वापादावशे षितम् ॥ पानीयार्थेप्रयुंजीतयवागूंतैश्चसाधिताम् ॥

अर्थ—ढाकके बीज, चीतेकीछाल, चव्य, बिजोरा, हरड, पीपल, पीपरामूल पाढ, धनिया, और सोंठ, ये प्रत्येक एक२ तोले लेवे,सबको जबकुट करके१ सेर जल डालके ओंटावे, जब चतुर्थांशशेष रहे तब उतारके छानलेवे, इस क्वाथमें यवागूसिद्धकरे इसयवागू के सेवन करनेसैं कफजन्य संग्रहणी नष्टहोवे ॥

पथ्याशुंठीकणावन्हिचूर्णमेषांसमासतः
तक्रपीतंध्रुवंहंतिग्रहणींश्लेष्मसंभवाम्

अर्थ—हरड़, सोंठ, पीपल, चीतेकीछाल, इनका चूर्णकरके छाछके साथ पीवे तो कफकी संग्रहणी दूर होय ॥

समूलांपिप्पलीक्षारौद्वौपंचलवणानिच ॥ मातुलुंगाभयारास्नासठीमरिचनागरैः ॥ कृत्वासमांशंतच्चूर्णंपिबेत्प्रातः सुखाम्बुना ॥ श्लैष्मिकेग्रहणीदोषेबलमांसाग्निवर्द्धनम् ॥ एतैरेवौषधैःसिद्धंसर्पिः पेयंसमारुते ॥

अर्थ—पीपर, पीपरामूल, सज्जीखार, जवाखार, पांचोनिमक, बिजोरा, हरड, रास्ना, कचूर, कालीमिरच, सोंठ, इनका समानभाग चूर्ण करके प्रातःकाल सुखोष्ण जलके साथ पीवे तो कफकी संग्रहणीको नष्ट करे तथा बल और मांसको बढावे यदि वादीकी संग्रहणी होय तो इन्ही पूर्वोक्त औषधोंसैं घी सिद्ध करके पीवे ॥

सठ्यादिचूर्ण

सठीव्योषाभयाक्षारौग्रंथिकंबीजपूरकम् ॥
लवणाम्लांबुनापेयंश्लैष्मिकेग्रहणीगदे ॥

अर्थ—कचूर, सोंठ, कालीमिरच, पीपर, हरड, जवाखार, सज्जीखार, पीपरामूल, और बिजोरा इनका चूर्ण सैंधानिमक और निंबूका रस इनके साथ पीवे तो यह कफसंग्रहणी नाश करे ॥

रास्नादिचूर्ण

रास्नापथ्यासठीव्योषंद्वौक्षारौलवणानिच ॥ ग्रंथिकंमातुलुंगंचसममेकत्रचूर्णयेत्॥पिबेदुष्णेनतोयेनश्लैष्मिकेग्रहणीगदे ॥

अर्थ—रास्ना, हरड, कचूर, सोंठ, मिरच, पीपल, सज्जीखार, जवाखार, सैंधानिमक, संचर, विडनोन, पीपरामूल, और बिजोरेकी केशर, इनका चूर्ण गरमजलके साथ पीवे तो कफकी संग्रहणीको नाश करे ॥

पथ्यादितक्रयोग

पथ्याकणानागरवन्हिचूर्णंतक्रेणपीतंग्रहणीगदघ्नम्
तक्रेणहन्यात्किलकेवलंवाशुंठीकणाभ्यांग्रहणींसशूलां

अर्थ—हरड, पीपल, सोंठ, और चीतेकी छाल, इनका चूर्ण छाछसैं पीवेतो शूलयुक्त संग्रहणी और कफसंग्रहणी इनका नाश करे । अथवा केवल सोंठ और पीपलका चूर्ण छाछसैं पीवेतो कफकी संग्रहणीको नाश करे ॥

चतुर्भद्रादिकाढा

गुडूच्यातिविषाशुंठीमुस्तैःक्काथःकृतोजयेत् ॥
आमानुषक्तांग्रहणींग्राहीदीपनपाचनः ॥

अर्थ—गिलोय, अतीस, सोंठ और नागरमोथा इनका काढा सेवन करनेसैं आम संग्रहणीका नाश करे तथा ग्राहक अग्निदीपक, और पाचन है ॥

कठिनमलकीचिकित्सा

कृछ्रेणकठिनत्वेनयःपुरीषंविमुंचति ॥
सघृतंलवणंतस्यपायत्क्लेशशांतये ॥

अर्थ—जिसप्राणीका कष्टसैं और कठोर असा मल उतरे उसको घीमें निमक मिलायके पिवावे तो उसका कष्टयुक्त कठोर दस्तहोना दूर होवै ॥

विडंगादियोग

विडंयवानीविष्टंभेपिबेदुष्णेनवारिणा॥

अर्थ—वायविडंग और अजमायन इनके चूर्णको गरम जलसैं पीवे तो विष्टंभ (कष्टसैं मलका उतरना) नाश होय ॥

वातश्लेष्मसंग्रहणी

वातश्लेष्माधिकेयोज्याकुटजाद्यवलेहिका ॥ पर्पटीरसगुंजाष्टौलिहेन्मध्वाज्यकेनया ॥ सहिंगुजीरकंव्योषंनिष्काधंभक्षयेदनु ॥ ग्रहणींकफवातोत्थांशमयेत्तक्रभोजने ॥

अर्थ—वातकफाधिक्य संग्रहणीपर कुटजावलेह देनी चाहिये अथवा पर्पटीरस रत्ती ८ लेकर सहत और घीसैं देवे। और इसके ऊपर हींग, जीरा, सोंठ मिरच और पीपल इनका चूर्ण २ मासे देवे तथा छाछ भातका उसको भोजन करावे तो कफवातजन्य संग्रहणीका नाश होय॥

कर्चूरादिचूर्ण

कर्चूरोलवणंपंचरास्नात्र्यूषंहरीतकी ॥ सर्जिक्षारंयवक्षारंमातुलुंगंसमंसमम् ॥ चूर्णमुष्णांबुनापेयंबलवर्णाग्निवर्धनं ॥ श्लेष्मिकंग्रहणोदोषंसवातंचविनाशयेत् ॥

अर्थ—कचूर, पांचोनिमक, रास्ना, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, हरड सज्जीखार, जवाखार, और विजोरेका जीरा ये समान भाग लेवे इनका चूर्ण गरम जलसैं पीवे तो बल, तथा अग्नि इनको बढावे और कफवातजन्य संग्रहणीका नाश करे॥

तालीसादिवटी

तालीसपत्रचविकामरिचानांपलंपलं ॥ कृष्णातन्मूलयोर्द्वेद्वे पलेशुंठीपलत्रयं ॥ चातुर्जातमुशीरंचकर्षांशंसूक्ष्मचूर्णितं॥चूर्णस्यत्रिगुणेनैवगुडेनवटिकाकृता ॥ भक्षयेत्तुपलार्धंचवातश्लेष्मोत्थितेगदे ॥ उत्कटांग्रहणींछर्दिंकासंश्वासंज्वरारुची ॥ शोफगुल्मोदरंपांडुंतालीसाद्येननाशयेत् ॥

अर्थ—तालीसपत्र, चव्य, कालीमिरच, ये प्रत्येक चार २ तोले लेवे, पीपल और पीपरामूल ये आठ २तोले लेवे, सोंठ बारह तोले, चातुर्जात तथा नेत्रवाला ये एकएक तोले लेकर सबका चूर्ण करे, और चूर्णसैं तिगुना गुड मिलाय दो दो तोलेकी गोली बनावे। इसके भक्षण करनेसैं कष्टतर संग्रहणी, वमन, खांसी, श्वास, ज्वर, अरुचि, सूजन, गोला, उदरका रोग, तथा पांडु (पीलियाका) रोग इनको नाश करे इसको (तालीसादि वटी) कहते है॥

कफपित्तसंग्रहणीऊपररसादिवटिका

शुद्धंसूतंत्रिधागंधंजंबीरैर्मर्दयेद्दिनं॥ सर्वांशंजीवशंबूकमरीचिमधुसंयुतं ॥ निष्ककेननिहंत्याशुग्रहणींकफपित्तजां॥

अर्थ—शुद्धपारा १ तोले, और शुद्धगंधक ३ तोले, इन दोनोकी कजली क-

रके इसमें सबकी बरावर जीवसहित छोटा शंख डालके जंभीरीके रससैं एकदिन खरल करे और मिरचके चूर्ण तथा सहतसैं चारमासेकी मात्रा देवे तो कफपित्तजन्य संग्रहणीको नष्टकरे ॥

मुसल्यादियोग

मुसलींपेषयेत्तक्रेअथवातंडुलोदकैः ॥
कर्षैकंयोजयेच्चानुपथ्यंतक्रौदनंहितं ॥

अर्थ—मूसलीके चूर्णको छाछमें अथवा चावलके धोवनमें पीसके एक तोले देवे तथा पथ्यमें छाछ और भातदेयतो यह संग्रहणीको नाश करे ॥

वातपित्तसंग्रहणीऊपरमुंड्यादिगुटिका

मुंडीशतावरीमुस्तावानरीदुग्धिकामृता ॥ यष्टीकंसैंधवंतुल्यं सूक्ष्मचूर्णप्रकल्पयेत् ॥ चूर्णस्यद्विगुणंयोज्याविजयामृदुर्भर्जिता॥घृतस्निग्धेपचेद्भांडेदुग्धंदशगुणंगवां॥यावत्पिंडत्वमापन्ना तावन्मृद्वग्निनापचेत् ॥ पिंडतुल्यंतुसत्क्षौद्रंमिश्रीनिष्कत्रयं-त्रयं ॥ भक्षयेद्विजयेद्देवद्वंद्वजंग्रहणीगदं ॥ पित्तवातेश्लेष्मपित्तेसम्यक्पित्तेचयोजयेत् ॥

अर्थ—गोरखमुंडी, सतावर, नागरमोथा, कौंचके बीज, दुद्धि, गिलोय, और सैंधानिमक इनका बारीक चूर्ण कर चूर्णसैं दुगनी भुनी हुई भांग मिलायके घीके बासनमें गौके दसगुने दूधमें मंदाग्निसैं पक्ककरे जब गोला वधने लगे तब उतारके इसमें गोलेके समान सहत मिलाय देवे फिर इसमेंसैं १ तोले को तीन तोले मिश्रीके साथ भक्षण करे तो द्वंद्वजसंग्रहणी, पित्तवात, श्लेष्मपित्त और पित्त इनका नाश करे, यह मुंड्यादिगुटिका कहाताहै ॥

सन्निपातग्रहणीनिदानलक्षण

पृथक्वातादिनिर्दिष्टहेतुलिंगसमन्विते ॥
त्रिदोषंनिर्दिशेदेनंतस्यवक्ष्यामिलक्षणं ॥

अर्थ—वातादि तीनों दोषोंके जो लक्षण कहआयेहै वे सब जिसमें मिलते होय उसको त्रिदोषकी संग्रहणी जानिये (तेषां वक्ष्यामि भेषजम्?) ये पद केवल पादपूरणार्थ लिखाहै ॥

आमंबहुसपैच्छिल्यंसशब्दंमंदवेदनं ॥

पक्षान्मासाद्दशाहाद्वानित्यंचापिविमुंचति ॥

अर्थ—त्रिदोषसंग्रहणी रोग अपक्व, बहुत ल्हसदार, मंदपीडा और शब्द इन करके युक्त ऐसे मलको १५ पंद्रह दिनमें किंवा १ महिनेमें अथवा दशदिनमें तथा नित्य प्रति गुदाद्वारा त्याग करे ॥

असाध्यलक्षण

दिवाप्रकोपोभवतिरात्रौशांतिंव्रजत्यपि ॥
दुर्विज्ञेयादुर्निवाराचिरकालानुबंधिनी ॥

अर्थ—जो संग्रहणी दिनमें कुपित हो और रात्रिमें यत्किंचित् शांति हो जावे वह अत्यंत दुर्ज्ञेय (जो जाननेमे न आवे) और दुर्निवार (जो दूर न हो सके) तथा बहुत काल पर्यंत रहनेवाली जाननी ॥

घटीयंत्रग्रहणीलक्षण

प्रसुप्तिःपार्श्वयोःशूलंतथाजलघटीध्वनिः ॥
तंवदंतिघटीयंत्रमसाध्यंग्रहणीगदं ॥

अर्थ—जिस संग्रहणीमें अंगमें नोचनेसे मालूम न हो, ऐसा सून्यता होवे, तथा दोनो कूखोंमें शूल होवे पेटमें गुडगुडाहटशब्द हो उस व्याधिको घटीयंत्रसंग्रहणी कहते है [घटीनाम घडेका है उस भरे घडेको रीता करनेके समान शब्द होनेसे वैद्योंने इसका घटीयंत्रनाम रक्खा है] यह असाध्य है ऐसा जानना ॥

लिंगैरसाध्योग्रहणीविकारोयैस्तैरतीसारगदोनिषिध्येत् ॥
वृद्धस्यनूनंग्रहणीविकारोहत्वातनुंनोविनिवर्ततेच ॥

अर्थ—जिन लक्षणों करके अतिसार रोग असाध्य कहा है यदि वो लक्षण संग्रहणीमें मिले तो वह संग्रहणीरोग असाध्य जानना । तथा वृद्धमनुष्यके संग्रहणीका रोग हुआ होय तो विना प्राणहरण करे नही छोडे यह निश्चय है ॥

अतीसारस्यारिष्टानिग्रहण्यामपिलक्षयेत् ॥

अर्थ—अतिसाररोगमें जो उपद्रव होतेहै वोही प्राय संग्रहणीमें होते है ऐसा वैद्यको जानना चाहिये ॥

अथ तस्याश्चिकित्सामाह

सर्वजायांग्रहण्यांतुसामान्योविधिरिष्यते ॥ दीपनान्यन्नपाना

निचूर्णारिष्टघृतानिच ॥ प्रविभज्ययथावस्थंसर्वजेबस्तिकर्मच ॥

अर्थ—अब संपूर्ण दोषोंसें होनेवाली संग्रहणीकी सामान्य विधि कही जाती है यावन्मात्र दीपनकर्ता अन्न, पान, चूर्ण, अरिष्ट, घृतहै उनको यथायोग अवस्था विचारकै देवे तथा सन्निपातजन्य संग्रहणीमें बस्तिकर्म करना चाहिये ॥

शतावरीघृत

शतावरीचंदनचोत्पलंचप्रियंगुपाठामगधास्थिराभिः ॥ बिल्वाजमोदातिविषासभंगाजीवंतिवह्नीन्द्रयवैःसुपिष्टैः॥घृतंकषायेतुकलिंगकानांपक्कंनिहन्याद्ग्रहणींत्रिदोषाम्॥पित्तातिसारंरुधिरप्रवाहंतथार्शसांदोषसमुद्भवंच ॥

अर्थ—सतावर, चंदन, कमल, फूल प्रियंगु, पाढ, पीपर, सालपर्णी, बेलगिरी, अजमोद, अतीस, मजीठ, जीवंती, चीतेकी छाल, इन्द्रजो, इन सबको समानभाग लेके काढा करे इस काढेसें घृत बनावे यह घी त्रिदोषकी संग्रहणीको, पित्तातिसारको, रुधिरके प्रवाहको, तथा बवासीर इन सबको नष्ट करे ॥

आरुष्करंघृतम्

अरुष्करं हिंगुकणा सयष्टी भूतीक शुंठी मरिचं शताव्हा ॥ अजाजिचव्यारुचकंसवन्हि विडंविडंगं सहदीप्यकंच ॥ सक्षारहिंगुत्रिकटूग्रगंधापलार्धभागैर्विपचेद्विधिज्ञः ॥ अजाधान्यकचांगेरीदशमूलीमृतैः पृथक् ॥ हविः प्रस्थंनिहंत्याशुग्रहणीं सर्वजां नृणाम् ॥ विष्टंभमामजान्रोगान्कृमिजान् कुक्षिजांस्तथा ॥ मंदानलभवान्सर्वान्नभस्वानिववारिदम् ॥

अर्थ—भिलाये, हींग, पीपल, मुलहटी, रोहिषतृण, सोंठ, मिरच, और सतावर, सपेदजीरा, चव्य, संचरनिमक, चीतेकी छाल, बिडनिमक, वायविडंग, अजमायन, जवाखार, हींग, त्रिकुटा, वच, ये प्रत्येक दो दो तोले लेवे इनको बकरीका मूत्र, धनिया, चूका और दशमूल इनके काढेमें पृथक् २ पचाय १ प्रस्थघृत सिद्ध करे यह घी सर्वदोषजन्य संग्रहणीको दूर करे, तथा अफरा आमवातके रोग, कृमिजन्यरोग, कूखकेरोग, मंदाग्निसें होनेवाले रोग इन सबको जैसें पवन बद्दलोंको नष्टकरे इसप्रकार यह नष्ट करे कोई आचार्य अरुष्कर करके अमलतासका ग्रहण करते है ॥

सामस्तथानिरामो दोषोग्रहणीमुपाश्रितोद्विविधः॥ प्रोक्तोऽति सारणांच विज्ञेयोपाचरेद्वैद्यः॥

अर्थ—संग्रहणी दो प्रकारकी है एक साम दूसरी निराम यह भेद अतिसार-रोगमें कह आएहै उसके अनुसार सामनिरामके लक्षण विचारकै वैद्य चिकित्सा करे

अतिसारिणोऽतिसारे यदभिहितं पाचनादितदभिज्ञैः॥ अत्रा-प्यनुसंधेयंकिन्तुविशेषः क्वचित्तंत्रे॥

अर्थ—अतिसारवालेको अतिसाररोगमें जो विद्वान् वैद्योंने पाचनादि कहे है वो सब इस संग्रहणीरोगमेंभी देना चाहिये तथा किसी २ तंत्रमें जो विशेष औषध कही है वो देवे॥

तक्रसेवन

दुःसाध्योग्रहणीरोगोभेषजैर्नैवशाम्यति॥ सहस्रशोपिविहि तैर्विनातक्रस्यसेवनात्॥दोषधातुबलापेक्षोग्रहण्यांतक्रमापिबेत्

अर्थ—संग्रहणी रोग दुःसाध्य है वह हजारों औषधोंके सेवन करनेपर भी शांत नहीं होता अतएव दोष, धातु, और बल इनके सामर्थ्यके अनुसार छाछका सेवन करे, क्योंकि विनातक्र (छाछ) सेवन करनेके ग्रहणी रोग शांति नहीं होवे॥

तक्रसेवन

ग्रहणीरोगिणांतक्रंसंग्राहिलघुदीपनं॥सेवनीयंसदागव्यंत्रिदोष शमनंहितं॥ तक्रंचमधुरंशुंठीचूर्णयुक्तंपिबेत्सदा॥शनैःशनैर्ह-रेदन्नंतक्रंतुपरिवर्धयेत्॥ तक्रमेवयथाहारोभवेदन्नविवर्जितः॥ तक्रसात्म्यंयथाकुर्यान्नैवान्नंतत्रभक्षयेत्॥ बुभुक्षायांपिपासा-यांपिबेत्तक्रंसनागरं॥ मौनंचकुर्याद्बहुशोनकुर्याद्बहुभाषणं॥ नकुर्यान्मैथुनंतक्रपानेक्रोधंविवर्जयेत्॥ एवंयःसेवतेतक्रंग्र-हणीतस्यनश्यति॥ शीघ्रमेवनसंदेहःश्रीर्यथानृतकारिणः॥

अर्थ—संग्रहणीवाले रोगीको छाछ पीना लघु और दीपन है। गौकी छाछ त्रिदोष नाशक,तथा हितकारी है, इसमें सोंठका चूर्ण मिलायके पीवे और धीरे २ क्रमसैं अन्नको घटाता जाय और छाछको बढाता जावे, इस प्रकार कर-ते २ केवल छाछ मात्र रह जावे अन्न सर्वथा छूट जाय वहां तक करे।इसपर अन्न न खाय, जब २ भूक और प्यास लगे तभी २ सोंठका चूर्ण डालके छाछ पिला-

नी चाहिये, और जहांतक होसके मौन रहे, वहुत बोलना इसपर निषेध है तथा छाछ पीने वालेको मैथुन करना, तथा क्रोध करना वर्जित है, इस प्रकार छाछ पीनेसें शीघ्र संग्रहणी रोग नाश होवे ॥

दुसराप्रकार

वातेम्लंसैंधवोपेतंपित्तेस्वादुसशर्करं ॥ पिबेत्तक्रंकफेचापिक्षारत्रिकटुसंयुतं ॥ हिंगुजीरयुतंघोलंसैंधवेनावधूलितं ॥ ग्रहण्यर्शोतिसारघ्नंभवेद्वातहरंपरं ॥

अर्थ—वातसंग्रहणीपर खट्टी छाछमें सैंधानिमक डालके देवे । पित्तकी संग्रहणीपर मिष्ठ छाछमें सपेद बूरा वा सपेद खांड मिलायके पीवे । कफकी संग्रहणीमें क्षार, तथा त्रिकुटा डालके देवे, और हींग, जीरा, तथा सैंधानिमक मिलायके दहीकी मथी हुई छाछ देवे तो ये संग्रहणी, ववासीर, अतिसार, और वायु इनको नाश करे ॥

तक्रयोग्यगौ.

चारयेद्विपिनेदोग्ध्रींलताशाद्वलसंकुले॥पीतांभसोगतायासाः कामगास्तागृहंनयेत् ॥ दुग्ध्वादुग्धमुपादद्यात्ततस्तक्रेकृते कृती ॥ असृतंतद्धितंवाते पित्तेकिंचित्सृतंस्मृतम् ॥ सन्निपातरुजिश्लेष्मण्यपिपादोनसंसृते ॥

अर्थ—जिस गौका तक्र (छाछ) बनाना हो उसको जिस बनमैं अनेक प्रकारकी लतापता (वनस्पति) हो उसमें चरावे फिर सायंकालके समय जल पीकैं और परिश्रम दूर होगया हो उसको उसकी इच्छा पूर्वक धीरे २ घरमें लावे, फिर उसका दूध दुहके छाछ बनानेकी विधिसै तक्र (छाछ) बनावे। वादीके रोगमें कच्चे दूधको जमायके छाछ बनावे, पित्तके रोगमें कुछ थोडासा ओंटायके छाछ बनावे, और सन्निपातके रोगमें तथा कफके विकारमें एक हिस्सा दूध जलजावे तब छाछ बनावे ॥

पक्क और अपक्कतक्रकेगुण

तक्रमामंकफंकोष्ठे हन्तिकंठेकरोतिच ॥ पीनसश्वासकासादौपक्कमेवावशिष्यते ॥

अर्थ—कच्ची छाछ कोठेके कफको नष्ट करे और कंठमें कफको करे है, तथा पीनस, श्वास, खांसी, इनमें पक्क (पकी) छाछ देनी चाहिये ॥

ज्वालालिंगरस

शुद्धंसूतंमृतंस्वर्णमरिचंतुत्थकंसमं॥ ज्वालामुख्याग्निजैर्द्रावै-र्जलंमंदंविपाचयेत्॥ दिनैकंमर्दयेत्खल्वेगुंजामात्रंचभक्षयेत्॥ ज्वालालिंगरसोनामत्रिदोषेयोजयेत्सदा ॥ कर्षैकंवन्हिमूलंतु तक्रेपिष्टापिबेदनु ॥ तक्रारिष्टयुतंपथ्यंशाल्यन्नंभक्षयेत्सदा ॥

अर्थ—शुद्धपारा, सुवर्णकी भस्म, कालीमिरच, और लीला थोथा, ये समान भाग लेवे सबको खरलकर ज्वालामुखी, और चीतेके रससे मंदाग्निपर पचन करे, फिर एक दिन खरल करे । इसमेंसे एकरत्ती त्रिदोषपर देवे ऊपरसे चीतेकी जडको छाछमें पीसके वह१तोले छाछ पीनेको देवे तथा पथ्यमे छाछ और भात और मद्य देय तो यह त्रिदोषजन्य संग्रहणीको नष्ट करे॥

ग्रहणीकपाटरस

तारमौक्तिकहेमानिसाराश्चैकैकभागिकाः॥द्विभागोगंधकःसूतस्त्रिभागोमर्दयेद्भिषक् ॥ कपित्थस्वरसैर्गाढंमृगशृंगेतुतत्क्षिपेत् ॥ पुटेन्मध्यपुटेनैवततउद्धृत्यमर्दयेत्॥बलारसैःसप्तवेलमपामार्गरसैस्त्रिधा ॥ माषमात्रंरसोदेयोमधुनामरिचैस्तथा॥ हन्यात्सर्वानतीसारान्ग्रहणींसर्वजामपि ॥ कपाटोग्रहणीरोगेरसोयंवन्हिदीपनः ॥

अर्थ—रूपेकी भस्म, मोतीकी भस्म, सुवर्णभस्म, कांतलोहकी भस्म, ये प्रत्येक एक एक तोले लेवे तथा गंधक २ तोले लेय और पारा ३ तोले, इन सबको एकत्र कर कैथके रसमें खरलकर हरणके सींगमें भरके मध्यम पुटमें धरके फूंक देवे, जब स्वांग शीतल होजावे तब निकालके खरेटीके रसकी सात भावना देवे तथा ओंगाके रसकी तीन भावना देय तो यह (ग्रहणी कपाटरस) तयार हो, इसमेंसे १ मासे रस सहत तथा कालीमिरचोंका चूर्ण इनके साथ देवे तो संपूर्ण अतिसार और सन्निपातात्मक संग्रहणी इनका नाश करे तथा अग्निको दीपन करे ॥

दुसराप्रकार

रसेनगंधातिविषाभयाभ्रंदशत्रयंमोचरसंवचाच ॥ ज-

याचजंवीररसेनपिष्टःपिंडीकृतःस्याग्रहणीकपाटः ॥

अर्थ–शुद्धपारा, शुद्धगंधक,अतीस,हरड, और अभ्रकभस्म ये प्रत्येक दश२तोले लेवे और मोचरस, वच, और भांग, ये प्रत्येक तीन २ तोले लेय सबको एकत्र कर खरलमें डाल नींबूके रसमें घोटके गोली बनावे इसको (ग्रहणीकपाटरस) कहते हे, यह संग्रहणी रूप दरवाजोंके वंदकरनेको किवाड रूप है ॥

तिसराप्रकार

शुद्धैःकर्कवराटकैर्गणनयाभल्लातकात्तत्समान्स्रोतान्बब्बुलकंटकैर्लघुपुटैस्तस्यांघ्रिभागस्यच ॥ ळेलीतेनसमंविचूर्ण्यज ययासप्तानुभाव्यंशिवप्रोक्तोयंग्रहणीकपाटकरसस्त्रैवल्लकः स्वौषधैः ॥

अर्थ—उत्तम सपेद बडी २ कौडी लेवे, जितनी कौडी होवे उन्हीके समान भिलाये लेय, उनको बबूरके कांटोंसैं छेदकर लघुपुटमें उनका तेल निकास लेवे इसप्रकार भिलाएका निकालाहुआ तेल चतुर्थांश ले, तथा गंधक कौडियोंकी बराबर लेवे, इन सबको एकत्र खरल करे और इसमें सात पुट भांगकी देवे तो यह (ग्रहणीकपाट) शिवका कहा हुआ अनुमानसैं तीन वल्ल देवे तो संग्रहणीको दूर करे ॥

वज्रकपाटरस

मृतमूताभ्रकंगंधंयवक्षारंसटंकणं ॥ अग्निमंथंवचांकुर्यात्सूततुल्यानिमान्सुधीः॥ततोजयंतीजंबीरमृगद्रावैर्विमर्दयेत्॥ त्रिवासरंततोगोलंकृत्वासंशोष्यसाधयेत् ॥ लोहपात्रेशरावेचदत्वोपरिचमुद्रयेत् ॥ अधोवन्हिंशनैःकुर्यात्यामार्धंततउद्धरेत् ॥ रसतुल्यांप्रतिविषांदद्यान्मोचरसस्तथा ॥ कपित्थविजयाद्रावैर्भावयेत्सप्तधापृथक् ॥ धातकींद्रयवामुस्तालोध्रबिल्वगुडूचिका ॥ एतैर्द्रवैर्भावयित्वावल्लैकैकंतुशोषयेत् ॥ रसंवज्रकपाटाख्यंमाषैकंमधुनालिहेत् ॥ वन्हिशुंठींविडंबिल्वंलवणं चूर्णयेत्समं ॥ पिबेदुष्णांबुनाचानुसर्वजांग्रहणींहरेत् ॥

अर्थ—पारेकी भस्म, अभ्रक भस्म, गंधक, जवाखार, सुहागा, अरनी और वच ये प्रत्येक समान भाग लेवे चूर्ण करे उसमें भांग, निंबू, और भांगरा इनके

रसमें तीन दिन खरल करे। फिर इसका गोला करके धूपमें सुखाय ले, फिर इसको लोहके पात्रमें अथवा शरावसंपुटमें रखके मुद्रा करे फिर इसको अग्निपर चढायके चार घडी पचन करावे फिर उतारके संपुटमेंसैं औषधोंको निकाल समान भाग अतीसका चूर्ण और मोचरस मिलायके कैथ और भांगके रसकी सात २ भावना देवे पश्चात् धायके फूल, इन्द्रजो, नागरमोथा, लोध, वेलगिरी, और गिलोय इनके काढेमें अथवा इनके रसमें एक एक भावना देवे फिर २ अथवा ३ रत्तीकी गोलिया बनावे तो यह (वज्रकपाटरस) तयार होवे, यह एक मासे रस सहतसे देय, और इसके ऊपर चीता, सोंठ, वायविडंग, वेलगिरी, और निमक इनका चूर्णकर गरम जलसैं पीवे तो सर्व प्रकारकी संग्रहणीको नष्ट करे ॥

ग्रहणिकामदवारणसिंह

सुरभिपारदहिंगुलचित्रकान्गगनभृष्टसुटंकणजातिकान् ॥
कनकबीजमथोतिविषाकटुत्रयहरीतकिभस्मसुदीप्यकान् ॥
गरलबिल्वकलिंगकपित्थकान्नलदमोचकदाडिमधातकी।
जलदशाल्मलिपिच्छयुतान्समान्कनकसाम्यमफेनमिदंदृढं॥
कनकपत्ररसैःपरिमर्दयेन्मरिचमानवटीमधुसंयुता। विनिहरेद्ग्र
हणीगदमुत्कटंज्वरयुतामसतींचविषूचिकां॥अग्निमांद्यमथशू
लविबंधगुल्मशूलमथपांडुममंदं ॥ सरुधिराममतीवसमुत्क
टंग्रहणिकामदवारणसिंहः ॥

अर्थ—शुद्धपारा, शुद्ध हिंगुल, चीता, अभ्रकभस्म, भुना सुहागा, शुद्ध धतूरेके बीज, अतीस, सोंठ, मिरच, पीपल, जंगीहरड, आरनेउपलोंकी राख, अजमायन, सिंगिया विष, वेलगिरी, इन्द्रजो, कैथ, नेत्रवाला, मोचरस, अनारकी छाल, धायके फूल, नागरमोथा, सेमरके फूल, धतूरा और अफीम ए समान भाग लेवे सबको धतूरेके पत्तोंके रससैं खरल करे कालीमिरचके समान गोली बनावे १ गोली सहतसैं देवे तो ज्वरयुक्त संग्रहणी, दुष्टविशूचिका, मंदाग्नि, शूल, अनेक प्रकारके गोला, तीव्र पांडुरोग, और रक्तस्रावी आमका रोग, इन सबको नाश करे अतएव इसको (ग्रहणीकामदवारणसिंह) कहते है ॥

पारदादिवटी

पारदंगंधकंतारममृतंचानुशुल्बकं ॥ त्रिफलात्रिसुगंधीचचि

त्रकोशीररेणुकाः ॥ रजनीद्वयसंयुक्तंसंपिष्यवटकीकृतं ॥ ग्रहण्यष्टविधंशूलंशोथातीसारनाशनम् ॥

अर्थ--पारा, गंधक, रूपेकी भस्म, विष, तामेकी भस्म, त्रिफला, त्रिसुगंध, चीता, नेत्रवाला, पित्तपापडा, हलदी, और दारुहलदी ये सब एकत्र करके घोटे फिर गाढा होनेपर गोली बनाय लेय तो यह संग्रहणी, आठ प्रकारका शूल रोग, सूजन और अतिसार इनका नाश करे ॥

सज्जीक्षारादियोग

सर्जिकायवशूकंवाविजयातिविषासमम् ॥ दीप्यकंपारदंगंधंनिंबुनीरेणभावयेत् ॥ माषार्धंमधुनादेयंसितयावाघृतान्वितं॥ अनुदद्यात्ग्रहण्यार्तिज्वरातीसारशांतये ॥ सशूलशोथसहितांग्रहण्यार्तिप्रणाशयेत् ॥

अर्थ--सज्जीखार, जवाखार, भांग, अतीस, अजमायन, पारा, और गंधक ये सब औषध समान भाग लेवे सबका एकत्र चूर्ण करके नींबूके रसकी भावना देवे, इसमेंसे ४ रत्ती रस सहतमें मिलायके देवे और ऊपरसें खांड, और घी, मिलायके भक्षण करे तो यह योग संग्रहणी और ज्वर, अतिसार, शूल और सूजन इन करके युक्तसंग्रहणीको नाश करे ॥

पारदादिवटी

दग्ध्वावराटकान्पीतान्त्र्यूषणंटंकणंविषं ॥ गंधकंशुद्धसूतंचसमंजंबीरजैर्द्रवैः ॥ मर्दयेत्भक्षयेत्माषंमरीचाज्यंलिहेदनु॥ निहंतिग्रहणीरोगान्पथ्यंतक्रौदनंहितं ॥

अर्थ—पारा, गंधक, रूपेकीभस्म, सिंगियाविष, ताम्रभस्म, त्रिफला, त्रिसुगंध, चीतेकीछाल, पीलेरंगकी कौडी लेकर अग्निमें राख कर ले, उस कौडीकी राखके समान, सोंठ, मिरच, पीपल, सुहागा, विष, गंधक, और पारा, ये समान भाग लेवे इनको नींबूके रसमें खरल कर इसमेसैं १ मासे रस कालीमिरच और घीके साथ देवे पथ्यमें छाछ भात देय तो संग्रहणीका नाश करे, तथा ज्वरप्रकरणमें व्याधिगजकेशरी रस कहा है उसको भी देवे ॥

सुवर्णरसपर्पटी

शुद्धसूतंपलमितंतुर्यांशंस्वर्णसंयुतं ॥ मर्दयेन्निंबुनीरेणयावदे

कत्वमाप्नुयात् ॥ प्रक्षाल्योष्णांबुनापश्चात्पलमात्रेसुगंधके ॥ द्रुतेलोहमयेपात्रेबादरानलयोगतः ॥ प्रक्षिप्यचालयेल्लौह्यामंदंमंदंविलोक्यच॥ ततःपाकंविदित्वातुरंभापत्रेविनिःक्षिपेत्॥ गोमयस्थेतदुपरिरंभापत्रेणयंत्रयेत् ॥ शीतंतच्चूर्णितंगुंजाक्रमवृद्ध्यानिषेवयेत्॥माषमात्रंभवेद्यावत्ततोमात्रांनवर्धयेत्॥स क्षौद्रेणोषणेनैवलेहयेद्भिषगुत्तमः ॥ ग्रहणींहंतिशोषंचसुवर्णरसपर्पटी ॥ सद्योबलकरीशुक्रवर्धनीवन्हिदीपनी ॥ क्षयकासश्वासमेहशूलातीसारपांडुनुत् ॥

अर्थ—शुद्धपारा४तोले, और सुवर्ण केवर्क १तोले एकत्र करके नींबूके रससें खरल करे, जब मिलके एक रूप होजावे तब इसको गरम जलसें धोयकर इसमेंसें चार तोले शुद्ध गंधक डालके लोहेके पात्रमें बेरकी अग्निपर रखके पतली करे उसमें शुद्ध सुवर्णके पत्र और पारा मिलायके लोहेकी कलछीसें धीरे २ चलाकर जब परिपक्क होजावे तब गोबरमें केलाका पत्ता बिछाय उसपर उसको ढाल देवे और तत्काल दूसरे पत्तेसै ढककर गोबरकी पोटलीसें दाब देवे, जब शीतल होजावे तब निकास लेवे यह पपडीके माफिक होजावेगी, इसमेंसें १ रत्तीसें लेकर छः रत्ती पर्यंत बलाबल देखकर वैद्य रोगीको देय तथा सहत और त्रिकुटाके चूर्णमें मिलायके लेवे तो संग्रहणी, शोष, क्षय, खांसी, श्वास, प्रमेह, शूल, अतिसार, और पांडुरोग इनको नाश करे तथा यह सुवर्णपर्पटीरस तत्काल बल, शुक्र और अग्निको बढावे है ॥

पर्पटी

शुद्धपारदगंधाभ्यांकृतापर्पटिकानृणां ॥
निहंतिग्रहणींक्षौद्रयुक्तांपथ्यभुजांभृशं ॥

अर्थ—शुद्धपारा और गंधक इन दोनोकी कजलीकर पर्पटी करके सहतके साथ भक्षण करे तो यह संग्रहणीका नाश करे इस पर्पटीके सेवन करनेवालेको पथ्य करना चाहिये ॥

ग्रहणीगजकेसरीरस

गंधंपारदमभ्रकंचदरदंलोहंचजातीफलंबिल्वंमोचरसंविषंप्रतिविषंव्योषंतथाधातकी ॥ अष्टामप्यभयांकपित्थजलदौदीप्या

नलौदाडिमटंकाद्भस्मकलिंगकात्कनकजंबीजंचयक्षेक्षणं॥ए तत्तुर्यमफेनमेतदखिलंसंमर्द्यसंचूर्णयेद्धत्तूरच्छदजैरसैः सुमति मान्कुर्यान्मरीचाकृतिं ॥ दत्तासाग्रहणीगदंसरुधिरंसामंस शूलंचिरातीसारंविनिहंतिजूर्तिसहितांतीव्रांविषूचीमपि ॥ सा ध्यासाध्यमपिस्वयंपरिहरेदुक्तानुपानैरपिनाम्नातुग्रहणीमतंग- जमदध्वंस्येषकंठीरवः ॥

अर्थ--गंधक, पारा, अभ्रकभस्म, हींगलू, लोहभस्म, जायफल, वेलगिरी, मोचरस, सिंगियाविष, अतीस, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, धायकेफूल, भुनी- हुई हरड, कैथ, नागरमोथा अजमायन, चीतेकी छाल, अनारदाना, कुडाकी छालकी राख १ तोले, धतूरेके बीज, तथा लताकरंज ये समान भाग लेवे, और अफीम चार भाग ले सबको एकत्र खरल कर धतूरेके रससैं मिरचके समान गो- ली बनावे इसके देनेसैं संग्रहणी रक्त, आम, शूल, बहुत दिनोंका अतिसार ज्वर, विषूचिका (हैजा) तथा साध्यासाध्य संग्रहणी इन सबका नाश करे इस रसको (ग्रहणीगजकेसरी) रस कहते है ॥

अग्निसुतरस

भागोदग्धकपर्दकस्यचतथाशंखस्यभागद्वयंभागोगंधकसूत योर्मिलितयोःपिष्टामरीचादपि ॥ भागस्यत्रितयंनियोज्यस कलंनिंबूरसेचूर्णितंनाम्नावन्हिसुतोरसोयमचिरान्मांद्यंजयेद्दा रुणं॥ घृतेनखंडैःसहभक्षितोसौक्षीणान्नरानाशुसमीकरोति ॥ समागधीचूर्णघृतेनलीढोनरःप्रमुंचेद्ग्रहणीविकारात् ॥ शोष ज्वरारोचकशूलगुल्मान्पांडूदरार्शोग्रहणीविकारान्॥तक्रानु पानोजयतिप्रमेहान्युक्त्याप्रयुक्तोग्निसुतोरसेंद्रः ॥

अर्थ--कौडीकीभस्म १ भाग, शंखभस्म २ भाग, गंधक और पारा दोनो मिलाकर १ भाग, कालीमिरचका चूर्ण३ भाग ले सबका एकत्रित चूर्ण कर नींबू- के रससें खरल करे, यह अग्निसुत रस युक्तिके साथघी और मिश्रीके संग सेव- न करनेसैं बहुत दिनोकी मंदाग्नि, क्षीणता इनका नाश करे तथा पीपलके चूर्ण और घी इनके साथ सेवन करनेसैं संग्रहणी विकार तथा छाछके साथ, शोष ज्वर, अरुचि, शूल, गोला, पांडुरोग,उदर, ववासीर, संग्रहणी विकार इनका ना- श करे इसको प्रमेहपर भी वैद्य अपनी युक्तिसैं देवे तो प्रमेहको दूर करे॥

ग्रहणीकपाटरस

पारदाद्द्विगुणोगंधस्ताभ्यांतुल्यंकटुत्रयं ॥ अजाजीटंकणंधान्यंहिंगुजीरयवानिकाः ॥ प्रत्येकंद्विगुणंसूताद्रुचकंचचतुर्गुणम् ॥ सर्वेषांचसमाज्ञेयादग्धासुज्ञैर्वराटिका ॥ सर्वमेकीकृतंचूर्णं माषद्वयमितंततः ॥ तक्रेणालोड्यमतिमान्भक्षयेत्सततंनरः ॥ ग्रहणीकपाटोह्येषहितःस्याद्ग्रहणीगदे ॥

अर्थ--पारा १ तोले, गंधक २ तोले, त्रिकुटा ३ तोले, जीरा, सुहागा, धनिया, हींग, कालाजिरा, और अजमायन ये प्रत्येक दो दो तोले लेवे और पांगा निमक ४ तोले, तथा इन सबके चूर्ण समान कोडीकी भस्म लेके ये संपूर्ण एकत्र खरलकरे तो यह ग्रहणीकपाटरस तैयार हो, इसमेंसें दो मासे रस छाछके साथ पीवेतो यह संग्रहणीरोगका नाश करे ॥

सूतादिगुटी

सूतकंगंधकंलोहंविषंचित्रकपत्रकं ॥ विडंगंरेणुकामुस्तमेलाग्रंथिककेसरं ॥ फलत्रिकंत्रिकटुकंशुल्बभस्मतथैवच ॥ एतानिसमभागानिदीयतेद्विगुणोगुडः ॥ कासेश्वासेक्षयेगुल्मेप्रमेहेविषमज्वरे ॥ लूतायांग्रहणीमांद्येशूलेपार्श्वामयेतथा ॥ हस्तपादादिरोगेषुगुटिकेयंप्रशस्यते ॥

अर्थ—पारा, गंधक, लोहभस्म, सिंगियाविष, चीतेकी छाल, पत्रज, वायविडंग, पित्तपापडा, नागरमोथा, इलायची, पीपरामूल, नागकेशर, त्रिफला, त्रिकुटा, और ताम्रभस्म ये समान भाग लेवे और गुड इसमें दो भाग मिलावे सबको कुट पीस गोली बनावे यह खांसी, श्वास, क्षय, गोला, प्रमेह, विषमज्वर, लूता, संग्रहणी, मंदाग्नि, शूल, कूखका रोग, और हाथ पैरोंका रोग इनपर देवे यह परमोत्तम है ॥

कणादिलेह

कणानागरपाठाभिस्त्रिवर्गद्वितयेनच ॥ बिल्वचंदनन्हीबेरैःसर्वातीसारनुन्मतः ॥ सर्वोपद्रवसंयुक्तामपिहंतिप्रवाहिकाम् ॥ नानेनसदृशोलेहोविद्यतेग्रहणीहरः ॥

अर्थ—पीपर, सोंठ, पाढ, त्रिफला, त्रिकुटा, वेलगिरी, चंदन, और नेत्रवा-

ला, इनका अवलेह बनायके सेवन करे तो संपूर्ण उपद्रवयुक्त, संग्रहणी और प्रवाहिका इनको नाश करे इससैं बढिया दूसरा प्रयोग संग्रहणीरोगपर नहीं है ॥

अभ्रकादिवटी

रसंगंधंविषंव्योषंटंकणंलोहभस्मकं ॥ अजमोदाहिफेनंचसर्वं तुल्यंमृताभ्रकं ॥ चित्रकत्वक्कषायेणमर्दयेद्याममात्रकं ॥ मरीचाभांवटींकृत्वाखादेदेकांजयेदसौ॥चतुर्विधांचग्रहणींरहस्यंतदिदंस्मृतं ॥

अर्थ—शुद्धपारा, शुद्धगंधक, सिंगियाविष, सोंठ, मिरच, पीपल, सुहागा-लोहकी भस्म, अजमोद, और, अफीम ये समान भाग ले सबकी बराबर अभ्रक भस्म लेवे, सबको एकत्र कर चीता, दालचीनी इनके काढेमें एक प्रहर खरल करे फिर काली मिरचके समान गोली बनावे १ गोली नित्य खाय तो चारप्रकारकी संग्रहणीका नाश करे यह गुप्त प्रयोग कहा है ॥

सूतराज

रसगंधाभ्रकाणांचभागानेकद्विकाष्टकान् ॥ संचूर्ण्यसर्वरोगेषु युंज्याद्वल्लचतुष्टयं ॥ ग्रहणीक्षयगुल्मार्शोमेहधातुगतज्वरान् ॥ निहंतिसूतराजोयंमंडलस्यचसेवनात् ॥

अर्थ—शुद्धपारा १ तोले, शुद्धगंधक २ तोले, अभ्रक भस्म ८ तोले, इस प्रमाणसैं लेकर सबकी कजली करे फिर इसमेंसैं ४ वल्ल अर्थात् ८ रत्ती एक मंडल पर्यंत सेवन करे तो यह सूतराज संग्रहणी, क्षय, गोला, अर्श (ववासीर) प्रमेह और धातुगतज्वर इन सबको नाश करे ॥

पूर्णचंद्ररसेंद्र

सूतंगंधंचाश्वगंधागुडूचीयष्टीतोयैर्मर्दयेदेकघस्रं॥क्षुद्रंशंखंमौक्तिकंलौहकिट्टंभस्मीभूतंसूततुल्यंतुदद्यात् ॥ भूकूष्मांडैर्वासरंसंविमर्द्यगोलंकृत्वाभूधरेतंपुटेच्च ॥ चूर्णंकृत्वानागवल्लीरसेनदद्यादेतंमर्दयित्वैकयामं ॥ मध्वाज्याभ्यांपूर्णचंद्रोरसेंद्रःपुष्टिंवीर्यंदीपनंचैवकुर्यात् ॥ प्रायोयोज्यःपित्तरोगेग्रहण्यामक्षीरोगेपित्तजेघोलयुक्तं ॥ स्त्रीणांतापेशाल्मलीनीरयुक्तंयोज्यंचाज्यंवाशतावहाविपक्कं ॥

अर्थ—पारा, गंधक, इन दोनोको असगंध, गिलोय, और मूलहटी, इनके काढेमें एक दिन खरल करे, फिर छोटे शंख, मोती, और मंडूर, इनकी भस्म पारेके समान मिलायके विदारी कंदके रसमें एक दिन खरल कर उसका गोला बनायके भूधर यंत्रमें रखके फूंक देवे, जब शीतल होजावे तब उसको निकाल बारीक पीस नागर वेलपानके रसमें १ प्रहर खरल करे तो यह पूर्णचंद्ररसबनके तयार हो, इसको घी और सहतसैं सेवन करे तो पुष्टता वीर्यको और जठराग्नि को प्रबलकरे इसको पित्तरोग में संग्रहणी और नेत्र रोगमें घोलके साथ देवे स्त्रीयों के ज्वर में सेमरके रस सैं वा सतावरके रस सैं सिद्ध करे घृतके साथ सेवन करे ।

दंभ

नाभौद्व्यंगुलकादधोर्धशशिवद्वंशास्थिमुलेतथा
दाहःप्रज्वलितायसस्यकथितोदंभोग्रहण्यातुरे ॥

अर्थ—संग्रहणी रोगवालेकै नाभि (टूडींके) ऊपर दो अंगुलपर तथा नाभि के नीचे दो अंगुलपर अर्धचंद्राकार और उसीप्रकार वंशास्थि मूलके विषे लोहके टुकडेको अग्निमें तपायकर दाग देवे ॥

दुसराप्रकार

दंभंताम्रशलाकयाग्रहणिकांलोहस्यवास्वर्णयोर्देयंनाभिरध
स्थद्व्यंगुलमितंवस्तिद्वयोर्मध्यगं॥पूयस्त्रावमपथ्यसेवाविहितंपे
यंजलंशीतलंवातोत्थामपिपित्तजामपिचिराद्धन्याद्धलासादिकं

अर्थ—संग्रहणीपर ताम्र, लोह, अथवा सुवर्ण इनकी शलाईसैं नाभिके नीचे दो अंगुलपर तथा नाभिके ऊपर दो अंगुलपर, नाभि और बस्ति इनमें दाग देवे और पूयस्राव होवे अैसा पथ्य करे और शीतल जल पीवे तो वातपित्त कफात्मक बहुत दिनोंकी संग्रहणी नाश होवे ॥

सिंहनपुरीचूर्णम्

एकप्रदेयोरुचकस्यभागोह्यर्धोजमोदस्यचसैंधवस्य॥शुंठ्या-
स्त्रयोद्वौमरिचस्यभागौचूर्णचतुर्थंसितजीरकस्य॥तक्रेणपाना-
त्कफवातरोगांस्तद्भोजनांतेखलुदीपनाय ॥ सिंहेनराज्ञाक
थितंचचूर्णंप्लीहोदराजीर्णविषूचिकासु ॥

अर्थ—संचरनिमक १ तोले, अजमोद ६ मासे, सैंधानिमक ६ मासे, सोंठ घाड़की ३ तोले, कालीमिरच २ तोले, सपेदजीरा ४ तोले, सबका चूर्ण करके छाछके साथ सेवन करे तो कफवातके रोग नष्ट होवे, यदि भोजनके पश्चात् इसका सेवन करे तो अग्निको दीपन करेहै; सिंहन राजाने यह चूर्ण कहाहै यह

तापतिल्ली उदररोग, अजीर्ण, और विषूचिका इन रोगों में देवे तो सबको नष्ट करे॥

द्वितीयसिंहनपुरीचूर्णम्

रुचकसैंधवहिंगुयवानिकासमघृताद्विगुणोषणवेतसाः ॥ जरणनागरसागरसंयुतः पिबतितक्रयुतंहिचतुर्गुणम् ॥ हरतिमंदहविर्भुजमंजसागुदगदान्ग्रहणीमतिदुर्जयाम् ॥ विषमशूलरुजामरुचिं तथाविविधवारिकृतानखिलामयान् ॥ विरचितंखलुसिंहनभूभुजारुचिरचूर्णमिदंकृपयानृणाम् ॥

अर्थ—संचरनिमक, सैंधानिमक, हींग, अजमायन, ये सब समान भाग लेवे, और कालीमिरच एक औषधसें दूनीलेवे, तथा मिरचोंके बराबर अमलवेतलेवे, तथा जीरा, और सोंठ ये चार २ भागलेवे, सबको कूट पीस चूर्ण बनावे, इसको चौगुनी छाछके साथ पीवे तो मंदाग्नि, गुदाके रोग, दुर्जय संग्रहणी, विषम शूल का रोग, अरुचि, तथा अनेक प्रकार के संपूर्ण जल विकार इन सब रोगोंके यह दूरकरे, यह चूर्ण सिंहन राजाधिराजने प्राणियों की कृपा विचार निर्माण कराहै, इसीसै यह सिंह पुरी चूर्ण विख्यातहै, ॥

तृतीयसिंहनपुरीचूर्णम्

एकांशोरुचकाद्भौमरिचतः शुंठ्यास्त्रयोजीरतश्चत्वारोर्द्धयुतः समुद्रलवणोभागस्तथासैंधवः चूर्णोसिंहनभूभुजाहिकथितंतक्रेणसंसेवितंगुल्मानाहविषूचिकागुदरुजः श्वासानिलान्नाशयेत् ॥

अर्थ—संचरनिमक १ पल, कालीमिरच २ पल, सोंठघाडकी ३ पल, सपेदजीरा ४ पल, सामुद्रलवण २ तोले, सैंधानिमक २ तोले ले सबको कूट पीस चूर्ण बनावे यह सिंहन महाराजने कहाहै इसीसै इसको (सिंहनपुरी) चूर्ण कहतेहै इसको छाछके साथ सेवन करे तो गोला, अफरा, विषूचिका (हैजा) बवासीर, श्वास (दमा) और वादी इन सब रोगोंका नाश करे ॥

लाईचूर्ण

सूतंगंधंत्रिकटुकंदीप्यकंजीरकद्वयम् । सौवर्चलंसैंधवंतुरामठंविडमेवच । शक्राशनस्यचूर्णंतुसर्वंतुल्यंप्रदापयेत् । संग्रहंशूलमानाहंहन्यान्नानातिसारजित् ।

अर्थ—शुद्धपारा, शुद्धगंधक, त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल,) अजमायन, सपेदजीरा, कालाजीरा, संचरनिमक, सैंधानिमक, हींग, विडनिमक, येसव औषधी वरावर भागलेवे और सव औषधोंकी वरावर भांगलेवे सवको कूट पीसकर सेवनकरे तो मलके संग्रहको शूल अफरा और अनेक प्रकारके अति सारोंको दूर करे

ज्वालामुखचूर्ण

शक्राशनंसप्तपलंशितायाः पलत्रयंछिन्नरुहाशतावा । तथैवमूलंगिरिकर्णिकायाः पलंपलंवैकथितंत्रयाणाम् ॥ सर्वंतुचूर्णंवरभृंगराजद्रवेणचालोडयपुनःपुनस्तु ॥ घर्मेषुसंशोष्यचसप्तवारंनित्यंलिहेत्कर्षप्रमाणकंतत् ॥वितुल्यसर्पिर्मधुभिःसमेतंस्निग्धाम्लमुद्गाहितभोजनंच ॥ करोतिवह्निंग्रहणींचहन्यात्सामातिसारानमृजोविकारान् ॥कुष्ठामवातंपिडकान्विसर्पंज्वालामुखंनामहितंनराणाम्।व्याधीन्समस्तानपिहंतिशीघ्रंयानंत्रभूताजठरोद्भवांश्च॥

अर्थ—भाँग ७ पल, खाँड, ३ पल, गिलोय, सतावर, अपराजिता, ये प्रत्येक एकएक पल, लेवे सबका चूर्ण करके भांगरे के रसकी सात भावना देवे और प्रत्येक भावनादे देकर धूपमें सुखायले फिर इस चूर्णमेंसें १ तोले प्रमाण नित्य घी और सहत विषम भाग लेकर इसमें चूर्ण मिलाय के सेवन करे इसके ऊपर चिकने, खट्टे, मूंगके पदार्थ इत्यादि हित भोजन करे तो यह जठराग्नि को बढावे, संग्रहणी, आमातिसार, रुधिर के विकार, कुष्ठरोग, आमवात, पिडका, विसर्प रोग, तथा आंतडेके और उदर रोगों को यह (ज्वाला मुख चूर्ण) शीघ्र दूर करे।

नारायणचूर्ण

गुडूचींवृद्धदारुंचकुटजस्यफलंतथा । बिल्वंचातिविषंचैवभृंगराजंचनागरम् । शक्राशनस्यचूर्णंचसर्वमेकत्रमेलयेत्॥चूर्णमेतत्समंग्राह्यंकुटजस्यत्वचोऽपिच । गुडेनमधुनावापिलेहयेद्भिषजांवरः । शोथंरक्तमतीसारंचिरजंदुर्जयंतथा । ज्वरंतृष्णांचकासंचपांडुरोगंहलीमकम् । मंदानलंप्रमेहंचशूलंचापित्रिदोषजम् ॥ अरुचिंगुदजंचैवहन्यादेवनसंशयः ॥ एतन्नारायणंचूर्णंश्रीनारायणभाषितम् ॥

अर्थ—गिलोय, विधायरो, इन्द्र जो, वेलगिरी, अतीस, भांगरा, सोंठ धाड की, और भांग ये सब समान भागले और सब चूर्ण की बराबर कूड़ाकीछाल लेवे, सबका चूर्ण करे इस चूर्ण को गुडमें मिलायकें सेवन करे अथवा सहत के साथ चूर्ण करे तो सूजन, रुधिरातिसार, घोर और दुर्जय अतिसार, ज्वर, तृष्णा, खांसी, पांडुरोग, हलीमक, मंदाग्नि, प्रमेह, त्रिदोष जन्य शूल, अरुचि, गुदाके रोग, इन सब को यह दूर करे यह नारायण चूर्ण श्रीनारायण का कहा हुआहै ॥

चित्रांबररसः

शुद्धंसूतंमृतंचाभ्रंगंधकंमर्दयेत्समम् । लोहपात्रेघृताभ्यक्तेक्षणं मृद्वग्निनापचेत् । चालयेल्लोहदण्डेनअवतार्यविभावयेत् ॥ त्रिदिनं जीरकक्काथैर्माषैकंभक्षयेत्सदा । ग्रहणीशांतिमायातिसर्वोपद्रवसंयुता रसश्चित्रांबरोनामग्रहणीग्रहहृन्मतः ॥ शमयेदनुपानेनआमशूलंप्रवाहिकम्

अर्थ—शुद्धपारा. और गंधक दोनोकी कजली तथा अभ्रकभस्म ये सब पदार्थ लोहेके पात्रमें अग्निपर रख मंद २ अग्निसें पचावे, तथा लोहेके मूसलेसें घोटता जावे, फिर इस कों उतार के तीनदिन जीरे के काढें की भावना देवे तो यह (चित्रांबररस) बनके तयार हो। यह अनुपान के साथ एक मासे खाय तो संपूर्ण उपद्रव सहित संग्रहणी को. आमशूल और प्रवाहिका को नाश करे ॥

अगस्तिसूतराजरसः

रसबलिसमभागंतुल्यहिंगूलयुक्तंद्विगुणकनकबीजंनागफेनेन तुल्यम् ॥ सकलविहितचूर्णं भावयेद्भृंगनीरैर्ग्रहणिजलधिशोषे सूतराजोह्यगस्तिः ॥ त्रिकटुकमधुयुक्तोसर्ववांतिंचशूलंकफपवनविकारंवन्हिमांद्यंचनिद्राम् ॥ घृतमरिचयुतोऽयंगुंजमात्रः प्रवाहिंहरतिषडतिसारान्जीरजाजीफलेन ॥

अर्थ—पारा. गंधक और हींगलू ए तोले २ लेवे, धतूरे के बीज. और अफीम ये दोदो तोले ले, सबको एकत्र कर के भाँगरे के रस की भावना देवे, यह(अगस्ति सूतराज)सोंठ, मिरच, पीपल, और सहत इन के अनुपान सें १ रत्ती देय तोवांति. शूल, कफ, वात संबंधी विकार, मंदाग्नि, और निद्रा इनको दूरकरे तथा छःप्रकार के अतिसारपर जीरा और जायफलके साथ देना चाहिये ॥

कनकसुंदररसः

हिंगुलंमरिचंगंधंपिप्पलीटंकणंविषं ॥ कनकस्यचबीजानिस माशंविजयाद्रवैः ॥ मर्दयेद्याममात्रंतुचणमात्रावटीकृता । भक्ष णाद्ग्रहणींहंतिरसःकनकसुंदरः ॥ अग्निमांद्यंज्वरंतीव्रमतिसा रंचनाशयेत् ॥ दध्यन्नंदापयेत्पथ्यंतथातक्रोदनंचरेत् ॥

अर्थ—हींगलू, कालीमिरच, गंधक, पीपल, सुहागा, सिंगियाविष, और धतूरेके बीज सब को समान भागलेकर भाँगके काढेमें १ प्रहर खरलकर चनेके बराबर गोली बनावे तो यह संग्रहणी, मंदाग्नि, ज्वर, और अतिसार इनको नाश करे । इसपर दही भात, अथवा छाछ भात ये पथ्य है ॥

क्षारताम्ररसः

शंखक्षारार्कभूतिंचवराटंलोहभस्मकम् । अयोमलंयवक्षारंटं कणंक्षारमेवच । त्रिकटुंसैंधवंतुल्यंभृंगतोयेनमर्दयेत् । आट रूषरसैर्मर्द्यमार्द्रकस्वरसेनच । चणमात्रांवटींकृत्वारसोऽयंक्षार ताम्रकः । श्वासेकासेप्रतिश्यायेपुराणज्वरपीडिते । मंदाग्नौग्रह णीदोषेत्वनुपानंयथोचितं । सेवयेत्सप्तरात्रेणनाशयेन्नात्रसंश यः । चिरकालानुबंधेचसेवयेन्मंडलावधि । तत्तद्व्याधिहरंप थ्यं नियमेनसमाचरेत् ।

अर्थ—शंखकीभस्म, जवाखार, तामेकीभस्म, कौडीकीभस्म, लोहभस्म, मंडूर जवाखार,सुहागा,सोंठ,मिरच,पीपल, सैंधानिमक, ये सब समान भाग लेवे सबको भाँगरेके रससैं, अडूसेके रस सैं और अदरखके रससैं पृथक्२खरल करके चनेके बराबर गोली बनावे यह (क्षारताम्ररस) श्वास, खाँसी, पीनस, जीर्णज्वर, मंदाग्नि, और संग्रहणीका दोष, इनपर रोगानुरूप अनुपानके साथ देवे तो सातदिनमें गुणदिखावे यह बहुत काल की व्याधिपर १ मंडल पर्यंत देवे तथा जिस २ व्याधिपरदे उसपर जोजो वस्तु पथ्य कहीहै वोकरनी चाहिये ॥

चित्रकादिगुटी

चित्रकंपिप्पलीमूलंद्वौक्षारौलवणानिच । व्योषंहिंग्वजमोदाच चव्यमेकत्रचूर्णयेत् । गुटिकामातुलुंगस्यदाडिमस्यरसेनवा । कृताविपाचयत्वामंदीपयत्याशुचानलम् ॥

अर्थ—चीतेकीछाल, पीपरामूल, सज्जीखार, जवाखार, निमक, सोंठ, मिरच, पीपल, हींग, अजमोद, चव्य, इन सबको एकत्र कर कूट पीस बिजोरेके रससैं अथवा अनारदानेके रससैं घोटकर गोली बनावे, इसको बलाबल विचारके देवे तो यह आमका पाचन करे और मंदाग्नि को दीपन करेहै ॥

शंबूकयोग

दग्धशंबूकसिंधूत्थंतुल्यंक्षौद्रेणलेहयेत्
निष्कैकैकंनिहंत्याशुग्रहणीरोगमुत्कटम्।

अर्थ—शंखकीभस्म, और सैंधानिमक दोनों समान भाग लेवे चूर्णकर तीन मासे सहतके साथ चाटे तो घोर संग्रहणी रोग दूर करे ॥

कांकायनगुटी

पथ्यापंचपलान्येकमजाज्यामरिचस्यच । पिप्पलीपिप्पलीमूलं चव्यचित्रकनागरैः।पलाभिवृद्धैःक्रमशोयवक्षारंपलद्वयं॥ भल्ला तकपलान्यष्टौसूरणोद्विगुणोमतः ॥ द्विगुणेनगुडेनैषावटिका चाक्षसंमिता । एकैकांभक्षयेत्प्रातस्तक्रमम्लंपिबेदनु ॥ वन्हिं तंदीपयत्याशुग्रहणीपांडुरोगजित् । कांकायनेनशिष्येभ्यः शस्त्रक्षाराग्निभिर्विना ॥कथितागुटिकाचैषागुदजानांविनाशिका।

अर्थ—बडीहरड़ २० तोले, तथा जीरा, मिरच, पीपल, पीपरामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, ये प्रत्येक चार २ तोले बढतीके क्रमसैं लेवे, तथा जवाखार ८ तोले, मिलाए ३२ तोले, जमीकंद ६४ तोले और गूड़ सब चूर्णसैं दूना लेवे सबको कूट पीस एक तोले की गोली बनावे इसको प्रातःकाल एकएक देवे ऊपरसैं खट्टीछाछ पिवावे तो अग्निको दीपन करे तथा संग्रहणी और पांडुरोग इनका नाश करे यह कांकायन ऋषिने अपने शिष्यों को शस्त्र कर्म और क्षार कर्म के विना ववासीर और गुदा रोग नाश करने को कहीहै ॥

महाकल्याणगुड

पिप्पलीपिप्पलीमूलंचित्रकंगजपिप्पली । धान्यकंचविडंगानि यवानीमरिचानिच । त्रिफलाचाजमोदाचनलिनीजीरकस्तथा ॥ सैंधवंरोमकंचापिसामुद्रंरुचकंतथा । आरग्वधश्चत्वक्पत्रंसूक्ष्मै लाचोपकुंचिका। शुंठीशक्रयवाश्चैवप्रत्येकंकर्षसंमितं ॥ मृद्वी-

कायापलान्यत्रचत्वारिकथितानिहि । त्रिवृतायाःपलान्यष्टौ-गुडस्यार्धपलंतथा । तिलतैलंपलान्यष्टौचामलक्यारसस्य-तु । प्रस्थत्रयमिदंसर्वंशनैर्मृद्वग्निनापचेत् । उदुंबरंचामलकंवा दरंवायथाफलम् । तावन्मात्रमिदंखादेद्भक्षयेद्वायथाबलं । निखि-लान्ग्रहणीरोगान्प्रमेहांश्चैकविंशतिं । उरोघातंप्रतिश्यायंदौर्ब-ल्यंवन्हिसंक्षयम् । ज्वरानपिहरेत्सर्वान्कुर्यात्कांतिमतिस्वरम् । यथाबलंवर्द्धितासारक्तपित्तंचविड्ग्रहम् । धातुक्षीणवयःक्षीणस्त्री-षुक्षीणः क्षयीचयः ॥ तेभ्योहितश्चवंध्यायैमहाकल्याकोगुडः ।

अर्थ—पीपर, पीपरामूल, चीता, गजपीपर, धनियाँ, वायविडंग, अजमायन, कालीमिरच, हरड़, बहेडा, आमला, अजमोद, कमलगट्टा, जीरा, सैंधानिमक, साँभरनिमक, समुद्रनिमक, संचरनिमक, विडनिमक, अमलतासका गूदा, दा-लचीनी, पत्रज, छोटीइलायची, बडीइलायची, सोंठ, इन्द्रजों, ये प्रत्येक औषध एकएक, तोले लेवे तथा कालीदाख १६ तोले ले, निसोथ ३२ तोले गुड़ २०० तोले, तिलोंका तेल ३२ तोले और आमले का रस ६४ तोले इन सबको एकत्र करके मधुरी २ आँचपर पचावे, फिर इसमें सें गूलर, आंवला, अथवा बेर इ-तनी बडी बलाबल विचार के गोली बनायके रोगी को देवे तो संपूर्ण संग्रहणी के रोग, वीस प्रकार के प्रमेह, उरोघात (छातीकी चोट) पीनस, दुर्बलता, मंदाग्नि, संपूर्णज्वर, इनको नष्टकरे इसको थोडी २ शक्तीके अनुसार बढावे तो रक्तपित्त, विड्बंध, धातुकी क्षीणता, अवस्था की क्षीणता, स्त्री क्षीण, और क्षय इनपर हितकारीहै तथा महाकल्याण गुड़ बंध्याको हितकारीहै ॥

कूष्मांडगुड

कूष्मांडानांसुपक्कानांस्विन्नानांनिष्फलत्वचां । सर्पिः प्रस्थे-पलशतंताम्रपात्रेशनैः पचेत् । पिप्पलीपिप्पलीमूलंचित्रकं गजपिप्पली । धान्यकानिविडंगानिनागरंमरिचानिच । त्रि-फलाचाजमोदाचकलिंगाजातिसैंधवं । एकैकस्यपलंचैकंत्रि-वृतोष्टौपलानिच ॥तैलस्यचपलान्यष्टौगुडात्पंचदशैवतु ।आ-मलक्यारसंचात्रप्रस्थत्रयमुदीरितम् । तावत्पाकंप्रकुर्वीतमृ

दुनावन्हिनाभिषक् । यावद्दर्वीप्रलेपःस्यात्तदैनमवतारयेत् । औदुंबरंचामलकंबदरंवायथाबलं । तावन्मात्रमिदंखादेद्भक्षये द्वायथाबलम् । अनेनैवविधानेनरयुक्तस्यादिनेदिने । निहंतिग्र हणीरोगान्कुष्ठमर्शोभगंदरम् । ज्वरमानाहहृद्रोगगुल्मोदर- विषूचिकाः । कामलापांडुरोगंचप्रमेहांश्चैकविंशतीन् । वात- शोणितवीसर्पदद्रुयक्ष्महलीमकान् । वातपित्तकफान्सर्वा- न्कुष्ठान्सर्वान्समाहरेत् । व्याधिक्षीणावयः क्षीणस्त्रीषुक्षीणाश्च- येनराः । तेभ्योहितोगुडोयंस्याद्वंध्यानामपिपुत्रदः । वृष्यो- बल्योबृंहणश्चवयःसंस्थापनःपरः ।

अर्थ—उत्तम पकाहुआ तथा छिला और सीजाहुआ पेठेके टुकड़े ४०० तोले लेवे इन को चौसठ तोले उत्तम घीमें डाल तामेके पात्रमें मंद २ अग्निसैं पचावे फिर पीपल, पीपरामूल, चीतेकीछाल, गजपीपल, धनिया, वायविडंग, सोंठ मिरच, पीपल, हरड, वहेडा, आवला, अजमोद, कूड़ाकीछाल, जीरा और सैं धानिमक ये प्रत्येक चार २ तोले ले और निसोथ ३२ तोले, और तेल ३२ तोले गुड ६० तोले और आवले का रस १९२ तोले सबको एकत्र करके मंदाग्नि पर रखके जबतक कलछीसैं लिपटे तवतक पचावे, फिर उतार शीतल करके किसी उत्तम पात्रमें भरके रखदेवे, इसमें सैं गुलर, आवला अथवा बेर की बरा- बर वलाबल विचार के देय इसी प्रकार नित्य प्रति देनेसै, संग्रहणीरोग, कोढ, ववासीर, भगंदर, ज्वर, अफरा,हृदय के रोग, गोला, उदर, विशूचिका, कामला, पांडुरोग, इक्कीस प्रकार की प्रमेह,वातरक्त, विसर्प, दाद, खई, हलीमक, वादी- केरोग, पित्तकेरोग. संपूर्ण कफके रोग, संपूर्णकोढ, इन सब रोगों को, नष्टकरे, तथा जो रोगोंसै क्षीणहुएहै, अवस्था करके क्षीण, स्त्री संभोग करके जो क्षीणहै उनको यह प्रयोग परम हितकारीहै, तथा वंध्या स्त्रियोंको पुत्रका देनेवालाहै, वृष्य, बलकारी, पौष्टिक, और वयस्थापक (अर्थात् बुढापेको समीप नही आनेदेवे) ऐसाहै ॥

कल्याणगुड

पाठाधान्ययवान्यजाजिहपुषाचव्याग्निसिंधूद्भवैः सश्रेयस्यज-

१ यद्यपि प्रमेह रोग वीस प्रकारकाहै परंतु भेडादि ग्रंथोंके अनुसार इक्कीस प्रकारका है । और किसी के मतसै छव्वीस प्रकार का हैं ॥

मोदकीटरिपुभिः कृत्वाजटासंयुतैः। सव्योषैः सफलत्रिकैःसत्रु-
टिभि स्त्वक्पत्रजैरोषधैः प्रत्येकंपलिकैः सुतैलकुडवैः सा
र्द्धत्रिवृन्मुष्टिभिः । सर्वैरामलकीरसस्यतुलयासार्धंतुलार्धगुडः
संपाच्योभिषजावलेहवदयंप्राग्भोजनाद्भक्ष्यते ॥ येकेचिद्ग्र-
हणीगदाः सगुदजाः कासाः सशोषामयाः सश्वासश्वयथुश्चि-
रोदररुजः कल्याणकस्ताञ्जयेत् ॥

अर्थ—आमलेकारस ४०० तोले, और गुड २०० तोले, इन दोनो का पाक करके इस पाक में पाढ, धनिया, अजमायन, जीरा, हाऊबेर, चव्य, चित्रक, सैंधानिमक, गजपीपल, अजमोद, वायविडंग, पीपरामूल, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आवला, इलायची, दालचीनी, पत्रज, ये औषध चार २ तोले ले, फिर १६ तोले तेल और चारतोले निसोथ डालके सबको एकत्र करके पचावे जब अबलेह के समान हो जावे तब उतार के चिकने बासन में भरके धररक्खे इसको भोजनके पूर्व एक तोले नित्य भक्षण करे इसको कल्याणगुड कहतेहै, यह, संग्रहणी, बवासीर, श्वास, खाँसी, शोष, सूजन, और उदर इन सबको नाश करे ॥

भूनिम्बादिचूर्ण

भूनिंबकौटजकटुत्रिकमुस्तातिक्तः कर्षांशकाः सशिखिमूल-
पिचुद्वयाश्च ॥ त्वक्कोटजींपलचतुष्कमितांगुडांभः पीतंनृ-
णामिहहरेद्ग्रहणीविकारान् ॥

अर्थ—चिरायता, इन्द्रजो, सोंठ, कालीमिरच, पीपर, नागरमोथा और कुटकी ये औषध प्रत्येक एक २ तोले लेवे, चीतेकीछाल दो तोले और कूडाकी छाल, १६ तोले इनका चूर्ण एकत्र करके गुडके जलसें भक्षण करे तो संग्रहणी जनित विकार संपूर्ण नाश होवे ॥

अतिविषादिकाढा

अतिविषाघनवालकधातुकीकुटजदाडिमलोध्रमथोदको॥वि
हितमेभिरिदंसलिलंपिबेद्ग्रहणिकाविजितः प्रसभांनरः ॥ स
र्वज्वरहरंज्ञेयंग्रहणीबेगनाशनं ॥ अरोचमांद्यदलनंधातुवर्ध-
नकारकं ॥

अर्थ—अतीस, नागरमोथा, नेत्रवाला, धायकेफूल, कूडाकीछाल, लोध और पाढ इनका काढा करके पीवे तो संग्रहणी, सर्वज्वर, अरुचि और मंदाग्नि इनको नाश करे तथा धातुकी वृद्धि करेहै॥

नागरादिकाढा

नागरोशीरधनिकायवान्यतिविषाघना ॥
श्रीपर्ण्यौचशृतंचैषांदीपनंपाचनंस्मृतं ॥

अर्थ—सोंठ, खस, धनिया, अजमायन, अतीस, नागरमोथा, सालपर्णी, पृष्टपर्णी, इनका काढा दीपन और पाचनहै ॥

पुनर्नवादिकाढा

पुनर्नवावह्लिजबाणापुंखाविश्वाग्निपथ्याचिरबिल्वबिल्वैः ॥ कृतः कषायः शमयेदशेषान्दुर्नामगुल्मग्रहणीविकारान् ॥

अर्थ—साँठकीजड, कालीमिरच, सरफोंका, सोंठ, चीतेकीछाल, जंगीहरड, कंजेकीछाल, वेलगिरी इनका काढा करके पीवे तो ववासीर, और गोला, तथा संग्रहणी इन सबका नाश करे ॥

शुंठ्यादिकाढा

शुंठीसमुस्तातिविषांगुडूचींपिबेज्जलेनक्कथितांसमांशां ॥
मंदानलत्वेसततामवातेसामानुबंधेग्रहणीगदेच ॥

अर्थ—सोंठ, नागरमोथा, अतीस, और गिलोय, इनका काढा मंदाग्नि, आमवात, और आमसहित संग्रहणी इनका नाशकहै ॥

तालीसादिचूर्ण

तालीसोग्रनिशाषड्रूषणनिशाबिल्वाजमोदासठीचातुर्जातलवंगधातुकिविषाजातीफलंदीप्यकं ॥ पाठामोचरसाम्लपंचलवणाजातीद्वयंवेल्लकंवृक्षाम्लाम्लवरापलाशतरुजंमांस्यर्बुदंवालकं ॥ ऐंद्रीब्रह्मसुवर्चलाद्दृढपदाकुष्टंसमस्तैः समंवह्न्यासर्वसमाजयाखिलसमामत्स्यंडिकावासिता ॥ चूर्णोयंग्रहणीक्षयादिकसनश्वासारुचिप्लीहहृद्दुर्नामातिसृतिज्वरार्तिपवनस्थौल्यप्रमेहप्रणुत् ॥ तीव्रापस्मृतिपांडुगुल्मजठरश्लेष्मोत्थापित्तोद्भ-

वोन्मादाध्मानविषूचिहंतिसकलंमासार्धसंसेवनात्।एवंतालिसयु
क्तमेवविहितंचूर्णंसुसिद्धंभुविबालानांचविशेषतोहित करंसंस्प-
वाणिप्रदं ॥ मांद्यध्वंसविधायकंविजयतेसर्वामयध्वंसकंपुष्टया
युर्बलकांतिधीस्मृतिमहामेधाविलासप्रदं ॥

अर्थ—तालीसपत्र, वच, हलदी, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, पीपरामूल, चीतेकीछाल, चव्य, आमियाहलदी, वेलगिरी, अजमोद, कचूर, चातुर्जात, लौंग धायकेफूल, अतीस, जायफल, अजमायन, पाढ, मोचरस, तंतडीक, पाँचोंनिमक. जीरा, कालाजीरा, वायविडंग, अमलवेत, इमली, त्रिफला, पलासपापड़ा, जटामांसी, खाखसा, नेत्रवाला, इलायची, ब्राह्मी, इन्द्रजो, भूय आवला और कूठ, ये सब औषध समान भाग लेवे तथा सबकी बराबर खिरेटीकी छाल तथा इसको भी मिलायके सबके समान हरड़ का वक्कल लेवे और सब चूर्णके समान मिश्री लेनी चाहिये इन सबको चूर्णकर बलाबल विचारके १५ दिनपर्यंत सेवन करे तो संग्रहणी, क्षय, खांसी, श्वास, अरुचि, प्लीहा, ववासीर, पित्तव्याधि, उन्माद, पेटकाफूलना, और विशूचिका, इनको नष्टकरे। इस प्रकार यह तालीसादिचूर्ण इस पृथ्वीमें सिद्ध औषध है तथा बालकों को यह परमोपयोगी होताहै यह वाणीका देनेवालाहै तथा मंदाग्नि और संपूर्ण रोग इनका नाश करे तथा पुष्टि, आयुष्य, बल, कांति, बुद्धि, और स्मरण तथा धारण शक्तिको देयहै ।

व्योषादिचूर्ण

व्योषंदीप्याजमोदाकृमिरिपुदहनंरामठंचाश्वगंधंसिंधूत्थंजी
रकेद्वेरुचककलयुतंधान्यकंतुल्यभागं ॥ भृंगीचूर्णंलवंगंघृत-
मधुसहितंशाणमात्रंचदद्याद्दीप्तिंपुष्टिंचकांतिंबलमपिकुरुतेना-
शयेत्संग्रहाख्यं ॥

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल, अजमायन, अजमोद, वायविडंग, चीतेकीछाल, हींग, असगंध, सैंधानिमक, जीरा, कालाजीरा, कालानोन, वेरकीछाल, धनियाँ इन सबकी बराबर भाँगका चूर्णलेवे तथा लौंगका चूर्ण मिलायके एकत्रकरे इसमें से तीन मासे घी और सहत इनके साथ देवे तो अग्निको दीप्ति करे, पुष्टि, कांति और बल करे तथा संग्रहणी का नाश करे ॥

बिल्वादिदुग्ध

बिल्वाब्दशक्रयववालकमोचासिद्धमाजंपयः पिबतियोदिवस-

त्रयंच ॥ सोतिप्रवृद्धाचिरकृद्ग्रहणीविकारंमासंसशोणितमसाध्यमपिक्षिणोति ॥

अर्थ—वेलगिरी, नागरमोथा, इन्द्रजो, नेत्रवाला, और मोचरस ये औषध मिलायके ओंटाया हुआ बकरीका दूध तीनदिन पीवे तो उसके संग्रहणी संबंधी विकार नाश होवे यदि १ महिने पर्यंत सेवन करे तो असाध्य दुष्ट रुधिर को नष्ट करे ॥

दशमूलादिकाढा

विश्वौषधस्यगर्भेणदशमूलजलंशृतं ॥
निहन्यात्तेनश्वयथुंग्रहणींसाममामयं ॥

अर्थ—दशमूल और सोंठ इनका काढा करके पीवे तो सूजन और आम संग्रहणी इनको नष्ट करे है ॥

मसूरादियोग

मसूरायाः कषायेणबिल्वगर्भंविपाचयेत् ॥
हंतिकुक्ष्यामयान्सर्वान्ग्रहणीपांडुकामलान् ॥

अर्थ—मसूरके काढेमें वेलगिरी को डालके ओंटावे जब वेलगिरी सीज जाय तब उतारके कपडेसैं छानके पीवे तो संपूर्ण कूखके रोग, संग्रहणी, पांडुरोग, आर कामला इनका नाश करे ॥

कुटजावलेह

कुटजस्यतुलांदत्वाचतुर्द्रोणांभसापचेत् ॥ द्रोणशेषेरसेतस्मिन्पूतेगुडतुलार्धकं ॥ घृतंचटंकवत्तत्रक्षिप्वामृद्वग्निनापचेत् ॥ समंगाबिल्वकाशिलाबिल्वार्धचपुनर्नवा ॥ मुस्ताभल्लातकंचापिधातकीगजपिप्पली ॥ अंबष्टावालकंचैवद्वेबृहत्यौसचित्रकं ॥ सद्भार्गीपिप्पलीमूलंविडंगानिहरीतकी॥ नागकेसरयष्टीकारलुकापत्रकंतथा ॥ विश्वाचेंद्रयवाः पाठसूक्ष्मैलाजीरकद्वयं ॥ जातिपत्रीजातिफलंलवंगंतगरंतथा ॥ स्तुतोद्विपालिकैर्भागैर्लेहोयंसाधयेत्ततः ॥ तक्रेणवसुतक्रंवापथ्यंदेयंविचक्षणैः ॥ अनेनग्रहणीरोगानतिसारन्सु-

दारूणान् ॥ रोगानीकविघातायकुटजोलेहउच्यते ॥

अर्थ—चारसो तोले कूडेकी छालको १६३८४ सोलह हजार तीनसो चौरासी तोले जलमें डालके औटावे जब चतुर्थांश शेषरहे तब उतारके छानलेय और इसमें गुड़ २०० तोले घी१टांक डालके मंदाग्निसें पचन करावे और इसमें खिरेटी वेलगिरी और शिलाजीत ये औषध दोदो तोले लेय, तथा सोंठ, नागरमोथा, भिलाए, धायकेफूल, गजपीपर, चूका, नेत्रवाला, कटेरी, बडीकटेरी, चीतेकीछाल, भारंगी, पीपरामूल, बायविडंग, जंगीहरड, नागकेशर, मूलहटीसह्मालू, पत्रज, सोंठ, इंद्रजो, पाढ, छोटीइलायची, जीरा, कालाजीरा, जावित्री, जायफल, लवंग, और तगर, इन सब औषधोंका चूर्ण प्रत्येक आठ २ तोले लेकै अवलेह बनावे इस अवलेहको छाछसें देय और पथ्यमें छाछपिवावे तो संग्रहणी 'घोर अतिसारके रोग और अनेक प्रकारके अन्य रोगोंको दूरकरे इसको' कुटजावलेह कहते है ॥

द्राक्षासव

मृद्वीकायाः पलशतंचतुर्द्रोणांभसापचेत् ॥ द्रोणशेषेतुशीतेचयुतेतस्मिन्प्रदापयेत् ॥ द्विशतेक्षौद्रखंडाभ्यांधातक्याः प्रस्थमेवच ॥ कंकोलंचलवंगंचफलंजात्यास्तथैवच ॥ पलांशकानिमरिचंत्वगेलापत्रकेसरं ॥ पिप्पलीचित्रकंचव्यंपिप्पलीमूलरेणुकं ॥ घृतभांडस्थितमिदंचंदनागरुधूपितं ॥ कर्पूरवासितोह्येषग्रहणोदीपनः परः ॥ अर्शसांनाशनः श्रेष्ठउदावर्तास्रगुल्मनुत् ॥ जठरंक्रुमिकुष्टानिव्रणांश्चविविधांस्तथा ॥ अक्षिरोगशिरोरोगगलरोगविनाशनः ॥ ज्वरमाममहाव्याधिपांडुरोगंसकामलं ॥ नाम्नाद्राक्षासवोह्येषबृंहणोबलवर्णकृत् ॥

अर्थ—४००तोले मुनक्कादाखमें ८१९२ तोले जल डालके काढाकरे जब चतुर्थांश शेषरहे तो उतारके छानलेय जब शीतल हो जावे तब इसमें सहत १०० तोले, मिश्री १००तोले और धायकेफूल ६० तोले तथा कंकोल लौंग, जायफल, कालीमिरच, दालचीनी, इलायची, पत्रज, नागकेशर, पीपल, चव्य, चित्रक, पीपरामूल, पित्तपापडा, ये प्रत्येक औषध चार २ तोले मिलायके इसको घीके

चिकने पात्रमें भरके उसको चंदन, और अगर, इनकी धूनी देवे तथा भीमसेनी कपूर इसके भीतर डालके वासितकरे यह द्राक्षासव सेवनकरनेसैं दीपनकरेहै, और संग्रहणी, बवासीर, उदावर्त्त, गोला, उदर, कृमिरोग, कुष्ठ, व्रण, नेत्र रोग, शिरोरोग, गलेके रोग, ज्वर, आम, घोरव्याधि, पांडुरोग, और कामला इनका नाश करनेमें श्रेष्ठहै ॥

बिल्वाग्निघृत

बिल्वाग्निचव्यार्द्रकशृंगवेरक्वाथेनकल्केनचसिद्धमाज्यम् ॥
सच्छागदुग्धंग्रहणीगदोत्थंशोफाग्निसादारुचिनुद्धरंतत् ॥

अर्थ—बेलगिरी, चीतेकी छाल, चव्य, अदरख, और सोंठ, इनका काढा और कल्क तथा बकरीका दूध इनसै सिद्ध करा हुआ घृत, संग्रहणीरोग, सूजन, मंदाग्नि, और अरुचि इनका नाश करनेमें उत्तम है ॥

चित्रकघृत

चित्रकक्वाथकल्काभ्यांग्रहणीघ्नंशृतंहविः ॥
गुल्मशोथोदरप्लीहशूलार्शोघ्नंप्रदीपनं ॥

अर्थ—चीतेकीछालका, काढा और कल्कसै सिद्ध करा हुआ घी सेवनकरनेसैं गोला, सूजन, उदररोग, प्लीहा, शूल, और बवासीर, इनको नष्ट करे तथा दीपन है।

चाङ्गेरीघृतम्

पाठागोक्षुरकंशुंठीपिप्पलीचूर्णयेत्समं ॥ सर्वेषांषोडशगुणै-
स्तोयैः क्वाथंप्रकारयेत् ॥ पादशेषंवस्त्रपूतमादायैतत्समं-
घृतं ॥ घृतांशंचांगेरिद्रावंत्रयाणांत्रिगुणंदधि ॥ गंडारी-
पिप्पलीमूलंत्र्यूषणंचव्यचित्रकं ॥ प्रत्येकंद्विफलंचूर्णंक्षिस्वा
सर्वंविचूर्णयेत् ॥ मृद्वग्निनाघृतंयावत्तत्तमवतारयेत् ॥ यो
जयेद्भोजनेपानेग्रहण्यामातिसारके ॥ अग्निसंदीपनंरुच्यंचां
गेरीघृतमुत्तमम् ॥

अर्थ—पाढ, गोखरू, सोंठ, और पीपल, इनका समान भाग चूर्णकर इस-को सोलह गुने पानीमें चढायकैं काढा करे जब चतुर्थांश शेषरहे तब उतारकै छानलेवे फिर इस काढे में समान भाग घी मिलावे और जितना घी होय उत-नाही चूकाका रस तथा इन तीनोसै तिगुना दही तथा रक्त कांचन,पीपरामूल

सोंठ, कालीमिरच, पीपर, चव्य, चित्रककी छाल, प्रत्येक आठ २ तोले कल्क करके मिलावे सबको एकत्र करके मंदाग्निपर रखके पचन करावे, जब घृत मात्र शेष रहे तब उतार लेवे इसको भोजन में अथवा इसको पीवे तो यह उत्तम चांगेरीघृत संग्रहणी और अतिसार, इनका नाश करे और अग्नि दीपन तथा रुचिकारकहै ॥

दाडिमाष्टक

पलद्वयंदाडिमस्यव्योषस्यचपलद्वयं ॥ त्रिगंधस्यपलंचैकं-खंडस्याष्टपलानिच ॥ सर्वमेकीकृतंचूर्णप्रशस्तंदाडिमाष्ट-कं ॥ दीपनंरुचिदंकंठयंसंग्राह्यंग्रहणीहरम् ॥

अर्थ—अनारदाना, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, ये प्रत्येक आठ, २ तोले ले, त्रिजातक ४ तोले, तथा मिश्री ३२ तोले इन सबका चूर्णकरे इसको दाडिमाष्टक कहतेहै यह दीपन, रुचकारी, कंठको हितकारी, तथा ग्राहकहै और संग्रहणी-का नाश करे

दूसरापाठ

दाडिमस्यपलान्यष्टौपलंसौगंधिकस्यच ॥ अजाजीनांपलं चार्धपलार्धधान्यकस्यच ॥ पृथक्पलांशकान्भागान्त्रि-कटुग्रंथिकस्यच ॥ त्वक्क्षीरीवालकंचैवदद्यात्कर्षसमंभि-षक् ॥ शर्करायापलान्याष्टौतदेकस्थंविचूर्णयेत् ॥ आमा तिसारशमनंकासहत्पार्श्वशूलनुत् ॥ हृद्रोगमरुचिंगुल्मं-ग्रहणीमग्निमार्दवं ॥

अर्थ—अनारदाना ३२ तोले, त्रिसुगंध ४ तोले, जीरा २ तोले, धनिया २ तोले, त्रिकुटा १२ तोले, पीपरामूल ४ तोले दालचीनी, वंशलोचन, और नेत्रवाला, ये प्रत्येक एक २ तोले लेवे तथा मिश्री ३२ तोले लेकर सबका एकत्र चूर्णकरे तो यह (दाडिमाष्टक) चूर्ण तयारहो, यह आमातिसार, खाँसी, और हृदय, पसवाडे इनकी पीडा और हृदय रोग, अरुचि, गोला, संग्रहणी तथा मंदाग्नि इनका नाश करे ॥

लाईचूर्ण

कर्षंगंधकमर्धपारदमुभेकुर्याच्छुभांकज्जलीमक्षंत्र्यूषणतश्चपं-

चलवणंसार्धंचकर्षंपृथक् ॥ भ्रष्टंहिंगुचजीरकद्वययुतंस-
र्वार्धभंगायुतंखादेट्टंकमितंप्रवृत्तिगदवान्तक्रस्यबिल्वेनच ॥

अर्थ—गंधक, १ भाग, पारा अर्धभाग, दोनोंकी कजलीकरे तथा सोंठ, मिरच, पीपल, सब मिलायके १ तोले, पाँचों निमक प्रत्येक ड़ेढ तोले और भुनीहुई हींग, जीरा, कालाजीरा, ये एक २ तोले तथा सब चूर्णसैं आधा भाँगका चूर्ण लेवे सबका चूर्णकरे इसमेंसैं १ तोले चूर्ण ४ तोले छाछसैं पीवेतो संग्रहणी नष्ट होवे,॥

मुस्तादिचूर्ण

मुस्तकातिविषाबिल्वकुटजंसूक्ष्मचूर्णितं ॥
मधुनाचसमालीढंग्रहणींसर्वजांहरेत् ॥

अर्थ—नागरमोथा, अतीस, वेलगिरी, और इन्द्रजो इनका चूर्ण करके सहतसै देवेतो यह सांनिपात, और संग्रहणी, इनका नाश करे ॥

लवङ्गादिचूर्ण

लवंगकंकोलमुशीरचंदनंनतांसनीलोत्पलकृष्णजीरकं ॥ ए
लासकृष्णागरुभृंगकेसरंकणासविश्वानलदंसहांबुना ॥ क-
र्पूरजातीफलवंशरोचनासिद्धार्थभागाः सहसूक्ष्मचूर्णितं ॥
सरोचनंतर्पणमग्निदीपनंबलप्रदंवृष्यतमंत्रिदोषनुत् ॥ अ-
र्शोविबंधंतमकंगलग्रहंसकासहिक्कारुचियक्ष्मपीनसम् ॥ ग्रह-
ण्यतीसारमथासृजक्षयंप्रमेहगुल्मांश्चनिहंतिसत्वरं ॥

अर्थ—लौंग, कंकोल, नेत्रबाला, चंदन, तगर, नीले कमल, कालाजीरा, इलायची, पीपर, अगर, भाँगरा, नागकेशर, पीपर, सोंठ, जटामांसी, खस, कपूर, जायफल, वंशलोचन, और सपेद सरसो सब औषधी समान भाग लेवे सबका चूर्णकरे यह रोचन, तृप्तिदायक, अग्निदीपक, अरुचि, क्षय, पीनस, संग्रहणी, अतीसार, रक्तक्षय, प्रमेह, और गोला इनका नाश करे ॥

पाठादिचूर्ण

पाठाविषाकुटजवृक्षफलत्वगब्दतिक्तामदारसजनागरबिल्वचू-
र्णं ॥ सक्षौद्रतंदुलजलंग्रहणीप्रवाहिरक्तप्रवाहगुदरुग्गुदजे-
षुदद्यात् ॥

अर्थ—पाढ, अतीस, इन्द्रजो, कूडाकी छाल, नागरमोथा, कुटकी, धायके-फूल, रसोत, सोंठ, वेलगिरी इनका चूर्ण चाँवलोंके धोवनमें सहत मिलायके पीवे तो संग्रहणी, प्रवाहिका, गुदाके रोग, और ववासीर इनको दूर करे ॥

तक्रसेवनम्

ग्रहणीरोगिणांतक्रंदीपनंग्राहिलाघवात् ॥
पथ्यमम्लमपाकीचरक्तपित्तमकोपनं ॥

अर्थ—संग्रहणीरोग वालेको छाछका पीना दीपन, ग्राहक, और हलकाहै तथा पथ्यकारक, एवं खट्टी छाछ होय तो अपाकी और रक्तपित्त को कुपित करता जाननी ॥

महालुंगादितक्रयोग

आरुचौमातुलिंगस्यकेसरंसार्द्रसैंधवं ॥
दद्याद्भोजनकालेतुप्रातस्तक्रंचरोगिणे ॥

अर्थ—संग्रहणी रोगमें यदि अरुचि होनेसैं महालुंग (विजोरे) की केशर अदरख, और सैंधानिमक ये भोजन कालमें देवे और प्रातः कालमें छाछपीवे ॥

चित्रकादितक्रयोग

दहनाजमोदसैंधवनागरमरिचंपिवाम्लतक्रेण ॥
सप्ताहादग्निवलंग्रहण्यतीसारशूलघ्नं ॥

अर्थ—चीतेकी छाल, अजमोद, सैंधानिमक, सोंठ, और कालीमिरच, ये संपूर्ण वस्तु खट्टीछाछमें पीसके पीवे तो सातही दिनमें अग्नि दीपन होकर संग्रहणी अतिसार और शूल इनका नाश होय, ॥

अन्ययोग

त्रिकांसंतक्रस्याद्द्विकुडवपटोः षष्टिरभयाः पचेत्प्रस्थः सार्धं
घृततिलजविश्वाग्निकुडवैः ॥ समावाप्याजाजीमरिचचपला
दीप्यकपलैर्लिहेन्नान्यंवन्हिर्दृढयतिविकारांश्चजयति ॥

अर्थ—७६८ तोले छाछ, निमक ३२ तोले और हरड़, ६० तोले डालके पचन करावे, फिर उसमें घी, तिल, सोंठ, और चीता, ये प्रत्येक १६ तोले तथा जीरा, कालीमिरच, पीपल, और अजमायन ये प्रत्येक ४ तोले मिलायके

अवलेह सिद्धकरे जब सिद्धहो जावे तब रोगीको देवे तो अग्निको बढावे और विकारोंका नाश करे ॥

शंखवटी

चिंचाक्षारपलंपटुत्रयपलंनिंबूरसेकल्कितंतस्मिन्शंखपलंप्रत प्तमसकृन्निर्वाप्यशीर्णावधि ॥ हिंगुव्योषपलंरसामृतबलिंनिः- क्षिप्यनिष्कांशकान्दग्ध्वाशंखवटीक्षयेग्रहणिकारुक्पंक्तिशू लादिषु ॥

अर्थ—इमलीका खार ४ तोले, सैंधानिमक, विड़नोन, काला निमक, ये प्रत्ये- क औषध चार चार तोले लेवे इन सबका नीबूके रसमें कल्क करके उसमें चार तोले शंखके टुकड़ेको तपायके बुझावे, फिर गरम करे और फिर बुझावे इस प्रकार करनेसैं जब शंखकी भस्म हो जावे तबतक करे फिर हींग, सोंठ, काली- मिरच, पीपल, पारा, सिंगियाविष, और गंधक ये चार २ मासे लेवे सबको पी- सकर गोली बनावे यह क्षय, संग्रहणी, पंक्तिशूल, इनका नाश करे ॥

जातीफलादितक्र

जातीफलौषधशिवाविडहिंगुजीरगंधंद्विशामथितकल्कितरा- जिकाच ॥ अंगारभर्जितसुहिंगुमरिष्टकंचतक्रेणकोलमित मामगदग्रहण्यां ॥

अर्थ––जायफल, सोंठ, आमला, वायविडंग, हींग, जीरा, ये प्रत्येक समान भाग लेवे, गंधक २ भाग, तथा छाछमें पिसीहुई राई और लहसन ये सब ए- कत्र करके उस छाछमें हींग भूनके मिलावे, इस छाछमेंसैं चार मासे देय तो आम संग्रहणी दूर होवे ॥

वार्त्ताकवटी

चतुःपलंसुधाकाडंत्रिपलंलवणत्रयं ॥ वार्ताकाः कुडवंचा र्कमूलाद्विल्वेतथानलात् ॥ दग्ध्वाद्रवेणवार्ताकैर्गुटिकाभो- जनोत्तरं ॥ भुक्ताभुक्तंपचेच्चाशुनाशयेद्ग्रहणीगदं ॥ कासं- श्वासंतथार्शांसिविषूचींचहृदामयं ॥

अर्थ—१६तोले थूहरका टुकड़ा तथा सैंधानिमक, विडनिमक, कचियानिमक, ये सब १२ तोले लेवे और बैंगन १६ तोले, आककी जड़ ८ तोले, इन सबको

एकत्र कर अग्निमें भस्म करलेवे फिर बैंगनके रसमें इसकी गोली बनाय लेवे इसमेंसें एक गोली भोजनके पश्चात् भक्षण करे तो भोजन कराहुवा अन्न तत्काल पचे और संग्रहणी,खांसी,श्वास,ववासीर,विषूचिका और हृदयका रोग ये सब दूरहो ॥

भल्लातकक्षार

भल्लातकंत्रिकटुकंत्रिफलालवणत्रयं ॥ अंतर्धूमंद्विपलकंगो
पुरीषाग्निनादहेत् ॥ सक्षारः सर्पिषापीतोभोज्योवाथविचू-
र्णितः ॥ हृद्रोगपांडुग्रहणीगुल्मोदावर्तशूलनुत् ॥

अर्थ—भिलाए, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड़, बहेडा, आंवला, सैंधानिमक, खारीनिमक, कालानिमक, तथा घरका धूंआ, ये प्रत्येक आठ २ तोले लेवे सबको आरने उपलों में रखके फूंकदेवे जब जलके क्षारहो जावे, इसको, घीके साथ भक्षण करे अथवा भोजनके पश्चात् तो हृदय रोग, पांडुरोग, संग्रहणी, गोला, उदावर्त्त, और शूल इनका नाश करे ॥

चव्यादिचूर्णम्

चूर्णंचव्यकचित्रश्रीविश्वभेषजनिर्मितं ॥
तक्रेणसहितंहंतिग्रहणींदुःखकारिणीं ॥

अर्थ—चव्य, चीतेकी छाल, वेलगिरी, और सोंठ, इनका चूर्ण छाछके साथ सेवन करे तो अत्यंत दुष्ट संग्रहणीका नाश होवे, ॥

रुचकादिचूर्णम्

रुचकाग्निमरीचानांचूर्णंतक्रेणसेवितं ॥
ग्रहण्युदरगुल्मार्शः क्षुन्मांद्यप्लीहनाशनं ॥

अर्थ—कचियानिमक, चीतेकी छाल, और कालीमिरच, इनका चूर्ण करके छाछके साथ सेवन करे तो संग्रहणी, उदर, गोला, ववासीर, मंदाग्नि और प्लीह इनको नाश करे ॥

कपित्थाष्टकचूर्णम्

अष्टौभागाः कपित्थस्यषड्भागाशर्करामता ॥ दाडिमंतिं-
तिडीकंचश्रीफलंधातकीतथा ॥ अजमोदाचपिप्पल्यः प्र-
त्येकंस्युस्त्रिभागिकाः ॥ मरिचंजीरकंधान्यंग्रथिकंवालकं-
तथा ॥ सौवर्चलंयवानीचचातुर्जातंसचित्रकं ॥ नागरंचैक

भागाः स्युः प्रत्येकंसूक्ष्मचूर्णितं ॥ कपित्थाष्टकसंज्ञंस्याचूर्णमेतद्गलामयान् ॥ अतिसारंक्षयंगुल्मंग्रहणींचव्यपोहति ॥

अर्थ—कैथका गूदा ८ भाग खांड ८ भाग और अनारदाना, इमली कीछाल, वेलगिरी, धायकेफूल, अजमोद, और पीपल, यह छः औषध तीनतीन भाग लेवे तथा कालीमिरच, जीरा, धनिया, पीपरामूल, नेत्रवाला, संचरनिमक, अजमोद, दालचिनी, इलायची, पत्रज, नागकेशर, चीतेकीछाल, और सोंठ, ये तेरह औषध एक एक भाग लेवे फिर सब औषधोंका बारीक चूर्णकरे इसको (कपित्थाष्टक चूर्ण) कहतेहै यह कपित्थाष्टक चूर्णके सेवन करनेसे कंठके रोग, तथा अतिसार, क्षय, गोला, और संग्रहणी ये रोग दूर होवे ॥

दूसरालाहीचूर्ण

त्रिजातकव्योषवरारसेंद्रगंधाजमोदाभिशिवेल्लराव्यः ॥ बिल्वानलाजाजिलवंगधान्यगजोपकुल्यामधुकंपटूनि ॥ हिंगुःकुवेराव्हयमोचसारौक्षारौजयासर्वचतुर्थभागाः ॥ इदंहिचूर्णविनिहंतितूर्णप्रसूतिकासंग्रहणीविकारं ॥ समस्तरोगांतकमग्निकारिभ्राजिष्णुताकारिसुतक्रपीतं ॥ इमंप्रयोगंबहुधानुभूतंचकारधात्रीकिलकापिलाही ॥

अर्थ—दालचिनी, पत्रज, इलायची,सोंठ, मिरच, पीपल, हरड़, बहेडा, आवला,पारा, गंधक, अजमोद, सोंफ, वायविडंग, हलदी, वेलगिरी, चीतेकी छाल, जीरा, लौंग, धनिया, गजपीपल, मुलहटी, पांचो निमक, हींग पाढ सेमरकागोंद, सज्जीखार, जवाखार, और सबसैं चौगुनी शुद्धकरी भांग लेवे सबका बारीक चूर्ण करके छाछके साथ सेवन करे तो संग्रहणी रोग, प्रसूतके रोग, मंदाग्नि, इत्यादि सब रोगोंको हितकारी है यह प्रयोग किसीलाई नामक दाईने बहुतवार अनुभव करके निर्माण कराहै इसीस इसको लाई चूर्ण कहते है ॥

जातिफलादिचूर्ण

जातीफललवंगैलापत्रत्वङ्नागकेसरैः ॥ कर्पूरचंदनातिलैस्त्वक्षीरीनागरामलैः ॥ तालीसपिप्पलीप्रस्थस्थूलजीरकचित्रकैः ॥ शुंठीविडंगमरिचैःसमभागेनचूर्णितैः ॥ यावंत्येतानिसर्वाणि

कुर्याद्भंगांचतावतीं ॥ सर्वचूर्णसमादेयाशर्कराचभिषग्वरैः ॥
कर्षमात्रंततःखादेन्मधुनाप्लावितंसुधीः ॥ अस्यप्रभावाद्ग्रहणी
कासश्वासारुचिक्षयाः॥वातश्लेष्मप्रतिश्यायाःप्रशमंयांतिवेगतः ॥

अर्थ—जायफल, लाग, इलायची, पत्रज, दालचिनी, नागकेशर, भीमसेनी-कपूर, सपेद चंदन, कालेतिल, वंशलोचन, तगर, आमले, तालीसपत्र, पीपल, हरड़, कालाजीरा, चीतेकी छाल, सोंठ, वायविडंग, और कालीमिरच, ये वीस औषध समान भाग लेवे तथा इन सब औषधोंके बराबर शुद्धकरी हुई भांग लेवे फिर सबका चूर्ण करके उस चूर्णके समान भाग मिश्री मिलाके फिर इसमें सैं १ कर्ष चूर्णको सहतमें मिलायके लेवे तो संग्रहणी, खांसी, श्वास, अरुचि, क्षय-वात कफके विकार, और पीनस ये रोग तत्काल दूर हो ॥

वेलफलादिचूर्ण

श्रीघनवालकमोचकशक्रंचूर्णमजापयसापरिपेयं ॥
हंतिचतद्ग्रहणीभयमाशुसामगदंरुधिरेणविमिश्रं ॥

अर्थ—वेलगिरी, नागरमोथा, नेत्रवाला, मोचरस, और इन्द्रजों इनके चूर्ण को बकरीके दूधसैं पीवे तो संग्रहणी तथा आमरक्त इनका नाश होवे ॥

जातीफलादिचूर्णकापाठांतर

जातीफलाग्निहिमवेल्लतिलेंदुजीरवंशीत्रिकत्रयमनक्षमिभोनतंच॥
तलीसदेवकुसुमेअपिचूर्णमेषांद्विःशर्करंचसमगंजामिदंग्रहण्यां ॥

अर्थ—जायफल,चीतेकी छाल, नेत्रवाला, वायविडंग, तिल, कपूर, जीरा, वंशलोचन, त्रिसुगंध, बहेडेके विना त्रिफला, त्रिकुटा, गजपीपर, तगर, ताली-सपत्र, और लौंग, इनका समान भाग चूर्ण तथा चूर्णसैं दूगनी मिश्री मिलावे यह चूर्ण संग्रहणीका नाशकहै ॥

ग्रहणीरोगमेंपथ्य

निद्राछर्दनलंघनंचिरभवायःशालयःषाष्टिकामंडोलाजकृतोम
सूरतुवरीमुद्गप्रभूतारसाः ॥ निःशेषंहृतसारमेवदधिजंगोक्षी
रजातंगवांछागंवानवनीतमेवविमलंतद्धृत्पयःसंभवं ॥ छाग
ल्याजपयोदधीनितिलजंतैलसुरामाक्षिकंशालूकंलकुचंचदाडि
मयुगनंव्यानिभव्यानिच ॥ रंभायाःकुसुमंफलंचतरुणंबिल्वंचशृं

गाटकंचांगेरीविजयाकपित्थकुटजाजाजीकसेरूणिच ॥ न्यग्रोधस्यफलंचतक्रममलंजातीफलंजांबवंधान्याकानिचतिंदुकानिचमहानिंबोरुणाफेनवत् ॥ ऋव्यालांबुशशैणतित्तिररसाःक्षुद्राझषाःसर्वशोडिंडीशोमधुरालिकाचखलिपाःसर्वःकषायोरसः

अर्थ—निद्रा, वमन, लंघन, पुराने सांटी चावल, खीलोंका मंड, और मसूर अरहर, मूंग इनका रस तथा निःशेष मक्खन निकाली हुई छाछ, गौका, बकरीका, और भेड़का, दूध, मक्खन दही, तथा तिलीका तेल, मद्य, सहत, कमलकंद, (भरसीडा) वडहर, खट्टे और मीठे अनार, केलाका फूल, पुरानाकेला, बेलका फल, सिंघाडे, चूका, भांग, कैथ, कुड़ा जीरा, कसेरू, वड़के फल, उत्तम छाछ, जायफल, जामुन, धनिया, तेंदू, कुचला, वकायन, अरुणा, (मजीठ) अफीम, मांस, सपेद घीया, शशा, हरिण, तीतरपक्षी इनका मांस रस संपूर्ण प्रकार की छोटी मच्छी, ढेड़स, साली, कोकिल, बिलेमें रहने वाले जीवोंका मांस और संपूर्ण कषेले पदार्थ ये संग्रहणी रोगपर पथ्य कहेहै ॥

ग्रहणीरोगमेंअपथ्य

रक्तस्रुतिजागरमंबुपानंस्नानंस्त्रियंवेगविनिग्रहश्च ॥ नस्यांजनंस्वेदनधूमपानंश्रमंविरुद्धांजनमातपंच ॥ गोधूमनिष्पावकलायमाषयवार्द्रकंछत्रकराजमाषाः ॥ उपोदकीवास्तुककाकमाचीकूष्मांडतुम्बीमधुशिग्रुकंदान् ॥ तांबूलमिक्षुंबदरंरसालउर्वारुकंपूगफलंरसानां ॥धान्याम्लसौवीरतुषोदकानिदुग्धंगुडंमस्तुचनारिकेलं ॥ पुनर्नवाबार्हतबैल्वकानिसर्वाणिशाकानिचपत्रवंति ॥ दुष्टांगगोवारिकुरंगनाभोक्षारसंमस्तानिसराणिचापि ॥ द्राक्षामथाम्लंलवणंरसंचगुर्वन्नपानंसकलंचपूगं ॥ वैद्यश्चिकित्सेद्ग्रहणीविकारंविवर्जयेत्संततमप्रमत्तः ॥

अर्थ—रक्तस्राव (फस्तखोलना) जागना, जल पीना, स्नान, स्त्रीसंग मलमूत्र आदिका वेग धारण, नस्य, अंजन, पसीने निकालना, धूमपान (हुक्कापीना) श्रमकरना, विरुद्ध अन्न भक्षण, अंजन, धूपमें रहना, गैहू, चौरा, मटर, उड़द, जौ, अदरख, छतोना, राजमाष, पोईकासाग, वथूआ, मकोय, पेठा, तूंबा, मीठासहजना, जमीकंद, रतालू आदिकंद,पान, ईख, वेर, आंब, काकडी,

सुपारी, रसमें धान्याम्ल, सौवीर, तुषोदक, दूध, गुड़, दहीकी मलाई, नरियल, सोठ, कटेरी, बेलगिरी, संपूर्ण, पत्तों का साग, दुष्ट (रोगी) गौका दूध, कस्तूरी, क्षार, संपूर्ण दस्तकारक द्रव्य, दाख, खट्टे पदार्थ, और निमकीन पदार्थ ए रस, भारीअन्न, पान, सुपारी, ये पदार्थ संग्रहणी रोगवाले को वैद्य कदाचित् न देवे ॥

इति श्रीबृहन्निघंटुरत्नाकरे ग्रहणीरोगकर्मविपाक
निदानचिकित्सासमाप्तः

अर्श (बवासीर)

अथ ज्योतिःशास्त्राभिप्रायेणअर्शरोगनिदानम् ।

योगार्णवतः

निर्बलीयदिशीतांशुःशुभेतरसमन्वितः
सप्तमेतुगुदांशस्थेसभवेदर्शरोगवान् ॥ १ ॥

अर्थ—निर्बली चंद्रमा अशुभग्रहों के साथ सप्तम घरमें गुदांशमें स्थित होय तो उस प्राणीके अर्श (बवासीर) का रोग होय ।

निर्बलीहृदयाधीशोगुदाधीशोऽपितादृशः
गुदांकुराभवंतीतिजातस्यनतुसंशयः ॥ २ ॥

अर्थ—हृदयाधीश(कर्कराशिका अधिपति)और गुदाधीश ये जिसकी लग्नमें निर्बल होकैं पडेहो उस प्राणीके जन्मसे ही गुदांकुर (गुदामें मस्से) होवे इसमें संदेह नहीं है ।

हृदयाधीशसंयुक्तनवमांशकनायकः
गुदाधीशेनेत्थशालीसवैरक्तार्शदायकः ॥ ३ ॥

अर्थ—नवमांशकाधिपति हृदयाधीश करके युक्तहो, अथवा गुदाधीशके साथ इत्थशाल करता होवे तो यह ग्रह रक्तार्श अर्थात् खूनी बवासीर का करने वाला जानना ।

गुदाधीशदृकाणेशनवांशेशोयदाशनिः
गुदामध्येमशककृत्बलवान्रक्तजार्शकृत् ॥ ४ ॥

अर्थ--यदिशनिश्चर गुदाधीश द्रेष्काण का अधिपति और नवमांशकका अधिपति होवे तो गुदामें मस्सोंको करे और वही पूर्वोक्त शनि बलवान् होवेतो खूनी बवासीर को करता है ।

वातार्शकारकोज्ञेयःगुदेशेशुष्कराशिगे
शुभेतरसमायोगेगुदाभ्रष्टोभवेन्नरः ॥ ५ ॥

अर्थ—गुदाका अधिपति यदि शुष्कराशिमें[1] बैठा होवे तो वातार्श अर्थात् बादी की बवासीर करे है, और वही गुदाधीश पापग्रहोंके साथ बैठा होयतो उसकी गुदा भ्रष्ट अर्थात् कांछ निकलने का रोग होवे,

रुधिरेरुधिरस्थानेरुधिरांशेधरागृहे
यस्ययोगेत्वियंरीतीरक्तर्शीसनरोभवेत् ॥ ६ ॥
रक्तार्शेणमृतिस्तस्यशून्यमार्गेशुभग्रहाः
अष्टेशेशनिवर्गेवाशस्त्रौषधकृतामृतिः ॥ ७ ॥

अर्थ—यदिशून्य मार्गमें शुभ ग्रह बैठे होवेतो उस प्राणीकी खूनी बवासीर करके मत्यु होवे और

बवासीरकाकर्मविपाक

दत्वाथवेतनंयोध्येत्यादायापिचवेतनं ॥
ध्यापयेच्चजुहुयाद्वाजपेद्वार्शोयुतोभवेत् ॥

अर्थ—जो प्राणी वेतन (नौकरी, तनखा) देकर पढताहै अथवा तनखा लेकर पढाताहै किंवा नोकरी ठहरायकर हवन अथवा जप करताहै वह अर्श (बवासीर) रोगी होताहै ॥

सामान्यबवासीरकानिदान

पृथक्दोषैःसमस्तैश्चशोणितात्सहजानिच ॥
अर्शांसिषट्प्रकाराणिविद्यात्गुदवलित्रये ॥

अर्थ—बादी, पित्त, कफ, सन्निपात, रक्तज, और सहज, ऐसे छः प्रकार की बवासीर रोग गुदाकी त्रिवलि योंमेंसें किसी एक वलीमें होताहै ॥

---

१ शुष्कराशिजातकके ग्रंथोंसें विचारलेना ।

ववासीरकीसंप्राप्तिऔररूप

दोषास्त्वङ्मांसमेदांसिसंदुष्यविविधाकृतीन् ॥
मांसांकुरानपानादौकुर्वंत्यर्शांसिताञ्जगुः ॥

अर्थ—वातादि दोष कुपितहो त्वचा, मांस और मेद इनको दूषितकर अनेक प्रकारके मांसांकुर (मस्से) गुदामें उत्पन्न करतेहै उसको अर्श अर्थात् ववासीर कहते है ॥

ववासीरकापूर्वरूप

विष्टंभोंगस्यदौर्बल्यंकुक्षेराटोपएवच॥ काश्र्यमुद्गारबाहुल्यंसक्थिसादोल्पविट्कता ॥ ग्रहणीदोषपांड्वर्तेराशंकाचोदरस्यच ॥ पूर्वरूपाणिनिर्दिष्टान्यर्शसामभिवृद्धये ॥

अर्थ—मलका प्रतिबंध, शरीरका दुर्वलता, कूखमें गुड गुडाहट शब्द, कृशता, असंत डकारों का आना, पैरोंकी जांधोंका रहजाना, मल होनेपर भी थोडा उतरना, तथा संग्रहणी, पांडुरोग, तथा उदर रोग होगया ऐंसी प्रतीत होना, इत्यादि लक्षण ववासीर होने वालेके प्रथम होते है ॥

चिकित्साक्रम

अर्शोतिसारग्रहणीविकाराःप्रायेणचान्योन्यानिदानभूताः ॥
सन्नेनलेसंतिनसंतिदीप्तेरक्षेदतस्तेषुविशेषतोग्नि ॥

अर्थ—ववासीर, अतिसार, और संग्रहणी ये विकार प्रायः अन्योन्यके आश्रयसैं होतेहै तथा ये रोग अग्नि प्रदीप्त होनेसैं नहीं होते किंतु मंदाग्नि होनेसैं होतेहै इसवास्ते इन विकारों में विशेषता करके जठराग्निका संरक्षण वैद्यको करना चाहिये ॥

तथादूसराक्रम

दुर्नाम्नांसाधनोपायोचतुर्धापरिकीर्तितः ॥
भैषजक्षारशस्त्राग्निसाध्यत्वंयाप्यमुच्यते ॥

अर्थ—ववासीरका यत्न (इलाज) चार प्रकारके है, अर्थात् चार प्रकारसैं ववासीर अच्छाहो सकताहै जैसैं, औषध (जडीबूंटीआदि) क्षार (जवाखारादि) शस्त्र (चीरना फाडना) और अग्नि (दागना आदि) है ॥

तथाअन्यक्रम

अर्शसामौषधैर्भारैःशस्त्रेणचयथाग्निना ॥
चिकित्सास्याच्चतुर्धैवंमुख्यंतत्रौषधांविधिः ॥

अर्थ—अर्श रोगकी औषध, क्षार, शस्त्र, और अग्नि इस प्रकार चतुर्विध चिकित्सा है परंतु इन चतुर्विधोंमें औषध मुख्यहै ॥

तथा

शस्त्रैर्वाथजलौकाभिः प्रोच्छूनकठिनार्शसः ॥
शोणितंसंचितंदृष्ट्वाहरेत्प्राज्ञःपुनःपुनः ॥

अर्थ—शस्त्रसैं अथवा जोखसैं सूजीहुई कठोर मस्सों का संचित रुधिर को वारंवार कढाना चाहिये ॥

वातादिजन्यअर्शोंकायत्न

यद्वायोरनुलोमंस्याद्यदग्निबलवृद्धये ॥
अन्नपानौषधंसर्वंतत्सेव्यंनित्यमर्शसः ॥

अर्थ—अर्श रोग परजो वादीको अनुलोमन करे तथा जो अग्निको बढावे ऐसै अन्न पान, और औषध सेवन करे ॥

स्नेहस्वेदादयोवातेपित्तेषुरेचनादयः ॥ कफेवांत्यादयोर्शस्सुमिश्रे मिश्राप्रातिक्रिया ॥ पित्तवद्रक्तजेकार्यःप्रतीकारोर्शसोध्रुवम् ॥

अर्थ—स्नेह, तथा पसीने निकालना ये वादीको, और पित्तको दस्त कराने एवं कफको वमन कराना तथा मिश्रित दोषोंपर मिश्रित चिकित्सा करे और खूनी ववासीर पर पित्तके समान यत्न करने चाहिये ॥

अर्शांसिभिन्नवर्चांसिवातातीसारवद्दिशेत् ॥
उदावर्तविधानेनगाढविट्कान्युपाचरेत् ॥

अर्थ—जिस ववासीरमें रेच और शौच इत्यादि होते हो, उसपर वातातिसारके समान, और गाढ विट्क ववासीर पर उदावर्त्तके समान औषध क्रिया करे ॥

वातकीववासीरकेलक्षण

गुदजान्शोणितवहान्पितशोणितनाशनैः ॥
योगैरुपाचरेत्तत्तुविड्बंधेतुप्रशस्यते ॥

अर्थ-- रुधिर वहने वाले अर्श रोगपर रक्त पित्त नाशक उपाय और विड्वंध होय तो विड्वंध का उपचार करे ॥

वातार्शकेलक्षण

कषायकटुतिक्तानिरूक्षशीतलघूनिच ॥ प्रमितालपाशनंतीक्ष्णं मद्यंमैथुनसेवनं ॥ लंघनंदेशकालौचशीतौव्यायामकर्मच ॥ शोकोवातातपस्पर्शोहेतुवातार्शसोमतः

अर्थ—कषेले, चरपरे, कडुए, रूखे, शीतल, हलके, अनुमानके तथा अत्यंत अल्प भोजन और तीक्ष्ण पदार्थ, मद्य, मैथुन, लंघन, शीतल, देश, तथा शीतल काल, अत्यंत दंड कसरत, शोक, हवा, धूप, इनका स्पर्श इत्यादिक वातार्श होनेके कारण है ॥

तथा

गुदांकुराबव्हनिलाःशुष्काश्चिमिचिमान्विताः ॥ म्लानाःश्यावारुणास्तब्धविशदाःपरुषाःखराः ॥ मिथोविसदृशावक्रास्तीक्ष्णाविस्फुटिताननाः ॥ बिंबीककर्कंधुखर्जूरकार्पासीफलसन्निभाः ॥ केचित्कदंबपुष्याभाःकेचित्सिद्धार्थकोपमाः ॥ शिरःपार्श्वांसकट्यूरुवंक्षणाभ्यधिकव्यथाः ॥ क्षवथूद्गारविष्टंभहृद्ग्रहारोचकप्रदाः ॥ कासश्वासाग्निवैषम्यकर्णनादभ्रमावहाः ॥ तैरार्तोग्रथितंस्तोकंसशब्दंसप्रवाहिकं ॥ रुक्फेनपिच्छानुगतंविबद्धमुपवेश्यते ॥ कृष्णत्वङ्नखविण्मूत्रनेत्रवक्त्रंचजायते ॥ गुल्मप्लीहोदराष्ठीलासंभवस्ततएवच ॥

अर्थ—वातादिक गुदाके मस्से, स्रावरहित, चिनमिनानेवाले, पीडायुक्त, निर्जीव, (कुमलाएहुए) श्याम, और अरुणवर्ण स्तब्ध, फैलेहुए, कठोर, खरदरे, विषम अर्थात् एकसे नहीं, टेढे, तीक्ष्ण, फटेहुए मुखके, कंदूरी, बेर, खिजूर, कपास इनके फलके समान, कोई कदंब फूलके समान गोल, कोई सरसोंके समान, इस ववासीरके होनेसें मस्तक, पसवाडे, कमर, ऊरू, वंक्षण, इन में अत्यंत पीडा होवे, तथा छीक, डकार, मलका अवरोध, हृदय पकडेके समान पीडा, और अरुचि ये होतहै तथा खांसी, श्वास, अन्न कभी पचे कभी न पचे, कानोंमें शब्द हुआकरे तथा भ्रम ये होय, ऐसे ववासीरसें पीडित मनुष्य का

गांठदार, थोडा, शब्द युक्त और पीडा, झाग, चिकना इन करके युक्त अल्प २ ऐसा दस्त होवे, तथा उस मनुष्य की त्वचा, नख, मल, मूत्र, नेत्र और मुख कुछ २ काले होवे और गोला, प्लीहा, उदर, अष्टीला अर्थात् वातग्रंथी, इनकी उत्पत्ति इस ववासीरसैं होतीहै अव इसका यत्न लिखतेहै ॥

अर्कक्षार

तरुणान्यर्कपत्राणिपंचैवलवणानिच ॥ युक्तानितैलेनाम्लेन दहेत्क्षारश्चयुक्तितः ॥ उष्णोदकेनमद्यैर्वापीतोवातार्शसांहितः ॥

अर्थ--पुराने पकेहुए आकके पत्ते और पांचोनिमक इनको तेल और खटाई के साथ जलायके युक्तिसैं खार निकाल ले, इसको गरम जलके साथ अथवा मद्यके साथ पीवे तो अर्श रोगी वाले को हितकारी होय, ॥

विडंगादितक्रयोग

विडंगंत्रिफलाव्यूषंत्रिसिताचोपकर्णिका ॥ कंपिल्लंनलिनीचूर्णं तुल्यक्षौद्रंलिहेदनु ॥ गुडेनासितयावाथवातोत्थानर्शसाञ्जयेत् ॥

अर्थ--वायविडंग, त्रिफला, त्रिकुटा, मिश्री, मूषाकर्णी, निसोथ, और मलिनी (पवारी) इनका चूर्ण सहतसैं अथवा गुडसैं अथवा खांड़के साथ खाय तो वादी की ववासीर दूर होवे ॥

लवणादिचूर्णम्

लवणोत्तमवन्हिकलिंगयुजंविडबिल्वमहापिचुमंदयुतं ॥ पिवसप्तदिनंमथितंलुलितंयदिमर्दितुमिच्छसिवायुरुजं ॥

अर्थ—सैंधानिमक, चीतेकीछाल, इन्द्रजो, विडनिमक, वेलगिरी, और नीमकीछाल इनका चूर्ण मिलाय सातदिन, मठेको पीवे तो बात संबंधी ववासीर की पीडा नाश होय ॥

मरीचादिचूर्ण

मरिचंपिप्पलीकुष्टंसैंधवंजीरनागरम् । वचाहिंगुविडंगानिपथ्या वन्यजमोदकम् । एतेषांकारयेच्चूर्णंचूर्णस्याद्विगुणंगुडं । खादेत्कर्षमितंचापिपिवेदुष्णजलं ततः । सर्वाण्यर्शांसिनश्यंतिवातजानिविशेषतः ॥

अर्थ—कालीमिरच, पीपल,कूठ, सैंधानिमक, जीरा, सोंठ, बच, हींग, वाय-

विडंग, हरड, चीते की छाल, और अजमायन, इनका चूर्ण करके दूनागुड मिलावे फिर इस में सैं १ तोले नित्य सेवन करे ऊपर सैं गरम जल पीवे तो संपूर्ण ववासीर नष्ट होवे इनमें भी विशेष करके वादी की ववासीर नष्ट करे है।

सूरणमोदक

शुष्कात्सूरणकंदजोयमिलितंव्योषंतथाचित्रकंश्रेष्ठाजीरकरामठंसमलवंदीप्याजमोदान्वितं।सर्वस्यांघ्रिकसिंधुजंपरिभवेन्निंबूद्रवैर्वासरंसिद्धःसूरणमोदकोगदहरः श्रेष्ठोभवेत्प्राणिनां ॥ शूलंसंग्रहणीगदंत्वतिसृतिंदुष्टांप्रवाहींजयेद्दीप्ताग्निंकुरुतेबलंवितनुतेगुल्मप्रणाशंतथा ॥ अर्शांस्युद्धतमारुतामयहरोबालेचवृद्धेहितोगर्भिण्यांचनशस्यतेननिपुणैर्नोरक्तपित्तेपिच ॥

अर्थ—पुराने सूके हुए सूरण(जमीकंद)का रस में कालीमिरच, पीपल, सोंठ, चीतेकी छाल, उत्तम जीरा, हींग, अजमायन, और अजमोद ए समान भाग लेवे तथा सबका चौथाहिस्सा सैंधानिमक मिलायके सुखाय लेवे फिर निबूके रस सैं एकदिन भावना देवे, तो यह सूरणमोदक सिद्ध होवे यह प्राणियोंके व्याधि नाश करने में श्रेष्ठ है तथा शूल, संग्रहणी, अतिसार, प्रवाहिका गोला, ववाशिर, और वादीका प्रकोप इनको दूर करे तथा अग्नि प्रदीप्त करे, एवं बल देवे, यह सूरणमोदक निपुण वैद्य गर्भिणी और रक्त पित्तवाले रोगी को न देवे।

बाहुशालनामकोगुड

इंद्रवारुणिकामुस्तंशुंठीदंतीहरीतकी॥ त्रिवृत्सटीविडंगानिगोक्षीरश्चित्रकस्तथा ॥ तेजोव्हाचाद्धिकर्षाणिपृथक्द्रव्याणिकारयेत् ॥ सूरणस्यपलान्यष्टौवृद्धादारुचतुष्पलं ॥ चतुःपलंस्यात्भल्लातःक्काथयेत्सर्वमेकतः ॥ जलद्रोणेचतुर्थांशंगृण्हीयात्क्काथमुत्तमं ॥ क्काथद्रव्यात्रिगुणितंगुडंक्षिप्त्वापुनःपचेत् ॥ सम्यक्पक्वंचवि ज्ञात्वाचूर्णमेतत्प्रदापयेत् ॥ चित्रकस्त्रिवृतादंतीतेजोव्हापलिकापृथक् ॥ पृथक्त्रिपलिकाःकार्याव्योषैलामरिचत्वचः ॥ निक्षिपेन्मधुशीतेचतस्मिन्प्रस्थप्रमाणितं ॥ एवंसिद्धभवेत्श्रीमान्बाहुशालगुडःशुभः ॥

जयेदर्शांसिसर्वाणिगुल्मंवातोदरंतथा ॥ आमवातंप्रतिश्यायं ग्रहणीक्षयपीनसान् ॥ हलीमकंपांडुरोगंप्रमेहंचरसायनं ॥

अर्थ—इन्द्रायनकागूदा, नागरमोथा, सोंठ, दंती की जड़, छोटी हरड़, निसोथ, कचूर, वायविडंग, गोखरू, चीतेकीछाल, तेजवल, ये ग्यारह औषध दो २ कर्षले, सूरण (जमींकंद) आठपल, तथा विधायरा चारपल, तथा भिलाए ४ पल ले सबको कूट कर उसमें दो द्रोण जल डालके औंटावे जब चतुर्थांश जल रहे तब उतारके उस जलको छान लेवे पश्चात् इस जल में संपूर्ण औषधो सैं तिगुना गुड डालके औंटावे जब पाक होजावे तब आगे लिखी हुई औषध मिलावे जैसे, चीतेकी छाल, निसोथ, दंती, तेजवल, ये चार औषध एक २ पल लेवे सबको कूट पीस उसपाक में मिलायके एक जीवकर देने इस के सेवन करने सैं संपूर्ण ववासीर दूर होवे, गोले का रोग, वातोदर आमवादी सैं अंगोका जिकडना, तथा सरेकमां संग्रहणी, क्षय, पीनस, हलीमक, पांडुरोग, प्रमेह, ये सर्व रोग दूर होवे तथा यह बाहुशाल गुड रसायन है।

पित्तकीववासीरकाकारण

कट्वम्ललवणोष्णानिव्यायामाग्न्यातपश्रमाः ॥ देशकालावशिशिरौक्रोधोमद्यमसूयनं ॥ विदाहितीक्ष्णमुष्णंचसर्वंपानान्नभोजनं ॥ पित्तोल्बणानांविज्ञेयः प्रकोपेहेतुरर्शसां ॥

अर्थ—तीक्ष्ण, खट्टा, खारी और गरम इत्यादि पदार्थोंके सेवन, व्यायाम, अग्नि, तथा धूप इन का सेवन, और उष्ण देश, उष्ण काल, क्रोध, मद्य, दूसरे का उत्कर्ष (वढवार) का असहन, तथा विदाही, तीक्ष्ण, गरम, अेसे अन्न पान का सेवन इत्यादि पित्तार्श होनेके कारण जानने।

पित्तकीववासीरकेलक्षण

पित्तोत्तरानीलमुखारक्तपीतासितप्रभाः । तन्वस्रस्राविणो विस्रास्तनवोमृदवःश्लथाः ॥ १६ ॥ शुकजिह्वायकृत्खंडजलौकावक्त्रसन्निभाः । दाहपाकज्वरस्वेदतृण्मूर्च्छारुचिमोहदाः ॥ १७ ॥ सोष्माणोद्रवनीलोष्णपीतरक्तामवर्चसः । यवमध्याहरित्पीतहारिद्रत्वङ्नखादयः ॥ १८ ॥

अर्थ—मस्सोंका मुख नीला, लाल, पीला, और सुपेदाई लिये होवै उन म-

स्सोंमेंसे महीनधारसैं रुधिर चुचाय और रुधिरकी वास आवै महीन और कोमल तथा सिथिल हो और उनका आकार तोताकी जीभ कलेजा और जोकके मुखके समान हो और देहमैं दाह हो गुदाका पकना, ज्वर, पसीना, प्यास मूर्च्छा, अरुचि और मोह ये होवे और हातके स्पर्श करनेसैं गरम,मालूम होवै और जिसके मलका द्रव नीला, पीला, लाल, गरम, आमसंयुक्त होय जवके समान बीचमें मोटे हो और जिसके त्वचा, नख, नेत्रादिक हरे पीले हरतालके समान और हलदीके समान होवे ये लक्षण पित्ताधिक ववासीरके हैं।

तिलादिचूर्ण

चूर्णंतिलानांसितयासमेतंहैमाम्रबीजंगजकेसरंच ॥
लिहेन्नरोयोनहितस्यदुष्टान्यर्शांसिपित्तप्रभवाणिजातु ॥

अर्थ--तिलोंका चूर्ण लाल रतालूके बीज, और नाग केशर, इनका चूर्ण कर खांडके साथ देवे तो उसको पित्तकी ववासीर कदापि नहीं होवे।

तथाअन्यप्रयोग

तिलभल्लातकक्काथमनुपित्तार्शनाशकृत् ॥ सक्षौद्रःकुटजक्काथो नित्यंरात्रौचपाययेत् ॥ पथ्यंमुद्गरसैर्देयंशालितंडुलसंयुतं ॥

अर्थ—तिल और भिलाए इन का काढा अथवा इन्द्रजोका काढा सहत डालके पीवे और पथम में मूंगकी दाल और भात देवे तो पित्तकी ववासीर नष्ट होवे

भल्लातामृत

गुडूचीलांगलीशृंगीमुंडीगुंजाचकेतकी ॥ षण्णांपत्ररसैर्मर्द्यं बालभल्लातबीजकं ॥ दिनैकंमर्दयेद्गाढंनिष्कार्धंभक्षयेत्स दा ॥ भल्लातामृतयोगोयंसर्वांर्शान्पित्तजान्जयेत् ॥

अर्थ—गिलोय, कलयारी, काकडासिंगी, मुंडी, घूंघची, और केतकी इन छःवनस्पतियोंके पत्तोंके रस में हरे भिलाएको एकदिन खूब घोटे, इसमेंसैं ४ मासे नित्य भक्षण करे तो यह भल्लातामृतयोग संपूर्ण पित्तजन्य ववासीरों का नाश करे।

धत्तूरादिचूर्ण

धत्तूरस्यफलंपक्कंपिप्पलीनागराभया ॥ वालकंगुडसंयुक्तंभक्ष्यंगुंजाष्टकंनिशि ॥ सितामध्वाज्यकर्षैकंपिबेत्पित्तार्शसांजये ॥

अर्थ—धतूरेके पके हुए फल, पीपल, सोंठ, हरड, और नेत्रवाला इनका चूर्ण रात्रिमें आठ रत्ती को तोले भर घी और खांडके साथ सेवन करे तो पित्त की ववासीर शांति होवे।

भल्लातकादिमोदक

भल्लातकंतिलंपथ्याचूर्णंगुडसमन्वितम् ॥
मोदकोभक्षयेत्कर्षंमासात्पित्तार्शसांजये ॥

अर्थ— भिलाए, तिल, और हरड़ इनके चूर्ण की गुड सें १ तोले की गोली बनावे नित्य प्रति एक महिने पर्यंत सेवन करे तो पित्तकी ववासीर शांति होवे

बोलबद्धरस

गुडूचिकासत्वसमंरसेंद्रंगंधंसमांशंनिखिलेनवर्वरः ॥ विमर्दये च्छाल्मलिकाभवाद्भिःस्याद्बोलवद्धोमधुयुक्त्रिमाषः ॥ रक्ता र्शसांनाशकृदेषसूतःपित्तार्शसांपित्तजविद्रधेश्च ॥ रक्तप्रमे हस्यखुडस्यचापिस्त्रीणांप्रवाहस्यभगंदरस्य ॥

अर्थ—गिलोय सत्त्व, पारा, और गंधक, ये समान भाग लेवे, तथा तिनगुना लाल बोल लें सब को एकत्रकर इसको सेमर की छालके रसमें खरल करे यह बोलबद्ध रस तीन मासे सहत में मिलायके सेवन करे तो रक्तार्श, पित्तार्श, पित्तविद्रधि, रक्तप्रमेह, रक्तपित्त, और स्त्रियोंके रक्तप्रदर तथा भगंदर, इनका नाश होवे।

लोहादिमोदक

मृतलोहमिंद्रयवंशुंठीभल्लातचित्रकं ॥ बिल्वमज्जाविडंगानि पथ्यातुल्यंविचूर्णयेत् ॥ सर्वतुल्योगुडोयोज्यःकर्षंभुक्त्वा र्शसंजयेत्॥

अर्थ—लोह भस्म, इन्द्रजो, सोंठ, भिलाए, चीतेकी छाल, बेलगीरी, वायविडंग और जंगी हरड, ये समान भागले कर चूर्ण करे तथा सब चूर्ण की बराबर गुड़ मिलावे इसमें से १० मासे ववासीर नष्ट होनेके वास्ते नित्य भक्षण करे

तीक्ष्णमुखरस

मृतसूताभ्रलोहार्कतीक्ष्णंमुंडंचगंधकं। मंडूरंचसमंताप्यंमर्द्यं कन्याद्रवैर्दिनं ॥ अंधमूषागतंपाच्यंत्रिदिनंतुषवन्हिना ॥ चू

र्णितंसितयामाषंखादेत्पित्तार्शसांजये ॥ रसस्तीक्ष्णमुखो नामह्यनुयोज्यंमधुत्रयं ॥

अर्थ–पारेकी भस्म, अभ्रक भस्म, लोह भस्म, ताम्रभस्म, कांतिलोह, मुंडलोह इनकी भस्म, गंधक, मंडूर भस्म, और सुवर्ण माक्षिककी भस्म ए समान भागलेवे एकदिन घीगुवारके रसमें खरल कर सुखायके मूसमें भरे उसको तीनदिन तुषाग्निदेवे-जब शीतल हो जावे तव इसमें सैं १ मासे भरलेकैं खांडके साथ देवे यह(तीक्ष्ण-मुख रस) सेवन करके ऊपर सैं मधुत्रय सेवन करे तो पित्तकी ववासीर शांत होवे।

कफकीववासीरकाकारण

मधुरस्निग्धशीतानिलवणाम्लगुरूणिच । अव्यायामोदिवास्वप्नःशय्यासनसुखेरतिः ॥ ७ ॥ प्राग्वातसेवाशीतौचदेशकालावर्चिंतनम् । श्लेष्मोल्बणानामुद्दिष्टमेतत्कारणमर्शसाम् ॥ ८ ॥

अर्थ—मींठा, चिकना, शीतल, खारी, खट्टा, भारी ऐसे भोजनसैं व्यायामके न करनेसैं, दिनमें सोनेसैं, सेज, गद्दी इनके सेवन करनेसैं, पूरवकी हवा खानेसैं शीतल देश, शीतकाल, चिंतारहित होनेसैं ये कफकी ववासीर होनेके हेतु हैं।

कफकीववासीरकेलक्षण

श्लेष्मोल्बणामहामूलाघनामन्दरुजःसिताः । उत्सन्नोपचिताःस्निग्धाःस्तब्धावृत्तगुरुस्थिराः ॥ १९ ॥ पिच्छिलास्तिमिताःश्लक्ष्णाःकंड्वाढ्याःस्पर्शनप्रियाः । करीरपनसास्थ्याभास्तथागोस्तनसान्निभाः ॥ २० ॥ वंक्षणानाहिनःपायुबस्तिनाभिविकर्षिणः । सश्वासकासहृल्लासप्रसेकारुचिपीनसाः ॥ २१ ॥ मेहकृच्छ्रशिरोजाड्यशिशिरज्वरकारिणः । क्लैब्याग्निमार्दवच्छर्दिरामप्रायविकारदाः ॥ २२ ॥ वसाभाःसकफप्रायपुरीषाःसप्रवाहिकाः । नस्रवंतिनभिद्यन्तेपाण्डुस्निग्धत्वगादयः ॥ २३

अर्थ–कफकी ववासीरके लक्षण ये है जैसे की गुदाके मस्से महामूल(दूर धातुक प्रति जानेवाले) कठिन मंद पीडाके करनेवाले सपेद, लंबे, मोटे, चिकने, करड़े, गोल, भारी, स्थिर, गाढे, कफसें लिपटे, मणीके समान स्वच्छ खुजली बहुत होय और प्यारी लगे करील कटहर इनके कांटेके समान होय गायके थनके सदृश होय पेडूमें अफरा करनेवाले गुदा, मूत्रस्थान और नाभि इनमें पीडा करनेवाले

श्वास, खांसी, खाली, ओकी, लारका टपकना, अरुचि, पीनस इनको करनेवाले, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, मस्तकका भारी होना, शीतज्वर, नपुंसकपना, अग्निका मन्द होना, वमन और आम जिनमें बहुत ऐसे अतिसार, संग्रहणीआदि रोगके करनेवाले, वसा (चर्बी) और कफ मिला दस्त होवे प्रवाहिका उत्पन्न करने वाले और मस्सोंमेंसें रुधिर न निकले गाढा मल होनेसैंभी मस्से न फूटैं और शरीरका रंग पीला और चिकना होय ये कफकी ववासीरके लक्षण है।

कफार्शकीचिकित्सा

श्लेष्मार्शसोगुदेपार्श्वेरक्तमोक्षोजलूकया।
कृत्वाचार्करसैर्लेपंदाहंवात्रापिशस्यते॥

अर्थ—कफजन्य ववासीरमे गुदाका और गुदाके और पासका रुधिर जोख लगायके निकाले तथा आकके रसमें औषधोंका लेपकरे अथवा इस जगेभी गरम सलाई सें दागदेना उत्तम है।

सामान्यचिकित्सा

सूरणंकासमर्दंचशिग्रुवार्ताकवालुकं ॥ सुपक्वंयोजयेच्छाकंपथ्यंगोधूमतंडुलं ॥ कुसुंभमृदुपत्राणिआरनालेनपेषयेत् ॥ भक्षयेच्छाकवच्छांत्यैस्वयमग्निरसंतथा ॥ निष्कत्रयंत्रयंनित्यंगुंजंवानंदंभैरवं॥काकतुंडीद्रवापूरादेवदाल्याश्चबीजकं ॥ सगुडंगुदलेपेनशूलरोगहरंपरं।

अर्थ—जमीकंद, कसोंदि, सहजना, बैंगन, और वालुक (खीरा) इनका शाकको पक्कर सेवनकरे, पथ्यमें गेहू, और चावल खाय, तथा कसूमके नरम२ पत्ते कांजीमे पीस शाकके समान खाय तथा स्वयमग्निरस चार मासे अथवा एकरत्ती आनंदभैरवरस देवे और काकतुंडीके रसमें वंदालके बीज और गुडको पीसके गुदामें लेपकरे तो पीडा दूरहोवे।

ववासीरकाभेदललितरोग

गुदद्वारात्पृष्ठदेशेजायंतेपांडुरांकुराः॥ललितास्तेविशुष्यंतेशूलरोगस्यलक्षणं ॥ श्लेष्मार्शसामयंभेदोहन्याल्लेपरसावनैः॥

अर्थ—गुदाद्वारके पिछाडी सपेद ववासीरके समान मस्से होतेहै उनको ललित कहते है इनके सूखने पर शूल रोग होता है यह भेद कफकी ववासीरका है इसको लेपकरके अथवा रसायन द्वारा शांतिकरे।

वंदाललेप

देवदाल्याश्चबीजानिसैंधवेनसुचूर्णितं ॥
आरनालेनलेपोयंशूलरोगनिवृत्तये ॥

अर्थ—वंदालके बीजोंको सैंधेनिमकके साथ काँजीमें पीस लेपकरे तो शूल रोग नष्ट होवे,

कांचनीलेप

कंचनीकुसुमंचूर्णशस्त्रचूर्णमनःशिला ॥ गजपिप्पलिसंतोयैर्लें पोह्यर्शोनिपातकः ॥ पूर्ववन्निःक्षिपेद्गुह्येलिस्त्वानागस्यनालि कं ॥ घृतसैंधवसंयुक्तंकटुविड्बंधनाशनं ॥

अर्थ—हलदी, और लौंग, इनका चूर्ण, मनासिल, और गजपीपल, एकत्र जलमें पीसके लेप करे तो ववासीरके मस्से टूटके गिरपडे, अथवा पूर्वकहे प्रमाण गुदामें शीशेकी नलीसैं घी और सैंधानिमक युक्त कटुपदार्थोंका काढा भरे तो विट्बंध अर्थात् मलका न उतरना दूरहोवे।

सूरणादिलेप

सूरणंरजनीवन्हिटंकणंगुडमिश्रितं ॥
पिष्ठारनालकैर्लेपोहंत्यर्शांसिमहांत्यपि ॥

अर्थ—जमीकंद, हलदी, चीतेकी छाल, सुहागा और गुड इनको एकत्र पीस काँजी सैं गुदामें लेपकरे तो अर्शके बडे २ मस्सेभी नष्टहोवे।

कटुतुंब्यादिलेप

आरनालेनसंपिष्टासबीजकटुतुंबिका ॥
सगुडाहंतिलेपेनअर्शांसिमूलतोध्रुवं ॥

अर्थ—गीली कडुई तुंबीको काँजीमें पीसे उसमें गुड मिलाय गुदामें लेपकरे तो ववासीर जड़सैं उखाडके निश्चय गिरपड़े

पीलुतैलवर्त्ती

पीलुतैलेनसंलिप्तावर्तिकागुदमध्यगा ॥
पातयत्यर्शसांसिद्धंनवलीवेदनाक्वचित् ॥

अर्थ—कपडेकी अथवा रूईकी मोटीबत्ती (काँकडा) बनाय उसको अखरो-

टके तेलमें डबोकर गुदामें धररक्खे तो ववासीरके मस्सों को उखाड़डाले और गुदाकी वलीमें कदाचित् पीडा नहीं करे ।

दंत्यासव

दशमूलाग्निदंतीनांप्रत्येकंचपलंपलं ॥ जलद्रोणेततःक्काथ्यंपादशेषंसमुद्धरेत् ॥ गुडैलातुपलैकंतुशीतभूतंविमिश्रयेत्॥घृतभांडेस्थितंपक्षंयथाशक्तिपिबेत्ततः॥अयंदंत्यासवःख्यातःशमनेचार्शसांकिल ॥ ग्रहणींपांडुरोगंचसर्वव्याधिहरंपरं ॥

अर्थ—दशमूल, चीतेकी छाल, और दंतीकी जड़ ये चार २तोले लेवे उनको २०४८ तोले जलमें ओंटावे जब चतुर्थांश काढा होजावे तब उतारके छान लेवे जब शीतल होजावे तब गुड़ और इलायची चार २ तोले डालके घीके चिकने वासनमें पंद्रह दिन धररक्खे यह दंत्यासवको बलाबल विचारके देवे तो ववासीर, संग्रहणी, पांडुरोग, और सर्व व्याधि इनका नाश करे ।

पथ्यादिगुड

द्वात्रिंशत्पलपथ्यानांतदर्धामलकीफलं॥कपित्थंस्याद्दशपलंविशालापलपंचकं ॥ विडंगंपिप्पलीलोध्रंमरिचंसैंधवालुकं ॥ द्विपलांशंतुप्रत्येकंजलंद्रोणचतुष्टयं ॥ क्काथंपादावशेषंतुशीतीभूतेक्षिपेद्गुडं ॥ पलानांद्विशतंचैवधातुकीपलपंचकं॥घृतभांडेस्थितेतस्मिन्यथाशक्तिपिबेत्ततः॥अर्शांसिग्रहणीपांडुहृद्रोगप्लीहगुल्मनुत्॥मंदाग्निचोदरंशोथंकुष्ठघ्नंपरमौषधं॥

अर्थ—बडीहरड, १२८ तोले, आवले ६४ तोले, कैथ४तोले, इन्द्रायनकी जड २० तोले, और वायविडंग,पीपल, लोध, कालीमिरच, सैंधानिमक, आलु ये प्रत्येक आठ २ तोले लेवे, सबको जब कुटकर २०४८ तोले जलमें ओंटावे जब चतुर्थांशरहै बत उतारके छानलेय, जब शीतल होजावे तब८०० तोले गुड और धायके फुल२०तोले डालके धर रखे इसको यथा शक्ति सेवन करे तो ववासीर, संग्रहणी, पांडुरोग, हृदयरोग, प्लीहा, गोला, मंदाग्नि, उदर, सूजन और कुष्ठ इन सबका नाश होवे ।

भल्लातकहरीतकी

भल्लातकहरीतक्यौपाठाकटुकरोहिणी ॥ यवानीजाजिकुष्ठं

चचित्रकोतिविषावचा ॥ कचोरंपौष्करंमूलंहिंगुइंद्रयवंतथा॥ शुंठीसौवर्चलंतुल्यंगवांमूत्रेणपेषयेत् ॥ छायाशुष्काचवटिकामाषमात्रंचभक्षयेत् ॥ पिबेदुष्णोदकंपश्चात्कफोत्थानार्शसांजये ॥

अर्थ—भिलाए, जंगीहरड, पाढ, कुटकी, अजमायन, जीरा, कूट, चीतेकी छाल, अतीस, वच, कचूर, पुहकरमूल, हींग, इन्द्रजो, सोंठ, और, संचरनिमक, ये औषध सब समान भागलेवे सबको गौके मूत्रमें पीसके छायामें सुखायले इसकी एकमासेकी गोली नित्य भक्षण करे और ऊपरसैं गरम जल पीवे तो कफकी ववासीर नष्ट होवे ।

लाङ्गल्यादिमोदक

लांगलींद्रयवाकृष्णावन्ह्यपामार्गतंडुलाः ॥ भूनिंबसैंधवंतुल्यं सर्वस्यद्विगुणंगुडं ॥ भक्षयेत्कर्षमात्रंतुश्लेष्मोद्भूतार्शसांजये ॥

अर्थ—कलयारी, इन्द्रजो, पीपल, चीतेकी जड, ओंगाके चावल, चिरायता, और सैंधानिमक ये औषध समान भागले, और सब चूर्णसैं दूनागुडडाले इसमेंसैं दशमासे सेवनकरे तो यह लांगल्यादि मोदक कफकी ववासीरको नाशकरे।

पथ्यादिमोदक

पथ्याशुंठीकणावन्हिप्रत्येकंचूर्णयेत्पलं ॥ त्वगेलापत्रकंचाथ प्रत्येकंकर्षमात्रकं ॥ गुडंदशपलंयोज्यंकर्षंभुक्त्वार्शसांजये ॥

अर्थ—हरडकी छाल, सोंठ, पीपल, और चीता ये प्रत्येक चार २ तोले लेय, तथा दालचीनी, इलायची, पत्रज, ये प्रत्येक एक २ तोले सबका चूर्णकर इसमें गुड़ ४० तोले डाल कूट पीस १० मासेकी गोली बनावे १ गोली नित्यसेवन करे तो ववासीर दूर होवे ।

यवान्यादिमोदक

यवान्यक्षभयाजाजीपिप्पलींचूर्णयेत्समं ।
चूर्णाद्गुडंद्विधायोज्यंकर्षंभुक्त्वार्शसांजये ॥

अर्थ—अजमायन, बहेडा, हरड, जीरा और पीपल, इनको समान भागले चूर्णकरे तथा सब चूर्णसैं दूनागुड मिलावे सबको एक जीवकर दश मासेकी गोली बनावे एक गोली नित्य सेवनकरे तो ववासीरको नष्ट करे ।

भल्लातकादिलेप

भल्लातकगजास्थीनिदंतीनिंबकपोतविट् ॥
गुडसौराष्ट्रचमृतजैर्लेपः श्लेष्मार्शसांजये ॥

अर्थ—भिलाए,हाथीकीहड्डी, तथा दंती, नीम, कबूतरकी वीठ, गुड, पिटकरी और सिंगियाविष, इनको जलमें पीसके लेपकरे तो कफकी ववासीर नष्ट होय।

शृंगवेरक्काथ

कफजेशृंगवेरस्यक्काथोनित्योपयौगिकः ॥

अर्थ—कफकी ववासीरपर अदरखका काढा नित्य उपयोगीहै।

रक्तार्शनिदान

रक्तोल्वणागुदेकीलाःपीताकृतिसमन्विताः ॥ वटप्ररोहसदृशागुंजाविद्रुमसन्निभाः ॥ तेत्यर्थंदुष्टमुष्णंचगाढविट्कप्रपीडिताः॥ स्रवंतिसहसारक्तंतस्यचातिप्रवृत्तितः ॥ भेकाभःपीडचतेदुःखैःशोणितक्षयसंभवैः ॥ हीनवर्णवलोत्साहोहतौजाःकलुषेंद्रियः ॥ विट्श्यावंकठिनंरूक्षमधोवायुर्नगच्छति ॥

अर्थ—गुदाके मस्सोंका रंग चिरमिठीके रंगके समान न होवे अथवा वटके अंकुरसेंहों और पित्तकी ववासीरके लक्षण जिसमे मिलतेहों। मुंगाके सदृशहों और दस्त कठिन उतरनेसैं मस्से दवे तव उन मस्सोंमेंसें दुष्ट और गरमागरम रुधिर पडे और रुधिरके बहुत पडनेसैं वर्षाऋतुके मैंडकाके समान पीला रंग होजाय रुधिरके निकलनेसैं (जो प्रगट त्वचाका कठोरपना, नाडीका शिथिलपना और खट्टीवस्तु तथा शीतकी इच्छादि दुःख तिनसैं पीडित होय) हीनवर्ण, बल, उत्साह, पराक्रमका नाश होय, सम्पूर्ण इन्द्रियोंका व्याकुल होना, उसका काला, कठिण और रूखा ऐसा मल होय, अपानवायु सरे नहीं, यह लक्षण रुधिरकी ववासीरके जानने चाहिये।

वातादियुक्तरक्तार्शकेलक्षण.

तनुचारुणवर्णंचफेनिलंचासृगर्शसां ॥ कट्यूरुगुदशूलंचदौर्बल्यंयदिचाधिकं ॥ तत्रानुबंधोवातस्यहेतुर्यदिचरूक्षणं ॥शिथिलंश्वेतपीतंचविट्स्निग्धंगुरुशीतलं ॥ यद्यर्शसांघनंचासृक्

तंतुमत्पांडुपिच्छलं॥गुदंसापिच्छंस्तिमितंगुरुस्निग्धंचकारणं॥
श्लेष्मानुबंधोविज्ञेयस्तत्ररक्तार्शसांबुधैः॥

अर्थ—ववासीरमेंसें रुधिर थोडा, अरुणवर्ण और झागसंयुक्त निकले, और कमर, जांघ और गुदा इनमें दर्द होवे। यदि दुर्बलता विशेष होजावे और उसमें कोई रूक्षहेतु पहुंचाहोवे तौ इस रक्तार्शको वातको सम्बंध है ऐसैं जानना। जिसमेंसें शिथिल, सफैद, पीला, चिकना, भारी और शीतल ऐसा दस्त होवै और जिसका रुधिर गाढा, तंतुयुक्त, पीला तथा बंबुलेयुक्त निकले और गुदा बंबूले युक्त गीली होवे और भारी चिकनी ऐसें कोई कारण होवे तौ उस रक्तार्शको कफका सम्बन्ध जानना॥ ३०॥ × शंका—क्यौंजी पित्तके अनुबन्धकी ववासीर क्यौं नहीं कही + उत्तर—रक्तके और पित्तके प्रायकरके समान लक्षण होनेसैं नहीं कहे, क्योंकि पहले २४ के श्लोकमें कहिआयेहैं कि (पित्ताकृतिसमन्विता) इति।

सामान्यचिकित्सा

स्वयमग्निरसोप्यत्रभक्षयेदर्शसांजये॥
सितामध्वाज्यकर्षैकमनुपानंपिबेत्सदा॥

अर्थ—रक्तार्श पर स्वयमग्निरस देवे, और इसके ऊपर खाँड़, घी, सहत मिलायके एकतोले सेवनकरे तो बवासीर नष्टहोवे।

अश्वगंधादिधूप

अश्वगंधोथनिर्गुंडीबृहतीपिप्पलीफलं॥
धूपोयंस्पर्शमात्रेणह्यर्शसांशमनेह्यलम्॥

अर्थ—असगंध, निर्गुंडी, कटेरी, और पीपल, इनकी धूनी ववासीरको स्पर्श होतही हितकारीहै,

अर्कमूलादिधूप

अर्कमूलंशमीपत्रंनृकेशाःसर्पकंचुकी॥
मार्जारचर्मचाज्यंचगुदधूपोर्शसांहितः॥

अर्थ— आककी जड, छोकराके पत्ते, मनुष्यकेबाल, सर्पकी काँचली, बिल्लीकी चमडी, और घी, इनसबकी धूप गुदामें देनेसैं हितकारी होतीहै।

पिपीलिकातैल

पिपीलीवदनंबिल्वंवचायष्टिकचूरकं॥शताव्हापुष्करंकुष्टंचि
त्रकंदेवदारुकं ॥ तुल्यांशंकारयेत्कल्कंकल्कात्तैलंचतुर्गुणं॥
तैलात्क्षीरंद्विधायोज्यंपचेत्तैलावशेषकं॥अर्शसांवातयुक्तानांत
त्श्रेष्ठमनुवासनं ॥ पिपील्याद्यमिदंख्यातंलेपनेमर्दनेहितं ॥

अर्थ—चैटी, मैनफल वेलगिरी, वच, मुलहटी, कचूर, शतावर, पुहकरमूल कूठ, चीतेकी छाल, और देवदारु,ये सब समान भागलेकर कल्ककरे और कल्क सैं चौगुना तेल, तथा तेलसैं दूना दूध ये सब एकत्रकरके ओंटावे जब तेलमात्र शेषरहे तव उतारलेय इसतेलकी अनुवासनबस्ती देना उत्तम है ।

विषमुष्टिचूर्ण

विषमुष्टिभवंबीजंषड्वासप्ताष्टवापिच ॥ चूर्णितंससितंभक्ष्यंरक्ता
र्शोविनिवारणं ॥ महाप्रमेहशमनंत्वग्दोषकृमिनाशनं ॥

अर्थ—कुछलेके छः, सात अथवा आठ बीजोंका चूर्णकर बलाबल बिचार थोडा २ खाँडके साथ देवे तो खूनी ववासीर, महामेह त्वचाके दोष, और कृमि इनका नाशकरे ।

नवनीतादियोग

नवनीततिलाभ्यासात्केसरनवनीतशर्कराभ्यासात्॥
दधिरसमथिताभ्यासाद्गुदजाःशाम्यंतिरक्तवाहाश्च ॥

अर्थ—मक्खन, तिल, अथवा नागकेशर, मक्खन, खाँड, अथवा दहीकी मलाई, छाछ इनको बराबर सेवन करे तो खूनी ववासीर शांति होवे,

भल्लातकामृत

भल्लातकचतुःषष्टिपलंदुग्धंचतत्समं ॥ दुग्धाच्चतुर्गुणंवारिपा
च्यंदुग्धावशेषकं ॥ दुग्धतुल्यंघृतंयोज्यंघृतपादांसितांक्षिपे
त् ॥मधुधात्रीसितातुल्यंसितार्धमभयारजः॥ मृतलोहंगुडूची
चप्रत्येकमभयार्धकं ॥ क्षिपेत्स्निग्धघटेसर्वंधान्यराशौनिवेशये
त् ॥ सप्ताहादुद्धृतंतत्तुखादेन्निष्कत्रयंत्रयं ॥ भल्लातकामृतंना
महंतिरक्तार्शसांकिल ॥क्षारंतीक्ष्णंनभोक्तव्यंतैलाभ्यंगंचवर्जयेत्

अर्थ—भिलाए तोले,२५६ और २५६ तोले दूध,तथा दूधकी अपेक्षा चौगुना ज-

ल,तथा दूधकी बराबर घी डालके औंटावे जब घी मात्र शेष रहे तब इसमें घी-का चतुर्थांश मिश्री, सहत, आवले और मिश्रीसैं आधी हरड़का चूर्ण, हरडके चूर्ण सैं आधी लोहभस्म, तथा गिलोय का सत्व डालके घीके चिकने बासनमें भरके धान्यकी राशिमें ७ दिन गाड देवे फिर काढके इसमें सैं १ तोले रोगी-को देवे तो यह भल्लातकामृत नामक औषध खूनी ववासीरको नाशकरे इसपर खटाई, तथा तीखा पदार्थ न खाय तथा तेलकी मालिस नकरे ।

सिद्धघृत

द्वात्रिंशत्पलकंचाज्यंछागदुग्धंतथादधि ॥ छागमांसरसश्चैव दाडिमस्यफलद्रवं ॥ प्रत्येकंघृततुल्यांशंभांडेचूर्णमिदंक्षिपेत् ॥ आम्राडंत्र्यूषणंमुस्तंमज्जाबिल्वकपित्थयोः ॥ तिंतिणी धातुकीपुष्पंरक्तचंदनचंदनं ॥उशीरंवालकंलोध्रंप्रियंगुंपद्मकेसरं ॥ मंजिष्ठाबदरीचव्यंत्वगेलापद्मकंबला ॥ यष्टिमोचरसं चैवउत्पलंप्रतिकर्षकं ॥ सर्वमेकीकृतंपाच्यंग्राह्यमाज्यावशेषकं ॥ योजयेदर्शसांहंतृग्रहणीकृच्छ्रपांडुषु॥ ज्वरंस्रावमतीसारंकटिशूलंचनाशयेत् ॥ इदंसिद्धघृतंनामरक्तपित्तार्शसांहितं ॥

अर्थ—घी १२८ तोले, बकरीका दूध, दही, बकरेके मांसका रस, और अनारका रस, सब घीके बराबर ले,अंबाडा, सोंठ, कालीमिरच,पीपल, नागरमोथा वेलगिरी, कैथका गूदा, इमली, धायके फूल,लालचंदन, चंदन, नेत्रवाला, खस, लोध, फूलप्रियंगु, कमलकी केशर, मजीठ, बेर, चव्य, दालचिनी, इलायची, पद्माख,खिरेटी,मुलहटी, मोचरस, और कूठ, ये प्रत्येक एक एक तोले लेवे सबको एकत्रकर औंटावे जब घृत मात्र शेषरहे तब उतारलेवे यह घी ववासीर संग्रहणी मूत्रकृच्छ्र, पांडुरोग, ज्वर, कमरका दर्द, और पित्तार्श इनको नाशकरे इसका सिद्धघृत नाम है ।

शिवरस

सूतवैक्रांतशुल्बाभ्रंकांतभस्मसगंधकं ॥ तुल्यांशंमर्दयेच्चादौदाडिमोत्थैरसैस्तथा ॥ भक्षयेन्माषमेकंतुहंत्यर्शांसिशिवोरसः ॥

अर्थ—पारा, वैक्रांतमणि (काँसुला) तांबा, अभ्रक, और कांतलोह इनकी भस्म,तथा गंधक ये सब समान भाग ले अनारके रस खरलकर एकमासेकी गोली बनावे १ गोली रोगीको देवे तो यह शिवरस ववासीर रोगका नाश करे,

अपामार्गबीजादिचूर्ण

अपामार्गस्यबीजानिवन्हिशुंठीहरीतकी ॥ मुस्ताभूनिंबतुल्यांशं सर्वतुल्यंगुडंभवेत् ॥ कर्षैकंभक्षयेच्चानुजीर्णांतेतक्रभोजनं ॥

अर्थ—ओंगाकी बीज, चीतेकी छाल, सोंठ, हरड़, नागरमोथा, और चिरायता ये सब समान भाग लेकै चूर्णकरे तथा सब चूर्णके समान गुड मिलावे, इसमें सैं १तोले रोगीको खानेकेवास्ते देवे, इस औषधीके जीर्ण होनेपर छाछ और भातका पथ्य देयतो सर्व प्रकारकी संग्रहणी दूरहोवे,

लोहामृतरसः

संग्राह्यमृतलोहस्यपलान्यष्टादशानिच ॥ त्रिकटुत्रिफलादार्वीवह्निमुस्तादुरालभा ॥ किराततिक्तकोनिंबपटोलकटुकामृता ॥ देवदारुविडंगानिपर्पटंप्रतिकर्षकं ॥ मध्वाज्याभ्यांलिहेत्कर्षमर्शांसिग्रहणींजयेत् ॥ वातपित्तकफंरक्तंनाशयेद्रोगसंचयं ॥ ख्यातोलोहामृतोनामदेहदार्ढ्यकरःपरः ॥

अर्थ—लोहभस्म ७२ तोले, तथा त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल,) त्रिफला (हरड़ बहेडा, आंवला,) दारुहलदी, चीता, नागरमोथा, धमासों, चिरायता, निमकी छाल, पटोलपत्र, कुटकी, गिलोय, देवदारु, वायविडंग, और पित्तपापडा, ये प्रत्येक तोला२ लेवे सबका चूर्णकर लोहकी भस्म मिलाय देवे फिर इसमें सहत १ तोला मिलावे और घी १ तोला मिलायके खानेको देवे तो यह लोहामृतरस ववासीर रोग, वादी पित्त, कफ, रुधिर विकार अनेक रोगोंका नाशकरे, यह रस देहको लोहेके समान दृढ करनेवालाहै।

बिम्बीपत्रादिलेप

विश्वाश्वायरजैःपत्रैर्हितंलेपनमर्शसां

अर्थ—सोंठ, और देवदारके पत्तोंको एकत्र कुट पीस ववासीरपर लेपकरे तो ववासीर नष्टहोवे,

ज्योतिष्कबीजलेप

ज्योतिष्कबीजकल्केनलेपोरक्तार्शसांहितः ॥

अर्थ—मालकाँगनीके बीजोंको पीसके लेपकरे तो खूनी ववासीर नष्ट होवे इसमें संदेह नहीं है।

गुंजाकूष्मांडलेप

गुंजाकूष्मांडबीजंचसूरणेनचवर्तिकां ॥
लेपयेच्छाययाशुष्कांगुदगाह्यर्शसांजये ॥

अर्थ—घूंघची, पेठेके बीज, और जमीकंद इनको एकत्र पीसके कपडे पर लेपदेवे फिर इसको छायामें सुखायकैं इसकी बत्ती बनावे इस बत्तीको गुदामें रक्खे तो ववासीर नष्टहोवे, यह प्रयोग मुख्य करके वादीववासीरपर चलताहै ।

कनकार्णवरसः

नवंधात्रीभवंचूर्णपलानांशतमात्रकं ॥ विडंगंमरिचंपाठाचव्यं चित्रकवालकं ॥ मंजिष्ठापिप्पलीमूलंलोध्रंपूगफलंतथा ॥ प्रत्येकंपलमात्रंस्यात्पिप्पलीगजपिप्पली ॥ कुष्टंदारुनिशामुस्ताशताव्हासारिवाद्वयं ॥ इंद्रवारुणिकामूलंचूर्णमर्धपलोन्मितं ॥ चत्वारिनागपुष्पस्यपलानिचूर्णयेत्ततः ॥ चूर्णादष्टगुणंतोयंक्काथंपादावशेषकं ॥ आदायवस्त्रपूतंतुतुल्यंद्राक्षारसः कृतः ॥ सितापलशतंयोज्याक्षौद्रंचपलषोडशं ॥ घृताक्तेनिक्षिपेद्भांडेशर्करागुडधूपिते ॥ त्वगेलागंधपत्राणिउशीरंनागकेसरं ॥ वालकंक्रमुकंचूर्णप्रतिकर्षंचानिःक्षिपेत् ॥ मुखंरुद्ध्वास्थितंपक्षंख्यातोयंकनकार्णवः ॥ यथेष्टंपाययेद्द्रव्यंदीपकःसर्वरोगहा ॥ अर्शांसिग्रहणींपांडुंश्वयथुंचविनाशयेत् ॥

अर्थ—नवीन आवलोंका चूर्ण ४०० तोले और वायविडंग, कालीमिरच, पाढ, चव्य, चीतेकीछाल, नेत्रवाला, मजीठ, पीपरामूल, लोधपठानी और सुपारी, ये प्रत्येक चार २ तोले लेवे, पीपर, गजपीपर, कूठ, देवदारु,हलदी, नागरमोथा, शतावर, गौरीसर, कालीसर, इन्द्रायनकी जड,ये प्रत्येक दोतोले लेवे, नागकेशर १६ तोले इन सबको एकत्र कूट पीस चूर्णकरे, चूर्णसैं आठगुणा पानी डालके काढाकरे जब चतुर्थांश शेषरहे तब उतारकैं छानलेवे,फिर जितना काढा होवे उतना दाख का रस मिलावे और चारसौं तोले मिश्री तथा सहत चौसठ तोले ले फिर उत्तम चिकने वासनमें प्रथम,खांड और गुड इनकी धूनीदेकर सब औषध काढे समेत भरदेवे तथा उसमें दालचीनी छोटी इलायची,पत्रज, खस,

नागकेशर, नेत्रवाला और सुपारी ये प्रत्येक तोले २ चूर्ण उसमें डालकैं मुख बंदकरकैं किसी उत्तमस्थानमें धरारहनेदे,यह कनकार्णवरस कहलाताहै इसको रोगीका बलाबल विचारकै वैद्य देवे और पथ्यमें यथेष्ट भोजनकरे किसी वस्तुका परज नहींहै यह अग्निको दीपन करताहै,तथा सर्व रोग, ववासीर, संग्रहणी, पांडुरोग, और सूजन इसको नाशकरे ।

योगराजगूगल

कणागजकणावन्हिविडंगेंद्रयवायवैः ॥ कटुकापिप्पलीमूलं भांर्गीपाठाजमोदकं ॥मूर्वाशुंठीहिंगुचव्यंसमंसर्वांशगुग्गुलुः ॥ चूर्णयेन्मधुनाखादेत्कर्षांशंयोगराजकं ॥ रक्तवातार्शसोगुल्म ग्रहणीपांडुजिद्भवेत् ॥

अर्थ—पीपल, गजपीपल, चीतेकी छाल, वायविडंग, इन्द्रजो, जवासा, कुटकी, पीपरामूल, भारंगीकी जड, पाढकी जड, अजमायन, मूर्वा, सोंठ, घाडकी, हींग,और चव्य ये बराबर लेवे और सबकी बराबर शुद्ध करी गूगल डाले सबको कूट पीस १ तोलेकी गोली बनायले १ गोली सहतके साथ खाय तों खूनी बवासीर, वादी ववासीर, गोलेका रोग, संग्रहणी और पांडुरोग अर्थात् पीलिया इनको नष्टकरे इस औषधको योगराज कहतेहै ।

रालयोग

**रालचूर्णस्यतैलेनसार्षपेणयुतस्यच ॥
धूपदानेनयुत्त्याशोंरक्तस्रावोनिवर्तते ॥**

अर्थ—रार(राल)काचूर्ण तथा सरसों एकत्रकर धूनीदेवे तो ववासीर और रुधिरका स्राव बंद होवे ।

कर्पूरधूप

रक्तौघशांतयेदेयंगुदेकर्पूरधूपनम् ॥

अर्थ—यदि ववासीरवालेकी गुदासैं रुधिर अधिक निकलता होय तो कपूरकी धूनीदेय तो रुधिर गिरना बंद होवे

पयसादियूष

**पयसाशृतेन यूषैःसतिलमुद्गाढकिमसूराणां ॥
ओदनमद्या ादम्लैर्मधुरैरोषत्सुगंधैश्च ॥**

अर्थ—तिल, गुड, अरहर, और मसूर इनका काढा अथवा यूषमें थोडी सी खटाई डालकैं मधुरकर तथा सुगंधित करके उसके साथ भातकों खाय तो रुधिरजाना बंद होवे

कालकलांतकवटी

शुद्धसूतंमृतंवंगंतालंसिंधूत्थलांगली ॥ पलंतूरीपलैकैकंल सूनंचचतुःपलं ॥ कारवल्लयाद्रवैर्मर्द्यंदिनैकंवटकीकृतं ॥ गुंजामात्रंसदाखादेद्गुदद्वारेचतांक्षिपेत् ॥ रक्तवातकफोत्थाना मर्शसांशमयेत्ध्रुवं ॥ वटीकालकलांतेयमनुपानंचकथ्यते ॥ भल्लातत्रिफलादंतीवन्हिचूर्णसमंसमं ॥सैंधवंसर्वतुल्यंस्याद्भर्जयेत्खर्परेचिरम् ॥ मृद्वग्निनाभवेत्सिद्धंकर्षंतक्रैःपिबेदनु ॥

अर्थ—पाराशुद्ध,वंगकी भस्म,हरताल, सैंधानिमक,कलियारी,और अरहर ये प्रत्येक चार चार तोले लेय तथा लहसन१६तोले ले सबको एकत्रकर करेलेके रससैं एकदिन खरलकरे फिर इसकी एक एक रत्तीकी गोली बनावे नित्य प्रति एकए-क गोली सेवनकरे तथा एक गोली गुदामें धररखे तो रक्तवात तथा कफसैं प्र-गट होनेवाली बवासीरोका शीघ्र नाशहोवे, इस कालकलांतकवटीका अनुमा-न कहताहूं, भिलाए, त्रिफला, जमालगोटा, चीतां, और सैंधानिमक ये समान भागले इनके चूर्णको खिपडेमें डालकैं मंदाग्निपर भूने, फिर इसमेंसैं१तोला छा-छके साथ पिलावे ।

अपामार्गादिकल्क

अपामार्गस्यबीजानांकल्कस्तंदुलवारिणा ॥
पीतोरक्तार्शसांनाशंकुरुतेनास्तिसंशयः ॥

अर्थ—ओंगाके बीजोंको चावलोंकें धुले हुए पानीमें पीसके कल्ककरे इस कल्कके पीनेसैं खूनीववासीर नष्ट होवे इसमें संदेह नहींहै ।

पद्मकेशरयोग

सपद्मकेसरक्षौद्रनवनीतंनवंलिहन् ॥
सिताकेसरसंयुक्तंरक्तार्शासुसुखीभवेत् ॥

अर्थ—कमलकी केशर, सहत, नवीन मक्खन (लोनी) खांड, और नागके-

शर ये सब समान भाग लेकर गोली बनावे इसके भक्षण करनेसैं खूनी बवासीरवाला प्राणी आनंद युक्त होवे

समंगादिदूध

समंगोत्पलमोचाव्हातिरीटतिलचंदनैः ॥
सिद्धंछागीपयोदद्याद्गुदजेशोणितात्मके ॥

अर्थ—लजालू (लज्जावंती)कमल, मोचरस, लोधपठानी, तिल, और चंदन, इनको बकरीके दूधमें डालकैं दूध सिद्धकरे इसे पीवेतो खूनी बवासीर नष्टहोवे।

खूनीबवासीरपरक्काथ

चंदनकिराततिक्तकधन्वयवासाःसनागराःक्वथिताः
रक्तार्शसांप्रशमनादार्वीत्वगुशीरनिंबाश्च ॥

अर्थ—चंदन, चिरायता, कुटका, जवासो. सोंठ, दारुहलदी, दालचीनी खस, और नीमकी छाल इनका काढाकरके पीवे तो खूनी बवासीरको नष्टकरे।

द्राक्षादियोग

द्राक्षाहरिद्रामधुकंमंजिष्ठानीलमुत्पलं ॥
अजाक्षीरेणसंपीतंरक्तजार्शोविनाशनं ॥

अर्थ—मुनक्कादाख, हरदी, मुलहटी, मजीठ, और नीला कमल इनका कल्क करके बकरीके दूधसें पीवे तो खूनी बवासीरका नाशकरे

तिकट्वादियोग

त्रिकटुत्रिफलादंतीवन्हिभल्लातसैंधवं ॥ सुवर्चलंचसामुद्रंलवणंघृततैलकं ॥ छागमज्जावसामूत्रंगोमूत्रंनरमूत्रकं॥महिषीगर्दभाश्वानामेषांमूत्रैर्दिनत्रयं॥ भावयेच्छोषयेत्तच्चरुद्धागजपुटेपचेत् ॥ निष्कद्वयंपिवेच्चाज्यैरक्तवातार्शसांजये ॥ क्षीरैर्मांसरसैर्भोज्यंशूलगुल्मंचनाशयेत् ॥

अर्थ—त्रिकुटा, त्रिफला, जमालगोटा. चीतेकी छाल, भिलाए, सैंधानिमक, सोराकल्मी, समुद्रका निमक, घी, तेल, और बकरेकी मज्जा,चर्वी, तथा मूत्र और गो, मनुष्य, भैस, गधा, और घोडा इनके मूत्रमें उक्त औषधोंको तीनदिन धरी रहने देवे फिर सुखायकैं सरावसंपुटमें रखकैं गजपुटमें धरके फूंकदेवे, जब शीतल होजावे तब निकालके इसमेंसैं आठमासे औषध घीके साथ खाय तो खू-

नी बवासीर तथा वादी बवासीर, शांति होवे. इसपर दूध, तथा मांसरस ये भोजनमें पथ्य देवे तो यह त्रिकट्वादियोग शूल, और गोला इनका नाशकरे।

विड्बंध

नागेननलिकांकृत्वाघृतसैंधवलेपितां ॥
गुदद्वारेक्षिपेन्नित्यंमलरोधप्रशांतये ॥

अर्थ—शीशेकी नली करके उसमें सैंधा निमक और घीका लेपकरकैं निसप्रति गुदामें रक्खे तो मलरोध अर्थात् दस्तका न उतरना दूरहोवे।

रक्तस्राव

धूपनेलेपनेभ्यंगेप्रस्रवंतिगुदांकुराः ॥
सपित्तदुष्टंरुधिरंततःसंपद्यतेसुखम् ॥

अर्थ—बवासीरके मस्से धूप देने सैं लेपकरनेसैं अथवा अभ्यंग(मालिस) सैं पित्त सहवर्तमान नासलेनेसैं रुधिर निकलताहै उस रुधिर निकलनेसैं सुख होवे।

प्रकारांतर

विबंधेर्शसिचोत्सिक्तेकंडूमद्रक्तवाहिनी
जलौकापातनादन्यःप्रयोगोनास्तिकश्चन ॥

अर्थ—विड्बंधकर्त्ता, चारो तरफसैं खुजली करता, तथा रुधिर बहनेवाली बवासीर पर जोख लगाकर रुधिर निकालनेके सिवाय दूसरा उपाय नहींहै।

सक्तुपिंडीबंधन

तेनैवसुखमाप्नोतिमुच्यतेस्वेदपिंडिका ॥
घृततैलाक्तसक्तूनांपिंडिकांबंधयेद्गुदे ॥

अर्थ—सक्तुकी पिंडी(पोटली) करके उसपर घी अथवा तैल चुपडकर गुदाके ऊपर बांधे तो बवासीरमें सैं पसीने निकल जावे और तत्काल सुख होजाय।

नासार्शचिकित्सा

नासानाभिसमुत्थेतुतथामेढ्राक्षिकर्णयोः ॥
क्रियामर्शस्सुकुर्वीततत्रतत्रयथोदितां ॥

अर्थ—नाक, नाभि, शिष्णेन्द्री (लिंग,) नेत्र, और कान, इनमें बवासीर होने सैं उसमें उसी स्थानमें उचित क्रिया कही हुई करनी चाहिये।

रजनीचूर्णयोग

भावितंरजनीचूर्णस्नुहिक्षीरैःपुनःपुनः ॥
बंधयेत्सुदृढंसूत्रंछिनत्त्यर्शोभगंदरं ॥

अर्थ—हलदी और थूहरका दूध इनमें वारंवार सूतको भिगोकर सुखाय लेवे फेर इस सूतसैं बवासीरके मस्सेबांधे तो वो टूटकैं गिरजावे इसी प्रकार भंगदर रोगमें इस सूतको बांधे तो भगंदरका नाश करे ये दोनो रोगोंपर प्रयोग अनुभूतहै।

चामखील

चर्मकीलंतुसंस्विद्यदह्यःक्षारेणचाग्निना ॥

अर्थ—चर्मकील रोगको स्वेदन करके उसका क्षारसैं अथवा अग्निसैं दागदेवे तो मस्से दूर हो।

दुग्धिकादिघृत

दुग्धिकाकंटकारीभ्यांकल्कंक्षीरैश्चतुर्गुणम् ॥ कल्कतुल्यंघृतंयोज्यंघृतशेषंविपाचयेत् ॥ भोजनेलेपनेपानेजयेच्छिप्तार्शसांकिल ॥

अर्थ—दुधी और कटेरी इनका कल्क तथा उस कल्कका चौगुना दूध और कल्कके समान उसमें घी डाले फिर इसके मट्टीपर चढायकैं मंदाग्निसैं पचन करावे, इस घीको भोजनमें मिलायके भक्षणकरनेको देवे तथा बवासीरमें लगावे तो उस बवासीरका नाश करे।

व्योषादिमोदक

गुडव्योषवरावेल्लतिलारुष्कारचित्रकैः ॥
अर्शांसिहंतिगुटिकात्वग्विकारंचशीलिता ॥

अर्थ—गुड, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड,बहेडा, आवला, कालेतिल, कालीमिरच, भिलाए और चित्रक इनके चूर्णकी गुड़सैं गोली बनावे और देवे तो बवासीर और त्वचाके विकारोंको नष्ट करे।

गुडचतुष्क

गुडेनशुंठीमथवोपकुल्यांपथ्यांतृतीयामथदाडिमंच ॥
आमेष्वजीर्णेषुगुदामयेषुवर्चोविबंधेषुचनित्यमद्यात् ॥

अर्थ—सोंठ, पीपल, हरड, और अनार ये चार वस्तु क्रमसैं गुडसैं नित्य भक्षण करेतो आम, अजीर्ण, बवासीर, और मलकी कठोरता इनको नाश करे, अर्थात्

सोठगुड आमको, पीपलगुड अजीर्णको, हरडगुड बवासीरको एवं अनारदाना और गुड मलबंधको दूर करेहै ।

कार्पासमज्जागुटी

कार्पासमज्जालशुनंखर्जिकाक्षारहिंगुकं ॥
घृतेनकोलमात्राहिगुटिकाशौविनाशिनी ॥

अर्थ—विनोंलेकी मिंगी, लहसन, सजीखार और हींग एकत्र खरलकर बेरके समान घीसें गोली बनावे इस गोलीको भक्षण करे तो बवासीरकी पीडा दूरहोवे

त्रिफलादिगुटिका

त्रिफलापंचलवणंकुष्टंकटुकरोहिणी ॥ देवदारुविडंगानिपिचुमंदफलानिच ॥ बलाचातिबलाचैवद्विहरिद्रासुवर्चला ॥ एतत्संभृतसंभारंकरंजत्वग्रसेनतु ॥ पिष्ट्वाचगुटिकांकृत्वाबादरास्थिसमांबुधः ॥ एकैकांतांसमुद्धृत्यरोगेरोगेपृथक्पृथक् ॥ अर्शांसिहंतितक्रेणगुल्मानम्लेनानिर्हरेत् ॥ उष्णेनवारिणापीताशांतमग्निंप्रदीपयेत् ॥ जंतुजुष्टातुयोगेनत्वग्दोषंखदिरांबुना ॥ मूत्रकृच्छ्रंतुतोयेनहृद्रोगंतैलसंयुता ॥ इंद्रस्वरससंयुक्ता सर्वज्वरविनाशिनी ॥ मातुलुंगरसेनाथसद्यःशूलहरीस्मृता ॥ कपित्थतिंदुकानांतुरसेनसहमिश्रिता ॥ विषाणिहंतिसर्वाणिपानाशनप्रयोगतः ॥ गोशकृद्रसमायुक्ताहन्यात्कुष्टानिसर्वशः॥श्यामाकषायसहिताजलोदरविनाशिनी॥भक्तच्छन्नंहिजयतिभुक्तस्योपरियोजिता ॥ अक्षरोगेषुमधुनाभक्षिताधृष्यतांजयेत्॥लेपमात्रेणनारीणांसद्यःप्रदरनाशिनी ॥ व्यवहारे तथाद्यूतेसंग्राममृगयादिषु ॥ समालभ्यवरोप्येनांक्षिप्रंविजयमाप्नुयात् ॥

अर्थ—त्रिफला (हरड बहेडा आवला,) कालानिमक, सैंधानिमक, खारीनिमक कचियानिमक और रेहका निमक,कूठ,कुटकी,देवदारु,वायविडंग,नीमकेफल (निवोरी), बला, अतिबला, हरदी, दारुहलदी, सजीखार ये सब वस्तु एकत्र करके कंजेको छालके, समें खरलकरके बेरकी गुठलीके समान गोली बनावे

इसको प्रत्येक रोगमें अलग २ अनुपानके साथ देवेतो अनेक रोगोको दूरकरे, जैसै बवासीरपर छाछके साथ, गोलाके रागमें नींबूके रसके साथ देवे, मंदाग्निके रोगमें गरमजलके साथ, कृमिरोगमें वायविडंगके काढेके साथ, त्वचा (चमडी) के दोषोंमें खैरके काढेके साथ, मूत्रकृच्छ्रमें शीतलजलके साथ, हृदयरोगोंमे तेलसैं, संपूर्ण ज्वरोंमें कूडाके, स्वरसकेसाथ, शूलरोगमें विजोरेके रससैं, संपूर्ण विषोंमें कैथ और तेंदू इनके रसके साथ, संपूर्ण कुष्ठरोगोमें इन्द्रगोपकृमि (वीरबहुट्टी) के साथ, जलोदर अर्थात् जलंधररोगमें पीपलके काढेके साथ देनी चाहिये तथा भोजनके पचानेको भोजनकरनेके पश्चात् सेवनकरे तथा संपूर्ण नेत्र रोगोंमें सहतके साथ अंजन करे, तथास्त्रियोंके प्रदरपर लेपमात्र करनेसैंही उसको दूरकरे तथा इस गुटकाके स्पर्शकरके जाने सैं व्यवहार (व्योपार) द्यूत (जूआ) युद्ध (कुस्तीआदि) और शिकार इनमें विजयी होय अर्थात् जीतपावे ।

गुग्गुलादिवटी

गुग्गुलुंलशुनंनिंबबीजरामठनागरैः ॥
गुटीशीतोदकेनोक्ताअर्शान्हंतिचतत्क्षणात् ॥

अर्थ—गूगल, लहसन, निवोरी, हींग, और सोंठ, इनकी गोली शीतल जलके साथ देनेसैं तत्काल बवासीरका नाशकरे ।

चन्द्रप्रभावटी

मृतलोहंपलद्वंद्वंलोहांशंशुद्धगुग्गुलुः ॥ द्वयोस्तुल्यासितायोज्यात्रिभिस्तुल्यंशिलाजतु ॥ तवक्षीरपलैकंतुअन्याकर्षांशकान्शृणु ॥ विडंगंत्रिफलात्र्यूषंभूनिंबंगजपिप्पली ॥ द्विनिशापिप्पलीमूलंदेवदारुसुवर्चलं॥ सैधवंधनिकाताप्यंकचोरोतिविषावृता ॥ ताप्यंसज्जीयवक्षारंवचामुस्तासपत्रकं ॥ दंतीएलासूक्ष्मचूर्णंमधुनागुटिकाकृता ॥कर्षमात्रासदाखादेन्नाम्नाचंद्रप्रभावटी ॥ सर्वार्शांसिनिहंत्याशुपांडुरोगंभगंदरं ॥ कृछ्रान्मेहान्क्षयंकासंनानारोगहरापरा ॥

अर्थ—लोहेकीभस्म, ८ तोले, शुद्धगूगल, ८ तोले, खाँड १६ तोले, शिलाजीत ३२ तोले, तवाखीर ४ तोले, और वायविडंग, त्रिफला, त्रिकुटा, चिरायता, गजपीपल, हलदी, दारुहलदी, पीपरामूल, देवदारु, संचरनिमक, सैंधानिम

क- धनिया, सोंनामक्खी, कचूर, अतीस, सुवर्ण, सज्जीखार, जवाखार, वच, नागरमोथा, तमालपत्र,दंती, और इलायची, ये सब एकएक तोले लेवे, सबका चूर्णकर सहतसैं दशमासेकी गोली बनाये यह चंद्रप्रभावटी संपूर्ण प्रकारकी ववासीर, पांडुरोग, भगंदर, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, क्षय (राजरोग) तथा खाँसी ऐसे अनेकप्रकारके रोगोंका नाशकरे ।

सूरणपुटपाक

सौरणंकंदमादायपुटपाकेनपाचयेत् ॥
सतैलगुडसंयुक्तोरसश्चाशोविकारनुत् ॥

अर्थ—जमींकंदको पुटपाककी विधिसैं पुटपाक करके सरसोंके तेल और गुड, इनके साथ खानेसैं बवासीरके विकारको दूरकरै ।

चित्रकादिदधि

त्वचंचित्रकमूलंस्यात्पिष्ठ्वाकुंभंप्रलेपयेत् ॥
तक्रंवादधिवातत्रजातमर्शोहरंपिबेत् ॥

अर्थ—चीतेके जड़की छालको कूटकै जलसैं पीस घड़ेके भीतर लेपकरे, उसमें दही अथवा छाछको भर देवे, इसमें सैं बवासीरवाले रोगिको पिलावे तो बवासीर दूरहोय, ।

कांचन्यादिविषयोग

कांचनीविषपाषाणंयवक्षारंचहिंगुलं ॥ जलेपिष्ट्वान्यसेद्गुह्ये वंकुर्याद्दिनत्रयं ॥ क्षीरस्येदंतथाकुर्यात्क्षीराहारीघृतौदनं ॥ अर्शोरोगंनिहंत्याशुसिद्धयोगउदाहृतः ॥

अर्थ— हलदी, संखियाविष, जवाखार, हींगलू, इनको, जलमें पीसके गोली बनावे इस गोलीको गुदामें रक्खे और दूधकी वाफ गुदाकोदेवे, तथा दूधपिलावे, घी और भातका भोजन करावे इस प्रकार तीनदिन करने सैं ववासीरका नाशहोय यह सिद्धप्रयोग कहाहै, ।

वृद्धदारुमोदक

वृद्धादारुकभल्लातशुंठीचूर्णेनपेषितः ॥
मोदकःसगुडोहन्यात्पङ्विधार्शःकृतारुजः ॥

अर्थ—विधायरा, भिलाए, और सोंठ, इन तीन औषधोंको समान भागले चू-

र्णकरे और सबचूर्ण सैं दूना गुड मिलायके गोलीबनावे, इस वृद्धदारुमोदकके भक्षण करनेसैं छःप्रकारकी बवासीर दूरहोवे।

सूरणवटक

शुष्कसूरणचूर्णस्यभागान्द्वात्रिंशदाहरेत् ॥ भागान्षोडशचित्रस्यशुंठ्याभागचतुष्टयं ॥ द्वौभागौमरिचस्यापिसर्वाण्येकत्रकारयेत् ॥ गुडेनपिंडिकांकुर्यादर्शसांनाशिनींपरां ॥

अर्थ--जमीकंदको सुखायके चूर्णकर बत्तीस तोले लेय, चित्रक, १६ भाग, कालीमिरच, दो भाग लेय, सब औषधोंका चूर्णकर उसमें गुड सब औषधों सैं दूना मिलाय गोली करे इस गोलीको नित्यप्रति सेवन करे तो छःप्रकारकी बवासीर नष्टहोवे।

बृहत्सूरणवटक

सूरणोवृद्धदारुश्चभागैःषोडशभिःपृथक् ॥ मुसलीचित्रकौज्ञेयावष्टभागमितौपृथक् ॥ शिवाविभीतकौधात्रीविडंगंनागरंकणा ॥ भल्लातःपिप्पलीमूलंतालीसंचपृथक्पृथक् ॥ चतुर्भागप्रमाणानित्वगेलामरिचंतथा ॥ द्विभागमात्राणिपृथक्ततस्त्वेकत्रचूर्णयेत् ॥ द्विगुणेनगुडेनाथवटकान्कारयेद्बुधः ॥ प्रबलाग्निकराएतेतथाशोंनाशनाःपराः ॥ ग्रहणीवातकफजांश्वासंकासंक्षयामयं ॥ प्लीहानंश्लीपदंशोकंहिक्कांमेहंभगंदरं ॥ निहन्युःपलितंवृष्यास्तथामेध्यारसायनाः ॥

अर्थ—जमीकंद १६ भाग, विधायरा १६ ,मूसलीसपेद ८ भाग, चीतेकीछाल ८ भाग, हरड, बहेडा, आमला, वायविडंग, सोंठ, पीपल, भिलाये, पीपरामूल,तालीसपत्र, ये नौ औषधीयोंके चारचार भागलेवे,तथा दालचीनी, इलायची,और कालीमिरच येतीन औषध दोदोभागलेवे फिर सब औषधोंको कूट पीसके चूर्णकरे इस चूर्णसैं दुगुना गुड मिलावे सबको एकजीव करके गोलीबनावे, इनके सेवन करने सैं अग्निप्रदीप्त होवे, बवासीर, तथा वात कफसैं उत्पन्नभई संग्रहणी, श्वास, खाँसी, क्षय, पेटमें दहनीतरफ जो पिलहीकारोग होताहै वह, श्लीपदरोग, सूजन, हिचकी, प्रमेह, भगंदर, पलितरोग (जिसमें इस प्राणीके संपूर्ण बाल सपेद हो जातेहै) ये संपूर्ण रोगदूरहोवे तथा इस गोलीके प्रभावसैं

स्त्री गमनमें इच्छाहोवे, तथा बुद्धिबढे और शरीरकी वृद्धावस्था आदिकोदूरकरे।

कोशातकीघर्षण

कोशातकीरजोघर्षान्निपतंतिगुदोद्भवाः ॥

अर्थ—कडवीतोरईका चूर्ण बवासीरके मस्सों पर घिसे तो ववासीरके मस्सैं-टुटकर गिरपडे,

निशादिलेप

निशाकोशातकीचूर्णंस्नुक्पयःसैंधवान्वितं ॥
गोमूत्रेणसमायुक्तोलेपोदुर्नामनाशनः ॥

अर्थ—हलदी और कडवीतोरई इनका चूर्ण, थूहरकादूध और सैंधानिमक इन सबकों एकत्र पीसकैं गोमूत्रमें मिलायकैं मस्सोंके ऊपर लेपकरे ववासीरका नाशहोवे ।

तथानिशादिऔरअर्कमूलादिलेप

निशाकोशातकीलेपःसर्वदुर्नामनाशनः ॥
अर्कपत्रंशिग्रुमूलंलेपनंहितमर्शसां ॥

अर्थ—हलदी और कडवीतोरई इनका अथवा आकके पत्ते तथा सहजनेके पत्तोंको पीसके लेपकरे तो बवासीरको नष्टकरे ।

निम्बादिलेप

निंबाश्वत्थस्यपत्राणांलेपोदुर्नामनाशनः ॥
आरनालेनवाहन्यात्सगुडाकटुतुंबिका ॥

अर्थ—कडुए नीमकेपत्ते, और पीपलके पत्ते इनदोनोंको एकत्र पीसकर लेप करे । अथवा कडवीतूंबीके पत्तोंको और गुडको काँजीमें पीसकैं लेपकरे तो बवासीर नाशहोवे इसमें संदेह नहींहै, परंतु यह मस्सोंमें लगतेहै, ।

एरण्डमूलादि

एरंडमूलंसुरदारुरास्नायष्टीमधूकंमसृणंविचूर्ण्य ॥ पिष्टंयवानां चचतुर्गुणंस्यात्साध्यंहिवन्हौपयसासमस्तं ॥ स्वेदोपनाहौबहु तेनकुर्यादर्शांसिशूलंविलयंप्रयांति ॥

अर्थ—अंडकीजड, देवदारु, रास्ना, मुलहटी, और मक्खन इन सबको एकत्र पीस इसमें चौगुना जों का चून मिलाय दूधमें उसनके अग्निपर रोटी वा अंगारक-

री बनावे इस गरम २ रोटीसें यदि बवासीर को सेके अथवा गरम २ बवासीर पर बांधे तो पीडायुक्त बवासीरका नाशहोवे, ।

स्नुह्यादिलेप

स्नुह्यग्निलांगलीदंतीमूलैर्लेपोर्शसांहितः ॥

अर्थ—थूहरकादूध, चीतेकीछाल, कलियारी, दंतीकीजड़, इनको जलमें पीसकैं लेपकरे तो बवासीर नष्टहोवे ।

कृष्णशिरीषादिलेप

कृष्णशिरीषबीजार्कक्षीरैःसामरसैंधवैः ॥ हरिद्राऋक्षविड्गुं-जागोमूत्रैःपिप्पलीयुतैः ॥ एतल्लेपत्रयंयोज्यंशीघ्रमर्शोविनाशनम् ।

अर्थ—जटामांसी,सिरसके बीज, आककादूध, सेमरका मूसला, सैंधानिमक हलदी, रीछकीवीठ, घूंघची, गोमूत्र, और पीपल इन सबको एकत्र पीसकैं तीन-वार मस्सोंपर लेपकरे तो बवासीर बहुत जल्दी नष्टहोवे ।

अर्कादिलेप

आर्कंपयःसुधाकांडंकंटकालाबुपल्लवाः ॥
करंजोबस्तमूत्रेणलेपनंश्रेष्ठमर्शसां ॥

अर्थ—आककादूध, थूहरका टुकडा, कुटकी, कडुई घीयाकेपत्ते, और कंजा-केबीज इन सबको बकरेके मूत्रमें पीसकें मस्सोंपर लेपकरे यह लेप बवासीर पर उत्तमहै ।

गुञ्जासूरणलेप

गुंजासूरणकूष्मांडबीजैर्वर्तिस्तथागुणा ॥

अर्थ—घूंघची, जमींकंद, पेठेकेबीज, इन सबको जलमें पीसकैं सपेदकपडे पर लेपकरे फिर उसको छायामें सुखाय बत्ती बनावे इस बत्तीको गुदामें रक्खे तो बवासीरका नाशहोवे ।

गौरीपाषाणलेप

गौरीपाषाणकर्षैकंस्नुहिकांडेविनिःक्षिपेत् ॥ याचयेत्पुटपाके नततउद्धृत्ययत्नतः ॥ रेवाचिनीचकुष्ठंचकल्कीकृत्यत्रयंस मं ॥ लेपयेत्तेनअर्शांसिनिवार्यंतेनसंशयः ॥

अर्थ—सोमल (संखिया) को थूहरकीगिली लकडीमें भरे फिर उसको पुट-

पाककी विधिसैं पक्ककरे पश्चात् रेवतचीनी, और कूठ ये समान भागले सबको पीसकैं बवासीरपर लेपकरे तो निःसंदेह ववासीर दूरहोवे ।

न्यग्रोधपत्रलेप

दग्ध्वान्यग्रोधपत्राणितैलेनसहलेपयेत् ॥

अर्थ—वडके पत्तोंकी भस्मकर उस राखको तेलमें सानके बवासीरपर लेपकरे तो बवासीर नष्टहोवे ।

कटुतुंब्यादिलेप

कटुतुंब्यास्तथादंत्याःशकृच्चकुक्कुटस्यच ॥ मुसल्याश्चाश्वगंधायाश्चित्रकस्यचयत्नतः ॥ मूलैस्तुल्यैःकृतंचूर्णमर्कक्षीरेण भावयेत् ॥ स्नुहिक्षीरेणमतिमान्वारिणापरिपेषयेत् ॥ वस्त्रवर्त्यांगुदंतेनसमालिप्यसमंततः ॥ गुदेविनिक्षिपेद्यत्नात्प्रातःसायंचबुद्धिमान् ॥ वेदनाचभवेत्तीव्रावन्हिनास्वेदयेद्गुदं ॥ नोपशाम्येद्यदातेनतदाचैवोष्णवारिणा ॥ विनिवेश्य गुदंतिष्ठेद्वेदनाशमकारणात् ॥ अद्याद्वृष्यमथान्नंचशिशिरंजलमापिबेत् ॥ गुदजानांविनाशार्थंसप्ताहंतुसमाहितः ॥ विधिमेनंप्रकुर्वीतगतशंकस्तुमानवः ॥

अर्थ—कडवी तूंबीके पत्ते, दंतीकीजड़, मुरगेकीविष्ठा, सपेदमूशली, असगंध,और चीता ये समान भाग लेवे सबका चूर्णकरके आकके दूधमें और थूहरके दूधकी भावना देवे फिर जलसैं पीसकैं कपडेपर लेपकर उसको सुखायके बत्ती बनावे, फिर इसीबत्तीसैं प्रथम पूर्वोक्त औषधोका लेपकरे फिर बत्तीको गुदामें रखदेवे इस प्रकार सायंकाल और प्रातःकाल दोनों बखत बत्तीकोधरे, इसके धरनेसैं गुदामें घोर पीडा होतीहै उसके शांति करनेको गुदामें स्वेदनविधि करे, यदि स्वेदन करनेसैं भी पीडाशांति न होवे तो गरम जलमें बैठजावे, तथा वृष्य (पुष्टकर्त्ता) अन्नका सेवनकरे अर्थात् मधुर, चिकने और मनको प्रसन्नकरी, पदार्थ सेवन करे,शीतल जल पीवे इस प्रकार सातादिन करनेसैं बवासीरका नाश होय यह यत्न प्राणीकों शंकारहित होकर करना चाहिये ।

देवदालीबीजलेप

सिंधूत्थदेवदाल्याश्चबीजंकांजिकपेषितम् ॥

गुदांकुरप्रलेपेनपातयेत्पर्वतानपि ॥

सैंधानिमक, और वंदाल (घरवेल) के बीज इन दोनोंको कांजीमें पीसकैं ववासीरके मस्सोंके मुखपर लेपकरे तो मस्से गलकर गिरपडे, इस लेपसें पर्वतभी टूट पडते है ।

चव्यादिघृत

चव्यंत्रिकटुकंपाठाक्षाराःकुस्तुंबरूणिच॥यवानीपिप्पलीमूल मुभेचविडसैंधवे ॥ चित्रकंबिल्वमभयापिष्ट्वासर्पिर्विपाचयेत् ॥ सकृद्वातानुलोमार्थंजातेदधिचतुर्गुणं ॥ प्रवाहिकांगुदभ्रंशंमूत्र कृच्छ्रपरिश्रवं ॥ गुदवंक्षणशूलंचघृतमेतद्व्यपोहति ॥

अर्थ—चव्य, सोठ- मिरच, पीपल, पाढ, सर्वप्रकारके क्षार, धनिया, अजमायन, पीपरामूल, विडनिमक, सैंधानिमक, चीतेकी छाल, बेलकाफल, और हरड इन सबको एकत्र पीसके कल्ककरे इस कल्कसैं घी सिद्धकरे, यह घी वादीको अनुलोमनकरेहै और चौगुना दही डालके इस घीको सिद्धकरे वह प्रवाहिका, गुदभ्रष्ट, मूत्रकृच्छ्र, गुदस्राव और गुदा, पेडु, इनका दर्द इनका नाशकरे।

शुंठीघृत

त्रिंशत्पलानिशुंठीनांजलद्रोणेविपाचयेत् ॥ तेनपादावशेषेण कल्केनान्यंपचेद्घृतं ॥ दुर्नामश्वासकासघ्नंप्लीहपांड्वामयापह म् ॥ विषमज्वरशांत्यर्थंतृष्णारोचकनाशनं ॥ शुंठीघृतमि तिख्यातंकृष्णात्रेयेणपूजितं ॥ नागरेणजलेपक्वंबस्तिकुक्षि गदापहम् ॥

अर्थ—सोंठ एक सो वीस तोलेको एक सोंवीसतोले जलमें काढा करे जब चतुर्थांश शेपरहे तव उतारकै छानलेवे, फिर इसमें सोठका कल्क मिलायकैं घृत पचनकरे, वह ववासीर, श्वास, खाँसी, प्लीहा, पांडुरोग, विषमज्वर, प्यास, और अरुचि, इनका नाशकरे यह कृष्णात्रेय करके मान्य अैसा शुंठीघृतहै, यही अदरखके रसमें सिद्धकरा हुआ घृत बस्ति (मूत्रस्थान,) और कूख इनके रोगोंको नष्टकरे है ।

लघुचव्यादिघृत

चव्यातिक्ताकलिंगानिशताह्वालवणानिच ॥

सर्पिरर्शोविकारघ्नंग्रहणीदीपनंपरं ॥

अर्थ—चव्य, कुटकी, इन्द्रजो, सतावर, और पांचो निमक, इन औषधोंसैं सिद्धकराहुआ घृत बवासीर, और संग्रहणी इनको नष्टकरे तथा दीपन विषयमें उत्तम है ॥

ह्रीबेरघृत

ह्रीबेरमुत्पलंलोध्रंसमंगाचव्यचंदनं ॥ यवासातिविषाबिल्वं धातुकीदेवदारुच ॥ दार्वीत्वङ्नागरंमांसीमुस्ताक्षारोयवाग्र जः ॥ चित्रकश्चेतिपेष्याणिचांगेरीस्वरसेघृतं ॥ एकत्रसाध येत्सर्वंतत्सर्पिःपरमौषधं ॥ अर्शोतिसारग्रहणीपांडुरोगेज्वरेरु चौ ॥ मूत्रकृच्छ्रेगुदभ्रंशेबस्त्यानाहप्रवाहिके ॥ पिच्छास्रावेर्श सांमूलेयोज्यमेतत्रिदोषहृत् ॥

अर्थ—नेत्रवाला, कूठ, लोध, मजीठ, चव्य, चंदन, धमासा, अतीस, बेलफल, धायकेफूल, देवदारु, दारुहलदी, दालचीनी, सोंठ, जटामांसी, नागरमोथा, जवाखार, तथा चीतेकीछाल, ये सब वस्तुओंको चूकाके रसकैं घिसकैं कल्ककरे फिर कल्कके समान घी लेकर घृत सिद्ध करने की विधिसैं बनावे यह (चांगेरी घृत) उत्तम औषधीहै यह बवासीर, अतिसार, संग्रहणी, पांडुरोग, ज्वर, अरुचि, मूत्रकृच्छ्र, गुदभ्रंश, (काँच्छका निकलना) बस्ति, अफारा, प्रवाहिका, रक्तस्राव, बवासीरके मस्से और त्रिदोष इनपर हितकारी है तथा त्रिदोषनाशकहै ।

रोहितारिष्ट

रोहीतकतुलामेकांचतुर्द्रोणेजलेपचेत् ॥ पादशेषेरसेशीतेपू तेपलशतद्वयं ॥ दद्याद्गुडस्यधातक्याः पलषोडशिकामताः ॥पंचकोलंत्रिजातंचात्रिफलांचविनिःक्षिपेत् ॥ चूर्णयित्वापलां शेनततोभांडेनिधापयेत् ॥ मासादूर्ध्वंचपिबतांगुदजायांति संक्षयं ॥ ग्रहणीपांडुहृद्रोगप्लीहगुल्मोदराणिच ॥ कुष्ठशोफा रुचिहरोरोहितारिष्टसंज्ञकः ॥

अर्थ—लाल रुहेडा १ तुलाको जब कूट करके उसमें चारद्रोण जल डालकैं काढाकरे जब चतुर्थांश जल रहे तब उतारकैं छानलेबे जब शीतल होजावे तब उसमें २०० दोसों पल गुड़ डालकैं तथा धायके फूल ६ तोले डालकैं, पंचकोलकी

औषधी, त्रिजातककी औषधी, और त्रिफला ये ग्यारह औषधोंको एक एक प-ल लेकर सबका चूर्णकर उस पूर्वोक्त काढेमें डालदेवे फिर सबको एक पात्रमें भरकैं उसकै मुखपर मुद्रा देकर एक महिनें पर्यंत धरारहने देवे महिनाके पश्चात् मुद्राको दूरकर इस रसको निकासलेवे इसको (रोहितारिष्ट) कहतेहै इसके से-वन करने सैं ववासीर संग्रहणी, पांडुरोग, हृदयका रोग, पेटमें दहनीतरफ पि-लही होतीहै वह, गोलेकारोग, उदररोग, कोढ, सूजन, और अरुचि ये रोग दूर होवे ।

मधुपक्कहरीतकी

कदंबनिंबचिंचानांत्वक्चूर्णंपलषोडशं॥अजागोमहिषीमूत्रंत्व क्षोडशगुणोत्तरं ॥ क्काथयेत्पादशेषंतुशुद्धंकृत्वाविनिःक्षिपे त् ॥ अभयानांशतैकंतुकाथयेच्चकषायकं ॥ जीर्यतेह्यभया पश्चाद्भित्त्वाअंडंनिवारयेत् ॥ भृंगीसुवर्चलंचूर्णंतुल्यंतेनप्रपूर येत् ॥ अभयांवेष्टयेत्सूत्रैर्मधुमध्येत्र्यहंक्षिपेत् ॥ नित्यंक्षौद्रस मंभक्ष्यात्रिदोषार्शःप्रशांतये ॥

अर्थ—कदम, नीम, इमली इनकी छालका चूर्ण , चौसठ तोले, तथा बकरी गौ भैंस इनका मूत्र एक हजार चार तोले डालके काडाकरे जब चतुर्थांश शेषर-हे तव उतारके काढेको छानलेवे, इसमें १०० हरड डालकैं ओंटावे जब हरड नरम होजावे तव निकालके उनके भीतरकी गुठली दूरकरे, और इन हरडों में भांग और सज्जीखार भरके सूतसैं बाधदेवे तथा तिन दिन सहत में डालकै धरी रहने देवे फिर इसमें सैं एक हरडको निकालके भक्षण करे तो त्रिदोष जन्य व-वासीर शांति होवे ।

गोजिव्हादिकाढा

गोजिव्हामूलमेकंद्विगुणबर्हिशिखामूलकुस्तुंबराणामष्टांशेका थतोयेमधुसिकतरजोमिश्रमंतेपिवेत्तत् ॥ तस्यार्शःषड्विधो पिहरतिगुदरुजःस्रावमामानुबंधंकीलंकंडुग्रहण्यांशुलमतिभि षजामंडलात्पथ्यसेवी ॥

अर्थ—गोभीकी जड १ भाग, मोरशिखाकी जड २ भाग, तथा धनिया, इ-नकाअष्ट मांस लेकर काढा करे उसमें सहत और खांड डालकै रोगीको देवे

तो यह छःप्रकार की ववासीर गुदाके रोग, गुदाका स्रवना, आमांश, ववासीरके मस्से, खूजली, संग्रहणी, और शूल, इनका नाश करे इसको एक मंडल सेवन करे तथा पथ्यसैं रहे।

कल्याणलवण

भल्लातकानित्रिफलादंतीचित्रकमेवच ॥ समभागानिसर्वाणि सैंधवंद्विगुणंभवेत् ॥ कपालपुटसंपक्वंमृदुनागोमयाग्निना ॥ कल्याणनामलवणंश्रेष्ठमर्शोविकारिणम् ॥

अर्थ—भिलाए, हरड, बहेडा, आमला, दंतिकी जड़, और चीतेकी छाल ये सब औषधी समान भागलेवे और सैंधानिमक एक औषध सैं दूनालेवे सबको एकत्रकर शरावसंपुट में रख कपडमिट्टीकर आरने उपलों की मंदाग्नि देवे जब स्वांग शीतल होजावे तव निकासलेवे यह (कल्याण नामक) लवण ववासीर पर हितकारी है, ।

तक्रादियोग

सतक्रंलवणंदद्याद्वातवर्चोनुलोमनं ॥ नप्ररोहंतिगुदजाःपुनस्तक्रसमाहताः ॥ तक्राभ्यासोर्शसैःकार्योबलवर्णाग्निवृद्धये ॥ स्रोतस्सुतक्रशुद्धेषुसम्यक्फलतितद्रसः ॥ तनुपुष्टिस्तथातुष्टिर्बलंवर्णश्चजायते ॥ वातश्लेष्मविकाराणांशतंचविनिवर्तयेत् ॥

अर्थ—छाछमें निमक डालकैं देवे वह वायु और मल इनका अनुलोमन करे, तथा तक्रके प्रयोग सैं नाश हुए (गुदाके मस्से) फिर उत्पन्न नही होते, बल, वर्ण, और अग्नि इनकी वृद्धि होय, इसी कारण बवासीररोगवालेको छाछ पीनेका अभ्यास करना चाहिये छाछ सैं नाडियोंके मार्ग शुद्धहोने सैं शरीरका पालन करनेवाले रसका उन नाडियोंमें उत्तम प्रकार सैं संचार होताहै कि जिस्से शरीरकी वृद्धि, संतोष, बल, और कांति ये उत्पन्न होवे तथा अनेक वात कफके विकारोंका नाश होवे ।

प्रकारांतर

विड्विबंधेहितंतक्रंयवानीविश्वसंयुतं ॥ नप्ररोहंतिगुदजाःप्रायस्तक्रसमन्विताः ॥ यज्जातंगोरसक्षीराद्वान्हिमूलावचूर्णितात् ॥ पिबंस्तदेवतेनैवतक्रंभुज्यांकुराअति ॥ पिबेदहरहस्तक्रं

निरन्नोवासकामतः ॥ सप्ताहंवादशाहंवामासार्धंमासमेवच ॥ बलकालविकारज्ञोभिषक्पंचप्रयोजयेत्॥हरीतकींतक्रयुतांत्रिफलांवाप्रयोजयेत्॥चित्रकंहपुषाहिंगुदद्याद्वातक्रसंयुतं॥ पंचकोलकयुक्तंवातक्रेणैवप्रदापयेत् ॥ त्वचंचित्रकमूलस्यपिष्ट्वा कुंभंप्रलेपयेत् ॥ तक्रंवादधिवातत्रजातमर्शोहरंपिबेत् ॥ तक्रेणार्शांसिनिघ्नंतिमुसलीकटुकान्विता ॥

अर्थ—विड्विबंध अर्थात् मलकी कब्जियत् पर, अजमायन, और सोंठ, मिलायकैं छाछ पीवे तो छाछ सैं नाश हुए गुदांकुर (गुदाके मस्से) फिर उत्पन्न नहीहोते,जो गौके दूध सैं बनी छाछ तथा उसमें चित्रककी छालका चूर्ण डाला ऐसी केवल छाछ सैं ही गुदाके मस्से नष्टहोतेहै इस कारण बिना अन्नके नित्यप्रति वारंवार छाछ पीवे, सो इस प्रकार कि सात, दस, किंवा पंद्रह दिन अथवा एक महिने पर्यंत बल, काल, विकार जानने में कुशल वैद्य रोगिको छाछ देवे,और छाछमें हरड किंवा त्रिफला देवे अथवा चित्रक, हाऊबेर और हींग ये छाछमें डालके देवे अथवा पंचकोलका चूर्ण डालकैं छाछ देवे, अथवा चित्रककी छालके कल्कको उत्तम मिट्टीके पात्रके भीतर लेपकरके दूध जमावे यह दही अथवा छाछ अर्शनाशकहै अथवा मूसली, और कुटकी चूर्ण मिलायके छाछ पीवे तो ववासीर नष्ट होवे ।

अरलुत्वक्

अरलुत्वग्वान्हिसुरेंद्रयवान्चिरबिल्वसुसैंधवशुंठियुतान् ॥ मथितेनपिबेद्यदिसप्तदिनमर्शांसिपतंतिसमूलानिबलात् ॥

अर्थ—टेंटूकी छाल, चीतेकछाल, इन्द्रजो, कंजा, सैंधानिमक, और सोंठ इनका चूर्ण छाछमें डालकैं सातदिन पीवे तो जलसैं मस्से उखडके गिर जावे ।

शर्करासव

दुरालभायाःप्रस्थस्यचित्रकस्यवृषस्यच ॥ पथ्यामलकयोश्चैवपाठायानागरस्यच ॥ दद्याद्द्विपलिकान्भागान्जलद्रोणेविपाचयेत्॥ पादशेषेरसेपूतंसुशीतंशर्कराशतं ॥ दत्वाकुंभेदृढेस्थाप्यंमासार्धंघृतभाजनं ॥प्रलिप्यपिप्पलीचव्यप्रियंगुमधुसर्पिषा ॥ तस्यमात्रांपिबेत्कालेशार्करस्ययथाबलं ॥ अ

अर्शांसिग्रहणीरोगमुदावर्त्तमरोचकं ॥ शकृन्मूत्रानिलोद्गारविबं धानलमार्दवं ॥ हृद्रोगंपांडुरोगंचसर्वरोगान्प्रणाशयेत् ॥

अर्थ—धमासो १ सेर, तथा चित्रक, अदूसा, हरड, आवले, पाढ, सोंठ, ये प्रत्येक आठ २ तोले इन सबको २०४ तोले जलमें पीसके काढाकरे जब चतुर्थांश शेष रहे तव उतारकैं शीतल करे फिर ४०० तोले खाँड डाले फिर घीके चिकने दृढपात्रमें भरकैं मुखबंदकर१५दिन उसी प्रकार ढका हुआ धरा रहने देवे, तथा उस पात्रमें, पपिल, चव्य, फूल प्रियंगु, सहत और घी ये भीतर चुपड देवे, फिर इस आसवमें सैं, प्रातःकाल बलाबल विचारकैं देवे तो बवासीर, संग्रहणी, उदावर्त्त, अरुचि, इनको नाश करे तथा मल, मूत्र, अधोवायु, डकार मंदाग्नि, हृदयरोग, पांडुरोग, तथा सर्वरोग, इनको नाशकरे ।

द्राक्षासव

द्राक्षापलशतंदत्त्वाचतुर्द्रोणांभसापचेत ॥ द्रोणशेषेरसेतस्मिन्पूतशेषंप्रदायेत् ॥ शर्करायास्तुलांदत्वातत्तुल्यंमधुनस्तथा ॥ पलानिसप्तधातक्यःस्थापयेदाज्यभाजने ॥ जातीलवंगंकंकोलंलवलीफलचंदनैः ॥ कृष्णात्रितंयुक्त्याभागैरर्धपलांशकैः ॥ त्रिःसप्ताहाद्भवत्येवंतत्रमात्रांयथाबलं ॥ नाम्नाद्राक्षासवोह्येषनाशयेदुदकीलकान् ॥ शोषारोचकहृत्पांडुरक्तपित्तभगंदरान् ॥ गुल्मोदरकृमिग्रंथिक्षतशोषज्वरांतकृत् ॥ वातपित्तप्रशमनंशस्तंचबलवर्णकृत् ॥

अर्थ—दाख, ४०० तोले लेकर ८१७२ तोले जलमें चतुर्थांश शेष काढाकरे फिर इसको छानकैं इसमें खांड ४०० तोले तथा सहत ४०० तोले डाले, और धायके फूल, ५८ तोले, डालके घीके चिकने बासनमें भरकैं धरदेवे और इतनी वस्तु और डाले, जायफल, लौंग, कंकोल, हरपारेवडीके फल और चंदन ये प्रत्येक दोदोतोले लेवे सबको कूटके उसी पात्रमें डालके मुखको बंदकर इक्कीस दिन उसी प्रकार धरा रहनेदे, पश्चात् बलाबल विचारकैं इसकी मात्रादेवे यह द्राक्षासव, बवासीरके मस्सोंको नाश करे तथा शोष, अरुचि, हृदय रोग, रक्तपित्त, भगंदर, गोला, उदररोग, कृमि, गांठ, क्षतक्षय, ज्वर, और वातापित्त इनका नाश होय तथा बल और कांति इनको करे ।

सन्निपातार्शधूप

गोधूमपिष्टंपलमेकहिंगुशाणाधभल्लातकवेदयुक्तः ॥
स्याद्धूपदानेगुदशूलनाशःस्यात्सन्निपातोगुदसंभवानां ॥

अर्थ—गेंहूका चून, ४ तोले, हींग २ मासे, और भिलाए ४ ये सब एकत्र कूट पीस गुदामें धूनी देवे, तो गुदाकी पीडा, तथा संनिपात जन्य बवासीर नष्ट होवे।

हपुषादितक्रारिष्ट

हपुषाकुंचिकाधान्यमजाजीकारवीसठी ॥ पिप्पलीपिप्पली मूलंचित्रकोगजपिप्पली ॥ यवानीचाजमोदाचतच्चूर्णतक्रसंयुतं ॥ मंदाम्लंकटुकंविद्वान्स्थापयेद्घृतभाजने ॥ व्यक्ताम्लंकटुकंजातंतक्रारिष्टंकटुप्रियं ॥ प्रपिबेन्मात्रयाकालेप्रातभोंज्ये तथातृषि ॥ दीपनंरोचनंवर्ण्यंकफवातानुलोमनं ॥ गुदश्वयथुकण्डूर्तिनाशनंबलवर्धनम् ॥

अर्थ—हौवेर, मेथी, धनिया, जीरा, सोंफ, कचूर, पीपल, पीपरामूल, चीतेकीछाल, गजपीपल, अजमायन और अजमोद, इनका चूर्ण कुछ २ खट्टी छाछके साथमें मिलायकै घीके चिकने वासनमें भर देवे, जब वह उत्तम रीतसैं खट्टा और तीक्ष्ण होजावे तब जाने कि सिद्धहोगया, इसको (तक्रारिष्ट) कहतेहै, यह चरपरे पदार्थ खानेवालीको प्रियहै, इसमें सैं थोडा प्रातःकाल तथा भोजनके समय, तथा जिस समय प्यासलगे उस समय पीवे, यह दीपन, रुचिकारक, वर्णको उत्तम करने वाला, तथा वायुको अनुलोमन करनेवालाहै, यह गुदाके रोग, सूजन और खुजली इनका नाश करे तथा बलको बढावे।

भर्जितहरीतकी

घृतसंभर्जितापथ्यापिप्पलीगुडसंयुता ॥
भक्षयेद्वात्रिवृद्धंतिभक्षिताचानुलोमनी ॥

अर्थ—हरडको घीमे भूनकें उसमें पीपलका चूर्ण और गुड मिलायके देवे अथवा निसोथ मिलायके देवे तो मलका अनुलोमन करे, अर्थात् दस्त साफ उतरे।

पाठमूलयोग

दुःस्पर्शकेनाबिल्वेनयवान्यानागरेणवा ॥

एकैकेनापिसंयुक्तापाठाहंत्यर्शसोरुजं ॥

अर्थ—धमासा, वेलगिरी, अजमायन और सोंठ, इनमें सैं एकमें पाढकी जडको मिलायकैं देवे, तो ववासीरकी पीडा नष्ट होय ।

सर्वैसर्वात्मकान्याहुर्लक्षणैःसहजानिच ॥

अर्थ—संपूर्ण दोषोंके लक्षण जिस ववासीरमें होवे उसको संनिपात जन्य ववासीर जाननी तथा जन्म होनेके समयसैं ही जो ववासीर होवे उसको सहज अर्श कहते है ।

सूरणचूर्ण

शर्करायुतमूरणकंदंगुंजाकेशरमेवतथान्यत् ॥
क्षौद्रयुतंनवनीतमथोवासूदनकारणमर्शसएव ॥

अर्थ—खांड, जमीकंद, घूंघची, और नागकेशर इनका चूर्ण, सहत अथवा मक्खन इनके साथ देवे तो ववासीरका नाश करे ।

वैक्रांताख्यरस

मृतसूताभ्रवैक्रांतकांतताम्रंसमंसमं॥सर्वतुल्येनगंधेनमर्द्यंभल्ला तकान्वितं॥दिनैकंतद्भवैरेववटीकार्याद्विगुंजका॥भक्षयेद्गुदजा न्हंतिद्वंद्वजंचत्रिदोषजम् ॥ प्रत्यष्टमुशलीवन्हिभागाःकुष्ठस्य षोडश॥पिप्पलीपिप्पलीमूलंक्षिपेद्भागद्वयंद्वयम् ॥ चतुष्कंतु विडंगस्तुमरिचंकटुशुंठिका ॥ ब्रह्मदंडितथैकैकंचूर्णितंद्विगुणं गुडम् ॥ कर्षांशंभक्षयेच्चानुह्यशोरोगप्रशांतये। वैक्रांताख्यो रसोनामसाध्यासाध्यार्शशांतये ॥

अर्थ—पारेकी भस्म, अभ्रकभस्म, वैक्रांत (कासुले,) की भस्म, कांत लोहकी भस्म और तांमेकी भस्म ये समान भागलेवे इन सबके बराबर गंधक और भिलाए ये डालकैं एकदिन खरल करे फिर भिलाएके तेल सैं दोरतीकी गोली बनावे इसका अनुपानके साथ देवे और मूसली, और चित्रक प्रत्येक आठ भाग, कूठ १६ भाग, और पीपल २ भाग, पीपरामूल २ भाग, तथा वा- यविडंग ४ भाग, और कालीमिरच, कोथमीर सोंठ और ब्रह्मदंडी ये प्रत्येक एक २ भागलेवे, इन सबके चूर्णमें दूनागुड मिलाय एक २ तोलेकी गोली बना-

वे, इसको भोजनके प्रथम देवे तो बवासीर रोग नष्ट होवे यह (वैक्रांत रस) साध्यासाध्य बवासीरके दूरकरनेमें उत्तम है।

पर्पट्यादियोजना

गोमूत्रेणसमंपीत्वागुंजाष्टौपर्पटीरसं ॥ताम्रपर्पटिकातद्वद्गुडशुंठीभयान्विता ॥भक्षयेदर्शसांशांत्यैह्यनुपानंवदाम्यहम्॥जीवंतिपुष्करंवन्हिबिल्वमज्जकचोरकम् ॥करवीरंयवक्षारंजातिचूर्णपलंपलं॥द्विपलंतित्तिणीचूर्णंलाजाचूर्णंचतुःपलं ॥तिलतैलंघृतंचैवप्रत्येकंतुपलद्वयं॥अष्टंसर्वंप्रयोक्तव्यंकर्षैकमनुपानकम्

अर्थ—पर्पटी रस ८ रत्तीको गोमूत्रके साथ देवे, अथवा ताम्रपर्पटी रस गुड सोंठ और हरड़ इनके चूर्णके साथ देवे, अब इसका अनुपान कहताहूं, जीवंती, पुहकरमूल, चीतेकी छाल, बेलगिरी, कचूर, कोहवृक्षकी छाल, जवाखार, और जीरा इन प्रत्येकका चूर्ण ४ तोले लेवे, और इमली ८ तोले, खीलोंका चूर्ण १६ तोले तथा तिलोंका तेल और घी ये प्रत्येक ८ तोले लेकर सबको भूनके उस में एक तोला पश्चात् भक्षण करने कोदेवे, यह इसका अनुपान है।

कुटजावलेह

कुटजत्वक्तुलांद्रोणेजलस्यविपचेत्सुधीः॥ कषायंपादशेषंचगृण्हीयाद्वस्त्रगालितम् । त्रिंशत्पलंगुडस्यात्रदत्त्वाचविपचेत्पुनः ।सांद्रत्वमागतंज्ञात्वाचूर्णानीमानिदापयेत् । रसांजनंमोचरसंत्रिकटुंत्रिफलातथा।लज्जालुंचित्रकंपाठांबिल्वमिंद्रयवान्वचां।भल्लातकंप्रतिविषंविडंगानिचवालकम् । प्रत्येकंपलसंमानंघृतस्यकुडवंतथा ॥सिद्धशीतेततोदद्यान्मधुनःकुडवंतथा॥जयेदेषोवलेहस्तुसर्वाण्यर्शांसिवेगतः ॥ दुर्नामप्रभवान्रोगानतीसारमरोचकम्॥ ग्रहणीपांडुरोगंचरक्तपित्तंचकामलाम्॥अम्लपित्तंतथाशोफंकार्श्यंचैवप्रवाहिकां ॥ अनुपानेप्रयोक्तव्यमाजंतक्रंपयोदधि ॥ घृतंजलंवाजीर्णेचपथ्यभोजीभवेन्नरः

अर्थ—कूटाकी छाल १ तुलाले दुचलकर १ द्रोण जलमें डालकें काढा करे जब जल चौथाई शेष रहे तब उतारके कपडेमें छान लेवे फिर इसमें तीस पल

गुड डालके अवलेह बनावे जब गाढीहो जावे तब इन इतनी औषध और डाले उनको कहते है, रसोत, मोचरस, सोंठ,, मिरच, पीपल, हरड, बहेडे, आमले लजालु, चीतेकीछाल, पाढ, छोटाबेलफल, इन्द्रजों, वच, भिलाए, अतीस वायविडंग नेत्रवाला ये अठरह औषधी एक एक फल लेवे सबका चूर्ण करकैं अवलेहके पाकमे डालदेवे तथा घी एक कुडव डालकै शीतल करे जब खूबशीतल हो जावे तब उसमे सहत १ कुडव मिलावे फिर इस अवलेह को बकरी के दूध सैं अथवा छाछ घी जलके साथ सेवन करे परंतु जब भोजन करा हुआ अजीर्ण हो जावे तब इसको लेय, और उत्तम पथ्यकरे तो इसके प्रभाव सैं संपूर्ण बवासीर तत्काल दूरहो तथा दुष्ट नाम है जिन्होका ऐसे भगंदरादिक रोग, अतिसार, अरुचि, संग्रहणी, पांडुरोग, रक्तपित्त, नेत्रोंमे कामला रोग होताहै वह, अम्ल-पित्त, सूजन कृशता (देहका सूखजाना) अतिसार रोगकाभेद प्रवाहिकारोग, ये संपूर्ण रोग नष्ट होवे, ।

कूष्मांडावलेह

युक्त्याकूष्मांडखंडानिसूरणंविपचेत्सुधीः ।
अर्शांसिगुडवातानांमंदाग्निषुप्रयुज्यते ॥

अर्थ—पेठेके टुकडे, जमींकंद इन दोनोंको युक्तसैं पचावे, और रोगीको देवे तो बवासीर, और गुडवात तथा मदाग्नि इनको नाश करे ।

भल्लातकावलेह

सुपक्वभल्लातफलानिसम्यक्द्विधाकृतान्याढकसंमितानि ॥ विपाच्यतोयेन चतुर्गुणेनचतुर्थशेषेव्यपनीयतानि ॥ पुनःपचेत्क्षीरचतुर्गुणेनघृतांशयुक्तेचघनंयथास्यात् ॥ सितोपलाषोडशभिःपलैश्चविमर्द्यसंस्थाप्यदिनानिसप्त ॥ ततःप्रयुंज्यानिबलेनमात्रांजयेद्विकारानखिलान्गुदोत्थान् ॥ कचान्सुनीलान्घनकुंचिताग्रात् सुपर्णदृष्टिंचशशांककांतिं ॥ जवोहयानां बलमुत्तमंचस्वरंमयूरस्यहुताशदीप्तिं ॥ स्त्रीवल्लभत्वंविविधंप्रभावंनिरोगतांद्वित्रिशतायुषंच ॥ नचान्नपानेपरिहारमस्ति नचातपेनाध्वनिमैथुनेच ॥ प्रयोगकालेसकलामयानांराजाधिराजाचरसायनानाम् ॥ १ ॥

अर्थ—उत्तम पके और दो टुकडे करे हुए भिलाए १२४ तोले लेकर ४०९६ तोले जलमें काढा करे जब जल चतुर्थांश रहे तब उतारकै छान लेवे, फिर काढेसैं चौगुना दूध तथा चतुर्थांश घी डालकैं ओटावे जब अवलेहके समान गाढी होजावे तब मिश्री ६४ तोले डालकै घोटडाले और चुल्हे सैं उतारके उसी प्रकार सातादिन तक धरी रहने देवे, पश्चात् अग्नि, और बलाबल विचारकै रोगीको देवे तो संपूर्ण गुदाके रोगोंका नाश करे तथा बाल काले होवे गरुडके समान तीव्र दृष्टी होय,चंद्रमाके समान देहकी कांति,घोडाके समान वेग,उत्तम बल-मोरके समान शब्द,अग्निके समान दीप्ति,और स्त्रियोंको प्रिय, निरोगी तथा सो-वर्ष सैं भी अधिक उमर हो, इसके सेवन करने वालेको किसी प्रकारके अन्न, पान, गरमी, मैथुनकी मनाही नहीं है, यह अवलेह लेने सैं संपूर्ण रोगोंका नाश करे तथा संपूर्ण रसायनोंमें राजाधिराज है।

स्नुहीक्षीरलेप

स्नुहीक्षीरनिशालेपस्तथागोमूत्रकल्कितः ॥ योजितोगोभव क्षीरवन्हिमूलावचूर्णितम्॥पिबंस्तदेवतेनैवभुंजानोगुदजांकुरान्।

अर्थ—थूहरका दूध, हलदी, गोमूत्र, इनका लेपकरे, तथा गौके दूधके साथ-चित्रकादि चूर्ण भक्षण करे,इस पर पथ्य दूधभात भोजन करे तो ववासीर नष्ट होवे।

कोकंबादिचूर्ण

समूलपत्रकोकंबंपलद्वयमितंशुभम्॥ भल्लातफलमज्जायामरिचस्यपलंपलम् ॥ एतच्चूर्णीकृतंसूक्ष्मंभक्षयेत्कर्षसंमितं ॥ अर्शांकुरान्निहंत्याशुसबाह्याभ्यंतरानपि ॥

अर्थ—कोकंबका पंचाग अर्थात् मूल, पत्र,फल,जड, छाल सहित वृक्ष ८०माँसे मिलायके फलकी मिंगी ४० माँसे, और कालीमिरच ४०माँसे इनका चूर्ण एक कर्ष प्रमाण अर्थात् १० मासे खायतो बाहरके तथा भीतरकी मस्से नष्ट होवे।

समशर्करयोग

शुंठीकणामरिचनागदलत्वगेलंचूर्णीकृतंक्रमविवर्धितमूर्ध्वगं स्यात् ॥खादेदिदंसमसितंगुदजाग्निमांद्यगुल्मोदरश्वयथुपांडुगुदोद्भवेषु ॥

अर्थ—सोंठ घाडकी ६ भाग, पीपल ५ भाग, कालीमिरच ४ भाग, पान ३ भाग, दालचीनी २ और इलायची इनका चूर्ण करे और चूर्णके समान मिश्री

मिलावे, इनके सेवन करने सें बवासीर, मंदाग्नि, गोला, उदर, सूजन, पांडुरोग और गुदांकुर (मस्से) इनका नाश होवे।

व्योषादिचूर्ण

व्योषाढ्यरुष्करविडंगतिलाभयानांचूर्णंगुडेनसहितंसततंप्रयोज्यं॥ दुर्न्नामशोफगरकुष्ठशकृद्विबंधमग्नेर्जयत्यबलतांक्रिमिपांडुतांच॥

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल, भिलाए, वायविडंग, तिल और हरड़, इनका चूर्ण गुडके साथ भक्षण करे तो ववासीर, सूजन, विष कोढ, विद्बंध (मल-का न उतरना) मंदाग्नि, कृमि, और पांडुरोग इनका नाश होय।

करंजादिचूर्ण

करंजशुंठींद्रयवारलूतासिंधूत्थवन्हिप्रतिमिश्रितानां
तक्रेणचूर्णंपिबतोस्यनित्यंअर्शांसिरक्तेनपतंतिसार्धम्

अर्थ—कंजा, सोंठ, इन्द्रजो, अरलू, सैंधानिमक, और चिता इनका चूर्ण एकत्र करके छाछ के साथ पीवे तो बवासीर और खूनी बवासीर ये गलकर गिरपडे,।

विजयाचूर्ण

त्रिकत्रयवचाहिंगुपाठाक्षारौनिशाद्वयं॥ चव्यतिक्ताकलिंगानिशताव्हालवणानिच ॥ ग्रंथिबिल्वाजमोदाचगणोष्टाविंशतिर्मतः॥एतानिसमभागानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत्॥चूर्णंबिडालपदकंपिबेदुष्णेनवारिणा॥एरंडतैलसंयुक्तंलिह्याच्चूर्णमिदंनरः॥हन्यादर्शांसिसर्वाणिश्वासशोषभगंदरान् ॥ हृच्छूलंपार्श्वशूलंचवातगुल्मंतथोदरम् ॥ हिक्कांश्वासंप्रमेहंचपांडुरोगंसकामलम् आमवातमुदावर्त्तमंत्रवृद्धिंगुदक्रिमीन् ॥ हन्याच्चग्रहणीरोगान् भिषग्भिर्यत्प्रकीर्तितः॥विजयानामचूर्णोयंसर्वव्याधिहरःपरः॥ महाज्वरोपसृष्टानांभूतोपहतचेतसाम् ॥ अप्रजानांचनारीणां हितमेतद्धिभेषजम् ॥

अर्थ—त्रिफला (हरड़ बहेडा आवला,) त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल) त्रिजातक (इलायची, पत्रज, नागकेशर) वच, हींग, सज्जीखार, जवाखार, ह-

ल्दी, दारुहलदी, चव्य, कुटकी, इन्द्रजो, सतावर, पांचोनिमक, पीपरामूल, वेलगिरी, और अजमोद ये अट्ठाईस औषध समान भागलेवे सबका बारीक चूर्णकर दशमासे गरम जलके साथ पीवे अथवा अंडीके तेल सैं पीवे तो सर्व प्रकारकी बवासीर, श्वास, शोष, भगंदर,हृदयकाशूल, पसवाडोका शूल, वातगोला, उदररोग, हिचकी, प्रमेह, पांडुरोग, कामला, आमवात, उदावर्त्त, अंत्रवृद्धि, बवासीर, कृमिरोग, और संग्रहणी इनका नाश करे (यह विजया चूर्ण) सर्व व्याधि नाशकहै तथा महाज्वर, भूतबाधा, तथा वंध्या स्त्रियोंको यह हितकारीहै ।

देवदाल्यादियोग

देवदलीकषायेणशौचमाचरतांनृणाम् ॥
किंवातद्धूमसेवाभिःकुतःस्युर्गुदजांकुराः ॥

अर्थ—देवदाली (बंदाल) के काढेसैं गुदा प्रक्षालन (धोने) सैं अथवा बंदाल का हिम करके पीनेसैं कदाचित् बवासीरके मस्से नहीं होवे,यह वैद्यरहस्य ग्रंथमें लिखाहै.

मरिचादिमोदक

मरिचमहौषधचित्रकसूरणभागायथोत्तरंद्विगुणाः ।
सर्वसमोगुडभागः सेव्योवैमोदकःप्रसिद्धफलः ॥

अर्थ—कालीमिरच, सोंठ, चीतेकी छाल और जमीकंद ये प्रत्येक एकसैं दूसरा दूनालेवे और सब चूर्णके समान गुड मिलाके गोली बांधे, यह बवासीरपर प्रसिद्ध गुणकारीहै ।

प्राणप्रदमोदक

तालीसज्वलनोषणासचविकास्तुल्यंद्विभागाभवेत्कृष्णामूलस मन्वितात्रिपलिका शुंठीचतुर्जातकं ॥ स्यान्मुष्टिप्रमितंगुड त्रिगुणितैरेभिःकृतोमोदकः कासश्वासमदाग्निमांद्यगुदजप्लीहप्र मेहापहः ॥

अर्थ—तालीसपत्र, चीतेकीछाल, कालीमिरच, चव्य ये समान भाग लेवे, पीपल दो भाग और पिपलमूल तथा सोंठ ये बारहतोले, दालचीनी, तमालपत्र, इलायची, और नागकेशर, ये चार २ तोले लेवे तथा सबसैं तिगना गुड डालके लड्डू बनावे यह खाँसी, श्वास, मंदाग्नि, बवासीर,प्लीह,और प्रमेह इनको नाशकरे।

कांकायनीवटी

पथ्यापलस्यपलपंचकमेवमेकमेकंपलंचमरिचादपिजीरकस्य ॥ कृष्णातदुद्भवजटाचविकाग्निशुंठीकृष्णादिपंचकमिदं पलतः प्रवृद्धं ॥ पलाष्टभल्लातकसंप्रयुक्तंदारूकरुष्करपलाद्विगुणंप्रकल्प्याः॥स्याद्यावशूककुडवार्द्धमतःसमस्तोयोज्यो गुडाद्विगुणितोवटकीकृतश्च ॥ कांकायननेमुनिनावटकःकिलायमुक्तःप्रजाहिततमेनगुदामयघ्नः॥क्षाराग्निशस्त्रपतनैरपिये नसिद्धःसिध्यंत्यनेनवटकेनगुदामयास्ते ॥

अर्थ—हरडकीछाल, २० तोले कालीमिरच, जीरा, पीपल, पिपलमूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, ये प्रत्येक चार तोले लेवे और भिलाए ३२ तोले, तेलिया देवदारु ६४ तोले, तथा जवाखार ८ तोले इन सबका दूना गुड मिलायकें गोली बनावे यह कांकायनऋषिनें कहा गोली गुदा रोगोंकी नाशकहै तथा जो बवासीर क्षार, अग्नि, और शस्त्र इनसें अच्छी नहींहो वह इस कांकायनगोलीसें अच्छी होवे।

सूरणमोदक

चित्रकस्यपलंत्वेकंद्विपलंसूरणस्यच ॥ पलार्धंनागरस्यापिमरिचंकोलमात्रकम् ॥ भल्लातककणामूलंविडंगंत्रिफलाकणातालीससहितान्सर्वानक्षमात्रान्प्रयोजयेत् ॥ द्वेपलेवृद्धदारस्य तालमूलंपलंभवेत् ॥ त्वगेलामरिचांशेचसर्वानेकत्रमर्दयेत् ॥ गुडेनमर्दयित्वातुद्विगुणेनेहबुद्धिमान् ॥ मोदकःसूरणोनामअक्षमात्रःप्रमाणतः॥उपयुक्तोनिहंत्याशुगुदकीलान्नसंशयः ॥अग्निवृद्धिकरःपुंसांसेव्यमानोमहागुणः ॥

अर्थ—चीतेकीछाल ४तोले, जमीकंद८तोले, सोंठ२तोले कालीमिरच ८ मासे, और भिलाए,पीपलमूल,वायविडंग, त्रिफला,पीपर,और पत्रज,ये प्रत्येक एकएक तोले लेवे तथा विधायरो ८ तोले, मूसली १ तोले, दालचीनी और इलायची ये प्रत्येक ८ मासे इन सबका एकत्र चूर्ण करे तथा सब चूर्णसें दूना गुड डाल सबको एक जीवकर लड्डू बनावे, यह (सूरणमोदक) १ तोले देनेसें तत्काल बवासीरका नाशकरे तथा नित्य प्रतिसेवन करनेसें अग्निकी वृद्धि करेहै ।

लघुसूरणमोदक

कणामरिचविश्वाग्निसूरणैस्तुगुडैःक्रमात्
द्विगुणैर्मोदकोर्शोघ्नःपरःपाचनदीपनः

अर्थ—पीपर, कालीमिरच, सोंठ, चीतेकी छाल, और जमीकंद ये समान भाग लेय तथा सब औषधोंसें दूना गुड लेवे सबको मिलायके मोदक बनावे यह बवासीर नाशक और दीपन तथा पाचनहै ।

अर्शकुठाररसः

संमर्द्यप्रतिसारितौबद्दुरसोताभ्यांचगंधंसमम् लांगल्यासित सूरणेनचपृथक्कृत्वाचतावत्पचेत् ॥ गोलंज्वालमुपैतिभांड निहितंचुल्ह्यामथस्त्वौषधं तत्स्यादर्शकुठारकःसपवनार्शः पूर्वकोव्याधिषु ॥

अर्थ—पारा और लोह ए दोनो बराबर लेवे, दोनोकी बराबर गंधक लेवे, फिर कलियारी और सपेद जमीकंदके रसमें खरलकर गोला बनायके उत्तम पात्रमें धरे; ऊपरसें संपुट बनाय नीचे अग्नि जलावे, जब गंधक जारण होजावे तब उतार औषधीको निकासलेवे यह (अर्शकुठाररस) खुनी वादी ववासीर आदिके रोगोंको नष्ट करे।

अभ्रकहरीतकी

मृताभ्रकपलंविंशन्मृतलोहस्यपंचकं ॥ गंधकस्यपलंपंचत्रिभिर्द्विगुणमाक्षिकं ॥ पथ्याशतपलंयोज्यंधात्रीपलशतद्वयम् सर्वमेकत्रसंचूर्ण्यजंबीरैर्भावयेद्दिनं ॥ भृंगीपुनर्नवाद्रावैःपातालगरुडाकुलैः ॥ भल्लातवन्हिकोरंटैर्हस्तशुंडीतुलांगली ॥ क्षीरिणीजलकुंभीचप्रत्येकंप्रत्यहंद्रवैः ॥ भावयेन्मर्दयेदित्थंमध्वाज्याभ्यांविलोडयेत् ॥ स्निग्धभांडेस्थितंखादेन्नित्यंनिष्कद्वयद्वयम् ॥ सिद्धसावरयोगोत्थंत्रिदोषार्शांसिनाशयेत्

अर्थ—अभ्रकभस्म ४०० तोले, गंधक २० तोले और लोहकीभस्म २० तोले तथा सुवर्णमाक्षिक इन तीनोसें दूनालेवे एवं हरड ४०० तोले आवले ८०० तोले इन सब पदार्थोंको एकत्र करके चूर्ण करे, फिर निंबूके रसमें एक दिन घोटे तथा

भोगरा, पुनर्नवा (साँठ) पातालगरुडी, मिलाए, चित्रक, पियावांसा, हथसुंडी कलियारी, क्षीरकाकोली, और जलकुंभी इन प्रत्येकके रसकी एकएक दिन भावना देकर खरलकरे, जब तयार होजावे तब सहत और घीमें मिलाय घीके चिकने पात्रमें धर देवे, इसमेंसें १ तोले नित्य खाय यह सिद्धसावर योग त्रिदोष जन्य ववासीरका नाशकरे।

बवासीरकामंत्र

ॐभिभित्तिद्धिः ॐठःनिवासिनिगरलंविषंत्वजीर्णसंभवंनाना र्शनाशय २ ठंठंठंफट्स्वाहा–विधिः सप्तवाराभिमंत्रितंपानी यंपिबेत्॥ अस्यश्रीअर्शोमूलमंत्रस्यवसिष्ठऋषिः रुद्रोदेवता विराट्छंदः असुकस्यअर्शोरोगपरिहारार्थेजपेविनियोगः

अर्थ—ऊपर लिखे मंत्रसें जलको कुशाओंसें सात वार अभिमंत्रित करके पीवे तो बवासीर नष्ट होवे.

दूसरामंत्र

ॐकालीकालीमहाकालीमातरोबहुभिर्गच्छयत्किंचिद्धिहितंतत् कुरु २॥ यइमामर्शोघ्नींश्रेष्ठांविद्यामधीतेनतस्यकुलेऽर्शवान् भवति। योदीयमानंनगृह्णातिसअंधोभवतियदिनसिद्धयतित दारुद्रोब्रह्महाभवतिगुरुद्वारासिद्धिःअर्शरोगनिवृत्त्यर्थंसप्तवाराभि- मंत्रितंजलंनित्यंप्रातःकालेपिबेत्

अर्थ—इस मंत्रसें सातवार अभिमंत्रित जलको करके नित्य प्रातःकाल पीवे

सूरणपुटपाक

मृल्लिप्तंसूरणंकंदंपक्त्वाग्नौपुटपाकवत्
अद्यात्सतैललवणंदुर्नामविनिवृत्तये।

अर्थ—जिमीकंदपर कपड़ मिट्टीकर, पुटपाककी विधिसें पक करे, तथा उसको तेल और निमक डालकें खाय तो बवासीर दूर होवे.

काशीसादितैल

काशीसंलांगलीकुष्ठंशुंठीकृष्णाचसैंधवम्॥ मनःशिलाश्वम रिचंविडंगंचित्रकोवृषः॥ दंतीकोशातकीबीजहेमाह्वाहरिताल

कः॥कल्कैः कर्षमितैरेतैस्तैलप्रस्थंविपाचयेत् ॥ सुधार्कपय सादद्यात्पृथक्द्विपलसंमिते ॥ चतुर्गुणंगवांमूत्रंदत्वासम्यक् प्रसाधयेत् ॥ कथितंखरनादेनतैलमर्शोविनाशनम् ॥ क्षारव त्पातयेदेतदर्शांस्यभ्यंगतोभृशम् ॥ बलिर्नदूषयत्येतत्क्षारक र्मकरंस्मृतम् ॥

अर्थ—कासीस,कलयारी, कूठ, सोंठ, पीपल, सैंधानिमक, मनसिल, कनेर, वायविडंग, चित्रक, अडूसा, दंती, कडुईतोरईके बीज, चोक और हरताल, ये पंद्रह औषध एकएक कर्ष लेवे सबका कल्क करके तिलके तेल १ प्रस्थमें मिलाय देवे, तथा थूहरका दूध और आकका दूध इन दोनोको आठ २ तोले लेकर डाले, तथा तेलसैं चौगुना गौका मूत्र उसमें मिलावे, फिर उसको चूल्हेपर चढायके ओंटावे, जब तेल मात्र शेष रहे तब उतारके उस तेलको महीन वस्त्रमें छानलेवे. यह तेल खरनाद ऋषिनें कहा है यह ववासीरके मस्सोंको सुंमल खार आदिके लगानेसैं जैसे दूर करे उसी प्रकार यह तेल मस्सोंको उखाड डालेहै इसके लगानेसैं गुदाके आटे क्षारके लगाने समान नहीं विगडते नकोई उपद्रवहो मस्सें उखडकर स्वयं गिर पडतेहै ।

खूनी ववासीरकासामान्ययत्न

रक्तार्शसामुपेक्षेतरक्तमादौस्रवेद्भिषक्
दुष्टास्रेनिगृहीतेस्युःशूलानाहासृगामयाः ॥

अर्थ—खूनी ववासीर का प्रथम रुधिरको बंद न करे क्योंकि उस दूषित रुधिरके रोकने सैं शूलरोग. अफरा और खूनकी विमारी होती है ।

चंदनादिदार्व्यादिक्काथ

चंदनकिराततिक्तकधन्वयवासाःसनागराःक्कथिताः
रक्तार्शसांप्रशमनादार्वीत्वगुशीरनिंबाश्च

अर्थ—चंदनलाल, चिरायता, कुटकी, धमासों और सोंठ इनका काढा करके पीवे तो खूनी ववासीर दूरहोय, उसी प्रकार दारु हलदी, खस और नींबका काढा गुण करे है ।

प्रयोगांतर

सपद्मकेशरंक्षौद्रंनवनीतंनवंलिहन्
सिताकेशरसंयुक्तंरक्तार्शासुखोभवेत्

अर्थ—कमलकी केशर, सहत, मक्खन, मिश्री और नागकेशर इनको मिलायके सेवन करे तो खूनी ववासीरवाला सुखी होय ।

महानिंबबीजप्रयोग

महानिंबस्यबीजानिषडष्टदशसंख्यया
चूर्णितंसितयासार्द्धंपिबेद्रक्तार्शसांहितम्

अर्थ—बकायनके छः,आठ, अथवा दश बीजोंका चूर्ण करकै उसमें मिश्री मिलायकै पीवे तो खूनी ववासीर दूरहो ।

पेया

केशरोत्पलचांगेरीसंसिद्धायाचजायते
अर्शोरक्तस्रुतिंसाचलाजपेयानिवारयेत्

अर्थ—केशर, कमलगट्टा, चूका, इनके साथ खीलकी पेया सिद्ध करके पीवे तो यह लाजपेया खूनी ववासीरको निवारण करे ।

लाजापेया

लाजापेयापीताचुक्रिकाकेशरोत्पलैःसिद्धा
हंत्याशुरक्तरोगंतथावलापृष्ठपर्णीभ्याम्

अर्थ—चूका, नागकेशर, कमलगट्टा इनको मिलायकै खीलोंकी पेया पीवे तो ववासीरके खूनको बंदकरे तथा खिरेटी, और सालपर्णी,पृष्ठपर्णी,कि पेयाभी खूनको बंद करे ।

तद्वद्व्योषरजोयुक्तंनवनीतप्रलेपनम्

अर्थ—मक्खनमें त्रिकुटेका चूर्ण मिलायके लेपकरे तो ववासीरके खूनको बंदकरे

अपामार्गबीजयोग

अपामार्गस्यबीजानांकल्कस्तंडुलवारिणा
पीतोरक्तार्शसांनाशंकुरुतेनात्रसंशयः

अर्थ—ओंगाके बीजोंका कल्क करके चावलोंके धोवनके साथ पीवे तो रक्तार्श अर्थात् खूनी ववासीर को नाशकरे ।

कुशमूलादिपान

कुशमूलंबलायुक्तंपानंतंदुलधावनम्
रुणद्धिगुदजस्रावंप्रदरंचाशुसर्वजम्

अर्थ-कुसकी जड,खिरेटी इनको पीस चावलोंके धोवनके साथ पीवे तो गुदासैं रुधिरके स्रावको बंदकरे, तथा सन्निपात जन्य प्रदरको नष्टकरे।

कुटजघृतम्

कुटजफलत्वक्केशरनीलोत्पललोध्रधातुकीकल्कैः
सिद्धंघृतंविधेयंशूलेरक्तार्शसांभिषजा ॥

अर्थ-कूडाके फलकी छाल, नागकेशर, नीलाकमल, लोध और धायके फूल इनको जलमें पीसकै कल्क करे, इसको घृतमें मिलायकै सिद्धकरे तो यह घी वैद्योंने खूनी ववासीर पर उत्तम कहाहै।

कुटजादिदुग्ध

कुटजमूलसकेशरमुत्पलंखादिरधातकिमूलशृतंपयः
पिबतमृक्षणयोगमसृग्दरंगुदजनाशनकारिरयंविधिः

अर्थ—कूडाकी जड, नागकेशर, नीलाकमल, खैरसार, धायकीजड, इनको दूधमें डालकै औंटावे, फिर शीतल करकै इसको पीवे तो असृग्दर (रक्तप्रदर) और ववासीर इनको नाशकरे।

अर्शोरिमंडूरम्

अतिरक्तंयदात्वर्शोनिपातयातिपीडितं ॥दृश्यतेतच्छरीरस्य-
लोहकिट्टंतदानयेत् । गवांमूत्रेणतत्पक्वंबहुशश्चूर्णवत्कृतम्।
अतिसूक्ष्ममिदंतस्यत्रिकटुत्रिफलायुतम्।किट्टस्यार्द्धेनसंमि-
श्रयच्चूर्णंशर्करयायुतम् ॥ दीयतेत्रिदिनादूर्ध्वंरक्तंतिष्ठतिनान्य-
था।दुग्धात्शालिमसूरादिदीयतेपथ्यभोजनं॥अर्शांसिप्रशमं-
यांतिकाश्यंवैयातिदूरतः ॥अत्यंतबलमाप्नोतिनिरातंकोयथे-
च्छया।महोत्साहयुतोभूत्वायावज्जीवेन्निरामयः॥ उष्णाम्लंव-
र्जयेन्नित्यंस्त्रीणांसेवांविशेषतः ॥

अर्थ—यदि बवासीरमें सैं अत्यंत खून बहता होय. और उस प्राणिको अत्यंत पीडाहोय तो प्राचीनलोहे की कीटीलावे. उसको गौके मूत्रमें अनेकवार पक्कर२कै बुझावे, कि जिस्सैं चूर्णसा होजावे. फिर इसकीटमें आधी मिश्री मिलावे तीनदिन धरी रहने देवे. पश्चात् रोगीको देवेतो यह गुदासैं वहते हुए रुधिरको बंदकरदेवे इसमें संदेह नहींहै। इसके सेवन करनेवाले को दूधके साथ सांली चावल और मसूरकी पथ्यदेवे. इससैं बवासीर दूरहो और कृशता नष्टहोय. अत्यंत वलकी प्राप्ति होवे. निरातंक यथेच्छा पूर्वक महोत्साही होकर जबतक जीवे तव तक रोगरहित होवे.इसका खाने वाला गरम पदार्थ और खटाई न खाय तथा स्त्रीगमन करनाभी निषेध है।

कुटजादिकल्क

कुटजत्वक्फलंतार्क्ष्यमाक्षिकंघुणवल्लभम्
पिबेत्तंदुलतोयेनकल्कितंवामयूरकम् ॥

अर्थ—कूडाकीछाल, इन्द्रजों, रसोत, सहत, और अतीस इनको चावलके धोवनमें पीसके पीवे, अथवा ओंगाका कल्क करके चावलके धोवनसैं पीवे

यवानीचूर्ण

यवानीन्द्रयवंपाठाबिल्वंशुंठीरसांजनम्
चूर्णंशूलेहितंपेयंप्रवृद्धेचातिशोणिते ॥

अर्थ—अजमायन, इन्द्रजो, पाठ, बेलगिरी, सौंठ और रसोत इनके चूर्णको शूल दूर करने को तथा गुदाद्वारा अधिक रुधिर जाता होय तो पीवे।

शिरीषादिकल्क

शिरीषंपुष्पमूलंचशाल्मलेस्तिनिशस्यच ॥निर्यासस्तुपलाशस्यबदर्याःकुंकुमस्तथा।लोध्रंशालस्यनिर्यासकट्वंगस्तंदुलीयकः। मधुकार्जुनपुष्पाणिधातकीरोध्रयोरपि । शोभांजनंशंखनाभिकंगुकाः पीतिकास्तथा ॥ एषांकल्कंमधुयुतंपाययेत्तंदुलांबुना॥अर्शांसिगमयत्येषरक्तपित्तात्मकानिच। रक्तपित्तमतीसारंरक्तार्शांसिचनाशयेत् ॥

अर्थ—सिरसके फूल, और जड, सेमर, तिनिसवृक्ष इनकी जड और फूल, ढाकका गोंद, वेर, केशर, लोध, राल, टैंटू, चौलाई, महुआ, कोहवृक्षके फूल, धा-

यके फूल, लोधके फूल, सहजना, शंखकीनाभी, कंगु मिठी तोरई, इन सबको पीसके सहत मिलायके चावलके धोवनसें पीवे तो रक्तपित्तात्मक ववासीरको नाशकरे, तथा रक्तपित्त, अतीसार, और खूनी ववासीर इनको नाशकरे।

उपायांतर

मातुलुंगंविडंगंचशर्करासंयुतंपिवेत्
कूष्मांडकावलेहंचरक्तजार्शोविनाशनम्।

अर्थ–बिजोरा, वायविडंग, इनको घोटकर मिश्रि मिलायके पीवे, अथवा कूष्मांडावलेहको पीवे तो खूनी ववासीरको नष्टकरे।

निंबबीजादियोग

निंबबीजस्यमज्जाचशाणमानाजलेनतु। संपिष्यगालितंपीतंचुल्लीमृत्स्नासमन्वितं॥ रक्तार्शोनाशनंश्रेष्ठमनुभूतंपुनःपुनः॥

अर्थ–निबोरीके भीतर की मज्जाको चार मासे ले पीसके जलमें छानके इसमें चूल्हे की मिट्टी मिलायकै पीवे तो खूनी ववासीर को दूरकरे, यह प्रयोग वारंवार अनुभव करा हुआ है।

रसांजनादिवटी

रसांजनंमहानिंबफलंशक्रयवंतथा॥मरिचंकुटजत्वक्चतथालघ्वीहरीतकी॥समभागानिसर्वाणिसूक्ष्मचूर्णीकृतानिच॥रसेकुक्कुरभृंगाख्येमर्दयेत्तुदिनत्रयम्॥माषमात्रावटीकार्यातांवटींभक्षयेत्प्रगे॥ रक्तार्शसांनाशिनीस्यात्पथ्याशीयदिवैनरः

अर्थ— रसोत, वकायनके फल, इन्द्रजो, कालीमिरच, कूडाकी छाल, छोटीहरड, ए सब समान भाग लेवे, सबका चूर्ण करकै कुकर भांगरेके रसमें तीनदिन खरल करकै फिर मासे की गोली बनावे इसको प्रातःकाल भक्षण करे यह रुधिरकी ववासीरको नष्टकरे, इसपर पथ्य सै रहे।

मरिचादिवटी

मरिचंखदिरंसारंगैरिकंताक्ष्यंजंतथा॥समभागानिसर्वाणिसूक्ष्मचूर्णीकृतानिच॥ कुक्कुरमर्दकरसैस्त्रिदिनंमर्दयेत्दृढम्॥ त्रिमाषिकावटीकार्यारक्तजार्शोविनाशनम्

अर्थ--मिरच, खैरसार, गेरू, रसोत, ए समान भागलेवे, सबका बारीक चूर्ण करकै कुकर भांगरेके रसमें तीनदिन खरल करकै तीन २ मासे की गोलीबनावै यह खूनी बवासीर को दूरकरे।

शूरणशोधनम्

सूरणंचक्रवत्कृत्वाशकलानिसुधीर्भिषक्॥निंबूरसेनस्फटकी-चूर्णेनालिप्यचातपे॥स्थापयेद्दिनमेकंतुतदाखादेद्यथासुखम्

अर्थ--जमीकंदके गोल २ कतरे कतरकै उनपर निंबूके रसमें फिटकरीको पीसकै लेप करकै धूपमें धर देवे, इस प्रकार एकदिन रखे फिर यथा सुख भक्षण करे तो यह मुखमें खुजली आदि उपद्रव नहीं करे। प्रसंगवस जमीकंदकी चटनी कहते है, कच्चा जमीकंद, अदरख, समान भागले दोनोंको नींबूके रसमें पीस अनुमानका निमक मिलायकै काममें लावे।

पूतिकंमुशलीपथ्याभूनिंबासितवत्सकम्॥मसूराग्निकसिंधूत्थ-देवदालीसुचूर्णितम्। तक्रेणपिबतस्तस्यतक्रंचैवसमश्नतः॥मासात्पक्कफलानीवपतंत्यर्शांसिवेगतः

अर्थ- लताकरंज, मूसली, हरड, चिरायता,कूडाकी छाल,मसूर, चित्रक, सेंधानिमक, देवदाली, इन सबको पीस छाछके साथ पीवे और छाछका ही भोजन करे तो एकमहिनेमे पके फलके समान बवासीर के मस्से वेगसे उखड कर गिरजावे।

किंवामरिचसंयुक्तंभक्षयेद्विषमुष्टिकं॥चतुर्थांशक्रमादेववर्द्धयेच्च यथाक्रमम्॥यथासात्म्यंयथादेहंकिंवायावत्द्वयंभवेत्॥भक्षयित्वा-चमरिचंवर्द्धयेच्चचतुर्गुणम् ॥ ध्रुवंमासद्वयादूर्द्धंप्रपतंतिगुदांकुराः

अर्थ—अथवा मिरचके चूर्णके साथ कुचले का सेवन करे और चोथाई २ के क्रमसैं बढावे तथा उस प्राणीका सात्म्य, देहकी व्यवस्था विचारकै २ दो पर्यंत उपरसैं मिरचोंका चूर्ण खायाकरे, इस प्रकार चतुर्गुण पर्यंत बढावे, इस क्रमसैं १ महिनेमे अवश्य गुदाके मस्से गिरजावे।

बस्तौवानाभिदेशेवायदाशूलःप्रजायते
तदालेपाःप्रशस्यंतेफलवर्त्तिश्चशस्यते

अर्थ—बस्ती (मूत्राशय) नाभि इनमे यदि शूल होयतो उसपर शूलनाशक लेप, और फलवर्त्ती करनी चाहिये।

करंजादिचूर्ण

चिरबिल्वाग्निसिंधूत्थनागरेन्द्रयवारलून्
तक्रेणपिबतोऽर्शांसिनिपतंत्यसृजासह

अर्थ—कंजा, चित्रक, सैंधानिमक, सोंठ, इन्द्रजो, टैंटू, इनको पीसकै छाछके साथ पीवे तो रुधिर युक्त बवासीर के मस्से टूटकर गिरजावे।

कुसुंभपत्रभक्षण

कुसुंभमृदुपत्राणिकाञ्जिकेनैवपाचयेत्
शाकवद्भक्षयेन्नित्यमर्शोरोगप्रशांतये।

अर्थ— कसूमके कोमल पत्रोंको कांजीके साथ पचायकै सागके समान नित्य-भक्षण करे तो अर्श रोगकी शांति होय।

पथ्यादिचूर्ण

पथ्यानागरकृष्णाकरंजवेल्लाग्निभिःसितातुल्यैः
वडवामुखइवजनयतिबहुगुर्वपिभोजनंचूर्णम्

अर्थ— हरड, सोंठ, पीपल, कंजा, कालीमिरच, चित्रक, ए बराबर ले, और सबकी बराबर मिश्रि मिलायके सेवन करे तो यह बहुत भोजन करने परभी वड-वाग्निके समान जठराग्नि को बढावे

चतुःसमोमोदकः

सनागरारुष्करवृद्धदारुकंगुडेनयोमोदकमत्युदारकम्
अशेषदुर्नामकरोगदारकंकरोतिवृद्धंसहसैवजाठरम्

अर्थ—सोंठ, भिलाये, विधायरो, इनको गुडके साथ मोदक बनाय लेवे, यह अशेष अर्थात् संपूर्ण बवासीरोको नष्टकरे तथा तत्काल जठराग्निको बढावे।

अथहरिशंकरलोहम्

प्रणम्यशंकरंरुद्रंदंडपाणिमहेश्वरं। जीवितारोग्यमन्विच्छन्नारदोऽपृच्छदीश्वरम्। सुखोपायेनहेनाथशस्त्रक्षाराग्निभिर्विना। चिकित्सामर्शसांनृणांकारुण्याद्वक्तुमर्हसि। नारदस्यवचःश्रुत्वानराणांहितकाम्यया। अर्शसांनाशनंश्रेष्ठंभैषज्यंशंकरोवदत्॥पांडचवज्रादिलोहानामादायान्यतमंशुभं। कृत्वानिर्मलमादौतुकुनद्यामाक्षिकेणच। पत्तूर

मूलकल्केनलिंपेद्रसयुतेनच।वह्नौनिक्षिप्यविधिवत्सारांगारेणनिर्धमे
त् ॥ ज्वालाचतस्यरोद्धव्यात्रिफलायारसेनच।ततोविज्ञायगलितंशंकु
नोर्ध्वंसमुत्क्षिपेत्।त्रिफलायारसेपूतेतदाकृष्यतुनिर्वपेत्।नसम्यग्गालि
तंयत्तुतेनैवविधिनापुनः । ध्मातंनिर्वापयेत्तस्मिन्लोहंतत्रिफलारसे ।
यल्लोहंनमृतंतत्रपाच्यंभूयोपिपूर्ववत् । मारणान्नमृतंयच्चतत्त्य
क्तव्यमलोहवत् । ततःसंशोष्यविधिवच्चूर्णयेल्लोहभाजने ॥ लोहेनैवत
थावत्सदृषदासूक्ष्मचूर्णितं । कृत्वालोहमयेपात्रेमृदावालिप्तरंध्रके
रसैःपंकोपमंकृत्वातंपचेद्गोमयाग्निना। पुटानिक्रमशोदद्यात्पृथगेषां
विधानतः। त्रिफलार्द्रकभृंगानांकेशराजस्यबुद्धिमान् । माणकंदकभ
ल्लातवह्नीनांशूरणस्यच॥हस्तिकर्णपलाशस्यकुलिशस्यतथैवच.।पुटे
पुटेचूर्णयित्वालोहात्षोडशिकंपलं । तन्मात्रत्रिफलायाश्चपलेनाधिक
माहरेत्।अष्टभागावशिष्टेतुरसेतस्याःपचेद्बुधः ।अष्टौपलानिदत्वाचस
र्पिषोलोहभाजने।तामेवलोहदर्व्यातुचालयेद्विधिपूर्वकं । ततःपाकवि
धानज्ञःस्वच्छेचोर्ध्वेचसर्पिषि।मृदुमध्यादिभेदेनगृह्णीयात्पाकमादृतः।
आरभेतविधानज्ञःकृतकौतुकमंगलः। भ्रामरंघृतसंयुक्तंविलिह्याद्रक्ति
काक्रमात्।वर्द्धमानानुपानंचगव्यक्षीरेणसंयुतं ।गव्याभावेत्वजायाश्च
स्निग्धवृष्यादिभोजनं । सद्योवन्हिकरंचैवभस्मकंचनियच्छति । हंति
वातंतथापित्तंकुष्ठानिविषमज्वरं ॥ गुल्माक्षिपांडुरोगांश्चनिद्रालस्यमा
रोचकम् । शूलञ्चपरिणामंच प्रमेहंचापबाहुकं ।श्वयथुंरुधिरस्रावंदुन्न
मानंविशेषतः । बलकृद्बृंहणंचैवकांतिदंस्वरबोधनं।शरीरलाघवकरमा
रोग्यंपुष्टिवर्द्धनं।आयुष्यंश्रीकरंचैवयशस्तेजस्करंशुभं।सश्रीकंपुत्रजन
नंवलीपलितनाशनम्। दुर्नामारिरयंनाम्नादृष्टोवारसहस्रशः।अनेनार्शां
सिदह्यंतेयथातूलंचवन्हिना।सौकुमार्याल्पकायत्वान्मद्यसेवीयथानरः।
जीर्णमद्यादियुक्तादिभोजनैःसहदापयेत् । लावतित्तिरवर्त्तीरमयूरश
शकादयः। चटकःकलविंकश्चवर्त्तकाहारितालकः।श्येनकश्चबृहल्लावो
वनविष्किरकादयः । पारावतमृगादीनांमांसंजांगलकंशुभं । मद्गुरो

रोहितःश्रेष्ठःशकुलश्चविशेषतः । मत्स्यराजाइमेप्रोक्ता हितमत्स्याय देहिने । वृंताकस्यफलंशस्तंपटोलंबृहतीफलं । फलंवाभीरुवेत्राग्रता लकस्तंदुलीयकं । वास्तुकंधान्यशाकंचकेमुकंचक्रवर्त्तनं । नालिके रंचखर्जूरंदाडिमंलवलीफलं । शृंगाटकं चपक्काम्रंद्राक्षातालफलानि च । जातीकोशंलवंगंचपूगंतांबूलपत्रकं । हितान्येतानिवस्तूनिलोह मेतत्समश्नतां । नाश्नीयाल्लकुचंकोलंकर्कंधुबदराणिच । जंबीरबीज पूरंचिंततिडीं करमर्दकं।अनूपानिचमांसानि क्ककरंपुंड्रकानपि । हंस सारसदात्यूहशंकुकंकबलाकिकाः। मानकंदकरीराणिकतकंचकलिं गकम् । कूष्मांडकंचककोंटकेमुकंचविशेषतः।कटुकंकालशाकंच कसेरुंककर्कटीतथा । ककारादीनि सर्वाणि विदलानिचवर्जयेत् । शंक रेणसमाख्यातश्चूर्णराजोऽनुकंपया । जगतामुपकारायदुर्नामारिरयं ध्रुवम् । स्थानादपैतिमेरुश्च पृथ्वीपर्येतिवायुना । पतंतिचंद्रताराश्च मिथ्याचेदहमब्रुवं । ब्रह्मघ्नाश्चकृतघ्नाश्चक्रूरायेऽसत्यवादिनः।वर्जनीयाः सधर्मेणभिषजागुरुनिंदकाः ।

अर्थ--शंकर, रुद्र, दंडपाणी महेश्वर, को प्रणामकर मनुष्योंकी जीवन और आरोग्यकी कांक्षा करके श्रीनारदजी जगदीश्वर (शिव) सें पूंछते हुए। हे नाथ शस्त्र, क्षार, और अग्नि कर्मके विना सुखोपाय करके अर्श रोगका यत्न मनुष्यों की करुणा विचारकै आप कहियेगा । इस प्रकार नारदके वचनको सुनकैं मनुष्योंकि हितकी इच्छा करकै अर्श रोगकी उत्तम नाश करनेवाली औषधको श्रीशंकर कहते हुए। पांड्यलोह, अथवा वज्रलोह इनमेंसै जो मिले उसको अथव ये न मिले तो इनके समान और कोई उत्तम लोह मिले उसको लेकर उसे तैल छाछ आदिमें शुद्धकरे फिर मनसिल, और सुवर्णमक्खी डालकै और पारा मिलाय चकमके रसमें सबको घोटकै उन सबका कल्क करकै लोहेपर लेपकर देवे फिर पक्के कौंलेन्में इसको धमावे और इसकी जो ज्वाला निकले इसको त्रिफलेके रसके छींटेदे दे कर बंदकरे जब जाने कि लोहा गलगया तब लोहेके काँटे सें उसको निकालकै पवित्र त्रिफले के काढेमें बुझाय देवे । इस प्रकार करने सें भी जो कुछरहा सहा भाग नगलाहोवे उसको फिर इसी प्रकार दूसरे गलायकै बु-

झाय देवे और वारंवार के गलाने सैं भी जो न गले उसको दुष्टलोह जानकै त्यागदेवे, फिर इसको सुखायकै विधिपूर्वक लोहेके खरलमें डालकै लोहेके मूसले सैं घोटे फिर उसमें सैं निकाल निकालकै पत्थरपर बारीक पीसलेवे, फिर इसके बारीक चूर्णको किसी लोहके पात्रमें भर और त्रिफलेके रससैं कीचसा करके ढक देवे तथा मुखके छिद्रोंको बंद करकै आरने उपलो की अग्निमें रखके फूंकदेवे, फिर आगे लिखी औषधोंकी क्रम पूर्वक पुटदेवे, जैसै हरड, बहेडा, आवला, अदरक भांगरिया जल भागरा, (कुकरभांगरा) मानकंद, भिलाए, चित्रक, जमींकंद, हस्तिकर्ण, पलास, थूहर इन प्रत्येक की पृथक् पुटदेवे, और पुट२ में बराबर पीस डालाकरे तथा लोहसैं सोलह भाग त्रिफला लेके उसकी पुटदेवे, आठ भाग शेष रहे हुए उसके काढेमें फिर इस लोहको पचावे, फिर इस लोहकी भस्मको कडाहीमे चढायकै अथवा तामें की कढाईमें चढायकै इसमें ३२ तोले घी डालकैं पचावे और लोहेकी कलछी सैं बराबर चलातारहे, इस प्रकार पाकका जानने वाला जब घी तैरकै ऊपर आयजावे तब मृदु, मध्य, और खरजैसा पाक करना हो उसी प्रकार का पाक करकै उतार लेवे। इस प्रकार जब यह लोहकी सिद्धी होजावे तव, उत्सव और स्वस्ति वाचन, पुण्याह वाचन आदि मंगल करके सहत और घींमें मिलायके एक २ रत्तीके वृद्धि क्रमसैं भक्षण करे और इसके ऊपर गौका दूधपीवे यह अनुपान है। यदि गौका दूध न मिले तो बकरीके दूधको पीवे, और इसके ऊपर चिकना, और पुष्टकारी पदार्थका भोजन करे। यह तत्काल जठराग्निको करैहै तथा भस्मक रोगको दूरकरे, बात पित्त, कुष्ठ, विषम ज्वर, गोला, नेत्ररोग, पांडुरोग, निद्रा,आलस्य, अरुचि, शूल परिणामशूल, प्रमेह, अपबाहुक, वात सूजन, रुधिरस्राव, दुर्नाम (ववासीर आदि) को विशेष करकै दूरकरे। यह बलकरे, बृंहणहै, कांतिकरे, स्वरको स्वच्छकरे, शरीरको हलका करे, आरोग्य और पुष्टीको बढावे, आयुष्यकरे, श्रीकरे तथा शुभ यश औ तेजकरे कांति युक्त पुत्रोंको प्रगटकरे. वली और पलितको नाशकरे हैं। यह दुर्नामारिलोह हजारों वार अनुभव कराहुआहै। इससैं ववासीर इस प्रकार नष्ट होतीहैं जैसैं अग्निसै रूई भस्म होतीहै जो सुकुमार और अल्पकायावाले, मद्यका सेवन करनेवाले है उन्को जीर्ण मद्यादि करकै युक्त भोजनमें मिलाय कै देवे, लवा, तीतर, बटेर, मोर, शसा (खरगोश) आदि। चिडा, घरका चिडा, वटई, हरियल, सिकरा, बडा लवा और वनमे रहनेवाले विष्कर पक्षी, (कबूतर, मृग इत्यादि) जंगली जीवोंका मांस, मछलियोंमें मद्गुर, रोहित, शकुल, ए मछलिके राजा है ये मत्स्य प्राणियोंको हितकारी है बैंगनका साक, परवल, कटेरीके फल, घीया, शतावर, वेतकीकोपल, देवदाली, और चौलाई, वथुआ, धनिया कैमुक, चकवत

ए शाक उत्तम है, नारियल, खजुर, अनार निर्मली, सिंघाडे, पकेआम, दाख, तालफल, जायफल, लौंग, सुपारी, पान, ए सब वस्तु इस लोह सेवन करनेवालेको परम हितकारी है वडहर, बेर, बडा बेर (पैमंदी) झरियाबेर, जंभीरी, बिजोरा, इमली, करोंदा, मानकंद, करील, कतक, तरबूजा, कूष्मांड, (पेठा) ककोडा, केमुक, कुटकी, कालशाक, कसेरु, ककडी, इत्यादि संपूर्ण ककारादिक पदार्थ और विदल अन्न इस लोह सेवन करने वालेको वर्जित कहेहै यह मनुष्योंकी कृपा विचार श्रीशंकरने चूर्णराज कहाहै यह दुर्नामारि निश्चय कहाहै। श्रीशिवजी कहते है कि स्थानसै सुमेरु पर्वत हटजावे, वायुके वेगसैं पृथ्वी लौटजावे, और चंद्र तारागण आकाशसैं गिरपडे यदि में असत्य कहताहूं तो, जो ब्रह्महत्यारे, कृतघ्नी, क्रूर, और असत्यवादी इत्यादि दुष्ट मनुष्योंको वैद्य इस लोहको न देवे, तथा जो गुरुनिंदकहै उनकोभी नदेवे।

लोहविकारकीशांति

मुनिरसपिष्टविडंगंमुनिरसलीढंचिरस्थितंघर्मे
द्रावयतिलोहदोषान् वन्हिर्नवनीतपिंडमिव

अर्थ—अगस्तियाके रसमें वायविडगोंको पीसकै अगस्तियाके रसके साथ पीवे और थोडी देर धूपमें बैठ जावेतो उस प्राणिके दोष इस प्रकार वहजावे जैसे मक्खनके पिंडको अग्नि वहाय देती है।

लोहपरिपाकके लक्षण

कालेमलप्रवृत्तिर्लाघवमुदरे विशुद्धिरुद्गारे
अंगेषुनावसादो मनःप्रसादोऽस्यपरिपाके

अर्थ—यथा समय अर्थात् वखतपर मलका उतरना, पेटमें हलकापना, शुद्ध डकारका आना, अंगोंमें किसी प्रकारकी तकलीफनहो, और मन प्रसन्नता ए लोहपरिपाकके लक्षण है।

लोहाजीर्णकायत्न

कृमिरिपुचूर्णंलीढंसहितंस्वरसेनवंगसेनस्य
क्षपयत्यचिरान्नियतंलोहाजीर्णोद्भवंशूलम्

अर्थ—वायविडंगके चूर्णको अगस्तियाके स्वरसमें मिलायकै पीवे तो निश्चय लोहाजीर्णसैं उत्पन्न शूलको तत्काल नष्टकरे।

कीटकीशांति

कुर्यात्कनकबीजेन रेचनंकिट्टशांतये

अर्थ—धतूरेके बीजोंसैं अथवा पिसोलाके बीजोंसैं दस्त करावे तो कीटीका विकार शांति होय,

लोहव्यापदकायत्न

जीर्णेलोहेपततिचूर्णभुंजीतसिद्धसाराख्यम्

लोहव्यापन्नश्यतिविवर्द्धतेजाठरोवन्हिः

अर्थ—लोहजीर्णमें सिद्धसाराख्य चूर्णका सेवन करे तो लोहकी व्यापद् [उपाधि] नष्ट होय, और जठराग्नि बढे ।

सिद्धसारचूर्ण

पथ्यासैंधवशुंठीभागाधिकानांपृथक्समोभागः

त्रिवृताभागौनिंबूभाव्यंतत्सिद्धसाराख्यम्

अर्थ—हरड, सैंधा निमक, सोंठ, पीपल, इनको समान भाग ले, निसोथ दो भाग ले, फिर इसमें नींबूके रस की भावना देवे तो सिद्धसार चूर्ण तयार होय

भवेद्यद्यतिसारस्तुदुग्धंपीत्वातुतंजयेत्

गुंजाद्वादशकादूर्ध्ववृद्धिरस्यभयप्रदा

अर्थ—यदि इस लोहके भक्षण सैं अतिसार रोग होवे तो उस प्राणीको दूध पिलाकर अतिसार दूरकरे । इस लोहकी भस्म १२ रत्तीके उपरांत भक्षण करना भयदायक है इससै बारह रत्तीसैं आगे इसको न वढावे ।

पारदभस्म

अधःपुष्पीकुक्कुटांडचूर्णखर्परेकृत्वामध्येपारदंनिक्षिप्यतदु
परिउक्तौषधयोःचूर्णक्षिप्त्वाधोमृद्वग्निंज्वालयेच्चशनैःशनैःद
र्व्याप्रचालयेच्चएवंपाश्वदरदभस्मीभवति तच्चभस्मरक्तिकात्रय
परिमितंछिक्कणीसूर्यभक्ताचूर्णटंकद्वयपरिमितेनसाकंभुंजीत
तदासप्ताहादर्शक्षयोभवतीतिसत्यं

अर्थ—गोभी, और मुरगेका अंडा दोनोका चूर्ण करके एक खिपडेमें चढावे उसमें पारा डालकै इसी चूर्ण सैं ढकदेवे, नीचे आग जलावे मंद२अग्नि देवे और धीरे २ कलछीसैं चलाता रहे, इस प्रकार करने सैं पारेकी भस्म होजावे उस भस्मको ३ रत्ती ले तथा नकछिकनी और हुरहुरकाचूर्ण २ टंकमे मिलायकै सेवन करे, तो सातही दिनमे ववासीर नष्ट होवे यह प्रयोग सत्यहै ।

बवासीरके साध्यलक्षण

बाह्यायांतुवलौजातान्येकदोषोल्बणानिच
अर्शांसिसुखसाध्यानिनाचिरोत्पतितानिच

अर्थ—जिस बवासीरके मस्से गुदाके बाहरके आंटेमें हुएहो, और एक दोषोल्बण होवे, तथा जिनको उत्पन्न हुए एक वर्ष न हुआहो, ऐंसे मस्सें सुखसाध्य अर्थात् सहजमें अच्छे हो सकतेहै.

कृच्छ्रसाध्यलक्षण

द्वंद्वजानिद्वितीयायांवलौयान्याश्रितानिच ।
कृच्छ्रसाध्यानितान्याहुःपरिसंवत्सराणिच ॥ ३६ ॥

अर्थ—दो दोषसैं प्रगट भईहो और दूसरी वली (अर्थात् दूसरे आंटेमें) होय,और जिसको एक वर्ष व्यतीत होगयाहो ऐसी बवासीरके मस्से कृच्छ्रसाध्य होय है और जो बाहरकी वलीमें द्विदोषोल्बण होय और एक दोषोल्बण दूसरी वली (दूसरे आंटे) में होवे तौ येभी कृच्छ्रसाध्य जानना ।

असाध्यलक्षण

सहजानित्रिदोषाणियानिचाभ्यंतरावलिम् ।
जायंतेऽर्शांसिसंश्रित्यतान्यसाध्यानिनिर्दिशेत्॥ ३७ ॥

अर्थ—सहज कहिये जन्म होनेके समयसैं जो होय अथवा तीन दोषोंसें प्रगट भईहो और जो तीसरा (अंतका)आंटा है उसमें भईहो सो बवासीर असाध्य जाननी ।

याप्यलक्षण

हस्तेपादेगुदेनाभ्यांमुखेवृषणयोस्तथा ।
शोथोहृत्पार्श्वशूलंचतस्यासाध्योऽर्शसोहिसः ॥४७॥

अर्थ—जिसके हाथ, पैर, गुदा, नाभि, मुख और अंडकोश इनमें सूजनहो, हृदय और पसवाड़े दूखें वो रोगी असाध्य जानना ।

अन्यअसाध्यलक्षण

हृत्पार्श्वशूलंसंमोहश्छर्दिरंगस्यरुग्ज्वरः ।
तृष्णागुदस्यपाकश्चनिहन्युर्गुदजातुरम् ॥ ४८ ॥

अर्थ—हृदय और पसवाड़ेनमें दर्द होय, इन्द्री और मन इनमें मोह होय, व-

मन और अंगोंमें पीड़ा, ज्वर, प्यास, गुदाका पकना (अर्थात् गुदाके ऊपर-पीले फोड़ा) ये लक्षण होनेसैं बवासीरवाला रोगी असाध्य जानना ।

अन्य असाध्य लक्षण

तृष्णारोचकशूलार्त्तमतिप्रस्नुतशोणितं ।
शोथातिसारसंयुक्तमर्शांसिक्षपयंतिहि ॥ ४९ ॥

अर्थ—प्यास, अरुचि, शूल, इनसैं पीडित, जिसके अत्यंत रुधिर वहै, और सूजन, अतिसार ये होय उस रोगीका बवासीर नाशकरदेयहै ।

मेढ्रादिष्वपिवक्ष्यंतेयथास्वंनाभिजान्यपि ।
गंडूपदास्यरूपाणिपिच्छिलानिमृदूनिच ॥५०॥

अर्थ—मेढ्र कहिये लिंग आदिशब्दकरके नाक कान इत्यादि स्थानोंमें भेदकरके बवासीर होतीहै सो आगे कहेंगे । उसी प्रकार नाभिस्थानमेंभी अर्श रोग होताहै वह केंचुएके मुखके समान गाढी और नरम होयहै ।

चर्मकीलकीसंप्राप्ति

व्यानोगृहीत्वाश्लेष्माणंकरोत्यर्शस्त्वचोबहिः ।
कीलोपमंस्थिरखरंचर्मकीलंतुतद्विदुः ॥ ५१ ॥

अर्थ—व्यान वायु–कफको लेकर त्वचामें कीलके सदृश स्थिर और खरदरी ऐसी बवासीरकों करे उसको चर्मकील कहतेहैं (त्वचोबहिः) इसके कहनेसैं गुदा होठका त्याग कहा ।

चर्मकीलमेंवातादिकेलक्षण

वातेन तोदपारुष्ये पित्तादसितरक्तता
श्लेष्मणास्निग्धताचास्यग्रथितत्वंसवर्णता

अर्थ—चर्मकील रोगमें वादीसैं उसमें सुई चुभानेकीसी पीडाहो, पित्तसैं उसका रंग काला, और लाल होताहै, कफसैं चिकना और गांठदार होवेहै तथा उसका वर्ण त्वचाके वर्ण समान होवेहै ।

द्वंद्वजबवासीरकेकारण

हेतुलक्षणसंसर्गाद्विद्याद्द्वंद्वोल्बणानिच ।

अर्थ—दो दोषोंके कारण और लक्षण मिलैं तो द्वंद्वज बवासीर भई है ऐसे जाने ।

त्रिदोषकीबवासीरकेकारण

सर्वोहेतुस्त्रिदोषाणांलक्षणंसहजैःसमम् ॥ ९ ॥

अर्थ—पृथक् वातादि ववासीरके जो कारण कहे हैं वो सर्व त्रिदोषकी ववासीरके कारण हैं, और जो सहज अर्शके अर्थात् सहज ववासीरके लक्षण सो इसके लक्षण जानने।

याप्यलक्षण

शेषत्वादायुषस्तानिचतुष्पादसमन्विते।
याप्यंतेदीप्तकालाग्नेः प्रत्याख्येयान्यतोऽन्यथा ॥

अर्थ—असाध्यववासीर होवे परंतु रोगीकी आयुष्य बाकीहो, और वह चतुष्पाद संपत्तियुक्त होवे, अर्थात् वैद्य, औषध, परिचारक, और रोगी ए जैसे होने चाहिये उसी प्रकारके होवे तथा रोगीकी अग्नि प्रदीप्त होवे तो याप्य कहिये शमन होजावे, और इससै विपरीत होवे तो रोगीको असाध्य जानना

असाध्यलक्षण

दोषत्रयाणिसहजानिवलौतथांतर्जातानिहंतिगुदजानि पृथूदरस्य । पादस्यहस्तगुदजाभ्युदरांडकोशशून स्यपार्श्वहृदयव्यथितस्यपुंसः ॥ हृत्पार्श्वशूलवमन ज्वरमोहतृष्णापाकोगुदेग्नितनुतारुचिरंगभंगः। यस्या स्तियातियमधामगुदांकुरोंध्यंशूनोदराक्षिकरपादगु दांडशोकः॥ तृष्णाशूलहृदिश्वासशोषातीसारपीडि तं। अतिनिःसृतरक्तंचनिहन्युर्गुदजानरम् ॥

अर्थ—जो ववासीर त्रिदोषात्मक अथवा शरीरके साथही उत्पन्न हुईहो अर्थात् जन्मसैंही होय तथा भीतर की वली (आँटे) में तथा जिसका पेट बडाह्वेगयाहो और हाथ, पैर गुदा, पेट, और अंडकोश इनपर सूजन होवे तथा पार्श्व और हृदय इनमें शूल होय वांति, ज्वर, मोह, प्यास, गुदाका पाक मंदाग्नि, अरुचि, और अंगनाश इन लक्षणो करके युक्त जो रोगी होवे वो मरजाय और जिस ववासीरमें अंधकार, तथा पेट, नेत्र पैर, हाथ, गुदा अंडकोश इनमें सूजन प्यास, हृदयमें शूल, श्वास, शोप, अतिसार,और जिसकें अत्यंत रुधिर गिरे उसको ववासीर रोग नष्ट करे।

अर्शरोगपरपथ्य

विरेचनंलेपनरक्तमोक्षंक्षाराग्निशस्त्राचरितंचकर्म । पुरातना

लोहितशालयश्चसषष्टिकाश्चापियवाःकुलित्थाः ॥ पटोलध त्तूररसेनवन्हिपुनर्नवासूरणवास्तुकानि । जीवंतिकादंतशठा सुरावंशुंठीर्वयस्यानवनीततक्रं ॥ कंकोलधात्रीरुचकंकपि त्थमौष्ट्राणिमूत्राज्यपयांसिचापि । भल्लातकंसर्षपजंचतैलंगो मूत्रसौवीरतुषोदकानि ॥ गोधाखुलोमानिखरोष्ट्रलोमश्वावि त्कुलिंगानथधौतकौशाः । तरक्षवासाश्चमृगालिकाकायेत्यल्प मांसाःप्रसहाश्चतेऽपि । वातापहंयच्चयदग्निकारितदन्नपानंहित मर्शसेभ्यः ॥

अर्थ--जुलाब, चंदनादिलेप, रुधिर निकालना, क्षार, और अग्निकर्म, शस्त्र-कर्म पुराणे लाल चावल, साँठीचावल, जो, कुलथी, पटोल (परबल) धतूरेका रस, लहसन, चीता, पुनर्नवा, जमीकंद, वथुआ जीवंति (डोडी) चूका, सुराव आनंदकारी शब्द) अथवा मद्य, सोंठ, हरड, मक्खन, छाछ, कंकोल, आवले, कालानोन, कैथ, ऊटका मूत्र, घी, दूध, भिलाये, सरसों का तेल, गोमूत्र, काँजी, तुषोदक, गोह, और मूसेके बाल, गधा, ऊंट इनके बाल, श्वाविध्पक्षी, कुलिंग, चांदी, वानर, जरख, अडूसा, मृग, भोंरा, कौआ तथा जो अल्पमांसवाले गीध, उलूक, सिकरा, वाझ, चाष, भास, कुरर, तथा वातनाशक और अग्निकारी ऐसे अन्न और पान ए ववासीर रोगीको हितकारी है।

अर्शरोगमें अपथ्य

अनूपमामिषंमत्स्यंपिण्याकंदधिपिष्टकम् । माषान्करीरानि ष्पावंतंदुलातुंब्युपोदिका ॥ पक्वाम्रशालुकंसर्वविष्टंभीनिगुरू णिच । आतपंजलपानानिवमनंबस्तिकर्मच ॥ विरुद्धानिच सर्वाणिमारुतं पूर्वदिग्भवं । वेगावरोधःस्त्रीपृष्ठयानमुत्कटका सनं । यथास्वंदोषलंचान्नमर्शसांपरिवर्जयेत् ॥

अर्थ--अनूपदेशमें रहनेवाले जीवोंका मांस, मछली, खल, दही, पिष्टान्न, उडद, करीर, चोरा, नवीन चावल, सपेदतूंबी, पोईका साग, पके आम, कमलका, कंद, संपूर्ण विष्टंभकारी पदार्थ, भारी पदार्थ, धूपमें डोलना, बहुत जल पीना, वमन, बस्तिकर्म संपूर्ण विरुद्ध पदार्थ, पूर्व दिशाकी पवन, मलमूत्रादि वेगोंका रो-

कना, स्त्रीगमन, घोडे आदिकी पीठपर चढके जाना, ऊकरू बैठना, दोषोंको उत्पन्न करनेवाले अन्न और पान ए बवासीर रोगीको सेवन करना वर्जित है.

रक्तार्श और चर्मकीलपर

यत्पथ्यंयदपथ्यंचवक्ष्यतेरक्तपित्तिनां । रक्तार्शोरोगिणांतत्तु देयंविद्याद्विशेषतः ॥ पानंयानंदिवास्वप्नंगुर्वन्नमतिभोजनम् । व्यायामंकलहंचैवतीक्ष्णंक्षारविधिंत्यजेत् ॥ यद्युक्तमर्शसामौ दौभेषजंपथ्यमेवच । तदेवचर्मकीलानांकार्यंदोषादिभेदतः ॥

अर्थ—जो पथ्य अथवा अपथ्य रक्तपित्त रोगवालेको कहे है वोही खूनी बवासीरवालेको विशेष करकैं देवे. तथा पान, यान, दिनमें सोना, भारी अन्न, अतिभोजन, कसरत, कलह, और तीक्ष्ण खारका लगाना, तथा जो अर्शरोग पर पथ्य कहाहै वो सब औषध चर्मकीलरोगपर दोषभेदसैं देवे ।

कुछप्रयोगफारसीसैं अकबरपातसाहके अनुभवकरेहुए यहांपर प्रसंग वस लिखदेतेहै—

चावल और मुंगकी धोवा दालकी खिचडी विना निमक की अर्थात् अलोनी जितनी खाई जावे खूबखाय इस प्रकार करने सैं सातवे दिन गुदापर पोस्तकेसे दाने प्रगट होवैगे उनको खूबधोवे और निर्बलतासैं डरेनहीं. फिर इसी प्रकार सात दिन पर्यंत केवल खिचडीही खायतो परमात्माकी कृपासैं खूनी वावसीर अवश्य जाती रहे

बवासीरके रुधिरको रोकै

लालसुरमा १॥ तोले. छोटीहर्डै ६ तोले [किसी किसीकी यह संमति है कि तीन तोले हरड लेवे] दोनोको कूट पीस चूर्णकरे इसको १९ तोले गुडमें मिलायकै झड़बेरीके बराबर गोली बनावे प्रातःकाल १ गोली घीके साथ और सायंकालको १ गोली जलके साथ सेवन करे इस प्रकार ५१ इक्यावनदिन पर्यंत सेवन करे तथा १४ दिनतक वातकारक और खटाई सै बचे. गहूंकी रोटी और प्याज खाय. तथा तीन दिनके वाद १ गोली को वगले पानमें घिसके मस्सेन्पर लगावे तथा लंगोट खीचकर वाँधे तो यह एक सिद्ध पुरुषका बताया

हुआ प्रयोग है इसे सात दिनमें ववासीर स्वयं गिरजावे पचास दिनकी अवश्य कता नहीं रहे । जो प्याज न खावे. अथवा सबको रोटी और चोलाइका साग खूब घी डालके भोजन करावे ।

मल्हम-

केचूआ (गिडोहों) को जैतुंके तेलमें ओटावे जब परिपक्क होजावे तब थोडा सिरका डालके मल्हम बना लेवे पसमिनेके कपडे की बत्ती बनावे और इस मल्हममें भिगोकर गुदापर रखे तो मस्से दूरहो पीडा शांतिहो.

तथा

स्यारकी खालको यह प्राणी अपने पास रखा करे तो ववासीर दूर होवे.

ववासीरकाअजीर्ण

वथुआका साग अथवा वथुआके बीजोंको तेलमें भूनकर भोजनकरे तो ववासीरका अजीर्ण सर्वथा दूर हो ।

तैल.

कई एक विच्छुओको तेलमें डालकें ४० दिनतक धूपमें रखा रहनेदे पश्चात् इस तेलको ववासीरके मस्सोपर मले तो ववासीर दूरहोय ।

फक्की

नागकेशर और मिश्री दोनो दोदो मासे पीसके नित्य खायाकरे तो ववासीरसैं रुधिरके जानेको चमत्कारके साथ रोके हैं पथ्यसैं रहे।

पुलटिस.

रासना, भांग प्रत्येक छःछः तोले. मैदा तीन तोले. प्रथम मैदाको तिलके तेलमें भूनकर तथा और दवाइयोकों बारीक पीसकर इसमें मिलाय देवे फिर जल डाल पुलटिस बनायले जब पक्क होजावे तब सुहाती गुदाके मस्सोंपर बांधे औरं ऊपर सैं लंगोट कसकै बांध लेवे तो ववासीर दूर होय ।

अन्यविधि.

सींगडी आध पांवको पावसेर कागदी नींबूके रसमें भिगोवे फिर इसको जंगली कंडेनमें जलाय लेवे कि उफान आकर सूखजावे तब उसको बारीक पीसके गौके पावभर घीमें मिलावे और निमकी लकडीसैं दही मिलाकर घीमें ओटावे कि घी लाल होवे. और सुगंध आने लगे तब उसमें रुई भिगोकर गुदापर रखे. और लंगोट कसकै बांधे. एक दिनरात बंधारखै. इस प्र-

कार एक सप्ताह पर्यंत करे तो सब बढाहुआ मांस गलकर दूर हो जावेगा, और यदि पहले दो दिनतक सोआके बीज जलमें पकायकै लगावे और पश्चात् ऊपर कही हुई मल्हम लगावे तो ववासीरको बहुत शीघ्र आराम हो जावेगा.

गोली

गीले चूनेकी गोली चनाके बराबर बनायकै खवावे तो ववासीर दूर हो।

फक्की

बडीमाई, वकायनके बीज, दोनोको समान ले कूट पीस दूना सफेद बूरा मिलाकर हथेली भरकै प्रातःकालही खाया करे तो खूनी और वादी दोनो ववासीर दूर हो।

गुदाका पोछना

मल परित्याग करनेके पश्चात् गुदाको आकके पत्तोंसैं पोछा करे तो ववासीर नष्ट हो।

निंबतैल

नीमके बीजोंके तेलको गुदापर मलाकरे ववासीरपर मलाकरे तो आराम होय. अथवा सोआके बीज पीसकै मले तो ववासीरको नष्ट करे।

तैल.

काले धतूरेके पत्तोंका रस तिलके तेलमें डालकै औंटावे. जब रस मात्र जल जावे तेल मात्र रहे तब उसमें रुई भिगोकर ववासीरपर रखे।

माजूम.

इन्द्रजो, अतीस और रसोत इनको समान भाग ले कूट पीसके सहतमें मिलायकै माजूम बनाय लेवे इसमेंसैं १ तोले सांठी चावलोंके धोवनसैं खाय तो ववासीरको बहुत गुण करे।

सामान्य यत्न

ववासीरमें साफन नामक नसकी फस्तरखोले खरबुजा अनार आदिका खाना अधिक गुणकारी है। ववासीरमें गूगलकी गोली खाना इस रोगवालेको अधिक गुण करेहै.

गुगलकी गोली

काबली हरडका बक्कल, काली हरडका बक्कल, दोनोको समान भाग कुटकर ८॥ तोले गंधनाके जलमें उत्तम गूगल ४ तोले और ४॥ मासे पीस हरडका

चूर्ण मिलाय जंगली बेरके समान गोली बनाय लेवे, इसकी मात्रा ३ मासेकी है इसके उर्दकी दाल, अथवा मूंगकी धोवा दाल और रोटी पथ्यहै, तथा गुगलका इत फल खानाभी इस रोगवालेको गुणकरेहै ।

चूर्ण

काली जिरी ४॥ तोले ले आधेको भूनले आधी कच्ची रखे दोनोको मिलायके तीन भाग करे नित्य एक भाग खाय ऊपरसैं सांठी चावलोका धोवन पीवे तो ववासीर दूर हो ।

वफारा और सेक

सिरसकी छाल, तगर, मुलहटी, लालचंदन, आंबाहलदी, दारुहलदी, भांग, बकायनके बीज, प्रत्येक १॥ तोले, पठानी लोध, नोमांसे सबको कूटकर दो भाग करे, एक भागको गौके आधसेर दूधमें आटाकर वफारा लेवे, और दुसरे भागको गौके घीमें मिलायकैं गुदापर बांधके सेक करे, तो ववासीरकी पीडा और सूजन दूर हो जावेगी.

ववासीरको सुखाकर गिरादेवे

जखमहायातको छायामें सुखाकर कूट पीसकर नित्य छः तोले गुडमें मिलायके रात्रिके समय खाकर सो रहे और इसी चूर्णको प्रातःकाल जलके साथ फकी लेवे खटाई और वादीसैं परहेज रखे एकही सप्ताहमें ववासीर अवश्य दूर हो जावेगा.

जख्महयात—एक छोटासा पोदाहै पृथ्वीपर फैला हुआ होताहै और उसके नीचे सब पृथ्वी चिकनी दिखाई देतीहै यह पेड गैंहूके खेतमें और नदीके किनारेपर बहुत होताहै, इसके दो भेदहै एककी छोटी पत्ती और बहुत बारीक होताहै बस यही लेना उचितहै और दूसरा वहहै कि जिसकी पत्ती मोटी होती है वह नही लेना चाहिये.

गुदापीडाको नष्ट करे

पानीके ऊपरकी काई गुदाके ऊपर बांधे तो ववासीरसैं जो गुदामें पीडा होतीहै वह नष्ट होय ।

अथवा

इमलीके बीजोंको आगमें डालकर १ मासे, और विनाजले छिलकेके ३ मासेको पीस दही चक्केमें मिलायके सात दिनतक प्रातःकाल चाटा करे तथा वादी करता वस्तु और स्त्रीसंगसै परहेज करे तो गुदाकी पीडा नष्टहो ।

ववासीरके रुधिरको बंद करे

इमलीके बीजोंके छिलकेको कूट पीस जलसैं चनेके प्रमाण गोली बनावे और तीन दिनतक एक एक गोली नित्य खाय तो रुधिरके जानेको बंद करे ।

ववासीरको नष्ट करे

आमके पत्ते, आवलेके पत्ते, जामनके पत्ते, मिश्री प्रत्येक तीन २ तोले, गौका दूध आधेसेर, पत्तोको कूट पीसकै विना पानीके रस निकाले यदि रस न निकले तो थोडासा दूध डालकै रस निकाले फिर इस रसको दूधमें मिलायकै पीवे अ थवा केवल रसही पीवे फिर उसके दूध पीवे, इस प्रकार सात दिन सेवन करे तो ववासीर अवश्य दूर हो जायगी, खटाई और वादी पदार्थोसैं वचता रहे । यह खुनी और वादी दोनो प्रकारकी ववासीरको दूर करे ।

धूनी

घूंसके चमडेको किसी वरतनमें जलावे, जब धुआ निकलने लगे तब एक कपडा उसके मुखपर बांधकै उसका धुआ मस्सेनूको देवे और कपडेसैं ऐसा बंदोबस्त करे कि अन्यत्र धूआ न जावे, तो ववासीर नष्ट होय.

इतिश्रीबृहन्निघंटुरत्नाकरे अर्शरोगस्यनिदानचिकित्सासमाप्ता

चतुर्थ भाग समाप्त

पंचमभाग छपरहाहै जलदी तैयार होगा ।